श्रीगणेशाय नमः ॥



श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासजी

विरचित

रामायण

सातवीं बार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में छपी

सन् १९१३ ई०

श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत रामायण का
विज्ञापनपत्र ॥

अहो ग्राहकगणो ! लीजिये ! लीजिये !! विलम्ब न कीजिये !!!

विदितहो कि इस असार संसार में कराल कलिकाल के अवगुणों से ग्रसित जनों के लिये श्रीगोस्वामि तुलसीदासकृत रामायणही परम आधार है जिसकी पुस्तकें अनेकप्रकार से इससमय पर्य्यन्त तक अनेकबार इस यन्त्रालय में मुद्रित हुई हैं जिनको कि विद्यागुणग्राही व रामभक्त्यनुरागी जनों ने अत्यन्त आदर से ग्रहणकर अवलोकन किया अतएव मैंने अबकी बार उन्हीं सज्जनों, महज्जनों व विद्यारसामृतस्पर्शियों के विशेषानुराग से अवलोकन करने के लिये नवीन युक्ति से यह रामायण तैयार कराई है जिस के प्रत्येककाण्ड के आदि में एक चित्र उस काण्डकी संपूर्णकथा का संक्षेपरूप से नियुक्त कियागया है और उत्तरकाण्ड के पश्चात् लवकुशकाण्ड जिसमें रामाश्वमेधादि कथाओंका वर्णन है संयुक्त किया गया है और प्रत्येक पत्रों के नीचे कठिन शब्दों के नोटभी लगाये गये हैं जिससे शब्दार्थों के समझने में किसी प्रकारका सन्देह नहीं रहताहै और आदि में श्रीगोस्वामितुलसीदास जी का जीवनचरित्र तथा संकटमोचन व रामबाराखड़ी और बजरंगबाण व रामायणमाहात्म्य तथा अन्त में सप्तदेवस्तुति, श्रीरामचन्द्रजी व श्रीजानकी जीके चतुर्दशवर्षवनवास का तिथिपत्र आदि संयुक्त हैं यह प्रति अद्वितीय व अनुपमहै ऐसी विचित्र रचनाओं से संयुक्त पुस्तक आजतक किसी यन्त्रालय में न छपी होगी इसकारण इसकी अधिक प्रशंसा करनाही क्या है ? केवल दर्शनही से ज्ञात होजायगा, आशा है कि रामरसरसिक पुरुष आदर से ग्रहणकर अवलोकन करेंगे और मुझ शुभाभिलाषी को आशीर्वाद देंगे-अग्रे किमधिकं बहुज्ञेष्विति शिवम् ॥

आपका कृपाकांक्षी-
प्रयागनारायण भार्गव,
मालिक नवलकिशोर प्रेस लखनऊ.

किष्किन्धाकाण्ड

सुन्दरकाण्ड

लंकाकाण्ड

उत्तरकाण्ड

लवकुशकाण्ड

श्रीमद्गोस्वामि
तुलसीदासजीका जीवनचरित्र ॥

गोसाईं तुलसीदासजी सरवरिया ब्राह्मण थे व बांदाप्रदेशान्तर्गत राजापुरके रहनेवाले थे इनके गुरुका नाम नृसिंहदास था इनका जन्म शिवसिंहसरोजकार ने संवत् १५८३ का लिखा है और किसी २ का मत है कि संवत् १५८९ में इनका जन्म हुआ व संवत् १६८० में मृतक हुये गोसाईं तुलसीदासजी को भक्तमालके कर्त्ताने वाल्मीकिजी का अवतार लिखा है सो इसमें कुछ संदेह नहीं कि उनकी वाणी में ऐसाही प्रभाव दिखाई पड़ता है कि हृदयमें चुभजाता है और रामचरित्ररूपी अमृत की धारा को इस कलियुगमें प्रवाहमान कियाहै व सबको सुलभ है और निम्नलिखित ग्रंथ गोसाईंजी के बनाये हैं कि जो विख्यात हैं १ रामायण (रामचरित मानस) २ विनयपत्रिका ३ रामायण गीतावली ४ रामायण कवितावली ५ दोहावली ६ रामशलाका ७ हनुमान्बाहुक ८ जानकीमङ्गल ९ पार्व्वतीमङ्गल १० कड़का रामायण ११ बरवा रामायण १२ रोला रामायण १३ झूलना रामायण १४ छन्दावली रामायण १५ छप्पै रामायण १६ कुण्डलिया रामायण १७ वैराग्यसंदीपिनी १८ तुलसीसतसई १९ रामाज्ञा २० रामलला नहछू २१ कृष्णगीतावली २२ संकटमोचनादि जोकि प्रेमियों व उपासकों को सब जगह मिलसक्के हैं और भक्तों के मुखसे निश्चय होचुका है कि जो कोई नियमकरके नित्य किसी रामायण का पाठ करता है निश्चय उसकी श्रीरघुनन्दनस्वामी के चरणों में प्रीति होजाती है व कामना करके कांड का पाठकरै तो सिद्ध होजाताहै व रामशलाका में जो प्रश्न करै तो ऐसे दोहे निकलैं कि जो

होनेवाली बात हो सो ज्ञात होजाय और तुलसीकृतरामायण को काशी जी के सब पण्डितों ने सभा करके सम्पूर्ण पढ़ा आदि अन्त सब वेदशास्त्र पुराण गीता के अनुकूल देखकर सबने अङ्गीकार लिखदिया किसी २ ने द्वेष करके बाद ठाना तो विश्वेश्वरनाथजी के अङ्गीकार करने से सबको अङ्गीकृत हुआ गोसाईंतुलसीदासजी अपनी स्त्री से विशेष स्नेह रखते थे एक दिन स्त्री अपने मैके में मा बापसे मिलने को गई तो गोसाईंजीको इतना वियोग हुआ कि सहन न होसका और ससुराल में पहुँचे इनको देख स्त्री को लज्जा आई सो क्रोधकरके गोसाईंजी से बोली कि यह मेरा शरीर अस्थि मांसका अनित्य है श्रीरघुनन्दनस्वामी नित्य निर्विकार पूर्ण ब्रह्म हैं तिनसों क्यों नहीं स्नेह करते कि दोनों लोक में लाभहो इतना कहने से गोसाईंजी पण्डित और ज्ञानवान् तो थेही पूर्वपुण्य के पुञ्ज उदयहुये ज्ञान वैराग्य की आंखैं खुलगईं व वहां से चल काशीजी में आकर श्रीरघुनन्दनस्वामी के भजन कीर्त्तन में लगे गोसाईंजी शौचादि को वन में जाया करते थे और शौचशेष पानी को एक बेरी के वृक्षपर नित्य डालदिया करते थे उसपर एक भूत रहताथा उस पानी से उसकी तृषा मिटती थी एकदिन प्रसन्न होकर बोला कि तुमको कामना हो सो कहो गोसाईंजीने कहा कि श्रीरघुनन्दनस्वामी का दर्शन करादे भूतने कहा कि यह सामर्थ्य मेरे में नहीं पर हनुमान्‌जीका पता बतलाताहूं कि कर्णघंटा पर रामायण की कथा होती है वहां हनुमान्‌जी सबसे पहिले ऐसे कुरूप से कि जिसको देखते डरलगै और घृणा हो आते हैं व सबसे पीछे जाते हैं इस पहिंचान से गोसाईंजी हनुमान्‌जी को ढूंढ़ते चले जब उसी रूप में देखा तो चरण पकड़ लिये और छोड़े नहीं तब हनुमान्‌जी ने दर्शन दिया और कहा जो चाहना हो सो कहो गोसाईंजी ने विनय किया कि श्रीरघुनन्दनस्वामी का दर्शन चाहताहूं तब हनुमान्‌जी ने कहा कि चित्रकूट में दर्शन होगा गोसाईंजी अति अभिलाष से चित्रकूट में आये एक दिन इस स्वरूप से दर्शन हुआ कि श्रीरघुनन्दन स्वामी

जिसकी कही है भला सो कब भगवत् के सामने ऐसी हठवाणी कहसक्ता है इसबातके फैलने की बात यह है कि उपासक जिस देवता के मन्दिर में जाता है अपने इष्टका रूप ध्यान करता है यह रीति शास्त्र के सम्मत के अनुकूल है सो गोसाईंजी दर्शन को गये व परम मनोहर मूर्त्ति को देखा तो श्रीरघुनन्दन धनुषबाणधारी का ध्यानकरके दण्डवत् किया सो गोसाईंजी भक्तसांचे न सिद्ध थे इसहेतु मदनगोपालजी ने भी उनके ध्यान के अनुकूल रूप दिखा दिया जो कोई उससमय दर्शन करनेवाले थे उन को भी धनुषबाणधारी दृष्टि में आये इसहेतु वह बात फैली और किसी ने एक दोहा भी बनालिया बृन्दाबन में किसीने गोसाईंजी से प्रश्न किया कि श्रीकृष्ण महाराज पूर्णब्रह्म और अवतारी हैं और नृसिंह, वामन, परशुराम, रामचन्द्र आदि उस अवतारी के अंश कला से अवतार हैं तुम श्रीकृष्ण महाराजकी उपासना क्यों नहीं करते यद्यपि शास्त्रप्रमाण से गोसाईंजी उत्तर देने को समर्थ थे पर माधुर्यभाव में प्रेमभक्ति को दृढ़ करते हुये ऐसा उत्तर दिया कि वह चुप होरहा और सिद्धान्त बनारहा सो वह यह है कि श्रीरामचन्द्र दशरथनन्दन को बहुत सुन्दर सुकुमार अंग मनोहरमूर्त्ति परमशोभायमान देखकर हमारा मन लगगया है कि नहीं छूटता अब जो तुम्हारे वचन से उनमें कुछ ईश्वरता भी है तो और अधिक व मनभाई भई ॥ इति ॥

अथ सङ्कटमोचननामाष्टक ॥

स॰ ॥ बालसमय रविभक्षकियो तब तीनिहुँलोक भयो अँधियारो । तेहिते त्रासभई सबको अतिसङ्कट काहुते जात न टारो ॥ देवन आनि करी बिनती तब छाँड़िदियो रवि कष्ट निवारो । को नाहिं जानत है जगमें यह सङ्कटमोचन नाम तिहारो १ बालिके त्रास कपीश बसै तहँ जात महाप्रभु पंथनिवारो । चौंकि महामुनि शाप दियो दिशि चारि फिरे न सुपास विचारो ॥ कै द्विजरूप लवाय महाप्रभु सो तुम दासको शोकनिवारो । को नहिं जानत है जगमें यह सङ्कटमोचन नाम तिहारो २ अंगद के सँग

कीश अनेक गये सिय खोज कपीश पुकारो । जीवत ना बचिहौ हमसों जु विना सुधिलै इतको पगुधारो ॥ हारि थके तटसिंधु सबै तब लै सियकी सुधि प्राण उबारो । को नहिं जानत है जग में यह सङ्कटमोचन नाम तिहारो ३ रावण त्रास दई सियको तब रक्षक ह्वै करि शोक निवारो। ताहि समय हनुमान महाप्रभु जाइ सबै रजनीचर मारो ॥ मांगत सीय अशोकसों आगि तौ दै प्रभुमुद्रिका शोक निवारो। को नहिं जानतहै जग में यह सङ्कटमोचन नाम तिहारो ४ रावण युद्ध अचानक कीन्ह सुनागके फाँस सबै शिरडारो। श्रीरघुवीर समेत सबै दलमोह भयो तब सङ्कटभारो॥ आनि खगेशहि को हनुमान सो बंधनकाटिकै फाँस निवारो । को नहिं जानत है जग में यह सङ्कटमोचन नाम तिहारो ५ बाण लगे उर लक्ष्मण के प्रभु प्राणतजो सुत रावण मारो। लै गृह वैद्य सुखेनसमेत सुखी गिरि द्रोण सो वीर उधारो ॥ आनि सजीवनि हाथदई तब लक्ष्मण के तुम प्राण उबारो। को नहिं जानत है जगमें यह सङ्कटमोचन नाम तिहारो ६ बन्धु समेत जबै महिरावण लै रघुनाथ पताल सिधारो । देविहिं पूजि भलीविधि सों बलिदेन दोऊजन मन्त्र विचारो ॥ जाय सहाय भयो तबहीं महिरावण सेनसमेत सँहारो। को नहिं जानत है जग में यह सङ्कटमोचन नाम तिहारो ७ काजकियो बड़लोगनके तुम वीर महाप्रभु देखि विचारो। कौन सो सङ्कट मोहिं गरीबको सो तुमसों नहिं जात है टारो॥ वेगि हरो हनुमान महाप्रभु जो कछु सङ्कट होइ हमारो । को नहिं जानत है जग में यह सङ्कटमोचन नाम तिहारो ॥ ८ ॥

इति श्रीसङ्कटमोचननामाष्टकं समाप्तम् ॥

अथ रामबाराखड़ी ॥

चौपाई ॥ कका करुणामयरघुवीर कृपाला। अजअविनाशी दीन-दयाला ॥ भंजनअसुरभूमिकेभारा । प्रकटभयेरघुवंशकुमारा ॥ खखा खेलतदशरथ आंगनमाहीं । बालरूपछविबरणि न जाहीं ॥ लक्ष्मण भरतशत्रुहनभैया। निरखतजननीलेतबलैया॥ गगा गौरश्यामसुन्दरहउ

जोरी। ज़ोकछुउपमाकहौंसोथोरी ॥ करधनुहीकटि कसेनिषंगा। चढ़ेन-चावहिंचपलतुरंगा ॥ घघा घरमेंविश्वामित्रजोआये। आदरकरिभूपति बैठाये ॥ तनुधरिजोकछुकारजहोई । कहौ वचनहम करिहैंसोई ॥ नना निशिचरखलमारीच सुबाहू। यज्ञविध्वंसकरैंउरदाहू ॥ लक्ष्मणराम दुऊसुतदीजै। पूरणयज्ञहोययशलीजै ॥ चचा चकितभयेभूपतिसुनिबानी। समुझायेवशिष्ठमुनिज्ञानी ॥ दीन्ह्योंपुत्रकरीमनुहारी । मारगचलतताड़-कामारी ॥ छछा छांड़िबाणमारीचउड़ाये। पावकबाणसुबाहुजराये ॥ पूरण यज्ञभईमुनिहरषे। जयजयकरतसुमन सुरवरषे ॥ जजा जनकयज्ञसुनि चलेविचारी । पदरजपरसिअहल्यातारी ॥ गयेजहाँजगपावनिगङ्गा। स्नानध्यानकरि निर्मलअङ्गा ॥ झझा झीमरनावनिकटनाहिंलावै। देखत चरणप्रभावडरावै ॥ चरणपखारिरामबैठाये । उतरेपारजनकपुरआये ॥ नना राजासुनीजबैयहबाता। मुनिकौशिकसँगदूनोंभ्राता ॥ पूजाकरि सिं-हासनदीन्हा। आपनजन्म सफलकरिलीन्हा ॥ टटा टरै न धनुषभूपसब हारे। रघुवरमाँझसभापगुधारे ॥ तोरिधनुषकीन्होदुइखण्डा। जयधुनि पूरिरहीब्रह्मण्डा ॥ ठठा ठाढ़ेधनुषतोरिरघुराई। सीताजयमालापहिराई ॥ परशुराम वन कोपि सिधाये। सजिबरातनृपदशरथआये ॥ डडा डोमभाट निवछावरिपाई। चारिउकुँवरिबरींचहुँभाई ॥ दियदायजुबहुद्रव्यलुटाई। आयअवधपुर बजीबधाई ॥ ढढा ढूंढ़िमुहूरतसजेसमाजा। रामहिंरावदेहिं युवराजा ॥ शारदकुबरीमतिभरमाई। मिलीकेकयीकुमतिसिखाई ॥ नना नारीवर मांगैनृपपासा। भरतहिराजरामवनवासा ॥ मातुपितागुरुपदशिर नाई। सीतासहितचलेदुउभाई ॥ तता तमसातीरप्रथमदिनआये । शृंग-बेरपुरगुहामिलाये ॥ पहुँचेगङ्गाउतरेप्रागा। भरद्वाजमिलिअतिअनुरागा ॥ थथा थोरेमहँसबकहौंप्रसंगा। चलेभानुकुलकमलपतंगा ॥ बाल्मीकिआ-श्रमप्रभुआये। चित्रकूटगृहवासबनाये ॥ ददा देखिशैल तृणशालछवाई। सीतासहित बसेदुउभाई ॥ रामगमनसुनिनृप तनुत्यागा। चित्रकूट गये भरत सुभागा ॥ धधा धरीपावरीशिरअतिप्रेमा। आइ अवधपुर बसे सनेमा ॥

रघुवर पंचवटीकृतवासा। असुर विनाश किये अविनासा॥ नना नारी शूर्पणखा सुनिआई। श्रुतिनासा काटे लघुभाई॥ सहसचतुर्दशराक्षसमारे। खर दूषण त्रिशिरासंहारे॥ पपा प्रकट बात रावणसुनिपाई। लै मारीच कियोमृगजाई॥ मृगमारन निकसे प्रभु जबहीं। हरीजानकी रावण तबहीं॥ फफा फिरतसिया ढूंढ़तरघुराई। देखिजटायुपितागतिपाई॥ शबरीकेफलरुचिकरिखाये। हनूमानसुग्रीवमिलाये॥ बबा बासकीन्हतहँवाँ रघुराई। सियखोजनहित कीशपठाई॥ हनुमततरिनिधि लङ्कजराई। सिय सुधिलैरघुवरहि सुनाई॥ भभा भालुकपिन्हके कटक बनाये। सागर ऊपर शिल उतराये॥ सेनसमेतउतरिरघुराई। मिलेविभीषणलङ्कापाई॥ ममा मारेउरावणसहितसहाई। लङ्काफिरिगइरामदुहाई॥ राजसमाज विभीषण दीन्हा। पुष्पविमान एक प्रभु लीन्हा॥ यया यहिविधिरणजीते रघुराई। तबहिंजानकीनिकटबुलाई॥ वामभागशोभितमहरानी। अस्तुतिकरतदेव मुनिज्ञानी॥ ररा रामचन्द्रचढ़िचलेविमाना। आय अवधपुरबजेनिशाना॥ मिले भरत पुरजनपरिवारा। गुरुपदकरहिंप्रणामअपारा॥ लला लगीसासु पदसीताजाई। सबैअशीशदेतसुखदाई॥ करैंनिछावरिआरतिमाता। निरखिनिरखिहर्षहिंद्वउभ्राता॥ ववा वैदिनधन्यघरीशुभजानी। गुरुवशिष्ठ मनमें अनुमानी॥ राजसमाजवेदविधिकीन्हा। राजतिलकरघुवरकोदीन्हा॥ शशा शोभत कनकसिंहासनरामा। शिरपरछत्रसियातनवामा॥ लषण भरत द्वउ चमर डोलावैं। जयसुरकरतसुमनवर्षावैं॥ षषा षिदमतकरैंप्रीति मनलावैं। सन्ततचरणनमें शिरनावैं॥ लक्ष्मणभरतशत्रुहनभइया। श्री हनुमानसकलसुखदइया॥ ससा सानुकूलतिनपर रघुराई। श्रीरघुवरकी प्रीतिदेखाई॥ लक्ष्मणभरतशत्रुहनभइया। निरखतजननीलेतबलइया॥ हहा हृदय माहिं जे धरिहैं ध्याना। तेनरधन्यजगतमेंजाना॥ तीनलोक मेंभयोअनन्दा। राजतभूपसियारघुनन्दा॥ दो०॥ तुलसिदासपरकरिकृपा, यहवरदीजेराम। सदारहौंसतसंगमें, चितचरणनसुखराम॥

इति श्रीगोस्वामितुलसीदासकृतरामबाराखड़ीसमाप्त॥

अथ बजरङ्गबाण ॥

दो० ॥ निश्चयप्रीति प्रतीति ते, विनय करै सनमान। त्यहिकर कारज सकल सिधि, तुरत करैं हनुमान॥ चौपाई॥ जय हनुमन्त सन्त हितकारी। सुनिलीजे प्रभु अर्ज हमारी॥ जनके काज विलम्ब न कीजे। आतुर दौरि महासुख दीजे॥ जैसे कूदि सिन्धु वहिपारा। सुरसा के हनि मुष्टिक मारा॥ आगे जाइ लङ्किनी रोका। मार्‍यो लात गई सुरलोका॥ जाइ विभीषण को सुखदीन्हा। सीता निरखि परमपद लीन्हा॥ बाग उजारि सिन्धुमहँ बोरा। अति आतुर यमकातरि तोरा॥ अक्षय कुमारहि मारिपछारा। लूम लपेटि लङ्कको जारा॥ लाह समान लङ्कजरिगयऊ। जयजय ध्वनि सुर-पुरमहँ भयऊ॥ अब विलम्ब क्यहि कारण स्वामी। कृपा करहु उर अन्त-र्यामी॥ जय लक्षमण प्राणके दाता। आतुर ह्वै दुख करहु निपाता॥ जय गिरिधर जयजय सुखसागर। सुरसमूह समरथ भटनागर॥ हनु हनु हनु हनुमन्त हठीला। यहिके मारु वज्रकर कीला॥ गदा वज्रसम यहिके मारौ। महाराज प्रभु दास उबारौ॥ ॐकार हुंकार मधावो। वज्रगदा हनु विलँब न लावो॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमन्त कपीशा। ॐ हूं हूं हूं हनुपरि शीशा॥ सत्य होहु हरि सत्य पाइकै। रामदूत धरु मारु धाइकै॥ जय हनुमन्त अनन्त अगाधा। दुख पावत जन क्यहि अपराधा॥ पूजा जप तप नेम अचारा। नहिं जानत हौं दास तुम्हारा॥ वन उपवन गिरि गृह के माहीं। तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं॥ पांयपरौं करजोरि मनावों। अ-पने काज लागि गुणगावों॥ जय अंजनीकुमार अनन्ता। शङ्करसुवन वीर हनुमन्ता॥ बदन कराल कालकुलघालक। रामसहाय दासप्रतिपालक॥ भूत प्रेत पीशाच निशाचर। अग्नी बैताल काममारी मर॥ इन्हैं मारु त्वहिं शपथ रामकी। राखु लाज मर्याद नामकी॥ जनकसुता हरिदास कहावौ। ताकी शपथ विलम्ब न लावौ॥ जय जय जय धुनि होत अकाशा। सुमिरत होत दुसह दुखनाशा॥ शरण शरण करजोरि मनावों। यहि

अवसर अब क्यहि गोहरावों ॥ उठु उठु चलु त्वहिं रामदुहाई । पांय परौं करजोरि मनाई ॥ चं चं चं चलुचपल चलन्ता । हनु हनु हनु हनु हनु हनुमन्ता ॥ हं हं हांक देत कपि चंचल । सं सं सहमि पराने खलदल ॥ अपने जनको क्यों न उबारो । सुमिरत होत अनन्द हमारो ॥ यह बजरङ्ग बाण जो जापै । ताको भूत प्रेत सब काँपै ॥ पाठकरै बजरङ्गबाणकी । हनुमत रक्षाकरैं प्राणकी ॥ यह बजरङ्गबाण ज्यहि मारै । ताहि कहौ अब कौन उबारै ॥ दो० ॥ प्रेम प्रीति धरि कपि भजै, सदा धरै उर ध्यान । त्यहिकर कारज सकल सिधि, किहेरहैं हनुमान ॥ पद ॥ पवनतनय यश जात न गायो । जिन मिलाय रघुनाथ सुकण्ठहि कपिकुलराज करायो ॥१॥ आपु उलंघि सिन्धु कौतुक में दै मुँदरी सिय शोक नशायो । बाग उजारि मारि निशिचरगण जारि लङ्कगढ़ भस्मकरायो ॥ २ ॥ धीरजदै सिय लौटि राम पहँ कुशलभाषि जलनाथ बँधायो । रिपुहि जीति दै राज विभीषण लै सियसाथ नाथ ढिग आयो ॥ ३ ॥ बहुप्रकार सनमानि राम ज्यहि निजमुख ऋणी कहायो । तासु सुयश भगवन्त कहै किमि ज्यहि भरि अङ्क राम उरलायो ॥ ४ ॥

इति श्रीगोस्वामितुलसीदासकृतबजरङ्गबाणःसमाप्तिमगात् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥



रामायणमाहात्म्य

दो० गुरु हरि[1] हर गणईश धी, सुमिरौं तुलसीदास ।
करतगोपाल महात्म्यश्री, रामायण सुखरास ॥

रामायण सुरतरु[2] की छाया ❀ दुख भय दूरि निकट[3] जो आया
सप्तकाण्ड स्कन्ध सोहाई ❀ दोहा लघु शाखा छविछाई
शुचि[4] सोरठा सीटका कोई ❀ पत्री बहु चौपाई जोई
छन्दन की शोभा अतिरूरी[5] ❀ जनु नवीन[6] अंकुर छविपूरी
अक्षर सुमन[7] रहे गहगाई ❀ अति अद्भुत सुगन्ध कविताई
विविधप्रकार अर्थ सोई फल ❀ श्रोता सुमति स्वादु जानै भल
भक्ति ज्ञान वैराग्य सरस[8] रस ❀ बीजदोय निर्गुण सर्गुण अस
मुनि भुशुण्डि शिव प्रथमहिं गाई ❀ सोइ गाई जगहेत गोसांई

---

१ विष्णु २ कल्पवृक्ष ३ पात ४ पवित्र ५ अनूठी ६ नये ७ फूल ८ रससमेत ॥

दो० तुलसिदास रामायणहिं, नहिं करते अनुसार।
कलिके कुटिल जीव ये, को करतो निस्तार॥

रामायण सुरधेनु समाना ❋ दायक अभिमत फल कल्याना
गुणसमूह कवि सकै कौनगनि ❋ जासु प्रभाव सरिस चिंतामनि
राम अयनँ रामायन आही ❋ बरणि पार पावै को ताही
रामायण अद्भुत फुलवारी ❋ सम भ्रमैर भूषित रुचिभारी
श्री रामायण जेहि घरमाहीं ❋ भूत प्रेत तहँ भूलि न जाहीं
नहिं गमि तहां दरिद्रहु केरी ❋ तहँ श्रीमहावीर की फेरी
यन्त्र मन्त्र सगुनौती जेती ❋ रामायण महँ जानिय तेती
प्रीति करै रामायण माहीं ❋ तेहि सम भाग्यवन्त कोउ नाहीं

दो० रामायण सम नाहिं कोउ, सब उपमा उपमेय।
उपमा भाषा और की, कैसे कोऊ देय॥

त्रेतामहँ भे बालमीकिमुनि ❋ ते कलियुग भे तुलसिदासपुनि
शत करोरि रामायण भाखी ❋ इन मथि सार सुसूक्ष्म राखी
प्रथमकाण्ड है बाल रसीला ❋ जन्म विवाह रामकी लीला
द्वितिय अयोध्याकाण्ड प्रकासा ❋ पितु आज्ञा रघुवर वनवासा
पुनि अरण्य किष्किन्धा भाख्यो ❋ तहँ सुग्रीव शरणमहँ राख्यो
सुन्दर सुन्दरकाण्ड सुहावन ❋ युद्धकाण्ड महँ मारेउ रावन
सप्तम उत्तर परम अनूपा ❋ उत्सव प्रभु कोशलपुर भूपा
अष्टम लवकुशकाण्ड बखाना ❋ अश्वमेध कीन्ही भगवाना
तुलसीकृत रामायण येती ❋ विविध प्रकार कथा है केती

दो० जग वारिधि को पार नहिं, ऐसो है फैलाव।
तुलसीदास कृपा करी, रचि रामायण नाव॥

श्री रामायण स्वर्ग निसैनी ❋ भक्तजनन कहँ आनँद देनी
श्री रामायण सदगुण माता ❋ अज्ञ जाहि पढ़ि होहिं सुज्ञाता

१ टेढ़े २ वाञ्छित ३ घर ४ भौंरा ५ उपमारहित ६ समुद्र ७ सीढ़ी ॥

पाप समूह तूल[1] की राशी ❀ रामायण धनंज्यकनकाशी
मोहपुंज तमकिरणि तमारी[2] ❀ कामअग्नि कहँ शीतलवारी
रामायण शशिकिरणि सुहाई ❀ संत चकोरन कहँ सुखदाई
धन्य धन्य श्रीतुलसिदास धनि ❀ जगहित रामायण राखी भनि
नीच ऊंच जेते नर[3] नारी ❀ श्रीरामायण सब कहँ प्यारी
रामायण सों नेह लगावैं ❀ अधन अपत्य सो वित्[4] सुत पावैं

दो० रामायण सों नेह किय, सिद्धि होत सब काम ।
है सब की कल्याणदा, पढ़ु सुनु लहु विश्राम ॥

निगमादि[5]क तेइ ब्रह्मकमण्डल ❀ रामायण तहँ थित गंगाजल
भागीरथ सम तुलसिदास पुनि ❀ भाषा प्रचुर कीन्ह जनु सुरधुनि[6]
होत रहै इकठांव रमायण ❀ तेहिमग आवत पापपरायण
कछुक कानमहँ परिगइ बाता ❀ चलत पंथ कहुँ भयोपपाता
गिरतहि तुरत छूटितनुगयऊ ❀ तहँ अद्भुत इक अचरज भयऊ
ताहि लेन आये यमदूता ❀ निजपाशन बाँध्यो मजबूता
अति आतुर हरिजन तहँ आये ❀ छीनिलीन्ह बहु त्रास दिखाये
रामायण पै सुनि यहि काना ❀ लै जैहैं बैठारि विमाना

दो० रामायण परताप सों, गयो पार्षदन साथ ।
दूत चले यमके सदन, खीझत मींजत हाथ ॥

निज दूतन देखेउ बिलखाता ❀ पूछी भानुतनय[8] कुशलाता
किन तुमकहँ दीन्हो दुख भाई ❀ चार[9] चतुर तुम देहु बताई
कहा कहैं तुमसों महराजा ❀ पूछत तुमहिं न आवत लाजा
कोइ इक मृत्युलोक बड़भागी ❀ तुलसीदास भयो बैरागी
रामकथा रामायण भाखी ❀ सो लोगन घर घर धरिराखी
जे जे विविध भांति के पापी ❀ मांसाहारी और सुरापी[10]
ते सब मिलि रामायण सुनिहैं ❀ कहिहैं लिखिहैं पढ़िहैं गुनिहैं

१ रुई २ सूर्य ३ मनुष्य ४ धन ५ वेदादिक ६ गंगा ७ घर ८ यमराज ९ दूत १० शराबी ॥

ते नहिं ऐहैं सदन तुम्हारे ❀ सत्य सत्य नृप वचन हमारे
दो॰ लेहु पास ये आपने, राखहु अपने पास।
अमल[1] तुम्हारो उठो अब, सुनि यम भये उदास॥
अपनी व्यथा कहै नहिं पाये ❀ तबलगि दूत और तहँ आये
कहनलगे रविसुतसों रोई ❀ तव चाकरी न हमसों होई
जग में कहूं न हुकुम तिहारो ❀ यहसुनि यम जैंकि[2] रहेउ बिचारो
अहो दूत मोहिं कहौ बुझाई ❀ किन दीन्हों मम हुकुम उठाई
कहा कहैं कछु कही न जाई ❀ तुलसिदास इकभयो गोसांई
तिनकी रामायण जग व्यापी ❀ तेइ कीन्हें पवित्र सब पापी
गये हम एक अधम[3] गृहमाहीं ❀ अति दुखभयो जात कहिनाहीं
तहँ देखेउ यक कपि बलवाना ❀ उग्र[4] रूप सदृश हनुमाना
दो॰ प्राणनको गहकी भयो, तब हम भये अति दीन।
शरण शरण तव शरणहैं, अस्तुति बहुविधि कीन॥
तब तो ह्वै प्रसन्न कपिराई ❀ हमसन पुनि परतीति कराई
धरी होइ रामायण जहँवां ❀ कबहूं भूलि न जायहु तहँवां
जे श्रोता वक्ता रामायन ❀ कबहूं मति जायहु तेहि आयन
अस हमसों कपि शपथ[5] कराई ❀ तब छूटन पायो सुनु राई
सुनि यमराज बहुत घबराये ❀ निकट बुलाइ दूत समुझाये
नाम रूप गुण कथा रामकी ❀ कियेउ न फेरी तीन धामकी
अजामील की सुरति करौजू ❀ और न कछु चितमाहिं धरौजू
थकि से रहे दूत सुनि बानी ❀ धनि धनि रामायण महरानी
दो॰ रामायण तेजश्वरी, सत भाषा शिरमौर।
यमपुर जाको शोर है, समता[6] को नहिं और॥
पातक महा लग्यो किन होई ❀ रामायण सुनि रहै न कोई
चाहै चारो फल को साधन ❀ करु रामायण को अवराधन[7]

१ राजशासन २ चकित ३ नीच ४ भयंकर ५ सौगन्द ६ बराबरी ७ पाठ॥

रामायण सुनि पाप पराने ❋ जिमिहिमऋतुमहँमशकनशाने
कलियुग तरन उपाय न कोई ❋ रामभजन रामायण दोई
कथा रमायन की जहँ होई ❋ सो गृह घर मति जानै कोई
सो घर तीर्थरूप सम भाशै ❋ तहां गये सब पातक नाशै
पाप वास देही महँ तबलग ❋ श्रीरामायण सुनै न जबलग
उदय पुरानी पुण्य होय जब ❋ रामायण महँ मन लागै तब

दो॰ रामायण के सुनतहीं, छूटि जात प्रेतत्त्व।
जाके पढ़ते सुनत ते, सूझत है परतत्त्व॥

को जानै रामायण को रस ❋ यह तो है सन्तनकी सरबस
वनँज सनेही अलिगण जैसे ❋ भक्तन प्रिय रामायण तैसे
त्यागि भक्तजन ग्रन्थ अनेकू ❋ धारण किय रामायण एकू
भक्तन कहँ है भक्ति अनूपा ❋ रसिक जनन कहँ है रसरूपा
ज्ञानमयी तिनकहँ जे ज्ञानी ❋ तुलसी तारण तरण बखानी
काम क्रोध रुजें वश संसारा ❋ औषध रामायण अनुसारा
रामायण महँ नेह न जाको ❋ जीवत शवँसम जानिय ताको
रामायण जाकहँ प्रिय नाहीं ❋ वृथा जन्म ताको जगमाहीं

दो॰ रामायण अमृत कथा, लेत न ताको स्वाद।
तिनको निश्चय जानिये, हैं पूरे मनुजाँद॥

रामायण विधि कहौं विशारद ❋ सनत्कुमार सों भाषी नारद
सहित विधान सुनै जो कोई ❋ सहज मुक्ति पावै नर सोई
कार्त्तिक माघ चैत्र चितलाई ❋ नवदिन सुनै कथा सुखदाई
ब्रह्ममुहूर्त्त समय हो जबहीं ❋ कर्म करै शौचाँदिक तबहीं
करै दन्तधावनँ लटजीरा ❋ मज्जन करै धरै मनधीरा
पुनि रामायण पुस्तक अरचै ❋ प्रेम सहित गन्धादिक चरचै
ॐ नमो नारायण मन्त्र भनीजै ❋ तीन आहुती होम करीजै

१ तदबीर २ कमल ३ भ्रमरसमूह ४ रोग ५ मुर्दासम ६ राक्षस ७ नित्यक्रिया ८ दैत्य॥

मन वच कर्म पाप तन केरे ❀ छूटि जात नहिं आवत नेरे
दो० याविधि रामायण विधिहिं, जे करिहहिं चितलाय।
रामधाम ते जाइहैं, संसृति[1] दुखहि मिटाय॥
जो कछु कारज कहँ कोउ जाई ❀ सुमिरि चलै सो यह चौपाई
प्रविशि नगर कीजै सब काजा ❀ हृदय राखि कोशलपुर राजा
जो विदेश चाहै कुशलाई ❀ तौ यह सुमिरि[2] चलै चौपाई
रथचढ़ि सियासहित दोउ भाई ❀ चले बनहिं अवधहिं[3] शिरनाई
भूत पिशाच जाहि जब लागैं ❀ यह सोरठा पढ़े सों भागैं
सो० वन्दौं पवनकुमार[4], खलवन[5] पावक[6] ज्ञानघन।
जासु हृदय आगार[7], बसहिं राम शर चाप धर॥
शत्रु निवारण चहौ जो भाई ❀ भावसहित जपु यह चौपाई
जाके सुमिरण ते रिपु नाशा ❀ नाम शत्रुहन वेद प्रकाशा
यह चौपाई जपै जो कोई ❀ अन्न आदि दुख ताहि न होई
विश्वभरण पोषण करु जोई ❀ ताकर नाम भरत अस होई
जो उत्सव चह विविध प्रकारा ❀ करु यह चौपाई अनुसारा
जब ते राम ब्याहि घर आये ❀ नित नवमङ्गल मोद बधाये
जो चाहै जगमहँ जय भाई ❀ अस्थिर है जपु यह चौपाई
सखा धर्ममय अस रथ जाके ❀ जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके
हैं बहुभांति कार्य जगमाहीं ❀ रामायण सों सब है जाहीं
दो० सकल भांति मनकामना, यह दोहा दातार[8]।
रामायण महँ खोजिकरि, करु याको अनुसार॥
वह शोभा सुसमाज सुख, कहत न बनै खगेश।
बरणैं शारद शेष श्रुति, सो रस जानु महेश॥
बरणौं एक रुचिर इतिहासा ❀ तुलसिदास जो कीन्ह तमासा
द्राविड़ अरु काशी महिपाला ❀ कहुँ एकत्र रहे कछु काला

१ जन्म मरण २ यादकर ३ अयोध्या ४ हनुमान् ५ दुष्ट ६ अग्नि ७ मन्दिर ८ देनेवाला॥

अतिशय प्रीति बढ़ी दुहुँमाहीं ❋ मन में कपट लेश कछु नाहीं
गर्भवती दोऊ नृप नारी ❋ चली बात दोउन कहिडारी
द्राविड़ कही बात सुखरासी ❋ सुनहु नृपति काशी के वासी
जन्मै तव सुत सुता हमारे ❋ अथवा मम सुत सुता तिहारे
अस संयोग होइ जो नाहू ❋ हम तुम करहिं विवाह उछाहू
सौहैं करि यह बात दृढ़ाई ❋ सन्तत प्रीति रही अब भाई
सुखद समय आयो जब सोऊ ❋ निजनिज भवन गये नृपदोऊ

सो० कन्या भई दुहु ओर, जानी जात न दैवगति।
कहि पठयो सुत मोर, द्रविड़ दूत काशी गये॥

यह छल होतभयो जिहि लाई ❋ सो वह हेतु कहौं मैं गाई
द्राविड़पति निज गृह आयो जब ❋ रानीसों अस कहतभयो तब
जो होई कन्या दुहु ओरा ❋ तौ मैं प्राण तजब बरजोरा
सुनि रानी राजा मुखबानी ❋ मनमहँ बहुत भांति भयमानी
उपरोहितकहँ लिहिसि बुलाई ❋ नृप दुराय यह बात बुझाई
मम अहिवात तुम्हारे हाथा ❋ नहिं तौ प्रभु मैं होब अनाथा
रानी द्रव्य दीन्ह नहिं थोरी ❋ भइ मायावश द्विजमतिभोरी
सेवक सेवकायनवश कीन्हेसि ❋ आदर मान दान बहुदीन्हेसि

दो० सेवक एक दीन्ह तेहिं, वाराणसी बसाय।
तेहि ते पायसि खबरिसब, तबयहुकिहिसिउपाय॥

पुत्र नाम धरि गुप्त रखायो ❋ द्वादश वर्ष न द्वार दिखायो
विदुर्षन कहेहु न कोऊ देखे ❋ ब्याह समय सब कोऊ पेखे
मित्रमिलनहित चित अनुराग्यो ❋ नेगी पठै ब्याह पुनि मांग्यो
अति आनन्द चल्यो मगवेगी ❋ काशी नृपपहँ आयो नेगी
नृप मनमुदित पत्रिका बांची ❋ लै आवो बरात रँगराची
आयो ब्याहन द्राविड़राजा ❋ खुलीबात उपजी अतिलाजा

१ रानी २ पुत्र ३ कन्या ४ कारण ५ ब्राह्मण ६ दास ७ काशी ८ पण्डितों ने॥

क्रोधातुर काशी अवनीशा ❀ कह कटिहौं द्राविड़कर शीशा
यहसुनिद्राविड़अधिकडेरानेउ ❀ निजछलसमुझिसमुझिपछितानेउ
दो॰ अतिसंभीत अतिदीन ह्वै, गो जहँ तुलसीदास।
पाहि पाहि कहि पांयपरि, कहेउ करौ दुखनास॥
तब काशी नृपकहँ बुलवायो ❀ तुलसिदास हितकर समुझायो
सुतकहिसुता जो ब्याहन आयो ❀ होय पुत्र तौ होय बधायो
जो यह पुत्र होय महराजा ❀ करिय विवाह साजि सबसाजा
तुलसिदास वेदी विरचाई ❀ तहँ गणेश गौरी पधराई
सिंहासनपै धरि रामायण ❀ नवदिन भरि कीन्हीं पारायण
जो कन्या वरवेष बनायो ❀ ताही को सन्मुख बैठायो
वक्ता आप सो श्रोता भई ❀ दुनिया तहँ देखन सब गई
कथा सकलै जब बांचि सुनाई ❀ तासु शीश कर धरेउ गोसांई
दो॰ अरु यह चौपाई पढ़ी, रामै सुमिरि प्रसन्य।
तिहि अवसर वर ह्वै गयो, श्रीरामायण धन्य॥
मंत्रमहामणि विषय ब्यालके ❀ मेटत कठिन कुअंक भालके
रामायण जब कही गोसांई ❀ प्रगटन हित काशी फिर आई
आदरकीन्ह न पण्डित काऊ ❀ कहैं जो हम सो करौ उपाऊ
जहँ अस्थान कहैं तहँ जाहू ❀ पोथी अब न देखावहु काहू
श्रीआनँदकानन ब्रह्मचारी ❀ हम शिरमौर सुमहिमाभारी
जो याको वे आदर करिहैं ❀ तौ हम सब लै शीशहि धरिहैं
गण आनँदकानन पहँ ततपर ❀ करत प्रशंसैं प्रसन्न परसपर
पोथीकी चरचा पुनि कीन्ही ❀ देखनहेतु सो लै धरिलीन्ही
कछु दिन पढ़ी सहित अनुरागन ❀ गये गोसाईं पोथी माँगन
दो॰ पोथी दइ अरु अस कहेउ, होई आदर लोक।
निजप्रमाणकरि लिखिदियो, इक अद्भुतश्लोक॥

१ बहुतडर २ स्थापित ३ सामने ४ संपूर्ण ५ सर्प ६ माथा ७ प्रतिष्ठा॥

श्लो० आनन्दकानने ह्यस्मिञ्जङ्गमस्तुलसीतरुः।
कविता मञ्जरी यस्या रामभ्रमरभूषिता ॥ १ ॥

छं० धनिधन्यतुलसीदास जिन जगहेतु रामायणभनी।
माहात्म्यअमितनकहिसकौंरसविषयमहँमोंमतिसनी॥
निजबुद्धिके अनुसार कहि गोपाल सतगुरु की दया।
रघुवीर यशकी अधिकता श्रीसंतजन करिहैं मया॥

दो० श्रीमत तुलसीदासजी, ह्वै प्रसन्न वरदेहु।
रामायण माहात्म्य सों, हरिजन करहिं सनेहु॥
संवत वसु८ नभ० नन्द९ कू१, मार्गशुक्ल गुरुवार।
एकादशि कहँ कीन्ह मैं, अपनी मति अनुसार॥
रामकोट श्री अवधपुर, स्वामी रामप्रसाद।
तिनकी महिमा को कहै, विश्वविदित मर्याद॥
तिन ते गादी पाँचई, सो स्वामी मैं दास।
लषणपुरीममजन्मक्षिति, रामनगर के पास॥
मोजमनगर प्रसिद्ध द्विज, उत्तम पूरनदास।
तस्यात्मज गोपालकृत, यह महात्म्य इतिहास॥

इति श्रीद्विजगोपालदासकृतरामायणमाहात्म्यं संपूर्णम् ॥

एकश्लोकी रामायण ॥

आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगं काञ्चनम्।
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम्॥
बालीनिर्दलनं समुद्रतरणं लङ्कापुरीदाहनम्।
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननं एतद्धि रामायणम्॥ १॥

एकश्लोकी भागवत ॥

आदौ देवकिदेवगर्भजननं गोपीगृहे वर्द्धनम् ।
मायापूतनजीवतापहरणं गोवर्द्धनोद्धारणम् ॥
कंसच्छेदनकौरवादिहननं कुन्तीसुतान्पालनम् ।
एतद्भागवतं पुराणकथितं श्रीकृष्णलीलामृतम् ॥ १ ॥

सप्तश्लोकी गीता ॥

ॐमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ॥ यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥ १ ॥ स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च ॥ रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घाः ॥ २ ॥ सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ॥ सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥ ३ ॥ कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः ॥ सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥ ४ ॥ ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ॥ छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥ ५ ॥ सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च ॥ वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् ॥ ६ ॥ मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ॥ मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः ॥ ७ ॥

इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे सप्तश्लोकी गीता सम्पूर्णा ॥

रा० बा० चि० नं० १



श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीगोस्वामि

तुलसीदासकृत रामायण

बालकाण्ड प्रारम्भः ।

मङ्गलाचरणे गणेशदेवादिवन्दना ।

श्लोक ॥ वर्णानामर्थसङ्घानां रसानां छन्दसामपि ॥ मङ्गलानाञ्च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥ १ ॥ भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ॥ याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तस्थमीश्वरम् ॥ २ ॥ वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शङ्कररूपिणम् ॥ यमाश्रितो हि वक्रोपि चन्द्रस्सर्वत्र वन्द्यते ॥ ३ ॥ सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ ॥ वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ॥ ४ ॥ उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम् ॥ सर्वश्रेयस्करीं सीतान्नतोहं रामवल्लभाम् ॥ ५ ॥ यन्मायावशवर्त्तिविश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवाः सुरा यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः ॥ यत्पादप्लवमेकमेवहि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां वन्देहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम् ॥ ६ ॥ नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोपि॥ स्वान्तस्सुखाय तुलसीरघुनाथगाथाभाषानिबन्धमतिमञ्जुलमातनोति ॥ ७ ॥

सो॰ज्यहिसुमिरतसिधिहोइ, गणनायक करिवरवदन।
करहु अनुग्रह सोइ,बुद्धिराशिशुभगुणसदन॥
मूक होहिं वाचाल, पंगु चढ़ैं गिरिवर गहन।
जासु कृपा सुदयाल,द्रवौसकलकलिमलदहन॥
नील सरोरुह श्याम, तरुणअरुणवारिजनयन।
करहु सो मम उरधाम, सदा क्षीरसागरशयन॥
कुंद इंदु सम देह, उमारमणकरुणाअयन।
जाहि दीन पर नेह, करहु कृपा मर्द्दन मयन॥
वंदौं गुरु पद कंज, कृपासिन्धु नररूप हरि।
महा मोह तम पुंज,जासुवचनरविकरनिकर॥

वंदौं गुरुपद पद्म परागा ❀ सुरुचिसुवास सरस अनुरागा
अमिय मूरिमय चूरण चारू ❀ शमन सकल भवरुज परिवारू
सुकृतशम्भु तन विमल विभूती ❀ मंजुल मंगल मोद प्रसूती
जनमन मंजु मुकुर मलहरणी ❀ कियेतिलक गुणगणवशकरणी
श्रीगुरु पदनखमणिगण जोती ❀ सुमिरत दिव्यदृष्टि हियहोती
दलन मोहतम सोसु प्रकासू ❀ बड़े भाग्य उर आवहिं जासू
उघरहिं विमल विलोचन हियके ❀ मिटहिं दोषदुख भवरजनीके
सूझहिं रामचरित मणिमानिक ❀ गुप्तप्रकट जहँ जोजेहिखानिक

दो॰यथासुअंजन आंजिदृग, साधक सिद्ध सुजान।
कौतुक देखहिं शैल वन, भूतल भूरि निधान॥

गुरुपद रज मृदु मंजुल अंजन ❀ नयनअमिय दृगदोष विभंजन
तेहिकरिविमलविवेकविलोचन ❀ वरणौं रामचरित भवमोचन
वंदौं प्रथम महीसुर चरणा ❀ मोह जनित संशँय सब हरणा
सुजनसमाज सकल गुणखानी ❀ करौं प्रणाम सप्रेम सुबानी

१ गणेश २ गूंगा ३ कामदेव ४ रात्रि ५ नयनामृत नाम अंजन ६ ब्राह्मण ७ सन्देह॥

साधु चरित शुभसरिस कपासू ❀ निरस विशद गुणमयफलजासू
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा ❀ वंदनीय जेहि जग यश पावा
मुद मंगल मय सन्त समाजू ❀ जो जग जंगम तीरथराजू
रामभक्ति जहँ सुरसरि धारा ❀ सरस्वति ब्रह्म विचार प्रचारा
विधिनिषेधमय कलिमलहरणी ❀ कर्म्मकथा रविनंदिनि वरणी
हरि हर कथा विराजत बेनी ❀ सुनत सकल मुदमंगल देनी
वटविश्वास अचल निज धर्म्मा ❀ तीरथराज समाज सुकर्म्मा
सबहिं सुलभ सबदिन सबदेशा ❀ सेवत सादर शमन कलेशा
अकथ अलौकिक तीरथराऊ ❀ देइ सद्य फल प्रकट प्रभाऊ

दो०सुनिसमुझहिंजनमुदितमन, मज्जहिंअतिअनुराग।
लहहिं चारिफल अछततनु, साधु समाज प्रयाग॥

मज्जन फल देखिय ततकाला ❀ काक होहिं पिक बकहु मराला
सुनि आश्चर्यकरहि जनि कोई ❀ सतसंगति महिमा नहिं गोई
बालमीकि नारद घटयोनी ❀ निजनिजमुखन कहीनिजहोनी
जलचर थलचर नभचर नाना ❀ जे जड़ चेतन जीव जहाना
मति कीरति गति भूति भलाई ❀ जब जेहि यतन जहां जेहिपाई
सो जानब सतसंग प्रभाऊ ❀ लोकहु वेद न आन उपाऊ
बिनु सतसंग विवेक न होई ❀ रामकृपा बिनु सुलभ न सोई
सतसंगति मुद मंगल मूला ❀ सोइफलसिधि सबसाधन फूला
शठ सुधरहिं सतसंगति पाई ❀ पारस परसि कुधातु सुहाई
विधिवश सुजन कुसंगति परहीं ❀ फणिमणिसमनिजगुणअनुसरहीं
विधिहरिहर कविकोविदबानी ❀ कहत साधु महिमा सकुचानी
सो मोसन कहिजात न कैसे ❀ शाँकवणिक मणिगुणगण जैसे

दो०वन्दौं सन्त समानचित, हित अनहित नहिं कोउ।
अंजलिगतशुभसुमनजिमि, समसुगन्ध करदोउ॥

१ गंगाजी २ यमुनाजी ३ हंस ४ अगस्त्य ५ लोहा ६ सर्प ७ शाकका बेचनेवाला॥

सन्त सरलचित जगत हित, जानि सुभाव सनेहु।
बाल विनय सुनि करि कृपा, रामचरण रति देहु॥
बहुरि वंदि खलगण सति भाये ❀ जे बिनु काज दाहिने बांये
परहित हानि लाभ जिन केरे ❀ उजरे हर्ष विषाद बसेरे
हरि हर यश राकेश[1] राहुसे ❀ परअकाज भट सहसबाहुसे
जे परदोष लखहिं सहसाखी ❀ परहित घृत जिनके मनमाखी
तेज कृशानु[2] रोष महिषेशा[3] ❀ अघअवगुण धनधनिक धनेशा[4]
उदय केतु सम हित सबहीके ❀ कुम्भकरण सम सोवत नीके
पर अकाज लगि तनु परिहरहीं ❀ जिमिहिमउपल कृषीदलिगरहीं
वन्दौं खल जस शेष सरोषा ❀ सहस वदन वरणैं परदोषा
पुनि प्रणवौं पृथुराज समाना ❀ पर अघ सुनैं सहसदशकाना
बहुरि शक्र सम विनवौं तेही ❀ संतत सुरानीक हित जेही
वचन वज्र जेहि सदा पियारा ❀ सहस नयन परदोष निहारा
दो॰ उदासीनअरिमीत हित, सुनतजरहिंखलरीति।
जानुपाणियुगजोरिकरि, विनती करौं सप्रीति॥
मैं आपनि दिशि कीन्ह निहोरा ❀ ते निज ओर न लाउब भोरा
वायस पालिय अति अनुरागा ❀ होहिंनिरामिष कबहुँ कि कागा
वन्दौं सन्त असज्जन चरणा ❀ दुखप्रद उभय बीच कछु वरणा
बिछुरत एक प्राण हरिलेहीं ❀ मिलत एक दारुण दुखदेहीं
उपजहिं एक संग जलमाहीं ❀ जलजजोंकजिमिगुणबिलगाहीं
सुधा सुरा सम साधु असाधू ❀ जनक एकजग जलधि अगाधू
भलअनभल निजनिजकरतूती ❀ लहत सुयश अपलोक[5] विभूती
सुधा सुधाकर[6] सुरसरि[7] साधू ❀ गरलअनल[8]कलिमलसरिव्याधू
गुण अवगुण जानत सब कोई ❀ जो जेहि भाव नीक तेहि सोई
दो॰ भले भलाई पै लहहिं, लहहिं निचाई नीच।

१ चन्द्रमा २ अग्नि ३ यमराज ४ कुबेर ५ निन्दा ६ चन्द्रमा ७ गंगाजी ८ अग्नि॥

सुधा[1] सराहिय अमरता, गरल[2] सराहिय मीच ॥
खल अघ अगुण साधु गुणगाहा ❀ उभय अपार उदधि[3] अवगाहा
तेहिते कछु गुण दोष बखाने ❀ संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने
भलेउ पोच सब विधि उपजाये ❀ गनि गुण दोष वेद बिलगाये
कहहिं वेद इतिहास पुराना ❀ विधि प्रपंच गुण अवगुणसाना
दुख सुख पाप पुण्य दिनराती ❀ साधु असाधु सुजाति कुजाती
दानव देव ऊंच अरु नीचू ❀ अमिय सजीवनि माहुर मीचू
माया ब्रह्म जीव जगदीशा ❀ लक्षि अलक्षि रंक अवनीशा
काशि मगह सुरसरि क्रमनाशा ❀ मरु मालव महिदेव[4] गवाशा[5]
स्वर्ग नरक अनुराग विरागा ❀ निगमागम गुण दोष विभागा
दो० जड़ चेतन गुणदोषमय, विश्व कीन्ह करतार ।
संत हंस गुण गहहिं पय[6], परिहरि वारि विकार ॥
अस विवेक जब देहि विधाता ❀ तब तजि दोष गुणहि मनराता
काल स्वभाव कर्म बरिआई ❀ भलेउ प्रकृतिवश चूक भलाई
सो सुधारि हरिजन जिमिलेहीं ❀ दलि दुख दोष विमलयश देहीं
खलउ करहिं भलपाइ सुसंगू ❀ मिटहि न मलिनस्वभावअभंगू
लखि सुवेष जगवंचक[7] जेऊ ❀ वेष प्रताप पूजियत तेऊ
उघरे अन्त न होइ निबाहू ❀ कालनेमि जिमि रावण राहू
किये कुवेष साधु सनमानू ❀ जिमि जग जामवन्त हनुमानू
हानि कुसंग सुसंगति लाहू ❀ लोकहु वेद विदित सब काहू
गगन चढ़ै रज पवन प्रसंगा ❀ कीचइ मिलइ नीच जलसंगा
साधु असाधु सदन शुकसारी ❀ सुमिरहिं राम देहिं गनिगारी
धूम कुसंगति कारिख होई ❀ लिखिय पुराण मंजु मसि सोई
सोइ जल अनल अनिल[8] संघाता ❀ होइ जलद जगजीवन दाता
दो० ग्रह भेषज[9] जल पवन पट, पाइ कुयोग सुयोग ।

१ अमृत २ विष ३ समुद्र ४ ब्राह्मण ५ कसाई ६ दूध ७ पाखण्डी ८ हवा ९ औषध ॥

होइ कुवस्तु सुवस्तुजग, लखहिं सुलक्षणलोग ॥
समप्रकाश तम पाखदुहुँ, नामभेद विधि कीन्ह ।
शशिपोषकशोषकसमुझि,जगयशअपयशदीन्ह॥
जड़ चेतन जग जीव जे, सकल राम मय जानि ।
वन्दौं सबके पद कमल, सदा जोरि युगपानि ॥
देव दनुज नर नाग खग, प्रेत पितर गंधर्व ।
वन्दौं किन्नर रजनिचर[1], कृपा करहु अब सर्व ॥

आकर चारिलाख चौरासी ❀ जातिजीव नभ जल थलबासी
सीयराम मय सब जग जानी ❀ करौं प्रणाम जोरि युग पानी
जानि कृपा करि किंकर मोहू ❀ सबमिलि करहु छांड़िछलछोहू
निज बलबुधिभरोसमोहिंनाहीं ❀ ताते विनय करहुँ सब पाहीं
करनचहौं रघुपति गुण गाहा ❀ लघुमतिमोरि चरित अवगाहा[2]
सूझ न एकौ अंग उपाऊ ❀ मन मति रंक[3] मनोरथ राऊ
मतिअतिनीच ऊंचरुचि आछी ❀ चहियअमिय जग जुरै न छाछी
क्षमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई ❀ सुनिहहिं बालवचन मनलाई
ज्यों बालक कह तोतरिबाता ❀ सुनहिंमुदितमन पितुअरुमाता
हँसिहहिं कूर कुटिल कुविचारी ❀ जे परदूषण भूषण धारी
निजकवित्त केहिलाग न नीका ❀ सरस होउ अथवा अतिफीका
जे परभणित[4] सुनत हरषाहीं ❀ ते वर पुरुष बहुत जग नाहीं
जग बहु नर सुरसरि सम भाई ❀ जे निजबाढ़ि बढ़हिं जलपाई
सज्जन सकृत सिन्धु[5] समकोई ❀ देखि पूर विधु बाढ़इ जोई

दो० भाग छोट अभिलाष बड़, करौं एक विश्वास ।
पैहहिंसुखसुनिसुजनजन, खलकरिहैंउपहास॥

खल परिहास होत हितमोरा ❀ काककहहिं कलकण्ठ[6] कठोरा

१ निशाचर २ अथाह ३ कंगाल ४ दूसरेका कहाहुआ ५ समुद्र ६ कोकिला ॥

हंसहि बक दादुर चातकही ❀ हँसहिंमलिनखलविमलबतकही
कवित रसिक न रामपद नेहू ❀ तिनकहँ सुखद हास्यरस एहू
भाषा भणित मोरिमति भोरी ❀ हँसिबे योग्य हँसें नहिं खोरी
प्रभुपदप्रीति न सामुझिनीकी ❀ तिनहिंकथासुनिलागिहिफीकी
हरिहरपदरति मति न कुतरकी ❀ तिनकहँ मधुरकथा रघुवरकी
रामभक्ति भूषित जिय जानी ❀ सुनिहहिं सुजन सराहिसुबानी
कवि न होउँ नहिं चतुरप्रवीना ❀ सकल कला सब विद्याहीना
आखर अर्थ अलंकृत नाना ❀ छन्द प्रबन्ध अनेक विधाना
भाव भेद रस भेद अपारा ❀ कवितदोष गुण विविधप्रकारा
कवित विवेक एक नहिं मोरे ❀ सत्यकहौं लिखि कागदकोरे

दो०भणित मोरि सबगुणरहित, विश्वविदित गुण एक।
सो विचारिसुनिहहिंसुमति, जिनके विमल विवेक॥

यहिमहँ रघुपति नाम उदारा ❀ अति पावन पुराणश्रुतिसारा
मंगल भवन अमंगलहारी ❀ उमासहित जेहिजपु त्रिपुरारी
भणितविचित्र सुकविकृतजोऊ ❀ रामनाम बिनु सोह न सोऊ
विधुवदनी सब भांति सँवारी ❀ सोह न वसन विना वरनारी
सबगुणरहित कुकविकृतबानी ❀ रामनाम यश अंकित जानी
सादर कहहिं सुनहिं बुधताही ❀ मधुकर सरिस सन्तगुणग्राही
यदपि कवित गुण एकौ नाहीं ❀ राम प्रताप प्रकट यहि माहीं
सोइ भरोस मोरे मन आवा ❀ केहि न सुसंग बड़ापन पावा
धूमउ तजै सहज करुआई ❀ अगुरु प्रसंग सुगन्ध बसाई
भणित भदेश वस्तु भलि वरणी ❀ राम कथा जग मंगलकरणी

छं०मंगलकरणिकलिमलहरणितुलसीकथारघुनाथकी
गतिकूरकवितासरित की ज्यों परमपावन पाथकी॥
प्रभुसुयशसंगतिभणितभलि होइहिसुजनमनभावनी।

१ संसार २ ज्ञान ३ पुराण व वेदका सारांश ४ चिह्नित ५ भ्रमर ६ मिलाप॥

भवअंगभूति मसानकी सुमिरत सुहावनि पावनी ॥
दो॰प्रियलागिहिअतिसबहिंमम, भणितरामयशसंग ।
दारु विचारु कि करइ कोउ, वन्दियमलयप्रसंग ॥
श्यामसुरभिपयविशदअति, गुणदकरहिंतेहिपान ।
गिराग्राम सियराम यश, गावहिंसुनहिंसुजान ॥
मणि माणिक मुक्ताछवि जैसी ❀ अहिगिरिगजशिरसोह न तैसी
नृप किरीट तरुणी तनु पाई ❀ लहहिं सकल शोभा अधिकाई
तैसहि सुकवि कवित बुधकहहीं ❀ उपजहिंअनतअनतछविलहहीं
भक्तिहेतु विधि भवन विहाई ❀ सुमिरत शारद आवतधाई
रामचरितसरँ बिनु नहवाये ❀ सो श्रम जाइ न कोटि उपाये
कविकोविद अस हृदय विचारी ❀ गावहिं हरिगुण कलिमलहारी
कीन्हे प्राकृत जन गुणगाना ❀ शिरधुनिगिरालगतिपछिताना
हृदय सिन्धु मति सीप सुजाना ❀ स्वाती शारद कहहिं समाना
जो वरषै वरवारि विचारू ❀ होहिं कवित मुक्तामणिचारू
दो॰युक्ति बेधि पुनि पोहिये, राम चरित वरताग ।
पहिरहिंसज्जनविमलउर, शोभा अति अनुराग ॥
जे जनमे कलिकाल कराला ❀ करतब वायसँ वेष मराला
चलत कुपन्थ वेद मग छांड़े ❀ कपट कलेवर कलिमल भांड़े
वञ्चकँ भक्त कहाइ रामके ❀ किंकँर कंचन कोह कामके
तिनमहँ प्रथम रेख जग मोरी ❀ धृक धर्मध्वज धन्धक धोरी
जो अपने अवगुण सब कहऊं ❀ बाढ़ै कथा पार नहिं लहऊं
ताते मैं अति अल्पँ बखाने ❀ थोड़े महँ जानिहहिं सयाने
समुझिविविधविधिविनतीमोरी ❀ कोउ न कथा सुनिदेइहिखोरी
एतहु पर करिहहिं जे शङ्का ❀ मोहिंते अधिक तेजड़मतिरङ्कँ
कवि न होउँ नहिं चतुर कहाऊं ❀ मति अनुरूप रामगुण गाऊं

१ कहीहुई २ सरस्वती ३ तालाव ४ काक ५ छली ६ दास ७ सूक्ष्म ८ दरिद्री ॥

कहँ रघुपति के चरित अपारा ❁ कहँ मति मोरि निरत संसारा
जेहि मारुत[1] गिरिमेरु उड़ाहीं ❁ कहहु तूल[2] केहि लेखे माहीं
समुझत अमित[3] राम प्रभुताई ❁ करत कथा मन अतिकदराई

दो॰ शारद शेश महेश विधि, आगम निगम पुरान।
नेति नेति कहि जासुगुण, करहिं निरन्तरगान॥

सब जानत प्रभु प्रभुता सोई ❁ तदपि कहे बिनु रहा न कोई
तहां वेद अस कारण राखा ❁ भजनप्रभाव भांति बहुभाखा
एक अनीह[4] अरूप अनामा ❁ अज सच्चिदानन्द परधामा
व्यापक विश्वरूप भगवाना ❁ तेइ धरि देह चरित कृतनाना
सो केवल भक्तन[5] हित लागी ❁ परमकृपालु प्रणत अनुरागी
जेहि जनपर ममता अरु छोहू ❁ तेहि करुणानिधिकीन्ह न कोहू
गई बहोरि गरीब निवाजू ❁ सरल सबल साहिब रघुराजू
बुधवरणहिं हरियश असजानी ❁ करहिं पुनीत सफल निजबानी
तेहिबल मैं रघुपति गुणगाथा ❁ कहिहौं नाइ रामपद माथा
मुनिन प्रथम हरि कीरति गाई ❁ तेहिमगु चलत सुगममोहिंभाई

दो॰ अति अपार ते सरितवर, जे नृप सेतु कराहिं।
चढ़िपिपीलिका[6] परमलघु, बिनुश्रमपारहि जाहिं॥

यहिप्रकार बल मनहिं दिखाई ❁ करिहौं रघुपति कथा सुहाई
व्यास आदि कविपुंगव[7] नाना ❁ जिनसादर हरिचरित बखाना
चरण कमल वन्दौं सब केरे ❁ पुरवहु सकल मनोरथ मेरे
कलिके कविन करौं परणामा ❁ जिन वरणे रघुपति गुणग्रामा[8]
जे प्राकृत कवि परम सयाने ❁ भाषा जिन हरिचरित बखाने
भये जे अहहिं जे ह्वैहैं आगे ❁ प्रणवउँ सबहिं कपट छल त्यागे
होउ प्रसन्न देहु वरदानू ❁ साधु समाज भणित[9] सनमानू
जो प्रबन्ध बुध नहिं आदरहीं ❁ सो श्रम बादि बालकवि करहीं

१ वायु २ रुई ३ अथाह ४ चेष्टारहित ५ भक्त ६ चींटी ७ श्रेष्ठ कवि ८ गुणोंके समूह ९ कही॥

कीरति भणित भूति भलि सोई ❀ सुरसरि सम सबकहँ हितहोई
राम सुकीरति भणित भदेशा ❀ असमंजस असमोहिं अँदेशा
तुम्हरी कृपा सुलभ सब मोरे ❀ सियनि सुहावनि टाट पटोरे
करहु अनुग्रह अस जियजानी ❀ विमल यशहि अनुहरैसुबानी

दो॰ सरलकवितकीरतिविमल, सोइ आदरहिं सुजान।
सहज वैर बिसराय रिपु, जोसुनि करहिंबखान॥
सोनहोइबिनुविमलमति, मोहिंमतिबलअतिथोर।
करहुकृपा हरियशकहौं, पुनि पुनि करहुँ निहोर॥
कवि कोविद रघुवर चरित, मानसमंजु मराल।
बालविनयसुनि सुरुचिलखि, मोपर होहु कृपाल॥

सो॰ वन्दौं मुनिपदकंजु, रामायण जिन निर्मयउ।
सखरसं कोमल मंजु, दोषरहित दूषण सहित॥
वन्दौं चारहु वेद, भववारिधि बोहितं सरिस।
जिनहिंनसपनेहुँखेद, वरणतरघुपति विमलयश॥
वन्दौं विधिपद रेनु, भवसागर जिन कीन्ह यह।
संत सुधा शशिधेनु, प्रकटे खल विष वारुणी॥

दो॰ विबुध विप्रबुध ग्रहचरण, वन्दि कहौं करजोरि।
ह्वै प्रसन्न पुरवहु सकल, मञ्जु मनोरथ मोरि॥

पुनि वन्दौं शारद सुरसरिता ❀ युगल पुनीत मनोहर चरिता
मज्जन पान पापहर एका ❀ कहत सुनत इक हर अविवेका
गुरु पितु मातु महेश भवानी ❀ प्रणऊं दीनबन्धु दिनदानी
सेवक स्वामि सखा सियपीके ❀ हितनिरुपधिसबविधितुलसीके
कलिविलोकिजगहितहरगिरजा ❀ शाबरमन्त्र जालजिनसिरजा
अनमिल आखर अर्थ न जापू ❀ प्रकटत भाव महेश प्रतापू

१ गंगाजी २ मक्खन ३ नौका ४ मदिरा ५ अज्ञान ६ समूह॥

सो महेश मोपर अनुकूला ❀ करौं कथा मुद मंगलमूला
सुमिरि शिवाशिव पाय पसाऊं ❀ वरणौं राम चरित चितचाऊं
भणितमोरि शिवकृपाविभाती ❀ शशिसमाजमिलि मनहुँसुराती
जो यहि कथहि सनेहसमेता ❀ कहिहहिं सुनिहहिं समुझिसचेता
ह्वैहहिं रामचरण अनुरागी ❀ कलिमलरहित सुमंगल भागी

दो०सपनेहुँ सांचेहु मोहिं पर, जो हर गौरि पसाउ।
तौ फुर होइ जो कहहुं सब, भाषा भणित प्रभाउ॥

वन्दौं अवधपुरी अति पावनि ❀ सरयू सरि कलिकलुषनशावनि
प्रणऊं पुर नर नारि बहोरी ❀ ममता जिनपर प्रभुहि न थोरी
सिय निन्दक अघ ओघ नशाये ❀ लोक विशोक बनाइ बसाये
वन्दौं कौशल्या दिशि प्राची ❀ कीरति जासु सकलजगमाची
जहँ प्रकट्यो रघुपति शशिचारू ❀ विश्वसुखद खलकमलतुषारू
दशरथराव सहित सब रानी ❀ सुकृति सुमंगल मूरति जानी
करौं प्रणाम कर्म मन बानी ❀ करहु कृपा सुत सेवक जानी
जिनहिंविरचिबड़भयउविधाता ❀ महिमाअवधि राम पितु माता

सो०वन्दौं अवध भुवाल, सत्य प्रेम जेहि राम पद।
बिछुरत दीनदयाल, प्रिय तन तृण इव परिहरेउ॥

प्रणवौं परिजन सहित विदेहू ❀ जिनहिं रामपद गूढ़ सनेहू
योग भोग महँ राखेउ गोई ❀ राम विलोकत प्रकटेउ सोई
प्रणवौं प्रथम भरत के चरणा ❀ जासु नेम व्रत जाइ न वरणा
रामचरण पंकज मन जासू ❀ लुब्ध मधुप इव तजै न पासू
वन्दौं लक्ष्मणपद जलजाता ❀ शीतल सुभग भक्त सुखदाता
रघुपति कीरति विमल पताका ❀ दण्डसमान भयो यश जाका
शेष सहस्र शीश जगकारन ❀ सो अवतरेउ भूमि भयटारन
सदा सो सानुकूल रह मोपर ❀ कृपासिन्धु सौमित्रि गुणाकर

१ प्रसाद २ उमंग ३ पाप ४ समूह ५ पूर्व ६ पाला ७ ढिपा ८ भ्रमर ९ कमल १० झंडी ११ गुणखानि॥

रिपुसूदन पद कमल नमामी ❋ शूर सुशील भरत अनुगामी
महावीर विनऊं हनुमाना ❋ राम जासु यश आपु बखाना

सो०वन्दौं पवनकुमार, खलवन पावक ज्ञानघन।
जासु हृदय आगार, बसहिं राम शरचाप धर॥

कपिपति ऋक्ष निशाचर राजा ❋ अंगदादि जे कीश समाजा
वन्दौं सबके चरण सुहाये ❋ अधम शरीर राम जिन पाये
रघुपति चरण उपासक जेते ❋ खग मृग सुर नर असुर समेते
वन्दौं पद सरोज सब केरे ❋ जे बिनु काम राम के चेरे
शुक सनकादि भक्त मुनिनारद ❋ जे मुनिवर विज्ञान विशारद
वन्दौं सबहिं धरणिधरि शीशा ❋ करहु कृपा जन जानि मुनीशा
जनकसुता जगजननि जानकी ❋ अतिशयप्रियकरुणानिधानकी
ताके युग[1] पद कमल मनाऊं ❋ जासु कृपा निर्मलमति पाऊं
पुनि मन वचन कर्म्म रघुनायक ❋ चरणकमल वन्दौं सब लायक
राजिव[2]नयन धरे धनु शायक ❋ भक्तविपति भंजन सुखदायक

दो०गिराअर्थजलवीचिसम, कहियत भिन्न न भिन्न।
वन्दौं सीताराम पद, जिनहिं परमप्रिय खिन्न॥

वन्दौं राम नाम रघुवरके ❋ हेतु कृशा[3]नु भानु हिमकरके
विधि हरि हरमय वेद प्रानसे ❋ अगुण अनूपम गुणनिधानसे
महा[4]मन्त्र जो जपत महेशू ❋ काशी मुक्ति हेतु उपदेशू
महिमा जासु जान गण[5]राऊ ❋ प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ
जान आदिकवि नाम प्रतापू ❋ भयउ शुद्ध करि उलटा जापू
सहसनाम सम सुनि शिववानी ❋ जपि जेई पिय संग भवानी
हर्ष हेतु हेरि हर हीको ❋ किय भूषण तियभूषण तीको
नाम प्रभाव जान शिव नीके ❋ काल[6]कूट फल दीन्ह अमीके

दो०वर्षाऋतु रघुपति भगति, तुलसीशा[7]लि सुदास।

१ दोनों २ रामचन्द्र ३ अग्नि ४ तारक ५ गणेश ६ विष ७ धान॥

राम नाम वर वरणयुग, श्रावण भादौं मास ॥
आखर मधुर मनोहर दोऊ ❋ वरण विलोचन जन जियजोऊ
सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू ❋ लोक लाहु[1] परलोक निबाहू
कहत सुनत सुमिरत सुठिनीके ❋ राम लषणसम प्रिय तुलसीके
वरणत वरण प्रीति बिलगाती ❋ ब्रह्मजीव सम सहज सँघाती
नर नारायण सरिस सुभ्राता ❋ जगपालक विशेष जनत्राता
भक्ति सुतियकलकरणविभूषण ❋ जगहितहेतु विमलविधु[2] पूषण[3]
स्वादुतोष[4]सम सुगति सुधाके ❋ कमठ शेष सम धर वसुधाके
जन मन मंजु कञ्ज मधुकरसे ❋ जीह यशोमति हरिहलधरसे

दो०एक छत्र इक मुकुटमणि, सब वर्णन पर जोउ ।
तुलसी रघुवर नामके, वर्ण विराजत दोउ ॥

समुझत सरिसनाम अरु नामी ❋ प्रीतिपरस्पर प्रभु अनुगामी
नाम रूप दोउ ईश उपाधी ❋ अकथअनादि सुसामुझिसाधी
को बड़ छोट कहत अपराधू ❋ सुनि गुणभेद समुझिहैं साधू
देखिय रूप नाम आधीना ❋ रूप ज्ञान नहिं नाम विहीना
रूप विशेष नाम बिनु जाने ❋ करतल[5]गत न परहिं पहिचाने
सुमिरिय नाम रूप बिनु देखे ❋ आवत हृदय सनेह विशेखे
नाम रूप गति अकथ कहानी ❋ समुझत सुखद न जात बखानी
अगुणसगुणबिच नामसुसाखी ❋ उभय प्रबोधक चतुर दुभाखी

दो०राम नाम मणि दीप धरु, जीह देहरी द्वार ।
तुलसी भीतर बाहिरौ, जो चाहसि उजियार ॥

नामजीह जपि जागहिं योगी ❋ विरति विरंचि प्रपंच वियोगी
ब्रह्मसुखहिं अनुभवहिं अनूपा ❋ अकथ अनामय[6] नाम न रूपा
जाना चहहिं गूढ़गति जेऊ ❋ नाम जीह जपि जानहिं तेऊ
साधक नाम जपहिं लवलाये ❋ होहिं सिद्ध अणिमादिक पाये

१ लाभ २ चन्द्रमा ३ सूर्य ४ संतोष ५ हथेली ६ रोगरहित ॥

जपहिं नाम जन आरत भारी ❋ मिटहिं कुसङ्कट होहिं सुखारी
राम भक्त जग चारि प्रकारा ❋ सुकृती चारिउ अनघ[1] उदारा
चहुँ चतुरन कहँ नाम अधारा ❋ ज्ञानी प्रभुहिं विशेष पियारा
चहुँ युग चहुँ श्रुति[2] नामप्रभाऊ ❋ कलिविशेष नहिं आन उपाऊ
दो०सकल[3] कामना हीन जे, राम भक्ति रसलीन।
नाम सुप्रेम पियूँष[4] ह्रद, जिनहुँ किये मनमीन॥
अगुण सगुण दोउ ब्रह्मस्वरूपा ❋ अकथ अगाध अनादि अनूपा
मोरे मत बड़ नाम दुहूते ❋ कियजेहियुग निजवश निजहूते
प्रौढ़ सुजनजन जानहिं जनकी ❋ कहहुँ प्रतीति प्रीतिरुचिमनकी
एक दारु गत देखिय एकू ❋ पावक युग सम ब्रह्म विवेकू
उभय अगम युग सुगम नामते ❋ कहउँ नाम बड़ ब्रह्म रामते
व्यापक एक ब्रह्म अविनाशी ❋ सत चेतन घन आनँदराशी
असप्रभु हृदय अछत अविकारी ❋ सकलजीव जग दीन दुखारी
नाम निरूपण नाम यतनते ❋ सोउ प्रकटत जिमिमोल रतनते
दो०निर्गुणते यहि भांति बड़, नाम प्रभाव अपार।
कहहुँ नाम बड़ राम ते, निजविचार अनुसार॥
राम भक्त हित नरतनु धारी ❋ सहिसङ्कट किय साधुसुखारी
नाम सप्रेम जपत अनयासा[5] ❋ भक्त होहिं मुद मंगल वासा
राम एक तापस तिय तारी ❋ नामकोटिखल कुमति सुधारी
ऋषिहित राम सुकेतुसुता[6]की ❋ सहित सेन सुत कीन्ह बेबाकी
सहित दोष दुख दास दुराशाँ[7] ❋ दलैनाम जिमिरवि निशिनाशा
भंज्यो राम आपु भवचापू ❋ भव भयभंजन नाम प्रतापू
दंडकवन प्रभु कीन्ह सुहावन ❋ जनमन अमितनामकियपावन
निशिचरनिकर[8] दले रघुनन्दन ❋ नाम सकलकलिकलुषनिकन्दन
दो०शबरी गीध सुसेवकन, सुगति दीन्ह रघुनाथ।

१ निष्पाप २ वेद ३ सम्पूर्ण ४ अमृत ५ बेपरिश्रम ६ ताड़का ७ बुरीचाह ८ समूह॥

नाम उधारे अमित खल, वेद विदित गुणगाथ॥
राम सुकंठ[1] विभीषण दोऊ ❀ राखे शरण जान सब कोऊ
नाम अनेक गरीब निवाजे ❀ लोक वेद वर विरद विराजे
राम भालु कपि कटक[2] बटोरा ❀ सेतु[3] हेतु श्रम कीन्ह न थोरा
नाम लेत भवसिन्धु सुखाहीं ❀ करहु विचार सुजन मनमाहीं
राम सकुल रण रावण मारा ❀ सीय सहित निजपुर पगुधारा
राजाराम अवध रजधानी ❀ गावत गुण सुर मुनिवर बानी
सेवक सुमिरत नाम सप्रीती ❀ बिनुश्रम प्रबल मोह दल[4] जीती
फिरत सनेह मगन सुख अपने ❀ नाम प्रताप शोच नहिं सपने
दो०ब्रह्म राम ते नाम बड़, वरदायक वरदानि।
रामचरितशतकोटिमहँ, लियमहेशजियजानि॥
नाम प्रसाद शम्भु अविनाशी ❀ साज अमङ्गल मङ्गलराशी
शुक सनकादि सिद्ध मुनि योगी ❀ नाम प्रसाद ब्रह्मसुख भोगी
नारद जानेउ नाम प्रतापू ❀ जगप्रिय हरिहर हरिप्रिय आपू
नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू ❀ भक्तशिरोमणि भे प्रहलादू
ध्रुव सगलानि जप्यो हरिनामू ❀ पायउ अचल अनूपम[5] ठामू
सुमिरि पवनसुत पावन नामू ❀ अपने वश करि राख्यो रामू
अपर अजामिल गज गणिकाऊ ❀ भये मुक्त हरिनाम प्रभाऊ
कहउँ कहां लगि नाम बड़ाई ❀ राम न सकहिं नाम गुणगाई
दो०राम नामको कल्पतरु, कलिकल्याण निवास।
जो सुमिरत भे भागते, तुलसी तुलसीदास॥
चहुँयुग तीनि काल तिहुँलोका ❀ भये नामजपि जीव विशोका
वेद पुराण सन्त मत येहू ❀ सकल सुकृतफल रामसनेहू
ध्यान प्रथम युग मखविधि दूजे ❀ द्वापर परितोषत प्रभु पूजे
कलि केवल मल मूल मलीना ❀ पाप पयोनिधि[6] जनमन मीना

१ सुग्रीव २ फ़ौज ३ पुल ४ फ़ौज ५ उपमारहित ६ समुद्र॥

नाम काम तरु काल कराला ❀ सुमिरत शमन सकलजगजाला
रामनाम कलि अभिमत दाता ❀ हित परलोक लोक पितुमाता
नहिं कलिकर्म न भक्ति विवेकू ❀ राम नाम अवलम्बन एकू
कालनेमि कलि कपट निधानू ❀ नाम सुमति समरथ हनुमानू
दो०राम नाम नरकेशरी,कनककशिपुकलिकाल।
जापकजनप्रहलादजिमि, पालहिं दलिसुरशाल॥
भावकुभाव अनख आलसहूं ❀ नामजपत मंगल दिशि दसहूं
सुमिरि सो नाम रामगुण गाथा ❀ करौं नाइ रघुनाथहि माथा
मोरि सुधारिहि सो सब भांती ❀ जासु कृपा नहिं कृपा अघाती
राम सुस्वामि सुसेवक मोसे ❀ निजदिशिदेखि दयानिधिपोसे
लोकहु वेद सुसाहिब रीती ❀ विनय सुनत पहिंचानत प्रीती
गनी गरीब ग्राम नर नागर ❀ पण्डित मूढ़ मलीन उजागर
सुकविकुकविनिजमतिअनुसारी ❀ नृपहिं सराहत सब नर नारी
साधु सुजान सुशील नृपाला ❀ ईश अंश भव परम कृपाला
सुनि सनमानहिंसबहिं सुबानी ❀ भणितभक्तिमतिगतिपहिंचानी
यह प्राकृत महिपाल स्वभाऊ ❀ ज्ञान शिरोमणि कोशलराऊ
रीझत राम सनेह निसोते ❀ को जग मन्द मलिनमति मोते
दो०शठ सेवककी प्रीति रुचि, रखिहहिं राम कृपालु।
उपलकियेजलयानजिन,सचिवसुमतिकपिभालु॥
हौंहु कहावत सब कहत, राम सहत उपहास।
साहिब सीतानाथ से, सेवक तुलसीदास॥
अति बड़ि मोरि ढिठाई खोरी ❀ सुनिअघ नरकहु नाकसिकोरी
समुझिसहमिमोहिंअपडरअपने ❀ सो सुधि राम कीन्ह नहिं सपने
सुनि अवलोकिसुचितचषचाही ❀ भक्तिमोरि मति स्वामि सराही
कहत नशाइ होइ हियनीकी ❀ रीझत राम जानि जनजीकी

१ नाशक २ वाञ्छित ३ पुरुषसिंह ४ जप करनेवाला ५ चतुर ६ शिव ७ कथित ८ पत्थर॥

रहत न प्रभुचित चूक कियेकी ❀ करत सुरति सौबार हियेकी
जेहिअघबधेउ¹ब्याधजिमिबाली ❀ फिरि सुकंठ सोइ कीन्हकुचाली
सोइ करतूति विभीषण केरी ❀ सपनेहु सो न राम हियहेरी
ते भरतहिं भेंटत सनमाने ❀ राज सभा रघुवीर वखाने

दो०प्रभु तरुतर कपि डारपर, ते किय आपु समान।
तुलसी कहूँ न राम से, साहिब शीलनिधान॥
राम निकाई रावरी, है सबही को नीक।
जो यह सांची है सदा, तौ नीको तुलसीक॥
यहिविधिनिजगुणदोषकहि, सबहिंबहुरिशिरनाय।
वरणौंरघुवर विशद यश, सुनिकलिकलुषनशाय॥

याज्ञवल्क्य जो कथा सुहाई ❀ भरद्वाज मुनिवरहि सुनाई
कहिहौं सोइ संवाद बखानी ❀ सुनहु सकल सज्जन सुखमानी
शम्भुं कीन्ह यह चरित सुहावा ❀ बहुरि कृपाकरि उमहिं सुनावा
सो शिव काकभुशुण्डिहिदीन्हा ❀ रामभक्ति अधिकारी चीन्हा
तेहिसन याज्ञवल्क्यमुनि पावा ❀ तिन पुनि भरद्वाजप्रति गावा
ते श्रोता बकता सम शीला ❀ समदर्शी जानहिं हरिलीला
जानहिं तीनिकाल निजज्ञाना ❀ करतलगत आमलक समाना
औरौ जे हरिभक्त सुजांना ❀ कहहिंसुनहिंसमुझहिंविधिनाना

दो०मैं पुनि निज गुरुसन सुनी, कथा सुशूकरखेत।
समुझि नहीं तस बालपन, तब अतिरहेउँ अचेत॥
श्रोता बकता ज्ञान निधि, कथा राम की गूढ़।
किमि समुझौं मैं जीवजड़, कलिमलग्रासितविमूढ़॥

तदपि कही गुरु बारहिंबारा ❀ समुझिपरी कछु मतिअनुसारा
भाषा बद्ध करब मैं सोई ❀ मोरे मन प्रबोध जेहि होई

१ सुग्रीव २ वृक्ष ३ फिरि ४ पाप ५ शिव ६ हथेली ७ चतुर ८ ज्ञान॥

जस कछु बुधि विवेक बल मोरे ❀ तस कहिहौं हिय हरिके प्रेरे
निज सन्देह मोह भ्रम हरणी ❀ करौं कथा भवसरिता तरणी[1]
बुध विश्राम सकल जनरञ्जनि ❀ रामकथा कलिकलुष विभञ्जनि
रामकथा कलि पन्नग भरणी ❀ पुनि विवेक पावककहँ अरणी[2]
राम कथा कलि कामदगाई ❀ सुजन सजीवनिमूरि सुहाई
सोइवसुधातल सुधातरंगिनि ❀ भवभञ्जनि भ्रमभेकभुवंगिनि
असुरसेन सम नरकनिकंदिनि ❀ साधुविबुधकुलहितगिरिनंदिनि
सन्त समाज पयोधि रमासी ❀ विश्वभारधर अचलक्षमासी
यमगणं मुहँमसि जगयमुनासी ❀ जीवनमुक्ति हेतु जनु कासी
रामहिं प्रिय पावनि तुलसीसी ❀ तुलसिदासहित हियहुलसीसी
शिवप्रिय मेकलशैलसुतासी ❀ सकलसिद्धिसुख संपति रासी[3]
सद्गुणसुरगणअम्बअदितिसी ❀ रघुवर भक्ति प्रेमपरमितिसी

दो०राम कथा मन्दाकिनी[4], चित्रकूट चित चारु[5]।
तुलसी सुभग सनेहवन, सिय रघुवीर विहारु॥

राम चरित चिन्तामणि चारू ❀ संतसुमति तियसुभग शृँगारू
जग मंगल गुण ग्राम रामके ❀ दानि मुक्ति धन धर्म्म धामके
सद्गुरु ज्ञान विराग योगके ❀ विबुध[6] वैद्य भव भीम रोगके
जननि जनक सियराम प्रेमके ❀ बीज सकल व्रत धर्म नेमके
शमन पाप संताप शोकके ❀ प्रिय पालक परलोक लोकके
सचिव सुभट भूपति विचारके ❀ कुम्भज[7] लोभउदधि अपारके
कामकोह[8] कलिमल करिगनके ❀ केहरिशावक जनमन वनके
अतिथि पूज्य प्रीतम पुरारिके ❀ कामदघन दारिद दवारिके
मन्त्रमहामणि विषय व्यालके ❀ मेटत कठिन कुअंक भालके
हरण मोह मद तम दिनकरसे[9] ❀ सेवक शालिपाल जलधरसे
अभिमत दानि देव तरुवरसे ❀ सेवतसुलभ सुखद हरिहरसे

१ नौका २ अग्नि ३ समूह ४ गंगाजी ५ सुन्दर ६ देवता ७ अगस्त्य ८ क्रोध ९ सूर्य॥

सुकवि शरदनभ मन उडुंगनसे ❀ रामभक्त जन जीवन धनसे
सकल सुकृत फलभूरि भोगसे ❀ जगहित निरुपधि साधुलोगसे
सेवक मन मानस मरालसे ❀ पावन गंग तरंग मालसे
दो०कुपथकुतर्ककुचालिकलि, कपट दम्भ पाखण्ड ।
दहन रामगुण ग्रामइमि, इन्धनअनलप्रचण्ड ॥
राम चरित राकेशकर, शरद सुखद सबकाहु ।
सज्जन कुमुद चकोर चित, हित विशेष बड़ लाहु ॥
कीन्ह प्रश्न जेहिभांति भवानी ❀ जेहिविधि शङ्कर कहा बखानी
सो सब हेतु कहब मैं गाई ❀ कथा प्रबन्ध विचित्र बनाई
जिन यह कथा सुनी नहिं होई ❀ जनि आश्चर्य करैं सुनि सोई
कथा अलौकिक सुनहिं जे ज्ञानी ❀ नहिंआश्चर्यकरहिं असजानी
रामकथा की मिति जग नाहीं ❀ असप्रतीति जिनके मनमाहीं
नाना भांति राम अवतारा ❀ रामायण शतकोटि अपारा
कल्प भेद हरिचरित सुहाये ❀ भांति अनेक मुनीशन गाये
करिय न संशय अस उरआनी ❀ सुनिय कथा सादर रतिमानी
दो०राम अनन्त अनन्त गुण, अमित कथा विस्तार ।
सुनिआश्चर्य्य न मानिहहिं, जिनकेविमलविचार॥
यहि विधि सब संशय करि दूरी ❀ शिर धरि गुरुपद पङ्कज धूरी
पुनि सबही विनवौं करजोरी ❀ करत कथा जेहिलागु न खोरी
सादर शिवहि नाइ अब माथा ❀ वरणौं विशद रामगुण गाथा
संवत सोरह सै इकतीसा ❀ करों कथा हरिपद धरि शीसा
नवमी भौमवार मधु मासा ❀ अवधपुरी यह चरित प्रकासा
जेहिदिन रामजन्म श्रुतिगावहिं ❀ तीरथ सकल तहां चलिआवहिं
असुर नाग खग नर मुनि देवा ❀ आय करहिं रघुनायक सेवा
जन्म महोत्सव रचहिं सुजाना ❀ करहिं राम कलकीरति गाना

१ नक्षत्र २ लाभ ३ तत्रज्जुब ४ बे प्रमाण ५ कमल ६ चैत्र ७ पक्षी ॥

दो०मज्जहिं सज्जन वृन्दबहु, पावन सरयू नीर।
जपहिं राम धरिध्यानउर, सुन्दर श्याम शरीर॥

दरश परश मज्जन अरु पाना ❋ हरै पाप कह वेद पुराना
नदीपुनीत अमित महिमा अति ❋ कहि न सकै शारदाविमलमति
रामधामदा पुरी सुहावनि ❋ लोकसमस्तविदितं जगपावनि
चारिखानि जगजीव अपारा ❋ अवध तजे तनु नहिं संसारा
सब विधि पुरी मनोहर जानी ❋ सकल सिद्धिप्रद मंगल खानी
विमल कथा कर कीन्ह अरम्भा ❋ सुनत नशाहिं काम मद दम्भा
रामचरित मानस यह नामा ❋ सुनत श्रवण पाइय विश्रामा
मनकर विषय अनैल वन जरई ❋ सोई सुखी जो यहि सरं परई
रामचरित मानस मुनि भावन ❋ विरचेउ शम्भु सुहावन पावन
त्रिविध दोष दुख दारिद दावन ❋ कलिकुचालकलिकलुंषनशावन
रचि महेश निज मानस राखा ❋ पाइ सुसमय शिवासन भाखा
ताते रामचरित मानस वर ❋ धरेउ नाम हियहेरि हरषि हर
कहौं कथा सोइ सुखद सुहाई ❋ सादर सुनहु सुजन मनलाई

दो०जसमानस जेहिविधि भयो, जगप्रचारं जेहिहेतु।
अबसोइ कहौं प्रसंग सब, सुमिरि उमावृषकेतु॥

शम्भुप्रसाद सुमति हिय हुलसी ❋ रामचरित मानस कवि तुलसी
करउं मनोहर मति अनुहारी ❋ सुजन सुचितसुनि लेहुसुधारी
सुमति भूमिथल हृदय अगाधू ❋ वेद पुराण उदधि घन साधू
वर्षहिं राम सुयश घनवारी ❋ मधुर मनोहर मंगलकारी
लीला सगुण जो कहहिं बखानी ❋ सोइ स्वच्छता करै मलहानी
प्रेम भक्ति जो वरणि न जाई ❋ सोइ मधुरता शीतलताई
सो जल सुकृत शालि हित होई ❋ रामभक्ति जग जीवन सोई
मेधामहिगत सो जल पावन ❋ सिमिटिश्रवणमगुचलेउसुहावन

१ समूह २ प्रकट ३ अग्नि ४ तालाब ५ पाप ६ प्रसिद्ध ७ शिव ८ समुद्र ९ जल॥

भरेउ सुमानस शिथिलथिराना ❁ सुखद शीत रुचि चारुचिराना

दो०सुठि सुन्दर संवाद वर, विरचेउ बुद्धि विचारि।
ते यहि पावन सुभग सर, घाट मनोहर चारि॥

सप्त प्रबन्ध सुभग सोपाना ❁ ज्ञान नयन निरखत मनमाना
रघुपति महिमा अगुण अबाधा ❁ वरणब सोइ वर वारि अगाधा
रामसीय सम सलिल सुधासम ❁ उपमा वीचि विलास मनोरम
पुरइनि सघन चारु चौपाई ❁ युक्ति मंजु मणि सीप सुहाई
छन्द सोरठा सुन्दर दोहा ❁ सोइ बहुरंग कमल कुल सोहा
अरथ अनूप सुभाव सुभासा ❁ सोइ परांग मकरन्द सुवासा
सुकृत पुञ्ज मंजुल अँलि माला ❁ ज्ञान विराग विचार मराला
धुनि अवरेव कवित गुण जाती ❁ मीन मनोहर ते बहुभांती
अर्थ धर्म्म कामादिक चारी ❁ कहब ज्ञान विज्ञान विचारी
नवरस जप तप योग विरागा ❁ ते सब जलचर चारु तड़ागा
सुकृती साधु नाम गुण गाना ❁ ते विचित्र जलविहँग समाना
सन्त सभा चहुँ दिशि अमराई ❁ श्रद्धा ऋतु वसन्तसम गाई
भक्ति निरूपण विविध विधाना ❁ क्षमा दया द्रुम लता विताना
संयम नियम फूल फल नाना ❁ हरिपद रति रस वेद बखाना
औरौ कथा अनेक प्रसंगा ❁ तेइ शुक पिक बहुवरण विहंगा

दो०पुलक वाटिका बाग वन, सुख सुविहंग विहारु।
माली सुमन सनेह जल, सींचत लोचन चारु॥

जे गावहिं यह चरित सँभारे ❁ ते यहि ताल चतुर रखवारे
सदा सुनहिं सादर नर नारी ❁ ते सुरवर मानस अधिकारी
अति खल जे विषयी बक कागा ❁ यहिसरनिकट न जाहिंअभागा
शम्बुक भेकँ सिवार समाना ❁ इहां न विषय कथारस नाना
तेहि कारण आवत हियहारे ❁ कामी काक बलाँक विचारे

१ सीढ़ी २ पुष्परस ३ भौंरा ४ सुन्दर ५ मानसरोवर ६ घोंघा ७ मेढ़क ८ बगुलोंकी पांति॥

आवत यहि सर अति कठिनाई ❁ राम कृपा बिनु आइ न जाई
कठिन कुसंग कुपंथ कराला ❁ तिनके वचन व्याघ्रहरि व्याला
गृह कारज नाना जंजाला ❁ तेइ अति दुर्गम शैल विशाला
वन बहु विषम मोह मद माना ❁ नदी कुतर्क भयंकर नाना

दो०जे श्रद्धा सम्बल रहित, नहिं सन्तन कर साथ।
तिनकहँमानसअगमअति, जिनहिं न प्रियरघुनाथ॥

जो करि कष्ट जाइ पुनि कोई ❁ जातहि नींद जुड़ाई होई
जड़ता जाड़ विषम उरलागा ❁ गयहु न मज्जन पाव अभागा
करि न जाइ सर मज्जन पाना ❁ फिरि आवहि समेत अभिमाना
जो वहोरि कोउ पूछन आवा ❁ सर निन्दाकरि ताहि सुनावा
सकल विघ्न व्यापहिं नहिं तेही ❁ राम सुकृपा विलोकहिं जेही
सोइ सादर सर मज्जन करई ❁ महाघोर त्रय ताप न जरई
ते नर यह सर तजहिं न काऊ ❁ जिनके रामचरण भल भाऊ
जो नहाइ चह यहि सर भाई ❁ तौ सतसंग करै मन लाई
अस मानस मानस चष चाही ❁ भइकवि बुद्धि विमल अवगाही
भयो हृदय आनन्द उछाहू ❁ उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रवाहू
चली सुभग कविता सरितासी ❁ राम विमल यश जल भरितासी
सरयू नाम सुमंगलमूला ❁ लोक वेद मत मंजुलकूला
नदी पुनीत सुमानसनन्दिनि ❁ कलिमलतृणतरुमूलनिकन्दिनि

दो०श्रोता त्रिविध समाजपुर, ग्राम नगर दुहुँकूलं।
सन्त सभा अनुपम अवध, सकल सुमंगल मूलं॥

राम भक्ति सुरसरि तहँ जाई ❁ मिली सुकीरति सरयु सुहाई
सानुज राम समर यश पावन ❁ मिलेउ महानद शोण सुहावन
युग विच भक्ति देव धुनि धारा ❁ सोहत सहित सुविरति विचारा
त्रिविध ताप त्रासक त्रिमुहानी ❁ राम स्वरूप सिन्धु समुहानी

१ कभी २ साफ़ ३ लहरि ४ किनारा ५ जड़॥

मानस मूल मिली सुरसरिही ❀ सुनत सुजन मन पावनकरिही
बिचबिच कथा विचित्र विभागा ❀ जनु सरि तीर तीर वन बागा
उमा महेश विवाह वराती ❀ ते जलचर अगणित वहुभांती
रघुवर जन्म अनन्द बधाई ❀ भ्रमर तरंग मनोहरताई
दो० बालचरित चहुँ बन्धु के, वनेज विपुल बहुरंग।
नृप रानी परिजन सुकृत, मधुकर वारि विहंग॥
सीय स्वयंवर कथा सुहाई ❀ सरित सुहावनि सो छविछाई
नदी नाव वटु प्रश्न अनेका ❀ केवट कुशल उतर सविवेका
सुनि अनुकथन परस्पर होई ❀ पथिक समाज सोह सरि सोई
घोरधार भृगुनाथ रिसानी ❀ घाट सुबन्ध रामवरबानी
सानुज राम विवाह उछाहू ❀ सो सुखउमँग सुखद सबकाहू
कहत सुनत हरषहिं पुलकाहीं ❀ ते सुकृती मन मुदित नहाहीं
रामतिलक हित मंगल साजा ❀ पर्व योग जनु जुरेउ समाजा
काई कुमति केकयी केरी ❀ परी जासु फल विपति घनेरी
दो० शमन सकल उतपात अति, भरत चरित जप याग।
कलिअघखलअवगुणकथन, ते जलमल बककाग॥
कीरति सरित छहूं ऋतुरूरी ❀ समय सुहावनि पावनि भूँरी
हिमहिमशैलसुता शिव ब्याहू ❀ शिशिर सुखद प्रभुजन्म उछाहू
वरणब राम विवाह समाजू ❀ सो मुदमंगलमय ऋतुराजू
ग्रीषम दुसह राम वनगवनू ❀ पंथ कथा खर आतप पवनू
वर्षा घोर निशाचर रारी ❀ सुरकुल शालि सुमंगलकारी
राम राज्य सुख विनय वड़ाई ❀ विशद सुखद सोइ शरद सुहाई
सती शिरोमणि सिय गुणगाथा ❀ सोइगुण अमल अनूपम पाथा
भरत सुभाव सुशीतलताई ❀ सदा एकरस वरणि न जाई
दो० अवलोकनि बोलनि मिलनि, प्रीति परस्पर हास।

१ पानी के जीव २ कमल ३ मल्लाह ४ परशुराम ५ नाशक ६ सुंदर ७ बहुत ८ वसंत ९ तेज़॥

भायप भलि चहुँ बन्धुकी, जल माधुरी सुवास ॥
आरति विनय दीनता मोरी ❀ लघुता ललित सुवारि न थोरी
अद्भुत सलिल सुनत गुणकारी ❀ आस पियास मनो मलहारी
राम सुप्रेमहिं पोषत पानी ❀ हरत सकल कलिकलुष गलानी
भव श्रम शोषक तोषक तोषा ❀ शमन दुरित दुखदारिद दोषा
काम क्रोध मद मोह नशावन ❀ विमल विवेक विराग बढ़ावन
सादर मज्जन पान कियेते ❀ मिटत पाप परिताप हियेते
जिन यहि वारि न मानस धोये ❀ तिन कायर कलिकाल बिगोये
तृषित निरखि रविकर भववारी ❀ फिरहिं मृगा जिमि जीवदुखारी
दो॰ मति अनुहारि सुवारि गुण, गणि गुणि मन नहवाइ ।
सुमिरि भवानी शंकरहिं, कह कवि कथा सुहाइ ॥
अब रघुपति पद पंकरुह, हिय धरि पाय प्रसाद ।
कहौं युगल मुनिवर्य्य कर, मिलन सुभग संवाद ॥
भरद्वाज जिमि प्रश्न किय, याज्ञवल्क्य मुनि पाय ।
प्रथम मुख्य संवाद सोइ, कहिहौं हेतु बुझाय ॥
भरद्वाजमुनि बसहिं प्रयागा ❀ तिनहिं रामपद अतिअनुरागा
तापस शम दम दयानिधाना ❀ परमारथ पथ परम सुजाना
माघ मकरगत रवि जब होई ❀ तीरथपतिहिं आव सब कोई
देव दनुज नर किन्नर श्रेणी ❀ सादर मज्जहिं सकल त्रिवेणी
पूजहिं माधव पद जलजाता ❀ परसि अक्षयवट हर्षित गाता
भरद्वाज आश्रम अति पावन ❀ परमरम्य मुनिवर मनभावन
तहां होइ मुनि ऋषयसमाजा ❀ जाहिं जे मज्जन तीरथराजा
मज्जहिं प्रात समेत उछाहा ❀ कहहिं परस्पर हरिगुणगाहा
दो॰ ब्रह्मनिरूपण धर्म्म विधि, वरणहिं तत्त्व विभाग ।
कहहिं भक्ति भगवन्तकी, संयुत ज्ञान विराग ॥

१ शोक २ कमल ३ प्रेम ४ प्रयाग ५ कथा ॥

यहि प्रकार भरि माघ नहाहीं ❀ पुनिसबनिर्जनिजआश्रमजाहीं
प्रति संवेत अस होइ अनन्दा ❀ मकरमज्जि गमनहिं मुनिवृन्दा
एक बार भरि मकर नहाये ❀ सब मुनीश आश्रमन सिधाये
याज्ञवल्क्यमुनि परम विवेकी ❀ भरद्वाज राखेउ पद टेकी
सादर चरण सरोज पखारे ❀ अतिपुनीत आसन बैठारे
करि पूजा मुनि सुयश बखानी ❀ बोले अतिपुनीत मृदुबानी
नाथ एक संशय बड़ मोरे ❀ करतल वेदतत्त्व सब तोरे
कहत मोहिं लागत भयलाजा ❀ जो न कहौं बड़होइ अकाजा

दो॰सन्तकहहिं असनीतिप्रभु, श्रुति पुराण अस गाव।
होइ न विमल विवेकउर, गुरुसन किहे दुराव॥

असविचारि प्रकटौं निजमोहू ❀ कहहु नाथ करि जनपर छोहू
राम नाम कर अमित प्रभावा ❀ सन्त पुराण उपनिषद गावा
सन्तत जपत शम्भु अविनाशी ❀ शिव भगवान ज्ञान गुणराशी
आकर चारिजीव जग अहहीं ❀ काशी मरत परमपद लहहीं
सोकि राममहिमा मुनिराया ❀ शिव उपदेश करत करिदाया
राम कवन प्रभु पूछौं तोहीं ❀ कहहु बुझाय कृपानिधि मोहीं
एक राम अवधेश कुमारा ❀ तिनकर चरित विदित संसारा
नारि विरह दुख लहेउ अपारा ❀ भयो रोष रण रावण मारा

दो॰प्रभुसोइरामकिअपरकोउ, जाहि जपत त्रिपुरारि।
सत्यधाम सर्वज्ञ तुम, कहहु विवेक विचारि॥

जैसे मिटै मोह भ्रम भारी ❀ कहहु सो कथा नाथ विस्तारी
याज्ञवल्क्य बोले मुसुकाई ❀ तुमहिं विदित रघुपति प्रभुताई
राम भक्त तुम मन क्रम बानी ❀ चतुराई तुम्हारि मैं जानी
चाहहु सुना राम गुण गूढ़ा ❀ कीन्हेउ प्रश्न मनहुँ अतिमूढ़ा
तात सुनहु सादर मनलाई ❀ कहहुँ रामकी कथा सुहाई

१ अपने २ साल ३ कोमल वाणी ४ वेद ५ लगातार ६ क्रोध ७ कर्म॥

महामोह महिषेश¹ विशाला ❀ रामकथा कालिका कराला
राम कथा शशि² किरणि समाना ❀ सन्त चकोर करहिं जेहि पाना
ऐसहि संशय कीन्ह भवानी ❀ महादेव तब कहा बखानी
दो॰ कहौं सोमतिअनुहारिअब, उमा शम्भु संवाद।
भयउसमयजेहिहेतु³ जेहि, सुनुमुनिमिटहिंविषाद॥
एक बार त्रेतायुग माहीं ❀ शम्भु गये कुम्भजऋषि पाहीं
संग सती जग जननि भवानी ❀ पूजे ऋषि अखिलेश्वर जानी
राम कथा मुनिवर्य्य बखानी ❀ सुनी महेश परम सुखमानी
ऋषि पूंछी हरिभक्ति सुहाई ❀ कही शम्भु अधिकारी पाई
कहत सुनत रघुपति गुणगाथा ❀ कछु दिन तहांरहे गिरिनाथा
मुनिसन बिदामांगि त्रिपुरारी ❀ चले भवन सँग दक्षकुमारी
तेहि अवसर भंजन महिभारा ❀ हरिरघुवंश लीन्ह अवतारा
पिता वचन तजि राज उदासी ❀ दण्डकवन विचरत अविनासी
दो॰ हृदय विचारत जात हर, केहिविधि दरशन होय।
गुप्त⁴ रूप अवतरेउ प्रभु, गये जानि सब कोय॥
सो॰ शङ्कर उर⁵ अति क्षोभ, सती न जानहिं मर्मसो।
तुलसी दरशन लोभ, मनडरलोचनलालची॥
रावण मरण मनुजकर यांचा ❀ प्रभु विधिवचनकीन्हचह सांचा
जो नहिं जाउँ रहै पछितावा ❀ करत विचार न बनत बनावा
यहिविधि भये शोचवश ईशा ❀ ताही समय जाय दशशीशा
लीन्ह नीच मारीचहि संगा ❀ भयउ तुरत सो कपटकुरंगा⁶
करि छल मूढ़ हरी वैदेही ❀ प्रभु प्रभाव तस विदित न तेही
मृगवधि बन्धु सहित प्रभुआये ❀ आश्रमदेखि नयन जलछाये
विरह विकल नर इवँ⁷ रघुराई ❀ खोजत विपिन⁸ फिरतदोउभाई
कबहुँक योग वियोग⁹ न जाके ❀ देखा प्रकट विरहदुख ताके

१ महिषासुर २ चन्द्र ३ कारण ४ छिपा हुआ ५ हृदय ६ हरिण ७ नाईं ८ वन ९ जुदाई॥

दो०अतिविचित्ररघुपतिचरित, जानहिं परम सुजान।
जे मतिमन्द विमोह वश, हृदयधरहिं कछुआन॥

शम्भु समय तेहि रामहिं देखा ❀ उपजा हिय अतिहर्ष विशेखा
भरिलोचन छविसिन्धु निहारी ❀ कुसमय जानि न कीन्हचिन्हारी
जय सच्चिदानन्द जगपावन ❀ असकहि चले मनोजनशावन
चले जात शिव सती समेता ❀ पुनिपुनि पुलकित कृपानिकेता
सती सुदशा शम्भुकी देखी ❀ उर उपजा संदेह विशेखी
शंकर जगतवन्द्य जगदीशा ❀ सुर नर मुनि सब नावतशीशा
तिन नृपसुतहि कीन्ह परणामा ❀ कहि सच्चिदानन्द परधामा
भये मगन छवि तासु विलोकी ❀ अजहुँ प्रीति उररहति न रोकी

दो०ब्रह्म जोव्यापकविरजअज, निर्गुण अकल अभेद।
सोकि देह धरि होइ नर, जाहि न जानत वेद॥

विष्णु जो सुरहित नरतनुधारी ❀ सोउ सर्वज्ञ यथा त्रिपुरारी
खोजहिं सोकि अज्ञ इव नारी ❀ ज्ञानधाम श्रीपति असुरारी
शम्भुगिरा पुनि मृषा न होई ❀ शिव सर्वज्ञ जान सब कोई
अस संशय मन भयउ अपारा ❀ होइ न हृदय प्रबोध प्रचारा
यद्यपि प्रकट न कहेउ भवानी ❀ हर अन्तरयामी सब जानी
सुनहु सती तव नारिस्वभाऊ ❀ संशय अस न धरिय उर काऊ
जासु कथा कुम्भजऋषि गाई ❀ भक्ति जासु मैं मुनिहि सुनाई
सोइ मम इष्टदेव रघुवीरा ❀ सेवहिं जाहि सदा मुनिधीरा

छं०मुनिधीरयोगीसिद्धसन्तत विमलमनजेहिध्यावहीं।
कहिनेतिनिगमपुराण आगम जासुकीरति गावहीं॥
सोइराम व्यापकब्रह्म भुवननिकायपतिमायाधनी।
अवतरेउअपनेभक्तहितनिजतंत्रनितरघुकुलमनी॥

१ शिव २ जो घटे बढ़े नहीं ३ मूढ़ ४ झूठ ५ अगस्त्य ६ सदैव ७ मलरहित ८ समूह॥

सो०लाग न उर उपदेश, यदपि कहेउ शिव बारबहु।
बोले विहँसि महेश, हरि माया बल जानि जिय॥
जो तुम्हरे मन अति सन्देहू ❀ तौ किन जाइ परीक्षा लेहू
तब लगि बैठि रहौं बट[1] छाहीं ❀ जब लगि तुम ऐहहु मोहिंपाहीं
जैसे जाइ मोह भ्रम भारी ❀ करेहु सो यतन विवेक विचारी
चलीं सती शिव आयसु[2] पाई ❀ करहिं विचार करौं का भाई
इहां शम्भु अस मन अनुमाना ❀ दक्षसुता[3] कहँ नहिं कल्याना
मोरेहु कहे न संशय जाहीं ❀ विधि विपरीत[4] भलाई नाहीं
होइहि सोइ जो राम रचिराखा ❀ को करि तर्क[5] बढ़ावहि शाखा
अस कहि जपनलगे हरिनामा ❀ गईं सती जहँ प्रभु सुखधामा
दो०पुनि पुनि हृदयविचारकरि, धरि सीताकर रूप।
आगे ह्वै चलि पंथ तेहि, जेहि आवत सुरभूप॥
लक्ष्मण दीख सती कृतवेषा ❀ चकित भयउ भ्रम हृदय विशेषा
कहि न सकत कछु अतिगम्भीरा ❀ प्रभु प्रभाव जानत मतिधीरा
सती कपट[6] जानेउ सुरस्वामी ❀ समदर्शी सब अन्तरयामी
सुमिरत जाहि मिटै अज्ञाना ❀ सोइ सर्वज्ञ राम भगवाना
सती कीन्ह चह तहउँ दुराँऊ[7] ❀ देखहु नारि स्वभाव प्रभाऊ
निज मायाबल हृदय बखानी ❀ बोले विहँसि राम मृदुबानी
जोरि पाणि प्रभु कीन्ह प्रणामू ❀ पिता समेत लीन्ह निजनामू
कहेउ बहोरि कहां वृषकेतू ❀ विपिन अकेलिफिरहु केहिहेतू
दो०रामवचन मृदु गूढ़ सुनि, उपजा अति संकोच।
सती सभीत महेश पहँ, चलीं हृदय बड़ शोच॥
मैं शंकर कर कहा न माना ❀ निज अज्ञान रामपर आना
जाइ उतर अब देहौं काहा ❀ उर उपजा अतिदारुण[8] दाहा
जाना राम सती दुखपावा ❀ निजप्रभाव कछुप्रकट जनावा

१ बरगद २ आज्ञा ३ सती ४ उलटा ५ विचार ६ छल ७ छिपाना ८ बड़ाघोर॥

सती दीख कौतुक मग जाता ❀ आगे राम सहित सियभ्राता
फिरि चितवा पाछे प्रभु देखा ❀ सहित बन्धु सिय सुन्दरवेखा
जहँ चितवहिं तहँप्रभुआसीनां ❀ सेवहिं सिद्ध मुनीश प्रवीना
देखे शिव विधि विष्णुअनेका ❀ अमित प्रभाव एकते एका
वन्दत चरण करत प्रभुसेवा ❀ विविध वेष देखे सब देवा

दो॰सती विधात्री इन्दिरा, देखी अमित अनूप।
जेहि जेहि वेष अजादिसुर, तेहितेहितनुअनुरूप॥

देखे जहँ तहँ रघुपति जेते ❀ शक्तिन सहित सकल सुर तेते
जीव चराचर जे संसारा ❀ देखे सकल अनेक प्रकारा
पूजहिं प्रभुहि देव बहु वेखा ❀ रामरूप दूसर नहिं देखा
अवलोके रघुपति बहुतेरे ❀ सीता सहित न वेष घनेरे
सोइ रघुवर सोइ लक्ष्मण सीता ❀ देखि सती अतिभई सभीता
हृदय कम्प तनु सुधि कछुनाहीं ❀ नयन मूंदि बैठीं मगुमाहीं
बहुरि विलोकेउ नयन उघारी ❀ कछु न दीख तहँ दक्षकुमारी
पुनि पुनि नाइ रामपद शीशा ❀ चलीं तहां जहँ रहे गिरीशा

दो॰गईं समीप महेश तब, हँसि पूंछी कुशलात।
लीन्ह परीक्षा कवन विधि, कहहु सत्य सबबात॥

सती समुझि रघुवीर प्रभाऊ ❀ भयवश शिवसन कीन्ह दुराऊ
कछु न परीक्षा लीन्ह गुसाईं ❀ कीन्ह प्रणाम तुम्हारिहि नाईं
जो तुम कहा सो मृषा न होई ❀ मोरे मन प्रतीति अति सोई
तब शंकर देखेउ धरि ध्याना ❀ सती जो कीन्ह चरितसबजाना
बहुरि राम मायहि शिरनावा ❀ प्रेरिसातिहि जेहि झूंठ कहावा
हरि इच्छा भावी बलवाना ❀ हृदय विचारत शम्भु सुजाना
सती कीन्ह सीता कर वेषा ❀ शिवउर भयउ विषाद विशेषा
जो अब करौं सती सन प्रीती ❀ मिटै भक्तिपथ होइ अनीती

१ बैठेहुये २ लक्ष्मी ३ देवता ४ बहुत ५ डरपी ६ सती ७ शिव ८ विश्वास ९ होनहार १० दुःख॥

दो॰परमप्रेम नहिं जाय तजि, किये प्रेम बड़ पाप।
प्रकट न कहत महेश कछु, हृदय अधिक सन्ताप॥
तबहिं शम्भु प्रभुपद शिरनावा ❀ सुमिरत राम हृदय अस आवा
यहितन सतिहि भेंट मोहिंनाहीं ❀ शिव संकल्प कीन्ह मनमाहीं
असविचारि शंकर मतिधीरा ❀ चले भवन सुमिरत रघुवीरा
चलत गगन भइ गिरासुहाई ❀ जय महेश भलि भक्ति दृढ़ाई
असप्रण तुमबिनु करै को आना ❀ रामभक्त समरथ भगवाना
सुनि नभगिरा सतीउर शोचू ❀ पूछा शिवहि समेत सँकोचू
कीन्ह कवन प्रण कहहु कृपाला ❀ सत्यधाम प्रभु दीनदयाला
यदपि सती पूंछा बहु भांती ❀ तदपि न कहेउ त्रिपुरआरोती
दो॰सती हृदय अनुमान किय, सब जाना सर्वज्ञ।
कीन्ह कपट मैं शम्भुसन, नारिसहज जड़अज्ञ॥
सो॰जलपय सरिस बिकाय, देखहुप्रीतिकिरीतिभल।
बिलग होत रस जाय, कपट खटाई परतही॥
हृदय शोचसमुझत निजकरणी ❀ चिन्ताअमित जाइ नहिंवरणी
कृपासिन्धु शिव परमअगाधा ❀ प्रकट न कहेउ मोर अपराधा
शंकर रुख अवलोकि भवानी ❀ प्रभु मोहिंतजेउहृदय अकुलानी
निजअघसमुझिनकछुकहिजाई ❀ तपै अवां इव उर अधिकाई
सतिहि सशोच जानि वृषकेतू ❀ कहेउ कथा सुन्दर सुखहेतू
वरणत पंथ विविध इतिहासा ❀ विश्वनाथ पहुँचे कैलासा
तहँपुनिसमुझिशम्भुप्रणआपन ❀ बैठे वटतर करि कमलासन
शंकर सहज स्वरूप सँभारा ❀ लागि समाधि अखंड अपारा
दो॰सती बसहिं कैलास तब, अधिक शोच मनमाहिं।
मर्म न कोऊ जान कछु, युगसम दिवस सिराहिं॥
नित नव शोच सती उरभारा ❀ कब जैहौं दुखसागर पारा

१ वाणी २ त्रिपुरासुर के शत्रु, शिव ३ देखि ४ पाप ५ भेद ६ बराबर॥

मैं जो कीन्ह रघुपति अपमाना ❀ पुनि पतिवचन मृषाकरि जाना
सो फल मोहिं विधाता दीन्हा ❀ जो कछु उचित रहा सो कीन्हा
अब विधि असबूझियनहिं तोहीं ❀ शंकर विमुख जियावहु मोहीं
कहि न जाय कछु हृदय गलानी ❀ मनमहँ रामहिं सुमिरि सयानी
जो प्रभु दीनदयालु कहावा ❀ आरतिहरण वेद यशगावा
तौ मैं विनय करौं करजोरी ❀ छूटै वेगि देह यह मोरी
जो मोरे शिवचरण सनेहू ❀ मन क्रम वचन सत्यव्रत येहू

दो०तौ समदर्शी सुनिय प्रभु, करो सो वेगि उपाय।
होइमरणजेहि बिनहिंश्रम, दुस्सह विपतिविहाय॥

यहिविधि दुखित प्रजेशकुमाँरी ❀ अकथनीय दारुण दुखभारी
बीते संवत सहस सतासी ❀ तजी समाधि शम्भुअविनासी
राम नाम शिव सुमिरण लागे ❀ जानेउ सती जगतपति जागे
जाइ शम्भुपद वन्दन कीन्हा ❀ सम्मुख शङ्कर आसन दीन्हा
लगे कहन हरिकथा रसाला ❀ दक्ष प्रजेश भये तेहिकाला
देखाविधि विचारिसब लायक ❀ दक्षहि कीन्ह प्रजापति नायक
बड़ अधिकार दक्ष जब पावा ❀ अति अभिमान हृदयतबआवा
नहिं कोउ अस जन्मेउ जगमाहीं ❀ प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं

दो०दक्ष लिये मुनि बोलि तब, करन लगे बड़ यांग।
नेवते सादर सकल सुर, जे पावत मख भाग॥

किन्नर नाग सिद्ध गन्धर्व्वा ❀ बधुन समेत चले सुर सर्व्वा
विष्णु विरञ्चि महेश विहाई ❀ चले सकल सुर यांन बनाई
सती विलोकेउ व्योम विमाना ❀ जातचले सुन्दर विधिनाना
सुरसुन्दरी करहिं कल गाना ❀ सुनत श्रवण छूटहिंमुनिध्याना
पूछेउ तब शिव कहेउ बखानी ❀ पितायज्ञ सुनि कछु हरषानी
जो महेश मोहिं आयसु देहीं ❀ कछु दिन जाय रहौं मिसु एहीं

१ निंदा २ झूठ ३ दक्षकी बेटी ४ स्वामी ५ यज्ञ ६ छोड़ ७ विमान ८ कान ९ बहाना॥

पति परित्याग हृदय दुखभारी ❀ कहैं न निज अपराध विचारी
बोलीं सती मनोहर बानी ❀ भय संकोच प्रेम रस सानी

दो०पिता भवन उत्सव परम, जो प्रभु आयसु होइ।
तौ मैं जाउँ कृपायतन, सादर देखन सोइ॥

कहेउ नीक मोरे मन भावा ❀ यह अनुचित नहिंनेवतपठावा
दक्ष सकल निज सुता बुलाई ❀ हमरे वैर तुम्हैं बिसराई
ब्रह्मसभा हमसन दुखमाना ❀ तेहिते अजहुँ करहिं अपमाना
जो बिनु बोले जाहु भवानी ❀ रहै न शील सनेह न कांनी
यदपि मित्र पितु प्रभु गुरुगेहा ❀ जाइय बिनु बोले न सँदेहा
तदपि विरोधमान जहँ कोई ❀ तहां गये कल्याण न होई
भांति अनेक शम्भु समुझावा ❀ भावीवश न ज्ञान उरआवा
कहप्रभु जाहुजो बिनहिंबुलाये ❀ नहिं भलिबात हमारे भाये

दो०कहि देखा हर यतन बहु, रहै न दक्षकुमारि।
दिये मुख्य गण संग तब, बिदा किये त्रिपुरारि॥

पिता भवन जब गईं भवानी ❀ दक्ष त्रास काहु न सन्मानी
सादर भलेहि मिली इकमाता ❀ भगिनी मिलीं बहुत मुसुकाता
दक्ष न कछु पूंछी कुशलाता ❀ सतिहि विलोकि जरे सबगाता
सती जाय देखेउ तब यागा ❀ कतहुँ न दीख शम्भुकर भागा
तब चित चढ़ेउ जो शङ्कर कहेऊ ❀ प्रभु अपमान समुझि उरदहेऊ
पाछिल दुख न हृदय असव्यापा ❀ जस यह भयउ महापरितापा
यद्यपि जग दारुण दुखनाना ❀ सबते कठिन जाति अपमाना
समुझिशोचितिहिंभाअतिक्रोधा ❀ बहुविधि जननी कीन्ह प्रबोधा

दो०शिव अपमान न जाइसहि, हृदय न होत प्रबोध।
सकलसभहिंहठिहटकितब, बोलीं वचन सक्रोध॥

सुनहु सभासद सकल मुनिंदा ❀ कही सुनी जिन शङ्कर निंदा

१ मर्याद २ यज्ञ ३ हिस्सा ४ दुःख ५ माता ६ समझाना॥

सो फल तुरत लहबं सबकाहू ❁ भली भांति पछिताब पिताहू
सन्त शम्भु श्रीपति अपवादा ❁ सुनिय जहां तहँ अस मर्य्यादा
काटिय तासु जीभ जु बसाई ❁ श्रवण मूंदि नहिं चलियपराई
जगदात्मा महेश त्रिपुरारी ❁ जगतजनक[2] सबके हितकारी
पिता मन्द[3]मति निन्दत तेही ❁ दक्ष शुक्र[4] सम्भव यह देही
तजिहौं तुरत देह तेहि हेतू ❁ उरधरि चन्द्रमौलि वृषकेतू
असकहि योगअग्नि तनु जारा ❁ भयउ सकल मख हाहाकारा

दो॰ सतीमरणसुनि शम्भुगण, लगेकरनमख खीश।
यज्ञ विध्वंसविलोकि भृगु, रक्षा कीन्ह मुनीश॥

समाचार जब शंकर पाये ❁ वीरभद्र करि कोप पठाये
यज्ञ विध्वंस जाय तिन कीन्हा ❁ सकलसुरन विधिवतफलदीन्हा
भइ जग विदित दक्षगति सोई ❁ जसकछु शम्भुविमुख की होई
यह इतिहास सकल जगजाना ❁ ताते मैं संक्षेप[5] बखाना
सतीमरत हरिसन वर मांगा ❁ जन्म जन्म शिवपद अनुरागा
तेहि कारण हिमगिरि गृहजाई ❁ जन्मी पारवती तनुपाई
जबते उमा शैलगृह जाई ❁ सकलसिद्धि सम्पति तहँ छाई
जहँ तहँ मुनिन सुआश्रम कीन्हें ❁ उचित वास हिमभूधर[6] दीन्हें

दो॰ सदासुमनफलसहितसब, द्रुम नव नाना जाति।
प्रकटीं सुन्दर शैलपर, मणि आकँर बहुभांति॥

सरिता सब पुनीत जल बहईं ❁ खगमृग मधुप सुखी सब रहईं
सहज वैर सब जीवन त्यागा ❁ गिरिपरसकल करहिं अनुरागा
सोह शैल गिरिजा गृह आये ❁ जिमि नर रामभक्ति के पाये
नित नूतन[9] मंगल गृह तासू ❁ ब्रह्मादिक गावहिं यश जासू
नारद समाचार सब पाये ❁ कौतुक हिमगिरिगेह सिधाये
शैलराज बड़ आदर कीन्हा ❁ पदपखारि वर आसन दीन्हा

१ पावहुगे २ पिता ३ मूढ़ ४ वीर्य्य ५ थोड़ा ६ हिमाचल ७ खानि ८ प्रीति ९ नया॥

नारिसहित मुनिपद शिरनावा ❋ चरणसलिलसब भवन सिंचावा
निज सौभाग्य बहुत गिरिवरणा ❋ सुता बोलि मेली मुनिचरणा
दो॰ त्रिकालज्ञ सर्वज्ञ तुम, गति सर्वत्र तुम्हारि।
कहहु सुताके दोषगुण, मुनिवर हृदय विचारि॥
कह मुनि बिहँसि गूढ़ मृदुबानी ❋ सुता तुम्हारि सकलगुणखानी
सुन्दरि सहज सुशील सयानी ❋ नाम उमा अम्बिका भवानी
सब लक्षण सम्पन्न कुमारी ❋ होइहि सन्तत पियहि पियारी
सदा अचल यहिकर अहिवातो ❋ यहि ते यश पैहहिं पितु माता
होइहि पूज्य सकल जग माहीं ❋ यहि सेवत कछु दुर्लभ नाहीं
यहिकर नाम सुमिरि संसारा ❋ तियचढ़िहहिंपतिव्रतअसिधारा
शैल सुलक्षणि सुता तुम्हारी ❋ सुनहु जे अब अवगुणदुइचारी
अगुण अमान मातुपितु हीना ❋ उदासीन सब संशय क्षीना
दो॰ योगी जटिल अकाममन, नगन अमंगल वेख।
असस्वामी यहिकहँमिलिहि, परीहस्त असरेख॥
सुनि मुनिगिरा सत्य जियजानी ❋ दुख दम्पतिहि उमा हरषानी
नारदहू यह भेद न जाना ❋ दशा एक समुझत बिलगाना
सकल सखी गिरिजा गिरि मैनां ❋ पुलक शरीर भरे जल नैना
होय न मृषा देवऋषि भाखा ❋ उमा सो वचन हृदय धरिराखा
उपजेउ शिवपद कमल सनेहू ❋ मिलन कठिन मन भा सन्देहू
जानि कुअवसर प्रीति दुराई ❋ सखि उछंग बैठी पुनि जाई
झूठि न होइ देवऋषि बानी ❋ शोचहिं दम्पति सखी सयानी
उरधरि धीर कहै गिरिराऊ ❋ कहहु नाथ काकरिय उपाऊ
दो॰ कहमुनीशहिमवन्तसुनु, जोविधिलिखालिलार।
देव दनुज नर नाग मुनि, कोउ न मेटनहार॥
तदपि एक मैं कहौं उपाई ❋ होइ किये जो देव सहाई

१ श्रेष्ठ २ युक्त ३ हमेशा ४ सुहाग ५ तलवार ६ स्त्रीपुरुष ७ पार्वतीकीमाता ८ छिपाई॥

जस वर मैं वरएउँ तुम पाहीं ❀ मिलिहिउमहिं कछुसंशय नाहीं
जे जे वर के दोष बखाने ❀ ते सब शिव पहँ मैं अनुमाने
जो विवाह शंकर सन होई ❀ दोषहु गुण सम कह सब कोई
जो अहिसेजं शयन हरिकरहीं ❀ बुधकछु तिनकहँ दोष न धरहीं
भानु कृशानु सर्व रस खाहीं ❀ तिनकहँ मन्दं कहत कोउ नाहीं
शुभअरुअशुभ सलिलसबबहई ❀ सुरसरि कोउ न अपावनकहई
समरथ कहँ नहिं दोष गुसाईं ❀ रवि पावक सुरसरि की नाईं

दो०जो अस हिसका करहिं नर, जड़ विवेक अभिमान।
परहिं कल्पभरि नरकमहँ, जीव कि ईश समान॥

सुरसरि जलकृत वारुणि[3] जाना ❀ कबहुँ न संत करहिं तिहिपाना
सुरसरि मिले सुपावन जैसे ❀ ईश अनीशहि अन्तर तैसे
शम्भु सहज समरथ भगवाना ❀ यह विवाह सब विधि कल्याना
दुराराध्य पै अहहिं महेशू ❀ आँशुतोष पुनि किये कलेशू
जो तप करै कुमारि तुम्हारी ❀ भाविउ मेटि सकैं त्रिपुरारी
यद्यपि वर अनेक जगमाहीं ❀ इन कहँ शिव तजि दूसरनाहीं
वरदायक प्रणतारति भञ्जन ❀ कृपासिन्धु सेवक मन रञ्जन
इच्छित फल बिनु शिव आँराधे ❀ लहै न कोटि योग जप साधे

दो०असकहिनारदसुमिरिहरि, गिरिजहिंदीन्हअशीश।
होइहि अब कल्याण सब, संशय तजहु गिरीश॥

अस कहि ब्रह्मभवन मुनि गयऊ ❀ आगिलचरितसुनहु जस भयऊ
पतिहि इकांत पाय कह मैना ❀ नाथ न मैं समुझिउँ मुनिबैना
जो घर वर कुल होइ अनूपा ❀ करिय विवाह सुता अनुरूपा
नतु कन्या वरु[7] रहै कुमारी ❀ कन्तँ उमा मम प्राणपियारी
जोनमिलिहिवरगिरिजहियोगू ❀ गिरिजड़ सहज कहहिं सबलोगू
सोइ विचारि पति करहु विवाहू ❀ जेहि न बहोरि होइ उरदाहू[8]

१ शेशशय्या २ नीच ३ मदिरा ४ शीघ्र ५ ध्यान किये से ६ बल्कि ७ पति ८ हृदयमें जलन॥

असकहि परी चरण धरिशीशा ❋ बोले सहित सनेह गिरीशा
बरु पावक प्रकटै शशिमाहीं ❋ नारद वचन अन्यथा नाहीं
दो०प्रिया शोच परिहरहु अब, सुमिरहु श्रीभगवान।
पारवती जिन निर्म्मयउ, सोइ करिहैं कल्यान॥
अब जो तुमहिं सुता पर नेहू ❋ तौ अस जाइ सिखावन देहू
करै सो तप जेहि मिलहिं महेशू ❋ आन उपाय न मिटिहि कलेशू
नारद वचन सगर्व सहेतू ❋ सुन्दर सब गुणनिधि वृषकेतू
अस विचारि सब तजहुअशंका ❋ सबहि भांति शंकर निकलंका
सुनि पतिवचन हर्ष मन माहीं ❋ गई तुरत उठि गिरिजा पाहीं
उमहिं विलोकि नयन भरिवारी ❋ सहित सनेह गोद बैठारी
बारहिंबार लेति उरलाई ❋ गदगदकण्ठ न कछु कहिजाई
जगतमातु सर्वज्ञ भवानी ❋ मातु सुखद बोली मृदुबानी
दो०सुनहु मातु मैं दीख अस, सपन सुनाऊं तोहिं।
सुन्दर विप्र सुगौर वर, अस उपदेशेउ मोहिं॥
करहु जाइ तप शैलकुमारी ❋ नारद कहा सो सत्य विचारी
मातु पितहि पुनि यह मत भावा ❋ तप सुखप्रद दुखदोष नशावा
तपबल रचैं प्रपंच विधाता ❋ तपबल विष्णु सकलजगत्राता
तपबल शम्भु करहिं संहारा ❋ तपबल शेश धरहिं महिभारा
तप अधार सब सृष्टि भवानी ❋ करहु जाइ तप असजियजानी
सुनत वचन विस्मित महतारी ❋ सपन सुनायहु गिरिहि हँकारी
मातु पितहि बहुविधिसमुझाई ❋ चलीं उमा तपहित हरषाई
प्रिय परिवार पिता अरु माता ❋ भयेविकल मुख आव न बाता
दो० वेदगिरा मुनि आइ तब, सबहिं कहा समुझाइ।
पारवती महिमा सुनत, रहे प्रबोधहि पाइ॥
उरधरि उमा प्राणपति चरना ❋ जाइ विपिन लागीं तपकरना

१ झूठ २ प्रेम ३ संसार ४ नाश ५ तपके लिये ६ व्यास ७ वन॥

अति सुकुमारि न तनु तपयोगू ❀ पति पद सुमिरि तजेउ सबभोगू
नितनव चरण उपज अनुरागा ❀ बिसरी देह तपहि मनलागा
संवत सहस मूल फल खाये ❀ शाक खाइ शत वर्ष गँवाये
कछु दिन भोजन वारि बतासा ❀ किये कठिन कछु दिन उपवासा
विल्वपत्र महि परहिं सुखाई ❀ तीनि सहस संवत सो खाई
पुनि परिहरेउ सुखानेउ पर्णा ❀ उमहिं नाम तब भयउ अपर्णा
देखि उमहिं तप क्षीण शरीरा ❀ ब्रह्म गिरा भइ गगन गँभीरा

दो० भयउमनोरथ सफलतव, सुनु गिरिराजकुमारि ।
परिहरु दुसह कलेश सब, अब मिलिहैं त्रिपुरारि॥

अस तप काहु न कीन्ह भवानी ❀ भये अनेक धीर मुनि ज्ञानी
अब उर धरहु ब्रह्म वर बानी ❀ सत्य सदा सन्तत शुचि जानी
आवैं पिता बुलावन जबहीं ❀ हठ परिहरि घरजायहु तबहीं
मिलहिं तुमहिं जब सप्त ऋषीशा ❀ तब जानेहु प्रमाण वागीशा
सुनत गिरा विधि गगन बखानी ❀ पुलकगात गिरिजा हरषानी
उमा चरित सुन्दर मैं गावा ❀ सुनहु शम्भुकर चरित सुहावा
जब ते सती जाइ तनु त्यागा ❀ तब ते शिवमन भयउ विरागा
जपहिं सदा रघुनायक नामा ❀ जहँ तहँ सुनहिं रामगुणग्रामा

दो० चिदानन्द सुखधाम शिव, विगत मोह मदकाम ।
विचरहिंमहिधरिहृदयहरि, सकललोकअभिराम ॥

कतहुँ मुनिन उपदेशहिं ज्ञाना ❀ कतहुँ रामगुण करहिं बखाना
यदपि अकाम तदपि भगवाना ❀ भक्त विरह दुख दुखितसुजाना
यहि विधि गयउ कालं बहुबीती ❀ नित नव होइ रामपद प्रीती
नेम प्रेम शंकर कर देखा ❀ अविचल हृदय भक्तिकी रेखा
प्रकटे राम कृतज्ञ कृपाला ❀ रूप शीलबल तेज विशाला
बहु प्रकार शंकरहिं सराहा ❀ तुम बिनु असप्रण को निर्वाहा

१ वायु २ पत्ते ३ दुर्बल ४ छोड़ो ५ पवित्र ६ ब्रह्मवाणी ७ समय ॥

बहुविधि राम शिवहि समुझावा ❀ पारवती कर जन्म सुनावा
अति पुनीत[1] गिरिजा की करणी ❀ विस्तर सहित कृपानिधि वरणी

दो०अब विनती मम सुनहु शिव, जो मोपर निज नेहु ।
जाय विवाहहु शैलजै[2]हि, यह मोहिं मांगे देहु ॥

कह शिव यदपि उचित अस नाहीं ❀ नाथ वचन पुनि मेटि न जाहीं
शिरधरि आयसु[3] करिय तुम्हारा ❀ परमधर्म यह नाथ[4] हमारा
मातु पिता प्रभु गुरु की बानी ❀ बिनहि विचार करिय शुभ जानी
तुम सब भांति परम हितकारी ❀ आज्ञा शिरपर नाथ तुम्हारी
प्रभु तोषेउ सुनि शंकर वचना ❀ भक्ति विवेक[5] धर्म्म युत रचना
कह प्रभु हर तुम्हार प्रण रहेऊ ❀ अब उर राखेउ जो हम कहेऊ
अन्तर्द्धान भये अस भाखी ❀ शंकर सोइ मूरति उर राखी
तबहिं सप्तऋषि शिव पहँ आये ❀ बोले प्रभु अति वचन सुहाये

दो०पारवती पहँ जाइ तुम, प्रेम परीक्षा लेहु ।
गिरिहि प्रेरि पठयहु भवन[6], दूरि करेहु सन्देहु ॥

सुनि शिववचन परमसुखमानी ❀ चले हरषि जहँ रहीं भवानी
ऋषिन गौरि देखी तहँ कैसी ❀ मूरतिवन्त तपस्या जैसी
बोले मुनि सुनु शैलकुमारी ❀ करहु कवन कारण तप भारी
केहि आराधहु का तुम चहहू ❀ हम सन सत्य मर्म्म[7] सब कहहू
सुनत ऋषिन के वचन भवानी ❀ बोलीं गूढ़ मनोहर बानी
कहत मर्म्म मन अति सकुचाई ❀ हँसिहहु सुनि हमारि जड़ताई[8]
मन हठ परेउ न सुनै सिखावा ❀ चहत वारिपर भीति उठावा
नारद कहा सत्य सोइ जाना ❀ बिनु पंखन हम चहहिं उड़ाना
देखहु मुनि अविवेक हमारा ❀ चाहत शिवहि सदा भर्तारा

दो०सुनत वचन बिहँसे ऋषय, गिरिसंभव[9] तव देह ।
नारद कर उपदेश सुनि, कहहु बसेउ केहि गेह ॥

१ पवित्र २ पार्वती को ३ आज्ञा ४ स्वामी ५ ज्ञान ६ घर ७ भेद ८ मूर्खता ९ उत्पन्न ॥

दक्षसुतन उपदेशिनि जाई ❀ तिन फिरि भवन न देखाआई
चित्रकेतु कर घर उन घाला ❀ कनककशिपुकरपुनिअसहाला
नारद शिष जु सुनहिं नर नारी ❀ अवशिभवनतजिहोहिंभिखारी
मन कपटी तनु सज्जन चीन्हा ❀ आपु सरिस सबहीं चहकीन्हा
तिनके वचन मानि विश्वासा ❀ तुम चाहहु पति सहज उदासा
निर्गुण निलज कुवेष कपाली ❀ अकुल अगेह दिगम्बर व्याली
कहहु कवन सुख अस वर पाये ❀ भल भूलिहु ठग के बौराये
पञ्च कहें शिव सती विवाही ❀ पुनि अवडेरि मराइन ताही

दो॰अबसुखसोवतशोच नहिं, भीखमांगि भवखाहिं।
सहज इकाकिन के भवन, कबहुँ कि नारिखटाहिं॥

अजहूं मानहु कहा हमारा ❀ हम तुमकहँ वरनीक विचारा
अतिसुन्दर शुचि सुखद सुशीला ❀ गावहिं वेद जासु यशलीला
दूषण रहित सकल गुणरासी ❀ श्रीपतिपुर वैकुंठ निवासी
अस वर तुमहिं मिलाउब आनी ❀ सुनतवचन कहविहँसि भवानी
सत्य कहेहु गिरिभव तनु एहा ❀ हठ न छूट छूटै वरु देहा
कनकहु पुनि पषाण ते होई ❀ जारेउ सहज न परिहरु सोई
नारद वचन न मैं परिहरऊं ❀ बसौ भवन उजरौ नहिंडरऊं
गुरुके वचन प्रतीति न जेही ❀ सपनेहु सुगम न सुख सिधितेही

दो॰महादेव अवगुण भवन, विष्णुसकल गुणधाम।
जेहिकरमनरमजाहिसन, ताहि ताहि सन काम॥

जो तुम मिलतेउ प्रथम मुनीशा ❀ सुनतिउँशिषतुम्हारिधरिशीशा
अब मैं जन्म शम्भु हितहारा ❀ को गुण दूषण करै विचारा
जो तुम्हरे हठ हृदय विशेषी ❀ रहि न जाइ बिनु किये बरेषी
तौ कौतुकिअन्ह आलस नाहीं ❀ वर कन्या अनेक जगमाहीं
जन्म कोटिलगि रगर हमारी ❀ वरौं शम्भु नतु रहौं कुमारी

१ समान २ नंगा ३ सर्पधारी ४ इकले ५ सोना ६ नाश ७ शिक्षा ८ छेड़ छाड़ ॥

तजौं न नारद कर उपदेशू ❀ आपु कहहिं शतवार महेशू
मैं पां परौं कहैं जगदम्बा ❀ तुम गृह गमनहु भयहु विलम्बा
देखि प्रेम बोले मुनिज्ञानी ❀ जयजयजय जगदम्ब भवानी
दो०तुम माया भगवान शिव, सकल[2] जगत पितुमात।
नाइचरण शिर मुनि चले, पुनि पुनि हरषितगात॥
जाइ मुनिन हिमवन्त पठाये ❀ करि विनती गिरिजहिंगृहलाये
बहुरि सप्तऋषि शिवपहँ जाई ❀ कथा उमाकी सकल सुनाई
भये मगन शिव सुनत सनेहा ❀ हरषि सप्तऋषि गमने गेहा
मन थिरकरि तब शम्भुसुजाना ❀ लगे करन रघुनायक ध्याना
तारक असुर भयेउ तेहिकाला ❀ भुज प्रताप बल तेज विशाला
तेहिं सब लोक लोकपति जीते ❀ भये देव सुख सम्पति रीते
अजर अमर सो जीति न जाई ❀ हारे सुर करि विविध[3] लराई
तब विरंचि सन जाइ पुकारे ❀ देखे विधि सब देव दुखारे
दो०सबसन कहा बुझाइ विधि, दनुज निधन[4] तबहोइ।
शम्भु शुक्र[5] सम्भूत सुत, यहि जीतै रण सोइ॥
मोर कहा सुनि करहु उपाई ❀ होइहि ईश्वर करिहि सहाई
सती जो तजी दक्षमख[6] देहा ❀ जनमी जाइ हिमाचल गेहा
तेइँ तप कीन्ह शम्भु हितलागी ❀ शिव समाधि बैठे सब त्यागी
यदपि अहै असँमंजस[7] भारी ❀ तदपि बात इक सुनहु हमारी
पठवहु काम जाय शिवपाहीं ❀ करै क्षोभ शंकर मनमाहीं
तब हम जाइ शिवहिं शिरनाई ❀ करवाउब विवाह बरिआई
यहि विधि भले देवहित होई ❀ मति अतिनीकि कहै सब कोई
अस्तुतिसुरन कीन्ह अति हेतू ❀ प्रकट्यो विषमबाण[8] झषकेतू[9]
दो०सुरनकही निजविपति सब, सुनिमनकीन्हविचार।
शम्भुविरोधनकुशलमोहिं, बिहँसिकह्योअसमार॥

१ जगतमाता २ संपूर्ण ३ अनेक ४ नाश ५ बीज ६ यज्ञ ७ दुबिधा ८, ९ कामदेव॥

तदपि करब मैं काज तुम्हारा ❀ श्रुति कह परमधर्म उपकारा
परहित लागि तजै जो देही ❀ सन्तत सन्त प्रशंसहिं तेही
असकहिचलेउ सबहिं शिरनाई ❀ सुमन¹ धनुष कर सहित सहाई
चलत मार अस हृदय विचारा ❀ शिव विरोध ध्रुवमरणहमारा
तब आपन प्रभाव विस्तारा ❀ निज वश कीन्ह सकल संसारा
कोपेउ जबहिं वारिचर²केतू ❀ क्षण महँ मिटे सकल श्रुतिसेतू
ब्रह्मचर्य्य व्रत संयम नाना ❀ धीरज धर्म ज्ञान विज्ञाना
सदाचार जप योग विरागा ❀ सभय विवेक कटक सब भागा

छं०भागेउ विवेक सहाय संयुत सुभट संयुग³ महिमुरे।
सद्ग्रन्थ पर्वत कन्दरन महँ जाय तेहि अवसर⁴दुरे॥
होनिहारका करतारको रखवार जग खरभर परा।
दुइमाथकेहिरतिनाथजेहिकहँकोपिकरधनुशरधरा॥

दो०जे सजीवजग अचरचर, नारि पुरुष अस नाम।
ते निज निजमर्यादतजि, भये सकल वशकाम॥

सबके हृदय मदन⁵ अभिलाखा ❀ लता निहारि नवहिं तरु शाखा
नदी उमँगि अंबुधि⁶ कहँ धाईं ❀ संगम करैं तलाव तलाईं
जहँ असदशा जड़नकी वरणी ❀ को कहिसकै सचेतन करणी
पशु पक्षी नभ जल थल चारी ❀ भये कामवश समय बिसारी
मदनअन्ध व्याकुलसब लोका ❀ निशिदिननहिंअवलोकहिंकोका⁷
देव दनुज नर किन्नर व्याला ❀ प्रेत पिशाच भूत वैताला
इनकी दशा न कहेउँ बखानी ❀ सदा काम के चेरे जानी
सिद्ध विरक्त महामुनि योगी ❀ तेपि कामवश भये वियोगी

छं०भये कामवश योगीश⁸ तापस पामरनकी को कहै।
देखहिं चराचर नारिमय जे ब्रह्ममय देखत रहै॥

१ फूल २ कामदेव ३ संग्राम ४ छिपे ५ कामदेव ६ समुद्र ७ चकई चकवा ८ शिव॥

अबलाविलोकहिंपुरुषमयजगपुरुषसबअबलामयम्।
दुइदण्डभरिब्रह्माण्डभीतरकामकृतकौतुकअयम्॥

सो॰ धरा न काहू धीर, सबके मन मनसिज हरे।
जेहि राखे रघुबीर, ते उबरे तेहि कालमहँ॥

उभय घरी अस कौतुक भयऊ ❀ जबलगि काम शम्भु पहँ गयऊ
शिवहिं बिलोकि सशंकेउ मारू ❀ भयउ यथाथिर सब संसारू
भये तुरत जगजीव सुखारे ❀ जिमि मंद उतरि गये मतवारे
रुद्रहि देखि मदन भयमाना ❀ दुराधर्ष दुर्गम भगवाना
फिरतलाज कछुकहि नहिं जाई ❀ मरण ठानि मन रचेसि उपाई
प्रकटेसि तुरत रुचिर ऋतुराजा ❀ कुसुमित नवतरु राज विराजा
वन उपवन वापिका तड़ागा ❀ परम सुभग सबदिशा विभागा
जहँ तहँ जनु उमगत अनुरागा ❀ देखि मुयेहुमन मनसिजजागा

छं॰ जागेउ मनोभव मुयेमन वनसुभगता न परैकही।
शीतलसुगन्धसुमन्दमारुतमदनअनलसखासही॥
विकसेसरनबहुकंजे गुंजत पुंज मंजुल मधुकरा।
कलहंसपिकशुकसरसरवकरिगाननाचहिंअप्सरा॥

दो॰ सकलकलाकरि कोटिविधि, हारेउ सेन समेत।
चली न अचल समाधिशिव, कोपेउहृदयनिकेत॥

देखि रसाले विटप वरशाखा ❀ तेहिपर चढ़ेउ मदन मनमाखा
सुमन चाप निज कर संधाने ❀ अतिरिसताकिश्रवणलगिताने
छांड़ेसि विषम विशिखे उरलागे ❀ छूटि समाधि शम्भु तब जागे
भयो ईश मन क्षोभ विशेखी ❀ नयन उघारि सकल दिशिदेखी
सौरभ पल्लव मदन विलोका ❀ भयउ क्रोध कम्पेउ त्रैलोका
तब शिव तीसर नयन उघारा ❀ चितवत काम भयउ जरिछारा

१ एक मुहूर्त २ नशा ३ मरामन ४ कमल ५ कामदेव ६ आम्र ७ बाण॥

हाहाकार भयउ जगभारी ❀ डरपे सुर भये असुर सुखारी
समुझि काम सुख सोचहिं भोगी ❀ भये अकंटक साधक योगी
छं० योगीअकंटकभये पतिगतिसुनतरतिमूर्च्छितभई।
रोदतिवदति बहुभांति करुणाकरत शंकरपहँगई॥
अतिप्रेमकरिविनतीविविधविधिजोरिकरसम्मुखरही।
प्रभुआशुतोषकृपालुशिवअबलानिरखिबोलेसही॥
दो०अबते रति तव नाथ कर, होइहि नाम अनंग।
बिनुवपु्यापिहिसबहिंपुनि,सुनुनिजमिलनप्रसंग॥
जब यदुवंश कृष्ण अवतारा ❀ होइहि हरण महा महिभारा
कृष्णतनय होइहि पतितोरा ❀ वचन अन्यथा होइ न मोरा
रति गमनी सुनि शंकर बानी ❀ कथा अपर अब कहौं बखानी
देवन समाचार जब पाये ❀ ब्रह्मादिक वैकुण्ठ सिधाये
सब सुर विष्णु विरंचि समेता ❀ गये जहां शिव कृपानिकेता
पृथक् पृथक् तिन कीन्ह प्रशंसा ❀ भये प्रसन्न चन्द्रअवतंसा
बोले कृपासिन्धु वृषकेतू ❀ कहहु अमर आयहु केहिहेतू
कह विधि तुम प्रभु अन्तरयामी ❀ तदपि भक्ति वश विनऊं स्वामी
दो०सकल सुरन के हृदय अस, शंकर परम उछाह।
निज नयनन देखाचहहिं, नाथ तुम्हार विवाह॥
यह उत्सव देखिय भरिलोचन ❀ सो कछु करिय मदनमदमोचन
काम जारि रति कहँ वर दीन्हा ❀ कृपासिन्धु यह अतिभलकीन्हा
सांसँति करि पुनि करहिं पसाऊ ❀ नाथ बड़ेनकर यहै स्वभाऊ
पारवती तप कीन्ह अपारा ❀ करहु तासु अब अंगीकारा
सुनिविधिवचनसमुझिप्रभुबानी ❀ ऐसइ होउ कहा सुखमानी
तब देवन दुन्दुभी बजाई ❀ वरषि सुमन जयजय सुरसाई

१ कामपत्नी २ शीघ्र ३ प्रद्युम्न ४ व ५ महादेव ६ अच्छा ७ पीड़ा ८ प्रसाद ९ नगाड़े॥

अवसर जानि सप्तऋषि आये ❀ तुरतहिं विधि गिरिभवनपठाये
प्रथम गये जहँ रहीं भवानी ❀ बोले वचन मधुर छलसानी
दो०कहा हमार न सुनेहु तब, नारद के उपदेश।
अब भा झूंठ तुम्हार प्रण, जारेउ काम महेश॥
सुनि बोलीं मुसकाय भवानी ❀ उचित कहेउ मुनिवर विज्ञानी
तुम्हरे जान काम हर जारा ❀ अब लगि शम्भु रहे सविकारा
हमरे जान सदाशिव योगी ❀ अज अनवद्य अकाम अभोगी
जो मैं शिव सेयउँ अस जानी ❀ प्रीति समेत कर्म्म मन बानी
तौ हमार प्रण सुनहु मुनीशा ❀ करिहहिं सत्य कृपानिधि ईशा
तुम जो कहा हर जारेउ मारा ❀ सो अति बड़ अविवेक तुम्हारा
तात अनलकर सहज स्वभाऊ ❀ हिम तेहिनिकटजाइ नहिं काऊ
गये समीप सो अवशि नशाई ❀ अस मनमथ महेश की नाई
दो०हिय हरषे मुनि वचन सुनि, देखि प्रीति विश्वास।
चले भवानिहिं नाइ शिर, गये हिमाचल पास॥
सब प्रसंग गिरिपतिहिं सुनावा ❀ मदनदहनसुनि अतिदुख पावा
बहुरि कहेउ रतिकर वरदाना ❀ सुनि हिमवंत बहुत सुखमाना
हृदय विचारि शम्भु प्रभुताई ❀ सादर मुनिवर लिये बुलाई
सुदिन सुनखत सुघरी सुहाई ❀ वेगि वेद विधि लगन धराई
पत्री सप्तऋषिन कहँ दीन्हीं ❀ गहिपदविनयँ हिमाचलकीन्हीं
जायविधिहितिनदीन्हसोपाती ❀ बांचत प्रीति न हृदय समाती
लगन बांचि अजँ सबहिंसुनाई ❀ हरषे सुनि सब सुर समुदाई
सुमनँ वृष्टि नभ बाजन बाजे ❀ मंगल सकल दशहुँदिशि साजे
दो०लगे सँवारन सकल सुर, वाहन विविध विमान।
होहिं शकुन मंगलसुभग, करहिं अप्सरा गान॥
शिवहिंशम्भुगणकरहिं शृंगारा ❀ जटा मुकुट अहि मौर सँवारा

१ अदोष २ अग्नि ३ कामदेव ४ विनती ५ ब्रह्मा ६ फूल॥

कुण्डल कंकण पहिरे व्याला[1] ❀ तनु विभूति कटि केहरिछाला[2]
शशि ललाट सुन्दर शिरगंगा ❀ नयनतीनि उपवीत भुजंगा
गरल कण्ठ उर नरशिर माला ❀ अशिव वेष शिवधाम कृपाला
कर त्रिशूल अरु डमरु विराजा ❀ चले बसह चढ़ि बाजहिं बाजा
देखि शिवहि सुरत्रिय मुसुकाहीं ❀ वरलायक दुलहिनि जगनाहीं
विष्णु विरञ्चि आदि सुरव्रांता[3] ❀ चढ़ि चढ़ि वाहन चले बराता
सुर समाज सब भांति अनूपा ❀ नहिं बरात दूलह अनुरूपा

दो॰ विष्णुकहाअसविहँसितब, बोलिसकलदिशिराज।
बिलगबिलगह्वैचलहुसब, निजनिजसहितसमाज॥

वर अनुहारि बरात न भाई ❀ हँसी करैहहु परपुर जाई
विष्णु वचन सुनि सुर मुसुकाने ❀ निज निजसेनसहित बिलगाने
मनहीं मन महेश मुसुकाहीं ❀ हरिके व्यंग वचन नहिंजाहीं
अतिप्रिय वचन सुनत हरि केरे ❀ भृंगी प्रेरि सकल गण टेरे
शिव अनुशासन सुनि सबआये ❀ प्रभुपद जलेज[4] शीश तिननाये
नाना वाहन नाना वेखा ❀ बिहँसे शिवसमाज निजदेखा
कोउ मुखहीन विपुल मुखकाहू ❀ बिनुपद कर कोउ बहुपद बाहू
विपुल[5]नयन कोउ नयन विहीना ❀ हृष्ट पुष्ट कोउ अति तनु क्षीना

छं॰ तनुक्षीनकोउअतिपीन[6]पावन कोउअपावनतनुधरे।
भूषणकराल कपालकर सब सद्यशोणित[7] तनुभरे॥
खरश्वानअसुरशृगालमूषकवेष अगणितकोगनै।
बहुजिनिसप्रेतपिशाचयोगिनिभांतिवरणतनहिंबनै

सो॰ नाचहिं गावहिं गीत, परम तरङ्गी भूत सब।
देखत अति विपरीत, बोलहिं वचन विचित्र विधि॥

जस दूलह तस बनी बराता ❀ कौतुक[8] विविध होहिं मगजाता

१ सर्प २ बाघम्बर ३ यूथ ४ कमल ५ अनेक ६ मोटा ७ रक्त ८ तमाशा॥

इहां हिमाचल रचेउ वितानां ❋ अति विचित्र नहिं जायबखाना
शैल सकल जहँ लगि जगमाहीं ❋ लघुविशाल नहिंवरणिसिराहीं
वन सागर सब नदी तलावा ❋ हिमगिरि सबकहँ नेवतपठावा
काम रूप सुन्दर तनुधारी ❋ सहित समाज सहित वरनारी
गे सब तुरत हिमाचल गेहा ❋ गावहिं मंगल सहित सनेहा
प्रथमहि गिरि बहु गृह सँवराये ❋ यथा योग्य जहँ तहँ सब छाये
पुर शोभा अवलोकि सुहाई ❋ लागै लघु विरञ्चि निपुणाई

छं०लघुलागिविधिकीनिपुणताअवलोकिपुरशोभासही
वनबाग कूपतड़ागसरिता सुभगता सक को कही ॥
मंगल विपुलतोरण पताका केतु गृह गृह सोहहीं ।
वनितापुरुषसुन्दरचतुरछवि देखिमुनिमनमोहहीं ॥

दो०जगदम्बा जहँ अवतरी, सोपुरवरणि न जाइ ।
ऋधिसिधिसम्पतिसकलसुख,नितनूतनअधिकाइ॥

नगर निकट बरात जब आई ❋ पुर खरभर शोभा अधिकाई
करि वनाव सजि वाहन नाना ❋ चले लेन सादर अगवाना
हिय हरषे सुर सेन निहारी ❋ हरिहि देखि अति भये सुखारी
शिव समाज जब देखन लागे ❋ बिडरि चले वाहन सब भागे
धरि धीरज तहँ रहे सयाने ❋ बालक सब लै जीव पराने
गये भवन पूछहिं पितु माता ❋ कहहिं वचन भयकंपित गाता
कहिय कहा कहि जाइ न बाता ❋ यमकै धार किधौं बरिआता
वर बौराह बरद असवारा ❋ व्याल कपाल विभूषण छारा

छं०तनछारव्यालकपाल भूषणनगनजटिलभयंकरा ।
सँगभूतप्रेतपिशाचयोगिनिविकटमुखरजनीचरा ॥
जोजियतरहहिबरातदेखत पुण्यबड़ तिनकरसही ।

१ मंडप २ छोटे बड़े ३ जल्द ४ भागे ५ मुंड ६ भस्म ७ राक्षस ॥

देखिहिसोउमाविवाहघरघरबातअसलरिकनकही॥

दो॰समुझि महेशं समाजसब, जननिजनकमुसुकाहिं।
बाल बुझाये विविधविधि, निडर होउ डरनाहिं॥

लै अगवानि बरातहि आये ❀ दिये सबहि जनवास सुहाये
मैना शुभ आरती सँवारी ❀ संग सुमंगल गावहिं नारी
कंचनथार सोह वर पानी ❀ परिछन चलीं हरहि हरषानी
विकट वेष जब रुद्रहि देखा ❀ अबलनेउर भय भयउ विशेखा
भागि भवन बैठीं अति त्रासा ❀ गये महेश जहां जनवासा
मैना हृदय भयउ दुखभारी ❀ लीन्हीं बोलि गिरीशकुमारी
अधिक सनेह गोद बैठारी ❀ श्याम सरोज नयन भरि वारी
जेहिविधितुमहिंरूपअसदीन्हा ❀ तेहि जड़ वरबावर कसकीन्हा

छं॰ कसकीन्हवरबौराहविधि जेहितुमहिं सुन्दरतादई।
जो फलचहियसुरतरुहि सो बरबसबबूरहिलागई॥
तुमसहितगिरितेगिरौंपावकजरौंजलनिधिमहँपरौं।
घरजाउअपयशहोउ जगजीवतविवाह न हौंकरौं॥

दो॰भई विकल अबलासकल, दुखितदेखिगिरिनारि।
करिविलाप रोदति वदति, सुता सनेह सँभारि॥

नारद कर मैं कहा बिगारा ❀ भवन मोर जिन बसत उजारा
अस उपदेश उमहिं जिन दीन्हा ❀ बौरे वरहि लागि तप कीन्हा
सांचेहु उनके मोह न माया ❀ उदासीन धनधाम न जाया
पर घर घालक लाज न भीरा ❀ बांझ कि जान प्रसव की पीरा
जननिहिंविकलविलोकिभवानी ❀ बोलीं युत विवेक मृदुबानी
असविचारि शोचहु जनि माता ❀ सो न टरै जो रचेउ बिधाता
कर्म्म लिखा जो बावर नाहू ❀ तौ कत दोष लगाइय काहू

१ शिव २ स्त्रियों के ३ डर ४ कल्पवृक्ष ५ समुद्र ६ स्वामी॥

तुमसनमिटहिं कि विधिकेअंका ❀ मातु व्यर्थ जनि लेहु कलंका
छं०जनिलेहुमातुकलंककरुणा परिहरहुअवसर नहीं।
दुखसुखजोलिखालिलारहमरेजाबजहँपाउबतहीं॥
सुनिउमावचनविनीतकोमलसकलअबलाशोचहीं।
बहुभांतिविधिहिलगाइदूषण नयनवारिविमोचहीं॥
दो०तेहि अवसर नारदऋषय, औ ऋषि सप्त समेत।
समाचार सुनि तुहिनगिरि, गमने तुरत निकेत॥
तब नारद सबही समुझावा ❀ पूरब कथा प्रसंग सुनावा
मैना सत्य सुनहु मम बानी ❀ जगदम्बा तव सुता भवानी
अजाअनादिशक्तिअविनासिनि ❀ सदा शंभु अर्द्धंग निवासिनि
जग संभव पालन लय कारिणि ❀ निज इच्छा लीलावपुधारिणि
जनमी प्रथम दक्षगृह जाई ❀ नाम सती सुन्दर तनु पाई
तहउँ सती शंकरहिं विवाहीं ❀ कथा प्रसिद्ध सकल जगमाहीं
एक बार आवत शिव संगा ❀ देखेउ रघुकुल कमल पतंगा
भयउ मोह शिव कहा न कीन्हा ❀ भ्रमवश वेष सीय करलीन्हा
छं० सियवेष सती जो कीन्हतेहि अपराधशंकरपरिहरी।
हरविरहजाइ बहोरि पितुके यज्ञ योगानल जरी॥
अबजन्मितुम्हरेभवननिजपतिलागिदारुणतपकिया।
असजानिसंशय तजहु गिरिजासर्वदा शंकरप्रिया॥
दो०सुनि नारद के वचन तब, सबकर मिटा विषाद।
क्षणमहँ व्यापेउ सकलपुर, घर घर यह संवाद॥
तब मैना हिमवन्त अनन्दे ❀ पुनि पुनि पारवती पद वन्दे
नारि पुरुष शिशु युवा सयाने ❀ नगर लोग सब अति हरषाने
लगे होन पुर मंगल गाना ❀ सजे सबहिं हाटकघट नाना

१ त्यागो २ हिमाचल ३ माया ४ सूर्य ५ योगाग्नि ६ कठिन ७ सोने का घड़ा॥

भांति अनेक भई जेवनारा ❀ सूप शास्त्र जस कछु व्यवहारा
सो जेवनार कि जाइ बखानी ❀ बसहिं भवन ज्यहि मातुभवानी
सादर बोले सकल बराती ❀ विष्णु विरंचि देव सबजाती
विविध पांति बैठी जेवनारा ❀ लगे परोसन निपुण सुआरा[1]
नारिवृन्द[2] सुर जेंवत जानी ❀ लगीं देन गारी मृदुबानी

छं०गारी मधुरस्वर देहिं सुन्दरि व्यंग वचन सुनावहीं।
भोजनकरहिंसुरअतिविलंबविनोदसुनिसुखपावहीं॥
जेंवत जो बढ़्यो अनंद सो मुख कोटिहू न परै कह्यो।
अँचवाइ दीन्हें पान गमने वास[3] जहँ जाको रह्यो॥

दो०बहुरि मुनिन हिमवंत कहँ, लगन सुनाई आइ।
समय विलोकि विवाहकर, पठये देव बुलाइ॥

बोलि सकल सुर सादर लीन्हें ❀ सबहिं यथोचित आसन दीन्हें
वेदी वेद विधान सँवारी ❀ सुभग सुमंगल गावहिं नारी
सिंहासन अति दिव्य सुहावा ❀ जाइ न वरणि विरंञ्चि[4] बनावा
बैठे शिव विप्रन शिरनाई ❀ हृदय सुमिरि निज प्रभु रघुराई
बहुरि मुनीशन उमा बुलाई ❀ करि शृंगार सखी लै आई
देखत रूप सकल सुर मोहैं ❀ वरणैं छवि अस जग कवि कोहैं
जगदम्बिका जानि भव[5] वामा ❀ सुरन मनहिंमन कीन्ह प्रणामा
सुन्दरता मर्य्याद भवानी ❀ जाइ न कोटिहु वदन बखानी

छं०कोटिहुवदननहिंबनैवरणत जगजननिशोभामहा।
सकुचहिंकहतश्रुति[6]शेषशारदमंदमतितुलसीकहा॥
छविखानिमातुभवानिगमनीमध्यमंडप शिवजहां।
अवलोकिसकहिंनसकुचिपतिपदकमलमनमधुं[7]करतहां

दो०मुनिअनुशा[8]सनगणपतिहिं, पूजे शम्भु भवानि।

१ रसोईदार २ स्त्रीसमूह ३ घर ४ब्रह्मा ५ शिव ६वेद ७भ्रमर ८आज्ञा॥

कोउसुनिसंशयकरहिजनि,सुरअनादिजियजानि॥
जस विवाह की विधि श्रुति गाई ❀ महा मुनिन सो सब करवाई
गहि गिरीश कुश कन्या पानी ❀ शिवहिं समर्पी जानि भवानी
पाणिग्रहण जब कीन्ह महेशा ❀ हिय हर्षे तब सकल सुरेशा
वेद मन्त्र मुनिवर उच्चरहीं ❀ जयजयजय शंकर सुर करहीं
बाजहिं बाजन विविध विधाना ❀ सुमन वृष्टि नभ मै विधि नाना
हर गिरिजा कर भयउ विवाहू ❀ सकल भुवन भरि रहा उछाहू
दासी दास तुरग रथ नागा ❀ धेनु वसन मणि वस्तु विभागा
अन्न कनक भाजन भरि याना ❀ दाइज दीन्ह न जाहि बखाना
छं०दाइजदियो बहुभांति पुनिकरजोरिहिमभूधर कह्यो।
का देउँ पूरण काम शंकर चरण पंकज गहि रह्यो॥
शिवकृपासागरश्वशुरकरपरितोषसबभांतिनकियो।
पुनि गहेउ पद पाथोज मैना प्रेमपरिपूरण हियो॥
दो०नाथ उमा मम प्राण प्रिय, गृह किंकरी करेहु।
क्षमेहु सकल अपराध अब, ह्वै प्रसन्न वरदेहु॥
बहुविधि शम्भु सासु समुझाई ❀ गमनी भवन चरण शिरनाई
जननी उमा बोलि तब लीन्हीं ❀ लै उछंग सुन्दर शिष दीन्हीं
करेहु सदा शंकर पद पूजा ❀ नारिधर्म्म पति देव न दूजा
वचन कहत भरि लोचन वारी ❀ बहुरि लाइउर लीन्ह कुमारी
कत विधि सृजी नारिजगमाहीं ❀ पराधीन सपनेहु सुख नाहीं
भइ अति प्रेम विकल महतारी ❀ धीरज कीन्ह कुसमय विचारी
पुनिपुनिमिलतपरतगहिचरणा ❀ परम प्रेम कछु जाइ न वरणा
सब नारिन मिलि भेंटि भवानी ❀ जाइ जननिउर पुनि लपटानी
छं०जननिहिंबहुरिमिलिचलीउचितअशीशसबकाहूदई

१ आदिरहित २ हिमाचल ३ विवाह ४ आकाश ५ घोड़े ६ हाथी ७ कमल ८ पैदा किया॥

फिरि फिरि बिलोकति मातु तन तब सखी लै शिव पहँ गई॥
याचक सकल संतोषि शंकर उमा सह भवनहिं चले।
सब अमर हरषे सुमन बरषि निशान नभ बाजहिं भले॥
दो०चले संग हिमवन्त तब, पहुँचावन अति हेतु।
विविध भांति परितोष करि, बिदा कीन्ह वृषकेतु॥
तुरत भवन आये गिरिराई ❋ सकल शैल सर लिये बुलाई
आदर दान विनय बहु माना ❋ सबकहँ बिदा कीन्ह हिमवाना
जबहिं शम्भु कैलासहिं आये ❋ सुरसब निज निज धाम सिधाये
जगतमातु पितु शम्भु भवानी ❋ तेहि शृंगार न कहेउँ बखानी
करहिं विविध विधि भोग विलासा ❋ गणन समेत बसहिं कैलासा
हर गिरिजा विहार नित नयऊ ❋ यहि विधि विपुल काल चलि गयऊ
तब जनमे षटवदन कुमारा ❋ तारक असुर समर जिन मारा
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना ❋ षटमुख जन्म कर्म जगजाना
छं०जग जान षटमुख जन्म कर्म प्रताप पुरुषारथ महा।
तेहि हेतु मैं वृषकेतुसुत कर चरित संक्षेपहि कहा॥
यह उमा शम्भु विवाह जे नर नारि सुनहिं जे गावहीं।
कल्याण काज विवाह मंगल सर्वदा सुख पावहीं॥
दो०चरितसिंधु गिरिजा रमण, वेद न पावहिं पार।
वरणै तुलसीदास किमि, अतिमतिमन्द गँवार॥
शम्भुचरित सुनि सहज सुहावा ❋ भरद्वाज मुनि अतिसुखपावा
बहु लालसा कथापर बाढ़ी ❋ नयन नीर रोमावलि ठाढ़ी
प्रेम विवश मुख आव न बानी ❋ दशा देखि हरषे मुनिज्ञानी
अहो धन्य तव जन्म मुनीशा ❋ तुमहिं प्राणसम प्रिय गौरीशा
शिवपदकमल जिनहिं रति नाहीं ❋ रामहिं ते सपनेहुँ न सुहाहीं

१ समेत २ शिव ३ घर ४ अनेक ५ बहुत ६ षडानन ७ महादेवजी ८ जल ९ प्रेम॥

बिनु छल विश्वनाथ पद नेहू ❀ राम भक्तकर लक्षण येहू
शिव समको रघुपति व्रतधारी ❀ बिनु अघ तजी सती असनारी
प्रण करि रघुपति भक्ति दृढ़ाई ❀ को शिवसम रामहिं प्रिय भाई
दो॰ प्रथम कहेउँ मैं शिवचरित, बूझा मर्म्म तुम्हार ।
शुचि सेवक तुम रामके, रहित समस्त विकार॥
मैं जाना तुम्हार गुण शीला ❀ कहौं सुनहु अब रघुपति लीला
सुनु मुनि आजु समागम तोरे ❀ कहि न जाइ जस सुख मनमोरे
रामचरित अति अमितमुनीशा ❀ कहि न सकहिंशतकोटिअहीशा
तदपि यथाश्रुत कहौं बखानी ❀ सुमिरि गिरापतिप्रभु धनुपानी
शारद दारु¹नारि सम स्वामी ❀ राम सूत्रधर² अन्तरयामी
जेहिपर कृपा करहिं जनजानी ❀ कवि उर अजिर नचावहिंबानी
प्रणवउँ सोइ कृपालु रघुनाथा ❀ वरणौं विशद जासु गुणगाथा
परमरम्य गिरिवर कैलासू ❀ सदा जहां शिव उमा निवासू
दो॰ सिद्ध तपोधन योगिजन, सुर किन्नर मुनिवृन्द ।
बसहिं तहां सुकृ⁵ती सकल, सेवहिं शिव सुखकन्द ॥
हरि हर विमुख धर्मरत नाहीं ❀ ते नर तहां न सपनेहु जाहीं
तेहिगिरिपर वट विटप विशाला ❀ नित नूतन सुन्दर सब काला
त्रिविध समीर सुशीतल छाया ❀ शिव विश्राम विटप श्रुतिगाया
एक बार तेहितर प्रभु गयऊ ❀ तरुविलोकि उरअतिसुखभयऊ
निजकरडासि नागरिपुछाला ❀ बैठे सहजहिं शम्भु कृपाला
कुन्द इन्दु दर गौर शरीरा ❀ भुजप्रलम्ब परिधन मुनिचीरा
तरुण अरुण अम्बुज समचरणा ❀ नखद्युति भक्त हृदय तमहरणा
भुजग भूति भूषण त्रिपुरारी ❀ आनन शरदचन्द्र छविहारी
दो॰ जटामुकुटसुरसरितशिर, लोचननलिन विशाल ।
नीलकण्ठ लावण्यनिधि, सोह बाल विधु⁶भाल ॥

१ पाप २ शेष ३ कठपुतरी ४ पुतरीनचानेवाला ५ पुण्यात्मालोग ६ चन्द्रमा ॥

बैठे सोह कामरिपु कैसे ❀ धरे शरीर शान्त रस जैसे
पारवती भल अवसर जानी ❀ गई शम्भु पहँ मातु भवानी
जानि प्रिया आदर अति कीन्हा ❀ वाम भाग आसन हर दीन्हा
बैठीं शिव समीप हरषाई ❀ पूरब जन्म कथा चितआई
पतिहिय हेतु अधिक अनुमानी ❀ बिहँसि उमा बोलीं मृदुबानी
कथा जो सकल लोकहितकारी ❀ सो पूंछन चह शैलकुमारी
विश्वनाथ ममनाथ पुरारी ❀ त्रिभुवन महिमा विदिततुम्हारी
चर अरु अचर नाग नर देवा ❀ सकल करहिं पद पंकज सेवा

दो॰ प्रभु समर्थ सर्वज्ञ तुम, सकल कला गुणधाम।
योगज्ञान वैराग्य निधि, प्रणत कल्पतरु नाम॥

जो मोपर प्रसन्न सुखराशी ❀ जानियसत्य मोहिं निजदासी
तौ प्रभु हरहु मोर अज्ञाना ❀ कहि रघुनाथ कथा विधिनाना
जासु भवन सुरतरु तर होई ❀ सह कि दरिद्रजनित दुखसोई
शशिभूषण अस हृदय विचारी ❀ हरहु नाथ मम मतिभ्रम भारी
प्रभु जे मुनि परमारथ वादी ❀ कहहिं राम कहँ ब्रह्म अनादी
शेष शारदा वेद पुराना ❀ सकल करहिं रघुपतिगुणगाना
तुम पुनि रामनाम दिनराती ❀ सादर जपहु अनंगअराती
राम सो अवधनृपति सुत सोई ❀ कीअजअगुण अलखगतिकोई

दो॰ जो नृपतनय तो ब्रह्मकिमि, नारिविरहँ मतिभोरि।
देखि चरित महिमासुनत, भ्रमतिबुद्धिअतिमोरि॥

जो अनीह व्यापक विभु कोऊ ❀ कहहु बुझाइ नाथ मोहिं सोऊ
अज्ञजानि रिस जनि उर धरहू ❀ जेहि विधि मोह मिटै सोइ करहू
मैं वन दीख राम प्रभुताई ❀ अतिभयविकल न तुमहिंसुनाई
तदपि मलिनमन बोधँ न आवा ❀ सो फल भलीभांति हम पावा
अजहूं कछु संशय मनमोरे ❀ करहु कृपा विनवउँ करजोरे

१ शिव २ उत्पन्न ३ आदिहीन ४ महादेव ५ बिछोह ६ मूर्ख ७ ज्ञान ॥

प्रभु तब मोहिं बहुभांति प्रबोधा ❀ नाथसोससुझिकरहुजेंनिक्रोधा
तबकर अस विमोह अब नाहीं ❀ रामकथा पर रुचि मनमाहीं
कहहु पुनीत राम गुणगाथा ❀ भुजंगराज भूषण सुरनाथा
दो॰वन्दौं पदधरिधरणिशिर, विनयकरौं करजोरि।
वरणहु रघुवर विशदयश, श्रुतिसिद्धांतनिचोरि॥
यदपि योषितों अन अधिकारी ❀ दासी मनक्रम वचन तुम्हारी
गूढ़ौ तत्त्व न साधु दुरावहिं ❀ आरत अधिकारी जहँ पावहिं
अति आरत पूंछौं सुरराया ❀ रघुपति कथा कहहु करि दाया
प्रथम सो कारण कहहु विचारी ❀ निर्गुणब्रह्म सगुण बपु धारी
पुनि प्रभु कहहु रामअवतारा ❀ बाल चरित पुनि कहहु उदारा
कहहु यथा जानकी विवाहा ❀ राज तजा सो दूषण काहा
वनबसि कीन्हेउ चरित अपारा ❀ कहहु नाथ जिमि रावणमारा
राज बैठि कीन्हीं बहु लीला ❀ सकल कहहु शङ्कर सुखशीला
दो॰बहुरि कहहु करुणाँयतन, कीन्ह जो अचरज राम।
प्रजा सहित रघुवंशमणि, किमि गमने निजधाम॥
पुनि प्रभु कहहु सो तत्त्व बखानी ❀ जेहिविज्ञान मगनमुनि ज्ञानी
भक्ति ज्ञान विज्ञान विरागा ❀ पुनिसबवरणहु सहित विभागा
औरौ राम रहस्य अनेका ❀ कहहु नाथ अति विमल विवेका
जो प्रभु मैं पूंछा नहिं होई ❀ सोउ दयालु राखहु जनिगोई
तुम त्रिभुवन गुरु वेद बखाना ❀ आन जीव पामर का जाना
प्रश्न उमा के सहज सुहाये ❀ छलविहीन सुनि शिवमनभाये
हर हिय रामचरित सब आये ❀ प्रेम पुलकि लोचन जल छाये
श्री रघुनाथ रूप उरआवा ❀ परमानन्द अमित सुखपावा
दो॰मग्न ध्यानरस दण्डयुग, पुनि मन बाहर कीन्ह।
रघुपति चरित महेश तब, हरषित वरणै लीन्ह॥

१ समझाया २ मत ३ शेष ४ स्त्री ५ देह ६ कृपा ७ दयाधाम ८ छिपाय ९ अधम १० नेत्र॥

झूंठौ सत्य जाहि बिनु जाने ❀ जिमि भुजंग बिनुरे¹जु पहिंचाने
जेहि जाने जग जाइ हेराई ❀ जागे यथा स्वप्न भ्रम जाई
वंदौं बाल रूप सोइ रामू ❀ सबविधिसुलभजपतजेहिनामू
मंगल भवन अमंगल हारी ❀ द्रवौ सो दशरथ अजिरे²विहारी
करि प्रणाम रामहिं त्रिपुरारी ❀ हरषि सुधासम गिरा उचारी
धन्य धन्य गिरिराज कुमारी ❀ तुमसमान नहिं कोउ उपकारी
पूंछेहु रघुपति कथा प्रसंगा ❀ सकल लोक यशपावनिगंगा
तुम रघुवीर चरण अनुरागी ❀ कीन्हेउ प्रश्न जगतहितलागी

दो०राम कृपा ते गिरिसुता, सपनेहु तव मन माहिं।
शोक मोह संदेह भ्रम, मम विचार कछु नाहिं॥

तदपि अशंका कीन्हेउ सोई ❀ कहत सुनत सबकर हितहोई
जिन हरिकथा सुनी नहिंकाना ❀ श्रवणरन्ध्रे³ अहिभवन समाना
नयनन सन्त दरश नहिं देखा ❀ लोचन मोरपंख कर लेखा
ते शिर कटुतूमरि समतूला ❀ जे न नमत हरि गुरु पदमूला
जिन हरिभक्ति हृदय नहिंआनी ❀ जीवत शर्व⁴ समान ते प्रानी
जे नहिं करहिं राम गुण गाना ❀ जीह सुदादुर जीह समाना
कुलिश⁵कठोर निठुर सोइ छाती ❀ सुनि हरिचरित न जो हरषाती
गिरिजा सुनहु रामकर लीला ❀ सुरहित दनुजविमोहन शीला

दो०रामकथा सुरधेनु सम, सेवत सब सुखदानि।
सन्तसभा सुरलोक सम, को न सुनै अस जानि॥

राम कथा सुन्दर करतारी ❀ संशय विहं⁶ग उड़ावन हारी
राम कथा कलि विटं⁷प कुठारी ❀ सादर सुनु गिरिराज कुमारी
राम नाम गुण चरित सुहाये ❀ जन्मकर्म अगणित⁸ श्रुतिगाये
यथा अनन्त राम भगवाना ❀ तथा कथा कीरति गुणनाना
तदपि यथाश्रुत जस मति मोरी ❀ कहिहौं देखि प्रीति अति तोरी

१ रस्सी २ आंगन ३ छेद ४ मुर्दा ५ वज्र ६ पक्षी ७ वृक्ष ८ बहुत॥

उमा प्रश्न तव सहज सुहाई ❋ सुखदसन्त सम्मत म्वहिं भाई
एक बात नहिं मोहिं सुहानी ❋ यदपि मोहवश कहेउ भवानी
तुम जो कहा राम कोउ आना ❋ जेहिश्रुतिगावधरहिंमुनिध्याना
दो०कहहिंसुनहिंअसअधमनर, ग्रसे जो मोह पिशाच।
पाखण्डी हरिपद विमुख, जानहिं झूंठ न सांच॥
अज्ञ अकोविद अन्ध अभागी ❋ काई विषय मुकुर मन लागी
लम्पट कपटी कुटिल विशेखी ❋ सपनेहु सन्तसभा नहिं देखी
कहहिं ते वेद असम्मत बानी ❋ जिनहिं न सूझ लाभ नहिं हानी
मुकुरमलिनै अरु नयन विहीना ❋ रामरूप देखहिं किमिदीना
जिनके अगुण न सगुण विवेका ❋ जल्पहिं कल्पित वचन अनेका
हरिमायावश जगत भ्रमाहीं ❋ तिनहिंकहतकछुअघटितनाहीं
बातुल भूत विवश मतवारे ❋ ते नहिं बोलहिं वचन विचारे
जिन कृत महामोह मदपाना ❋ तिनकर कहा करियनहिंकाना
सो०असनिजहृदयविचारि, तजि संशय भजु रामपद।
सुनु गिरिराज कुमारि, भ्रमतमरविकरवचनमम॥
सगुणहिं अगुणहिं नहिंकछुभेदा ❋ गावहिं मुनि पुराण बुध वेदा
अगुण अरूप अलख अजजोई ❋ भक्त प्रेमवश सगुण सोहोई
जो गुणरहित सगुण सो कैसे ❋ जलहिमउपल बिलगनहिंजैसे
जासुनाम भ्रमतिमिर पतङ्गा ❋ तिहिकिमिकहियविमोहप्रसंगा
राम सच्चिदानन्द दिनेशा ❋ नहिंतहँ मोह निशा लवलेशा
सहज प्रकाश रूप भगवाना ❋ नहिंतहँ पुनि विज्ञान बिहाना
हर्ष विषाद ज्ञान अज्ञाना ❋ जीवधर्म अहमित अभिमाना
राम ब्रह्म व्यापक जग जाना ❋ परमानन्द परेश पुराना
दो०पुरुष प्रसिद्ध प्रकाश निधि, प्रकट परावर नाथ।
रघुकुलमणिममस्वामिसोइ, कहिशिवनायउमाथ॥

१ नीच २ मूर्ख ३ शीशा ४ मैला ५ किया ६ सूर्य की किरण ७ पत्थर ८ सूर्य॥

निजभ्रमनहिं समुझहिं अज्ञानी ❋ प्रभुपर मोहधरहिं जड़प्रानी
यथा गगन घनपटल निहारी ❋ झम्पेउ भानु कहहिं कुविचारी
चितवहिं लोचन अंगुलिलाये ❋ प्रकट युगलशशि तिनके भाये
उमा राम विषयिक अस मोहा ❋ नभ तम धूम धूरि जिमिसोहा
विषय करन सुर जीव समेता ❋ सकल एक ते एक सचेता
सब कर परम प्रकाशक जोई ❋ रामअनादि अवधपति सोई
जगत प्रकाश्य प्रकाशक रामू ❋ मायाधीश ज्ञान गुण धामू
जासु सत्यता ते जड़ माया ❋ भास सत्यइव मोह सहाया

दो॰ रजत सीपमहँ भासजिमि, यथा भानुकर वारि।
यदपि मृषा तिहुँकालसोइ, भ्रम न सकै कोउटारि॥

यहिविधिजग हरिआश्रितरहई ❋ यदपि असत्य देत दुखअहई
ज्यों सपने शिर काटै कोई ❋ बिनुजागे दुख दूरि न होई
जासुकृपा अस भ्रम मिटिजाई ❋ गिरिजा सोइ कृपालु रघुराई
आदिअन्त कोउ जासु न पावा ❋ मति अनुमान निगम असगावा
बिनुपद चलै सुनै बिनु काना ❋ कर बिनु कर्मकरै विधि नाना
आनन रहित सकल रसभोगी ❋ बिनुवाणी वक्ता बड़ योगी
तनुबिनु परर्शे नयन बिनुदेखा ❋ ग्रहै घ्राण बिनु बास अशेखा
अस सब भांतिअलौकिककरणी ❋ महिमातासु जाइ किमि वरणी

दो॰ जेहि इमि गावहिं वेदबुध, जाहि धरहिं मुनिध्यान।
सोइ दशरथसुतभक्तहित, कोशलपति भगवान॥

काशी मरत जन्तु अवलोकी ❋ जासुनामबल करौं विशोकी
सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी ❋ रघुवर सब उर अन्तरयामी
विवशहु जासु नाम नर कहहीं ❋ जन्मअनेक सँचित अघँदहहीं
सादर सुमिरण जो नर करहीं ❋ भवँवारिधि गोपद इव तरहीं
राम सो परमातमा भवानी ❋ तहँ भ्रमअतिअँविहिततवबानी

१ घर २ चांदी ३ झूठ ४ लूला ५ नासिका ६ इकट्ठे ७ पाप ८ संसारसागर ९ अशास्त्र॥

अस संशय आनत उरमाहीं ❋ ज्ञान विराग सकल गुणजाहीं
सुनि शिवके भ्रमभंजन वचना ❋ मिटिगइ सब कुतर्ककी रचना
भइ रघुपति पद प्रीति प्रतीती ❋ दारुण असम्भावना बीती

दो॰ पुनि पुनि प्रभुपद कमलगहि, जोरि पंकरुह[1]पानि।
बोलीं गिरिजा वचन वर, मनहुँ प्रेमरस सानि॥

शशि[2]करसम सुनिगिरा तुम्हारी ❋ मिटा मोह शरदातप भारी
तुम कृपालु सब संशय हरेऊ ❋ राम स्वरूप जानि मोहिं परेऊ
नाथकृपा अब गयउ विषादा[3] ❋ सुखी भइउँ प्रभुचरण प्रसादा
अब मोहिंआपनि किंकरि[4]जानी ❋ यदपि सहज जड़नारि अयानी
प्रथम जो मैं पूंछा सोइ कहहू ❋ जो मोपर प्रसन्न प्रभु अहहू
राम ब्रह्म चिन्मय अविनासी ❋ सर्व रहित सब उरपुर वासी
नाथ धरेउ नर तनु केहि हेतू ❋ मोहिं समुझाइ कहहु वृषकेतू
उमावचन सुनि परम विनीता ❋ राम कथा पर प्रेम पुनीता

दो॰ हिय हरषे कामारि[6] तब, शङ्कर सहज सुजान।
बहुविधिउमहिंप्रशंसिपुनि, बोले कृपानिधान॥

सो॰ सुनु शुभकथाभवानि, राम चरितमानस विमल।
कहाभुशुण्डिबखानि, सुना विहँगनायक गरुड़॥
सोइ संवाद उदार, जेहिविधि भा आगे कहब।
सुनहु राम अवतार, चरित परमसुन्दर अनघ[7]॥
हरिगुण नाम अपार, कथारूप अगणितअमित।
मैं निजमति अनुसार, कहौं उमा सादर सुनहु॥

सुनु गिरिजा हरिचरित सुहाये ❋ विपुल विशद निगमागमगाये
हरि अवतार हेतु जेहि होई ❋ इदमित्थं कहिजाइ न सोई
राम अतर्क बुद्धि मन बानी ❋ मत हमार अस सुनहु भवानी

१ कमल २ चन्द्रकिरण ३ दुःख ४ दासी ५ अज्ञान ६ शिव ७ निष्पाप॥

तदपि सन्तमुनि वेद पुराना ❀ जसकछुकहहिंस्वमतिअनुमाना
तस मैं सुमुखि सुनावों तोहीं ❀ समुझिपरै जस कारण मोहीं
जब जब होइ धर्म्म की हानी ❀ बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी
करहिं अनीति जाइनहिंवरणी ❀ सीदहिं विप्र धेनु सुर धरणी
तब तब प्रभुधरि विविधशरीरा ❀ हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा

दो०असुर मारि थापहिं सुरन, राखहिं निजश्रुतिसेतु।
जग विस्तारहिं विशदयश, राम जन्मकर हेतु॥

सोइ यश गाय भक्त भव तरहीं ❀ कृपासिन्धु जनहित तनुधरहीं
राम जन्म के हेतु अनेका ❀ परम विचित्र एकते एका
जन्म एक दुइ कहौं बखानी ❀ सावधान सुनु सुमुखि सयानी
द्वारपाल हरि के प्रियदोऊ ❀ जय अरु विजय जानसबकोऊ
विप्र शाप ते दोनों भाई ❀ तामस असुर देह तिनपाई
कनककशिपुअरु हाटकलोचन ❀ जगत विदितसुरपतिमदमोचन
विजयी समर वीर विख्याता ❀ धरि बराह वपु एक निपाता
है नरहरि पुनि दूसर मारा ❀ जन प्रहलाद सुयश विस्तारा

दो०भये निशाचर जाय ते, महा वीर बलवान।
कुम्भकरण रावण सुभट, सुरविजयी जगजान॥

मुक्त न भये हते भगवाना ❀ तीनि जन्म द्विज वचन प्रमाना
एक बार तिनके हितलागी ❀ धरेउ शरीर भक्त अनुरागी
कश्यप अदिति तहां पितुमाता ❀ दशरथ कौशल्या विख्याता
एक कल्प यहि विधि अवतारा ❀ चरित पवित्र किये संसारा
एक कल्प सुर देखि दुखारे ❀ समर जलन्धर ते सब हारे
शम्भु कीन्ह संग्रामँ अपारा ❀ दनुज महाबल मरै न मारा
परम सती असुराधिप नारी ❀ तेहिबल ताहि न जीतपुरारी

दो०छल करि टारेउ तासुव्रत, प्रभु सुरकारज कीन्ह।

१ नीच २ पीड़ित ३ पुल ४ दरबानी ५ हिरण्याक्ष ६ मारा ७ युद्ध ८ दैत्य॥

जबतेइँ जानेउ मर्म सब, शाप कोप करिदीन्ह ॥
तासुशाप हरिकीन्ह प्रमाना ❀ कौतुक निधि कृपालु भगवाना
तहां जलन्धर रावण भयऊ ❀ रणहति राम परमपद दयऊ
एक जन्म कर कारण येहा ❀ जेहिलगि राम धरी नरदेहा
प्रति अवतार कथा प्रभुकेरी ❀ सुनिमुनिवरणी कविन घनेरी
नारद शाप दीन्ह इकबारा ❀ कल्प एक तेहिलगि अवतारा
गिरिजा चकितभईं सुनि बानी ❀ नारद विष्णुभक्त पुनि ज्ञानी
कारण कवन शाप मुनि दीन्हा ❀ का अपराध रमापति कीन्हा
यह प्रसंग मोहिं कहहु पुरारी ❀ मुनिमन मोह सो अचरज भारी
दो०बोले बिहँसि महेश तब, ज्ञानी मूढ़ न कोइ ।
जेहिजस रघुपति करहिंजब, सोतस तेहिक्षण होइ ॥
सो०कहौं रामगुण गाथ, भरद्वाज सादर सुनहु ।
भवभञ्जन रघुनाथ, भजु तुलसी तजि मोह मद ॥
हिमगिरिगुहा एक अतिपावँनि ❀ बह समीप सुरसरी सुहावनि
आश्रम परम पुनीत सुहावा ❀ देखि देवऋषि मन अतिभावा
निरखिशैलसरिविपिनविभागा ❀ भयउ रमापति पद अनुरागा
सुमिरतहरिहिश्वासगतिबाधी ❀ सहजविमलमन लागि समाधी
मुनिगति देखि सुरेश डराना ❀ कामहिं बोलि कीन्ह सन्माना
सहित सहाय जाहु मम हेतू ❀ चलेउ हरषिहिय जलचरकेतू
सुनासीर मनमहँ अतित्रासा ❀ चहत देवऋषि ममपुरबासा
जे कामी लोलुप जग माहीं ❀ कुटिलकाकइव सबहिं डराहीं
दो०सूख हाड़ लै भाग शठ, श्वान निरखिमृगराज ।
छीनिलेइमनजानि जिमि, तिमिसुरपतिहि न लाज ॥
तेहि आश्रमहिं मदन जब गयऊ ❀ निज माया वसन्त निर्मयऊ
कुसुमित विविध विटप बहुरंगा ❀ कूजहिं कोकिल गुंजहिं भृंगा

१ मारके २ वैकुंठ ३ शिव ४ अतिपवित्र ५ नारद ६ विष्णु ७ कारण ८ कामदेव ९ इन्द्र ॥

चली सुहावनि त्रिविध बयारी ❀ काम कृशानु बढ़ावनहारी
रम्भादिक सुरनारि नवीना ❀ सकल असमशरकला प्रवीना
करहिं गान बहु तान तरंगा ❀ बहुविधि क्रीड़हिं पाणिपतंगा
देखि सहाय मदन हरषाना ❀ कीन्हेसि पुनिप्रपंच विधिनाना
कामकला कछु मुनिहिं न व्यापी ❀ निजभय डरेउ मनोभव पापी
सीमँ कि चापिसकै कोउ तासू ❀ बड़ रखवार रमापति जासू

दो०सहित सहाय सभीत अति, मानिहारि मन मैन।
गहेसिजाइ मुनिवर चरण, कहि सुठिआरतबैन॥

भयउ न नारद मन कछु रोषा ❀ कहि प्रिय वचन कामपरितोषा
नाइ चरण शिर आयसु पाई ❀ गयउ मदन तब सहितसहाई
मुनि सुशीलता आपनि करणी ❀ सुरपति सभा जाइ सब वरणी
सुनि सबके मन अचरज आवा ❀ मुनिहिंप्रशंसि हरिहिंशिरनावा
तब नारद गमने शिव पाहीं ❀ जीतिकाम अहमित मनमाहीं
मारे चरित शंकरहिं सुनावा ❀ अतिप्रियजानि महेशसिखावा
बारबार विनवउँ मुनि तोहीं ❀ जिमि यह कथा सुनायउ मोहीं
तिमिजनिहरिहिंसुनायहु कबहूं ❀ चलेहु प्रसंग दुरायहु तबहूं

दो०शम्भुदीन्ह उपदेश हित, नहिं नारदहि सुहान।
भरद्वाज कौतुक सुनहु, हरि इच्छा बलवान॥

राम कीन्ह चाहैं सोइ होई ❀ करै अन्यथा असनहिं कोई
शम्भु वचन मुनि मनहिं न भाये ❀ तब विरंचि के लोक सिधाये
तहँ पुनि कछुक दिवस रघुराया ❀ रहे हृदय अहमित अधिकाया
एक बार करतल वरवीणा ❀ गावत हरिगुण गानप्रवीणा
क्षीरसिन्धु गमने मुनिनाथा ❀ जहँ बस श्रीनिवास श्रुतिमाथा
हरषि मिले उठि रमानिकेता ❀ बैठे आसन ऋषिहि समेता
बोले बिहँसि चराचरराया ❀ बहुत दिनन कीन्हीं मुनिदाया

१ अग्नि २ हद ३ दुःखी ४ कामदेव ५ दूसरी तरह ६ ब्रह्मा ७ निपुण ८ सागर ९ विष्णु॥

कामचरित नारद सब भाखे ❋ यद्यपि प्रथम बरजि शिवराखे
अति प्रचण्ड रघुपति की माया ❋ जेहि न मोह अस को जगजाया

दो॰ रूख वदन करि वचन मृदु, बोले श्री भगवान।
तुम्हरे सुमिरण तें मिटहिं, मोह मार मद मान॥

सुनु मुनि मोह होइ मन ताके ❋ ज्ञान विराग हृदय नहिं जाके
ब्रह्मचर्य्य व्रत रति मति धीरा ❋ तुमहिं कि करै मनोभव पीरा
नारद कहेउ सहित अभिमाना ❋ कृपा तुम्हारि सकल भगवाना
करुणानिधि मन दीख विचारी ❋ उर अंकुरेउ गर्व्व तरु[1] भारी
वेगि सो मैं डारिहौं उपारी ❋ प्रण हमार सेवक हितकारी
मुनिकर हित मम कौतुक होई ❋ अवशि उपाय करब मैं सोई
तब नारद हरि पद शिरनाई ❋ चले हृदय अहंमित[2] अधिकाई
श्रीपति निज माया तब प्रेरी ❋ सुनहु कठिन करणी तेहिकेरी

दो॰ विरचेहु मगमहँ नगर तेहि, शतयोजन[3] विस्तार।
श्रीनिवास पुरते अधिक, रचना विविध प्रकार॥

बसहिं नगर सुन्दर नरनारी ❋ जनु बहुमनसिज[4] रति तनुधारी
तेहि पुर बसै शीलनिधि राजा ❋ अगणित[5] हयगयसेन समाजा
शत सुरेश सम विभव विलासा ❋ रूप तेज बल नीति निवासा
विश्व मोहनी तासु कुमारी ❋ श्री विमोह जेहि रूप निहारी
सो हरिमाया सब सुख खानी ❋ शोभा तासु कि जाइ बखानी
करै स्वयम्बर सो नृप बाला ❋ आये तहँ अगणित महिपाला[6]
मुनि कौतुकी[7] नगर तेहि गयऊ ❋ पुरवासिन सन पूंछत भयऊ
सुनि सब चरित भूप गृह आये ❋ करि पूजा नृप मुनि बैठाये

दो॰ आनि दिखाई नारदहिं, भूपति राजकुमारि।
कहहु नाथ गुण दोष सब, यहि कर हृदय विचारि॥

देखि रूप मुनि विरति बिसारी ❋ बड़ी बार लगि रहे निहारी

१ वृक्ष २ अहंकार ३ चार सौ कोश ४ कामदेव ५ असंख्य ६ राजालोग ७ खिलाड़ी॥

लक्षण तासु विलोकि भुलाने ❀ हृदय हर्ष नहिं प्रकट बखाने
जो यहि वरै अमर सो होई ❀ समर भूमि तेहि जीत न कोई
सेवहिं सकल चराचर ताही ❀ वरै शीलनिधि कन्या जाही
लक्षण सब विचारि उर राखे ❀ कछुक बनाइ भूप सन भाखे
सुता सुलक्षणि कहि नृपपाहीं ❀ नारद चले शोच मनमाहीं
करौं जाइ सोइ यतन विचारी ❀ जेहि प्रकार मोहिं वरै कुमारी
जपतप कछु न होइ यहिकाला¹ ❀ हे विधि मिलै कवनविधि बाला

दो॰ यहि अवसर चाहिय परम, शोभा रूप विशाल।
जो विलोकि रीझै कुवँरि, तब मेलै जयमाल॥

हरि सन मांगौं सुन्दरताई ❀ होइहि जात गहरु अति भाई
मोरे हित हरि सम नहिं कोऊ ❀ यहि अवसर सहाय सो होऊ
बहुविधिविनयकीन्हतेहिकाला ❀ प्रकटेउ प्रभु कौतुकी कृपाला
हरि विलोकि² मुनिनयन जुड़ाने ❀ होइहि काज हिये³ हर्षाने
अति आरत कहि कथा सुनाई ❀ करहु कृपा हरि होहु सहाई
आपन रूप देहु प्रभु मोहीं ❀ आन भांति नहिं पावहुँ ओहीं
जेहि विधि नाथ होहि हितमोरा ❀ करौ सो वेगि दास मैं तोरा
निज माया बल देखि विशाला ❀ हियँ हँसि बोले दीनदयाला

दो॰ जेहि विधिहोइहि परमहित, नारद सुनहु तुम्हार।
सोइ हम करब न आनकछु, वचन न मृषाहमार॥

कुपथ मांग रुज व्याकुल रोगी ❀ वैद्य न देइ सुनहु मुनि योगी
यहि विधि हित तुम्हार मैं ठयऊ ❀ कहि अस अन्तर्हित प्रभुभयऊ
माया विवश भये मुनि मूढ़ा ❀ समुझि नहीं हरिगिरा निगूढ़ा
गमने तुरत तहां ऋषिराई ❀ जहां स्वयम्बर भूमि बनाई
निज निज आसन बैठे राजा ❀ बहु बनाव करि सहित समाजा
मुनि मन हर्ष रूप अति मोरे ❀ मोहिंतजिआनवरिहिनहिंभोरे

१ इससमय २ देखिकर ३ हृदय ४ झूंठ ५ अन्तर्द्धान ६ वाणी ७ नारद॥

मुनि हितकारण कृपानिधाना ❀ दीन्ह कुरूप न जाइ बखाना
सो चरित्र लखि काहु न पावा ❀ नारदजानि सबन शिरनावा

दो०रहे तहां दुइ रुद्रगण, जे जानहिं सब भेउ।
विप्र वेष देखत फिरहिं, परम कौतुकी तेउ॥

जेहि समाज बैठे मुनि जाई ❀ हृदयरूप अहमित अधिकाई
तहँ बैठे महेश गण दोऊ ❀ विप्र वेष गति लखै न कोऊ
करहिं कूट नारदहि सुनाई ❀ नीक दीन्ह हरि सुन्दरताई
रीझिहि राजकुँवरि छवि देखी ❀ इनहिं वरिहि हरिजानिविशेखी
मुनिहिं मोह मन हाथ पराये ❀ हँसहिंशम्भुगण अति सचुपाये
यदपि सुनहिंसुनि अटपटबानी ❀ समुझि न परै बुद्धि भ्रमसानी
काहु न लखा सो चरित विशेखी ❀ सो स्वरूप नृपकन्या देखी
मर्कट वदन भयंकर देही ❀ देखत हृदय क्रोध भा तेही

दो०सखी संग लै कुवँरि तब, चलि जनु राजमराल।
देखत फिरै महीप सब, कर सरोज जयमाल॥

जेहि दिशि बैठे नारद फूली ❀ सो दिशि सो न विलोकेउभूली
पुनिपुनिमुनिउकसहिंअकुलाहीं ❀ देखिदशा हरगण मुसुकाहीं
धरिनृपतनु तहँ गयउ कृपाला ❀ कुवँरि हरषि मेली जयमाला
दुलहिनि लै गये लक्ष्मिनिवासा ❀ नृपसमाज सबभयउ निरासा
मुनिअतिविकलमोहमतिनाठी ❀ मणिगिरिगई छूटि जनुगांठी
तब हरगण बोले मुसुकाई ❀ निज मुख मुकुर विलोकहुजाई
अस कहि दोउ भागे भयभारी ❀ वदन दीख मुनि वारि निहारी
वेष विलोकि क्रोध अति बाढ़ा ❀ तिनहिं शापदीन्हेउ अतिगाढ़ा

दो०होहु निशाचर जाय तुम, कपटी पापी दोउ।
हँसेहु हमहिं सो लेहु फल, बहुरि हँसेहु मुनिकोउ॥

पुनि जल दीख रूप निज पावा ❀ तदपि हृदय संतोष न आवा

१ देखि २ विष्णुजानि ३ वानर ४ राजहंस ५ कमल ६ नाश ७ शीशा॥

फरकत अधर कोप मनमाहीं ❋ सपदि चले कमलापति पाहीं
देहौं शाप कि मरिहौं जाई ❋ जगत मोर उपहास कराई
बीचहि पन्थ मिले दनुजारी ❋ संग रमा सोइ राजकुमारी
बोले मधुर वचन सुरसाईं ❋ मुनि कहँ चलेउ विकल की नाईं
सुनत वचन उपजा अति क्रोधा ❋ माया वश न रहा मन बोधा
परसम्पदा सकहु नहिं देखी ❋ तुम्हरे ईर्षा कपट विशेखी
मथत सिन्धु रुद्रहिं बौरायहु ❋ सुरन प्रेरि विष पान करायहु

दो०असुर सुरा[२] विष शङ्करहिं, आपु रमा मणिचारु।
स्वारथसाधककुटिलतुम, सदा कपट व्यवहारु॥

परम स्वतन्त्र[३] न शिर पर कोई ❋ भावै मनहिं करहु तुम सोई
भलेहि मन्द मन्दहि भल करहू ❋ विस्मय हर्ष न हिय कछु धरहू
डहकि डहकि परकेउ सब काहू ❋ अति अशंक मन सदा उछाहू
कर्म्म शुभाशुभ तुमहिं न बाधा ❋ अबलगि तुमहिं न काहू साधा
भले भवन अब बायन दीन्हा ❋ पावहुगे फल आपन कीन्हा
बंच्यहु मोहिं जवन धरि देहा ❋ सोइ तनु धरहु शाप मम येहा
कपि आकृति[४] तुम कीन्ह हमारी ❋ करिहहिं कीश[५] सहाय तुम्हारी
मम अपकार कीन्ह तुम भारी ❋ नारि विरह ते होहु दुखारी

दो०शापशीशधरिहरषिहिय, प्रभु बहु विनती कीन्ह।
निज मायाकी प्रबलता, करषि कृपानिधि लीन्ह॥

जब हरि माया दूरि निवारी ❋ नहिं तहँ रमा न राजकुमारी
तबमुनिअतिसभीतहरिचरणा ❋ गहे[६] पाहि प्रणतारति हरणा
वृथा होइ मम शाप कृपाला ❋ ममइच्छा कह दीनदयाला
मैं दुर्वचन कहेउँ बहुतेरे ❋ कहमुनि पाप मिटहिं किमिमेरे
जपहु जाइ शंकर शत नामा ❋ होइहहि हृदय तुरत विश्रामा
कोउ नहिं शिवसमान प्रिय मोरे ❋ अस प्रतीति[७] त्यागहु जनि भोरे

१ विष्णु २ मदिरा ३ स्वाधीन ४ रूप ५ बंदर ६ पकड़े ७ विश्वास॥

जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी[१] ❋ सो न पाव मुनि भक्ति हमारी
अस उरधरि महि विचरहु जाई ❋ अब न तुमहिं माया नियराई
दो०बहुविधिमुनिहिं प्रबोधिहरि, तब भये अन्तर्द्धान।
सत्यलोक नारद चले, करत रामगुण गान॥
हरगण मुनिहिं जात पथ[२] देखी ❋ विगत मोह मनहर्ष विशेखी
अति सभीत नारद पहँ आये ❋ गहिपद आरत वचन सुनाये
हरगण हम न विप्र मुनिराया ❋ बड़ अपराध कीन्ह फलपाया
शाप अनुग्रह करहु कृपाला ❋ बोले नारद दीनदयाला
निशिचर जाइ होहु तुम दोऊ ❋ वैभव विपुल तेज बल होऊ
भुजबलविश्वजितवतुमजहिया ❋ धरिहैं विष्णु मनुजतनु तहिया
समर[३] मरण हरिहाथ तुम्हारा ❋ हैहहु मुक्त न पुनि संसारा
चले युगल मुनिपद शिरनाई ❋ भये निशाचर कालहि पाई
दो०एक कल्प यहि हेतु प्रभु, लीन्ह मनुज[४] अवतार।
सुर रंजन सज्जन सुखद, भंजन धरणी भार॥
यहि विधि जन्म कर्म हरि केरे ❋ सुन्दर सुखद विचित्र घनेरे[५]
कल्प कल्प प्रति प्रभु अवतरहीं ❋ चारु चरित नानाविधि करहीं
तब तब कथा मुनीशन गाई ❋ परम विचित्र प्रबंध[६] बनाई
विविध प्रसंग अनूप बखाने ❋ करहिं न सुनि आश्चर्य्यसयाने
हरि अनंत हरिकथा अनन्ता ❋ कहहिंसुनहिंबहुविधिसबसन्ता
रामचन्द्र के चरित सुहाये ❋ कल्पकोटि[७] निगमागम गाये
यह प्रसंग मैं कहा बखानी ❋ हरिमाया मोहहिं मुनिज्ञानी
प्रभु कौतुकी प्रणत[८] हितकारी ❋ सेवत सुलभ सकल दुखहारी
सो०सुरनरमुनि कोउ नाहिं, जेहि न मोहमायाप्रबल।
अस विचारि मन माहिं, भजियमहामायापतिहि॥
अपर हेतु सुनु शैलकुमारी ❋ कहौं विचित्र कथा विस्तारी

१ शिव २ मार्ग ३ संग्राम ४ मनुष्य ५ बहुत ६ रचना ७ किरोड़ ८ दास॥

जेहिकारण अज¹ अगुण² अनूपा ❀ ब्रह्म भये कोशलपुर भूपा
जोप्रभु विपिन फिरत तुम देखा ❀ बन्धु समेत किये मुनि वेखा
जासु चरित अवलोकि भवानी ❀ सती शरीर रहिउ बौरानी
अजहुँ न छाया मिटी तुम्हारी ❀ तासु चरित सुनु भ्रम रुज³ हारी
लीलाकीन्ह जो तेहि अवतारा ❀ सो सब कहिहौं मति अनुसारा
भरद्वाज सुनि शंकर बानी ❀ सकुचि सप्रेम उमा⁴ हरषानी
लगे बहुरि वरणै वृषकेतू ❀ सो अवतार भयउ जेहि हेतू

दो॰ सो मैं तुम सन कहौं सब, सुनुमुनीश मनलाय।
रामकथा कलिमलहरणि, मङ्गलकरणि सुभाय॥

स्वायम्भुव मनु अरु शतरूपा ❀ जिनते भै नरसृष्टि अनूपा
दम्पति धर्म आचरण नीका ❀ अजहुँगावश्रुति जिनकीलीका
नृप उत्तानपाद सुत तासू ❀ ध्रुव हरिभक्त भये सुत जासू
लघुसुत⁵ नाम प्रियव्रत ताही ❀ वेद पुराण प्रशंसत जाही
देवहुती पुनि तासु कुमारी ❀ जो मुनि कर्दमकी प्रियनारी
आदिदेव प्रभु दीनदयाला ❀ जठर⁶धरेउ जेहि कपिल कृपाला
सांख्यशास्त्र जिन प्रकट बखाना ❀ तत्त्व विचार निपुण⁷ भगवाना
तेहि मनु राजकीन्ह बहुकाला ❀ प्रभुआयसु बहुविधि प्रतिपाला

सो॰ होइ न विषय विराग, भवन बसतभा चौथ⁸पन।
हृदय बहुत दुखलाग, जन्मगयउ हरिभक्तिबिन॥

बरबस⁹ राज्य सुतहिं नृप दीन्हा ❀ नारिसमेत गमन वन कीन्हा
तीरथ वर नैमिष विख्याता ❀ अति पुनीत साधक सिधिदाता
बसहिं तहां मुनि सिद्धसमाजा ❀ तहँ हिय हरषि चले मनुराजा
पन्थजात सोहहिं मतिधीरा ❀ ज्ञानभक्ति जनु धरे शरीरा
पहुँचे जाय धेनुमति तीरा ❀ हरषि नहाने निर्मल नीरा
आये मिलन सिद्ध मुनि ज्ञानी ❀ धर्मधुरन्धर नृप ऋषि जानी

---

१ अजन्मा २ निर्गुण ३ रोग ४ पार्वती ५ छोटेपुत्र ६ पेट ७ प्रवीण ८ वृद्धावस्था ९ ज़बरदस्ती॥

जहँ जहँ तीरथ रहे सुहाये ❋ मुनिन सकल सादर करवाये
कृशं शरीर मुनिपट परिधाना ❋ सन्त सभा नित सुनहिं पुराना

दो॰द्वादश अक्षर मंत्र वर, जपहिं सहित अनुराग।
वासुदेव पद पंकरुह, दम्पति मन अतिलाग॥

करहिं अहार शाक फलकन्दा ❋ सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानन्दा
पुनि हरि हेतु करन तप लागे ❋ वारि अहार मूल फल त्यागे
उर अभिलाष निरन्तर होई ❋ देखिय नयन परम प्रभु सोई
अगुण अखण्ड अनन्त अनादी ❋ जेहि चिन्तहिं परमारथ वादी
नेति नेति जेहि वेद निरूपा ❋ चिदानन्द निरुपाधि अनूपा
शम्भु विरंचि विष्णु भगवाना ❋ उपजहिं जासु अंशते नाना
ऐसे प्रभु सेवक वश अहहीं ❋ भक्त हेतु लीला तनुगहहीं
जो यह वचन सत्य श्रुति भाषा ❋ तो हमारि पूजहिं अभिलाषा

दो॰यहि विधि बीते वर्षषट, सहस सुवारि अहार।
संवत सप्त सहस्र पुनि, रहे समीर अधार॥

वर्ष सहस दश त्यागेउ सोऊ ❋ ठाढ़े रहे एक पद दोऊ
विधि हरि हर तप देखि अपारा ❋ मनु समीप आये बहुबारा
मांगहु वर बहु भांति लुभाये ❋ परम धीर नहिं चलहिं चलाये
अस्थि मात्र ह्वै रहेउ शरीरा ❋ तदपि मनांक मनहिं नहिंपीरा
प्रभु सर्वज्ञ दास निज जानी ❋ गति अनन्य तापस नृपरानी
मांगु मांगु वर भै नभंबानी ❋ परम गँभीर कृपामृत सानी
मृतक जियावनि गिरा सुहाई ❋ श्रवणरन्ध्र ह्वै उर जब आई
हृष्ट पुष्ट तनु भयउ सुहाये ❋ मानहुँ अबहिं भवन ते आये

दो॰श्रवणसुधा समवचन सुनि, प्रेम प्रफुल्लित गात।
बोले मनु करि दण्डवत, प्रेम न हृदय समात॥

सुनु सेवक सुरतरु सुरधेनू ❋ विधि हरि हर वन्दित पदरेनू

१ दुर्बल २ राजारानी ३ कहा ४ हड्डी ५ थोड़ी भी ६ आकाशवाणी ७ कानका छेद॥

सेवत सुलभ सकल सुखदायक ❀ प्रणतपाल सचराचर नायक
जो अनाथ हित हम पर नेहू ❀ तौ प्रसन्न है यह वर देहू
जो स्वरूप बस शिव मनमाहीं ❀ जेहि कारण मुनि यतन कराहीं
जो भुशुण्डि मनमानस हंसा ❀ सगुणअगुणजेहि निगम प्रशंसा
देखहिं सो स्वरूप भरिलोचन ❀ कृपा करहु प्रणतारति मोचन
दम्पति वचन परम प्रिय लागे ❀ मृदुल विनीत प्रेमरस पागे
भक्त बछल प्रभु कृपा निधाना ❀ विश्ववास प्रकटे भगवाना

दो॰ नीलसरोरुह नीलमणि, नील नीलधर श्याम।
लाजहिंतनुशोभानिरखि, कोटि कोटि शतकाम॥

शरद मयंक वदन छवि सींवा ❀ चारु कपोल चिबुक दर ग्रीवा
अधर अरुण रद सुन्दर नासा ❀ विधुकर निकर विनिंदकहासा
नव अम्बुज अम्बक छवि नीकी ❀ चितवनि ललित भावतीजीकी
भृकुटि मनोज चाप छविहारी ❀ तिलकललाट पटल द्युतिकारी
कुण्डल मकर मुकुट शिरभ्राजा ❀ कुलिशकेशजनु मधुप समाजा
उर श्रीवत्स रुचिर वनमाला ❀ पदिक हार भूषण मणिजाला
केहरि कन्धर चारु जनेऊ ❀ बाहु विभूषण सुन्दर तेऊ
करिकर सरिस सुभग भुजदण्डा ❀ कटि निषंग कर शर कोदण्डा

दो॰ तड़ितविनिन्दकपीतपट, उदर रेख वरतीनि।
नाभि मनोहर लेति जनु, यमुन भँवर छविछीनि॥

पद राजीव वरणि नहिंजाहीं ❀ मुनिमनमधुप बसहिं जिनमाहीं
बाम भाग शोभित अनुकूला ❀ आदिशक्तिछविनिधि जगमूला
उपजहिं जासु अंश गुणखानी ❀ अगणित उमाँ रमा ब्रह्मानी
भृकुटि विलास जासु जग होई ❀ राम वाम दिशि सीता सोई
छवि समुद्र हरि रूप विलोकी ❀ इकटक रहे नयनपट रोकी
चितवहिं सादर रूप अनूपा ❀ तृप्ति न मानहिं मनु शतरूपा

१ वेद २ मेघ ३ चन्द्र ४ शंख ५ कामदेव ६ सुँड़ि ७ पार्वती ८ सरस्वती॥

हर्ष विवश तनु दशा[1] भुलानी ❋ परे दण्डइव गहि पद पानी
शिर परसे प्रभु निजकर कंजा[2] ❋ तुरत उठाये करुणापुंजा

दो०बोले कृपानिधान पुनि, अतिप्रसन्न मोहिं जानि।
मांगहु वर जोइ भावमन, महा दानि अनुमानि॥

सुनि प्रभुवचन जोरि युगपाणी[3] ❋ धरि धीरज बोले मृदुवाणी
नाथ देखि पदकमल तुम्हारे ❋ अब पूजे सब काम हमारे
एक लालसा बड़ि मनमाहीं ❋ सुगम अगम कहिजातसोनाहीं
तुमहिं देत अति सुगम गोसांई ❋ अगमलागि मोहिंनिजकृपणाई
यथा दरिद्र कल्पतरु पाई ❋ बहुसम्पति मांगत सकुचाई
तासु प्रभाव न जानत सोई ❋ तथा हृदय मर्म संशय होई
सो तुम जानहु अन्तरयामी ❋ पुरवहु मोर मनोरथ[5] स्वामी
सकुचविहाय मांगु नृप मोहीं ❋ मोरे नहिं अदेय कछु तोहीं

दो०दानिशिरोमणि कृपानिधि, नाथ कहौं सतिभाव।
चाहौं तुमहिं समान सुत, प्रभुसन कौन दुराव॥

देखि प्रीति सुनि वचन अमोले ❋ एवमंस्तु करुणानिधि बोले
आपु सरिस कहँ खोजौं जाई ❋ नृप तव तनय होब मैं आई
शतरूपहिं विलोकि करजोरे ❋ देवि मांगु वर जो रुचितोरे
जो वर नाथ चतुर नृप मांगा ❋ सोइकृपालुमोहिंअतिप्रियलागा
प्रभु परन्तु सुंठि होत ढिठाई ❋ यदपि भक्तहित तुमहिं सुहाई
तुम ब्रह्मादि जनक जग स्वामी ❋ ब्रह्म सकल उर अन्तरयामी
अस समुझत मन संशय होई ❋ कहा जो प्रभु प्रमाण पुनि सोई
जे निज भक्त नाथ तव अहई ❋ जो सुखपावहिं जो गति लहई

दो०सोइसुखसोइगतिसोइभगति, सोइनिजचरणसनेहु।
सोइ विवेक[8] सोइ रहनि प्रभु, मोहिं कृपाकरिदेहु॥

सुनि मृदुगूढ़ भक्तियुत रचना ❋ कृपासिन्धु बोले मृदु[9] वचना

१ अवस्था २ कमल ३ हाथ ४ मेरे ५ वाञ्छित ६ ऐसाही हो ७ बहुत ८ ज्ञान ९ कोमल॥

जो कछु रुचि तुम्हरे मन माहीं ❀ मैं सो दीन्ह सब संशय नाहीं
मातु विवेक अलौकिक तोरे ❀ कबहुँ न मिटिहि अनुग्रह मोरे
वन्दिचरण मनु कहेउ बहोरी ❀ अवर एक विनती प्रभु मोरी
सुत विषयक तवपद रतिहोऊ ❀ मोहिं बरु मूढ़ कहै किन कोऊ
मणिबिनुफणिजिमिजलबिनुमीना❀ममजीवनतिमितुमहिंअधीना
असवरमांगि चरणगहि रह्यऊ ❀ एवमस्तु करुणानिधि कह्यऊ
अब तुम मम अनुशासन मानी ❀ बसहुजाइ सुरपति रजधानी

सो॰तहँ करि भोग विशाल, तात गये कछु कालपुनि।
ह्वैहहु अवध भुवाल, तब मैं होब तुम्हार सुत॥

इच्छामय नर वेष सँवारे ❀ ह्वैहहुँ प्रकट निकेत तुम्हारे
अंशन सहित देहधरि ताता ❀ करिहौं चरित भक्त सुखदाता
जेहि सुनि सादर नर बड़भागी ❀ भव तरिहहिं ममता मद त्यागी
आदिशक्ति जेहिजग उपजाया ❀ सो अवतरिहि मोरि यह माया
पुरउब मैं अभिलाष तुम्हारा ❀ सत्य सत्य प्रण सत्य हमारा
पुनिपुनि असकहिकृपानिधाना ❀ अन्तर्द्धान भये भगवाना
दम्पति उर धरि भक्ति कृपाला ❀ तेहि आश्रमहिं बसे कछुकाला
समय पाय तनु तजि अनयासा ❀ जाइ कीन्ह अमरावति वासा

दो॰यह इतिहास पुनीत अति, उमहिं कहेउ वृषकेतु।
भरद्वाज सुनु अपर पुनि, रामजन्म कर हेतु॥

सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी ❀ जो गिरिजाप्रति शम्भु बखानी
विश्व विदित इक केकय देशू ❀ सत्यकेतु तहँ बसै नरेशू
धर्म्म धुरन्धर नीति निधाना ❀ तेज प्रताप शील बलवाना
तेहिके भये युगल सुत वीरा ❀ सब गुणधाम महा रणधीरा
रजधानी जेठे सुत आही ❀ नाम प्रतापभानु अस ताही
अपर सुतहि अरिमर्दन नामा ❀ भुजबल अतुल अचल संग्रामा

१ आज्ञा २ वर ३ संसार ४ घमंड ५ स्त्री पुरुष ६ स्थान ७ इन्द्रपुरी॥

भाइहि भाइहि परम सुरीती ❋ सकलदोष छल वर्जित प्रीती
जेठे सुतहि राज्य नृप दीन्हा ❋ हरिहित आपु गमनवन कीन्हा

दो०जब प्रतापरवि भयउ नृप, फिरी दोहाई देश।
प्रजापालअति वेद विधि, कतहुँनहीं अघ[1] लेश॥

नृप हितकारक सचिव[2] सुजाना ❋ नाम धर्मरुचि शुक्र समाना
सचिव सयान बन्धु बलवीरा ❋ आपु प्रतापभानु रणधीरा
सेन संग चतुरङ्ग अपारा ❋ अमित सुभटसब समर जुझारा[3]
सेन विलोकि राव हर्षाना ❋ अरु बाजे गहगहे निशाँना[4]
विजय हेतु सब कटक बनाई ❋ सुदिन साधि नृप चल्यो बजाई
जहँ तहँ परीं अनेक लराई ❋ जीते सकल भूप बरिआई
सप्तद्वीप भुज बल वश कीन्हें ❋ लै लै दण्ड छांड़ि नृप दीन्हें
सकल अवनि[5] मंडल तेहिकाला ❋ एक प्रतापभानु महिपाला

दो०स्ववशविश्वकरि बाहुबल, निजपुर कीन्ह प्रवेश।
अर्थ धर्म्म कामादि सुख, सेवहिं सबै नरेश॥

भूप प्रतापभानु बल पाई ❋ कामधेनु भै भूमि सुहाई
सब दुख वर्जित प्रजा सुखारी ❋ धर्म्मशील सुन्दर नरनारी
सचिव धर्मरुचि हरिपद प्रीती ❋ नृपहित हेतु सिखावत नींती
गुरु सुर सन्त पितर महिदेवा[6] ❋ करहि सदा नृप सबकी सेवा
भूप धर्म्म जे वेद बखाने ❋ सकल करहि सादर सुखमाने
दिनप्रति देइ विविध विधिदाना ❋ सुनै शास्त्र वर वेद पुराना
नाना वापी कूप तड़ागा ❋ सुमनवाँटिका[7] सुन्दर बागा
विप्र भवन सुरभवन सुहाये ❋ सब तीरथन विचित्र बनाये

दो०जहँलगि कहे पुराण श्रुति, एक एक सब याग।
बार सहस्र सहस्र नृप, किये सहित अनुराग॥

हृदय न कछु फल अनुसंधाना ❋ भूप विवेकी परम सुजाना

१ पाप २ मंत्री ३ बड़े योद्धा ४ नगाड़ा ५ पृथ्वी ६ ब्राह्मण ७ फुलवाड़ी॥

करै जो धर्म्म कर्म्म मनबानी ❁ वासुदेव अर्पित नृपज्ञानी
चढ़ि वरवाजि बार इक राजा ❁ मृगयाकर सब साजि समाजा
विन्ध्याचल गँभीर वनगयऊ ❁ मृगपुनीत बहु मारत भयऊ
फिरत विपिनं नृप दीख वराहू ❁ जनुवनदुरेउ शशिहि ग्रंसि राहू
बड़विधु नहिं समात मुखमाहीं ❁ मनहुँ क्रोधवश उगिलतनाहीं
कोलं कराल दशन छवि गाई ❁ तनु विशाल पीवँर अधिकाई
घुरघुरात हय आरवं पाये ❁ चकित विलोकत कानउठाये

दो०नील महीधँर शिखरसम, देखि विशाल वराह।
चपँरिचलेउहयसुटुकिन्रृप, हांकि न होय निबाह॥

आवत देखि अधिक रव वाजी ❁ चल्यो वराह मरुतगति भाजी
तुरत कीन्ह नृप शरसन्धाना ❁ महिमिलिगयउ विलोकतबाना
तकि तकि तीर महीश चलावा ❁ छलकरि सुवर शरीर बचावा
प्रकटत दुरत जाइ मृग भागा ❁ रिसवश भूपचलेउ सँगलागा
गयउ दूरि वन गहन वराहू ❁ जहां नाहिं गजवाजि निबाहू
अति अकेल वन विपुल कलेशू ❁ तदपि न मृगमग तजै नरेशू
कोल विलोकि भूप बड़ धीरा ❁ भागि पैठु गिरिगुहा गँभीरा
अगम देखि नृप अति पछिताई ❁ फिरेउ महावन परेउ भुलाई

दो०खेदखिन्न तिरषित क्षुधित, राजा वाजि समेत।
खोजतव्याकुल सरितसर, जलबिनुभयउअचेत॥

फ़िरत विपिन आश्रम इकदेखा ❁ तहँ बस नृपति कपटमुनि ेखा
जासु देश नृप लीन्ह छुड़ाई ❁ समर सेन तजि गयउ पराई
समय प्रतापभानुकर जानी ❁ आपन अति असमय अनुमानी
गयउ न गृह मन परम गलानी ❁ मिला न राजहिंनृप अभिमानी
रिसउरमारि रंक जिमि राजा ❁ विपिनबसै तापस के साजा
तासु समीप गमन नृप कीन्हा ❁ यह प्रतापरवि तेइँ तब चीन्हा

१ शिकार २ वन ३ घेरा ४ सुवर ५ मोटा ६ आहट ७ पहाड़ ८ जल्दी॥

राव तृषित नहिं तेहिं पहिंचाना ❀ देखि सुवेष महामुनि जाना
उतरि तुरँगते कीन्ह प्रणामा ❀ परम चतुर न कह्यो निजनामा
दो०भूपति तृषित विलोकितेइँ, सरवर दीन्ह दिखाइ।
मज्जनपान समेत हय, कीन्ह नृपति हर्षाइ॥
गा श्रम सकल सुखी नृप भयऊ ❀ निज आश्रम तापस लैगयऊ
आसन दीन्ह अस्तरवि जानी ❀ पुनि तापस बोला मृदुबानी
को तुम कस वन फिरहु अकेले ❀ सुन्दर युवा जीव पर हेले
चक्रवर्ति के लक्षण तोरे ❀ देखत दया लागि अति मोरे
नाम प्रतापभानु अवंनीशा ❀ तासु सचिव मैं सुनहु मुनीशा
फिरत अहेरहि परेउँ भुलाई ❀ वड़े भाग्य देखेउँ पद आई
हम कहँ दुर्लभ दरश तुम्हारा ❀ जानतहौं कछु भल होनहारा
कह मुनि तात भयउ अँधियारा ❀ योजन सत्तरि नगर तुम्हारा
दो०निशा घोर गम्भीर वन, पन्थ न सूझ सुजान।
बसहु आजु अस जानि तुम, जायहु होत बिहान॥
तुलसी जस भवितव्यता, तैसै मिलै सहाइ।
आपु न आवै ताहि पै, ताहि तहां लैजाइ॥
भलेहि नाथ आयसु धरि शीशा ❀ बांधि तुरँग तरु बैठ महीशा
नृप बहु भांति प्रशंसेउ ताही ❀ चरण वन्दि निज भाग्यसराही
पुनि बोलेउ मृदुगिरा सुहाई ❀ जानि पिता प्रभु करौं ढिठाई
म्वहिं मुनीश सुत सेवकै जानी ❀ नाथ नाम निज कहहु बखानी
तेहि न जाननृप नृपहि सोजाना ❀ भूप सुहृदय सो कपट सयाना
वैरी पुनि क्षत्रिय पुनि राजा ❀ छलबलकीन्हचहै निजकाजा
समुझिराजसुखदुखितअरांती ❀ अवां अनल इव सुलगै छाती
सरल वचन नृपके सुनिकाना ❀ बयर सँभारि हृदय हरषाना
दो०कपट बोरि वाणी मृदुल, बोलेउ युक्ति समेत।

१ राजा २ रास्ता ३ आज्ञा ४ दास ५ शत्रु॥

नाम हमार भिखारि अब, निरधन रहित निकेत॥
कह नृप जे विज्ञान निधाना ❀ तुम सारिखे गलितअभिमाना
सदा अपनपौ रहहिं दुराये ❀ सब विधि कुशल कुवेष वनाये
तेहिते कहहिं सन्त श्रुति टेरे ❀ परम अकिंचन प्रिय हरिकेरे
तुमसम अधन भिखारि अगेहों ❀ होत विरंचि शिवहि सन्देहा
योसि सोसि तव चरण नमामी ❀ मोपर कृपा करिय अब स्वामी
सहज प्रीति भूपति की देखी ❀ आपु विषे विश्वास विशेखी
सब प्रकार राजहिं अपनाई ❀ बोलेउ अधिक सनेह जनाई
सुनु सतिभाव कहौं महिपाला ❀ इहां बसत बीते बहु काला
दो०अबलगिमोहिंन मिलेउकोउ, मैं न जनायउँ काहु।
लोक मान्यता अनल सम, कर तप कानन दाहु॥
सो०तुलसी देखि सुवेख, भूलै मूढ़ न चतुर नर।
सुन्दर केकी पेख, वचन सुधासम अशन अहि॥
ताते गुप्त रहौं वन माहीं ❀ हरितजिकिमपि प्रयोजननाहीं
प्रभु जानत सब बिनहिं जनाये ❀ कहहु कवन सिधिलोक रिझाये
तुम शुचि सुमति परमप्रिय मोरे ❀ प्रीति प्रतीति मोहिं पर तोरे
अब जो तात दुरावों तोहीं ❀ दारुण दोष बढ़ै अति मोहीं
जिमि जिमि तापस कथै उदासा ❀ तिमितिमिनृपहिंउपजविश्वासा
देखा स्ववश कर्म्म मन बानी ❀ तब बोला तापस बकध्यानी
नाम हमार एकतनु भाई ❀ सुनि नृप बोलेउ पुनि शिरनाई
कहहु नाम कर अर्थ बखानी ❀ मोहिं सेवक अति आपनजानी
दो०आदि सृष्टि उपजी जबै, तब उतपति भइ मोरि।
नाम एकतनु हेतु तेहि, देह न धरी बहोरि॥
जनि आश्चर्य करहु मन माहीं ❀ सुत तपते दुर्लभ कछु नाहीं
तप बलते जग सृजै विधाता ❀ तप बल विष्णु भये परित्राता

१ दरिद्री २ नाश ३ दरिद्री ४ जिसके घर न हो ५ समय ६ वन ७ मोर ८ भोजन॥

तप बल शम्भु करहिं संहारा ❀ तप बल शेश धरहिं महिभारा
तप अधार सब सृष्टि भुवारा ❀ तप ते अगम न कछु संसारा
भयहुनृपहिसुनिअतिअनुरागा[१] ❀ कथा पुरातन कहै[२] सो लागा
कर्म्म धर्म्म इतिहास अनेका ❀ करे निरूपेण विरति विवेका
उद्भव[३] पालन प्रलय कहानी ❀ कहेसि अमितआश्चर्य बखानी
सुनि महीश तापस वश भयऊ ❀ आपन नाम कहन तव लयऊ
कह तापस नृप जानौं तोहीं ❀ कीन्हेउ कपट लागुभल मोहीं

सो०सुनु महीश अस नीति, जहँतहँनाम न कहहिंनृप।
मोहिं तोहिंपर अतिप्रीति, सोई चतुरतानिरखितव॥

नाम तुम्हार प्रताप दिनेशा ❀ सत्यकेतु तव पिता नरेशा
गुरु प्रसाद सब जानहुँ राजा ❀ कहौं न आपन जानि अकाजा
देखि तात तव सहज सुधाई ❀ प्रीति प्रतीति नीति निपुणाई[४]
उपजिपरी ममता मन मोरे ❀ कहेउँ कथा निज बूझे तोरे
अब प्रसन्न मैं संशय नाहीं ❀ मांगु जो भूप भाव मनमाहीं
सुनि सुवचन भूपति हरषाना ❀ गहिपद विनयकीन्हविधिनाना
कृपासिन्धु मुनि दरशन तोरे ❀ चारि पदारथ करतल मोरे
प्रभुहि तथापि प्रसन्न विलोकी ❀ मांगि अगमवर होउँ विशोकी

दो०जैरा[५] मरणदुख रहित तनु, समर[६] न जीतै कोउ।
एक छत्र रिपुहीन महि, राज कल्पशत होउ॥

कह तापस नृप ऐसहि होऊ ❀ कारण एक कठिन सुनु सोऊ
कालहु तव पद नाइहि शीशा ❀ एक विप्रकुल[७] छांड़ि महीशा
तप बल विप्र सदा बरियारा ❀ तिनके कोप न कोउ रखवारा
जो विप्रन वश करहु नरेशा ❀ तब तव वश विधि विष्णु महेशा[८]
चलै न द्विजकुल ते बरिआई ❀ सत्यकहौं दोउ भुजा उठाई
विप्र शाप बिनु सुनु महिपाला ❀ तोर नाश नहिं कवनहुँ काला

१ प्रेम २ कहना ३ उत्पत्ति ४ चतुरता ५ बुढ़ापा ६ युद्ध ७ ब्राह्मणवंश ८ महादेव॥

हरषेउ राव वचन सुनि तासू ❋ नाथ न होइ मोर अब नासू
तव प्रसाद प्रभु कृपानिधाना ❋ मोकहँ सर्वकाल कल्याना
दो०एवमस्तु कहि कपटमुनि, बोला कुटिल बहोरि।
मिलबहमार भुलाबनिज, कहहुतो मोरि न खोरि॥
ताते मैं तोहिं बरजौं राजा ❋ कहे कथा तव परम अकाजा
छठे श्रवणं यह परत कहानी ❋ नाश तुम्हार सत्य मम बानी
यह प्रकटे अथवा द्विज शापा ❋ नाश तोर सुनु भानुप्रतापा
आन उपाय निधनं तव नाहीं ❋ जो हरि हर कोपहिं मनमाहीं
सत्य नाथ पदगहि नृपभाखा ❋ द्विज गुरु कोपँ कहहु को राखा
राखै गुरु जो कोप विधाता ❋ गुरु विरोध नहिं कोउ जगत्राता
जो न चलब हम कहे तुम्हारे ❋ होइ नाश नहिं शोच हमारे
एकहि डर डरपत मनमोरा ❋ प्रभु महिदेव शाप अतिघोरा
दो०होहिं विप्रवश कवन विधि, कहहु कृपाकरि सोउ।
तुम तजिदीनदयालु निज, हितू न देखौं कोउ॥
सुनु नृप विविध यतन जगमाहीं ❋ कष्टसाध्य पुनि होहिं कि नाहीं
अहै एक अति सुगम उपाई ❋ तहां परन्तु एक कठिनाई
मम आधीन युक्ति नृप सोई ❋ मोर जाब तव नगर न होई
आजुलगे अरु जबते भयऊं ❋ काहू के गृह ग्राम न गयऊं
जो न जाब तव होइ अकाजू ❋ बना आइ असमंजस आजू
सुनि महीप बोलेउ मृदुबानी ❋ नाथनिगम असनीति बखानी
बड़े सनेह लघुनपर करहीं ❋ गिरिनिजशिरन सदातृणधरहीं
जलधि अगाध मौलि बहफेनू ❋ सन्तत धरणि धरत शिररेनू
दो०अस कहि गहे नरेशपद, स्वामी होहु कृपालु।
मोहिं लागि दुखसहियप्रभु, सज्जन दीनदयालु॥
जानि नृपहिं आपन आधीना ❋ बोला तापस कपट प्रवीना

१ कान २ नाश ३ रिस ४ साधारण ५ गावँ ६ पशोपेश ७ घासफूस ८ समुद्र॥

सत्यकहौं भूपति सुनु तोहीं ❀ जगमहँ नहिं दुर्लभ कछु मोहीं
अवशि काज मैं करिहौं तोरा ❀ मन क्रम वचन भक्त तैं मोरा
योग युक्ति तप मंत्र प्रभाऊ ❀ फलै तबहिं जब करिय दुराऊ
जो नरेश मैं करउँ रसोई ❀ तुम परसहु मोहिं जान न कोई
अन्न सो जोइ जोइ भोजन करई ❀ सोइ सोइ तव आयसु अनुसरई
पुनि तिनके गृह जेवैं जोई ❀ तव वश होइ भूप सुनु सोई
जाय उपाय रचहु नृप येहू ❀ संवत भरि संकल्प करेहू

दो०नित नूतन द्विज सहस शत, बरेहु सहित परिवार ।
मैं तुम्हरे संकल्प लगि, दिनहिं करब जेवनार ॥

यहि विधि भूप कष्ट अतिथोरे ❀ हैहहिं सकल विप्रवश तोरे
करिहहिं विप्रहोम मख सेवा ❀ तेहिप्रसंग सहजहि वश देवा
और एक मैं कहौं लखाऊ ❀ मैं यहिवेष न आउब काऊ
तुम्हरे उपरोहित कहँ राया ❀ हरि आनब मैं करि निजमाया
तपबल तेहि करि आपु समाना ❀ रखिहौं इहां वर्ष परमाना
मैं धरि तासु वेष सुनु राजा ❀ सब विधि तोर सवांरब काजा
गै निशिबहुत शयन अबकीजे ❀ मोहिंतोहिं भूप भेंट दिनतीजे
मैं तपबल तोहिं तुरँग समेता ❀ पहुँचैहौं सोवतहिं निकेता

दो०मैं आउब सोइ वेषधरि, पहिंचानेहु तब मोहिं ।
जब एकान्त बुलाइ नृप, कथा सुनाउब तोहिं ॥

शयनैकीन्ह नृप आयसुमानी ❀ आसन जाइ बैठ छलज्ञानी
श्रमित भूप निद्रा अतिआई ❀ सो किमि सोव शोच अधिकाई
कालकेतु निशिचर तहँ आवा ❀ जेहिं शूकर ह्वै नृपहिं भुलावा
परममित्र तापस नृप केरा ❀ जानै सो अति कपट घनेरा
तेहि के शत सुत अरु दश भाई ❀ खल अतिअजय विश्वदुखदाई
प्रथमहिं भूप समर सब मारे ❀ विप्र सन्त सुर देखि दुखारे

१ नया २ यज्ञ ३ राजा ४ घोड़ा ५ सोना ६ थकाहुआ ७ सौ ॥

तेहिंखल पाछिल वैर सँभारा ❀ तापसनृप मिलि मन्त्र विचारा
जेहि रिपु क्षयं सोइ रचेसिउपाऊ ❀ भावीवश न जान कछुराऊ
दो० रिपुतेजसी अकेल अपि, लघुकरिगनिय न ताहु।
अजहुँदेतदुखरविशशिहि, शिरअवशेषितराहु ॥
तापसनृप निजसखहिं निहारी ❀ हरषिमिलेउ उठिभयउ सुखारी
मित्रहिकहि सब कथा सुनाई ❀ यातुधान बोला सुखपाई
अब साधेउँ रिपु सुनहु नरेशा ❀ जो तुम कीन्ह मोर उपदेशा
परिहरि शोच रहहु अब सोई ❀ बिनु औषधहिंव्याधि विधि खोई
कुल समेत रिपु मूल बहाई ❀ चौथे दिवस मिलब मैं आई
तापस नृपहि बहुत परितोषी ❀ चला महाकपटी अतिरोषी
भानुप्रतापहिं वाजि समेता ❀ पहुँचायासि क्षणमाहिं निकेता
नृपहिं नारिपहँ शयन कराई ❀ हयगृह बांधेसि वाजिहिं जाई
दो० राजा के उपरोहितहिं, हरि लैगयउ बहोरि।
लै राखेसि गिरिखोह महँ, मायाकरि मतिभोरि ॥
आप विरचि उपरोहित रूपा ❀ पराजाय तेहि सेज अनूपा
जागेउ नृप अनुभये बिहाना ❀ देखिभवन अतिअचरजमाना
मुनि महिमा मनमहँ अनुमानी ❀ उठेउगवँहिं जेहि जान न रानी
कानन गयउ वाजि चढ़ि तेही ❀ पुर नर नारि न जानेउ केही
गये यामँ युग भूपति आवा ❀ घरघर उत्सव बाजु बधावा
उपरोहितहि दीख जब राजा ❀ चकितविलोकिसुमिरिसोइकाजा
युगसम नृपहिगये दिनतीनी ❀ कपटीमुनि पदरहि मतिलीनी
समय जानि उपरोहित आवा ❀ नृपहि मँतो सबकहि समुझावा
दो० नृप हर्षे पहिंचानि गुरु, भ्रमवश रहा न चेत।
वरे तुरत शत सहस वर, विप्र कुटुम्ब समेत ॥
उपरोहित जेवनार बनाई ❀ छरसचारि विधि जस श्रुतिगाई

१ नाश २ तेजवान् ३ बचाहुआ ४ राक्षस ५ तड़के ६ धीरे से ७ प्रहर ८ सलाह ९ होश ॥

मायामय तेइँ कीन्ह रसोई ❀ व्यंजन बहु गनिसकै न कोई
विविध मृगनकर आमिष रांधा ❀ तेहि महँ विप्रमांस खलसांधा
भोजन कहँ सब विप्र बुलाये ❀ पद पखारि सादर बैठाये
परसन लाग जबहिं महिपाला ❀ भइ अकाशवाणी तेहि काला
विप्रवृन्द उठि उठि गृह जाहू ❀ है बड़िहानि अन्न जनिखाहू
भयउ रसोईं भूसुर मांसू ❀ सब द्विज उठे मानि विश्वासू
भूप विकल मति मोह भुलानी ❀ भावी वश न आव मुखबानी

दो॰ बोले विप्र सकोप तव, नहिं कछु कीन्ह विचार।
जाय निशाचर होहु नृप, मूढ़ सहित परिवार॥

क्षत्रबन्धु तैं विप्र बुलाई ❀ घालै लिये सहित समुदाई
ईश्वर राखा धर्म्म हमारा ❀ जैहसि तैं समेत परिवारा
संवत मध्य नाश तव होऊ ❀ जलदाता न रहहि कुल कोऊ
नृपसुनि शाप विकलअतित्रासा ❀ भइ बहोरि वर गिरा अकासा
विप्रहु शाप विचारि न दीन्हा ❀ नहिं अपराध भूप कछु कीन्हा
चकित विप्र सब सुनि नभबानी ❀ भूप गये जहँ भोजन खानी
तहँ न अशँन नहिंविप्र सुआँरा ❀ फिरेउ राव मन शोच अपारा
सब प्रसंग महिसुरन सुनाई ❀ त्रसित परेउ अवनी अकुलाई

दो॰ भूपति भावी मिटै नहिं, यदपि न दूषण तोर।
किये अन्यथा होइ नहिं, विप्र शाप अति घोर॥

असकहि सब महिदेव सिधाये ❀ समाचार पुर लोगन पाये
शोचहिं दूषण दैवहिं देहीं ❀ विरचत हंस काक कियजेहीं
उपरोहितहि भवन पहुँचाई ❀ असुर तापसिहि खबरि जनाई
तेहि खल जहँ तहँ पत्र पठाये ❀ सजि सजि सेन भूप सब आये
घेरिन्हि नगर निशाँन बजाई ❀ विविध भांति तहँ परी लराई
जूझे सकल सुभट करिकरणी ❀ बन्धु समेत परेउ नृप धरणी

१ ब्राह्मण २ कुंड ३ भोजन ४ रसोइया ५ दोष ६ बनाते ७ नगाड़ा॥

सत्यकेतु कुल कोइ न बांचा ❀ विप्र शाप किमि होइ असांचा
रिपुहिं जीति नृप नगर बसाई ❀ निज पुर गमने जययशपाई
दो०भरद्वाज सुनु जाहि जब, होत विधाता बाम[1]।
धूरि मेरुसम जनक[2] यम, ताहि व्यालसम दाम[3]॥
काल पाइ मुनि सुनु सोइ राजा ❀ भयो निशाचर सहितसमाजा
दश शिर ताहि बीस भुजदण्डा ❀ रावण नाम वीर बरवण्डा
भूप अनुज अरिमर्द्दन नामा ❀ भयउ सो कुम्भकरणबलधामा
सचिव जो रहा धर्म्मरुचि जासू ❀ भयउ विमात्र[5] बन्धु लघु तासू
नाम विभीषण जेहि जगजाना ❀ विष्णु भक्त विज्ञान निधाना
रहे जे सुत सेवक नृप केरे ❀ भये निशाचर घोर घनेरे
कामरूप खल जिनिस अनेका ❀ कुटिल भयंकर विगत विवेका
कृपा रहित हिंसक सब पापी ❀ वरणि न जायँ विश्वपरितापी[6]
दो०उपजे यदपि पुलस्त्यकुल, पावन अमल अनूप।
तदपि महीसुर शापवश, भये सकल अघरूप॥
कीन्ह विविध तप तीनों भाई ❀ परम उग्र सो वरणि न जाई
गये निकट तप देखि विधाता ❀ मांगहु वर प्रसन्न मैं ताता
करि विनतीपदगहि दशशीशा ❀ बोलेहु वचन सुनहु जगदीशा
हम काहूके मरहिं न मारे ❀ वानर मनुज जाति दुइवारे
एवमस्तु तुम बड़ तप कीन्हा ❀ मैं ब्रह्मा मिलि तेहिं वरदीन्हा
पुनि प्रभु कुम्भकरण पहँ गयऊ ❀ तेहिविलोकिमन विस्मयभयऊ
जो यहखल नित करहिअहारा ❀ होइहि सब उजारि संसारा
शारद प्रेरि तासु मति फेरी ❀ मांगेसि नींद मास षट[7] केरी
दो०गये विभीषण पास पुनि, कह्यो पुत्र वरमांगु।
तेहिं मांगेउ भगवन्त पद,कमलअमल अनुरागु॥
तिनहिं देइ वर ब्रह्म सिधाये ❀ हरषित ते अपने गृह आये

१ भूंड २ उलटा ३ बाप ४ रस्सी ५ सौतेला ६ दुखदाई ७ छः॥

मय तनुजा मन्दोदरि नामा ❀ परम सुन्दरी नारि ललामा
सोइ मय दीन्हि रावणहिंआनी ❀ भई सो यातुधानपति रानी
हरषित भयउ नारि भलि पाई ❀ पुनि दोउ बंधु विवाहेसि जाई
गिरित्रिकूट इक सिन्धु मँझारी ❀ विधि निर्म्मित दुर्गमअतिभारी
सोइ मयदानव बहुरि सँवारा ❀ कनकरचित मणि भवनअपारा
भोगवती जस अहिकुल वासा ❀ अमरावति जस शक्रनिवासा
तिनते अधिकरम्य अतिबंका ❀ जग विख्यात नाम तेहि लंका
दो०खाईं सिन्धु गँभीर अति, चारिउदिशिफिरिआव।
कनककोटमणिखचितदृढ़, वरणि न जाइ बनाव॥
हरिप्रेरित तेहि कल्पजोइ, यातुधान पति होइ।
शूर प्रतापी अतुल बल, दल समेत बस सोइ॥
रहे तहां निशिचर भट भारे ❀ ते सब सुरन समर संहारे
अब तहँ रहहिं शक्र के प्रेरे ❀ रक्षक कोटि यक्षपति केरे
दशमुख कबहुं खबरि अस पाई ❀ सेन साजि गढ़ घेरेसि जाई
देखि विकटभट बड़ि कटकाईं ❀ यक्ष जीव लै चले पराई
फिरि सब नगर दशानन देखा ❀ गयउ शोच सुख भयउ विशेखा
सुन्दर सहज अगम अनुमानी ❀ कीन्ह तहां रावण रजधानी
जेहि जसयोग्य बांटि गृह दीन्हे ❀ सुखी सकल रजनीचरकीन्हे
एक बार कुबेर पहँ धावा ❀ पुष्पक यान जीति लै आवा
दो०कौतुकही कैलास पुनि, लीन्हेसि जाइ उठाइ।
मनहुं तौलि भट बाहुबल, चला अधिक सुखपाइ॥
देव यक्ष गन्धर्व्व नर, किन्नर नागकुमारि।
जीति वरीं निज बाहुबल, बहु सुन्दरि वर नारि॥
सुख सम्पति सुत सेन सहाई ❀ जय प्रताप बलबुद्धि बड़ाई

१ लड़की २ सुंदर ३ रचा ४ इंद्र ५ सुंदर ६ कुबेर ७ फ़ौज ८ भागे ९ राक्षस॥

नित नूतन[1] सब बाढ़त जाई ❀ जिमि प्रतिलाभलोभ अधिकाई
अति बलकुम्भकर्ण अस भ्राता ❀ जेहिकहँ नहिं प्रतिभटजगजाता
करि मद पान सोव षट मासा ❀ जागत होइ तिहूँ पुर त्रासा
जो दिनप्रति अहार कर सोई ❀ विश्व वेगि सब चौपट[2] होई
समर धीर नहिं जाइ बखाना ❀ तेहिसम अमित वीर बलवाना
वारिदनाद जेठ सुत तासू ❀ भटमहँ प्रथमलीक जगजासू
जेहि न होइ रण सम्मुख कोई ❀ सुरपुर नितहिं परावन होई

दो० कुमुखअकम्पनकुलिशरद, धूम्रकेतु अतिकाय।
एक एक जगजीति सक, ऐसे सुभट निकाय॥

कामरूप जानहिं सब माया ❀ सपनेहुँ जिनके धर्म न दाया
दशमुख बैठ सभा इक बाँरा[3] ❀ देखि अमित आपन परिवारा
सुत समूह जन परिजन नाती ❀ गनै को पार निशाचर[4] जाती
सेन विलोकि सहज अभिमानी ❀ बोला वचन क्रोध मदसानी
सुनहु सकल रजनीचर यूथा ❀ हमरे वैरी विबुध[5] बरूथा
ते सम्मुख नहिं करहिं लराई ❀ देखि सकल रिपु जाहिं पराई
तिनकर मरण एक विधि होई ❀ कहौं बुझाइ सुनहु सब सोई
द्विज भोजन मख होम शराधा ❀ यहिकर जाइ करहु तुमबाधा

दो० क्षुधांक्षीन बलहीन सुर, सहजहिंमिलिहहिंआइ।
तब मारिहौं कि छांड़िहौं, भलीभांति अपनाइ॥

मेघनाद कहँ पुनि हँकरावा ❀ दीन्ह सीख बल वैर बढ़ावा
जे सुर समर धीर बलवाना ❀ जिनके लरिबेको अभिमाना
तिनहिंजीतिरणआनिसि बांधी ❀ उठिसुतपितु अनुशासन[7] कांधी
यहिविधि सबहीं आज्ञा दीन्हा ❀ आपहु चलेउ गदा कर लीन्हा
चलत दशानन डोलत अवनी[9] ❀ गर्जत गर्भ स्रवत[10] सुररवनी[11]
रावण आवत सुनेउ सकोहा ❀ देवन तकेउ मेरु गिरि खोहा

१ नया २ नाश ३ दिन ४ राक्षस ५ देवता ६ झुण्ड ७ भूख ८ आज्ञा ९ पृथ्वी १० टपकत ११ देवाङ्गना॥

दिकपालन के लोक सिधावा ❀ सूने सकल दशानन पावा
पुनि पुनि सिंहनाद करि भारी ❀ देइ देवतन गारि प्रचारी
रण मदमत्त फिरै जग धावा ❀ प्रतिभटखोजत कतहुँ न पावा

अथ क्षेपक ॥

नारद मिले कहेसि मुसुकाई ❀ देव कहां मुनि देहु दिखाई
सुनत अनेख नारदहिं न भावा ❀ श्वेतद्वीप तेहिं तुरत पठावा
सागर उतरि पार सो गयऊ ❀ नारि वृन्द तहँ देखत भयऊ
तिन सन कहा पतिन पहँ जाहू ❀ कहेउ कि आव निशाचरनाहू
तब मैं तिनहिं जीति संग्रामा ❀ लैजैहौं तुमकहँ निजधामा
सुनत वचन यक जरठ रिसानी ❀ धाइचरणगहि गगनँ उड़ानी
गई दूरि धरिधरि झकझोरा ❀ डारेसि सिन्धुमध्य अतिजोरा

दो० गयो पताल अचेत ह्वै, मरै न विप्र प्रसाद ।
सावधान उठि चलेउ पुनि, हिये न हर्ष विषाद ॥

जीतेसि नाग नगर सब झारी ❀ गयो बहुरि बलिलोक सुरारी
वामन रावन आवत जाना ❀ किये देवऋषिसन अपमाना
खेलतरहे नगर शिशु नाना ❀ निजबलतिनहिंदीन्हभगवाना
धाइ धरा तिन पुर लै आये ❀ नगर नारि नर देखन धाये
बीस बाहु दशकन्धर भाई ❀ विधि यह गढ़नि कहांकी आई
राखेनि बांधि खिझावहिं भारी ❀ नाम न कहै सहै बरु मारी
वामन दीख बहुत सकुचाना ❀ तब छुड़ाइ दिय कृपानिधाना
चला तुरन्त निशाचर नाहा ❀ लाज शङ्क कछु नहिं मनमाहा

दो० अति निर्लज्ज दयारहित, हिंसापर अति प्रीति ।
रामविमुख दशकन्ध शठ, तापर चाहत जीति ॥
भरद्वाज सुनु जाहि जब, होइ विधाता वाम ।
मणिहुँ कांच ह्वैजाइ तब, लहै न कौड़ी दाम ॥

१ क्रोध २ वृद्धा ३ आकाश ४ नारद ५ पकड़ा ॥

जहँ कहुँ फिरत देव द्विज पावै ❀ दण्डलेइ बहु त्रास दिखावै
यहिआचरण फिरहि दिनराती ❀ महामलिन मन खल उतपाती
बहुरि तुरत पम्पापुर आवा ❀ बालिनाम कपिपति जेहिठांवा
अवलोकेसि इक सरवर शोभा ❀ जिहि मन महामुनिनकरलोभा
तहां कपीश करै निज ध्याना ❀ दशकन्धरहि देखि मुसुकाना
तब रावण बोला करि क्रोधा ❀ बकध्यानी कपि शठ बिनुबोधा
नाम तोर सुनि आयउँ धाई ❀ दे कपि युद्ध छांड़ि कदराई

दो०मोहिंजीते बिनु समर सुनु, वृथा ध्यान तव कीश।
कटकटाइ कह रजनिचर, रदन तीनि सै बीश॥

बालि कहा हठि करिय न रारी ❀ दशकन्धर घर जाहु विचारी
बल तुम्हार ऐसोइ है भाई ❀ अजयँ चारि दिशि मैं सुनिपाई
यहिविधि बालि बहुत समुझावा ❀ कवनिहुं भांति बोध नहिंआवा
तब सकोपि उठि झपटिकपीशा ❀ दृढ़गहि कांखचापि दशशीशा
बालिहि बिसरिगई सुधि तासू ❀ यहिविधि विगतभये षटमासू
एक दिवस रवि अंजलि साजा ❀ कांखते निसरि दशानन भाजा
निलज अशंक आव पुनि तहँवां ❀ करभुजकेलि सहसभुजजहँवां

दो०छोभेउजलभुजबीस बल, बूड़न लगी समाज।
सहसबाहुअतिक्रोध मन, मोहिंसमआनकोआज॥

जाइ दीख तहँ रावण ठाढ़ा ❀ जासु विपुल भुजबलजलबाढ़ा
माया प्रबल महाबल भारी ❀ लङ्केश्वर कहँ धरिसि प्रचारी
निरखितियनआश्चर्यविशाला ❀ बांधिराखि कछुदिन हयशाला
लज्जित दुष्ट मष्टकरि रहई ❀ रिसउरमारि कष्ट बहुसहई
सकल आइ देखहिं नर नारी ❀ मारहिं लात हँसैं दै गारी
नाम न कहै रहै सकुचाना ❀ बहुविधि पूंछै नृपति सुजाना
नृत्य करैं रम्भादिक नारी ❀ दशहु माथ दशदीपक बारी

१ दुःख २ बानरों का राजा ३ तालाव ४ मूर्ख ५ क्रूरता ६ दांत ७ हारि ८ घुड़शाला ९ चुप॥

मुनि पुलस्त्य तब जाइ छुड़ावा ❋ पुनिनलशाप आय तिहिं पावा

दो०मारग जात दीख अति, अनुपम सुन्दरिनारि।
चन्दन पुष्प पत्रकर, पूजन चलि त्रिपुरारि॥

देखि उर्वशी मन सकुचानी ❋ तब रावण बोला मृदुबानी
को तुम नारि गमन कहँ कीन्हा ❋ लज्जावश तिहिं उतर न दीन्हा
मन मद मत्त विचार न करेऊ ❋ धनपति पुत्रबधू कर धरेऊ
कीन्हि ताहि पुनि शंका आई ❋ घाटि कर्म्म कीन्हीं पछिताई
मन पछिताय शोच उर भयऊ ❋ लंकेश्वर लंका कहँ गयऊ
विकल उर्वशी अलकैंहिं आई ❋ नल कूबर सन बात जनाई
दीन्ह शाप तिन क्रोध अपारा ❋ रावण वंश होहु क्षयकारा
चली शाप लंका कहँ आई ❋ दशकन्धर बैठा जिहि ठांई
आगे आइ ठाढ़ि भइ शापा ❋ निरखिदशानन अतिभयकांपा

दो०शापहिं अङ्गीकार करि, मनमहँ कीन्ह विचार।
दण्डऋषिनसे लीन्हनाहिं, रोपेउ लङ्कभुवार॥

दूत चारि पठये ऋषि आश्रम ❋ निरखिबिसरिगेमुनिअधिआतमं
तिनसन तब पूछहिं मुनि हाला ❋ कहहु- कुशल लङ्केशभुवाला
कुशल तासु यह सुनहु मुनीशा ❋ कर तुमसन चाहत दशशीशा
सुनि सो वचन महाभय पाई ❋ करहिं विचार विरति बिसराई
जेहि दरबार नीति नहिं भाई ❋ खलमण्डली जुरी तहँ आई
कछु बिनु दिये नहीं गति आछी ❋ घट भरि रुधिरै दिये तनुपांछी
दूतन सौंपि कहा मुनि ज्ञानी ❋ भूपहिं कहेउ जाय यह बानी

दो०घट उघरत क्षय होइहहु, सहित सकल परिवार।
दूत तुरत घट लै गये, लङ्कापति दरबार॥

रावण घट लखि परम हुलासा ❋ तब दूतन मुनि वचन प्रकासा
सुनि मुनि शाप उपज उरदाहू ❋ बोला घट लै उत्तर जाहू

१ शिव २ कूबर ३ पतोहू ४ कुबेरपुरी ५ नाश ६ रावण ७ ध्यान ८ रक्त ९ देहचीरके॥

यज्ञ समेत धरणि धरि एहू ❋ जानि न पाव बात यह केहू
लै घट जनक नगर ते गये ❋ गाड़त क्षेत्र मध्य तहँ भये
जनक यज्ञ रचना तहँ ठयऊ ❋ चामीकर हल कर्षत भयऊ
प्रकटि अवनि ते ऋषय कुमारी ❋ कन्या कहि लीन्हीं उरधारी
नाम जानकी परम पुनीता ❋ नारद आइ कहा पुनि सीता
कहि सुकथा ऋषिरांव सिधाये ❋ बहुरि दूत लंकापुर आये
चारि ठांव हारा लंकेशा ❋ देवन को बहु देत कलेशा

इति क्षेपक ॥

रविशशि पवन वरुण धनुधारी ❋ अग्नि काल यम सबअधिकारी
किन्नर सिद्ध मनुज सुर नागा ❋ हठि सबही के पन्थहि लागा
ब्रह्म सृष्टि जहँ लगि तनुधारी ❋ दशमुख वशवर्त्ती नरनारी
आयसु करहिं सकल भयभीता ❋ नवहिं आइनितचरण विनीता

दो०भुजबल विश्ववश्य करि, राखेसि कोउ न स्वतंत्र[१] ।
मण्डलीक मणि रावण, राज करै निज मंत्र ॥

इन्द्रजीत सन जो कछु कहेऊ ❋ सो सब जनु पहिले करि रहेऊ
प्रथमहिं जिनकहँ आयसु दीन्हा ❋ तिनके चरित सुनहु जो कीन्हा
देखत भीम रूप सब पापी ❋ निशिचर निकर देव परितापी
करहिं उपद्रव असुर निकाया ❋ नाना रूप धरहिं करिमाया
जेहिविधि होय धर्म्म निर्मूला ❋ सो सब करहिं वेद प्रतिकूला
जेहिजेहि देश धेनु द्विजपावहिं ❋ नगर ग्रामपुर आगि लगावहिं
शुभआँचरण कतहुँ नहिं होई ❋ वेद विप्र गुरु मान न कोई
नहिं हरिभक्ति यज्ञ जप ज्ञाना ❋ सपनेहु सुनिय न वेद पुराना

छं०जपयोगविरागातपमखभागाश्रवणसुनैदशशीशा ।
आपहु उठिधावै रहै न पावै धरि सबघालै खीशा ॥
अतिभ्रष्टअचाराभा संसारा धर्म्मसुनियनहिंकाना ।

१ नारद २ आधीन ३ स्वाधीन ४ समूह ५ अच्छा चलन ६ कान ७ नाश ॥

तेहि बहुविधि त्रासै देश निकासै जो कह वेदपुराना॥
सो०वरणि न जाय अनीति, घोर निशाचर जो करहिं।
हिंसापर अति प्रीति, तिनके पापन कवन मिति॥
बाढ़े बहु खल चोर जुआरी ❀ जे लम्पट परधन परनारी
मानहिं मातु पिता नहिं देवा ❀ साधुन सों करवावहिं सेवा
जिनके अस आचरण भवानी ❀ ते जानहु निशिचर समप्रानी
अतिशय देखि धर्म्मकी हानी ❀ परम सभीत धरा[1] अकुलानी
गिरि सर सिन्धु भार नहिं मोही ❀ जस मोहिं गरुअ एक परद्रोही
सकल धर्म्म देखै विपरीता ❀ कहि न सकै रावण भयभीता
धेनु[2] रूप धरि हृदय विचारी ❀ गई तहां जहँ सुर मुनिझारी
निज[3] सन्ताप सुनायसि रोई ❀ काहू ते कछु काज न होई
छं०सुरमुनिगन्धर्वामिलिकरिसर्वा गये विरंचिकेलोका।
सँगगोतनुधारीभूमिविचारीपरमविकलभयशोका[4]॥
ब्रह्मा सब जाना मनअनुमाना मेरो कछु न बसाई।
जाकरि तैं दासी सो अविनासी हमरो तोर सहाई॥
सो०धरणिधरहु मन धीर, कह विरंचि हरिपद सुमिरि।
जानत जनकी पीर, प्रभु भंजहिं दारुण[5] विपति॥
बैठे सुर सब करहिं विचारा ❀ कहँ पाइय प्रभु करिय पुकारा
पुर वैकुण्ठ जान कह कोई ❀ कोइकह पय[6]निधि बस प्रभु सोई
जाके हृदय भक्ति जस प्रीती ❀ प्रभु तहँ प्रकट सदा यह रीती
तेहि समाज गिरिजा मैं रह्यऊं ❀ अवसरपाय वचन इक कह्यऊं
हरि व्यापक सर्वत्र[7] समाना ❀ प्रेम ते प्रकट होहिं मैं जाना
देशकाल दिशिविदिशिहुमाहीं ❀ कहहु सो कहां जहां प्रभुनाहीं
अग जगमय सब रहित विरागी ❀ प्रेम ते प्रभु प्रकटैं जिमि आगी

१ पृथ्वी २ गौ ३ अपना ४ दुःख ५ असह्य ६ क्षीरसिंधु ७ सबठौहीं॥

मोर वचन सबके मन माना ❀ साधु साधु कहि ब्रह्म बखाना

दो० सुनि विरञ्चि मन हर्ष तन, पुलक नयन बहनीर ।
अस्तुति करत सुजोरिकर, सावधान मतिधीर ॥

छं० जयजयसुरनायकजनसुखदायकप्रणतपालभगवन्ता
गोद्विजहितकारी जयअसुरारी सिन्धुसुता प्रियकन्ता ॥
पालन सुरधरणी अद्भुत करणी मर्म न जानै कोई ।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करहु अनुग्रह सोई ॥
जय जय अविनासी सब घटवासी व्यापकपरमानन्दा ।
अविगतगोतीता चरित पुनीता माया रहित मुकुन्दा ॥
जेहिलागिविरागी अतिअनुरागी विगतमोहमुनिवृन्दा ।
निशिवासरध्यावहिंहरिगुणगावहिंजयतिसच्चिदानन्दा ॥
जेहि सृष्टि उपाई त्रिविध बनाई सङ्ग सहाय न दूजा ।
सो करहु अघारी चिन्त हमारी जानिय भक्ति न पूजा ॥
जो भवभय भञ्जन मुनिमन रञ्जन गञ्जन विपतिवरूथा ।
मनवचक्रमबानी छांड़ि सयानी शरण सकल सुरयूथा ॥
शारदश्रुति शेषा ऋषयअशेषा जाकहँ कोउनहिंजाना ।
जेहि दीन पियारे वेद पुकारे द्रवहु सो श्री भगवाना ॥
भववारिधिमन्दर सबविधिसुन्दर गुणमन्दिरसुखपुञ्जा ।
मुनिसिद्धसकलसुर परमभयातुर नमतनाथ पदकञ्जा ॥

दो० जानिसभय सुर भूमि मुनि, वचन समेत सनेह ।
गगनगिरा गम्भीर भइ, हरणि शोक सन्देह ॥

जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेशा ❀ तुमहिं लागि धरिहौं नरवेशा
अंशन सहित मनुज अवतारा ❀ लेहौं दिनकरवंश उदारा

१ लक्ष्मी २ कृपा ३ पाप नाशनेवाले ४ डरेहुये ५ सूर्यवंश ॥

कश्यप अदिति महातप कीन्हा ❀ तिन कहँ मैं पूरब वर दीन्हा
ते दशरथ कौशल्या रूपा ❀ कोशलपुरी[1] प्रकट नर भूपा
तिनके गृह अवतरिहौं जाई ❀ रघुकुल तिलक सुचारिहु भाई
नारद वचन सत्य सब करिहौं ❀ परमशक्ति समेत अवतरिहौं
हरिहौं सकल भूमि गरुआई[2] ❀ निर्भय होहु देव समुदाई
गगन ब्रह्म वाणी सुनि काना ❀ तुरत फिरे सुर हृदय जुड़ाना
तब ब्रह्मा धरणिहिं समुझावा ❀ अभय[3] भई भरोस जिय आवा

दो० निज लोकहि विरञ्चि गये, देवन इहै सिखाय।
वानर तनुधरि धरणि महँ, हरिपद सेवहु जाय॥

गये देव सब निज निज धामा ❀ भूमि सहित पाये विश्रामा
जो कछु आयसु ब्रह्मा दीन्हा ❀ हर्षे देव विलम्ब न कीन्हा
वनचर देह धरी क्षिति[4] माहीं ❀ अतुलितबल प्रताप तिनपाहीं
गिरितरु नख आयुध सबवीरा ❀ हरिमारग जोवहिं रणधीरा
गिरि कानन जहँ तहँ महिपूरी ❀ रह निज निज अनीक[5] रचिरूरी
यह सब रुचिर चरित मैं भाखा ❀ अब सो सुनहु जो बीचहिंराखा
अवधपुरी रघुकुल मणिराऊ ❀ वेद विदित तेहि दशरथ नाऊ
धर्म्म धुरन्धर गुणनिधि ज्ञानी ❀ हृदय भक्तिमति शारँग[6]पानी[7]

दो० कौशल्यादि नारि प्रिय, सब आचरण पुनीत।
पति अनुकूल प्रेम दृढ़, हरिपद कमल विनीत॥

एक बार भूपति मन माहीं ❀ भै गलानि मोरे सुत नाहीं
गुरुगृह गये तुरत महिपाला ❀ चरणलागिकरिविनयविशाला
निजदुखसुख नृप गुरुहि सुनायो ❀ कहि वशिष्ठ बहुविधिसमुझायो
धरहु धीर ह्वैहैं सुत चारी ❀ त्रिभुवन विदित भक्तभयहारी
शृङ्गी ऋषिहिं वशिष्ठ बुलावा ❀ पुत्र लागि शुभ यज्ञ करावा
भक्तिसहित मुनि आहुति दीन्हें ❀ प्रकटे अगिनि चारु कँरलीन्हें

१ अयोध्या २ बोझ ३ निडर ४ पृथ्वी ५ फ़ौज ६ विष्णु ७ हाथ॥

जो वशिष्ठ कछु हृदय विचारा ❀ सकल काज भा सिद्ध तुम्हारा
यह हवि बांटि देहु नृप जाई ❀ यथायोग्य जेहि भाग बनाई
दो०तब अदृश्य पावक भये, सकलसभहि समुझाय।
परमानन्द मगन नृप, हर्ष न हृदय समाय॥
गुरु पद वन्दि भूप गृह आये ❀ मञ्जुल मङ्गल मोद बधाये
तबहिं राव प्रिय नारि बुलाई ❀ कौशल्यादि तहां चलिआई
अर्द्धभाग कौशल्यहि दीन्हा ❀ उभयँ भाग आधेकर कीन्हा
कैकेयी कहँ नृप सो दयऊ ❀ रहेउ सो उभय भाग पुनि भयऊ
कौशल्या केकयी हाथ धरि ❀ दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्नकरि
यहि विधि गर्भसहित सब नारी ❀ भयउ हृदय हरषित सुख भारी
जा दिनते हरि गर्भहि आये ❀ सकललोक सुख संपतिछाये
मन्दिर महँ सब राजहिं रानी ❀ शोभा शील तेजकी खानी
सुखयुत कछुककाल चलिगयऊ ❀ जेहि प्रभुप्रकट सो अवसर भयऊ
दो०योग लग्न ग्रह वार तिथि, सकल भये अनुकूल।
चर अरु अचर हर्ष युत, राम जन्म सुखमूल॥
नवमी तिथि मधुमास पुनीता ❀ शुक्लपक्ष अभिजित हरि प्रीता
मध्यदिवस अति शीत न घामा ❀ पावन काल लोक विश्रामा
शीतल मन्द सुरभि बह बाऊ ❀ हरषित सुर सन्तन मन चाऊ
वनकुसुमित गिरिगणमणियारा ❀ स्रवहिं सकल सरितामृत धारा
सो अवसर विरंचि जब जाना ❀ चले सकल सुर साजि विमाना
गगन विमल संकुल सुरयूथा ❀ गावहिं गुण गन्धर्व वरूथा
वर्षहिं सुमन सुअंजलि साजी ❀ गहगह गगन दुन्दुभी बाजी
अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा ❀ बहुविधि लावहिं निजनिज सेवा
दो०सुरसमूह विनती करी, पहुँचे निज निज धाम।
जगनिवास प्रभु प्रकटभे, अखिललोक विश्राम॥

१ खीर २ हिस्सा ३ अग्नि ४ दो ५ चैत्रमास ६ सिंह ७ हवा ८ खुशी ९ फूलेहुये १० सबजगत॥

छं०भये प्रकटकृपालादीनदयालाकौशल्याहितकारी ।
हरषित महतारी मुनि मनहारी अद्भुतरूप निहारी ॥
लोचनअभिरामातनुघनश्यामा निजआयुधभुजचारी ।
भूषण वनमाला नयन विशाला शोभासिन्धु खरारी ॥
कहदुहुँकरजोरी अस्तुतितोरी केहिविधिकरौं अनन्ता ।
माया गुणज्ञानातीत अमाना वेद पुराण भनन्ता ॥
करुणासुखसागर सबगुणआगर जेहिगावहिंश्रुतिसन्ता ।
सो ममहितलागी जन अनुरागी प्रकटभये श्रीकन्ता ॥
ब्रह्माण्डनिकाया निर्मितमाया रोम रोम प्रति वेदकहै ।
ममउर सो वासी यहउपहासी सुनतधीरमति थिर न रहै॥
उपजाजबज्ञानाप्रभुमुसुकानाचरितबहुतविधिकीनचहै।
कहिकथासुनाई मातुबुझाई जेहिप्रकार सुतप्रेमलहै ॥
माता पुनिबोली सो मतिडोली तजहु तात यहरूपा ।
कीजैशिशुलीला अतिप्रियशीला यह सुखपरमअनूपा॥
सुनि वचन सुजाना रोदनठाना ह्वै बालक सुरभूपा ।
यहचरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा ॥
दो०विप्र धेनु सुर संत हित, लीन्ह मनुज अवतार ।
निजइच्छा निर्म्मित तनु, माया गुण गोपार ॥
सुनि शिशु रुदन परम प्रियबानी ❀ सम्भ्रम चलि आईं सबरानी
हरषित जहँ तहँ धाईं दासी ❀ आनँद मगन सकल पुरवासी
दशरथ पुत्र जन्म सुनि काना ❀ मानहुँ ब्रह्मानन्द समाना
परम प्रेम मन पुलक शरीरा ❀ चाहत उठन करत मतिधीरा
जाकर नाम सुनत शुभ होई ❀ मोरे गृह आवा प्रभु सोई
परमानन्द पूरि मन राजा ❀ कहा बुलाइ बजावहु बाजा

१ देह २ शोभासागर ३ कहते हैं ४ देवताओं के स्वामी ५ संसाररूपी कुवां ॥

गुरु वशिष्ठ कहँ गयउ हँकारा ❀ आये द्विजन सहित नृपद्वारा
अनुपम बालक देखिनि जाई ❀ रूपराशि गुण कहि न सिराई
दो०तब नांदीमुख श्राद्धकरि, जातकर्म्म सब कीन्ह।
हाटक धेनु वसन मणि, नृप विप्रन कहँ दीन्ह॥
ध्वज पताक तोरण पुर छावा ❀ कहि न जाय जेहि भांतिबनावा
सुमन वृष्टि आकाश ते होई ❀ ब्रह्मानन्द मगन सब कोई
वृन्द वृन्द मिलि चलीं लुगाईं[2] ❀ सह शृंगार किये उठि धाईं
कनक[1] कलश मंगल भरिथारा ❀ गावत पैठहिं भूप दुवारा
करि आरती निछावरि करहीं ❀ बार बार शिशु चरणन परहीं
मागध सूत वन्दि गणगायक ❀ पावन गुण गावहिं रघुनायक
सर्वश दान दीन्ह सब काहू ❀ जेहि पावा राखा नहिं ताहू
मृगमद[3] चन्दन कुंकुम[4] कीचा ❀ मची सकल वीथिन[5]बिचबीचा
दो०गृह गृह बाजु बधाव शुभ, प्रकट भये सुखकन्द।
हर्षवन्त सब जहँ तहँ, नगर नारि नर वृन्द॥
केकय सुता सुमित्रा दोऊ ❀ सुन्दर सुत जन्मत भइँ सोऊ
वह सुखसम्पति समय समाजा ❀ कहि न सकैं शारद अहिराजा
अवधपुरी सोहै यहि भांती ❀ प्रभुहि मिलन आई जनुराती
देखि भानु जनु मन सकुचानी ❀ तदपि बनी सन्ध्या अनुमानी
अगर धूप जनु बहु अँधियारी ❀ उड़ै अबीर मनहु अरुणारी[6]
मन्दिर मणि समूह जनु तारा ❀ नृप गृह कलश सो इन्दु[7]उदारा
भवन वेदध्वनि अति मृदुबानी ❀ जनु खगमुखर[8] समय अनुमानी
कौतुक देखि पतंग[9] भुलाना ❀ एक मास तेहिं जात न जाना
दो०मास दिवस कर दिवस भा, मर्म न जानै कोइ।
रथ समेत रवि थाकेऊ, निशा कवनविधिहोइ॥
यह रहस्य काहू नहिं जाना ❀ दिनमणि चले करत गुणगाना

१ सोना २ स्त्रियां ३ कस्तूरी ४केशर ५रास्ता ६ सुर्ख ७चन्द्रमा ८ पक्षियों की वाणी ९सूर्य॥

देखि महोत्सव सुर मुनि नागा ❁ चले भवन वर्णत निजभागा
औरौ एक कहौं निज चोरी ❁ सुनु गिरिजाअति दृढ़मतितोरी
काकभुशुण्डि संग हम दोऊ ❁ मनुजरूप जानै नहिं कोऊ
परमानन्द प्रेम सुख फूले ❁ वीथिन फिरहिं मगनमन भूले
यह शुभ चरित जान पै सोई ❁ कृपा रामकी जापर होई
तेहिअवसरजोजेहिविधिआवा ❁ दीन्ह भूप जो जेहि मनभावा
गज[1] रथ तुरँग हेम[2] गो हीरा ❁ दीन्हे नृप नानाविधि चीरा[3]

दो०मन सन्तोष सबनके, जहँ तहँ देहिं अशीश।
सकल तनयँ[4] चिरजीवहु, तुलसिदास के ईश॥

कछुक दिवस बीते यहि भांती ❁ जात न जानहिं दिन अरु राती
नामकरण कर अवसर जानी ❁ भूप बोलि पठये मुनिज्ञानी
करि पूजा भूपति अस भाखा ❁ धरिय नाम जो मुनि गुनिराखा
इनके नाम अनेक अनूपा ❁ मैं नृप कहब स्वमति अनुरूपा
जो आनन्द सिन्धु सुखरासी ❁ शीकर ते त्रैलोक्य सुपासी
सो सुखधाम राम अस नामा ❁ अखिललोकदायक विश्रामा
विश्व भरण पोषण[5] करु जोई ❁ ताकर नाम भरत अस होई
जाके सुमिरण ते रिपु[6] नाशा ❁ नाम शत्रुहन वेद प्रकाशा

दो०लक्षण धाम रामप्रिय, सकल जगत आधार।
गुरु वशिष्ठ तेहि राखेऊ, लक्ष्मण नाम उदार॥

धरेउ नाम गुरु हृदय विचारी ❁ वेदतत्त्व नृप तवँ[7] सुत[8] चारी
मुनिजन धनसर्वस शिवप्राना ❁ बालकेलिरस तेहि सुखमाना
बारेहिते निजहित पति जानी ❁ लक्ष्मण रामचरण रतिमानी
भरत शत्रुहन दोनों भाई ❁ प्रभु सेवक यश प्रीति बढ़ाई
श्यामगौर सुन्दर दोउ जोरी ❁ निरखहिं छवि जननी तृण तोरी
चारिउ शीलरूप गुण धामा ❁ तदपि अधिक सुखसागर[9] रामा

१ हाथी २ सोना ३ कपड़ा ४ पुत्र ५ पालना ६ बैरी ७ तुम्हारे ८ पुत्र ९ समुद्र॥

हृदय अनुग्रह इन्दु प्रकासा ❋ सूचित किरणि मनोहर हासा
कबहुँ उछंग कबहुँ वरपालन ❋ मातु दुलारहिं कहिप्रियलालन

दो० व्यापक ब्रह्म निरंजन, निर्गुण विगत विनोद।
सोइ अज प्रेम भक्तिवश, कौशल्या की गोद॥

काम कोटि छविश्याम शरीरा ❋ नीलकंज वारिद[1] गम्भीरा
अरुण चरण पंकज नख जोती ❋ कमल दलन बैठे जनुमोती
रेख कुलिश[2] ध्वज अंकुश सोहै ❋ नूपुरधुनि सुनि मुनि मन मोहै
कटि किङ्किणी उदर त्रय रेखा ❋ नाभिगँभीर जानु जेहिं देखा
भुज विशाल भूषणयुत भूरी ❋ हियहरिनख[3] शोभा अतिरूरी
उर मणिहार पदिककी शोभा ❋ विप्र चरण देखत मनलोभा
कम्बुकंठ अति चिबुक सुहाई ❋ आनन अमित मदनछविछाई
दुइ दुइ दशन अधर अरुणारे ❋ नासा तिलक को वरणै पारे
सुन्दर श्रवण सुचारु कपोला[4] ❋ अति प्रियमधुर तोतरे बोला
नीलकमल दोउनयन विशाला ❋ विकट भृकुटिलटकन वरभाला
चिकणकच[5] कुञ्चित गभुवारे ❋ बहुप्रकार रचि मातु सँवारे
पीत भँगुलिया तनु पहिराई ❋ जानु[6]पाणि विचरनि मोहिंभाई
रूपसकहिंनहिं कहिश्रुतिशेखा ❋ सो जानै सपनेहु जेहिं देखा

दो०सुख सन्दोह मोहपर, ज्ञान गिरा[7] गोतीत।
दम्पति परम प्रेमवश, कर शिशु चरित पुनीत॥

यहिविधि राम जगत पितुमाता ❋ कोशलपुरवासिन सुखदाता
जिन रघुनाथ चरण रतिमानी ❋ तिनकी यह गति प्रकटभवानी
रघुपति विमुख यतन कर कोरी ❋ कवन सकै भवबन्धन छोरी
जीव चराचर वश करि राखे ❋ सो माया प्रभु सों भय भाखे
भृकुटि[8] विलास नचावै ताही ❋ अस प्रभुछांड़ि भजियकहुकाही
मन क्रम वचन छांड़ि चतुराई ❋ भजतहि कृपा करैं रघुराई

१ बादल २ बज्र ३ बघनखा ४ गाल ५ बाल ६ जांघ ७ वाणी ८ भौंह॥

यहिविधिशिशुविनोदप्रभुकीन्हा ❀ सकल नगरवासिन सुखदीन्हा
लै उछंग कबहूं हलरावैं ❀ कबहुँ पालने घालि झुलावैं
दो०प्रेम मगन कौशल्या, निशिदिन जात न जान।
सुत सनेह वश माता, बालचरित कर गान॥
एक बार जननी नहवाये ❀ करि शृंगार पलना पौढ़ाये
निज कुल इष्टदेव भगवाना ❀ पूजा हेतु कीन्ह पकवाना
करि पूजा नैवेद्य चढ़ावा ❀ आपु गई जहँ पाकं बनावा
बहुरि मातु तहँवां चलि आई ❀ भोजन करत दीख सुत जाई
गइ जननी शिशुपहँ भयभीता ❀ देखा बाल तहां पुनि सूतां
बहुरि आइ देखा सुतसोई ❀ हृदयकम्प मन धीर न होई
इहां उहां दुइ बालक देखा ❀ मतिभ्रममोरि कि आनविशेखा
देखि राम जननी अकुलानी ❀ प्रभु हँसिदीन्ह मधुर मुसुकानी
दो०दिखरावा निज मातुहीं, अद्भुत रूप अखण्ड।
रोम रोम प्रति राजहीं, कोटि कोटि ब्रह्मण्ड॥
अगणितरविशशिशिवचतुरानन ❀ बहुगिरिसरितसिंधुमहिकानन
काल कर्म गुण ज्ञान स्वभाऊ ❀ सो देखा जो सुना न काऊं
देखी माया सब विधि गाढ़ी ❀ अति सभीत जोरे कर ठाढ़ी
देखा जीव नचावै जाही ❀ देखी भक्ति जो छोरै ताही
तनुपुलकित मुखवचन न आवा ❀ नयन मूंदि चरणन शिरनावा
विस्मयवन्त देखि महतारी ❀ भये बहुरि शिशुरूप खरारी
अस्तुतिकरि न जाय भयमाना ❀ जगत पिता मैं सुतकरिजाना
हरिजननिहिं बहुविधिसमुझाई ❀ यह जनि कतहुँ कहसिसुनुमाई
दो०बार बार कौशल्या, विनय करै करजोरि।
अब जनि कबहूं व्यापै, प्रभु मोहिं मायातोरि॥
बालचरित हरिबहुविधि कीन्हा ❀ सकल नगरवासिन सुखदीन्हा

१ भोजन २ माता ३ सोयाहुआ ४ अनोखा ५ पूरा ६ नदी ७ कभी॥

कछुक काल बीते सब भाई ❀ बड़े भये परिजन सुखदाई
चूड़ाकरण कीन्ह गुरु जाई ❀ पुनि दक्षिणा द्विजन बहुपाई
परम मनोहर चरित अपारा ❀ करत फिरत चारिउ सुकुमारा
मन क्रम वचन अगोचर जोई ❀ दशरथ अजिर बिचर प्रभुसोई
भोजन करत बुलावत राजा ❀ नहिंआवत तजि बालसमाजा
कौशल्या जब बोलन जाई ❀ ठुमुकिठुमुकि प्रभु चलहिं पराई
निगमनेति शिव अन्त न पाई ❀ ताहि धरै जननी हठिधाई
धूसर धूरि भरे तनु आये ❀ भूपति बिहँसि गोद बैठाये
दो०भोजन करत चपलचित, इत उत अवसर[१] पाइ।
भाजिचले किलकात मुख, दधि ओदन[२] लपटाइ॥
बाल चरित[३] अति सरल सुहाये ❀ शारद शेष शम्भु श्रुति गाये
जिनकरमनयहिरँग नहिं राता ❀ ते जग वंचक किये विधाता
भये कुमार जबहिं सब भ्राता ❀ दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता
गुरु गृह गये पढ़न रघुराई ❀ अल्प[४] काल विद्या सब पाई
जाकी सहज श्वास श्रुतिचारी ❀ सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी
विद्या विनय निपुण गुणशीला ❀ खेलहिं खेल सकल नृपलीला
करतल[५] बाण धनुष अति सोहा ❀ देखत रूप चराचर मोहा
जिन वीथिन बिहरहिं सब भाई ❀ थकित होहिं सब लोग लुगाई
दो०कोशलपुर वासी नर, नारि वृन्द अरु बाल।
प्राणहुँते प्रिय लागहीं, सब कहँ राम कृपाल॥
बन्धु सखा सब लेहिं बुलाई ❀ वनमृगया[६] नित खेलहिं जाई
पावन मृग मारहिं जियजानी ❀ दिनप्रति नृपहि देखावहिं आनी
जे मृग राम बाण के मारे ❀ ते तनुतजि सुरलोक[७] सिधारे
अनुज सखा सँग भोजन करहीं ❀ मातु पिता आज्ञा अनुसरहीं
जेहिविधि सुखीहोहिं सबलोगा ❀ करहिं कृपानिधि सोइ संयोगा

१ समय २ भात ३ खेल ४ थोड़ा ५ हथेली ६ शिकार ७ वैकुंठ॥

वेद पुराण सुनहिं मनलाई ❋ आपु कहहिं अनुजन समुझाई
प्रातकाल उठिकै रघुनाथा ❋ मातु पिता गुरु नावहिं माथा
आयसु मांगि करहिं पुरकाजा ❋ देखि चरित हर्षहिं मन राजा

दो०व्यापकअकल[1]अनीहअज, निर्गुण नाम न रूप।
भक्तहेतु नाना विधिहि, करशिशुचरितअनूप॥

यह सब चरित कहा मैं गाई ❋ आगिलि कथा सुनहु मनलाई
विश्वामित्र महा मुनि ज्ञानी ❋ बसहिंविपिन[2] शुभआश्रमजानी
जहँ जप यज्ञ योग मुनि करहीं ❋ अति मारीच सुबाहुहि डरहीं
देखत यज्ञ निशाचर धावहिं ❋ करहिं उपद्रव मुनि दुखपावहिं
गाधितनय[3] मन चिन्ता व्यापी ❋ हरिबिनुमरहिं न निशिचरपापी
तब मुनिवर मन कीन्ह विचारा ❋ प्रभु अवतरेउ हरण महिभारा
यहि मिसु देखौं प्रभुपद जाई ❋ करि विनती आनहुँ दोउभाई
ज्ञान विराग सकल गुण अयना[4] ❋ सो प्रभु मैं देखब भरि नयना

दो०बहुविधि करत मनोरथ, जात न लागीबार।
करि मज्जन सरयू जल, गये भूप दरबार॥

सुनि आगमन सुना जब राजा ❋ मिलन गयउ लै विप्रसमाजा
करिदण्डवत मुनिहिं सनमानी ❋ निज आसन बैठारेउ आनी
चरण पखारि[5] कीन्ह अति पूजा ❋ मोसम धन्य आजु नहिं दूजा
विविध भांति भोजन करवावा ❋ मुनिवर हृदय हर्ष[6] अतिपावा
पुनि चरणन मेले सुतचारी ❋ राम देखि मुनि विरति बिसारी
भये मगन देखत सुख शोभा ❋ जनु चकोर पूरण शशि लोभा
तब मन हरषि वचन कह राऊ ❋ मुनि अस कृपा कीन्ह नहिं काऊ
केहि कारण आगमन तुम्हारा ❋ कहहु सो करत न लाउबबारा
असुर समूह सतावहिं मोहीं ❋ मैं याचन आयउँ नृप तोहीं
अनुज समेत देहु रघुनाथा ❋ निशिचरवध मैं होब सनाथा

१ कलारहित २ बन ३ विश्वामित्र ४ घर ५ धोकर ६ खुशी॥

दो॰देहु भूप मन हरषित, तजहु मोह अज्ञान।
धर्म्म सुयश नृप तुमकहँ, इनकहँ अतिकल्यान॥

सुनि राजा अति अप्रियबानी ❀ हृदय कम्प मुख द्युति कुम्हिलानी
चौथे पन पायउँ सुतचारी ❀ विप्र वचन नहिं कहेउ विचारी
मांगहु भूमि धेनु धन कोषा[2] ❀ सर्बस देउँ आजु सह रोषा
देह प्राण ते प्रिय कछु नाहीं ❀ सोउ मुनि देउँ निमिष[3] इकमाहीं
सबसुत प्रिय मोहिं प्राणकिनाईं ❀ राम देत नहिं बनै गोसाईं
कहँ निशिचर अति घोर कठोरा[4] ❀ कहँ सुन्दर सुत परम किशोरा[5]
सुनि नृप गिरा[6] प्रेमरस सानी ❀ हृदय हर्ष माना मुनि ज्ञानी
तब वशिष्ठ बहु विधि समुझावा ❀ नृप सन्देह नाश कहँ पावा
अति आदर दोउ तनय बुलाये ❀ हृदय लाय बहुभांति सिखाये
मेरे प्राणनाथ सुत दोऊ ❀ तुम मुनि पिता आन नहिं कोऊ

दो॰सौंपे भूपति ऋषिहिसुत, बहुविधि देइ अशीश।
जननी भवन गये प्रभु, चले नाइ पद शीश॥

सो॰पुरुषसिंह दोउ वीर, हरषि चले मुनिभय हरण।
कृपासिन्धु मतिधीर, अखिलविश्वकारणकरण॥

अरुण नयन उर बाहु विशाला ❀ नीलजलज तनु श्यामतमाला
कटि पटपीत कसे वरभाथा ❀ रुचिर चाप शायक दुहुँहाथा
श्याम गौर सुन्दर दोउ भाई ❀ विश्वामित्र महानिधि[7] पाई
प्रभु ब्रह्मण्य देव मैं जाना ❀ मोहिं हित पिता तजे भगवाना
चले जात मुनि दीन्ह दिखाई ❀ सुनि ताड़का क्रोध करि धाई
एकहि बाण प्राण हरि लीन्हा ❀ दीनजानि तेहि निजपद दीन्हा
तबऋषिनिजनाथहिंजियचीन्हा ❀ विद्यानिधि कहँ विद्या दीन्हा
जाते लाग न क्षुधा पिपासा ❀ अतुलित बल तनुतेजप्रकासा

१ शोभा २ खज़ाना ३ पल ४ कठिन ५ बालक ६ बाणी ७ बड़ाखज़ाना॥

दो०आयुध सकल समर्पिकरि, प्रभुनिजआश्रमआनि।
कन्दमूल फल भोजन, दिये भक्त हित जानि॥
प्रात कहा मुनि सन रघुराई ❀ निर्भय यज्ञ करहु तुम जाई
होम करन लागे मुनि झारी ❀ आपु रहे मखकी रखवारी
सुनि मारीच निशाचर कोही ❀ लै सहाय आवा मुनिद्रोही
बिनु फर बाण राम तेहि मारा ❀ शत योजन गा सागर पारा
पावक शर सुबाहु पुनि मारा ❀ अनुज निशाचर कटक सँहारा
मारि असुर सुर निर्भयकारी ❀ अस्तुति करहिं देव मुनिझारी
तहँ पुनि कछुक दिवस रघुराया ❀ रहे कीन्ह विप्रन पर दाया
भक्ति हेतु बहु कथा पुराना ❀ कहैं विप्र यद्यपि प्रभु जाना
तब मुनि सादर कथा बुझाई ❀ चरित एक देखिय प्रभु जाई
धनुषयज्ञ सुनि रघुकुलनाथा ❀ हरषि चले मुनिवर के साथा
आश्रम एक दीख मग माहीं ❀ खगमृग जीवजन्तु तहँ नाहीं
पूंछा मुनिहिं शिला प्रभु देखी ❀ सकल कथा ऋषि कही विशेखी
दो०गौतम नारी शापवश, उपलै देह धरि धीर।
चरण कमल रज चाहती, कृपा करहु रघुवीर॥
छं०परसतपदपावनशोकनशावनप्रकटभईतपपुंजसही।
देखतरघुनायकजनसुखदायक सम्मुखह्वैकरजोरिरही॥
अतिप्रेमअधीरापुलकशरीरामुखनहिंआवतवचनकही।
अतिशयबड़भागीचरणनलागीयुगलनयनजलधारबही
धीरजमनकीन्हा प्रभुकहँचीन्हा रघुपतिकृपा भक्तिपाई।
अतिनिर्मलबानी अस्तुतिठानी ज्ञानगम्य जय रघुराई॥
मैंनारिअपावन प्रभुजगपावन रावनरिपुजनसुखदाई।
राजीवविलोचनभवभयमोचन पाहिपाहिशरणहिआई॥

१ हथियार २ यज्ञ ३ पत्थर ४ अपवित्र ५ पवित्र ६ दास ७ कमल॥

मुनिशापजोदीन्हाअतिभलकीन्हापरमअनुग्रहमैंमाना
देखेउँभरिलोचनप्रभुभयमोचन यहैलाभ शंकरजाना॥
विनती प्रभुमोरी मैं मतिभोरी नाथ न वरमांगौं आना।
पदपद्मपरागा रसअनुरागा ममन्मनमधुप करैपाना॥
जेहिपदसुरसरितापरमपुनीताप्रकटभईशिवशीशधरी।
सोईपदपंकज जेहिपूजतअजममशिरधरेउकृपालुहरी॥
यहिभांति सिधारी गौतमनारी बारबार हरिचरणपरी।
जोअतिमनभावा सोवरपावा गइपतिलोकअनन्दभरी॥
दो०अस प्रभु दीनदयालु हरि, कारण रहित कृपाल।
तुलसिदास शठताहिभजु, छांड़ि कपट जंजाल॥
चले राम लक्ष्मण मुनि संगा ❀ गये जहां जगपावनि गंगा
अनुजसहित प्रभु कीन्हप्रणामा ❀ बहुप्रकार सुख पायउ रामा
अथ क्षेपक॥
पुनि सुरसरि उतपति रघुराई ❀ कौशिक सन पूंछी शिरनाई
कह मुनि प्रभुतवकुल इकराजा ❀ नाम सगर तिहुँलोक विराजा
तेहिके युग भामिनि सुकुमारी ❀ प्रथमकेशिनी सुमति पियारी
सबप्रकार सम्पति सुर भ्राजा ❀ सुतविहीन मन विस्मय राजा
एकसमय भामिनि दोउसाथा ❀ गये वन तनय हेतु रघुनाथा
सघन सफलतरु सुन्दर नाना ❀ तहँ भृगुमुनि तपतेज निधाना
दो०सहित नारिनृपमुदितमन, रहे वर्ष शत एक।
कीन्हे तपबल देखि भृगु, अस्तुति कीन्ह अनेक॥
कहिनिजदुखप्रणामनृपकीन्हा ❀ दै अशीश तब मुनिवर दीन्हा
नृपरानी सन मुनि अस भाषा ❀ लेहुस्ववर जो जेहि अभिलाषा
सुनि मुनिवचन शीशतिननावा ❀ देहु नाथ जो अति मनभावा

१ कृपा २ भौंरा ३ गंगाजी ४ अहल्या ५ विश्वामित्र ६ प्रसन्न॥

एकहि कह्यो एक सुत होना ❋ दूसरि साठिसहस गुण लोना
हरषित भयो सुभग वरपाई ❋ पाणिजोरि चरणन शिरनाई
सहित भामिनी अवधहि आये ❋ हर्ष सहित कछु दिवस गँवाये
जानि सुघरि सुन्दरि सुखदाई ❋ नाम केशि असमंजस जाई
सुमतिप्रसवँ इक तुम्बुरि सोई ❋ भये सुतप्रकट कहे मुनि जोई
निरखे सुत हरषित सब होई ❋ मंगलचार किये सब कोई
हर्ष सहित दिय दान नरेशू ❋ पूजि विप्र गुरु गौरि गणेशू
घृतघट सुन्दर विविध मँगाये ❋ ते सब सुत नृप तिनमहँ नाये

दो०यहि विधि भये सकलसुत, पूजे सब मन काम।
जाइ दिवसनिशि हर्षवश, सुनहुराम घनश्याम॥

पुरजन सब घर घरनि नरेशू ❋ अति आनँद तनु मिटाअँदेशू
बालकेलि कर भये कुमारा ❋ लीला करैं अगम संसारा
होयँ सो काज सकल मनचीते ❋ यहि सुखबसत बहुत दिनबीते
सरयू नदी अवध जो अहई ❋ विमल सलिलँ उत्तरतट बहई
प्रजा लोक के बालक नाना ❋ नित उठि तहांकैं अस्नाना
असमंजस तहँ तरँणी आनी ❋ तिनहिं चढ़ाइ बोरिनिजपानी
भये प्रजा सब परम दुखारी ❋ बालकबध सुनि सुनहु खराँरी
सकल गये जहँ बैठ नृपाला ❋ बोले वचन नाइ पद भालाँ
तुम नृप चहहु प्रजा प्रतिपाला ❋ सुत तुम्हार भा सब कर काला
तजब देश सब सुनहु नरेशू ❋ बिना तजे नहिं मिटै कलेशू

दो०तव सुत कीन्हे पाप बहु, मारे बालक वृन्द।
तुमकहँ प्राणसमान यह, सकल प्रजनकहँ मन्द॥

प्रजा गिरा सुनि धीरज दीन्हा ❋ सुतहि देश ते बाहर कीन्हा
तासु तनय जग विदित प्रभाऊ ❋ गुणनिधि अंशुमान तेहिनाऊ
बसत हृदय नृप के सो कैसे ❋ मुनिमन मीनँ सलिलरह जैसे

१ सुन्दर २ दिन ३ गर्भ से पैदाहोना ४ तौंबी ५ जल ६ नाव ७ विष्णु ८ माथा ९ मछली॥

गये प्रजा सब निज निज धामा ❀ भे विलोकि मनगुण विश्रामा
बहुरि नृपति मन कीन्ह विचारा ❀ आइ भयो पनेचौथ हमारा
हित मंत्री गुरु सुतहु बुलाये ❀ हिमगिरिविन्ध्य मध्य तबआये
रुचिर वेदिका एक बनाई ❀ देखत बनै वरणि नहिंजाई
मख अरम्भ छांड़े तब तुरगा ❀ वेगवन्त जिमि देखिय उरगा
दो०सुरपति सुनि भय दारुणहिं, मनमहँ करिअनुमान।
आनितुरँग तब लीन्हेउ, मर्म्म न काहू जान॥
राखेउ आनि कपिलमुनि पाहीं ❀ कोउ न जान काहुहि गमनाहीं
जुगवत रहे जे सुभट सयाने ❀ लै तुरंग रहे किनहु न जाने
तिन सब आय कही नृप पाहीं ❀ महाराज हम कहत डराहीं
लीन्ह तुरँग कोइ जान न कोई ❀ कहा करिय जो आयसु होई
सुनत वचन नृप विस्मयँ पाये ❀ सकल सुतन कहँ तुरत बुलाये
जाहु तुरँगै तुम हेरहु जाई ❀ सकल चले चरणन शिरनाई
सुरपति सम देखिय सब वीरा ❀ सकल धनुर्द्धर अति रणधीरा
तिनहिं चलत धरणी अकुलाई ❀ बलिपशु जीव भये सब आई
सुमन वाटिका उपवन बागा ❀ सरित कूप वापिका तड़ागा
नगर गांव मुनीश थल नाना ❀ गिरि कन्दर कानन अस्थाना
दो०यहिविधि खोजेहु तुरँग तिन, आये भूपति पाहिं।
चरणन माथहि नाइकहि, खोज अश्वकी नाहिं॥
खोदहु महि सुत करहि पठाये ❀ चले सकल पूरब दिशि आये
तिनकेकरजिमिकुलिशसमाना ❀ योजन भरि खोदहिं बलवाना
देखि अतुल बल देव डराने ❀ नर नाहन विरंचि सनमाने
शोधत महि पताल सब आये ❀ दिग्गज देखि एक शिरनाये
तिन पूंछा सब कथा सुनाये ❀ बहुरि सकल दक्षिणदिशिआये
यहिविधि पुनि दूसरगज देखा ❀ अति उतंगगज विमल विशेखा

१ बुढ़ापा २ शुरू ३ सर्प ४ संदेह ५ घोड़ा ६ तालाव ७ हाथ ८ वज्र ९ दिशाओंका हाथी॥

ताहू बहु प्रणाम तिन कीन्हे ❋ चले सुनत पश्चिम चितदीन्हे
तीसर देखि प्रदक्षिण कीन्ही ❋ पुनि उत्तरदिशि शोधहिलीन्ही
दिग्गज श्वेत निरखि सुखपाये ❋ सकल कपिलमुनिपहँ पुनिआये
खोजत मही पार नहिं पावा ❋ शोभाचहुँदिशि जलधि सुहावा

दो॰ देखिनि आइ तुरंग तब, बांधा मुनिवर पास।
बोले वचन सकोप करि, भा यह सबकर नास॥

खोदी महि हम चारिउ कोधा ❋ रे रे दुष्ट बहुत तोहिं शोधा
कोउ कह चोर दीख बहु होई ❋ यहिसम छली अपर नहिं कोई
पर धन लै पताल मुनि आयो ❋ तस्कर मुनिवर वेष बनायो
कोउ कहै यह मुनिवर नाहीं ❋ समुझि देखि लक्षण मनमाहीं
कोउ कह बकतप कीन्ह अपारा ❋ अहो दुष्ट लै तुरँग हमारा
सुनत वचन मुनि चितवा जबहीं ❋ भये भस्म सब क्षण में तबहीं
उमा वचन जेहि समुझि न बोला ❋ सुधा होइ विष तिक्रम ओला
पावक जानि धरहिं कर प्रानी ❋ जरहिंकाहिनहिं अतिअभिमानी
जानि गरल जे संग्रह करहीं ❋ सुनहु राम ते काहे न मरहीं
क्रोध करै बिनु किये विचारा ❋ भये सकल तेहिते जरिछारा
इहां नृपति अँशुमान बुलाये ❋ नहिं आये सब तिनहिं पठाये

दो॰ दीन्ही नृपति अशीश तब, अतिहित बारहिंबार।
वेगि फिरहु लै तुरँग सुत, मेरे प्राण अधार॥

चले नाइ पद शीश कुमारा ❋ विष्णुभक्त हित कुल उजियारा
जहँतहँ देखि मुनिन के धामा ❋ पूंछि खबरि करि दण्डप्रणामा
पन्नग अहिसन पाइ अशीशा ❋ चहुंदिग्गजकहँ नायउ शीशा
यहिविधि शोधत मगमहँ जाता ❋ मिले गरुड़ सुमनीकर भ्राता
चरण परत तब आशिष दयऊ ❋ जरे सकल जेहिविधि सो कह्यऊ
सुनतहि वचन शोच भयो भारी ❋ दिये खगेश दिखाय सुँवारी

१ समुद्र २ तरफ़ ३ चोर ४ अमृत ५ विष ६ नाम सर्प ७ ढूंढ़त ८ भाई ९ जलाशय॥

अंशुमान तहँ मज्जन कीन्हा ❀ क्रमक्रमसबहिं जलांजलिदीन्हा
बहुरि गरुड़ बोले सुनु त्राता ❀ मैं तोहिं कहौं करिय इकबाता
सो०करु सुत सोइ उपाय, गङ्गा आवहिं अवनिमहँ।
दर्शन ते अघजाय, मज्जन कीन्हे परमसुख॥
षष्टि सहस तरिहैं येहीविधि ❀ गङ्गापाय परम पावननिधि
सुनि अस वचनहृदय मनभाये ❀ सहितगरुड़ मुनिवर पहँ आये
तब खगेश मुनि चरणन नायउ ❀ पूरब कथा सकल मुनि गायउ
आयसु देइ तुरँग मुनि दीन्हा ❀ हरषिहृदय निजअश्वहि चीन्हा
नगर समीप गरुड़ पहुँचाई ❀ गये भवन निज तब रघुराई
इहां तुरँग लै नृप शिरनाई ❀ षष्टिसहस मुनि कथा सुनाई
विस्मय हर्ष विवश नृप भयऊ ❀ कीन्हा यज्ञ दान बहु दयऊ
बहुविधिनृपतिराज्यपुनिकीन्हा ❀ प्रजालोगकहँ अति सुखदीन्हा
दो०अंशुमान हित राज्य दै, निज मन हरिपद लाग।
गयउसगर तपकाज वन, हृदय अधिक अनुराग॥
तासु तनय[१] दिलीप नृप भयऊ ❀ वनतपहेतु उतरदिशि गयऊ
उहां अगम तप कीन्ह नृपाला ❀ भये कालवश गये कछुकाला
कहहु कवन दिलीप प्रभुताई[२] ❀ सेवैं सकल नृपति जेहि आई
जुगवत जेहिनित सुरपति रहहीं ❀ महिमासोकवि केहिविधिकहहीं
भागीरथ अस सुतभयो जासू ❀ पितुसम प्रीति अधिकउर तासू
तिनहिं बोलि नृप दीन्हेउ राजू ❀ आपु चले उठि तपके काजू
मनमहँ करत पन्थ अनुमाना ❀ सुरसरि आव तजउँ नतु[६]प्राना
निजमनु तनुदीन्हेउ निमिदेऊ ❀ फिरि निज नगरक नाम न लेऊ
सो०यहिविधि करतविचार, नृपकीन्हे तप प्रबलतव।
बीते कछु इक काल, देहतजी कोउ प्रकट नाहिं॥
जेहिसुरसँरि लगितजितनुभूपा ❀ सो तजि मूढ़ पियहिं जलकूपा

१ पृथ्वी २ खुशी ३ पुत्र ४ प्रतिष्ठा ५ बड़ाई ६ नहीं तो ७ गङ्गाजी ८ मूर्ख॥

इहां भगीरथ अस मन भयऊ ❀ पितु न आव बहुदिनचलिगयऊ
काकुत्स्थनाम तनय यक रहेऊ ❀ दीन्ही राज्य नीति बहु कहेऊ
कहि तव पूर्व कथा सुतपाहू ❀ दीन्ह अशीश चले नरनाहू
निकसत नगर शकुन भल पाये ❀ अतिहिनिविड़[१]वनजहँनृपआये
देखि भगीरथ वन सुखपावा ❀ सुरसरि हित तपकहँ मनलावा
एक चरण दोउ भुजा उठाये ❀ रवि सम्मुख[२] चितवहिं मनलाये
वर्ष सहस बीते यहि भांती ❀ जात न जानेउ दिन अरु राती
देखि उग्रतप अज[३] चलि आये ❀ बोले वचन नृपहिं मनभाये
चहहि नृपति जो ले वरदाना ❀ बोले नृपकरि अजहिं प्रमाना
जो मांगौं सो जानत अहहू ❀ मोसन मांगन प्रभु किमि कहहू

दो०तदपि कहौं प्रभु देहुवर, सब सन्तन कहँ वृद्धि।
दूसर मांगहुँ जोरिकर, गङ्गा आवहिं निद्धि॥

एवमस्तुकहि पुनि विधि भवँही ❀ सुरसरि देहुँ राखि को सकही
छूटिजाहिं पुनि तुरत रसातल ❀ फिरहिंननृपतिबहुरिसुनुभूतल
तेहिते कहौं एक तोहिं पाहीं ❀ अति दयालु शंकर मनमाहीं
सोइ शंकरराखि सुरसरि आजू ❀ उनहिं जपे तव ह्वैहै काजू
असकहि विधि अन्तरहित भये ❀ बहुरि भगीरथ शिवपहँ गये
विबुध वर्ष अंगुष्ठ अधारा ❀ बारबार शिव नाम उचारा
शिव दयालु प्रकटे तब आई ❀ हाथजोरि नृप विनय सुनाई
मैं राखब सुरसरि कह ईशा ❀ बहुरि रमापति[४] ध्यान करीशा

दो०उहां देवसरि शिववचन, सुनि मन कीन्ह विचार।
जाउँ रसातल शिवसहित, जात न लावौं बार॥

अन्तरयामी शिवहिं उपाई ❀ निज शिरजटासो अगम बनाई
इहां भगीरथ अस्तुति कीन्हीं ❀ सुनि मृदुगिराछांड़ि विधिदीन्हीं
छूटे शोर भयउ जग भारी ❀ चकित देवअहि[५] दिग्गजचारी

१ सघन २ सामने ३ ब्रह्मा ४ शम्भु ५ विष्णु ६ सर्प॥

सुरसरि पुनि हरजटा समानी ❀ वर्ष एक तहँ रहीं भवानी
कौतुक देखि सकल सुर हर्षे ❀ कहि जय जयति सुमन बहुवर्षे
बहुरिभगीरथ सुमिरण कीन्हा ❀ डारिजटा शिव बुन्दक दीन्हा
तेहिते भईं तीनि पुनि धारा ❀ एक गई नभ एक पतारा
गइनभसोइकिभईअघनाशिनि ❀ देवन धरा नाम मन्दाकिनि

दो० दूसरिगई पताल में, नाम प्रभावति हरणदुख ।
तीसरिभइ गङ्गा सोई, सब सन्तनकोकरणसुख ॥
जलप्रवाहनिकसतनृपति, उरअतिभयोअनन्द ।
जैसे उमड़त सिन्धु तब, पूर्ण कला लखिचन्द ॥

आय भगीरथ पुनि शिरनाये ❀ बोली सुरसरि वचन सुहाये
वेगवन्त नृप रथ ले आनू ❀ तुरततुरँग शुभगतिजिमि भानू
तेहिरथचढ़ि नृप चलु मम आगे ❀ चलिहौं मैं तव पाछे लागे
सुनि नृप दिव्यतुरँगरथ आना ❀ चले हृदय सुमिरत भगवाना
चली अग्रकरि नृपहिं सुरसरी ❀ देवन मुदित सुमनें झरिकरी
चलततेज कछु वरणि न जाई ❀ टूटहिं गिरि तरु शैल सुहाई
करैं कुलाहल विधि बहु भांती ❀ कमठ नक्र झष व्यालसो माती
मज्जन करहिं देव तहँ आई ❀ सुनि गति सिद्ध रहे सब छाई

सो० तर्प्पण कर मनलाय, हर्ष हृदय नहिं जात कहि ।
दर्शन ते अघ जाय, तरैं सकल मुनि जन कहैं ॥
मज्जन कर हरषाय, सुरअजादिसनकादिऋषि ।
पान करत अघ जाय, अस मन सब कोऊ कहैं ॥

करैं जे मज्जन जप मनलाई ❀ तिनकी महिमा कहि न सिराई
रथपर जात सोह नृप कैसे ❀ तेजवन्त रवि देखिय जैसे
लांघत शैल सुहावन देशा ❀ पाछे सुरसरि अग्र नरेशा

१ फिर २ पार्वती ३ आकाश ४ फूल ५ गंभीर शब्द ६ कछुआ ७ मगर ८ मछली ९ सर्प ॥

हरद्वार समीप जब आये ❋ तीर्थ देखि सुरसरि मनलाये
तीर्थ निरखि मनभयो सुखारी ❋ आदि प्रयागपहुँचि अघहारी
तहँ मज्जन कीन्हे अघजाई ❋ बहुरि देवसरि काशी आई
सो शिवपुरीं सहज सुखदाई ❋ वरणि न जाइ मनोहरताई
अबसे तीर्थ विविध विधि जानी ❋ गई तहां किमि कहौं बखानी
मगलोगन कहँ करत सनाथा ❋ जाइचली यहिविधि रघुनाथा

दो०मिलीजाइपुनिउदधिमहँ, उदधि हृदय सुखमान।
लगे कहन भागीरथहि, तुम समधन्य न आन॥

कीन्हों अस जो करहि न कोई ❋ तप महिमाबल कस नहिं होई
सगर सुतनय तरे ततकाला ❋ हर्षवन्त तब भयो नृपाला
अबलौं रहोहै कुलमहँ कोऊ ❋ तिनके संग तरे अब सोऊ
तुम समान नृप अवर न भयऊ ❋ जग विख्यात अचलयशलयऊ
सकल सुरन तहँ संग विधाता ❋ नृपसन आय कही सबबाता
धन्य भगीरथ जग यशलयऊ ❋ तुम समान नृप अवर न भयऊ
आपनि सत्य प्रतिज्ञा कियऊ ❋ सम्मत वेद जनन सुखदयऊ
गंगासागर सब कोइ कहही ❋ अघ उलूक देखत रवि डरही
भागीरथी नाम अरु कहहीं ❋ सुनि सुरसिद्ध नागयश लहहीं
असविधिकहिनिजलोकहिआये ❋ जहां भगीरथ अति सुखपाये

छं०पायोअमितसुखबहुरि पूजा सुरसरिहि मनलाइकै।
तबदीन्ह आशिषमुदितगंगा नृपभवनसुखपाइकै॥
यहिभांति सुनि गंगाकथा तबरामरुचिचरणननये।
कहदासतुलसीरामलषणहिंमहामुनिआशिषदये॥

दो०कौशिकआशिषअमियसम, पाय हर्ष रघुराज।
प्रभुसंशय सब इमि गई, लवानिरखिजिमिबाज॥

१ गंगाजो २ काशीजो ३ बटोही ४ समुद्र ५ स्थिर ६ प्रग ७ घुग्घू पक्षो ८ बेप्रमाण॥

आशिष सुधांसमान मुनि, हरषे श्री रघुनाथ।
प्रभु सुखपाइ कहेउ पुनि, वेगि चलिय मुनिनाथ॥
राम नाम ते संशय जाई ❋ देह धरे कर यह फल भाई
इति क्षेपक ॥

गाधिसुवन सब कथा सुनाई ❋ जेहि प्रकार सुरसरि महि आई
तब प्रभु ऋषिन समेत नहाये ❋ विविध दान महिदेवन पाये
हरषि चले मुनि वृन्द सहाया ❋ वेगि विदेह नगर नियराया
पुर रम्यता राम जब देखी ❋ हर्षे अनुज समेत विशेखी
वापी कूप सरित सर नाना ❋ सलिल सुधासम मणि सोपाना
गुंजत मंजु मत्त रस भृंगा ❋ कूजत कल बहु वरण विहंगा
वरण वरण विकसे वनजाता ❋ त्रिविध समीर सदा सुखदाता
दो० सुमन वाटिका बागवन, विपुल विहंग निवास।
फूलत फलत सुपल्लवित, सोहत पुर चहुँ पास॥
बनै न वरणत नगर निकाई ❋ जहां जाय मन तहां लुभाई
चारु बजार विचित्र अवारी ❋ मणिमयविधिजनुस्वकरसँवारी
धनिक वनिकवर धनदसमाना ❋ बैठे सकल वस्तु लै नाना
चौहट सुन्दर गली सुहाई ❋ सन्तत रहहिं सुगन्ध सिंचाई
मंगलमय मन्दिर सब केरे ❋ चित्रित जनु रतिनाथ चितेरे
पुरनरनारि सुभग शुचि सन्ता ❋ धर्म्म शील ज्ञानी गुणवन्ता
अति अनूप जहँ जनकनिवासू ❋ विथकहिंविबुधविलोकिविलासू
होत चकित चित कोट विलोकी ❋ सकल भुवन शोभा जनु रोकी
दो० धवलधाममणिपुरटपट, सुघटित नाना भांति।
सियनिवास सुन्दरसदन, शोभा किमि कहि जाति॥
सुभगद्वार सब कुलिश कपाटा ❋ भूप भीर नट मागध भाटा
बनी विशाल वाजि गज शाला ❋ हय गय रथ संकुल सबकाला

१ अमृत २ धरती ३ विप्र ४ जनकपुरी ५ सुन्दरता ६ सीढ़ी ७ सुवर्ण ८ वज्र ९ भुण्ड॥

शूर सचिव सेनप बहुतेरे ❋ नृप गृह सरिस सदन सबकेरे
पुर बाहर सर सरित समीपा ❋ उतरे जहँ तहँ विपुल महीपा
देखि अनूप एक अमराई ❋ सब सुपास सब भांति सुहाई
कौशिक कह्यो मोर मन माना ❋ इहां रहिय रघुवीर सुजाना
भलेहि नाथ कहि कृपानिकेता ❋ उतरे तहँ मुनिवृन्द समेता
विश्वामित्र महामुनि आये ❋ समाचार मिथिलापति पाये

दो॰ संग सचिव शुचिभूरिभट, भूसुर वर गुरु ज्ञाति।
चले मिलन मुनिनायकहि, मुदितराव यहिभांति॥

कीन्ह प्रणाम धरणि धरि माथा ❋ दीन्हअशीश मुदितमुनिनाथा
विप्र वृन्द सब सादर वन्दे ❋ जानि भाग्यबड़ि राव अनन्दे
कुशल प्रश्न कहि बारहिंबारा ❋ विश्वामित्र नृपहिं बैठारा
तेहि अवसर आये दोउ भाई ❋ गये रहे देखन फुलवाई
श्यामगौर मृदु वयस किशोरा ❋ लोचनसुखद विश्वचितचोरा
उठे सकल जब रघुपति आये ❋ विश्वामित्र निकट बैठाये
भे सब सुखी देखि दोउ भ्राता ❋ वारि विलोचन पुलकितगाता
मूरति मधुर मनोहर देखी ❋ भये विदेहँ विदेह विशेखी

दो॰ प्रेम मगन मन जानि नृप, करि विवेक मतिधीर।
बोले मुनिपद नाइशिर, गद्गद गिरागँभीर॥

कहहु नाथ सुन्दर दोउ बालक ❋ मुनिकुलतिलककिनृपकुलपालक
ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा ❋ उभयँ वेष धरि सोइ कि आवा
सहज विराग रूप मन मोरा ❋ थकित होत जिमि चंद चकोरा
ताते प्रभु पूंछौं सतिभाऊ ❋ कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ
इनहिं विलोकत अतिअनुरागा ❋ वरबस ब्रह्मसुखहि मनत्यागा
कहमुनि विहँसि कहेउ नृप नीका ❋ वचन तुम्हार न होइ अलीकाँ
ये प्रिय सबहि जहांलगि प्राणी ❋ मन मुसुकाहिं रामसुनि वाणी

१ प्रसन्न २ राजा ३ उमर ४ जनक ५ वाणी ६ दो ७ झूंठ॥

रघुकुल मणि दशरथ के जाये ❀ मम हित लागि नरेश पठाये
दो॰ रामलषण दोउ बन्धु वर, रूप शील बलधाम।
मखराखेउ सब साखिजग, जीति असुर संग्राम॥
मुनि तव चरण देखि कहराऊ ❀ कहि न सकौं निजपुण्यप्रभाऊ
सुन्दर श्याम गौर दोउ भ्राता ❀ आनँदहू के आनँद दाता
इनकी प्रीति परस्पर पावनि ❀ कहि न जाय मनभाव सुहावनि
सुनहुनाथ कह मुदित विदेहू ❀ ब्रह्म जीव इव सहज सनेहू
पुनिपुनि प्रभुहि चितव नरनाहू ❀ पुलकगात उर अधिक उछाहू
मुनिहिं प्रशंसि नाइ पदशीशा ❀ चले लिवाय नगर अवनीशा
सुन्दर सदन सुखद सब काला ❀ तहां वासलै दीन्ह भुवाला
करि पूजा सब विधि सेवकाई ❀ गये राव गृह विदा कराई
दो॰ ऋषय सङ्ग रघुवंश मणि, करि भोजन विश्रामँ।
बैठे प्रभु भ्राता सहित, दिवस रहा भरियामँ॥
लषण हृदय लालसा विशेखी ❀ जाय जनकपुर आइय देखी
प्रभुभय बहुरि मुनिहिं सकुचाहीं ❀ प्रकट न कहहिं मनहिं मुसुकाहीं
राम अनुज मनकी गतिजानी ❀ भक्तबछलता हिय हुलसानी
परम विनीत सकुचि मुसुकाई ❀ बोले गुरु अनुशासन पाई
नाथ लषण पुर देखन चहहीं ❀ प्रभु सकोच डर प्रकट न कहहीं
जो राउर अनुशासन पाऊं ❀ नगर दिखाय तुरत लै आऊं
सुनि मुनीश कह वचन सप्रीती ❀ कस न राम राखहु तुम नीती
धर्म्मसेतु पालक तुम ताता ❀ प्रेमविवश सेवक सुखदाता
दो॰ जाइ देखि आवहु नगर, सुखनिधान दोउ भाइ।
करहु सफल सबके नयन, सुन्दर वदन दिखाइ॥
मुनि पदकमल वन्दि दोउभ्राता ❀ चले लोक लोचन सुखदाता
बालक वृन्द देखि अति शोभा ❀ लगे संग लोचन मन लोभा

१ भाई २ पृथ्वीनाथ ३ घर ४ साथ ५ आराम ६ प्रहर ७ छोटाभाई ८ आज्ञा॥

पीत वसन परिकर कटिभाथा ❋ चारु चाप शर सोहत हाथा
तनु अनुहरत सुचन्दन खोरी ❋ श्यामल गौर मनोहर जोरी
केहरि कन्धर बाहु विशाला ❋ उर अतिरुचिरनागमणिमाला
सुभग शोण सरसीरुह लोचन ❋ वदन मयंक तापत्रय मोचन
श्रवणनकनक फूल छवि देहीं ❋ चितवत चित्त चोरि जनु लेहीं
चितवनि चारु भृकुटि वरवांकी ❋ तिलकरेख शोभा जनु चांकी

दो॰ रुचिर चौतनी सुभगशिर, मेचक कुंचित केश।
नखशिखसुन्दरबन्धुदोउ, शोभा सकल सुदेश॥

देखन नगर भूप सुत आये ❋ समाचार पुरवासिन पाये
धाये धाम काम सब त्यागे ❋ मनहुँ रंक निधि लूटन लागे
निरखि सहज सुन्दर दोउ भाई ❋ होहिं सुखी लोचन फलपाई
युवती भवन झरोखन लागीं ❋ निरखहिं रामरूप अनुरागीं
कहहिं परस्पर वचन सप्रीती ❋ सखि इन कोटिकाम छविजीती
सुर नर असुर नाग मुनिमाहीं ❋ शोभा अस कहुँ सुनियत नाहीं
विष्णुचारिभुजविधिमुखचारी ❋ विकट वेष मुख पंच पुरारी
अपरदेव अस को जग आही ❋ यहि छवि सखि पटतरिये जाही

दो॰ वयकिशोरसुषमासदन, श्याम गौर सुखधाम।
अङ्ग अङ्ग पर वारिये, कोटि कोटि शतकाम॥

कहहु सखी अस को तनुधारी ❋ जो न मोह यह रूप निहारी
कोउ सप्रेम बोली मृदुबानी ❋ जो मैं सुना सो सुनहु सयानी
ये दोउ नृप दशरथ के ढोटा ❋ बाल मरालन के कल जोटा
मुनि कौशिक मख के रखवारे ❋ जिन रण अजयनिशाचर मारे
श्यामगात कल कंजविलोचन ❋ जो मारीच सुभुज मदमोचन
कौशल्या सुत सो सुख खानी ❋ नाम राम धनु शायक पानी
गौर किशोर वेष वर काछे ❋ कर शर चाप रामके पाछे

१ गजमुक्ता २ कमल ३ कर्णफूल ४ बाल ५ ढाल ६ स्त्री ७ शिव ८ लड़का ९ यज्ञ॥

लक्ष्मण नाम राम लघुभ्राता ❀ सुनु सखि तासु सुमित्रा माता

दो॰ विप्रकाजकरि बन्धु दोउ, मग मुनिबधू उधारि।
आये देखन चापमख, सुनि हरषीं सब नारि॥

देखि राम छवि कोउ इक कहई ❀ योग्य जानकी यह वर अहई
जो सखि इनहिं देखि नरनाहू ❀ प्रण परिहरि हठिकरहिं विवाहू
कोउ कह इनहिं भूप पहिंचाने ❀ मुनि समेत सादर सनमाने
सखि परन्तु प्रण राव न तजई ❀ विधिवश हठिअविवेकहि भजई
कोउ कह जो भल अहै विधाता ❀ सबकहँ सुनिय उचितफलदाता
तौ जानकिहि मिलिहि वरयेहू ❀ नाहिं न आली कछु सन्देहू
जो विधि वश अस बनै सँयोगू ❀ तौ कृतकृत्य होहिं सब लोगू
सखि हमरे अति आरत ताते ❀ कबहुँक ये आवहिं यहिनाते

दो॰ नाहिंतहमकहँसुनहुसखि, इनकर दर्शन दूरि।
यह संघट तब होइ जब, पुण्य पुराकृत भूरि॥

बोली अपर कहेउ सखि नीका ❀ यह विवाह अतिहित सबहीका
कोउ कह शंकर चाप कठोरा ❀ ये श्यामल मृदुगात किशोरा
सब असमंजस अहै सयानी ❀ यह सुनि अपर कहै मृदुबानी
सखिइनकहँकोउकोउअसकहहीं ❀ बड़ प्रभाव देखत लघु अहहीं
परसि जासु पद पंकज धूरी ❀ तरी अहल्या कृत अघ भूरी
सोकि रहैं बिनु शिव धनु तोरे ❀ यह प्रतीति परिहरिय न भोरे
जेहि विरंचि रचि सीय सँवारी ❀ तेहिं श्यामलवर रचेउ विचारी
तासु वचन सुनि सब हरषानी ❀ ऐसइ होउ कहहिं मृदुबानी

दो॰ हियहरषहिं वरषहिंसुमन, सुमुखिसुलोचनि वृन्द।
जाहिं जहां जहँ बन्धुदोउ, तहँ तहँ परमानन्द॥

पुर पूरब दिशिगे दोउ भाई ❀ जहां धनुपमख भूमि बनाई
अति विस्तार चारु गचढारी ❀ विमल वेदिका रुचिर सँवारी

१ छोड़के २ अज्ञान ३ सफल ४ समागम ५ पूर्वजन्मकी ६ सुन्दर ७ स्वच्छ॥

चहुँदिशिकंचन मंच विशाला ❀ रचे जहां बैठहिं महिपाला
तेहि पाछे समीप चहुँ पासा ❀ अपर मंच मण्डली विलासा
कछुक ऊंच सब भांति सुहाई ❀ बैठहिं नगर लोग सब आई
तिनके निकट विशाल सुहाये ❀ धवल धाम बहु वरण बनाये
जहँ बैठी देखहिं सबनारी ❀ यथायोग्य निजकुल अनुहारी
पुरबालक कहि कहि मृदुवचना ❀ सादर प्रभुहि देखावहिं रचना

दो०सबशिशुयहिमिसुप्रेमवश, परसि मनोहर गात।
तनुपुलकहिं अतिहर्षहिय, देखिदेखि दोउभ्रात॥

शिशु सब राम प्रेम वश जाने ❀ प्रीति समेत निकेत बखाने
निज निजरुचिसबलेहिं बुलाई ❀ सहित सनेह जाहिं दोउ भाई
राम देखावहिं अनुजहि रचना ❀ कहि प्रिय मधुर मनोहर वचना
लवनिमेष महँ भुवन निकाया ❀ रचै जासु अनुशासन माया
भक्त हेतु सोइ दीनदयाला ❀ चितवत चकितधनुषमखशाला
कौतुक देखि चले गुरु पाहीं ❀ जानि विलम्ब त्रास मनमाहीं
जासु त्रास डर कहँ डर होई ❀ भजन प्रभाव देखावत सोई
कहि बातैं मृदु मधुर सुहाई ❀ किये बिदा बालक बरिआई

दो०समय सप्रेम विनीत अति, सकुच सहित दोउभाइ।
गुरुपद पंकज नाइ शिर, बैठे आयसु पाइ॥

निशिप्रवेश मुनि आयसु दीन्हा ❀ सबही सन्ध्यावन्दन कीन्हा
कहत कथा इतिहास पुरानी ❀ रुचि रजनी युगयाम सिरानी
मुनिवर शयन कीन्ह तब जाई ❀ लगे चरण चापन दोउ भाई
जिनके चरण सरोरुह लागी ❀ करत विविध जपयोग विरागी
ते दोउ बन्धु प्रेम जनु जीते ❀ गुरुपद कमल पलोटत प्रीते
बारबार मुनि आज्ञा दीन्हा ❀ रघुबरजाइ शयन तब कीन्हा
चापत चरण लषण उरलाये ❀ सभय सप्रेम परम सचुपाये

१ बालक २ चतुर्थांश ३ पल ४ ज़बरदस्ती ५ सन्ध्या ६ रात्रि ७ त्यागी॥

पुनि पुनि प्रभु कह सोवहु ताता ❀ पौढ़े उर धरि पद जलजाता

दो० उठेलषणनिशिविगतसुनि, अरुण[2]शिखाधुनिकान।
गुरुते पहिले जगतपति, जागे राम सुजान ॥

सकल शौचकरि जाय नहाये ❀ नित्य निबाहि गुरुहिं शिरनाये
समय जानि गुरु आयसु पाई ❀ लेन प्रसून[3] . चले दोउ भाई
भूप बाग वर देखेउ जाई ❀ जहँ वसन्त ऋतु रहै लुभाई
लागे विटप मनोहर नाना ❀ वरण वरण वर बेलि विताना
नव पल्लव फल सुमन सुहाये ❀ निज सम्पति सुरतरु[4]हि लजाये
चातक कोकिल कीर[5] चकोरा ❀ कूजतविहँग नचत कलमोरा
मध्य बाग सर सोह सुहावा ❀ मणि सोपान विचित्र बनावा
विमल सलिल सरसिज बहुरंगा ❀ जल खगकूजत गुंजत भृंगा

दो० बाग तड़ाग विलोकि प्रभु, हर्षे बन्धु समेत।
परमरम्य आराम[6] यह, जो रामहिं सुखदेत ॥

चहुँदिशि चितै पूंछि मालीगन ❀ लगे लेन दल फूल मुदितमन
तेहि अवसर सीता तहँ आई ❀ गिरिजा पूजन जननि पठाई
संग सखी सब सुभग सयानी ❀ गावहिं गीत मनोहर बानी
सर समीप गिरिजा गृह सोहा ❀ वरणि न जाय देखि मन मोहा
मज्जन करि सर सखिन समेता ❀ गईं मुदित मन गौरि निकेता
पूजा कीन्ह अधिक अनुरागा ❀ निज अनुरूप सुभगवर मांगा
एक सखी सिय संग विहाई[7] ❀ गई रही देखन फुलवाई
तेइँ दोउ बन्धु विलोकेउ जाई ❀ प्रेम विवश सीता पहँ आई

दो० तासु दशा देखी सखिन, पुलक गात जलनैन।
कहु कारण निज हर्ष कर, पूछहिं सब मृदुबैन ॥

देखन बाग कुँवर दुइ आये ❀ वय किशोर सब भांति सुहाये
श्यामगौर किमि कहौं बखानी ❀ गिरा[8] अनयन नयन विनुबानी

१ कमल २ मुर्ग़ ३ फूल ४ कल्पवृक्ष ५ सुआ ६ बाग़ ७ छोड़के ८ वाणी ॥

सुनि हरषीं सब सखी सयानी ❀ सिय हिय अति उत्कण्ठा[1] जानी
एक कहहि नृपसुत ते आली ❀ सुना जे मुनि सँग आये काली
जिन निज रूप मोहनी डारी ❀ कीन्हे स्ववश सकल नर नारी
वरणत छवि जहँ तहँ सब लोगू ❀ अवशि देखिये देखन योगू
तासु वचन अति सियहि सुहाने ❀ दरश लागि लोचन अकुलाने
चलीं अग्रकरि प्रिय सखि सोई ❀ प्रीति पुरातन[2] लखै न कोई

दो०सुमिरि सीय नारद वचन, उपजी प्रीति पुनीत।
चकितविलोकतिसकलदिशि, जनुशिशु[3]मृगीसभीत॥

कंकणकिंकिणि नूपुर[4] धुनि सुनि ❀ कहत लषणसन राम हृदयगुनि
मानहुँ मदन दुन्दुभी दीन्ही ❀ मनसा विश्वविजय कहँ कीन्ही
असकहिफिरिचितयेत्यहिओरा ❀ सियमुखशशि भयेनयनचकोरा
भये विलोचन चारु अचंचल[5] ❀ मनहुँसकुचिनिमितजेउदृगंचल
देखि सीय शोभा सुख पावा ❀ हृदय सराहत वचन न आवा
जनुविरंचि सब निज निपुणाई[6] ❀ विरचि विश्वकहँ प्रकट दिखाई
सुन्दरता कहँ सुन्दर करई ❀ छविगृह दीपशिखा जनु वरई
सब उपमा कवि रहे जुठारी ❀ केहि पटतरिय विदेहकुमारी

दो०सियशोभा हियवरणि प्रभु, आपनि दशा विचारि।
बोले शुचिमन अनुजसन, वचनसमय अनुहारि॥

तात जनकतनया यह सोई ❀ धनुषयज्ञ जेहि कारण होई
पूजन गौरि सखी लै आई ❀ करति प्रकाश फिरति फुलवाई
जासु विलोकि अलौकिकशोभा ❀ सहज पुनीत मोर मन क्षोभा
सो सब कारण जानु विधाता ❀ फरकहिं सुभगअङ्ग सुनुभ्राता
रघुवंशिन कर सहज स्वभाऊ ❀ मन कुपन्थ पगधरैं न काऊ
मोहिंअतिशय प्रतीति जियकेरी ❀ जेहि सपनेहु परनारि न हेरी
जिनके लहहिं न रण रिपु[7] पीठी ❀ नहिं लावहिं परतिय मनदीठी

१ प्रेम २ पूर्व जन्म की ३ बच्चा ४ बिछिया ५ स्थिर ६ चतुरता ७ वैरी॥

मंगने लहहिं न जिनके नाहीं ❀ ते नर वर थोरे जग माहीं

दो०करत बतकही अनुजसन, मन सियरूप लुभान।
मुख सरोज मकरन्द छवि, करत मधुप इव पान॥

चितवतिचकितचहूंदिशिसीता ❀ कहँगये नृपकिशोर मनचीता
जहँ विलोकु मृगशावक नयनी ❀ जनु तहँ वरषकमलश्रितश्रेनी
लता ओट तब सखिन लखाये ❀ श्यामलगौर किशोर सुहाये
देखि रूप लोचन ललचाने ❀ हर्षे जनु निजनिधि पहिंचाने
थके नयन रघुपति छवि देखी ❀ पलकनहूं परिहरी निमेखी
अधिक सनेह देह भइ भोरी ❀ शरदशशिहिजनु चितवचकोरी
लोचन मगु रामहिं उर आनी ❀ दीन्हे पलक कपाट सयानी
जब सिय सखिन प्रेमवश जानी ❀ कहि न सकहिंकछुमनसकुचानी

दो०लताभवन ते प्रकट भे, तेहि अवसर दोउ भाइ।
निकसेजनुयुगविमलविधु, जलदपटल विलगाइ॥

शोभा सींव सुभग दोउ वीरा ❀ नील पीत जलजात शरीरा
काकपक्ष शिर सोहत नीके ❀ गुच्छा बिचबिच कुसुमकलीके
भालतिलक श्रमँविन्दु सुहाये ❀ श्रवण सुभग भूषण छवि छाये
विकट भृकुटि कच घूंघरवारे ❀ नव सरोज लोचन रतनारे
चारु चिबुक नासिका कपोला ❀ हास विलास लेत मन मोला
मुखछविकहिनजाहिमोहिंपाहीं ❀ जो विलोकि बहु काम लजाहीं
उर मणिमाल कम्बु कलग्रीवा ❀ कामकलभकर भुज बलसींवा
सुमन समेत वामकर दोना ❀ सांवर कुँवर सखी सुठि लोना

दो०केहरि कटि पट पीतधर, सुषमा शीलनिधान।
देखि भानुकुल भूषणहिं, बिसरा सखिन अपान॥

धरि धीरज इक सखी सयानी ❀ सीतासन बोली गहि पानी
बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू ❀ भूप किशोर देखि किन लेहू

१ भिखारी २ पुष्परस ३ भौंरा ४ खज़ाना ५ किवाड़ ६ आड़ ७ पसीना ८ सिंह ९ अपनपौ॥

सकुचि सीय तब नयन उघारे ❀ सम्मुख दोउ रघुसिंह निहारे
नखशिख देखि रामकी शोभा ❀ सुमिरिपिताप्रणमनअतिक्षोभा
परवशसखिन लखी[1] जब सीता ❀ भयो गहरु[2] सब कहहिं सभीता
पुनि आउब यहिबिरिया काली ❀ असकहि मनबिहँसी इकआली
गूढ़ गिरा सुनि सिय सकुचानी ❀ भयउ विलम्ब मातु भयमानी
धरि बड़ धीर राम उरआनी ❀ फिरीं अपनपौ पितुवशजानी

दो०देखन मिसु मृग विहँगतरु, फिरत बहोरि बहोरि।
निरखि निरखि रघुवीरछवि, बाढ़ी प्रीति न थोरि॥

जानिकठिनशिवचापबिसूरति ❀ चलीं राखि उर श्यामलमूरति
प्रभु जब जात जानकी जानी ❀ सुख सनेह शोभा गुणखानी
परम प्रेममय मृदुमसि[3] कीन्ही ❀ चारुचित्र भीतर लिखि लीन्ही
गईं भवानी भवन बहोरी ❀ वन्दि चरण बोलीं करजोरी
जयजयजय गिरिराज किशोरी ❀ जय महेश मुखचन्द्र चकोरी
जय गजवदन षडानन माता ❀ जगतजननिदामिनि[4]द्युति[5]गाता
नहिं तव आदि मध्य अवसाना[6] ❀ अमितप्रभाव वेद नहिं जाना
भव भव विभव पराभवकारिणि ❀ विश्वविमोहनिस्ववशविहारिणि

दो०पति देवता सुतीय महँ, मातु प्रथम तव रेख।
महिमाअमित न कहिसकहिं, सहस[7] शारदा शेख॥

सेवत तोहिं सुलभ फलचारी ❀ वरदायिनि त्रिपुरारि पियारी
देवि पूजि पदकमल तुम्हारे ❀ सुरनरमुनि सब होहिं सुखारे
मोर मनोरथ जानहु नीके ❀ बसहु सदा उर पुर सबहीके
कीन्हउँ प्रकट न कारण तेही ❀ अस कहि चरण गहे वैदेही
विनय प्रेम वश भई भवानी ❀ खसी माल मूरति मुसुकानी
सादर सिय प्रसाद उर धरेऊ ❀ बोलीं गौरि हर्ष हिय भरेऊ
सुनु सिय सत्य असीश हमारी ❀ पूजिहि मन कामना[8] तुम्हारी

१ देखी २ देर ३ स्याही ४ बिजली ५ चमक ६ अन्त ७ हज़ार ८ इच्छा॥

नारद वचन सदा शुचि सांचा ❀ सो वर मिलिहि जाहिमनरांचा
छं० मनजाहिरांच्योमिलिहि सो वर सहजसुन्दर सांवरो।
करुणानिधान सुजान शील सनेह जानत रावरो ॥
यहिभांतिगौरिअशीशसुनि सियसहितहियहरषींअलीं।
तुलसीभवानिहिंपूजि पुनिपुनि मुदितमनमंदिरचलीं ॥
सो० जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हर्ष न जायकहि ।
मंजुल मंगल मूल, वाम अंग फरकन लगे ॥
हृदय सराहत सीय लुनाई ❀ गुरु समीप गमने दोउ भाई
राम कहा सब कौशिक पाहीं ❀ सरल स्वभाव छुवा छल नाहीं
सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्हीं ❀ पुनि अशीश दोउ भाइन दीन्हीं
सफल मनोरथ होइँ तुम्हारे ❀ राम लषण सुनि भये सुखारे
करि भोजन मुनिवर विज्ञानी ❀ लगे कहन कछु कथा पुरानी
विगत दिवस गुरु आयसु पाई ❀ सन्ध्या करन चले दोउ भाई
प्राचीदिशि शशिउयउ सुहावा ❀ सियसुख सरिस देखि सुखपावा
बहुरि विचार कीन्ह मनमाहीं ❀ सीयवदन सम हिमकर नाहीं
दो० जन्म सिन्धु पुनि बन्धु विष, दिनमलीन सकलंक ।
सियमुखसमतापाव किमि, चन्द्र बापुरो रंक ॥
घटै बढ़ै विरहिनि दुखदाई ❀ ग्रसै राहु निज संधिहि पाई
कोक शोक प्रद पंकज द्रोही ❀ अवगुण बहुत चन्द्रमा तोही
वैदेही मुख पटंतर दीन्हे ❀ होइ दोष बड़ अनुचित कीन्हे
सियसुखछविविधुव्याजवखानी ❀ गुरु पहँ चले निशा बड़ि जानी
करि मुनि चरणसरोज प्रणामा ❀ आयसु पाइ कीन्ह विश्रामा
विगत निशा रघुनायक जागे ❀ बंधु विलोकि कहन अस लागे
उयउअरुण अवलोकहु ताता ❀ पंकज कोक लोक सुखदाता
बोले लषण जोरि युगपाणी ❀ प्रभु प्रभाव सूचक मृदुवाणी

१ तुम्हारा २ सखी ३ सुन्दरता ४ चन्द्रमा ५ विचारा ६ कमल ७ समता ॥

दो० अरुणोदय सकुचे कुमुद, उडुगणज्योतिमलीन।
जिमितुम्हारआगमनसुनि, भये नृपति बलहीन॥

नृप सब नखत करहिं उजियारी ❁ टारि न सकहिं चाप तम भारी
कमल कोक मधुकर खगनाना ❁ हरषे सकल निशा अवसाना
ऐसहि प्रभु सब भक्त तुम्हारे ❁ ह्वैहहिं टूटे धनुष सुखारे
उदयभानु बिनुश्रम तम नाशा ❁ दुरेनखत जग तेज प्रकाशा
रविनिज उदय व्याज रघुराया ❁ प्रभु प्रताप सब नृपन दिखाया
तव भुज बल महिमा उदघाटी ❁ प्रकटी धनु विघटन परिपाटी
बंधु वचन सुनि प्रभु मुसुकाने ❁ ह्वै शुचि सहज पुनीत नहाने
नित्य क्रिया करि गुरु पहँ आये ❁ चरण सरोज सुभग शिरनाये
शतानन्द तब जनक बुलाये ❁ कौशिक मुनिपहँ तुरत पठाये
जनक विनय तिन आय सुनाई ❁ हर्षे बोलि लिये दोउ भाई

दो० शतानंद पद वंदि प्रभु, बैठे गुरु पहँ जाइ।
चलहु तात मुनि कहेउतब, पठवा जनक बुलाइ॥

सीय स्वयम्बर देखिय जाई ❁ ईश काहि धौं देहिं बड़ाई
लषण कहा यशभाजन सोई ❁ नाथ कृपा तव जापर होई
हरषे सुनि सब मुनिवर बानी ❁ दीन्ह अशीश सबहिंसुखमानी
पुनि मुनि वृन्द समेत कृपाला ❁ देखन चले धनुषमख शाला
रंगभूमि आये दोउ भाई ❁ अस सुधि सब पुरवासिन पाई
चले सकल गृहकाज बिसारी ❁ बालक युवा जरठ नर नारी
देखा जनक भीर भइ भारी ❁ शुचिसेवक सब लिये हँकारी
तुरत सकल लोगन पहँ जाहू ❁ आसन उचित देहु सब काहू

दो० कहिमृदुवचनविनीततिन, बैठारे नर नारि।
उत्तम मध्यम नीच लघु, निजनिजथलअनुहारि॥

राजकुँवर तेहि अवसर आये ❁ मनहुँ मनोहरता छविछाये

१ अंधेरा २ भौंरा ३ नाश ४ उत्पन्न ५ टूटनेपर ६ मर्याद ७ वृद्ध॥

गुण सागर नागर वर वीरा ❀ सुन्दर श्यामल गौर शरीरा
राज समाज विराजत रूरे ❀ उडुगणमहँ जनु युग विधु पूरे
जिनके रही भावनाँ जैसी ❀ प्रभु मूरति देखी तिन तैसी
देखहिं भूप महा रणधीरा ❀ मनहुँ वीररस धरे शरीरा
डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी ❀ मनहुँ भयानक मूरति भारी
रहे असुर छल जो नृप वेखा ❀ तिन प्रभु प्रकट कालसम देखा
पुरवासिन देखे दोउ भाई ❀ नर भूषण लोचन सुखदाई

दो० नारिविलोकहिंहरषिहिय, निजनिजरुचिअनुरूप।
जनु सोहत शृङ्गार धरि, मूरति परम अनूप॥

विदुर्षन प्रभु विराटमय दीशा ❀ बहु मुख कर पग लोचन शीशा
जनकजाति अवलोकहिं कैसे ❀ सजनसगे प्रियलागहिं जैसे
सहित विदेह विलोकहिं रानी ❀ शिशुसमप्रीति न जायबखानी
योगिन परम तत्त्व मय भासा ❀ शान्त शुद्ध सम सहज प्रकासा
हरिभक्तन देखे दोउ भ्राता ❀ इष्टदेव इव सब सुखदाता
रामहिंचितव भाव जेहि सीया ❀ सो सनेह सुख नहिं कथनीया
उरअनुभवित न कहिसक सोऊ ❀ कवनप्रकार कहै कवि कोऊ
जेहिविधि रहा जाहि जस भाऊ ❀ तेइँ तस देखेउ कोशलराऊ

दो० राजत राजसमाज महँ, कोशलराज किशोर।
सुन्दर श्यामल गौर तनु, विश्व विलोचन चोर॥

सहज मनोहर मूरति दोऊ ❀ कोटि काम उपमा लघु सोऊ
शरदचन्द निन्दक मुखनीके ❀ नीरज नयन भावते जीके
चितवनि चारु मारमद हरणी ❀ भावत हृदय जाइ नहिं वरणी
कल कपोल श्रुति कुण्डल लोला ❀ चिबुक अधर सुन्दर मृदुबोला
कुमुदबन्धुकर निन्दक हासा ❀ भृकुटी विकट मनोहर नासा
भालविशाल तिलकझलकाहीं ❀ कचविलोकिअलिअवलिलजाहीं

१ चतुर २ नक्षत्र ३ इच्छा ४ पंडित ५ बालक ६ संसार ७ छोटा ८ गाल ९ कान॥

पीत चौतनी शिरन सुहाई ❀ कुसुमकली बिचबीच बनाई
रेखा रुचिर कम्बु[1] कल ग्रींवा ❀ जनु त्रिभुवन सुषमाकी सींवा

दो० कुञ्जरमणिकण्ठाकलित, उर तुलसीकी माल।
वृषभ[2]कन्ध केहरि ठवनि, बलनिधिबाहुविशाल॥

कटि तूणीर[3] पीत पट बांधे ❀ कर शर धनुष वामवर कांधे
पीत यज्ञउपवीत[4] सुहाये ❀ नखशिख मंजु महा छविछाये
देखि लोग सब भये सुखारे ❀ इकटक लोचन टरहिं न टारे
हर्षे जनक देखि दोउ भाई ❀ मुनिपद कमल गहे तब जाई
करि विनती निज कथा सुनाई ❀ रंगअवनि सब मुनिहिं दिखाई
जहँ जहँ जाहिं कुँवरवर दोऊ ❀ तहँतहँ चकित चितव सबकोऊ
निजनिज रुचि रामहिं सबदेखा ❀ कोउ न जान कछु मर्म विशेखा
भलि रचना नृपसन मुनि कहेऊ ❀ राजा मुदित परमसुख लहेऊ

दो० सब मञ्चनते मञ्च इक, सुन्दरविशदविशाल।
मुनि समेत दोउ बन्धु तहँ, बैठारे महिपाल॥

प्रभुहि देखि सब नृप हियहारे ❀ जनु राकेश[5] उदय भये तारे
अस प्रतीति तिनके मनमाहीं ❀ राम चाप तोरब शक नाहीं
बिनु भंजे भर्व[6] धनुष विशाला ❀ मेलिहि सीय रामउर माला
अस विचारि गमनहु घर भाई ❀ यश प्रताप बल तेज गँवाई
विहँसे अपर भूप सुनि वानी ❀ जे अविवेक अधम अभिमानी
तोरेहु धनुष व्याह अवगाहा ❀ बिनु तोरे को कुँवरि विवाहा
एक बार कालहु किन होऊ ❀ सिय हित समर जितब हम सोऊ
यह सुनि अपर भूप मुसुकाने ❀ धर्मशील हरिभक्त सयाने

सो० सीय विवाहब राम, गर्व दूरिकरि नृपन कर।
जीति को सक संग्राम, दशरथ के रणबांकुरे॥

वृथा मरहु जनि गाल बजाई ❀ मनमोदक[7] नहिं भूख बुताई

१ शंख २ बैल ३ तरकस ४ जनेऊ ५ चन्द्रमा ६ महादेवजी ७ लड्डू॥

शिष हमारि सुनि परम पुनीता ❀ जगदम्बा जानहु जिय सीता
जगतपिता रघुपतिहि विचारी ❀ भरिलोचन छविलेहु निहारी
सुन्दर सुखद सकल गुणरासी ❀ ये दोउ वन्धु शम्भु उरवासी
सुधा समुद्र समीप विहाई ❀ मृगजल निरखि मरहु कतधाई
करहु जाय जा कहँ जो भावा ❀ हमतो आजु जन्म फल पावा
अस कहि भले भूप अनुरागे ❀ रूप अनूप विलोकन लागे
देखहिं सुर नभ चढ़े विमाना ❀ वर्षहिं सुमन करहिं कलगाना

दो॰ जानिसुअवसरजनकतब, पठई सीय बुलाय।
चतुर सखी सुन्दरि सकल, सादर चलीं लिवाय॥

सियशोभा नहिं जाइ बखानी ❀ जगदम्बिका रूप गुणखानी
उपमा सकल मोहिं लघुलागी ❀ प्राकृत नारि अंग अनुरागी
सीय वरणि केहि उपमा देई ❀ कुकवि कहाय अयश को लेई
जो पटँतरिय तियनसम सीया ❀ जग अस युवति कहां कमनीया
गिरा मुखर तनुअर्द्ध भवानी ❀ रतिअतिदुखितअतनुपतिजानी
विष वारुणी वन्धु प्रिय जेही ❀ कहिय रमा सम किमि वैदेही
जो छवि सुधा पयोनिधि होई ❀ परम रूप मय कच्छप सोई
शोभा रजु मन्दर शृङ्गारू ❀ मथै पाणिपङ्कज निज मारू

दो॰ यहिविधिउपजै लक्षिजब, सुन्दरता सुखमूल।
तदपि सकोच समेत कवि, कहहिं सीय समतूल॥

चली संगले सखी सयानी ❀ गावत गीत मनोहर वानी
सोह नवलतनु सुन्दरि सारी ❀ जगतजननिअतुलितछविभारी
भूषण सकल सुदेश सुहाये ❀ अंग अंग रचि सखिन बनाये
रंगभूमि जब सिय पगु धारी ❀ देखि रूप मोहे नर नारी
हरषि सुरन दुन्दुभी बजाई ❀ वरषि प्रसून अप्सरा गाई
पाणि सरोज सोह जयमाला ❀ औचक चितै सकल महिपाला

१ अमृत २ पुष्प ३ माया ४ कलंक ५ समता ६ सुन्दर ७ बरबर ८ नगाड़ा ९ फूल॥

सीय चकित चित रामहिं चाहा ❀ भये मोहवश सब नरनाहा
मुनि समीप बैठे दोउ भाई ❀ लगे ललकि लोचन निधिपाई

दो० गुरुजनलाजसमाज बड़ि, देखि सीय सकुचानि।
लगीविलोकनसखिनतन, रघुवीरहि उरआनि॥

रामरूप अरु सिय छवि देखी ❀ नर नारिन परिहरेउ निमेखी
शोचहिं सकल कहत सकुचाहीं ❀ विधिसन विनयकरहिं मनमाहीं
हरु विधि वेगि जनक जड़ताई ❀ मति हमारि असि देहु सुहाई
बिनु विचार प्रणतजि नरनाहू ❀ सीय राम कर करैं विवाहू
जगभल कहहि भाव सब काहू ❀ हठ कीन्हे अन्तहु उर दाहू
यहि लालसा मगन सब लोगू ❀ वर सांवरो जानकी योगू
तब वन्दीजनै जनक बुलाये ❀ विरदावली कहत चलिआये
कह नृप जाइ कहहु प्रण मोरा ❀ चले भाट हिय हर्ष न थोरा

दो० बोले वन्दी वचन वर, सुनहु सकल महिपाल।
प्रण विदेहकर कहहिं हम, भुजा उठाय विशाल॥

नृप भुजबल विधु शिवधनु राहू ❀ गरुअ कठोर विदित सबकाहू
रावण बाण महाभट भारे ❀ देखि शरासन गवहिं सिधारे
सोइ पुरारि कोदण्ड कठोरा ❀ राजसमाज आजु जेहिं तोरा
त्रिभुवन जय समेत वैदेही ❀ बिनहिं विचार वरै हठितेही
सुनि प्रण सकल भूप अभिलाषे ❀ भटमानी अतिशय मन माँषे
परिकर बांधि उठे अकुलाई ❀ चले इष्टदेवन शिरनाई
तमकितमकितकिशिवधनुधरहीं ❀ उठै न कोटिभांति बलकरहीं
जिनके कछु विचार मनमाहीं ❀ चाप समीप महीप न जाहीं

दो० तमकिधरहिंधनुमूढ़नृप, उठै न चलहिं लजाइ।
मनहुँ पाइ भटबाहु बल, अधिकअधिकगरुआइ॥

भूप सहस दश एकहिबारा ❀ लगे उठावन टरै न टारा

१ राजा २ पास ३ जलन ४ भाट ५ चन्द्रमा ६ धनुष ७ रिस हुये ८ फेंट ९ रिसकर॥

डिगै न शम्भु शरासन कैसे ❀ कामी वचन सतीमन जैसे
सब नृप भये योग उपहासी ❀ जैसे बिनु विराग संन्यासी
कीरति विजय वीरता भारी ❀ चले चापकर सर्वस हारी
श्रीहत भये हारि हिय राजा ❀ बैठे निज निज जाइ समाजा
नृपन विलोकि जनक अकुलाने ❀ बोले वचन रोष जनु साने
द्वीप द्वीप के भूपति नाना ❀ आये सुनि हम जो प्रणठाना
देव दनुँज धरि मनुज शरीरा ❀ विपुल वीर आये रणधीरा

दो० कुँवरिमनोहरिविजयबड़ि, कीरति अतिकमनीय।
पावनहार विरंचि जनु, रचेउ न धनुदमनीय॥

कहहु काहि यह लाभ न भावा ❀ काहु न शंकर चाप चढ़ावा
रहा चढ़ाउब तोरब भाई ❀ तिलभरि भूमि न सकेउछुड़ाई
अब जनि कोउ माखै भटमानी ❀ वीर विहीन मही मैं जानी
तजहुआश निजनिज गृहजाहू ❀ लिखा न विधि वैदेहि विवाहू
सुकृत जाय जो प्रण परिहरऊं ❀ कुँवरि कुँवारि रहै का करऊं
जो जनतेउँ बिनु भट महिभाई ❀ तौ प्रणकरि करतेउँ न हँसाई
जनक वचन सुनि सब नरनारी ❀ देखि जानकिहि भये दुखारी
माखे लषण कुटिल भइँ भौंहैं ❀ रदपुट फरकत नयन रिसौंहैं

दो० कहि न सकत रघुबीर डर, लगे वचन जनुबाण।
नाइ रामपद कमल शिर, बोले गिरा प्रमाण॥

रघुवंशिन महँ जहँ कोउ होई ❀ तेहि समाज अस कहै न कोई
कही जनक जस अनुचित बानी ❀ विद्यमान रघुकुल मणि जानी
सुनहु भानुकुल पंकजभानू ❀ कहौं स्वभाव न कछु अभिमानू
जो राउर अनुशासन पाऊं ❀ कन्दुकइव ब्रह्माण्ड उठाऊं
काचे घट जिमि डारौं फोरी ❀ सकौं मेरु मूलक इव तोरी
तव प्रताप महिमा भगवाना ❀ का बापुरो पिनाक पुराना

१ धनुष २ तेजहीन ३ दैत्य ४ तोड़नेवाला ५ पुण्य ६ टेढ़ा ७ ओठ ८ मौजूद ९ आपका॥

नाथ जानि अस आयसु होऊ ❀ कौतुक करौं विलोकिय सोऊ
कमल नाल जिमि चांप चढ़ावों ❀ शत योजन प्रमाण लै धावों
दो० तोरौं क्षत्रकँदण्ड जिमि, तव प्रताप बलनाथ।
जो न करौं प्रभुपद शपथैं, कर न धरौं धनुभाथ॥
लषण सकोप वचन जब बोले ❀ डगमगानि महि दिग्गज डोले
सकल लोक सब भूप डराने ❀ सिय हिय हर्ष जनक सकुचाने
गुरु रघुपति सब सुनि मन माहीं ❀ मुदित भये पुनिपुनि पुलकाहीं
सैनहिं रघुपति लषण निवारे ❀ प्रेम समेत निकट बैठारे
विश्वामित्र समय शुभ जानी ❀ बोले अति सनेह मृदुबानी
उठहु राम भंजहु भव चापू ❀ मेटहु तात जनक परितापू
सुनिगुरुवचन चरण शिरनावा ❀ हर्ष विषाद न कछु उरआवा
ठाढ़ भये उठि सहज सुभाये ❀ ठवनि युवा मृगराज लजाये
दो० उदित उदयगिरि मंचपर, रघुवर बाल पतंग।
विकसे सन्त सरोज सब, हरषे लोचन भृंग॥
नृपन केरि आशा निशि नाशी ❀ वचन नखत अवैली न प्रकाशी
मूढ़ महीप कुमुद सकुचाने ❀ कपटी भूप उलूक लुकाने
भये विशोक कोक मुनि देवा ❀ वर्षहिं सुमन जनावहिं सेवा
गुरुपद वन्दि सहित अनुरागा ❀ राम मुनिन सन आयसु मांगा
सहजहि चले सकल जगस्वामी ❀ मत्त मंजु वर कुंजर गामी
चलत राम सब पुर नर नारी ❀ पुलकि पूरितनु भये सुखारी
वन्दि पितर सुर सुकृत सँभारे ❀ जो कछु पुण्य प्रभाव हमारे
तौ शिव धनुष मृणाल कि नाईं ❀ तोरहिं राम गणेश गुसाईं
दो० रामहिं प्रेम समेत लखि, सखिन समीप बुलाइ।
सीता मातु सनेह वश, वचन कहै बिलखाइ॥
सखि सब कौतुक देखनहारे ❀ जोउ कहावत हितू हमारे

१ खल २ धनुष ३ भुइँफोड़ ४ कुसम ५ शोक ६ सिंह ७ भौंरा ८ पांति ९ कमलकीडांड़ी॥

कोउ न बुझाइ कहै नृपपाहीं ❀ ये बालक अस हठ भलनाहीं
रावण बाण छुआ नहिं चापा ❀ हारे सकल भूप करि दापा
सो धनु राजकुँवर कर देहीं ❀ बाल मराल कि मन्दर लेहीं
भूप सयानप सकल सिरानी ❀ सखिविधिगतिकछुजायनजानी
बोली चतुर सखी मृदुबानी ❀ तेजवन्त लघु गनिय न रानी
कहँ कुंभज कहँ सिन्धु अपारा ❀ शोषेउ सुयश सकल संसारा
रविमंडल देखत लघु लागा ❀ उदय तासु त्रिभुवनतम भागा

दो० मंत्र परमलघु जासुवश, विधि हरि हर सुर सर्व।
महा मत्त गजराज कहँ, वशकर अंकुश खर्व॥

काम कुसुम धनुशायक लीन्हे ❀ सकल भुवन अपने वशकीन्हे
देवि तजिय संशय अस जानी ❀ भंजब धनुष राम सुनु रानी
सखी वचन सुनि भइ परतीती ❀ मिटा विषाद बढ़ी अति प्रीती
तब रामहिं विलोकि वैदेही ❀ सभय हृदय बिनवति जेहितेही
मनहींमन मनाय अकुलानी ❀ होहु प्रसन्न महेश भवानी
करहु सफल आपनि सेवकाई ❀ करि हित हरहु चाप गरुआई
गणनायक वरदायक देवा ❀ आजुहिलागि कीन्हि तव सेवा
बारबार विनती सुनि मोरी ❀ करहु चाप गरुता अति थोरी

दो० देखि देखि रघुवीर तन, सुरमनाव धरि धीर।
भरे विलोचन प्रेमजल, पुलकावली शरीर॥

नीके निरखि नयन भरिशोभा ❀ पितुप्रणसुमिरि बहुरिमनक्षोभा
अहह तात दारुण प्रण ठानी ❀ समुझत नहिंकछु लाभ न हानी
सचिव सभय शिषदेइ न कोई ❀ बुधसमाज बड़ अनुचित होई
कहँ धनुकुलिशहु चाहि कठोरा ❀ कहँ श्यामलमृदुगात किशोरा
विधि केहिभांति धरौं उरधीरा ❀ सिरस सुमन किमि बेधियहीरा
सकल सभाकी मतिभइ भोरी ❀ अबमोहिं शम्भुचाप गति तोरी

१ धनुष २ घमंड ३ अगस्त्य ४ छोटा ५ फूल ६ विश्वास ७ रोमांच ८ मंत्री॥

निज जड़ता लोगनपर डारी ❋ होहु हरुँअ रघुपतिहि निहारी
अति परिताप सीय मनमाहीं ❋ लवनिमेष जनु युगसम जाहीं
दो० प्रभुहिचितैपुनि चितैमहि, राजत लोचन लोल²।
खेलत मनसिज³ मीन⁴युग, जनु विधुमंडल डोल ॥
गिरा अलिनि⁵ मुख पंकज रोकी ❋ प्रकट न लाज निशा अवलोकी
लोचनजल रह लोचन कोना ❋ जैसे परम कृपण⁶ कर सोना
सकुची व्याकुलता बड़ि जानी ❋ धरि धीरज प्रतीति उरआनी
तन मन वचन मोर प्रणसांचा ❋ रघुपति पदसरोज मनरांचा
तौ भगवान सकल उरवासी ❋ करिहहिं मोहिं रघुपतिकीदासी
जाकर जेहिपर सत्य सनेहू ❋ सो तेहि मिलत न कछु संदेहू
प्रभु तन चितै प्रेम प्रणठाना ❋ कृपानिधान राम सब जाना
सियहि विलोकि तकेउ धनुकैसे ❋ चितव गरुड़ लघुव्यालहिजैसे
दो० लषणलखेउरघुवंशमणि, ताकेउ हर कोदण्ड।
पुलकिगात बोले वचन, चरण चापि ब्रह्मण्ड ॥
दिशि कुञ्जरहु कमंठ⁷ अहि कोला⁸ ❋ धरहु धरणि धरिधीर न डोला
राम चहहिं शंकरधनु तोरा ❋ होहु सजग सुनि आयसु मोरा
चाप समीप राम जब आये ❋ नर नारिन सुर सुकृत मनाये
सब कर संशय अरु अज्ञानू ❋ मन्द महीपन कर अभिमानू
भृगुपति केरि गर्व गरुआई ❋ सुर मुनिवरन केरि कदराई
सियकर शोच जनकपछितावा ❋ रानिनकर दारुण दुखदावा
शम्भुचाप बड़ बोहित पाई ❋ चढ़े जाइ सब संग बनाई
राम बाहुबल सिन्धु अपारा ❋ चहतपार नहिं कोउ कनहारा
दो० राम विलोके लोग सब, चित्र लिखेसे देखि।
चितई सीय कृपायतन, जानी विकल विशेखि ॥
देखी विपुल विकल वैदेही ❋ निमिष विहात कल्पसमतेही

१ हलका २ चंचल ३ कामदेव ४ मछली ५ भ्रमरी ६ सूम ७ कच्छप ८ बाराह ॥

रा० बा० चि० नं० २



तृषितवारि बिनु जो तनु त्यागा ❋ मुये करै का सुधा तड़ागा[1]
का वर्षा जब कृषी सुखाने ❋ समयचूकि पुनि का पछिताने
अस जिय जानि जानकी देखी ❋ प्रभु पुलके लखि प्रीति विशेखी
गुरुहि प्रणाम मनहिंमन कीन्हा ❋ अति लाघँव[2] उठाय धनु लीन्हा
दमकेउदामिनि जिमिघनलयऊ ❋ पुनिधनु नभमंडलसम भयऊ
लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़े ❋ काहु न लखा रहे सब ठाढ़े
तेहि क्षणमध्य राम धनुतोरा ❋ भरेउ भुवन ध्वनि घोर कठोरा

छं० भरि भुवनघोरकठोररवँ[3]रविबाजितजि मारगचले।
चिक्करहिंदिग्गजडोलमहि अहिकोलकूरमकलमले॥
सुरअसुरमुनिकरकानदीन्हे सकल विकल विचारहीं।
कोदण्डभञ्जेउ राम तुलसी जयति वचन उचारहीं॥

सो० शङ्कर चाप जहाज, सागर रघुवर बाहुबल।
बूड़ी सकल समाज, चढ़े जे प्रथमहिं मोहवश॥

प्रभु दोउ खण्ड चाप महिडारे ❋ देखि लोग सब भये सुखारे
कौशिकरूप पयोनिधि पावन ❋ प्रेम वारि अवगाह[4] सुहावन
राम रूप राकेश[5] निहारी ❋ बढ़ी वीचिं[6] पुलकावलि भारी
बाजे नभ गहगहे निशाना ❋ देवबधू नाचहिं करिगाना
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीशा ❋ प्रभुहिं प्रशंसहिं देहिं अशीशा
वर्षहिं सुमन रंग बहु माला ❋ गावहिं किन्नर गीतरसाला
रही भुवन भरि जयजय बानी ❋ धनुषभङ्गध्वनि जात न जानी
मुदित कहहिं जहँ तहँ नरनारी ❋ भञ्जेउ राम शम्भुधनु भारी

दो० वन्दी मागध सूतगण, विरद वदहिं मतिधीर।
करहिं निछावरिलोगसब, हयँ[7] गयँ[8] धन मणिचीर॥

झांझ मृदङ्ग शङ्ख सहनाई ❋ भेरि ढोल दुन्दुभी सुहाई

१ तालाब २ जल्दी ३ शब्द ४ अथाह ५ चन्द्रमा ६ तरंग ७ घोड़ा ८ हाथी॥

बाजहिं बहु बाजने सुहाये ❀ जहँ तहँ युवतिन मङ्गलगाये
सखिन सहित हरषित अतिरानी ❀ सूखत धान परा जनु पानी
जनक लहेउ सुख शोच बिहाई ❀ पैरत थके थाह जनु पाई
श्रीहत¹ भये भूप धनु टूटे ❀ जैसे दिवस² दीप छवि छूटे
सियहियसुखवरणियकेहिभांती ❀ जनु चातक पाये जल स्वाती
रामहिं लषण विलोकत कैसे ❀ शशिहि चकोर किशोरक³ जैसे
शतानन्द तब आयसु दीन्हा ❀ सीता गमन रामपहँ कीन्हा

दो० संगसखी सुन्दरि चतुर, गावहिं मंगलचार।
गमनी बाल मराल⁴गति, सुषमा अंग अपार॥

सखिन मध्य सिय सोहति कैसी ❀ छविगण मध्य महा छविजैसी
कर सरोज जयमाल सुहाई ❀ विश्व विजय शोभा जनुछाई
तन सकोच मन परम उछाहू ❀ गूढ़⁵ प्रेम लखि परै न काहू
जाइ समीप राम छवि देखी ❀ रहिजनु कुँवरि चित्र अवरेखी⁶
चतुर सखी लखि कहा बुझाई ❀ पहिरावहु जयमाल सुहाई
सुनत युगल⁷ कर⁸ माल उठाई ❀ प्रेम विवश पहिराइ न जाई
सोहत जनु युग जलजसनाला ❀ शशिहि सभीत देतजयमाला
गावहिं छवि अवलोकि सहेली ❀ सिय जयमाल रामउर मेली

सो० रघुवर उर जयमाल, देखि देव वर्षहिं सुमन।
सकुचे सकल भुवाल, जनुविलोकिरविकुमुदगण॥

पुर अरु व्योम बाजने बाजे ❀ खल भये मलिनसाधुसबगाजे
सुर किन्नर नर नाग मुनीशा ❀ जयजय कहिसब देहिं अशीशा
नाचहिं गावहिं विबुध बधूटी ❀ बारबार कुसुमावलि छूटी
जहँ तहँ विप्र वेदध्वनि करहीं ❀ वन्दी विरदावलि उच्चरहीं
महि पाताल नाक यशव्यापा ❀ राम वरी सिय भंजेउ⁹ चापा
करहिं आरती पुर नर नारी ❀ देहिं निछावरि वित्त बिसारी

१ तेजहीन २ दिन ३ बच्चा ४ हंस ५ छिपाहुआ ६ लिखी ७ दोनों ८ हाथ ९ तोड़ा॥

सोहत सीय रामकी जोरी ❁ छवि शृंगार मनहुँ इकठोरी
सखी कहहिं प्रभुपद गहु सीता ❁ करति न चरण परस अति भीता
दो० गौतमतियगतिसुरतिकरि, नहिंपरसतिपद पाँनि।
मन विहँसे रघुवंशमणि, प्रीतिअलौकिकजानि॥
तब सिय देखि भूप अभिलाषे ❁ कूर कपूत मूढ़ मन मापे
उठि उठि पहिरि सनाह अभागे ❁ जहँ तहँ गाल वजावन लागे
लेहु छुड़ाय सीय कहँ कोऊ ❁ धरिबांधहु नृप बालक दोऊ
तोरे धनुष काज नहिं सरई ❁ जीवत हमहिं कुँवरि को वरई
जो विदेह कछु करै सहाई ❁ जीतहु समर सहित दोउभाई
साधु भूप बोले सुनि बानी ❁ राज समाजहि लाज लजानी
बल प्रताप वीरता बड़ाई ❁ नाक पिनाकहि संग सिधाई
सोइ शूरता कि अब कहुँ पाई ❁ अस बुधितौ विधि मुहँमसिलाई
दो० देखहु रामहिं नयनभरि, तजि ईर्षा मद मोहु।
लषण रोष पावक प्रबल, जानि शलभ जनिहोहु॥
वैनतेय वलि जिमि चहकागू ❁ जिमि शश चहहि नाग अरि भागू
जिमि चहकुशल अकारण कोही ❁ सुख सम्पदा चहहि शिवद्रोही
लोभी लोलुप कीरति चहई ❁ निकलङ्कता कि कामी लहई
हरिपदविमुख परम गति चाहा ❁ तस तुम्हार लालच नरनाहा
कोलाहल सुनि सीय सकानी ❁ सखी लिवाय गईं जहँ रानी
राम सुभाय चले गुरु पाहीं ❁ सिय सनेह वरणत मन माहीं
रानिन सहित शोचवश सीया ❁ अबधौं विधिहि कहा करनीया
नृपन वचन सुनि इतउत तकहीं ❁ लषण रामडर बोलि न सकहीं
दो० अरुणनयनभृकुटीकुटिल, चितवतनृपनसकोप।
मनहुँमत्तगजगण निरखि, सिंह किशोरहिचोप॥
खरभर देखि विकल नर नारी ❁ सबमिलि देहिं महीपन गारी

१ छूना २ डरीहुई ३ हाथ ४ बक्तर ५ धनुष ६ स्याही ७ टीड़ी ८ सिंह॥

तेहि अवसर सुनि शिवधनुभङ्गा ❀ आये भृगुकुल कमल पतङ्गा[1]
देखि महीप सकल सकुचाने ❀ बाज झपट जनु लवालुकाने
गौर शरीर भूति[2] भलि भ्राजा ❀ भाल विशाल त्रिपुंड्र विराजा
शीशजटा शशि वदन सुहावा ❀ रिसवश कछुक अरुण[3] है आवा
भृकुटी कुटिल नयन रिसराते ❀ सहजहिं चितवत मनहुँ रिसाते
वृषभ[4]कन्ध उर वाहु विशाला ❀ चारु जनेउ माल मृगछाला
कटि मुनि वसन तूण[5] दुइबांधे ❀ धनुशर कर कुठार कलकांधे

दो० शान्त वेष करणी कठिन, वरणि न जाय स्वरूप ।
धरिमुनितनुजनु वीररस, आये जहँ सब भूप ॥

देखत भृगुपति[6] वेष कराला ❀ उठे सकल भय विकल भुवाला
पितु समेत कहिकहि निजनामा ❀ लगे करन सब दण्डप्रणामा
जेहि स्वभावचितवहिंहितजानी ❀ सो जानै जनु आयु खुटानी
जनक बहोरि आय शिरनावा ❀ सीय बुलाय प्रणाम करावा
आशिष दीन्ह सखी हर्षानी ❀ निज समाज लैगईं सयानी
विश्वामित्र मिले पुनि आई ❀ पद सरोज मेले दोउ भाई
राम लषण दशरथ के ढोटा[7] ❀ दीन्ह अशीश जानि भल जोटा
रामहिं चितयरहे थकिलोचन ❀ रूप अपार मार मदमोचन[8]

दो० बहुरि विलोकिविदेहसन, कहहु कहा अति भीर ।
पूछत जान अजान जिमि, व्यापेउ कोप शरीर ॥

समाचार कहि जनक सुनाये ❀ जेहि कारण महीप सब आये
सुनत वचन फिरि अनत निहारे ❀ देखे चाप खण्ड महिडारे
अति रिस बोले वचन कठोरा ❀ कहु जड़ जनक धनुष केइँतोरा
वेगि दिखाव मूढ़ नतु आजू ❀ उलटौं महि जहँलगि तव राजू
अति डर उतर देत नृप नाहीं ❀ कुटिल भूप हरषे मन माहीं
सुर मुनि नाग नगर नरनारी ❀ शोचहिं सकल त्रास उरभारी

१ सूर्य २ भस्म ३ लाल ४ बैल ५ तरकस ६ परशुरामजी ७ लड़का ८ नाशक ॥

मन पछिताति सीय महतारी ❁ विधिसँवारि सब बात बिगारी
भृगुपति कर स्वभाव सुनि सीता ❁ अर्द्ध निमेष कल्प सम बीता

दो० सभय विलोके लोग सब, जानि जानकिहि भीर ।
हृदय न हर्ष विषाद कछु, बोले श्री रघुवीर ॥

नाथ शम्भु धनु भञ्जनहारा ❁ होइहि कोउ यकदास तुम्हारा
आयसु कहा कहिय किन मोही ❁ सुनि रिसाय बोले मुनि कोही
सेवक सो जो करै सेवकाई ❁ अरिकरणी करि करिय लराई
सुनहु राम जेइँ शिव धनु तोरा ❁ सहसबाहु सम सो रिपुमोरा
सो विलगाइ विहाइ समाजा ❁ नतु मारे जैहैं सब राजा
सुनिसुनि वचन लषण मुसुकाने ❁ बोले परशुधरहि अपमाने
बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं ❁ कबहुँ न असरिस कीन्ह गुसाईं
यहि धनुपर ममता केहि हेतू ❁ सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू

दो० रे नृपबालक काल वश, बोलत तोहिं न सँभार ।
धनुहीं सम त्रिपुरारिधनु, विदित सकल संसार ॥

लषण कहा हँसि हमरे जाना ❁ सुनहु देव सब धनुष समाना
का क्षति लाभ जीर्ण धनु तोरे ❁ देखा राम नये के भोरे
छुवत टूट रघुपतिहि न दोषू ❁ मुनि बिनुकाज करिय कत रोषू
बोले चितय परशु की ओरा ❁ रे शठ सुनेसि स्वभाव न मोरा
बालक जानि वधौं नहिं तोहीं ❁ केवल मुनि करि जानसिमोहीं
बाल ब्रह्मचारी अति कोही ❁ विश्वविदित क्षत्रिय कुलद्रोही
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्हीं ❁ विपुलबार महिदेवन दीन्हीं
सहसबाहु भुज छेदनहारा ❁ परशु विलोकु महीप कुमारा

दो० मातुपितहिजनि शोचवश, करसिमहीपकिशोर ।
गर्भन के अर्भक दलन, परशु मोर अति घोर ॥

बिहँसि लषण बोले मृदुवानी ❁ अहो मुनीश महा भटमानी

१ तोड़नेवाले २ क्रोधी ३ शत्रु ४ शिव ५ हानि ६ मूर्ख ७ बैरी ८ बच्चा ९ नाशने में ॥

पुनि पुनि मोहिं देखाव कुठारा[1] ❀ चहत उड़ावन फूंकि पहारा
इहां कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं ❀ जो तर्जनी देखि मरिजाहीं
देखि कुठार शरासन बाना ❀ मैं कछु कहा सहित अभिमाना
भृगुकुल समुझि जनेउ विलोकी ❀ जो कछु कहौ सहौं रिसरोकी
सुर[2] महिसुर[3] हरिजन[4] अरु गाई ❀ हमरे कुल इन पर न शुराई
बधे पाप अपकीरति[5] हारे ❀ मारतहूँ पाँपरिय तुम्हारे
कोटि कुलिश सम वचन तुम्हारा ❀ वृथा धरहु धनुबाण कुठारा

दो॰ जो विलोकि अनुचित कहेउँ, क्षमहु महामुनिधीर ।
सुनि सरोष भृगुवंशमणि, बोले गिरा गँभीर ॥

कौशिक[6] सुनहु मन्द यह बालक ❀ कुटिलकालवशनिजकुलघालक
भानुवंश राँकेश[7] कलंकू ❀ निपट निरंकुश अबुध अशंकू
कालकवर होइहि क्षण माहीं ❀ कहौं पुकारिखोरि मोहिं नाहीं
तुम हटकहु जो चहहु उबारा ❀ कहि प्रताप वल रोष हमारा
लषण कहेउ मुनि सुयश तुम्हारा ❀ तुमहिं अछत को वरणै पारा
अपने मुख तुम आपनि करणी ❀ बार अनेक भांति बहु वरणी
नहिं संतोष तो पुनि कछु कहहू ❀ जनि रिसरोंकि दुसह दुखसहहू
वीर ब्रती तुम धीर अक्षोभा ❀ गारी देत न पावहु शोभा

दो॰ शूर समर करणी करहिं, कहि न जनावहिं आप ।
विद्यमान रणपाइ रिपु, कायर कथहिं प्रलाप ॥

तुमतौ काल हांकि जनु लावा ❀ बारबार मोहिं लागि बुलावा
सुनत लषण के वचन कठोरा ❀ परशु सुधारि धरेउ कर घोरा
अब जनि देहु दोष मोहिं लोगू ❀ कटुवादी बालक वध योगू
बाल विलोकि बहुत मैं बांचा ❀ अब यह मरणहार भा सांचा
कौशिक कहा क्षमिय अपराधू ❀ बाल दोष गुण गनहिं न साधू
कर कुठार मैं अकरण कोही ❀ आगे अपराधी गुरु द्रोही

१ फरसा २ देवता ३ विप्र ४ वैष्णव ५ अयश ६ विश्वामित्र ७ चन्द्रमा ॥

उतर देत छांड़ों बिनु मारे ❀ केवल कौशिक शील तुम्हारे
नतु यहि काटि कुठार कठोरे ❀ गुरुहिं उऋणहोतेउँ श्रमथोरे
दो॰ गाधिसुवन कह हृदय हँसि, मुनिहिं हरिअरे सूझ ।
अजगंवखण्डेउऊखजिमि, अजहुँ न बूझ अबूझ ॥
कह्यो लषण मुनि शील तुम्हारा ❀ को नहिं जान विदितसंसारा
मातहिं पितहिं उऋण भयनीके ❀ गुरुऋण रहा शोचबड़ जीके
सो जनु हमरे माथे काढ़ा ❀ दिन चलिगयउ व्याज बहुबाढ़ा
अब आनियव्यवहरिया वोली ❀ तुरत देउँ मैं थैली खोली
सुनि कटुवचन कुठार सुधारा ❀ हाहा कहि सब लोग पुकारा
भृगुवर परशु देखावहु मोही ❀ विप्र विचारि बचौ नृपद्रोही
मिले न कबहुँ सुभट रणगाढ़े ❀ द्विज देवता घरहि के बाढ़े
अनुचित कहि सब लोग पुकारे ❀ रघुपति सैनहिं लषण निवारे
दो॰ लषणउतर आहुति सरिस, भृगुवर कोप कृशानु[२] ।
बढ़त देखि जलसम वचन, बोले रघुकुल भानु ॥
नाथ करहु बालकपर छोहू[३] ❀ सूध दूधमुख करिय न कोहू[४]
जोपै प्रभु प्रभाव कछु जाना ❀ तौकि बराबरि करत अयाना
जो लरिका कछु अनुचित करहीं ❀ गुरु पितु मातु मोदं[५] मनभरहीं
करिय कृपा शिशु सेवक जानी ❀ तुमसम शील धीर मुनिज्ञानी
रामवचन सुनि कछुक जुड़ाने ❀ कहि कछु लषण बहुरि मुसकाने
हँसत देखि नखशिख रिसव्यापी ❀ राम तोर भ्राता[६] बड़ पापी
गौर शरीर श्याम मनमाहीं ❀ कालकूट[७] मुख पयं[८] मुख नाहीं
सहज टेढ़[९] अनुहरै न तोहीं ❀ नीच मीच सम लखै न मोहीं
दो॰ लषणकहेउ हँसिसुनहुमुनि, क्रोध पापकर मूल ।
जेहिवशजनअनुचितकरहिं, चलहिंविश्वप्रतिकूल ॥
मैं तुम्हार अनुचर[१०] मुनिराया ❀ परिहरिकोप करिय अब दाया

१ धनुष २ अग्नि ३ दया ४ रिस ५ खुशी ६ भाई ७ विष ८ दूध ९ उलटा १० दास ॥

टूटचाप नहिं जुरहि रिसाने ❀ बैठिय होइहिं पांय पिराने
जो अति प्रिय तौ करिय उपाई ❀ जोरिय कोउ बड़गुणी बुलाई
बोलत लषणहिं जनक डराहीं ❀ मष्ट करहु अनुचित भलनाहीं
थर थर कांपहिं पुर नर नारी ❀ छोट कुमार खोट अतिभारी
भृगुपति सुनिसुनि निर्भयबानी ❀ रिस तनुजरै होय बलहानी
बोले रामहिं देइ निहोरा ❀ बचै विचारि बन्धु लघु तोरा
मन मलीन तन सुन्दर कैसे ❀ विषरस भरा कनकघट जैसे
दो० सुनि लक्ष्मण बिहँसे बहुरि, नयन तरेरे राम।
गुरु समीप गमने सकुचि, परिहरि वाणी बाम॥
अति विनीत मृदुशीतल वाणी ❀ बोले राम जोरि युग पाँणी
सुनहु नाथ तुम सहज सुजाना ❀ बालक वचन करिय नहिंकाना
बैरै बालक एक स्वभाऊ ❀ इनहिं न सन्त विदूषहिं काऊ
तिन नाहीं कछु काज बिगारा ❀ अपराधी मैं नाथ तुम्हारा
कृपा कोप बध बन्ध गुसाईं ❀ मोपर करिय दास की नाईं
कहियवेगि जेहिविधि रिसजाई ❀ मुनिनायक सोइ करिय उपाई
कह मुनि राम जाइ रिस कैसे ❀ अजहुँ बन्धुँ तव चितवअनैसे
यहिके कण्ठ कुठार न दीन्हा ❀ तौ मैं कहा कोपकरि कीन्हा
दो० गर्भस्रवहिं अवनिपरमणि, सुनि कुठारगति घोर।
परशु अछत देखौं जियत, वैरी भूप किशोर॥
बहै न हाथ दहै रिस छाती ❀ भा कुठार कुण्ठित नृपघाती
भयउवाम विधि फिरेउस्वभाऊ ❀ मोरे हृदय कृपा कस काऊ
आजु दैव दुख दुसह सहावा ❀ सुनि सौमित्रि बहुरि शिरनावा
बाउ कृपा मूरति अनुकूला ❀ बोलत वचन झरत जनुफूला
जो पै कृपा जरै मुनि गाता ❀ क्रोध भये तनु राखु विधाता
देखु जनक हठि बालक येहू ❀ कीन्ह चहत जड़ यमपुर गेहू

१ प्यारा २ चुप ३ सोने का घड़ा ४ हाथ ५ बरै ६ बांधना ७ भाई ८ रानी ९ लक्ष्मण॥

बेगि करहु किन आंखिन ओटा ❀ देखत छोट खोट नृप ढोटा
बिहँसे लषण कहा मुनि पाहीं ❀ मूंदिय आंखि कतहुँ कोउ नाहीं
दो० परशुराम तब रामप्रति, बोले वचन सक्रोध।
शम्भुशरासन तोरि शठ, करसि हमार प्रबोध ॥
बन्धु कहै कटु सम्मत तोरे ❀ तू छलविनय करसि करजोरे
करु परितोष मोर संग्रामा ❀ नाहिंत छांडु कहाउब रामा
छल तजि करहु समर शिवद्रोही ❀ बन्धु सहित नतु मारौं तोही
भृगुपति कहत कुठार उठाये ❀ मन मुसुकाहिं राम शिरनाये
गुनँहु लषणकर हमपर रोषू ❀ कतहुं सुधाइहु ते बड़ दोषू
टेढ़ जानि शङ्का सब काहू ❀ वक्र चन्द्रमहिं ग्रसै न राहू
राम कहेउ रिसतजिय मुनीशा ❀ कर कुठार आगे यह शीशा
जेहि रिसजाइ करिय सोइ स्वामी ❀ मोहिं जानि आपन अनुगामी
दो० प्रभुहिं सेवकहिं समर कस, तजहु विप्र वर रोष।
वेष बिलोकि कहेसि कछु, बालकहू नहिं दोष ॥
देखि कुठार बाण धनु धारी ❀ भै लरिकहि रिस वीरविचारी
नाम जानपै तुमहिं न चीन्हा ❀ वंश स्वभाव उतर तेहिं दीन्हा
जो तुम अवतेउ मुनिकी नाईं ❀ पदरज शिर शिशुधरत गुसाईं
क्षमहु चूक अनजानत केरी ❀ चहिय विप्र उर कृपा घनेरी
हमहिं तुमहिं सरिवरि कस नाथा ❀ कहहु तो कहां चरण कहँ माथा
राम मात्र लघु नाम हमारा ❀ परशु सहित बड़नाम तुम्हारा
देव एक गुण धनुष हमारे ❀ नव गुण परम पुनीत तुम्हारे
सब प्रकार हम तुमसन हारे ❀ क्षमहु विप्र अपराध हमारे
दो० बार बार मुनि विप्रवर, कहा राम सन राम।
बोले भृगुपति सरुष ह्वै, तुहूं बन्धुसम वाम ॥
निपटहि द्विज करि जानेहु मोहीं ❀ मैं जस विप्र सुनाऊं तोहीं

१ बेटा २ समझाना ३ करुई ४ क़सूर ५ रिस ६ टेढ़ा ७ सेवक ८ धूलि ९ क्रोधित ॥

चाप स्रुवा शर[२] आहुति जानू ❋ कोप मोर अति घोर कृशानू
समिध सेन चतुरंग सुहाई ❋ महा महीप भये पशु आई
मैं यहि परशुकाटि बलि दीन्हे ❋ समरयज्ञ जग कोटिन कीन्हे
मोर प्रभाव विदित नहिं तोरे ❋ बोलसि निदरि विप्रके भोरे
भंजेउ चाप दाँप[३] बड़ बाढ़ा ❋ अहमित मनहुँजीतिजगकाढ़ा
राम कहा मुनि कहहु विचारी ❋ रिस अति बड़ि लघुचूक हमारी
छुवतहि टूट पिनाक पुराना ❋ मैं केहिहेतु करौं अभिमाना
दो० जो हम निदरहिं विप्रबदि, सत्य सुनहु भृगुनाथ।
तौ असकोजगसुभटजेहि, भयवश नावहिं माथ॥
देव दनुज भूपति भट नाना ❋ समबल अधिक होउ बलवाना
जो रण हमहिं प्रचारहि कोऊ ❋ लरहिं सुखेन[४] काल किनहोऊ
क्षत्रिय तनु धरि समर सकाना ❋ कुल कलंक तेहि पामर[५] जाना
कहौं स्वभाव न कुलहि प्रशंसी ❋ कालहु डरहिं न रण रघुवंसी
विप्र वंश की अस प्रभुताई ❋ अभय[६] होइ जो तुमहिं डराई
सुनि मृदुगूढ़ वचन रघुपतिके ❋ उघरे पटल[७] परशुधर मतिके
राम रमापति कर धनु लेहू ❋ खैंचहु मोर मिटै संदेहू
देत चाप आपहि चढ़ि गयऊ ❋ परशुराम मन विस्मय भयऊ
दो० जाना राम प्रभाव तब, पुलक प्रफुल्लित गात।
जोरि पाणि बोले वचन, प्रेम न हृदय समात॥
जय रघुवंश वनज वन भानू ❋ गहन दनुजकुल दहन कृशानू
जय सुर विप्र धेनु हितकारी ❋ जय मदमोह कोह भ्रमहारी
विनय शील करुणा गुणसागर ❋ जयति वचनरचना अतिनागर
सेवक सुखद सुभग सब अंगा ❋ जय शरीर छवि कोटि अनंगा[९]
करौं कहा मुख एक प्रशंसा ❋ जय महेश मन मानस हंसा
अनुचित बहुत कहेउँ अज्ञाता ❋ क्षमहु क्षमा[८] मंदिर दोउ भ्राता

१ धनुष २ बाण ३ घमण्ड ४ खुशी से ५ नीच ६ निडर ७ किवाड़ ८ दया ९ कामदेव॥

कहि जय जय जय रघुकुल केतू ❀ भृगुपति गये वनहिं तप हेतू
अपभय कुटिल महीप डराने ❀ जहँ तहँ कायर गवहिं पराने
दो० देवन दीन्ही दुन्दुभी, प्रभुपर वरषहिं फूल।
हरषे पुर नर नारि सब, मिटा मोह भय शूल॥
अति गहगहे बाजने बाजे ❀ सबहिं मनोहर मंगल साजे
यूथ यूथ मिलि सुमुखि सुनयनी ❀ करहिंगान कल कोकिलबयनी
सुख विदेह कर वरणि न जाई ❀ जन्म दरिद्र मनहुँ निधि पाई
विगत त्रास भइ सीय सुखारी ❀ जिमि विधुउदय चकोर कुमारी
जनकक्रीन्ह कौशिकहि प्रणामा ❀ प्रभु प्रताप धनु भंजेउ रामा
मोहिं कृतकृत्य कीन्ह दुहुँ भाई ❀ अबजोउचित सो कहियगोसांई
कह मुनि सुनु नरनाह प्रवीना ❀ रहा विवाह चाप आधीना
टूटतही धनु भयउ विवाहू ❀ सुरनर नाग विदित सब काहू
दो० तदपि जाइतुम करहु अब, यथा वंश व्यवहार।
बूझि विप्र कुल वृद्ध गुरु, वेद विहित आचार॥
दूत अवधपुर पठवहु जाई ❀ आनहु नृप दशरथहिं बुलाई
मुदित रावकहि भलेहि कृपाला ❀ पठये दूत अवध तेहि काला
बहुरि महाजन सकल बुलाये ❀ आइ सबन सादर शिर नाये
हाट बाट मन्दिर सुरवासा ❀ नगर सँवारहु चारिहु पासा
हरषि चले निज निज गृहआये ❀ पुनि परिचारक बोलि पठाये
रचहु विचित्र वितान बनाई ❀ शिर धरि वचन चले सचुपाई
पठये बोलि गुणी तिननाना ❀ जे वितानविधि कुशलसुजाना
विधिहिवन्दितिनकीन्हअरम्भा ❀ विरचे कनक कदली थम्भा
दो० हरित मणिनके पत्र फल, पद्मराग के फूल।
रचना देखि विचित्र अति, मन विरंचिकर भूल॥
वेणु हरित मणिमय सब कीन्हे ❀ सरल सपर्ण परहिं नहिंचीन्हे

१ पताका २ नगाड़ा ३ दुःख ४ सनाथ ५ दास ६ केला ७ बांस ८ पत्तोंसहित॥

कनक कलित अहिबेलि बनाई ❀ लखि नहिं परै सपर्ण सुहाई
तेहि के रचि पचि बन्ध बनाये ❀ बिचबिच मुक्तादाम सुहाये
माणिकमरकत कुलिश पिरोजा ❀ चीरि कोरि पचि रचे सरोजा
किये भृङ्ग वहु रङ्ग विहङ्गा ❀ गुञ्जहिं कूजहिं पवन प्रसङ्गा
सुरप्रतिमा खम्भन गढ़ि काढ़ीं ❀ मङ्गल द्रव्य लिये सब ठाढ़ीं
चौकैं भांति अनेक पुराई ❀ सिन्धुरमणि मय सहज सुहाई

दो० सौरभपल्लवसुभगसुठि, किये नीलमणि कोरि।
हेमबौर मरकत घंवरि, लसत पाटमय डोरि॥

रचे रुचिर वर बन्दनवारे ❀ मनहुँ मनोभव फन्द सँवारे
मङ्गल कलश अनेक बनाये ❀ ध्वज पताक पट चमर सुहाये
दीप मनोहर मणिमय नाना ❀ जाइ न वरणि विचित्र विताना
जेहि मण्डप दुलहिनि वैदेही ❀ सो वरणै अस मति कविकेही
दूलह राम रूप गुण सागर ❀ सो वितान तिहुँलोक उजागर
जनक भवन की शोभा जैसी ❀ गृह गृह प्रतिपुर देखिय तैसी
जेहितिरहुतितेहिसमयनिहारी ❀ तेहि लघु लगे भुवनदशचारी
जो सम्पदा नीच गृह सोहा ❀ सो विलोकि सुरनायक मोहा

दो० बसै नगर जेहि लक्षिकरि, कपट नारि वरवेष।
तेहि पुरकी शोभा कहत, सकुचैं शारद शेष॥

पहुँचे दूत रामपुर पावन ❀ हरषे नगर विलोकि सुहावन
भूप द्वार तिन खबरि जनाई ❀ दशरथ नृप सुनिलिये बुलाई
करि प्रणाम तिन पाती दीन्ही ❀ मुदित महीप आप उठिलीन्ही
वारि विलोचन बांचत पाती ❀ पुलकगात आई भरि छाती
राम लषण उर कर वर चीठी ❀ रहिगये कहत न खाटी मीठी
पुनि धरि धीर पत्रिका बांची ❀ हरषी सभा बात सुनि सांची
खेलत रहे तहां सुधि पाई ❀ आये भरत सहित दोउभाई

१ नागबेलि २ लड़ी ३ गजमुक्ता ४ आम ५ सोना ६ गुच्छा ७ कामदेव ८ खबर॥

पूंछत अति सनेह सकुचाई ❀ तात कहां ते पाती[1] आई

दो० कुशल प्राणप्रिय बन्धुदोउ, अहहिं कहहु केहिदेश।
सुनि सनेह साने वचन, बांची बहुरि नरेश॥

सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता ❀ अधिक सनेह समात न गाता
प्रीति पुनीत भरतकी देखी ❀ सकल सभा सुख लहेउविशेखी
तब नृप दूत निकट बैठारे ❀ मधुर मनोहर वचन उचारे
भैया कहहु कुशल दोउ बारे ❀ तुम नीके निज[2] नयन निहारे
श्यामल गौर धरे धनु भाथा ❀ वयकिशोर कौशिक मुनिसाथा
पहिंचानेहु तौ कहहु स्वभाऊ ❀ प्रेम विवश पुनि पुनि कहराऊ
जादिन ते मुनिगये लिवाई ❀ तबते आजु सांचि सुधिपाई
कहहु विदेह कवन विधिजाने ❀ सुनि प्रिय वचन दूत मुसुकाने

दो० सुनहुमहीपति मुकुटमणि, तुमसमधन्य न कोउ।
राम लषण जिनके तनय[3], विश्व[4] विभूषण[5]दोउ॥

पूंछन योग न तनय तुम्हारे ❀ पुरुषसिंह तिहुँपुर उजियारे
जिनके यश प्रताप के आगे ❀ शशि मलीन रविशीतललागे
तिनकहँकहियनाथकिमिचीन्हे ❀ देखिय रवि कि दीपकरलीन्हे
सीय स्वयम्बर भूप अनेका ❀ सिमिटे सुभट एक ते एका
शम्भु शरासन[6] काहु न टारा ❀ हारे सकल भूप बरिआरा
तीनि लोकमहँ जे भटमानी ❀ सबकी शक्ति शम्भुधनु भानी
सकहि उठाइ सुरासुर[8] मेरू ❀ सोउ हियहारि गयउ करि फेरू
जेहिकौतुक शिवशैल[9] उठावा ❀ सोउ तेहि सभा पराभव पावा

दो० तहां राम रघुवंश मणि, सुनिय महा महिपाल।
भंजेउ चाप प्रयास बिनु, जिमि गजपंकजनाल॥

सुनि सरोष भृगुनायक आये ❀ बहुतभांति तिन आंखिदिखाये
देखि रामबल निज धनु दीन्हा ❀ करिबहु विनयगमनवनकीन्हा

१ चिट्ठी २ अपन ३ पुत्र ४ संसार ५ गहना ६ धनुष ७ नाश ८ बाणासुर ९ कैलास॥

राजन राम अतुल बल जैसे ❀ तेज निधान लषण पुनि तैसे
कम्पहिं भूप विलोकत जाके ❀ जिमि गज हरिकिशोरके ताके
देव देखि तव बालक दोऊ ❀ अब न आंखितर आवत कोऊ
दूत वचन रचना प्रियलागी ❀ प्रेम प्रताप वीर रसपागी
सभा समेत राव अनुरागे ❀ दूतन देन निछावरि लागे
कहि अनीति ते मूंदहिं काना ❀ धर्म विचारि सबहिं सुखमाना

दो० तबउठि भूप वशिष्ठकहँ, दीन्हि पत्रिका जाइ।
कथा सुनाई गुरुहिं सब, सादर दूत बुलाइ॥

सुनि बोले गुरु अति सुखपाई ❀ पुण्य पुरुष कहँ महि सुखछाई
जिमि सरिता सागर पहँ जाहीं ❀ यद्यपि ताहि कामना नाहीं
तिमिसुखसम्पतिबिनहिंबुलाये ❀ धर्म शील पहँ जाहिं सुभाये
तुम गुरु विप्र धेनु सुरसेवी ❀ तस पुनीत कौशल्या देवी
सुकृती तुम समान जगमाहीं ❀ भयउ न है कोउ होनेउनाहीं
तुमते अधिक पुण्य बड़ काके ❀ राजन राम सरिस सुतजाके
वीर विनीत धर्म व्रतधारी ❀ गुण सागर बालक वर चारी
तुम कहँ सर्वकाल कल्याना ❀ सजहु बरात बजाइ निशाना

दो० चलहु वेगिसुनिगुरुवचन, भलेहि नाथ शिरनाइ।
भूपति गमने भवन तब, दूतन वास दिवाइ॥

राजा सब रनिवास बुलाई ❀ जनक पत्रिका बांचि सुनाई
सुनि सन्देश सकल हरषानी ❀ अपरकथा सब भूप बखानी
प्रेम प्रफुल्लित राजहिं रानी ❀ मनहुँशिखिनँसुनिवारिदबानी
मुदित अशीश देहिं गुरुनारी ❀ अतिआनन्द मगन महतारी
लेहिं परस्पर अति प्रिय पाती ❀ हृदय लगाइ जुड़ावहिं छाती
राम लषण की कीरति करणी ❀ बारहिंबार भूप वर वरणी
मुनि प्रताप कहि द्वार सिधाये ❀ रानिन तब महिदेव बुलाये

१ हाथी २ सिंह ३ नदी ४ इच्छा ५ पुण्यात्मा ६ नगाड़ा ७ मोर ८ ब्राह्मण॥

दिये दान आनन्द समेता ❁ चले विप्रवर आशिष देता
सो० याचक[1] लिये हँकारि, दीन्हि निछावरि कोटिविधि।
चिरजीवहु सुतचारि, चक्रवर्त्ति दशरत्थ के॥
कहत चले पहिरे पट[2] नाना ❁ हरषि हने गहगहे निशाना
समाचार पुर लोगन पाये ❁ लागे घर घर होन बधाये
भुवन चारि दश भरेउ उछाहू ❁ जनकसुता रघुवीर विवाहू
सुनि शुभकथा लोग अनुरागे ❁ मग गृह गली सँवारन लागे
यद्यपि अवध सदैव सुहावनि ❁ रामपुरी मङ्गल मय पावनि
तदपि प्रीति की रीति सुहाई ❁ मङ्गल रचना रची बनाई
ध्वज पताक पट चामर चारू ❁ छाये परम विचित्र बजारू
कनक कलश तोरण[3] मणिजाला ❁ हरद दूब दधि अक्षत माला
दो० मंगलमयनिजनिजभवन, लोगन रचे बनाइ।
वीथी[4] सींची चतुर सब, चौकैं चारु पुराइ॥
जहँ तहँ यूथयूथ मिलि भामिनि ❁ सजिनवससकलद्युतिदामिनि
विधुवदनी मृगशावक लोचनि ❁ निजस्वरूप रतिमानविमोचनि
गावहिं मङ्गल मञ्जुल बानी ❁ सुनि कलरव कलकण्ठलजानी
भूप भवन किमि जाइ बखाना ❁ विश्वविमोहन रचेउ विताना
मङ्गल द्रव्य मनोहर नाना ❁ राजत बाजत विपुल निशाना
कतहुँ विरद वन्दी उच्चरहीं ❁ कतहुँ वेदध्वनि भूसुर[6] करहीं
गावहिं सुन्दरि मङ्गल गीता ❁ लै लै नाम राम अरु सीता
बहुत उछाह भवन अति थोरा ❁ मानहुँ उमँगि चला चहुँओरा
दो० शोभा दशरथ भवन की, को कवि बरणै पार।
जहां सकल सुरशीशमणि, राम लीन्ह अवतार॥
भूप भरत तब लिये बुलाई ❁ हयगय स्यन्दन[7] साजहु जाई
चलहु वेगि रघुवीर बराता ❁ सुनत पुलक पूरे दोउ भ्राता

१ भिक्षुक २ वस्त्र ३ बन्दनवार ४ गली ५ बिजली ६ विप्र ७ रथ॥

भरत सकल साहँनी[१] बुलाये ❀ आयसु दीन्ह मुदित उठिधाये
रचि रुचि जीन तुरँगे[२] तिनसाजे ❀ वर्ण वर्ण वर वाजि विराजे
सुभगसकल सुठि चंचलकरणी ❀ अवँ इव जरत धरतपगु धरँणी[३]
नाना भांति न जाहिं बखाने ❀ निदरि पवन जनु चहत उड़ाने
तिन पर छैल भये असवारा ❀ भरत सरिस सब राजकुमारा
सब सुन्दर बहु भूषण धारी ❀ कर शर चाप तूण कटिभारी

दो० छरे छबीले छैल सब, शूर सुजान नवीनै[४]।
युग पदचर असवार प्रति, जे आँसि[५] कला प्रवीन ॥

बांधे विरद वीर रण गाढ़े ❀ निकसि भये पुर बाहर ठाढ़े
फेरहिं चतुर तुरँग गति नाना ❀ हरषहिं धुनिसुनिपणँव[६]निशाना
रथ सारथिन विचित्र बनाये ❀ ध्वज पताक मणिभूषण छाये
चमरचारु किंकिणिध्वनिकरहीं ❀ भानुयान शोभा अपहरहीं
श्यामकर्ण अगणित हयहोते ❀ ते तिनरथन सारथिन जोते
सुन्दर सकल अलंकृत सोहैं ❀ जिनहिं विलोकत मुनिमनमोहैं
जे जल चलहिं थलहिं की नाईं ❀ टाप न बूड़ वेग अधिकाईं
अस्त्र शस्त्र सब साज सजाईं ❀ रथी सारथिन लिये बुलाईं

दो० चढ़ि चढ़ि रथ बाहर नगर, लागी जुरन बरात।
होत शकुन सुन्दर सुखद, जो जेहि कारजजात ॥

कलित करिवरन परीं अँबारी ❀ कहि न जाय जेहि भांति सँवारी
चले मत्त गजँ[७] घण्ट विराजे ❀ मनहुँ सुभग सावनघन गाजे
वाहन अपर अनेक विधाना ❀ शिबिकाँ[८] सुभग सुखासनयाना
तिन चढ़िचले विप्रवर वृन्दा ❀ जनुतनु धरे सकलश्रुति छन्दा
मागध सूत वन्दि गुणगायक ❀ चले यानचढ़ि जो जेहिलायक
बेसरँ[९] ऊंट वृषभ बहु जाती ❀ चले वस्तु भरि अगणित भांती
कोटिन कांवरि चले कहारा ❀ विविध वस्तु को वरणै पारा

१ दरोगा २ घोड़ा ३ पृथ्वी ४ नये ५ तलवार ६ ढोल ७ हाथी ८ पालकी ९ खच्चर ॥

चले सकल सेवक सद्गुदाई ❀ निज निजसाज समाज बनाई

दो० सबके उर निर्भर हरष, पूरित पुलक शरीर।
कबहिं देखिहैं नयन भरि, राम लषण दोउबीर॥

गरजहिं गजघण्टा ध्वनि घोरा ❀ रथरव वाजि हींस चहुँ ओरा
निदरि घनहिं घुमराहिंनिशाना ❀ निजपरावकछुसुनिय न काना
महाभीर भूपति के द्वारे ❀ रजे ह्वैजायँ पषाएँ पँवारे
चढ़ी अटारिन देखहिं नारी ❀ लिये आरती मंगल थारी
गावहिं गीत मनोहर नाना ❀ अति अनन्द नहिं जाइ बखाना
तब सुमन्त दुइ स्यन्दन साजी ❀ जोते हय रवि निन्दक बाँजी
दोउ रथ रुचिर भूप पहँ आने ❀ नहिं शारदप्रति जाहिं बखाने
राज समाज एक रथ साजा ❀ दूसर तेज पुंज अति भ्राजा

दो० तेहिरथ रुचिर वशिष्ठकहँ, हरषि चढ़ाय नरेश।
आपुचढ़ेउस्यन्दनसुमिरि, हर गुरु गौरि गणेश॥

सहित वशिष्ठ सोह नृप कैसे ❀ सुरगुरु संग पुरन्दर जैसे
करि कुलरीति वेद विधि राऊ ❀ दीख सबहिं सब भांति बनाऊ
सुमिरि राम गुरु आयसु पाई ❀ चले महीपति शंख बजाई
हरषे विबुध विलोकि बराता ❀ बरषहिं सुमन सुमंगल दाता
भयउ कोलाहल हय गय गाजे ❀ व्योम बरात बाजने बाजे
सुर नर नारि सुमंगल गाई ❀ सरसराग बाजहिं सहनाई
घण्टघण्टि ध्वनि वरणि न जाई ❀ सरो करैं पायक फहराई
करहिं विदूषक कौतुक नाना ❀ हास कुशल कलगान सुजाना

दो० तुरँग नचावहिं कुँवरवर, अकनि मृदंग निशान।
नागरनटचितवहिंचकित, डिगहिं न तालविधान॥

बनै न वरणत बनी बराता ❀ होइँ शकुन सुन्दर शुभदाता
चारा चाष वाम दिशि लेई ❀ मनहुं सकल मंगल कहिदेई

१ पूर्ण २ धूलि ३ पत्थर ४ घोड़ा ५ बृहस्पतिजी ६ इन्द्र ७ भांड़ ८ नीलकण्ठ॥

दाहिन काग सुखेत सुहावा ❋ नकुल[1] दरश सब काहू पावा
सानुकूल बह त्रिविध बयारी ❋ सघट सबाल आव वरनारी
लोवा[2] फिरि फिरि दरशदिखावा ❋ सुरभी सम्मुख शिशुहि पियावा
मृगमाला दाहिनि दिशि आई ❋ मंगल गण जनु दीन्ह दिखाई
क्षेमकरी[3] कह क्षेम विशेखी ❋ श्यामा वाम सुतरुपर देखी
सम्मुख आयउ दधि अरु मीना[4] ❋ कर पुस्तक दुइ विप्र प्रवीना

दो॰ मंगलमय कल्याणमय, अभिमत फल दातार।
जनु सब सांचे होनहित, भये शकुन इकबार॥

मंगल शकुन सुगम सब ताके ❋ सगुण ब्रह्म सुन्दर सुत जाके
राम सरिसबर दुलहिनि सीता ❋ समधी दशरथ जनक पुनीता
सुनि अस ब्याह शकुन सब नाचे ❋ अब कीन्हे विरंचि हम सांचे
यहिविधि कीन्ह बरात पयानां ❋ हयगय गाजे हने निशाना
आवत जानि भानुकुल केतू ❋ सरितन जनक बँधाये सेतू[6]
बीच बीच वर वास वनाये ❋ सुरपुर सरिस सम्पदा छाये
अशन[7] शयन वरवसन सुहाये ❋ पावहिं सब निज निज मनभाये
नित नूतन सुखलखि अनुकूला ❋ सकल बरातिन मन्दिर भूला

दो॰ आवत जानि बरात वर, सुनि गहगहे निशान।
सजि गजरथपदचरतुरँग, लेन चले अगवान॥

कनक कलश कल कोपर थारा ❋ भाजन ललित अनेक प्रकारा
भरे सुधा[8]सम सब पकवाने ❋ भांति भांति नहिं जाहिं बखाने
फल अनेक वर वस्तु सुहाई ❋ हरषि भेंट हित भूप पठाई
भूषण वसन महामणि नाना ❋ खगमृग हयगय वहुविधियाना
मंगल शकुन सुगन्ध सुहाये ❋ वहुत भांति महिपाल पठाये
दधि चिउरा उपहार अपारा ❋ भरिभरि कांवरि चले कहारा
अगवानिन जब दीख बराता ❋ उर आनन्द पुलकि भरिगाता

१ नेवला २ लोमड़ी ३ सफ़ेद चील ४ मछली ५ कूच ६ पुल ७ भोजन ८ अमृततुल्य॥

देखि बनाव सहित अगवाना ❀ मुदित बरातिन हने निशाना

दो० हरषि परस्पर मिलन हित, कछुक चले बगमेल।
जनु आनन्द समुद्र दुइ, मिलतबिहाय सुबेल॥

बरषि सुमन सुरसुन्दरि गावहिं ❀ मुदित देव दुन्दुभी बजावहिं
वस्तु सकल राखी नृप आगे ❀ विनयकीन तिन अतिअनुरागे
प्रेम समेत राव सब लीन्हा ❀ भै बखशीश याचकन दीन्हा
करि पूजा मान्यता बड़ाई ❀ जनवासे कहँ चले लिवाई
वसन विचित्र पांवड़े परहीं ❀ नृप दशरथ तापर पग धरहीं
अति सुन्दर दीन्हेउ जनवासा ❀ जहँ सब कहँ सबभांति सुपासा
जानी सिय बरात पुर आई ❀ कछु निज महिमा प्रकटजनाई
हृदय सुमिरि सब सिद्धि बुलाई ❀ भूप पहुनई करन पठाई

दो० सिधिसबसियआयसुअकनि, गईं जहां जनवास।
लिये सम्पदा सकल सुख, सुरपुरभोगविलास॥

निज निज वास विलोकि बराती ❀ सुर सुख सकलसुलभसबभांती
विभव भेद कछु काहु न जाना ❀ सकल जनककर करहिंबखाना
सिय महिमा रघुनायक जानी ❀ हरषे हृदय हेतु पहिंचानी
पितु आगंमन सुनत दोउ भाई ❀ हृदय न अति आनन्द समाई
सकुचत कहि न सकत गुरुपाहीं ❀ पितु दर्शन लालच मनमाहीं
विश्वामित्र विनय बड़ि देखी ❀ उर उपजा संतोष विशेखी
हरषि बन्धु दोउ हृदय लगाये ❀ पुलक अंग लोचन जल छाये
चले जहां दशरथ जनवासे ❀ मनहुँ सरोवर तकेउ पियासे

दो० भूप विलोके जबहिं मुनि, आवत सुतन समेत।
उठे हरषि सुखसिन्धु महँ, चले थाहसी लेत॥

मुनिहिं दण्डवत कीन्ह महीशा ❀ बारबार पदरज धरि शीशा

१ हद २ देवाङ्गना ३ चरण ४ गांव ५ महिमानी ६ वैकुण्ठ ७ आना ८ तालाब ९ राजा॥

कौशिक राव लिये उरलाई ❀ दै अशीश पूंछी कुशलाई
पुनि दण्डवत करत दोउ भाई ❀ देखि नृपति उर सुख न समाई
सुत हिय लाइ दुसह दुख मेटे ❀ मृतक शरीर प्राण जनु भेटे
पुनि वशिष्ठपदशिर तिन नाये ❀ प्रेम मुदित[१] मुनिवर उरलाये
विप्र वृन्द वन्दे दुहुँ भाई ❀ मन भावत अशीश तिन पाई
भरत सहानुज कीन्ह प्रणामा ❀ लिये उठाइ लाइ उर रामा
हरषे लषण देखि दोउ भ्राता ❀ मिले प्रेम परिपूरण गाता

दो० पुरजन परिजन जातिजन, याचक मन्त्री मीत ।
मिले यथाविधि सबहिंप्रभु, परम कृपालु विनीत ॥

रामहिं देखि बरात जुड़ानी ❀ प्रीति कि रीति न जाय बखानी
नृप समीप सोहहिं सुत[४] चारी ❀ जनु धन धर्म्मादिक तनुधारी
सुतन सहित दशरथ कहँ देखी ❀ मुदित नगर नरनारि विशेखी
सुमन वरषि सुर हनहिं निशाना ❀ नाकनटी[५] नाचहिं करिगाना
शतानन्द अरु विप्र सचिवगन ❀ मागध सूत विदुष वन्दीजन
सहित बरात राव सनमाना ❀ आयसु मांगि फिरे अगवाना
प्रथम बरात लगनते आई ❀ ताते पुर प्रमोद[६] अधिकाई
ब्रह्मानन्द लोग सब लहहीं ❀ बढ़हुदिवसनिशिविधिसनकहहीं

दो० राम सीय शोभा अवधि, सुकृतअवधिदोउराज ।
जहँतहँ पुरजनकहहिंअस, मिलिनरनारिसमाज ॥

जनक सुकृत मूरति वैदेही ❀ दशरथ सुकृति राम धरि देही
इनसम काहु न शिव आराधे ❀ काहु न इन समान फलसाधे
इनसम कोउ न भयउ जगमाहीं ❀ अहै न जग कोउ होनेउ नाहीं
हम सब सकल सुकृतकी रासी ❀ भये जग जन्मि जनकपुरवासी
जिन जानकी राम छवि देखी ❀ को सुकृती हम सरिस विशेखी
पुनि देखब रघुवीर विवाहू ❀ लेब भली विधि लोचनलाहू[७]

१ हृदय २ असह्य ३ प्रसन्न ४ पुत्र ५ अप्सरा ६ खुशी ७ लाभ ॥

कहहिं परस्पर कोकिल बयनी ❀ यहि विवाह बड़लाभ सुनयनी
बड़े भाग्य विधि बात बनाई ❀ नयन अतिथि ह्वैहैं दोउ भाई

दो० बारहिंबार सनेह वश, जनक बोलाउब सीय।
लेन आइहैं बन्धु दोउ, कोटि काम कमनीय॥

विविध भांति होइहि पहुनाई ❀ प्रिय न काहि अस सासुर माई
तब तब राम लक्ष्मणहिं निहारी ❀ ह्वैहैं सब पुरलोग सुखारी
सखि जस राम लषणकर जोटा ❀ तैसइ भूप संग दुइ ढोटा
श्याम गौर सब अंग सुहाये ❀ ते सब कहहिं देखि जे आये
कहा एक मैं आजु निहारे ❀ जनु विरंचि[3] निजहाथ सँवारे
भरत रामहीकी अनुहारी ❀ सहसालखि न सकहिं नरनारी
लषण शत्रुसूदन इक रूपा ❀ नखशिख ते सब अंग अनूपा[4]
मन भावहिं मुख वरणि न जाहीं ❀ उपमाकहँ त्रिभुवन कोउनाहीं

छं० उपमा न कोउकहदासतुलसीकतहुँकविकोविद[5]कहैं।
बल विनय विद्या शील शोभा सिन्धु इनसम यइ लहैं॥
पुरनारिसकलपसारि अंचल विधिहि वचन सुनावहीं।
ब्याहिय सुचारिउ भाइ यहिपुर हम सुमंगल गावहीं॥

सो० कहहिं परस्पर नारि, वारि विलोचनपुलकतन।
सखि सब करब पुरारि[6], पुण्य पयोनिधि[7]भूपदोउ॥

यहि विधि सकल मनोरथ करहीं ❀ आनँद उमँगि उमँगि उरभरहीं
सीय स्वयम्बर जे नृप आये ❀ देखि बन्धु सब तिन सुखपाये
कहत राम यश विशद विशाला ❀ निज निज भवन गये महिपाला
गये बीति कछु दिन यहि भांती ❀ प्रमुदित पुरजन सकल बराती
मंगल मूल लगन दिन आवा ❀ हिमऋतु अगहन मास सुहावा
ग्रह तिथि नखत योग वरवारू ❀ लगन शोधिविधिकीन्हविचारू

१ आपस में २ पाहुन ३ ब्रह्मा ४ सुंदर ५ पंडित ६ शम्भु ७ समुद्र॥

पठै दीन्ह नारद सन सोई ❀ गनी जनक के गणकन जोई
सुनी सकल लोगन यह बाता ❀ कहहिं ज्योतिषी अपर विधाता
दो० धेनु धूलि बेला विमल[२], सकल सुमंगल मूल ।
विप्रन कहेउ विदेहसन, जानि समय अनुकूल ॥
उपरोहितहि कहेउ नरनाहा ❀ अब विलम्बकर कारण काहा
शतानन्द तब सचिव बुलाये ❀ मंगल सकल साजि सब लाये
शंख निशान पणव बहुबाजे ❀ मंगल शकुन सकल शुभ साजे
सुभग सुवासिनि[३] गावहिंगीता ❀ करहिं वेद ध्वनि विप्र पुनीता
लेन चले सादर यहि भांती ❀ गये जहां जनवास बराती
कोशलपति कर देखि समाजू ❀ अति लघुलगे तिनहिं सुरराजू
भयउ समय अब धारिय पाऊ ❀ यह सुनि परा निशानन घाऊ
गुरुहिंपूंछिकरि कुलविधि राजा ❀ चले संग मुनि साधु समाजा
दो० भाग्यविभवअवधेशकर, देखि देव ब्रह्मादि ।
लगे सराहन सहस मुख, जानि जन्म निजबादि ॥
सुरन सुमंगल अवसर जाना ❀ वर्षहिं सुमन बजाइ निशाना
शिव ब्रह्मादिक विबुध[६] वरूथा ❀ चढ़े विमानन नाना यूथा
प्रेम पुलक तनु हृदय उछाहू ❀ चले विलोकन राम विवाहू
देखि जनकपुर सुर अनुरागे ❀ निजनिज लोकसबहिंलघुलागे
चितवहिंचकितविचित्रविताना ❀ रचना सकल अलौकिक नाना
नगर नारि नर रूप निधाना ❀ सुघर सुधर्म सुशील सुजाना
तिनहिं देखि सब सुर पुर नारी ❀ भईं नखत जनु विधु उजियारी
विधिहि भयउ आश्चर्य विशेखी ❀ निज करणी कछु कतहुँ न देखी
दो० शिव समुझाये देव सब, जनि आश्चर्य भुलाहु ।
हृदय विचारहु धीर धरि, सिय रघुवीर विवाहु ॥
जिनकर नाम लेत जगमाहीं ❀ सकल अमंगल मूल नशाहीं

१ ज्योतिषी २ स्वच्छ ३ सुहागिल ४ इन्द्र ५ पुष्प ६ देवता ७ चंद्रमा ८ अशकुन ॥

करतल होहिं पदारथ चारी ❀ ते सिय राम कहेउ कामारी
यहिविधि शंभु सुरन समुझावा ❀ पुनि आगे वर वसह चलावा
देवन देखे दशरथ जाता ❀ महामोद मन पुलकितगाता
साधु समाज संग महिदेवा ❀ जनु तनु धरे करहिं सुर सेवा
सोहत साथ सुभग सुत चारी ❀ जनु अपवर्ग सकल तनुधारी
मरकत कनक वरणवर जोरी ❀ देखि सुरन भइ प्रीति न थोरी
पुनि रामहिं विलोकि हियहरषे ❀ नृपहिं सराहि सुमनतिनवरषे

दो० रामरूप नखशिखनिरखि, बारहिंबार निहारि ।
पुलकगात लोचन सजल, उमा समेत पुरारि ॥

केकिकंठ द्युति श्यामल अंगा ❀ तड़ितविनिन्दक वसन सुरंगा
ब्याह विभूषण विविध बनाये ❀ मंगलमय सब भांति सुहाये
शरद विमल विधुवदन सुहावन ❀ नयन नवल राँजीव लजावन
सकल अलौकिक सुन्दरताई ❀ कहि न जाय मनहीं मनभाई
बन्धु मनोहर सोहहिं संगा ❀ जात नचावत चपल तुरंगा
राज कुँवर वरवाजि नचावहिं ❀ वंशप्रशंसक विरद सुनावहिं
जेहि तुरंग पर राम विराजे ❀ गति विलोकि खगनायक लाजे
कहि न जाइ सब भांति सुहावा ❀ वाजि वेष जनु काम बनावा

छं० जनु वाजिवेषबनाइमनसिज रामहितअतिसोहई ।
अवलोकि वयवपु रूप गुण गति सकल भुवन विमोहई॥
जगमगतिजीनजड़ावज्योतिसुमोतिमणिमाणिकलगे।
किंकिणिललामलगामललितविलोकिसुरनरमुनिठगे॥

दो० प्रभुमनसहि लयलीनमन, चलतवाजिछविपाव ।
भूषितउडुगण तड़ित घन, जनु वर बरहिं नचाव ॥

जेहि वर वाजि राम असवारा ❀ तेहि शारदहु न वरणै पारा
शङ्कर राम रूप अनुरागे ❀ नयन पंचदश अतिप्रियलागे

१ हथेली २ शिव ३ बैल ४ विप्र ५ मोक्ष ६ बिजली ७ कमल ८ भाट ६ गरुड़ १० मोर॥

हरि हित सहित राम जब जोहे ❀ रमा समेत रमापति मोहे
निरखि राम छवि विधि हरषाने ❀ आठहिनयन जानि पछिताने
सुरसेनप उर बहुत उछाहू ❀ विधि ते ड्योढ़ लोचन लाहू
रामहिं चितव सुरेश सुजाना ❀ गौतम शाप परमहित माना
देव सकल सुरपतिहि सिहाहीं ❀ आजु पुरन्दरसम कोउनाहीं
मुदित देवगण रामहिं देखी ❀ नृप समाज दुहुँहरष विशेखी

छं० अतिहर्षराजसमाजदुहुँदिशि दुन्दुभीबाजहिंघनी ।
वरषहिंसुमनसुरहरषिकहिजयजयतिजयरघुकुलमनी॥
यहिभांति जानि बरात आवत बाजने बहुबाजहीं ।
रानी सुवासिनि बोलि परिछन हेतु मंगल साजहीं ॥

दो० सजि आरती अनेक विधि, मंगल सकल सँवारि ।
चलीं मुदित परिछनकरन, गजगामिनिवरनारि ॥

विधुवदनी मृगशावक लोचनि ❀सबनिजछविरतिमानविमोचनि
पहिरे वरण वरण वर चीरा ❀ सकल विभूषण सजे शरीरा
सकल सुमंगल अंग बनाये ❀ करहिं गान कलकंठ लजाये
कंकण किंकिणि नूपुर बाजहिं ❀ चालविलोकिकामगजलाजहिं
बाजहिं बाजन विविध प्रकारा ❀ नभ अरु नगर सुमंगलचारा
शची शारदा रमा भवानी ❀ जे सुरतिय शुचि सहज सयानी
कपट नारि वर वेष बनाई ❀ मिलीं सकल रनिवासहि आई
करहिं गान कल मंगल बानी ❀ हरष विवश सबकाहुन जानी

छं० कोजानक्यहिआनन्दवशसबब्रह्मवरपरिछनचली ।
कलगानमधुरनिशानवरषहिं सुमनसुरशोभाभली ॥
आनन्दकन्द विलोकि दूलह सकल हियहरषित भई ।
अम्भोजअम्बक अम्बुउमँगि सुअंगपुलकावलि छई ॥

१ विष्णु २ स्वामिकार्त्तिकेय ३ कोकिला ४ इन्द्राणी ५ लक्ष्मी ६ कमल ७ नेत्र ८ जल ॥

दो० जो सुखभा सियमातु मन, देखि राम बरवेष।
सो न सकहिंकहिकल्पशत, सहस शारदा शेष॥

नयन नीर हठि मंगल जानी ❀ परिछन करहिं मुदित मनरानी
वेद विहित अरु कुल आचारू ❀ कीन्ह भलीविधि सब व्यवहारू
पंच शब्द ध्वनि मंगल गाना ❀ पट पांवड़े परहिं विधि नाना
करिआरती अर्घ्य तिन दीन्हा ❀ राम गमन मण्डप तब कीन्हा
दशरथ सहित समाज विराजे ❀ विभवे[2] विलोकि लोकपतिलाजे
समय समय सुर वरषहिं फूला ❀ शांति पढ़हिं महिसुर अनुकूला
नभ अरु नगर कोलाहल होई ❀ आपन पर कछु सुनै न कोई
यहि विधि राम मण्डपहि आये ❀ अर्घ्य देइ आसन बैठाये

छं० बैठारिआसन आरतीकरि निरखिवरसुखपावहीं।
मणिवसन भूषणभूरि वारै[3]हिं नारि मंगलगावहीं॥
ब्रह्मादि सुर वर विप्रवेष बनाइ कौतुक देखहीं।
अवलोकिरविकुलकमलरविछविसफलजीवनलेखहीं॥

दो० नाऊ बारी भाट नट, राम निछावरिपाइ।
मुदित अशीशहिं नाइ शिर, हर्ष[4] न हृदय[5] समाइ॥

मिले जनक दशरथ अतिप्रीती ❀ करि वैदिक लौकिक सबरीती
मिलत महा दोउ राज विराजे ❀ उपमा खोजि खोजि कविलाजे
लही न कतहुँ हारि हियँ मानी ❀ इन सम यइ उपमा उरआनी
समधी देखि देव अनुरागे ❀ सुमन वरषि यश गावन लागे
जग विरंचि उपजावा जबते ❀ देखे सुने ब्याह बहु तबते
सकल भांति सब साज समाजू ❀ सम समधी देखे हम आजू
देवगिरा सुनि सुन्दरि सांची ❀ प्रीतिअलौकिक दुहुँदिशिमांची
देत पांवड़े अर्घ्य सुहाये ❀ सादर[6] जनक मण्डपहिं[7] ल्याये

१ रोक २ ऐश्वर्य ३ निछावरि करैं ४ खुशी ५ हृदय ६ आदरसे ७ माड़व॥

छं॰ मण्डपविलोकिविचित्ररचनारुचिरतामुनिमनहरे।
निज पाणि जनक सुजान सबकहँ आनि सिंहासनधरे॥
कुलइष्टसरिस वशिष्ठ पूजे विनयकरि आशिष लही।
कौशिकहि पूजत परमप्रीति कि रीति तो न परै कही॥
दो॰ वामदेव आदिक ऋषय, पूजे मुदित महीश।
दिये दिव्यआसन सबहि, सबसन लही अशीश॥
बहुरि कीन्ह कोशलपति पूजा ❀ जानि ईश सम भाव न दूजा
जोरि पाणि करि विनय बड़ाई ❀ कहि निजभाग्य विभव बहुताई
पूजे भूपति सकल बराती ❀ समधी सम सादर सब भांती
आसन उचित दिये सब काहू ❀ कहौं कहा मुख एक उछाहू
सकल बरात जनक सनमानी ❀ दान मान विनती वर बानी
विधिहरिहर दिशिपतिदिनराऊ ❀ जे जानहिं रघुवीर प्रभाऊ
कपट विप्र वर वेष बनाये ❀ कौतुक देखहिं अति सचुपाये
पूजे जनक देव सम जाने ❀ दिये सुआसन बिनु पहिंचाने
छं॰ पहिंचानकोकेहिजानसबहिं अपानसुधिभोरीभई।
आनन्दकन्द विलोकि दूलह उभय दिशि आनँदमई॥
सुर लखे राम सुजान पूजे मानसिक आसन दये।
अवलोकिशीलस्वभावप्रभुको विबुधमनप्रमुदितभये॥
दो॰ रामचन्द्र मुख चन्द्रछवि, लोचन चारु चकोर।
करत पान सादर सकल, प्रेम प्रमोद न थोर॥
समय विलोकि वशिष्ठ बुलाये ❀ सादर शतानन्द मुनि आये
वेगि कुँवरि अब आनहु जाई ❀ चले मुदितमन आयसु पाई
रानी सुनि उपरोहित बानी ❀ प्रमुदित सखिन समेत सयानी
विप्रबधू कुल वृद्ध बुलाई ❀ करि कुल रीति सुमंगल गाई

१ हाथ २ चतुर ३ समान ४ राजा ५ छल ६ दोनों ७ देखि ८ आनंद ९ आज्ञा॥

नारिवेष जे सुर वर वामा ❀ सकल सुभाय सुन्दरी श्यामा
तिनहिं देखि सुखपावहिं नारी ❀ बिनु पहिंचान प्राणते प्यारी
बारबार सनमानहिं रानी ❀ उमा रमा शारद समजानी
सिय सँवारि सब साज बनाई ❀ मुदित मण्डपहि चलीं लिवाई

छं० चलिल्याइसीतहिंसखीसादरसाजिसुमंगलभामिनी
नव सप्त साजे सुन्दरी सब मत्त कुंजर गामिनी ॥
कलगानसुनिमुनिध्यानत्यागहिंकामकोकिललाजहीं ।
मंजीर नूपुर कलित कंकण तालगति वरबाजहीं ॥

दो० सोहति बनिता वृन्द महँ, सहज सुहावनि सीय ।
छविललनागणमध्यजनु, सुषमाअतिकमनीय ॥

सिय सुन्दरता वरणि न जाई ❀ लघुमति बहुत मनोहरताई
आवत दीख बरातिन सीता ❀ रूप राशि सब भांति पुनीता
सबहिं मनहिं मन कीन्ह प्रणामा ❀ देखि राम भये पूरण कामा
हरषे दशरथ सुतन समेता ❀ कहि न जाइ उर आनँदजेता
सुर प्रणाम करि वर्षहिं फूला ❀ मुनि अशीशध्वनि मंगलमूला
गान निशान कुलाहल भारी ❀ प्रेम प्रमोद नगर नरनारी
यहिविधि सीय मण्डपहि आई ❀ प्रमुदित शांति पढ़हिं मुनिराई
तेहि अवसरकरि विधिव्यवहारू ❀ दुहुँ कुलगुरु सब कीन्ह अचारू

छं० आचारकरिगुरुगौरिगणपति मुदितविप्रपुजावहीं ।
सुर प्रकट पूजा लेहिं देहिं अशीश अतिसुख पावहीं ॥
मधुपर्क मंगलद्रव्य जो जेहिसमय मुनि मनमें चहैं ।
भरे कनक कोपर कलशसबकरलिये परिचारक रहैं ॥
कुल रीति प्रीति समेत रविकहिदेत सब सादरकिये ।
यहि भांति देव पुजाइ सीतहि सुभग सिंहासनदिये ॥

१ स्त्री २ पार्वतीजी ३ हर्षित ४ हाथी ५ बिछिया ६ शोभा ७ दास ॥

सियराम अवलोकनि परस्पर प्रेम काहु न लखिपरै।
मन बुद्धि वर वाणी अगोचर प्रकट कवि कैसे करै॥
दो० होमसमयतनुधरिअनल, अतिहितआहुतिलीन्ह।
विप्र वेषधरि वेद सब, कहिविवाहविधिदीन्ह॥
जनक पाटमहिर्षी जगजानी ❀ सीय मातु किमि जाइ बखानी
सुयश सुकृत सुख सुन्दरताई ❀ सब समेटि विधि रची बनाई
समय जानि मुनिवरन बुलाई ❀ सुनत सुवासिनि सादरल्याई
जनक वामदिशि सोह सुनयँना ❀ हिमगिरिसंग बनी जनुमयँना
कनक कलश मणि कोपर रूरे ❀ शुचि सुगन्ध मंगलजल पूरे
निज कर मुदित राव अरु रानी ❀ धरे राम के आगे आनी
पढ़हिं वेद मुनि मंगलबानी ❀ गगनसुमनझरि अवसरजानी
वर विलोकि दम्पति अनुरागे ❀ पायँ पुनीत पखारन लागे
छं० लागे पखारन पायँ पंकज प्रेम तनु पुलकावली।
नभनगरगाननिशानजयध्वनिउमँगिजनुचहुँदिशिचली॥
जे पदसरोज मनोजअरि उरसर सदैव विराजहीं।
जेसकृतसुमिरतविमलतामन सकल कलिमलभाजहीं॥
जे परसि मुनिवनिता लही गति रही जो पातकमई।
मकरन्द जिनको शम्भुशिर शुचिता अवधिसुर वरनई॥
करि मधुपमन योगीशजन जेहि सेइ अभिमतगतिलहैं।
ते पद पखारत भाग्यभाजन जनक जयजय सब कहैं॥
वरकुँवरि करतल जोरि शाखोचार दोउ कुलगुरु करैं।
भयोपाणिग्रहणविलोकिविधिसुरमनुज मुनिआनँदभरैं
सुखमूल दूलह देखि दम्पति पुलकि तनु हुलसैं हिये।
करि लोक वेद विधान कन्यादान नृप भूषण दिये॥

१ छिपाहुआ २ अग्नि ३ रानी ४ जनक की स्त्री ५ पार्वती की माता ६ पुष्परस ७ पात्र॥

हिमवन्त जिमि गिरिजा महेशहि हरिहि श्री सागर दई ।
तिमि जनक सिय रामहिं समर्पी विश्वकलकीरतिनई ॥
किमिकरैं विनय विदेह कीन्ह विदेह मूरति सांवरी ।
करि होम विधिवत गांठि जोरी होनलागीं भांवरी ॥
दो० जयध्वनि वन्दी वेदध्वनि, मंगल गान निशान ।
सुनिहरषहिंवरषहिंविबुध, सुरतरु सुमन सुजान ॥

कुँवरि कुँवर कल भांवरिदेहीं ❀ नयन लाभ सब सादरलेहीं
जाइ न वरणि मनोहर जोरी ❀ जो उपमा कछु कहिय सो थोरी
राम सीय सुन्दरि परिछाहीं ❀ जगमगाति मणिखम्भनमाहीं
मनहुँ मदन रति धरि बहुरूपा ❀ देखहिं राम विवाह अनूपा
दरश लालसा सकुच न थोरी ❀ प्रकटत दुरत बहोरि वहोरी
भये मगन सब देखनहारे ❀ जनक समान अपान बिसारे
प्रमुदित मुनिन भांवरी फेरी ❀ नेग सहित सब रीति निवेरी
राम सीय शिर सेंदुर देहीं ❀ उपमा कहि न जाय कविकेहीं
अरुण पराग जलज भरिनीके ❀ शशिहि भूषि अहि लोभअमीके
वहुरि वशिष्ठ दीन्ह अनुशासन ❀ वर दुलहिनि बैठहिं इक आसन

छं० बैठे वरासन राम जानकि मुदित मन दशरथभये ।
तनुपुलकि पुनि पुनि देखिअपने सुकृतसुरतरुफलनये ॥
भरि भुवन रहा उछाह राम विवाह भा सबही कहा ।
केहि भांति वरणि सिरात रसना एक यह मंगलमहा ॥
तब जनक पाइ वशिष्ठ आयसु ब्याह साज सँवारिकै ।
माण्डवी श्रुतिकीर्त्ति उर्मिला कुँवरि लई हँकारिकै ॥
कुशकेतु कन्या प्रथम जो गुणशील सुख शोभामई ।
सब रीति प्रीति समेत करि सो ब्याहि नृप भरतहिदई ॥

१ लक्ष्मी २ कामदेव की स्त्री ३ इच्छा ४ लाल ५ कमल ६ अमृत ७ आज्ञा ८ कल्पवृक्ष ॥

जानकी लघुभगिनी सकल सुन्दरि शिरोमणि जानिकै।
सो जनक दीन्ही ब्याहि लषणहिं सकल विधि सनमानिकै॥
जेहि नाम श्रुतिकीरति सुलोचनि सुमुखि सब गुण आगरी।
सो दई रिपुसूदनहिं भूपति रूपशील उजागरी॥
अनुरूप वर दुलहिनि परस्पर लखि सकुचि हिय हर्षहीं।
सब मुदित सुन्दरता सराहहिं सुमन सुरगण वर्षहीं॥
सुन्दरी सुन्दर वरन सह सब एक मण्डप राजहीं।
जनु जीव उर चारिउ अवस्था विभुन सहित विराजहीं॥
दो० मुदित अवधपति सकल सुत, बधुन समेत निहारि।
जनु पाये महिपाल मणि, क्रियन सहित फल चारि॥
जस रघुवीर ब्याह विधि वरणी ❀ सकल कुँवर ब्याहे तेहि करणी
कहि न जाइ कछु दाइज भूरी ❀ रहा कनकमणि मण्डप पूरी
कम्बल वसन विचित्र पटोरे ❀ भांति भांति बहुमोल न थोरे
गज रथ तुरग दास अरु दासी ❀ धेनु अलंकृत कामदुहासी
वस्तु अनेक करिय किमि लेखा ❀ कहि न जाय जानहिं जिन देखा
लोकपाल अवलोकि सिहाने ❀ लीन्ह अवधपति अतिसुख माने
दीन्ह याचकन जो जेहि भावा ❀ उबरा सो जनवासहि आवा
तब करजोरि जनक मृदुबानी ❀ बोले सब बरात सनमानी
छं० सनमानि सकल बरात सादर दान विनय बड़ायकै।
प्रमुदित महामुनि वृन्द वन्दे पूजि प्रेम लड़ायकै॥
शिरनाइ देव मनाइ सबसन कहत करसंपुट किये।
सुर साधु चाहत भाव सिन्धु कि तोष जल अंजलि दिये॥
करजोरि जनक बहोरि बन्धु समेत कोशलरायसों।
बोले मनोहर वचन सानि सनेह शील सुभायसों॥

१ बहिन २ श्रेष्ठ ३ प्रसन्न ४ ऐश्वर्य ५ सोना ६ रेशमीवस्त्र ७ कामधेनु ८ भिक्षुक ९ हाथजोड़े॥

सम्बन्ध राजन रावरे हम बड़े अब सबविधि भये।
यह राज साज समेत सेवक जानबी बिनुगथ लये॥
ये दारिका परिचारिका करि पालबी करुणामयी।
अपराधक्षमिबो बोलिपठये बहुत हौं ढीठी दयी॥
पुनि भानुकुल भूषण सकलसनमानविधिसमधीकिये।
कहिजात नहिं विनती परस्पर प्रेम परिपूरण हिये॥
वृन्दारका गण सुमन वरषहिं राउ जनवासहिं चले।
दुन्दुभी ध्वनि वेदध्वनि नभ नगर कौतूहल भले॥
तब सखी मंगल गान करत मुनीश आयसु पाइकै।
दूलहदुलहिनिन सहित सुन्दरि चलीं कुहवर ल्याइकै॥
दो॰ पुनिपुनिरामहिंचितवसिय, सकुचतिमनसकुचैन।
हरति मनोहर मीन छवि, प्रेम पियासे नैन॥

श्याम शरीर सुभाय सुहावन ❋ शोभा कोटि मनोज लजावन
जावक युत पद कमल सुहाये ❋ मुनिमन मधुप रहत जहँछाये
पीत पुनीत मनोहर धोती ❋ हरत बालरवि दामिनि ज्योती
कल किंकिणि कटिसूत्र मनोहर ❋ बाहु विशाल विभूषण सोहर
पीत जनेउ महा छवि देई ❋ कर मुद्रिका चोरि चितलेई
सोहत ब्याह साज सब साजे ❋ उर आँयत उर भूषण राजे
पीत उपरना कांखा सोती ❋ दुहुँ आंचरन लगे मणि मोती
नयन कमल कल कुंडल काना ❋ वदन सकल सौंदर्य्य निधाना
सुन्दर भृकुटि मनोहर नासा ❋ भालतिलक रुचिरता निवासा
सोहत मौर मनोहर माथे ❋ मंगलमय मुकतामणि गाथे
छं॰ गाथे महा मणि मौर मंजुल अंग सब चितचोरहीं।
पुरनारि सुरसुन्दरी वरण विलोकि सब तृण तोरहीं॥

१ आपके २ कन्या ३ दासी ४ देवगण ५ आकाश ६ करधनी ७ चौड़ा ८ नाक॥

मणिवसनभूषण[1] वारि आरति करहिं मंगल गावहीं ।
सुरसुमन[2] वरषहिं सूतमागध वन्दि सुयश[3] सुनावहीं ॥
कुहवरहिं आने कुँवर कुँवरि सुवाँसिनिन[4] सुखपाइकै ।
अति प्रीति लौकिक रीतिलागीं करन मंगल गाइकै ॥
लहकौरि गौरि सिखाव रामहिं सीयसन शारद कहैं ।
रनिवास हासविलास रसवश जन्म को फल सब लहैं ॥
निजपाँणि[5]मणिमहँ देखि प्रतिमूरति[6] स्वरूपनिधानकी ।
चालति न भुजबल्ली विलोकति विरहवशभइँजानकी ॥
कौतुक विनोद प्रमोद प्रेम न जाइकहि जानहिं अलीं[7] ।
वर कुँवरिसुन्दरि सकलसखी लिवाइ जनवासहिं चलीं ॥
तेहिसमयसुनियअशीश जहँतहँनगरनभ आनँदमहा ।
चिरजीव जोरी चारु चारिउ मुदितमन सबही कहा ॥
योगीन्द्र सिद्ध मुनीश देव विलोकि प्रभु दुन्दुभिहनी ।
चलेहरषिवरषि प्रसूननिजनिजलोकजयजयजयभनी ॥
दो०सहित वधूटिन कुँवर सब, तब आये पितु पास ।
शोभा मंगल मोद भरि, जनु उमँगेउ जनवास ॥

पुनि जेवनार भयउ वहु भांती ❀ पठये जनक बुलाइ बराती
परत पाँवड़े वसन अनूपा ❀ सुतन समेत गमन कियभूपा
सादर सब के पांव पखारे ❀ यथा योग्य पीढ़न बैठारे
धोये जनक अवधपति चरणा ❀ शील सनेह जाइ नहिं वरणा
बहुरि राम पद पंकज धोये ❀ जे हरहृदय कमल महँ गोये
तीनों भाइ राम सम जानी ❀ धोये चरण जनक निजपानी
आसन उचित सबहिं नृपदीन्हे ❀ बोलि सूपकारी[8] सब लीन्हे
सादर लगे परन पनवारे ❀ कनक कील मणिपर्ण सँवारे

१ ज़ेवर २ फूल ३ प्रतिष्ठा ४ सुहागिल ५ हाथ ६ परिछाहीं ७ सखियां ८ रसोईदार ॥

दो॰सूँपोदन सुरभी सर्पि, सुन्दर स्वादु पुनीत।
क्षणमहँ सबके परसिगे, चतुर सुआरँ विनीत॥

पञ्चकौर करि जेवन लागे ❀ गारिगान सुनि अतिअनुरागे
भांति अनेक परे पकवाने ❀ सुधासरिस नहिं जाहिंबखाने
परसन लगे सुआर सुजाना ❀ व्यंजन विविध नाम को जाना
चारिभांति भोजन विधि गाई ❀ एक एक विधि वरणि न जाई
छरस रुचिर व्यंजन बहु जाती ❀ एक एक रस अगणित भांती
जेंवत देहिं मधुर ध्वनि गारी ❀ लै लै नाम पुरुष अरु नारी
समय सुहावनि गारि विराजा ❀ हँसत रावसुनि सहित समाजा
यहि विधि सबही भोजन कीन्हा ❀ आदर सहित आचमनलीन्हा

दो॰देइ पान पूजे जनक, दशरथ सहित समाज।
जनवासे गमने मुदित, सकल भूप शिरताज॥

नित नूतन मंगल पुरमाहीं ❀ निमिषसरिसादिनयाँमिनिजाहीं
बड़े भोर भूपतिमणि जागे ❀ याचक गुणगण गावन लागे
देखि कुँवर सब बधुन समेता ❀ किमि कहिजात मोद मन जेता
प्रातक्रिया करि गे गुरु पाहीं ❀ महा प्रमोद प्रेम मन माहीं
करि प्रणाम पूजा कर जोरी ❀ बोले गिराँ अमिय जनु बोरी
तुम्हरी कृपा सुनिय मुनिराजा ❀ भयउ आजु मम पूरण काजा
अब सब विप्र बुलाइ गुसांई ❀ देहु धेनु सब भांति बनाई
सुनि गुरु करि महिपाल बड़ाई ❀ पुनि पठये मुनि वृन्द बुलाई

दो॰वामदेव अरु देवऋषि, बालमीकि जाबालि।
आये मुनिवर निकरँ तब, कौशिकादि तपशालि॥

दण्ड प्रणाम सबहि नृप कीन्हा ❀ पूजि सप्रेम वरासन दीन्हा
चारि लक्ष वर धेनु मँगाई ❀ कामसुरभि सम शील सुहाई
सबविधिसकलअलंकृतकीन्ही ❀ मुदित महीपऋषिनकहँ दीन्ही

१ दालभात २ गौ ३ घी ४ रसोईदार ५ नया ६ रात्रि ७ वाणी ८ नारद ९ समूह॥

करत विनय बहु विधि नरनाहू ❀ लहेउँ आजु जगजीवन लाहू
पाइ अशीश महीश अनन्दा ❀ लिये बोलि पुनि याचक वृन्दा
कनक वसन मणिहयगय स्यंदन ❀ दिये बूझि रुचि रविकुलनंदन
चले पढ़त गावत गुणगाथा ❀ जयजयजय दिनकर कुलनाथा
यहि विधि राम विवाह उछाहू ❀ सकै न वरणि सहसमुख जाहू

दो०बारबार कौशिक चरण, शीश नाइकह राव।
यहसबसुख मुनिराज तव, कृपा कटाक्ष प्रभाव॥

जनक सनेह शील करतूती ❀ नृप सब राति सराह विभूती
दिन उठिविदा अवधपति मांगा ❀ राखहिं जनक सहित अनुरागा
नित नूतन आदर अधिकाई ❀ दिन प्रति सहस भांति पहुनाई
नित नव नगर अनन्द उछाहू ❀ दशरथ गमन सुहाइ न काहू
बहुत दिवस बीते यहि भांती ❀ जनु सनेहरजुँ बँधे बराती
कौशिक शतानन्द तब जाई ❀ कह्यो विदेह नृपहि समुझाई
अब दशरथ कहँ आयसु देहू ❀ यद्यपि छांड़ि न सकहु सनेहू
भलेहि नाथ कहि सचिव बुलाये ❀ कहि जयजीव शीश तिननाये

दो०अवधनाथ चाहत चलन, भीतर करहु जनाव।
भये प्रेमवश सचिव सुनि, विप्र सभासद राव॥

पुरवासी सुनि चली बराता ❀ पूंछत विकल परस्पर बाता
सत्य गमन सुनि सब बिलखाने ❀ मनहुँ सांझ सरसिज सकुचाने
जहँ जहँ आवत बसे बराती ❀ तहँ तहँ सीध चला बहुभांती
विविध भांति मेवा पकवाना ❀ भोजन साज न जाइ बखाना
भरिभरि वसहँ अपार कहारा ❀ पठये जनक अनेक सुआरा
तुरँग लाख रथ सहस पचीसा ❀ सकल सँवारे नख अरु शीसा
मत्त सहस दश सिन्धुर साजे ❀ जिनहिं देखि दिशिकुंजरलाजे
कनकवसनमणिभरिभरियाना ❀ महिषी धेनु वस्तु विधिनाना

१ राजा २ लाभ ३ सोना ४ रथ ५ नवीन ६ हजार ७ प्रेमडोरि ८ कमल ९ बैल १० हाथी॥

दो० दायजअमित न जायकहि, दीन्ह विदेहं बहोरि ।
जो अवलोकत लोकपति, लोक सम्पदा थोरि ॥
सब समाज यहि भांति बनाई ❀ जनक अवधपुर दीन्ह पठाई
चली बरात सुनत सबरानी ❀ विकल मीनगणजिमिलघुपानी
पुनि पुनि सीय गोद करिलेहीं ❀ देइ अशीश सिखावन देहीं
हैहहु सन्तत पियहि पियारी ❀ चिर अहिवांत अशीश हमारी
सासु श्वशुर गुरु सेवा करेहू ❀ पतिरुखलखि आयसु अनुसरेहू
अति सनेह वश सखी सयानी ❀ नारिधर्म सिखवहिं मृदुबानी
सादर सकल कुँवरि समुझाईं ❀ रानिन बारबार उरलाईं
वहुरि वहुरि भेंटहिं महतारी ❀ कहहिं विरंचि रची कतनारी
दो० तेहि अवसर भाइन सहित, राम भानुकुल केतु ।
चले जनकमन्दिर मुदित, बिदा करावन हेतु ॥
चारिउ भाइ सुभाय सुहाये ❀ नगर नारि नर देखन धाये
कोउ कह चलन चहत हैं आजू ❀ कीन्ह विदेह बिदाकर साजू
लेहु नयन भरि रूप निहारी ❀ प्रिय पाहुने भूपसुत चारी
को जाने केहि सुकृत सयानी ❀ नयनअतिथिकीन्हेंविधिआनी
मरणशील जिमि पाव पियूखा ❀ सुरतरु लहै जन्मकर भूखा
पाव नारकी हरिपद जैसे ❀ इनकर दर्शन हम कहँ तैसे
निरखि राम शोभा उरधरहू ❀ निजमन फणिमूरतिमणि करहू
यहि विधिसबहिं नयन फलदेता ❀ गये कुँवर सब राजनिकेता
दो० रूपसिन्धु सब बन्धु लखि, हरषि उठीं रनिवासु ।
करहिं निछावरि आरती, महामुदित मन सासु ॥
देखि रामछवि अति अनुरागीं ❀ प्रेमविवश पुनि पुनि पदलागीं
रही न लाज प्रीति उरछाई ❀ सहज सनेह वरणि नहिंजाई
चारिउ भाइ उबटि नहवाये ❀ छरस अशंन अतिहेतु जिंवाये

१ जनक २ मछली ३ सुहाग ४ आज्ञा ५ पताका ६ पुण्य ७ अमृत ८ राजगृह ९ भोजन ॥

बोले राम सुअवसर जानी ❀ शील सनेह सकुचमय बानी
राउ अवधपुर चहत सिधाये ❀ बिदाहोन हित हमहिं पठाये
मातु मुदित मन आयसु देहू ❀ बालक जानि करब नितनेहू
सुनत वचन बिलखेउ रनिवासू ❀ बोलि न सकहिं प्रेमवश सासू
हृदय लगाइ कुँवरि सब लीन्हीं ❀ पतिनसौंपि विनतीअतिकीन्हीं
छं० करिविनयसियरामहिंसमर्पीजोरिकरपुनिपुनिकहै।
बलिजाउँ तातसुजान तुमकहँ विदितगति सबकीअहै ॥
परिवार पुरजन मोहिं राजहिं प्राणप्रिय सिय जानवी ।
तुलसी सुशील सनेह लखि निज किंकरीकरि मानवी ॥
सो० तुम परिपूरण काम, ज्ञान शिरोमणि भावप्रिय ।
जन गुण ग्राहक राम, दोषदलन करुणायतन ॥
अस कहि रही चरण गहिरानी ❀ प्रेम पङ्क जनु गिरा समानी
सुनि सनेह सानी वर बानी ❀ बहु विधि राम सासु सनमानी
राम बिदा मांगेउ करजोरी ❀ कीन्ह प्रणाम बहोरि बहोरी
पाइ अशीश बहुरि शिरनाई ❀ भाइन सहित चले रघुराई
मंजु मधुर मूरति उरआनी ❀ भई सनेह शिथिल सबरानी
पुनि धीरज धरि कुँवरिहँकारी ❀ बारबार भेंटहिं महतारी
पहुँचावहिं फिरि मिलहिं बहोरी ❀ बढ़ी परस्पर प्रीति न थोरी
पुनिपुनिमिलतिसखिनबिलगाई ❀ बालवत्स जनु धेनु लवाई
दो० प्रेमविवश नर नारिसब, सखिन सहित रनिवास ।
मानहुँ कीन्ह विदेहपुर, करुणा विरह निवास ॥
शुक सारिका जानकी ज्याये ❀ कनक पींजरन राखि पढ़ाये
व्याकुल कहहिं कहां वैदेही ❀ सुनि धीरज परिहरै न केही
भये विकल खगमृग यहि भांती ❀ मनुज दशा कैसे कहि जाती
बन्धु समेत जनक तब आये ❀ प्रेम उमँगि लोचन जल छाये

१ राजा २ आज्ञा ३ सौंपी ४ चतुर ५ दासी ६ नाशक ७ कीच ८ मैना ॥

सीय विलोकि धीरता भागी ❀ रहे कहावत परम विरागी
लीन्ह लाय उर² जनक जानकी ❀ मिटी महा मर्य्याद³ ज्ञानकी
समुझावत सब सँचिव⁴ सयाने ❀ कीन्ह विचार न अवसर जाने
बारहिंबार सुता उरलाई ❀ सजि सुन्दरि पालकी मँगाई

दो० प्रेमविवश परिवार सब, जानि सुलगन नरेश।
कुँवरि चढ़ाईं पालकिन, सुमिरे सिद्ध गणेश⁵॥

बहु विधि भूप सुता समुझाई ❀ नारि धर्म कुलरीति सिखाई
दासी दास दिये बहुतेरे ❀ शुचि सेवक जे प्रिय सियकेरे
सीय चलत व्याकुल पुरवासी ❀ होहिं शकुनशुभ मंगलरासी
भूसुर सचिव समेत समाजा ❀ संग चले पहुँचावन राजा
समय विलोकि बाजने बाजे ❀ रथ गज वाजि बरातिन साजे
दशरथ विप्र बोलि सब लीन्हे ❀ दान मान परिपूरण कीन्हे
चरण सरोज धूरि धरि शीशा ❀ मुदित महीपति पाइ अशीशा
सुमिरि गजानन कीन्ह पयाना⁶ ❀ मंगलमूल शकुन भे नाना

दो० सुर प्रसून वर्षहिं हरषि, करहिं अप्सरा गान।
चले अवधपति अवध कहँ, मुदित बजाय निशाँन⁷॥

नृप करि विनय महाजन फेरे ❀ सादर सकल मांगने टेरे
भूषण वसन वाँजि⁸ गज दीन्हे ❀ प्रेम पोषि ठाढ़े सब कीन्हे
वारवार विरदावलि भाखी ❀ फिरे सकल रामहिं उरराखी
बहुरि बहुरि कोशलपति कहहीं ❀ जनक प्रेमवश फिरा न चहहीं
पुनि कह भूपति वचन सुहाये ❀ फिरिय महीप⁹ दूरिबड़िआये
राव बहोरि उतरि भये ठाढ़े ❀ प्रेम प्रवाह विलोचन बाढ़े
तब विदेह बोले करजोरी ❀ वचन सनेह सुधा¹⁰ जनु बोरी
करौं कवन विधि विनय बनाई ❀ महाराज मोहिं दीन्ह बड़ाई

दो० कोशलपति समधी जनक, सनमाने सब भांति।

१ त्यागी २ हृदय ३ हद ४ मंत्री ५ गणेश ६ कूच ७ नगाड़ा ८ घोड़ा ९ राजा १० अमृत॥

मिलनपरस्परविनय¹अति, प्रीति न हृदयसमाति ॥
मुनिमण्डलिहिजनकशिरनावा ❀ आशिरवाद सबहिंसन पावा
सादर पुनि भेंटेउ जामाता² ❀ रूप शील गुणनिधि सबभ्राता
जोरि पंकरुह³ पाणि सुहाये ❀ बोले वचन प्रेम जनु छाये
राम करौं केहि भांति प्रशंसा ❀ मुनि महेश मन मानस हंसा
करहिं योग योगी जेहि लागी ❀ कोह⁴ मोह ममता मद⁵ त्यागी
व्यापक ब्रह्म अलख अविनाशी ❀ चिदानन्द निर्गुण गुणराशी
मन समेत जेहि जान न बानी⁶ ❀ तरकि न सकहिंसकलअनुमानी
महिमा निगम नेति करि कहहीं ❀ जो तिहुँकाल एकरस रहहीं
दो॰ नयन विषय मोकहँभयउ, सो समस्त⁷ सुखमूल ।
सबहिं लाभ जग जीव कहँ, भये ईश अनुकूल ॥
सबहि भांति मोहिं दीन्ह बड़ाई ❀ निजजन जानि लीन्ह अपनाई
होहिं सहस शत शारद शेखा ❀ करहिं कल्प कोटिक भरिलेखा
मोरि भाग्य राउर गुणगाथा ❀ कहि न सिराहिंसुनिय रघुनाथा
मैं कछु कहौं एक बल मोरे ❀ तुम रीझहु सनेह सुठि थोरे
बारबार मांगौं कर जोरे ❀ मन परिहरै चरण जनि भोरे
सुनि वर वचन प्रेम जनु पोषे ❀ पूरण काम राम परितोषे
करि वर विनय श्वशुर सनमाने ❀ पितु कौशिक वशिष्ठ सम जाने
विनती बहुरि भरतसन कीन्हीं ❀ मिलिसप्रेम पुनि आशिपदीन्हीं
दो॰ मिलेलषणरिपुसूदनहिं, दीन्ह अशीश महीश ।
भये परस्पर प्रेमवश, फिरिफिरिनावहिंशीश ॥
बारबार करि विनय बड़ाई ❀ रघुपति चले संग सब भाई
जनक गहे कौशिक⁸ पदजाई ❀ चरणरेणु शिर नयननलाई
सुनु मुनीश सब दर्शन तोरे ❀ अगम न कछु प्रतीति⁹ मनमोरे
जो सुखसुयश लोकपति चहहीं ❀ करत मनोरथ सकुचत अहहीं

१ नम्रता २ दामाद ३ कमल ४ रिस ५ घमंड ६ गिरा ७ सम्पूर्ण ८ विश्वामित्र ९ निश्चय ॥

सोसुखसुयशसुलभम्वहिंस्वामी ❁ सबविधि तव दर्शन अनुगामी
कीन्ह विनय पुनिपुनि शिरनाई ❁ फिरे महीपति आशिष पाई
चली बरात निशान बजाई ❁ मुदित छोटबड़ सब समुदाई
रामहिं निरखि ग्राम नर नारी ❁ पाइ नयनफल होहिं सुखारी
दो० बीच बीच वर वास करि, मगलोगन सुखदेत।
अवध समीप पुनीत दिन, पहुँची आय जनेत ॥
हने निशान पणव बहु बाजे ❁ भेरि शंखध्वनि हय गय गाजे
झांझ मृदंग दुन्दुभी सुहाई ❁ सरसराग बाजें सहनाई
पुरजन आवत अकनिबराता ❁ मुदितसकल पुलकावलिगाता
निज निज सुन्दरसदनै सँवारे ❁ हाट बाट चौहट पुर द्वारे
गली सकल अरगजा सिंचाई ❁ जहँ तहँ चौकें चारु पुराई
बना बजार न जात बखाना ❁ तोरणे केतु पताक विताना
सफल पुंगफल कदलि रसालौ ❁ रोपे बकुल कदम्ब तमाला
लगे सुभग तरु परसत धरणी ❁ मणिमय आलँबाल कलकरणी
दो० विविधभांति मंगल सकल, गृह गृह रचे सँवारि।
सुर ब्रह्मादि सिहाहिं सब, रघुवरपुरी निहारि ॥
भूप भवन तेहि अवसर सोहा ❁ रचना देखि मर्दन मन मोहा
मङ्गल शकुन मनोहरताई ❁ ऋधि सिधि सुखसम्पदा सुहाई
जनु उछाह सब सहज सुहाये ❁ तनु धरिधरि दशरथगृह आये
देखन हेतु राम वैदेही ❁ कहहु लालसा होइ न केही
यूथयूथ मिलि चलीं सुवासिनि ❁ निजछविनिदरहिंमदनविलासिनि
सकल सुमंगल सजे आरती ❁ गावहिं जनु बहुवेष भारती
भूपति भवन कुलाहल होई ❁ जाइ न वरणि समय सुखसोई
कौशल्यादि राम महतारी ❁ प्रेम विवश तनु दशा बिसारी
दो० दिये दान विप्रन विपुल, पूजि गणेश पुरारि।

१ राजा २ राही ३ बरात ४ घर ५ बंदनवार ६ आम ७ थाल्हा ८ कामदेव ९ सरस्वती ॥

प्रमुदित परम दरिद्र जनु, पाइ पदारथ चारि ॥
प्रेम प्रमोद विवश सब माता ❀ चलहिंनचरणशिथिलसबगाता
राम दरश हित अति अनुरागीं ❀ परिछन साज सजन सबलागीं
विविध विधान बाजने बाजे ❀ मंगल मुदित सुमित्रा साजे
हरद दूब दधि पल्लव फूला ❀ पान पुंगफल मंगल मूला
अक्षत अंकुर रोचन लाजा ❀ मंजुल मंजरितुलसि विराजा
छुहे पुरट घट सहज सुहाये ❀ मदन शकुनि जनु नीडबनाये
शकुन सुगन्ध न जाहिं बखानी ❀ मंगल सकल सजहिं सबरानी
रची आरती विविध विधाना ❀ मुदित करहिं कल मंगलगाना
दो० कनकथारभरि मंगलनि, कमलकरन लियेमात ।
चलींमुदित परिछनकरन, पुलकप्रफुल्लित गात ॥
धूप धूम नभ मेचक भयऊ ❀ सावन घन घमंड जनु छयऊ
सुरतरु सुमनमाल सुर वर्षहिं ❀ मनहुँ बलाँकअवलि मन कर्षहिं
मंजुल मणिमय वन्दनवारा ❀ मनहुँ पाकरिपु चाप सँवारा
प्रकटहिं दुरहिंअटनपरभामिनि ❀ चारुचपल जनु दमकहिंदामिनि
दुन्दुभि ध्वनि घनगरजहिंघोरा ❀ याचक चातक दादुर मोरा
सुर सुगन्धि शुचि वरषहिं वारी ❀ सुखी सकल ससिपुर नरनारी
समय जानि गुरुआयसु दीन्हा ❀ पुर प्रवेश रघुकुलमणि कीन्हा
सुमिरिशम्भुगिरिजागणराजा ❀ मुदित महीपति सहित समाजा
दो० होहिं शकुन वरषहिं सुमन, सुर दुन्दुभी बजाइ ।
विबुधबधू नाचहिं मुदित, मंजुल मंगल गाइ ॥
मागध सूत वन्दि नट नागर ❀ गावहिं यश तिहुँलोकउजागर
जयध्वनि विमल वेद वरबानी ❀ दशदिशिसुनिय सुमंगलखानी
विपुल बाजने बाजन लागे ❀ नभसुर नगर लोग अनुरागे
बने बराती वरणि न जाहीं ❀ महामुदितमन सुख न समाहीं

१ प्रसन्न २ ढीला ३ कामदेव ४ पक्षी ५ घोंसला ६ श्यामता ७ बकपांति ८ इन्द्र ९ पार्वती ॥

पुरवासिन तब राव[1] जुहारे ❋ देखत रामहिं भये सुखारे
करहिं निछावरि मणिगण चीरा ❋ वारि[2] विलोचन पुलक शरीरा
आरति करहिं मुदित पुरनारी ❋ हरषहिं निरखि कुँवर वरचारी
शिबिका[3] सुभग ओहाँर[4]उघारी ❋ देखि दुलहिनिन होहिंसुखारी

दो० यहिविधि सबही देतसुख, आये राजदुवार।
मुदितमातुपरिछनकरहिं, बधुन समेत कुमार॥

करहिं आरती बारहिंबारा ❋ प्रेम प्रमोद कहै को पारा
भूषण मणि पट[5] नाना जाती ❋ करहिं निछावरिअगणितभांती
बधुन समेत देखि सुतचारी ❋ परमानन्द मगन महतारी
पुनि पुनि सीय रामछवि देखी ❋ मुदित सफल जगजीवनलेखी
सखी सीयमुखपुनि पुनि चाही[6] ❋ गान करहिं निजसुकृतसराही
वरषहिं सुमन क्षणहिंक्षण देवा ❋ नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा
देखि मनोहर चारिउ जोरी ❋ शारद उपमा सकल ढँढोरी
देत न बनै निपट लघु लागी ❋ इकटक रही रूप अनुरागी

दो० निगमनीतिकुलरीतिकरि, अर्घ्य पांवड़े देत।
बधुनसहित सुतपरछिसब, चलीं लिवाय निकेत॥

चारि सिंहासन सहज सुहाये ❋ जनु मनोज[7] निज हाथ बनाये
तिनपर कुँवरि कुँवर बैठारे ❋ सादर पायँ पुनीत पखारे
धूप दीप नैवेद्य वेद विधि ❋ पूजे वर दुलहिनि मंगलनिधि
बारहिंबार आरती करहीं ❋ व्यजन[8] चारु चामर शिरढुरहीं
वस्तु अनेक निछावरि होहीं ❋ भरीं प्रमोद मातु सब सोहीं
पावा परमतत्त्व जनु योगी ❋ अमृतलह जनु सन्तत रोगी
जन्म रंक[9] जनु पारस पावा ❋ अन्धहि लोचन लाभ सुहावा
मूक वदन जस शारद छाई ❋ मानहुँ समर शूर जय पाई

दो० यहि सुखते शतकोटि गुण, पावहिं मातु अनन्द।

१ राजा २ जल ३ पालकी ४ पर्दा ५ वस्त्र ६ देखके ७ कामदेव ८ पंखा ९ गरीब॥

भाइनसहित विवाहि घर, आये रघुकुलचंन्द ॥
लोकरीति जननी करहिं, वरदुलहिनि सकुचाहिं ।
मोदविनोद विलोकिबड़, राममनहिं मुसुकाहिं ॥
देव पितर पूजे विधि नीकी ❀ पूजी सकल वासना जीकी
सबहि वन्दि मांगहिं वरदाना ❀ भाइन सहित राम कल्याना
अन्तरहित सुर आशिष देहीं ❀ मुदित मातु अंचल भरिलेहीं
भूपति बोलि बरातिन लीन्हें ❀ यान वसन मणि भूषण दीन्हें
आयसु पाइ राखि उर रामहिं ❀ मुदितगयेसबनिजनिजधामहिं
पुर नर नारि सकल पहिराये ❀ घर घर बाजहिं अनँद बधाये
याचक जन याचहिं जोइजोई ❀ प्रमुदित राव देइँ सोइसोई
सेवक सकल बजनियां नाना ❀ पूरण किये दान सनमाना
दो० देहिं अशीश जुहारि सब, गावहिं गुण गण गाथ ।
तब गुरु भूसुर सहित गृह, गमन कीन्ह नरनाथ ॥
जो वशिष्ठ अनुशासन दीन्हा ❀ लोक वेद विधि सादर कीन्हा
भूसुर भीर देखि सब रानी ❀ सादर उठीं भाग्य बड़ जानी
पायँ पखारि सकल नहवाये ❀ पूजि भलीविधि भूप जेंवाये
आदर दान प्रेम परिपोषे ❀ देत अशीश चले मनतोषे
बहुविधि कीन्ह गाधिसुत पूजा ❀ नाथ मोहिं सम धन्य न दूजा
कीन्ह प्रशंसा भूपति भूरी ❀ रानिन सहित लीन्ह पगधूरी
भीतर भवन दीन्ह वर वासू ❀ मनजुगवत सब नृप रनिवासू
पूजे गुरुपद कमल बहोरी ❀ कीन्ह विनय उरप्रीति न थोरी
दो० बधुन समेत कुमार सब, रानिन सहित महीश ।
पुनि पुनि वन्दत गुरुचरण, देत अशीश मुनीश ॥
विनय कीन्ह उर अति अनुरागे ❀ सुत सम्पदा राखि सब आगे
नेग मांगि मुनिनायक लीन्हा ❀ आशिरवाद बहुतविधि दीन्हा

१ रामचन्द्र २ माता ३ खुशी ४ इच्छा ५ सवारी ६ प्रसन्न ७ विश्वामित्र ॥

उर धरि रामहिं सीय समेता ❀ हरषि कीन्ह गुरुगमन निकेता[1]
विप्र बधू कुल वृद्ध बुलाई ❀ चीर[2] चारु भूषण[3] पहिराई
बहुरिबुलाइ सुवासिनि लीन्हीं ❀ रुचिविचारि पहिरावनि दीन्हीं
नेगी नेग योग सब लेहीं ❀ रुचि अनुरूप भूपमणि देहीं
प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने ❀ भूपति भलीभांति सनमाने
देव देखि रघुवीर विवाहू ❀ वरषि प्रसून[9] प्रशंसि उछाहू

दो० चले निशान बजाइ सुर, निज निज पुर सुखपाइ ।
कहत परस्पर रामयश, हर्ष न हृदय समाइ ॥

सबविधि सबहिं समदि नरनाहू ❀ रहा हृदय भरिपूरि उछाहू[4]
ज़हँ रनिवास तहां पगुधारे ❀ सहित बधूटिन कुँवर निहारे
लिये गोद करि मोद समेता ❀ को कहिसकै भयउ सुख जेता
बधू सप्रेम गोद बैठारी ❀ बारबार हिय[5] हरषि दुलारी
देखि समाज मुदित रनिवासू ❀ सब के उर आनँद कियवासू
कह्यो भूप जिमि भयउ विवाहू ❀ सुनिसुनि हर्ष[6] होत सब काहू
जनकराज गुण शील बड़ाई ❀ प्रीतिरीति सम्पदा सुहाई
बहुविधि भूप भाट जिमि वरणी ❀ रानी सब प्रमुदित सुनि करणी

दो० सुतन समेत नहाइ नृप, बोलि विप्र गुरु ज्ञाति ।
भोजनकिये अनेक विधि, घरी पांच गइ राति ॥

मंगल गान करहिं वर भामिनि ❀ भइ सुखमूल मनोहर यामिनि[8]
अँचै पान सब काहू पाये ❀ स्रग[9] सुगन्ध भूषित छवि छाये
रामहिं देखि रजायसु पाई ❀ निजनिजभवन चले शिर नाई
प्रेम प्रमोद विनोद बड़ाई ❀ समय समाज मनोहरताई
कहि न सकहिं शत शारदशेशू ❀ वेद विरंचि महेश गणेशू
सो मैं कहौं कवन विधि वरणी ❀ भूमिनाग शिर धरै कि धरणी
नृप सब भांति सबहि सनमानी ❀ कहि मृदुवचन बुलाई रानी

१ घर २ वस्त्र ३ जेवर ४ पुष्प ५ उमंग ६ हृदय ७ खुशी ८ रात्रि ९ फूलों की माला ॥

बधू लरिकिनी पर घर आईं ❁ राखेहु नयन पलक की नाईं
दो० लरिका श्रमित उनींदवश, शयन करावहु जाइ ।
असकहि गे विश्रामगृह, रामचरण चितलाइ ॥
भूप वचन सुनि सहज सुहाये ❁ जड़ित कनकमणि पलँगडसाये
सुभग सुरभि[1] पयफेनु[2][3] समाना ❁ कोमल कलित सफेदी नाना
उपबर्हण[4] वर वरणि न जाहीं ❁ स्रग सुगन्ध मणिमन्दिर माहीं
रत्न दीप सुठि चारु चँदोवा ❁ कहत न बनै जानु जेहिं जोवा
सेज रुचिर रचि राम उठाये ❁ प्रेम समेत पलँग पौढ़ाये
आज्ञा पुनि पुनि भाइन दीन्हीं ❁ निजनिजसेजशयनतिनकीन्हीं
देखि श्याम मृदु मंजुल गाता ❁ कहहिं सप्रेम वचन सब माता
मारग जात भयानक भारी ❁ केहि विधि तात ताड़का मारी
दो० घोर निशाचर विकट भट, समर गनै नहिं काहु ।
मारे सहित सहाय किमि, खल मारीच सुबाहु ॥
मुनि प्रसाद बलि तात तुम्हारी ❁ ईश अनेक करिवैं टारी
मख रखवारी करि दुहुँ भाई ❁ गुरु प्रसाद सब विद्या पाई
मुनितिय[5] तरी लगत पग धूरी ❁ कीरति रही भुवन भरिपूरी
कमठ[6] पीठि पँवि[7] कूट कठोरा ❁ नृपसमाज महँ शिवधनु तोरा
विश्व विजय यश जानकि पाई ❁ आये भवन ब्याहि सब भाई
सकल अमानुष कर्म तुम्हारे ❁ केवल कौशिक कृपा सुधारे
आजु सफल जग जन्म हमारा ❁ देखि तात विधुवदन तुम्हारा
जे दिन गये तुमहिं बिनु देखे ❁ ते विरंचि जनि पारहिं लेखे
दो० राम प्रतोषी मातु सब, कहि विनीत वर बयन ।
सुमिरि शम्भुगुरु विप्रपद, किये नींद वश नयन ॥
उनिदहु वदन सोह सुठिलोना ❁ मनहुँ सांझ सरसीरुह[8] सोना
घर घर करहिं जागरण नारी ❁ देहिं परस्पर मंगल गारी

१ थके २ गौ ३ दूधका फेना ४ तकिया ५ अहल्या ६ कच्छप ७ वज्र ८ कमल ॥

पुरी बिराजति राजँति रजँनी ❀ रानी कहहिं बिलोकहु सजनी
सुन्दरि बधुन सासु लै सोईं ❀ फणिपति जनुशिरमणिउरगोईं
प्रात पुनीत काल प्रभु जागे ❀ अरुणचूड़ वर बोलन लागे
वन्दी मागध गुण गण गाये ❀ पुरजन द्वार जुहारन आये
वन्दि विप्र सुर गुरु पितु माता ❀ पाइ अशीश मुदित सब भ्राता
जननिन सादर वदन निहारे ❀ भूपति संग द्वार पगुधारे

दो० कीन्हशौच सबसहजशुचि, सरितँ पुनीत नहाइ ।
प्रातक्रिया करि तात पहँ, आये चारिउ भाइ ॥

भूप विलोकि लिये उरलाई ❀ बैठे हरषि रजायँसु पाई
देखि राम सब सभा जुड़ानी ❀ लोचनलाभअँवधि अनुमानी
पुनि वशिष्ठ मुनि कौशिक आये ❀ आसन सुभग मुनिन बैठाये
सुतन समेत पूजि पद लागे ❀ निरखि राम दोउ गुरु अनुरागे
कहहिं वशिष्ठ धर्म इतिहासा ❀ सुनहिंमहीप सहित रनिवासा
मुनिमन अगम गाधिसुतकरणी ❀ मुदितवशिष्ठविपुँलविधिवरणी
बोले वामदेव सब सांची ❀ कीरतिकलितलोकतिहुँ माची
सुनि आनन्द भयउ सबकाहू ❀ रामलषण उर अधिक उछाहू

दो० मंगल मोद उछाह नित, जाहिं दिवस यहिभांति ।
उमँगिअवधआनंदभरि, अधिकअधिकअधिकाति ॥

सुदिन शोधि कर कंकण छोरे ❀ मंगल मोदँ विनोद न थोरे
नितनवसुख सुरँ देखि सिहाहीं ❀ अवध जन्म याचहिं विधिपाहीं
विश्वामित्र चलन नित चहहीं ❀ राम सप्रेम विनय वश रहहीं
दिन दिन सौगुण भूपति भाऊ ❀ देखि सराह महामुनिराऊ
मांगत बिदा राव अनुरागे ❀ सुतन समेत ठाढ़ भे आगे
नाथ सकल सम्पदा तुम्हारी ❀ मैं सेवक समेत सुतनारी
करब सदा लरिकन पर छोहू ❀ दर्शन देत रहब मुनिमोहू

१ शोभित २ रात्रि ३ मुर्गा ४ नदी ५ आज्ञा ६ हद्द ७ बहुत ८ आनंद ९ देवता ॥

अस कहि राव सहित सुतरानी ❀ परेउ चरण मुख आव न बानी
दीन्ह अशीश अषय बहुभांती ❀ चले न प्रीति रीति कहिजाती
राम सप्रेम संग सब भाई ❀ आयसु पाइ फिरे पहुँचाई

दो० रामरूप भूपति भगति, ब्याह उछाह अनन्द।
जातसराहत मनहिंमन, मुदित गाधिकुलचन्द॥

वामदेव अरु कुलगुरु ज्ञानी ❀ बहुरि गाधिसुत कथा बखानी
सुनि मुनि सुयश मनहिं मनराऊ ❀ वरणत आपन पुण्य प्रभाऊ
बहुरे लोग रजायसु भयऊ ❀ सुतन समेत नृपति गृह गयऊ
जहँ तहँ राम ब्याह सब गावा ❀ सुयश पुनीत लोकतिहुँ छावा
आये ब्याहि राम घर जबते ❀ बसे अनन्द अवध सब तबते
प्रभु विवाह जस भयउ उछाहा ❀ सकहिं न वरणि गिराअहिनाहा
कविकुल जीवन पावन जानी ❀ राम सीय यश मंगल खानी
तेहिते मैं कछु कहा बखानी ❀ करन पुनीत हेतु निज वानी

छं० निज गिरा पावन करन कारन रामयश तुलसीकह्यो।
रघुवीर चरित अपार वारिधि पार कवि कवने लह्यो॥
उपवीत ब्याह उछाह मंगल सुनहिं सादर गावहीं।
वैदेहि रामप्रसाद ते जन सर्वदा सुख पावहीं॥
मुनि गाय कहौं गिरीशकन्या धन्य अधिकारी सही।
नित प्रीति अनुपम सुनत हरिगुण भक्ति अनुपम ते लही॥
रघुवीर पद अनुराग जल लोभाग्नि वेगि बुझावई।
यह जानि तुलसीदास मन क्रम वचन हरिगुण गावई॥

दो० कठिन काल मल ग्रसित तनु, साधन कछुक न होइ।
यह विचारि विश्वास करि, हरि सुमिरै बुध सोइ॥

१ आज्ञा २ विश्वामित्र ३ घर ४ पवित्र ५ शेष ६ पवित्र ७ समुद्र॥

सो० मन हरिपद अनुराग, करहु त्यागि नाना कपट।
महामोह निशिजाग, सोवत बीते काल बहु॥
सिय रघुबीर बिवाह, जे सप्रेम गावहिं सुनहिं।
तिन कहँ सदा उछाह, मंगलायतन रामयश॥

इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेबालकाण्डेविमल वैराग्यसंपादनोनामप्रथमस्सोपानः॥ १॥



গা০ স্ব০ চি০ নং ৬





श्रीगोस्वामि

तुलसीदासकृत रामायण

अयोध्याकाण्ड

मङ्गलाचरणम् ॥

श्लोक ॥ वामाङ्के च विभाति भूधरसुता देवापगा
मस्तके भालेबालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्याल
राट्। सोयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्व्वदा शर्वः
सर्वगतः शिवःशशिनिभः श्रीशंकरःपातुमाम् ॥ १ ॥
प्रसन्नतां या न गताभिषेकतस्तथा न मम्लौ वनवास
दुःखतः। मुखाम्बुजश्रीरघुनन्दनस्यसा सदास्तुतन्मञ्जु
लमङ्गलप्रदा ॥ २ ॥ नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं सी
तासमारोपितवामभागम्। पाणौ महाशायकचारुचापं
नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥ ३ ॥

दो० श्रीगुरुचरण सरोजरज, निजमन मुकुर[१]सुधारि ।
वरणौं रघुवर विमलयश, जो दायक फलचारि ॥

जबते राम ब्याहि घर आये ❀ नितनव मंगल मोद बधाये
भुवन चारिदश भूधर[२] भारी ❀ सुकृत मेघ वर्षहिं सुखवारी
ऋधि सिधि सम्पति नदी सुहाई ❀ उमँगि अवध अम्बुधि[३] कहँआई
मणिगण पुरनरनारि सुजाती ❀ शुचि अमोल सुन्दर सबभांती
कहि न जाइ कछु नगर विभूती ❀ जनु इतनी विरंचि करतूती
सब विधि सब पुरलोग सुखारी ❀ रामचन्द्र मुखचन्द्र निहारी
मुदित मातु सब सखी सहेली ❀ फलित विलोकि मनोरथ बेली
रामरूप गुण शील स्वभाऊ ❀ प्रमुदित होहिं देखि मुनिराऊ

दो० सबके उर अभिलाष अस, कहहिं मनाइ महेश[४] ।
आपु अछत युवराजपद, रामहिं देहिं नरेश ॥

एक समय सब सहित समाजा ❀ राजसभा रघुराज विराजा
सकल सुकृत[५] मूरति नरनाहू ❀ राम सुयश सुनि अतिहिउछाहू
नृप सब रहहिं कृपा अभिलाखे ❀ लोकप रहहिं प्रीति रुखराखे
त्रिभुवन तीनि काल जगमाहीं ❀ भूरिभाग्य दशरथ सम नाहीं
मंगलमूल रामसुत जासू ❀ जो कछु कहिय थोर सब तासू
राव स्वभाव मुकुर कर लीन्हा ❀ वदनविलोकि मुकुट समकीन्हा
श्रवण समीप भये सित[६] केशा ❀ मनहुँ जरठपन अस उपदेशा
नृप युवराज राम कहँ देहू ❀ जीवन जन्म लाभ किन लेहू

दो० असविचारि उर आनिनृप, सुदिनसुअवसर पाइ ।
प्रेमपुलकितनु मुदित मन, गुरुहिं सुनायउ जाइ ॥

कह्यो भुवाल सुनिय मुनिनायक ❀ भये राम सब विधि सबलायक
सेवक सचिव[७] सकल पुरवासी ❀ जे हमार अरि[८] मित्र उदासी
सबहिं रामप्रिय जेहिविधि मोहीं ❀ प्रभु अशीश जनु तनुधरिसोहीं

१ शीशा २ पर्वत ३ समुद्र ४ महादेव ५ धर्म ६ सफ़ेद ७ मंत्री ८ बैरी ॥

विप्र सहित परिवार गुसाईं ❋ करहिं छोह सब रौरेहि नाईं
जे गुरुचरण रेणु शिर धरहीं ❋ ते जनु सकल विभव वशकरहीं
मोहिंसम यहि जग भयउ न दूजा ❋ सब पायउँ प्रभुपद रज पूजा
अब अभिलाष एक मन मोरे ❋ पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरे
मुनि प्रसन्न लखि सहज सनेहू ❋ कह्यो नरेश रजायँसु देहू
५ दो० राजन राउर नामयश, सब अभिमतदातार।
फलअनुगामीमहिपमणि, मनअभिलाषतुम्हार॥
सब विधि गुरु प्रसन्न जियजानी ❋ बोल्यो राव हरषि मृदुबानी
नाथ राम करिये युवराजू ❋ कहिय कृपा करि करियसमाजू
मोहिं अछत यह होइ उछाहू ❋ लहहिं लोग सब लोचनलाहू
प्रभु प्रसाद शिव सबै निबाहीं ❋ यह लालसा एक मनमाहीं
पुनि न शोच तनु रहै कि जाऊ ❋ जेहि न होइ पाछे पछिताऊ
सुनि मुनि दशरथ वचन सुहाये ❋ मंगलमूल मोद मन भाये
सुनु नृप जासु विमुख पछिताहीं ❋ जासु भजनबिनुजरनि न जाहीं
भयउ तुम्हार तनय सोइ स्वामी ❋ राम पुनीत प्रेम अनुगामी
५ दो० वेगि विलम्ब न करिय नृप, साजियसकलसमाज।
सुदिन सुमंगल तबहिं जब, राम होहिं युवराज॥
मुदित महीपति मन्दिर आये ❋ सेवक सचिव सुमन्त बुलाये
कहि जय जीव शीश तिन नाये ❋ भूप सुमंगल वचन सुनाये
प्रमुदित मोहिं कह्यो गुरु आजू ❋ रामहिं राव देहु युवराजू
जो पांचहि मत लागै नीका ❋ करहु हरषि हिय रामहिं टीका
मन्त्री मुदित सुनत प्रियबानी ❋ अभिमत बिरव परेउ जनुपानी
विनती सचिव करहिं करजोरी ❋ जियहु जगतपति वर्ष करोरी
जग मंगल भलकाज विचारा ❋ वेगि नाथ नहिं लाइय बारा
नृपहिं मोद मन सचिव सुभाखा ❋ बढ़त बौंड़ि जनु लही सुशाखा

१ स्नेह २ धूलि ३ आज्ञा ४ मनमाना ५ सन्मुख ६ लाभ ७ आनन्द ८ मन्त्री ९ बलि॥

6 दो० कहेउ भूप मुनिराजकर, जोइ जोइ आयसु होइ ।
रामराज्य अभिषेकहित, वेगि करिय सोइ सोइ ॥
हरषि मुनीश कह्यो मृदुबानी ❀ आनहु सकल सुतीरथ पानी
औषध मूल फूल फल पाना ❀ कहे नाम गनि मंगल नाना
चामर चर्म वसन बहुभांती ❀ रोमपाट पट अगणित जाती
मणिगण मंगल वस्तु अनेका ❀ जो जग योग्य भूप अभिषेका
वेदविहित कहि सकल विधाना ❀ कह्यो रचहु पुर विविध विताना
सफल रसाल पुंगफल केरा ❀ रोपहु वीथिन पुर चहुँ फेरा
रचहु मंजुमणि चौकैं चारू ❀ कहेउ बनावन वेगि बजारू
पूजहु गणपति कुलगुरु देवा ❀ सब विधि करहु भूमिसुर सेवा
7 दो० ध्वजपताक तोरण कलश, सजहु तुरँग रथ नाग ।
शिरधरिमुनिवरवचनसब, निजनिजकाजहिंलाग॥
जेहि मुनीश जो आयसु दीन्हा ❀ सो जनु काज प्रथम तेइँ कीन्हा
विप्र साधु सुर पूजत राजा ❀ करत राम हित मङ्गल साजा
सुनत राम अभिषेक सुहावा ❀ बाजु गहगहे अवध बधावा
रामसीय तनु शकुन जनाये ❀ फरकहिं मंगल अंग सुहाये
पुलकि सप्रेम परस्पर कहहीं ❀ भरत आगमन सूचक अहहीं
भये बहुत दिन अति अवँसेरी ❀ शकुन प्रतीति भेंट प्रियकेरी
भरत सरिस प्रिय को जगमाहीं ❀ यहै शकुन फल दूसर नाहीं
रामहिं बन्धु शोच दिनराती ❀ अण्डन कमठ हृदय जेहिभांती
8 दो० तेहि अवसर मंगल परम, सुनि हरषीं रनिवास ।
शोभितलखिविधुबढ़तजनु, वारिधिवीचिविलास॥
प्रथम जाइ जिन वचन सुनावा ❀ भूषण वसन भूरि तिन पावा
प्रेम पुलकि तन मन अनुरागीं ❀ मंगल कलश सजन सब लागीं
चौकैं चारु सुमित्रा पूरी ❀ मणिमयविविध भांति अतिरूरी

१ पश्मीना २ चँदोवा ३ आम ४ सुपारी ५ हाथी ६ तिलक ७ अंदेशा ८ कछुआ ॥

आनँद मगन राम महतारी ❀ दिये दान बहुविप्र हँकारी
पूजेउ ग्रामदेव सुर नागा ❀ कहेउ बहोरि देन बलिभागा
जेहिविधि होइ राम कल्याना ❀ देहु दयाकरि सो वरदाना
गावहिं मंगल कोकिल बयनी ❀ विधुवदनी मृगशावकनयनी

9 दो० रामराज्य अभिषेकसुनि, हिय हर्षे नरनारि।
लगे सुमंगल सजन सब, विधि अनुकूल विचारि॥

तब नरनाह वशिष्ठ बुलाये ❀ रामधाम शिष देन पठाये
गुरु आगमन सुनत रघुनाथा ❀ द्वार आइ नायउ पद माथा
सादर अर्घ्य देइ घर आने ❀ षोड़श भांति पूजि सनमाने
गहे चरण सियसहित बहोरी ❀ बोले राम कमल करजोरी
सेवक सदनं स्वामि आगमनू ❀ मंगलमूल अमंगल दमनू
यदपि उचित असबोलि सप्रीती ❀ पठइय काज नाथ अस नीती
प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू ❀ भयउ पुनीत आजु मम गेहू
आयसु होय सो करिय गुसाँई ❀ सेवक लहै स्वामि सेवकाई

10 दो० सुनि सनेह साने वचन, मुनि रघुवरहिं प्रशंस।
राम कस न तुम कहहु अस, हंसवंस अवतंस॥

वरणि राम गुण शील स्वभाऊ ❀ बोले प्रेम पुलकि मुनिराऊ
भूप सजेउ अभिषेक समाजू ❀ चाहत देन तुमहिं युवराजू
राम करहु सब संयम आजू ❀ जो विधि कुशल निबाहै काजू
गुरु शिषदेइ राव पहँ गयऊ ❀ रामहृदय अस विस्मय भयऊ
जनमे एक संग सब भाई ❀ भोजन शयन केलि लरिकाई
कर्णवेध उपवीत विवाहा ❀ संग संग सब भयउ उछाहा
विमलवंश यह अनुचित एका ❀ अनुज विहाय बड़े अभिषेका
प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई ❀ हरत भक्त मनकी कुटिलाई

11 दो० तेहि अवसर आये लषण, मगन प्रेम आनन्द।

१ हिरण का बच्चा २ घर ३ सूर्यवंश ४ उत्पत्ति ५ जनेऊ ६ छोड़ ७ राजतिलक ८ समय॥

सनमाने प्रिय वचनकहि, रघुकुल कैरवचन्द ॥

बाजहिंबाजन विविध विधाना ❀ पुर प्रमोद नहिं जाइ बखाना
भरत आगमन सकल मनावहिं ❀ आवहिं वेगि नयनफल पावहिं
हाट बाट घर गली अथाई ❀ कहहिं परस्पर लोग लुगाई
कालिह लगन भलकेतिक बारा ❀ पूजिहि विधि अभिलाषहमारा
कनक सिंहासन सीय समेता ❀ बैठहिं राम होइ चित चेता
सकल कहहिं कबहोइहि काली ❀ विघ्न मनावहिं देव कुचाली
तिनहिं सुहाय न अवधबधावा ❀ चोरहि चांदनि राति न भावा
शारद बोलि विनय सुरकरहीं ❀ बारहिंबार पायँ लै परहीं

दो० विपतिहमारिविलोकिबड़ि, मातुकरियसोइकाज।
राम जाहिं वन राज्यतजि, होइ सकल सुरकाज ॥

सुनि सुरविनय ठाढ़ि पछिताती ❀ भइउँ सरोज विपिन हिमराती
देखि देव पुनि कहहिं बहोरी ❀ मातु तोहिं नहिं थोरिउ खोरी
विस्मय हर्ष रहित रघुराऊ ❀ तुम जानहु रघुवीर स्वभाऊ
जीवकर्म्मवश दुख सुखभागी ❀ जाइय अवध देवहित लागी
बारबार गहिचरण सकोची ❀ चली विचारि विबुध मतिपोची
ऊंच निवास नीच करतूती ❀ देखि न सकहिं पराइ विभूती
आगिल काज विचारि बहोरी ❀ करिहैं चाह कुशल कवि मोरी
हरषि हृदय दशरथपुर आई ❀ जनु ग्रहदशा दुसह दुखदाई

दो० नाम मन्थरा मन्दमति, चेरि केकयी केरि।
अयश पिटारी ताहि करि, गई गिरा मति फेरि ॥

दीख मन्थरा नगर बनावा ❀ मंगल मंजुल बाजु बधावा
पूंछिसि लोगन काह उछाहू ❀ राम तिलक सुनिभा उरदाहू
करै विचार कुबुद्धि कुजाती ❀ होइ अकाज कवन विधिराती
देखिलाग मधु कुटिल किराती ❀ जिमि गवँ तकै लेउँ केहिभांती

१ कुमोदिनी २ वन ३ दोष ४ खुशी ५ देवता ६ ऐश्वर्य ७ सरस्वती ८ बहेलिया ॥

भरत मातु पहँ गइ बिलखानी ❀ काअ्रनमनिहसि हँसिकहरानी
उतर न देइ सो लेइ उसांसू ❀ नारिचरित करि ढारति आंसू
हँसि कह रानि गाल बड़ तोरे ❀ दीन्ह लषण शिष असमनमोरे
तबहुँ न बोलि चेरि बड़िपापिनि ❀ छांड़ै श्वास कारि जनु सांपिनि

14 दो० सभय[1]रानिकहकहसिकिन, कुशल राममहिपाल।
भरत लषणरिपुदमन[2]सुनि, भा कुबरी उर शाल[3]॥

कत शिष देहि हमहिं कोउ माई ❀ गाल[4] करब केहि कर बलपाई
रामहिं छांड़ि कुशल केहि आजू ❀ जिनहिं नरेश देत युवराजू
भाकौशल्यहिविधिअतिदाहिन ❀ देखत गर्व रहत उर नाहिन
देखहु कस न जाइ पुर शोभा ❀ जो अवलोकि मोरमन क्षोभा
पूत विदेश न शोच तुम्हारे ❀ जानतिहौ वश नाह हमारे
नींद बहुत प्रिय सेज तुराई[5] ❀ लखहु न भूप कपट चतुराई
सुनिप्रियवचन मलिनमनजानी ❀ झखी रानि अब रहु अरगानी[6]
पुनि अस कबहु कहसि घरफोरी ❀ तौ धरि जीभ कढ़ावों तोरी

15 दो० काने खोरे कूबरे, कुटिल कुचाली जानि।
तियविशेषपुनिचेरिकहि, भरतमातु मुसुकानि॥

प्रियवादिनि शिष दीन्हेउँ तोहीं ❀ सपनेहु तोपर कोप न मोहीं
सुदिन सुमङ्गलदायक सोई ❀ तोर कहा फुर जादिन होई
जेठ स्वामि सेवक लघु भाई ❀ यह दिनकर कुल रीति सदाई
रामतिलक जो सांचहु काली ❀ मांगु देउँ मनभावत आली
कौशल्या सम सब महतारी ❀ रामहिं सहज स्वभाव पियारी
मोपर करहिं सनेह विशेखी ❀ मैं करि प्रीति परीक्षा देखी
जो विधि जन्म देइ करि छोहू[7] ❀ होहिं राम सिय पूत पतोहू
प्राणते अधिक राम प्रिय मोरे ❀ तिनके तिलक क्षोभ[8] कस तोरे

दो० भरतशपथ[9] तोहिंसत्यकहु, परिहरि कपट दुराव।

१ डरसे २ शत्रुघ्न ३ दुःख ४ बड़ीबात ५ तोशक ६ क्रोधित ७ कृपा ८ दुःख ९ क़सम॥

16 हर्ष समय विस्मय करसि, कारण मोहिं सुनाव ॥

एकहि वार आश सब पूजी ❀ अब कछु कहब जीभ करिदूजी
फोरै योग्य कपार अभागा ❀ भलो कहत दुख रौरेहु लागा
कहैं झूठ फुर बात बनाई ❀ सो प्रिय तुमहिं करू मैं माई
हमहुँ कहब अब ठकुरसुहाती ❀ नाहिं तौ मौनै रहब दिनराती
करि कुरूप विधि परवश कीन्हा ❀ वाचा शाल हमहिं तिन दीन्हा
कोउ नृप होइ हमैं का हानी ❀ चेरि छांड़ि न कहाउब रानी
जारै योग्य स्वभाव हमारा ❀ अनभल देखि न जाइ तुम्हारा
ताते कछुक बात अनुसारी ❀ क्षमब देवि बड़ि चूक हमारी

17 दो॰ गूढ़कपट प्रियवचन सुनि, तीय अधरबुधिरानि ।
सुरमाया वश वैरिणिहि, सुहृदजानि पतियानि ॥

सादर पुनि पुनि पूंछति वोही ❀ शबरी नाद मृगी जनु मोही
तसिमति फिरी रही जसि भावी ❀ रहँसी चेरि घात बड़ि फावी
तुम पूंछहु मैं कहत डराऊं ❀ धरेउ मोर घरफोरी नाऊं
सजिप्रतीतिगढ़िबहुविधिछोली ❀ अवध साढ़साती जनु बोली
प्रिय सियराम कहा तुम रानी ❀ रामहिं तुम प्रिय सो फुर बानी
रहे प्रथम दिन अब सो बीते ❀ समय फिरे रिपु होहिं पिरीते
भानु कमलकुल पोषणहारा ❀ बिनु जल जारि करै तेहि क्षारा
जर तुम्हारि चह सवति उखारी ❀ रूंधहु करि उपाय बरवारी

18 दो॰ तुमहिं न शोच सुहागबल, निजवश जानहुराव ।
मनमलीन मुहँ मीठ नृप, राउर सरलस्वभाव ॥

चतुर गँभीर राम महतारी ❀ बीच पाइ निज काज सँवारी
पठये भरत भूप ननिऔरे ❀ राम मातु मत जानब रौरे
राजहिं तुमपर प्रीति विशेखी ❀ सवति स्वभाव सकै नहिंदेखी
रचि प्रपंच भूपहि अपनाई ❀ रामतिलकहित लगन धराई

१ आपको २ चुप ३ भिलिनि ४ प्रसन्न ५ सत्य ६ वेनई ७ तुम्हारा ॥

सेवहिं सकल सवति मोहिं नीके ❀ गर्वित भरत मातु बल पीके
शाल तुम्हार कौशलहि माई ❀ चतुर कपट नहिं परत लखाई
यहिकुल उचित राम कहँ टीका ❀ सबहि सुहाइ मोहिं सुठि नीका
आगिलि बात समुझि डरमोहीं ❀ दैव देवफल सो फिरि वोहीं
19 दो० रचिपचिकोटिककुटिलपन, कीन्हेसिकपटप्रबोध।
कहेसि कथा शत सवतिकर, जाते बढ़ै विरोध॥
भावी वश प्रतीति उर आई ❀ पूंछि रानि निज शपथ दिवाई
का पूंछहु तुम अजहुँ न जाना ❀ निजहितअनहितपशुपहिंचाना
भयो पाख दिन सजत समाजू ❀ तुम सुधि पाई मोसन आजू
खाइय पहिरिय राज तुम्हारे ❀ सत्य कहे नहिं दोष हमारे
जो असत्य कछु कहब बनाई ❀ तौ विधि देइहि मोहिं सजाई
रामहिंतिलक काल्हि जो भयऊ ❀ तुमकहँ विपतिबीज विधि बयऊ
रेखा खैंचि कहौं बल भाखी ❀ भामिनि भइउ दूधकी माखी
जो सुत सहित करहु सेवकाई ❀ तौ घर रहहु न आन उपाई
२० दो० कद्रू विनतहिं दीन्ह दुख, तुमहिं कौशला देव।
भरत बँन्दिगृह सेइहैं, राम लषण कर नेव॥
केकयसुता सुनत कटुबानी ❀ कहि न सकै कछुसहमि सुखानी
तनु पसेव कदलि जनु कांपी ❀ कुबरी दशन जीभ तब चापी
कहिकहि कोटिन कपटकहानी ❀ धीरज धरहु प्रबोधिसि रानी
कीन्हेसि कठिन पढ़ाय कुपाठू ❀ जिमि न नवै फिरि उकठाकाठू
फिराकर्म्म प्रियलागि कुचाली ❀ बकिहि सराहत मनहुँ मराली
सुनु मंथरा बात फुर तोरी ❀ दहिनिआंखि नितफरकतमोरी
दिनप्रति देखौं राति कुसपने ❀ कहौं न तोहिं मोहवश अपने
काह कहौं सखि सूध स्वभाऊ ❀ दाहिन वाम न जानौं काऊ
दो० अपनेचलत न आजुलगि, अनभल काहुक कीन्ह।

१ छल २ विश्वास ३ झूंठ ४ जेलखाना ५ केला ६ दांत ७ हंसिनी ८ फुरा॥

केहिअघ एकहिबार मोहिं, दैव दुसह दुखदीन्ह ॥
नैहर जन्म भरब बरु जाई ❀ जियत न करब सवति सेवकाई
अरिवश दैव जिआवै जाही ❀ मरणनीक तेहि जियब न चाही
दीनवचन कह बहुविधि रानी ❀ सुनि कुबरी तियमाया ठानी
अस कस कहहु मानि मनऊना ❀ सुखसुहाग तुम कहँ दिनदूना
ज्यहिंराउर अस अनभलताका ❀ सोइपाइहि यह फल परिपाका
जबते कुमति सुना मैं स्वामिनि ❀ भूख न वासेर नींद न यांमिनि
पूंछेउँ गुणिन रेख तिन खांची ❀ भरत भुवाल होहिं यह सांची
भामिनि करहु तो कहौं उपाऊ ❀ हैं तुम्हरे सेवावश राऊ
दो० परौं कूप तव वचन लगि, सकौं पूत पति त्यागि ।
कहसि मोर दुख देखि बड़, कस न करब हितलागि॥
कुबरी करि करबलि कैकेई ❀ कपट छुरी उर पाहन टेई
लखै न रानि निकट दुख कैसे ❀ चरै हरिततृण बलि पशु जैसे
सुनत वचन मृदु अन्त कठोरी ❀ देति मनहुँ मधु माखन घोरी
कहै चेरि सुधि अहै कि नाहीं ❀ स्वामिनि कहेहु कथामोहिंपाहीं
दुइ वरदान भूप सन थाती ❀ मांगहु आजु जुड़ावहु छाती
सुतहि राज रामहिं वनवासू ❀ देहु लेहु सब सवति हुलासू
भूपति राम शपथ जब करहीं ❀ तब मांगेउ जेहि वचन न टरहीं
होइ अकाजु आजु निशि बीते ❀ वचन मोर प्रिय मान्यहु जीते
दो० बड़ कुघातकरि पातकिनि, कहेसि कोपगृह जाहु ।
काज सँवारेहु सजग सब, सहसा जनि पतियाहु ॥
कुबरिहि रानि प्राणप्रिय जानी ❀ वारबार बड़ि बुद्धि बखानी
तोहि सम हित न मोर संसारा ❀ बहेजात कहँ भइसि अधारा
जो विधिपुरव मनोरथ काली ❀ करों तोहिं चषपूतरि आली
बहु विधि चेरिहि आदर देई ❀ कोपभवन गमनी कैकेई

१ पाप २ दिन ३ रात्रि ४ पत्थर ५ होशियार ६ आंखकी पुतली ७ सखी ८ चली ॥

विपति बीज वर्षा ऋतु चेरी ❁ भुइँ भइ कुमति केकयी केरी
पाइ कपट जल अंकुर जामा ❁ वरदोउ दल फलदुख परिणामा
कोप समाज साज सजि सोई ❁ राजकरत निज कुमति बिगोई
राउर नगर कुलाहल होई ❁ यह कुचाल कछु जान न कोई

दो० प्रमुदित पुर नर नारि सब, साजि सुमंगलचार।
इकप्रविशहिं इकनिर्गमहिं, भीर भूप दरबार॥

बाल सखा सुनि हिय हर्षाहीं ❁ मिलि दश पांच रामपहँजाहीं
प्रभु आदरहिं प्रेम पहिंचानी ❁ पूंछहिं कुशल क्षेम मृदुबानी
फिरहिं भवन प्रिय आयसु[१] पाई ❁ करत परस्पर राम बड़ाई
को रघुबीर सरिस संसारा ❁ शील सनेह निबाहनहारा
जेहिजेहियोनि कर्मवश भ्रमहीं ❁ तहँ तहँ ईश देव यह हमहीं
सेवक हम स्वामी सियनाहू ❁ देव ईश यह ओर निबाहू
अस अभिलाष नगर सब काहू ❁ केकयसुता हृदय अतिदाहू
को न कुसंगति पाइ नशाई ❁ रहै न नीचमते गरुआई

दो० सांझ समय सानन्द नृप, गये केकयी गेह।
गमन निठुरता निपटकिय, जनु धरि देह सनेह॥

कोपभवन सुनि सकुचे राऊ ❁ भयवश अगमपरै नहिं पांऊ
सुरपति बसै बाहु बल जाके ❁ नरपति रहहिं सकल रुखताके
सो सुनि तियरिस गये सुखाई ❁ देखहु काम प्रताप बड़ाई
शूलकुलिश[६] असि अँगवनहारे ❁ ते रतिनाथ[८] सुमन शर मारे
सभय नरेश प्रिया पहँ गयऊ ❁ देखि दशा दुखदारुण भयऊ
भूमि शयन पट मोट पुराना ❁ दिये डारि तनु भूषण नाना
कुमतिहि कस कुरूपता फाबी ❁ अनअहिवात सूच जनु भावी
जाइ निकट नृप कह मृदुबानी ❁ प्राणप्रिया केहि हेतु रिसानी

छं० केहिहेतुरानिरिसानि परसतपानि पतिहिनिवारई।

१ पत्ता २ प्रसन्न ३ आज्ञा ४ खुशीसे ५ घर ६ बज्र ७ तलवार ८ कामदेव ९ सोहीं ॥

मानहुँ सरोष भुअंगभामिनि विषम भांति निहारई ॥
दुउ वासना रसना दशन वर मर्म ठाहर देखई ।
तुलसी नृपति भवितव्यता वश काम कौतुक लेखई ॥
सो० बारबार कह राउ, सुमुखिसुलोचनिपिकबचनि ।
कारणमोहिं सुनाउ, गजगामिनि निज कोप कर ॥
अनहित तोर प्रिया केहि कीन्हा ❀ केहिदुइशिरकेहियमचहलीन्हा
कहु केहि रंकहि करौं नरेशू ❀ कहु केहि नृपहि निकारौं देशू
सकौं तोर अरि अमरहु मारी ❀ कहा कीट बपुरे नर नारी
जानसि मोर स्वभाव बरोरू ❀ तवमुख मम दृग चन्द्रचकोरू
प्रिया प्राण सुत सर्वस मोरे ❀ परिजन प्रजा सकल वश तोरे
जो कछु कहौं कपटकरि तोहीं ❀ भामिनि रामशपथ शत मोहीं
बिहँसि मांगु मनभावति बाता ❀ भूषण साजु मनोहर गाता
घरी कुघरी समुझि जिय देखू ❀ वेगि प्रिया परिहरहु कुवेखू
दो० यहसुनिमनगुनिशपथबड़ि, बिहँसिउठीमतिमन्द ।
भूषण सजति विलोकिमृग, मनहुँकिरातिनिफन्द ॥
पुनि कह राव सुहृद जियजानी ❀ प्रेम पुलकि मृदुमंजुल बानी
भामिनि भयउ तोर मनभावा ❀ बाजत गृह गृह अनँद बधावा
रामहिं देउँ काल्हि युवराजू ❀ सजहु सुलोचनि मङ्गलसाजू
दलकिउठ्यो सुनि हृदय कठोरा ❀ जनु छुइ गयउ पाक बरतोरा
ऐसी पीर बिहँसि उर गोई ❀ चोर नारि जिमि प्रकट न रोई
लख्यो न भूप कपट चतुराई ❀ कोटि कुटिल मति गुरू पढ़ाई
यद्यपि नीति निपुण नरनाहू ❀ नारिचरित जलनिधि अवगाहू
कपट सनेह बढ़ाइ बहोरी ❀ बोली बिहँसि नयन मुखमोरी
दो० मांगु मांगु पै कहहु पिय, कबहुँ न देहु न लेहु ।
देन कहेउ वरदान दुइ, तेउ पावत सन्देहु ॥

१ कोकिल २ रिस ३ गरीब ४ कीड़ा ५ आंख ६ त्यागो ७ झझकि ८ अथाह ॥

जानेउँ मर्म्म राव हँसि कहई ❋ तुमहिं कोहाब परमप्रिय अहई
थाती राखि न मांगेउ काऊ ❋ बिसरिगयो मम भोर स्वभाऊ
झूंठहिं दोष हमहिं जनि देहू ❋ दुइके चारि मांगि किन लेहू
रघुकुल रीति सदा चलि आई ❋ प्राणजाइँ बरु वचन न जाई
नहिं असत्य सम पातकपुंजा ❋ गिरिसमहोहिं कि कोटिकगुंजा
सत्यमूल सब सुकृत सुहाई ❋ वेदपुराण विदित मुनिगाई
तेहिपर राम शपथ करि आई ❋ सुकृत सनेह अवधि रघुराई
बात दृढ़ाइ कुमति हँसि बोली ❋ कपट विहंग कुलंह जनुखोली
दो॰ भूप मनोरथ सुभग वन, सुख सुविहंग समाज।
भिल्लिनिजनुछांड़नचहत, वचन भयंकर बाज॥
सुनहु प्राणपति भावत जीका ❋ देहु एकवर भरतहिं टीका
दूसर वर मांगौं कर जोरी ❋ नाथ मनोरथ पुरवहु मोरी
तापस वेष विशेष उदासी ❋ चौदह वर्ष राम वनवासी
सुनि तियवचन भूप उर शोकू ❋ शशिकरछुवतविकलजिमिकोकू
गये सहमि कछुकहि नहिंआवा ❋ जनु शचान वन झपटेउ लावा
विवरण भयउ निपट महिपालू ❋ दामिनि हनेउ मनहुँ तरुतालू
माथे हाथ मूंदि दोउ लोचन ❋ तनुधरि शोच लागुजनुशोचन
मोर मनोरथ सुरतरु फूला ❋ फरत करिणि जनु हतेउ समूला
अवध उजारि कीन्ह कैकेई ❋ दीन्हेसि अचल विपतिकैनेयी
दो॰ कौने अवसर का भयो, गयउँ नारि विश्वास।
योगसिद्धिफलसमयजिमि, यतिहि अविद्यानास॥
यहिविधि राव मनहिंमन दहई ❋ देखि कुभांति कुमति असकहई
भरत कि राउर पूत न होहीं ❋ आनेहु मोल बेसाहि कि मोहीं
जो सुनि शर सम लाग तुम्हारे ❋ काहे न बोलेहु वचन सँभारे
देहु उतर अब कहहु कि नाहीं ❋ सत्यसन्ध तुम रघुकुल माहीं

१ टोपी २ चन्द्रकिरण ३ बाज ४ बटेर ५ ताड़वृक्ष ६ कल्पवृक्ष ७ हथिनी॥

देन कहेउ वर अब जनि देहू ❀ तजहु सत्य जग अपयश लेहू
सत्य सराहि कहेउ वर देना ❀ जानेहु लेइहि मांगि चबेना
शिविदधीचिबलिजोकछुभाखा ❀ तन धन तजेउ वचन प्रणराखा
अति कटुवचन कहति कैकेई ❀ मानहुँ लोन जरे पर देई

दो० धर्म्म धुरन्धर धीर धरि, नयन उघारे राउ।
शिरधुनिलीन्हिउसासअति, मारेसिमोहिंकुठाउ॥

आगे देखि जरति रिस भारी ❀ मनहुँ रोष तरवारि उघारी
मूठि कुबुद्धि धार निठुराई ❀ धरि कुबरी जनु शान बनाई
लखी महीप कराल कठोरा ❀ सत्य कि जीवन लेइहि मोरा
बोलेउ राव कठिन करि छाती ❀ वाणी विनय न ताहि सोहाती
प्रिया वचन कसकहसि कुभांती ❀ भीरु प्रतीति प्रीति करि हाती
मोरे भरत राम दोउ आंखी ❀ सत्य कहौं करि शंकर साखी
अवशि दूत मैं पठउब प्राता ❀ ऐहैं वेगि सुनत दोउ भ्राता
सुदिन शोधि सब साज सजाई ❀ देहौं भरतहिं राज्य बड़ाई

दो० लोभ न रामहिं राज्यकर, बहुत भरतपर प्रीति।
मैं बड़ छोट विचारिजिय, करतरहेउँ नृपनीति॥

राम शपथ शत कहौं सुभाऊ ❀ राममातु कछु कहा न काऊ
मैं सब कीन्ह तोहिं विनु पूंछे ❀ ताते परेउ मनोरथ छूंछे
रिसि परिहरु अब मङ्गल साजू ❀ कछु दिनगये भरत युवराजू
एकहि बात मोहिं दुख लागा ❀ वर दूसर असमंजस मांगा
अजहूं हृदय दहत तेहि आंचा ❀ रिस परिहासे कि सांचहुसांचा
कहु तजि रोष राम अपराधू ❀ सबकोउ कहत राम सुठि साधू
तुहूं सराहसि करसि सनेहू ❀ अब सुनि मोहिं परम सन्देहू
जासु स्वभाव अरिहु अनुकूला ❀ सो किमि करहिं मातु प्रतिकूला

दो० प्रिया हास्य रिस परिहरहु, मांगु विचारि विवेक।

१ देखा २ हँसी ३ शत्रु ४ मुवाफ़िक़ ५ खिलाफ़ ६ छोड़हु ७ ज्ञान॥

जेहि देखौं अब नयनभरि, भरत राज्य अभिषेक ॥
जियै मीन बरु वारि[1] विहीना ❀ मणिबिनुफणि[2]कजियैदुखदीना
कहौं स्वभाव न छल मनमाहीं ❀ जीवन मोर राम बिनु नाहीं
समुझि देखु जिय प्रिया प्रवीना ❀ जीवन राम दरश आधीना
सुनिमृदुवचनकुमति जियजरई ❀ मनहुँ अनल[3] घृत आहुति परई
कहहि करहु किन कोटि उपाया ❀ इहां न लागिहि राउरि माया
देहु कि लेहु अयश करिनाहीं ❀ मोहिं न बहुत प्रपंच सोहाहीं
राम साधु तुम साधु सुजाना ❀ राममातु भलि सब पहिंचाना
जस कौशला मोर भल ताका ❀ तस फल देउँ उन्हें करि शाका
दो० होत प्रात मुनिवेष धरि, जो न राम वन जाहिं ।
मोर मरण राउर अयश, नृप समुझहु मनमाहिं ॥
अस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी ❀ मानहुँ रोष तरंगिनि[4] बाढ़ी
पाप पहार प्रकट भइ सोई ❀ भरी क्रोध जल जाइ न जोई
दोउ वर कूल[5] कठिन हठ धारा ❀ भँवँर[6] कूबरी वचन प्रचारा
ढाहति भूप रूप तरुमूला ❀ चली विपति वारिधि अनुकूला
लखी नरेश बात सब सांची ❀ तिय मिसुमीचु शीशपर नाची
गहि कर भूप निकट बैठारी ❀ जनि दिनकरकुल होसिकुठारी[7]
मांगु माथ अबहीं देउँ तोहीं ❀ राम विरह जनि मारसि मोहीं
राखु राम कहँ जेहि तेहि भांती ❀ नाहिंत जरिहि जन्मभरिछाती
दो० देखीव्याधि असाधिनृप, परेउ धरणि धुनिमाथ ।
कहत परम आरत वचन, राम राम रघुनाथ ॥
व्याकुल राव शिथिल सब गाता ❀ करिणि[8]कल्पतरु मनहुँ निपाता
कण्ठ सूख मुख आव न बानी ❀ जिमि पाठीनदीन बिनुपानी
पुनि कह कटु कठोर कैकेई ❀ मर्म पाछि जनु माहुर देई
जो अन्तहु अस करतब रहेऊ ❀ मांगु मांगु केहिके बल कहेऊ

१ पानी २ सांप ३ अग्नि ४ नदी ५ किनारा ६ चक्कर ७ कुल्हाड़ी ८ हथिनी ॥

दुइकि होइँ यक संग भुवालू ❀ हँसब ठठाइ फुलाउब गालू
दानि कहाउब अरु कृपणाई ❀ होहि कि क्षेम कुशल रौताई
छांड़हु वचन कि धीरज धरहू ❀ जनि अबला इव कारण करहू
तनु तिय तनय धाम धन धरणी ❀ सत्यसन्धकहँ तृणसम वरणी
दीन दान फिरि मांगहु राजा ❀ परिहरि वेद लोक की लाजा

दो० मर्म वचन सुनि राव कह, कछुक दोष नहिं तोर।
लागेउ मोह पिशाच जनु, काल कहावत मोर॥

चहत न भरत भूपपद भोरे ❀ विधिवश कुमति बसी उर तोरे
सो सब मोर पाप परिणामू ❀ कछु न बसाइ भयो विधि वामू
सुबस बसिहि पुनि अवध सुहाई ❀ सब विधि सुखद राम प्रभुताई
करिहैं सकल भाइ सेवकाई ❀ ह्वैहै तिहुँ पुर राम बड़ाई
तोर कलंक मोर पछिताऊ ❀ मुयउ मेटि नहिं जाइहि काऊ
अब तोहिं नीक लागु करु सोई ❀ लोचन ओट बैठु मुख गोई
जौलौं जियौं कहौं करजोरी ❀ तौलौं जनि कछु कहसिबहोरी
फिरि पछितैहसि अन्त अभागी ❀ मारसि गाय नाहरू लागी

दो० परेउराव कहि कोटि विधि, कांहे करसि निदान।
कपटचतुरनहिं कहतिकछु, जागति मनहुँमशान॥

राम राम रटि विकल भुवालू ❀ जनु बिनु पंख विहंग विहालू
हृदय मनाव भोर जनि होई ❀ रामहिं जाइ कहै जनि कोई
उदय करहु जनि रवि[१] रविकुलगुर ❀ अवध विलोकि शूल[४] होइहि उर
भूप प्रीति केकयि निठुराई ❀ उभय अवधि विधि रची बनाई
बिलपत नृपहि भयउ भिनुसारा ❀ वीणा वेणु शंख ध्वनि द्वारा
पढ़हिं भाट गुण गावहिं गायक ❀ सुनतनृपहि लागत जनुशायक[५]
मंगल सकल सुहाइँ न कैसे ❀ सहगामिनि[६]हिं विभूषण[७] जैसे
तेहि निशि नींदपरी नहिं काहू ❀ राम दरश लालसा उछाहू
कबहिं उदय रवि होहि बिहाना ❀ देखब नयनन कृपानिधाना

१ छिपाकर २ फिरि ३ सूर्य ४ दुःख ५ बाण ६ सती ७ गहना॥

दो० द्वार भीर सेवक सचिव, कहहिं उदय रवि देखि।
जागे अजहुँ न अवधपति, कारण कवन विशेखि॥
पछिले पहर भूप नित जागा ❀ आजु हमहिं बड़ अचरज लागा
जाहु सुमन्त जगावहु जाई ❀ कीजिय काज रजायसु पाई
गे सुमन्त नृप मन्दिर पाहीं ❀ देखि भयानक जात डराहीं
धाइ खाइ जनु जात न हेरा ❀ मानहुँ विपति विषाद बसेरा
पूंछत कोउ न उत्तर देई ❀ गे जेहि भवन भूप कैकेई
कहि जय जीव बैठ शिरनाई ❀ देखि भूपगति गयउ सुखाई
शोक विकल विवरण महिपरेऊ ❀ मानहुँ कमल मूलें परिहरेऊ
सचिव सभीत सकहिं नहिं पूंछी ❀ बोली अशुभभरी शुभ छूंछी
दो० परी न राजहिं नींद निशि, मर्म्म जानु जगदीश।
राम राम रटि भोर किय, हेतु न कहेउ महीश॥
आनहु रामहिं वेगि बुलाई ❀ समाचार तब पूंछहु आई
चलेउ सुमन्त राव रुखजानी ❀ लखी कुचाल कीन्ह कछुरानी
शोक विकल मग परै न पाऊ ❀ रामहिं बोलि कहहिं का राऊ
उर धरि धीरज गयउ दुवारे ❀ पूंछहिं सकल देखि मनमारे
समाधान सो कर सबहीका ❀ गये जहां दिनकरकुलटीका
राम सुमन्तहि आवत देखा ❀ आदर कीन्ह पिता समलेखा
निरखि वदन कहि भूप रजाई ❀ रघुकुल दीपहि चले लिवाई
राम कुभांति सचिव सँगजाहीं ❀ देखिलोग जहँ तहँ बिलखाहीं
दो० आइ दीख रघुवंशमणि, नरपतिनिपटकुसाज।
सहमिपरेउलखिसिंहिनिहिं, मनहुँ वृद्धगजराज॥
सूखे अधर जरे सब अंगा ❀ मनहुँ दीन मणिहीन भुजंगा
सरुष समीप देखि कैकेई ❀ मानहुँ मृत्यु घरी गनिलेई
करुणामय मृदु राम स्वभाऊ ❀ प्रथम दीख दुख सुना न काऊ

१ मन्त्री २ आज्ञा ३ छबिहीन ४ जड़ ५ रामचन्द्र ६ ओंठ ७ सर्प ८ क्रोधित॥

तदपि धीर धरि समय विचारी ❀ पूंछा मधुर वचन महतारी
मोहिं कहु मातु तात दुखकारण ❀ करिय यत्न जेहि होइ निवारण
सुनहु राम सब कारण एहू ❀ राजहिं तुमपर बहुत सनेहू
देन कहेउ मोहिं दुइ वरदाना ❀ मांगेउँ जो कछु मोहिं सुहाना
सो सुनि भयउ भूप उरशोचू ❀ छांड़ि न सकहिं तुम्हार सँकोचू

दो॰ सुत सनेह इत वचन उत, संकट परेउ नरेश।
सकहु तो आयसु शीशधरि, मेटहु कठिन कलेश॥

निधरक बैठि कहत कटुबानी ❀ सुनत कठिनता अतिअकुलानी
जीभ कमान वचन शर जाना ❀ मनहुँ भूप मृदुलक्ष्य समाना
जनु कठोरपन धरे शरीरा ❀ सिखै धनुषविद्या वर वीरा
सब प्रसंग रघुपतिहिं सुनाई ❀ बैठी जनु तनु धरि निठुराई
मन मुसुकाहिं भानुकुलभानू ❀ राम सहज आनन्दनिधानू
बोले वचन विगत सब दूषण ❀ मृदु मंजुल जनु वाक विभूषण
सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी ❀ जो पितु मातु वचन अनुरागी
तनयँ मातु पितु पोषणहारा ❀ दुर्लभ जननि सकल संसारा

दो॰ मुनिगणमिलनविशेषवन, सबहि भांति हितमोर।
तेहिमहँ पितुआयसु बहुरि, सम्मत जननी तोर॥

भरत प्राणप्रिय पावहिं राजू ❀ विधिसबविधिमोहिंसम्मुखआजू
जो न जाहुँ वन ऐसेहु काजा ❀ प्रथम गनिय मोहिं मूढ़समाजा
सेवहिं अरण्ड कल्पतरु त्यागी ❀ परिहरि अमिय लेहिं विषमांगी
तेउ न पाइ अस समय चुकाहीं ❀ देखु विचारि मातु मन माहीं
अब मोकहँ दुख एक विशेखी ❀ निपट विकल नरनायक देखी
थोरिहि बात पितहिं दुखभारी ❀ होति प्रतीति न मोहिं महतारी
राव धीरगुण उदधि अगाधू ❀ भा मोसन कछु बड़ अपराधू
ताते मोहिं न कहत कछु राऊ ❀ मोरि शपथ तोहिं कहु सतिभाऊ

दो॰ सहज सरल रघुवरवचन, कुमति कुटिल करिजान।

१ निशाना २ दोष ३ माता ४ पुत्र ५ आज्ञा ६ सलाह ७ रेंड़ ८ समुद्र॥

चलै जौंक जिमि वक्रगति, यद्यपि सलिल[1] समान ॥

रहसी रानि रामरुख पाई ❀ बोली कपट सनेह जनाई
शपथ तुम्हारि भरतकै आना ❀ हेतु न दूसर मैं कछु जाना
तुम अपराध योग्य नहिं ताता ❀ जननी जनक बन्धु सुखदाता
राम सत्य सब जो कछु कहहू ❀ तुम पितु मातु वचनरत अहहू
पितहिं बुझाइ कहौ बलिसोई ❀ चौथेपन जेहि अयश[2] न होई
तुमसम सुवन[3] सुकृत जेहि दीन्हे ❀ उचित न तासु निरादर कीन्हे
लागहिं कुमुखि वचन शुभ कैसे ❀ मगह गयादिक तीरथ जैसे
रामहिं मातु वचन सब भाये ❀ जिमि सुरसरिगतसलिलसुहाये

दो० गै मूर्च्छा रामहिं सुमिरि, नृप फिरि करवट लीन्ह ।
सचिव राम आगमन कहि, विनयसमयसमकीन्ह ॥

जब नृप अकैनि राम पगुधारे ❀ धरि धीरज तब नयन उघारे
सचिव सँभारि राव बैठारे ❀ चरण परत नृप राम निहारे
लिये सनेह विकल उरलाई ❀ गै मणिफणिकबहुरि जिमिपाई
रामहिं चितै रहे नरनाहू ❀ चला विलोचन वारि प्रवाहू
शोक विकल कछु कहै न पारा ❀ हृदय लगावत बारहिंबारा
विधिहि मनाव राव मनमाहीं ❀ जेहि रघुनाथ न कानन[5] जाहीं
सुमिरि महेशहिं[6] कहहिं निहोरी ❀ विनती सुनहु सदाशिव मोरी
आशुँतोष तुम अवढरदानी ❀ विनती सुनहु दीनजन जानी

दो० तुम प्रेरक सबके हृदय, सो मति रामहिं देहु ।
वचन मोर तजि रहहिं गृह, परिहरि शील सनेहु ॥

अयश होहु बरु सुयश नशाऊं ❀ नरक परौं बरु सुरपुर जाऊं
सब दुख दुसह सहावहु मोहीं ❀ लोचन ओट राम जनि होहीं
अस मन गुनत राव नहिं बोला ❀ पीपर पात सरिस मनडोला
रघुपति पितहिं प्रेमवश जानी ❀ पुनि कछु कहेउ मातु अनुमानी

---

१ जल २ अपकीर्त्ति ३ पुत्र ४ सम्मुख ५ वन ६ शिव ७ शीघ्रही प्रसन्न होनेवाले ॥

देशकाल अवसर अनुसारी ❀ बोले वचन विनीत विचारी
तात कहौं कछु करौं ढिठाई ❀ अनुचित क्षमब जानिलरिकाई
अतिलघुबात लागि दुखपावा ❀ काहेन मोहिंकहि प्रथमजनावा
देखि गुसाइँहिं पूंछेउँ माता ❀ सुनि प्रसंग भो शीतल गाता

दो॰ मंगल समय सनेह वश, शोच परिहरिय तात।
आयसु देइय हरषि हिय, कहि पुलके प्रभुगात॥

धन्य जन्म जगतीतल तासू ❀ पितहिं प्रमोदचरित सुनि जासू
चारि पदारथ करतल ताके ❀ प्रिय पितु मातु प्राणसम जाके
आयसु पालि जन्म फलपाई ❀ ऐहौं वेगिहि देहु रजाई
विदा मातुसन आवहुँ मांगी ❀ चलिहौं वनहिं बहुरि पगलागी
असकहि राम गमन तब कीन्हा ❀ भूप प्रेमवश उतर न दीन्हा
नगर व्यापिगइ बात सुतीछी ❀ छुवत चढ़ी जनु सबतनु बीछी
सुनिभये विकल सकल नरनारी ❀ बेलि विटप जनु लागु दवारी
जो जहँ सुनै धुनै शिर सोई ❀ बड़ विषाद नहिं धीरज होई

दो॰ मुखसूखहिं लोचनस्त्रवहिं, शोक न हृदय समाय।
मानहुँ करुणारस कटक, उतरा अवध बजाय॥

भलि बनाइ विधि बात बिगारी ❀ जहँ तहँ देहिं केकयिहि गारी
यहि पापिनिहिं बूझि का परेऊ ❀ छाय भवनपर पावक धरेऊ
निजकर नयनकाढ़ि चह दीखा ❀ डारि सुधा विषचाहत चीखा
कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी ❀ भइ रघुवंश वेणु वन आगी
पल्लव बैठि पेड़ यहिं काटा ❀ सुखमहँ शोक ठाट यहिं ठाटा
सदा राम यहि प्राण समाना ❀ कारण कवन कुटिलपन ठाना
सत्यकहहिं कवि नारि स्वभाऊ ❀ सबविधि अगम अगाध दुराऊ
निज प्रतिबिंब मुकुर गहि जाई ❀ जानि न जाइ नारिगति भाई

दो॰ काह न पावक जरिसकै, काह न समुद समाइ।

१ समय २ पृथ्वी में ३ खुशी ४ अग्नि ५ बांस ६ परिछाहीं ७ शीशा॥

का न करै अबला प्रबल, केहि जग काल न खाइ ॥
का सुनाइ विधि काह सुनावा ❋ का दिखाइ चह काह दिखावा
एक कहैं भल भूप न कीन्हा ❋ वरविचारि नहिंकुमतिहिदीन्हा
जो हठि भयउ सकलदुखभाजन ❋ अबला विवश ज्ञान गुणगाजन
एक धर्म परमिति पहिंचाने ❋ नृपहिं दोष नहिं देहिं सयाने
शिबि दधीचि हरिचन्द कहानी ❋ एक एकसन कहहिं बखानी
एक भरत कर सम्मत कहहीं ❋ एक उदास मौन ह्वै रहहीं
कान मूंदि कर रद गहि जीहा ❋ एक कहहिं यह बात अलीहा
सुकृत जाइ अस कहत तुम्हारे ❋ भरत राम कहँ प्राण पियारे
दो० चन्द्र स्रवै बरु अनलकण, सुधा होइ विष तूल ।
सपनेहु कबहुँ न करहिं कछु, भरत राम प्रतिकूल ॥
एक विधातहि दूषण देहीं ❋ सुधा दिखाइ दीन्ह विष जेहीं
खरभर नगर शोक सब काहू ❋ दुसह दाह उर मिटा उछाहू
विप्रबधू कुल मान्य जिठेरी ❋ जे प्रिय परम केकयी केरी
लगीं देन शिष शील सराही ❋ वचन बाणसम लागहिं ताही
भरत न प्रिय मोहिं रामसमाना ❋ सदा कहहु यह सब जगजाना
करहु राम पर सहज सनेहू ❋ केहि अपराध आजु वन देहू
कबहुँ न कीन्ह सवति अवरेशू ❋ प्रीति प्रतीति जान सब देशू
कौशल्या अब कहा बिगारा ❋ तुम जेहि लागि वज्र पुर पारा
दो० सीयकिपियसँगपरिहरहिं, लषणकिरहिहहिंधाम ।
भरत कि भूजबं राजपुर, नृपकिजियहिंबिनुराम॥
अस विचारि जिय छांड़हु कोहू ❋ शोक कलंक कोट जनि होहू
भरतहि अवशि देहु युवराजू ❋ कानन कौन राम कर काजू
नाहिंन राम राज्य के भूखे ❋ धर्म धुरीण विषय रस रूखे
गुरु गृह बसहिं राम तजि गेहू ❋ नृपसन अस वर दूसर लेहू

१ स्त्री २ हद ३ दांत ४ अयोग्य ५ खिलाफ़ ६ करेंगे ७ क्रोध ८ घर ॥

राम सरिस[1] सुत[2] कानन[3] योगू ❋ कहा कहहिं सुनि तुमकहँ लोगू
जो न मानिहौ कहे हमारे ❋ नहिं लागिहि कछु हाथ तुम्हारे
जो परिहास[4] कीन्ह कछु होई ❋ तौ कहि प्रकट जनावहु सोई
उठहु वेगि सोइ करहु उपाई ❋ जेहि विधि शोक कलंक नशाई

छं० जेहिभांति शोक कलंक जाइ उपाइ करि कुलपालहू।
हठि फेरु रामहिं जात वन जनि बात दूसरि चालहू ॥
जिमि भानु बिनु दिनु प्राण बिनु तनु चंद बिनु जिमि यामिनी।
तिमि अवध तुलसीदास प्रभु बिनु समुझु धौं मन भामिनी ॥

सो० सखिन सिखावन दीन्ह, सुनत मधुर परि[5]णामहित।
तेइँ कछु कान न कीन्ह, कुटिल प्रबोधी कूबरी[6] ॥

उतर न देइ दुसह रिस रूखी ❋ मृगिहि चितव जनु बाघिनि भूखी
व्याधि असाधि जानि तिन त्यागी ❋ चलीं कहत मतिमंद अभागी
राज्य करत यहि दैव बिगोई ❋ कीन्हेसि अस जस करै न कोई
यहि विधि विलपहिं पुरनरनारी ❋ देहिं कुचालिहि कोटिक गारी
जरहिं विषम ज्वर लेहिं उसासा ❋ कवन राम बिनु जीवन आसा
विकल वियोग प्रजा अकुलानी ❋ जिमि जलचरगण सूखत पानी
अति विषाद वश लोग लुगाई ❋ गये मातु पहँ राम गुसांई
मुख प्रसन्न चित चौगुण चाऊ ❋ यहै शोच जनि राखहिं राऊ

दो० नव गयंद[7] रघुवंशमणि, राज्य अलान[8] समान।
छूटि जान वन गमन सुनि, उर आनँद अधिकान ॥

रघुकुल तिलक जोरि दोउ हाथा ❋ मुदित मातुपद नायउ माथा
दीन्ह अशीश लाइ उर लीन्हें ❋ भूषण वसन निछावरि कीन्हें
वारवार मुख चूंबति माता ❋ नयन नेह जल पुलकित गाता
गोद राखि पुनि हृदय लगाये ❋ स्रवत प्रेमरस पयद सुहाये
परम प्रमोद न कछु कहि जाई ❋ रंक धनद पदवी जनु पाई

१ समान २ पुत्र ३ वन ४ हँसी ५ अंत ६ मंथरा ७ हाथी ८ गजवेड़ी ॥

पुनि पुनि सादर वदन निहारी ❀ बोली मधुर वचन महतारी
कहहु तात जननी बलिहारी ❀ कबहिं लगन मुद मंगलकारी
सुकृत शील सुखसींव सुहाई ❀ जन्मलाभ हित अवधअघाई
दो॰जेहि चाहत नर नारि सब,अतिआरतयाहिभांति।
जिमिचातकचातकितृषित,वृष्टिशरदऋतुस्वाति॥
तात जाउँ बलि वेगि नहाहू ❀ जो मन भाव मधुर स्वइ खाहू
पितु समीप तब जायहु भैया ❀ भइ बड़ि बार जाय बलि मैया
मातुवचन सुनि अति अनुकूला ❀ जनु सनेह सुरतरु के फूला
सुख मकरन्द भरे श्रीमूला ❀ निरखि राम मन भँवर न भूला
धर्म्म धुरीण धर्म गति जानी ❀ कहेउ मातु सन अति मृदुबानी
पिता दीन्ह मोहिं कानन राजू ❀ जहँ सब भांति मोर बड़ काजू
आयसु देहु मुदित मन माता ❀ जेहि मुदमंगल कानन जाता
जनि सनेह वश डरपसि भोरे ❀ आनँद मातु अनुग्रह तोरे
दो॰ वर्षचारिदशविपिन बसि, करि पितुवचन प्रमान।
आय पायँ पुनि देखिहौं, मनजनिकरसिमलान॥
वचन विनीत मधुर रघुवरके ❀ शर सम लाग मातु उरकरके
सहमि सूखि सुनि शीतलबानी ❀ जिमि जवासपर पावसपानी
कहि न जाय कछु हृदय विषादू ❀ मनहुँ मृगी सुनि केहरि नादू
नयन सजल तनु थरथर कांपी ❀ मांजा खाय मीन जनु मापी
धरि धीरज सुत वदन निहारी ❀ गद्गद वचन कहति महतारी
तात पितहि तुम प्राण पियारे ❀ देखि मुदित नित चरित तुम्हारे
राज्य देन कहँ शुभ दिन साधा ❀ कहेउ जान वन केहि अपराधा
तात सुनावहु मोहिं निदानू ❀ को दिनकरकुल भयउ कृशानू
दो॰ निरखिरामरुखसचिवसुत, कारण कहेउ बुझाय।
सुनिप्रसंग रहि मूकजिमि, दशा वरणिनहिंजाय॥

१ देर २ कल्पवृक्ष ३ पुष्परस ४ रामचन्द्र ५ वन ६ मैला ७ हिरनी ८ सिंह ॥

राखि न सकहिं न कहिसक जाहू ❀ दुहूं भांति उर दारुण[1] दाहू
लिखत सुधाकर[2] लिखिगा राहू ❀ विधिगति वाम सदा सब काहू
धर्म्म सनेह उभय मति घेरी ❀ भइ गति सांप छछूंदरि केरी
राखौं सुतहि होइ अनरोधू ❀ धर्म्म जाइ अरु बन्धु विरोधू
कहौं जान वन तौ बड़िहानी ❀ संकट शोच विकल भइ रानी
बहुरि समुझि तियधर्म्म सयानी ❀ राम भरत दोउ सुत सम जानी
सरल स्वभाव राम महतारी ❀ बोलीं वचन धीर धरिभारी
तात जाउँ बलि कीन्हेउ नीका ❀ पितु आयसु सब धर्मक टीका

दो० राज्य देन कहि दीन्हवन, मोहिं न शोचलवलेश।
तुम बिनु भरतहिं भूपतिहिं, प्रजहि प्रचण्ड कलेश॥

जो केवल पितु आयसु ताता ❀ तौ जनि जाहु जानि बड़िमाता
जो पितु मातु कहेउ वन जाना ❀ तौ कानन शत[3] अवध समाना
पितु वनदेव मातु वनदेवी ❀ खग मृग चरण सरोरुह सेवी
अन्तहु उचित नृपहि वनवासू ❀ वयँ[4] विलोकि हियहोत हरासूँ[5]
बड़भागी वन अवध अभागी ❀ जो रघुवंश तिलक तुम त्यागी
जो सुत कहौं संग मोहिं लेहू ❀ तुम्हरे हृदय होहि संदेहू
पुत्र परमप्रिय तुम सबहीके ❀ प्राण प्राण के जीवन जीके
ते तुम कहहु मातु वन जाऊं ❀ मैं सुनि वचन बैठि पछिताऊं

दो० यह विचारि नहिं करउँ हठ, झूठ सनेह बढ़ाइ।
मानि मातु के नात बलि, सुरति बिसरि नहिं जाइ॥

देव पितर सब तुमहिं गोसाईं ❀ राखहिं पलक नयन की नाईं
अवधि[6] अंबु[7] प्रियपरिजन मीना[8] ❀ तुम करुणाकर धर्म्म धुरीना
अस विचारि सोइ करेहु उपाई ❀ सबहि जियत जेहि भेंटहु आई
जाउ सुखेन वनहिं बलिजाऊं ❀ करि अनाथ जन परिजन गाऊं
सबकर आजु सुकृत फल बीता ❀ भयो कराल काल विपरीता

१ कठिन जलन २ चन्द्रमा ३ सौ ४ उम्र ५ दुःख ६ हद ७ जल ८ मछली॥

यहिविधिविलपिचरणलपटानी ❀ परमअभागिनि आपुहि जानी
दारुण दुसह दाह अति व्यापा ❀ वरणि न जाइ विलाप कलापा
राम उठाय मातु उरलाई ❀ कहि मृदुवचन बहुत समुझाई
दो० समाचार तेहिसमयसुनि, सीय उठी अकुलाय।
जाय सासु पग कमलयुग, वन्दि बैठि शिरनाय ॥
दीन्ह अशीश सासु मृदुबानी ❀ अतिसुकुमारि देखि अकुलानी
बैठि नमित मुख शोचति सीता ❀ रूपराशि पतिप्रेम पुनीता
चलन चहत वन जीवननाथा ❀ कवनसुकृतसन होइहि साथा
की तनु प्राण कि केवल प्राना ❀ विधिकरतब कछुजात न जाना
चारुचरण नख लेखति धरणी ❀ नूपुर मुखर मधुर कवि वरणी
मनहुँ प्रेमवश विनती करहीं ❀ हमहिं सीयपद जनि परिहरहीं
मंजु विलोचन मोचति वारी ❀ बोलीं देखि राम महतारी
तातसुनहु सिय अतिसुकुमारी ❀ सासु ससुर परिजनहिं पियारी
दो० पिता जनक भूपालमणि, श्वशुर भानुकुल भान।
पति रविकुलकैरवविपिन, विधुगुण रूप निधान ॥
मैं पुनि पुत्रबधू प्रियपाई ❀ रूपराशि गुण शील सुहाई
नयनपुतरि इव प्रीति बढ़ाई ❀ राखहुँ प्राण जानकिहिं लाई
कल्पबेलि जिमिबहुविधिलाली ❀ सींचि सनेह सलिल प्रतिपाली
फूलत फलत भयेउ विधिवामा ❀ जानि न जाइ काह परिणामा
पलँगपीठि तजि गोद हिंडोरा ❀ सिय न दीन्ह पगुअवनिकठोरा
जिवनिमूरिजिमिजुगवतिरहेऊं ❀ दीपबाति नहिं टारन कहेऊं
सो सिय चहति चलन वनसाथा ❀ आयसु कहा होइ रघुनाथा
चन्द्रकिरणि रसरसिक चकोरी ❀ रविरुख नयनसकै किमिजोरी
दो० करिकेहरि निशिचरचरहिं, दुष्ट जन्तु वन भूरि।
विषवाटिका कि सोहसुत, सुभग सजीवन मूरि ॥

१ पुण्य २ खोदती ३ शब्द ४ छोड़ती ५ कुमोदिनी ६ पृथ्वी ७ आज्ञा ८ हाथी ९ सिंह ॥

वनहित कोल किरातकिशोरी ❋ रची विरंचि विषयरस भोरी
पाहनकृमिजिमिकठिन स्वभाऊ ❋ तिनहिं कलेश न काननकाऊ
कै तापस तिय कानन योगू ❋ जिन तपहेतु तजा सब भोगू
सिय वनबसिहि तात केहि भांती ❋ चित्रलिखित कपि देखिडेराती
सुरसर सुभग वनजवनचारी ❋ डाबरै योग कि हंसकुमारी
अस विचारि जस आयसु होई ❋ मैं शिषदेउँ जानकिहि सोई
जो सिय भवन रहै कह अम्बा ❋ मोकहँ होइ प्राण अवलम्बा
सुनि रघुवीर मातु प्रियबानी ❋ शील सनेह सुधा रससानी

दो० कहिप्रियवचन विवेकमय, कीन्ह मातु परितोष ।
लगे प्रबोधन जानकिहि, प्रकट विपिन गुणदोष॥

मातु समीप कहत सकुचाहीं ❋ बोले समय समुझि मनमाहीं
राजकुमारि सिखावन सुनहू ❋ आनभांति जियजनि कछुगुनहू
आपन मोर नीक जो चहहू ❋ वचन हमार मानि घर रहहू
आयसु मोर सासु सेवकाई ❋ सबविधि भामिनि भवनभलाई
यहिते अधिक धर्म्म नहिं दूजा ❋ सादर सासु ससुर पद पूजा
जब जब मातु करिहि सुधिमोरी ❋ होइहि प्रेम विकल मतिभोरी
तब तब तुम कहि कथा पुरानी ❋ सुन्दरि समुझायहु मृदुबानी
कहौं स्वभाव शपथ शतमोहीं ❋ सुमुखि मातु हित राखौं तोहीं

दो० गुरुश्रुतिसम्मतधर्म्मफल, पाइय बिनहिं कलेश ।
हठवश सब संकट सहे, गालव नहुष नरेश ॥

मैं पुनि करि प्रमाण पितुबानी ❋ वेगि फिरब सुनु सुमुखि सयानी
दिवसजात नहिं लागहि बारा ❋ सुन्दरि सिखवन सुनहु हमारा
जो हठकरहु प्रेम वश वामा ❋ तो तुम दुख पाउब परिणामा
कानन कठिन भयंकर भारी ❋ घोर घाम हिम वारि बयारी
कुश कंटक मग कंकर नाना ❋ चलब पयादे बिनु पदत्राना

१ पत्थर २ कीड़ा ३ कमलोंका वन ४ गड़हा ५ अमृत ६ क़सम ७ वेद ८ वन ९ जूता॥

चरण कमल मृदु मंजु तुम्हारे ❀ मारग अगम भूमिधर भारे
कन्दर खोह नदी नद नारे ❀ अगम अगाध न जाहिं निहारे
भालु बाघ वृक केहरि नागा ❀ करहिं नाद सुनि धीरजभागा

दो० भूमिशयन वल्कल वसन, अशन कन्द फलमूल।
तेकिसदासबदिन मिलहिं, समयसमयअनुकूल॥

नर अहार रजनीचर करहीं ❀ कपट वेष वन कोटिन फिरहीं
लागै अति पहार[1] कर पानी ❀ विपिन[3]विपतिनहिंजातबखानी
व्याल कराल विहँग[4] वन घोरा ❀ निशिचर निकर नारिनरचोरा
डरपहिं धीर गहन सुधि आये ❀ मृगलोचनि तुम भीरु सुभाये
हंसगमनि तुम नहिं वन योगू ❀ सुनि अपयश देहहिं मोहिंलोगू
मानस सलिल[5] सुधा प्रतिपाली ❀ जियइ कि लवण[6]पयोधि मराली
नव रसाल वन विहरण शीला ❀ सोह कि कोकिलविपिनकरीला
रहहु भवन अस हृदय विचारी ❀ चन्द्रवदनि दुख कानन भारी

दो० सहजसुहृदगुरुस्वामिशिष, जो न करै हितमानि।
सो पछिताय अघाय उर, अवशिहोइहितहानि॥

सुनि मृदु वचन मनोहर पियके ❀ लोचन नलिन भरे जलसियके
शीतल शिष दाहक भइ कैसे ❀ चकइहि शरद चांदनी जैसे
उतर न आव विकल वैदेही ❀ तजन चहत मोहिं परमसनेही
बरबस रोंकि विलोचन वारी ❀ धरिधीरज उर अवनिकुमारी
लागि सासु पद कह करजोरी ❀ क्षमहु मातु बड़ि अविनयमोरी
दीन्हप्राणपति मोहिं शिष सोई ❀ जेहिविधि मोर परमहित होई
मैं पुनि समुझि दीख मनमाहीं ❀ प्रिय वियोग समदुखजगनाहीं
असकहि सिय रघुपतिपदलागी ❀ बोली वचन प्रेम रस पागी

दो० प्राणनाथ करुणायतन, सुन्दर सुखद सुजान[7]।
तुमबिनुरघुकुलकुमुदविधु[8], सुरपुर नरक समान॥

१ पहाड़ २ भोजन ३ वन ४ पक्षी ५ जल ६ खारसमुद्र ७ चतुर ८ चन्द्रमा॥

मातु पिता भगिनी प्रिय भाई ❀ प्रिय परिवार सुहृद समुदाई
सासु ससुर गुरु सुजन सगाई ❀ सुत सुन्दर सुशील सुखदाई
जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते ❀ पिय बिनु तियहि तरणि ते ताते
तनु धन धाम धरणि पुर राजू ❀ पति विहीन सब शोक समाजू
भोग रोग सम भूषण भारू ❀ यम यातना सरिस संसारू
प्राणनाथ तुम बिनु जगमाहीं ❀ मोकहँ सुखद कतहुँ कोउनाहीं
जिय बिनु देह नदी बिनु वारी ❀ तैसहि नाथ पुरुष बिनु नारी
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे ❀ शरद विमल विधु वदननिहारे

दो॰ खगमृग परिजन नगर वन, वलकल विमल दुकूल।
नाथ साथ सुरसदन सम, पर्णशाल[1] सुखमूल॥

वन देवी वन देव उदारा ❀ करिहैं सासु ससुर समसारा
कुश किसलय[2] साथरी[3] सुहाई ❀ प्रभु सँग मंजु मनोज तुराई[4]
कन्दमूल फल अमिय अहारू ❀ अवधि अवधशत सरिस पहारू
क्षणक्षण प्रभुपद कमल विलोकी ❀ रहिहौंमुदितदिवसजिमिकोकी
वन दुख नाथ कहेउ बहुतेरे ❀ भय विषाद परिताप घनेरे
प्रभु वियोग लवलेश समाना ❀ सबमिलि होहिं न कृपानिधाना
असजियजानिसुजानशिरोमनि ❀ लेइय संग मोहिं छांड़ियजनि
विनती बहुत करौं का स्वामी ❀ करुणामय अरु अन्तरयामी

दो॰ राखियअवधजोअवधिलगि, रहत जानिये प्रान।
दीनबन्धु सुन्दर सुखद, शीलसनेहनिधान॥

मोहिं मगचलत न होइहि हारी ❀ क्षणक्षण चरणसरोज निहारी
सबहि भांति प्रिय सेवा करिहौं ❀ मारग जनित सकलश्रमहरिहौं
पांव पखारि बैठि तरु[5] छाहीं ❀ करिहौं वायु मुदित मनमाहीं
श्रमकण[6] सहित श्याम तनुदेखी ❀ का दुख समय प्राणपति पेखी
सम महि तृण तरु पल्लव[7] डासी ❀ पांय पलोटिहि सबनिशिदासी

१ पत्तों का घर २ कोमलपत्ते ३ आसनी ४ तोशक ५ वृक्ष ६ पसीना ७ पत्ते॥

बारबार मृदु मूरति जोही ❀ लागिहि ताति बयारि न मोही
को प्रभुसँग मोहिं चितवनहारा ❀ सिंहबधुहिंजिमिशशक सियारा
मैं सुकुमारि नाथ वन योगू ❀ तुमहिं उचित तप मोकहँ भोगू
दो० ऐसेहु वचन कठोर सुनि, जो न हृदय बिलगान।
तौ प्रभु विषम वियोगदुख, सहिहैं पामर प्रान॥
असकहि सीय विकल भइभारी ❀ वचनवियोग न सकी सँभारी
देखिदशा रघुपति जियजाना ❀ हठिराखे राखिहि नहिं प्राना
कह्यउ कृपालु भानुकुलनाथा ❀ परिहरि शोच चलहु वनसाथा
नहिं विषाद कर अवसर आजू ❀ वेगि करहु वनगमन समाजू
कहिप्रियवचन प्रियहिसमुझाई ❀ लगे मातु पद आशिष पाई
वेगि प्रजादुख मेटब आई ❀ जननी निठुर बिसरि जनिजाई
फिरिहिदशाविधिबहुरिकिमोरी ❀ देखिहौं नयन मनोहर जोरी
सुदिन सुघरी तात कब होई ❀ जननी जियत वदन विधुजोई
दो० बहुरि बच्छकहि लालकहि, रघुपति रघुवर तात।
कबहिं बुलाइ लगाइ उर, हरषिनिरखिहौं गात॥
लखि सनेह कातरि महतारी ❀ वचन न आव विकलभइ भारी
राम प्रबोध कीन्ह विधिनाना ❀ समय सनेह न जाइ बखाना
तब जानकी सासु पग लागी ❀ सुनिय मातु मैं परम अभागी
सेवा समय दैव वन दीन्हा ❀ मोर मनोरथ सफल न कीन्हा
तजबक्षोभ जनि छांड़ब छोहू ❀ कर्मकठिन कछु दोष न मोहू
सुनि सियवचन सासुअकुलानी ❀ दशाकवनविधि कहौं बखानी
बारहिंबार लाइ उरलीन्हीं ❀ धरिधीरज उरआशिष दीन्हीं
अचलहोउ अहिवात तुम्हारा ❀ जबलग गंग यमुन जलधारा
दो० सीतहिसासु अशीशशिष, दीन्ह अनेक प्रकार।
चली नाइ पद पद्म शिर, अतिहित बारहिंबार॥

१ फटा २ नीच ३ दुःख ४ माता ५ चन्द्रमा ६ कायर ७ सुहाग ८ कमल॥

समाचार जब लक्ष्मण पाये ❀ व्याकुल बिलखि वदनउठिधाये
कम्पपुलक तनु नयन सनीरा ❀ गहेचरण अति प्रेम अधीरा
कहि न सकत कछु चितवत ठाढ़े ❀ मीन दीन जनु जल ते काढ़े
शोच हृदय विधि का होनहारा ❀ सबसुख सुकृत सिरान हमारा
मो कहँ कहा कहब रघुनाथा ❀ रखिहैं भवन कि लैहैं साथा
राम बिलोकि बन्धु करजोरे ❀ देह गेह सबसन तृणतोरे
बोले वचन राम नयनागर ❀ शील सनेह सरल सुखसागर
तात प्रेमवश जनि कदराहू ❀ समुझिहृदय परिणाम उछाहू

दो० मातुपितागुरुस्वामिशिष, शिरधरि करहिं सुभाइ ।
लह्यउ लाभतिन जन्मके, नतरु जन्म जगजाइ ॥

अस जियजानि सुनहुशिषभाई ❀ करौ मातु पितु पद सेवकाई
भवन भरत रिपुसूदन नाहीं ❀ राव वृद्ध ममदुख मनमाहीं
मैं वनजाउँ तुमहिं लै साथा ❀ होइहि सबविधि अवँधअनाथा
गुरु पितु मातु प्रजा परिवारू ❀ सब कहँ परै दुसहदुख भारू
रहहु करहु सब कर परितोषू ❀ नतरु तात होइहि बड़ दोषू
जासु राज्य प्रिय प्रजा दुखारी ❀ सोनृपअवशि नरक अधिकारी
रहहु तात अस नीति विचारी ❀ सुनत लषण भये व्याकुलभारी
सियरे वदन सूखि गये कैसे ❀ परसत तुहिन तामरस जैसे

दो० उतर न आवत प्रेमवश, गहे चरण अकुलाइ ।
नाथ दास मैं स्वामि तुम, तजहु तो कहा बसाइ ॥

दीन्ह मोहिं शिष नीक गुसांई ❀ अगम लागि आपनि कदराई
नर वर धीर धर्म्मधुर धारी ❀ निगम नीतिके ते अधिकारी
मैं शिशु प्रभु सनेह प्रतिपाला ❀ मन्दर मेरु कि लेइ मराला
गुरु पितु मातु न जानों काहू ❀ कहौं स्वभाव नाथ पतियाहू
जहँ लगि जगत सनेह सगाई ❀ प्रीति प्रतीति निगम निजगाई

१ मछली २ पुण्य ३ अन्त ४ अयोध्या ५ असह्य ६ पाला ७ कमल ८ मन्दराचल ॥

मोरे सबै एक तुम स्वामी ❋ दीनबन्धु अरु अन्तरयामी
धर्म्मनीति उपदेशिय ताही ❋ कीरति भूति सुगति प्रिय जाही
मन क्रम वचन चरणरत होई ❋ कृपासिन्धु परिहरिय कि सोई

दो० करुणासिन्धु सुबन्धु के, सुनि मृदुवचन विनीत।
समुझाये उरलाय प्रभु, जानि सनेह सभीत॥

मांगहु बिदा मातु सन जाई ❋ आवहु वेगि चलहु वन भाई
मुदित भये सुनि रघुवर बानी ❋ भयउ लाभबड़ मिटी गलानी
हरषित हृदय मातु पहँ आये ❋ मनहुँ अन्ध फिरि लोचन पाये
जाइ जननि पद नायउ माथा ❋ मन रघुनन्दन जानकि साथा
पूंछेउ मातु मलिनमन देखी ❋ लषण कहेउ सब कथाविशेखी
गई सहमि सुनि वचन कठोरा ❋ मृगी देखि जनु दवँ चहुँओरा
लषण लखेउ भा अनरथ आजू ❋ यह सनेह वश करव अकाजू
मांगत बिदा समय सकुचाहीं ❋ जानसंग विधि कहहिं कि नाहीं

दो० समुझि सुमित्रा राम सिय, रूप सुशील स्वभाव।
नृपसनेहलखिधुनेउशिर, पापिनि कीन्ह कुदाव॥

धीरज धरेउ कुअवसर जानी ❋ सहज सुहृद बोली मृदुबानी
तात तुम्हारि मातु वैदेही ❋ पिता राम सब भांति सनेही
अवध तहां जहँ राम निवासू ❋ तहां दिवस जहँ भानुप्रकासू
जोपै राम सीय वन जाहीं ❋ अवध तुम्हार काज कछु नाहीं
गुरु पितु मातु बन्धु सुर साईं ❋ सेइय सकल प्राण की नाईं
राम प्राण प्रिय जीवन जीके ❋ स्वारथ रहित सखा सबहीके
पूजनीय प्रिय परम जहांते ❋ मानिय सकल राम के नाते
अस जिय जानि संग वन जाहू ❋ लेहु तात जगजीवन लाहू

दो० भूरिभाग्य भाजन भयउ, मोहिं समेत बलिजाउँ।
जो तुम्हरे मन छांड़िछल, कीन्ह रामपद ठाउँ॥

१ नीतियुक्त २ हरिणी ३ वनकी अग्नि ४ सुन्दरहृदय ५ कोमल ६ प्यारे ७ वर्तन॥

पुत्रवती युवती जग सोई ❀ रघुवर भक्त जासु सुत होई
नतरु बांझ भलि बादि बियानी ❀ राम विमुख सुतते हितहानी
तुम्हरे भाग्य राम वन जाहीं ❀ दूसर हेतु तात कछु नाहीं
सकल सुकृत कर फल सुत येहू ❀ राम सीय पद सहज सनेहू
राग रोष ईर्षा मद मोहू ❀ जनि सपनेहु इनके वश होहू
सकल प्रकार विकार विहाई ❀ मन क्रम वचन करेहु सेवकाई
तुम कहँ वन सबभांति सुपासू ❀ सँग पितु मातु राम सिय जासू
जेहि न राम वन लहहिं कलेशू ❀ सुत सोइ करेहु यहै उपदेशू

छं० उपदेश यहि जेहि तात कानन रामसिय सुखपावहीं।
पितुमातुप्रिय परिवार पुर सुख सुरति वन बिसरावहीं॥
तुलसी सुतहिं शिष देइ आयसु देइ पुनि आशिष दई।
रतिहोउअविरलअमलसिय रघुवीरपद नित नित नई॥

सो० मातु चरण शिरनाइ, चले तुरत शंकित हृदय।
बाँगुर विषम तुराइ, मनहुँभागमृगँभाग्यवश॥

गये लषण जहँ जानकिनाथा ❀ भे मन मुदित पाइ प्रियसाथा
वन्दि राम सिय चरण सुहाये ❀ चले संग नृप मन्दिर आये
कहहिं परस्पर पुर नर नारी ❀ भलि बनाइ विधि बात विगारी
तन कृश मन दुख वदन मलीने ❀ विकल मनहुँ माखी मधु छीने
कर मींजहिं शिर धुनि पछिताहीं ❀ जनु बिनुपंख विहँग अकुलाहीं
भइ बड़ि भीर भूप दरबारा ❀ वरणि न जाइ विषाद अपारा
सचिव उठाइ राव बैठारे ❀ कहि प्रिय वचन राम पगुधारे
सिय समेत दोउ तनय निहारी ❀ व्याकुल भये भूमिपति भारी

दो० सीयसहितसुतसुभगदोउ, देखि देखि अकुलाइ।
बारहिंबार सनेह वश, राव लिये उरलाइ॥

सके न बोलि विकल नरनाहू ❀ शोक विकल उर दारुणदाहू

१ छोड़के २ शिक्षा ३ फन्दा ४ हरिण ५ प्रसन्न ६ दुर्बल ७ शहद ८ मन्त्री॥

नाइ शीश पद अतिअनुरागा ❁ उठि रघुनाथ बिदा तब मांगा
पितुअशीश आयसु मोहिं दीजै ❁ हर्षसमय विस्मय कत कीजै
तात किये प्रिय प्रेम प्रमादू ❁ यश जग जाइ होइ अपवादू
सुनि सनेहवश उठि नरनाहू ❁ बैठारे रघुपति गहि बाहू
सुनहु तात तुमकहँ मुनि कहहीं ❁ राम चराचर नायक अहहीं
शुभ अरु अशुभकर्म अनुहारी ❁ ईश देइ फल हृदय विचारी
करै जो कर्म्म पाव फल सोई ❁ निगर्मनीति अस कह सब कोई

दो० और करै अपराध कोइ, और पाव फल भोग।
अति विचित्र भगवंतगति, को जग जानै योग॥

राव राम राखन हित लागी ❁ बहुत उपाय कीन्ह छलत्यागी
लखेउ रामरुख रहत न जाने ❁ धर्म्म धुरन्धर धीर सयाने
तब नृप सीय लाइ उरलीनी ❁ अतिहित बहुत भांति शिषदीनी
कहिवनके दुख दुसह सुनाये ❁ सासु ससुर पितुसुख समुझाये
सियमन रामचरण अनुरागा ❁ घर न सुगम वन अगम न लागा
औरौ सबहि सीय समुझाई ❁ कहिकहिविपिनविपतिअधिकाई
सचिवनारि गुरुनारि सयानी ❁ सहित सनेह कहहिं मृदुबानी
तुम कहँ तौ न दीन्ह वनवासू ❁ करहु जो कहहिंश्वशुरगुरुसासू

दो० शिषशीतलहितमधुरमृदु, सुनिसीतहि न सुहानि।
शरद चन्द्र चांदनि लगत, जनु चकई अकुलानि॥

सीय सकुच वश उतर न देई ❁ सो सुनि तमकि उठी कैकेई
मुनिपट भूषण भाजन आनी ❁ आगे धरि बोली मृदुबानी
नृपहिं प्राण प्रिय तुम रघुवीरा ❁ शील सनेह न छांड़हिं भीरा
सुकृत सुयश परलोक नशाऊ ❁ तुमहिं जान वन कहहिं न राऊ
अस विचारि सोइ करौ जो भावा ❁ राम जननिशिषसुनि सुखपावा
भूपहि वचन बाण सम लागे ❁ करहिं न प्राण पयान अभागे

---

१ निंदा २ राजा ३ स्वामी ४ वेद ५ हृदय ६ असह्य ७ बर्तन ८ पुण्य ९ कूब॥

शोक विकल मूर्च्छित नरनाहू ❀ कहा करिय कछुसूझ न काहू
राम तुरत मुनिवेष बनाई ❀ चले जनक जननिहिं शिरनाई

दो० सजि वनसाजसमाजप्रभु, वनिता बन्धु समेत।
वन्दि विप्र गुरुचरण प्रभु, चले करि सबहिं अचेत॥

निकसि वशिष्ठ द्वार भे ठाढ़े ❀ देखे लोग विरहदव डाँढ़े
कहि प्रियवचन सबहिं समुझाये ❀ विप्र वृन्द रघुवीर बुलाये
गुरुसन कहि वर्षाशन दीन्हे ❀ आदरदान विनय वश कीन्हे
याचक दान मान सन्तोषे ❀ मीत पुनीत प्रेम परितोषे
दासी दास बुलाइ बहोरी ❀ गुरुहिं सौंपि बोले करजोरी
सबकर सार सँभार गुसाईं ❀ करब जनक जननी की नाईं
बारहिंबार जोरि युग पानी ❀ कहत राम सबसन मृदुबानी
सोइ सबभांति मोर हितकारी ❀ जेहिते रहैं भुवाल सुखारी

दो० मातु सकल मोरे विरह, जेहि न होहिं दुखदीन।
सो उपाय तुम करब सब, पुरजन परम प्रवीन॥

यहिविधि राम सबहिं समुझावा ❀ गुरुपदपद्म हरषि शिरनावा
गणपति गौरि गिरीशं मनाई ❀ चले अशीश पाइ रघुराई
राम चलत अतिभयो विषादू ❀ सुनि न जाइ पुर आरत नादू
कुशकुन लंक अवध अतिशोकू ❀ हर्ष विषाद विवश सुरलोकू
गै मूर्च्छा तब भूपति जागे ❀ बोलि सुमन्त्र कहन असलागे
राम चले वन प्राण न जाहीं ❀ केहि सुख लागिरहत तनुमाहीं
यहिते कवन व्यथा बलवाना ❀ जो दुखपाइ तजहिं तनुप्राना
पुनि धरि धीर कहहिं नरनाहू ❀ लै रथ संग सखा तुम जाहू

दो० सुठिसुकुमार कुमार दोउ, जनकसुता सुकुमारि।
रथ चढ़ाइ दिखराइ वन, फिरहु गये दिनचारि॥

जो नहिं फिरहिं धीर दोउ भाई ❀ सत्यसन्ध दृढ़व्रत रघुराई

१ पिता २ स्त्री ३ बेहोश ४ जले ५ माता ६ शंभु ७ शोर ८ पीड़ा ९ पवित्र॥

तौ तुम विनय[1] करेहु करजोरी ❀ फेरिय प्रभु मिथिलेशकिशोरी
जब सिय कानन[2] देखि डराई ❀ कहेउ मोरि शिष अवसर पाई
सासु ससुर अस कहेउ सँदेशू ❀ पुत्रि फिरिय वन बहुत कलेशू
पितु गृह कबहुँ कबहुँ ससुरारी ❀ रहेउ जहां रुचि होइ तुम्हारी
यहि विधि करेहु उपाय कदम्बा ❀ फिरइ तो होइ प्राण अवलम्बा
नाहिंत मोर मरण परिणामा ❀ कछु न बसाइ भयो विधिवामा
अस कहि मूर्च्छिपरेउ महि राऊ ❀ राम लषण सिय आनिदिखाऊ

दो० पाय रजाइसु नाइ शिर, रथ अति रुचिर[4] बनाइ ।
गयउ जहां बाहर नगर, सीय सहित दोउभाइ ॥

तब सुमन्त्र नृप वचन सुनाये ❀ करि विनती रथ राम चढ़ाये
चढ़ि रथ सीय सहित दोउ भाई ❀ चले हरषि अवधहिं शिरनाई
चले राम लखि अवध अनाथा ❀ विकल लोग लागे सब साथा
कृपासिन्धु बहुविधि समुझावहिं ❀ फिरहिंप्रेमवशपुनिफिरिआवहिं
लागत अवध भयानक भारी ❀ मानहुँ कालराति अँधियारी
घोर जन्तु सम पुर नर नारी ❀ डरपहिं एकहि एक निहारी
घर मशान पुर परिजन भूता ❀ सुतहित मीत मनहुँ यमदूता
बागन विटप[5] बेलि कुम्हिलाहीं ❀ सरित[6] सरोवर[7] देखि न जाहीं

दो० हयगय कोटिककेलिमृग, पुर पशु चातक मोर ।
पिक रथांग शुक सारिका[8], सारस हंस चकोर ॥

राम वियोग विकल सब ठाढ़े ❀ जहँ तहँ मनहुँ चित्रलिखिकाढ़े
नगर सकल वन गह्वर भारी ❀ खगमृग विपुलसकलनरनारी
विधि केकयि किराँतिनी[9] कीन्ही ❀ जेहिदवदुसहदशहुदिशिदीन्ही
सहि न सके रघुवर विरहागी ❀ चले लोग सब व्याकुल भागी
सबहिं विचार कीन्ह मनमाहीं ❀ राम लषण सिय बिनु सुखनाहीं
जहां राम तहँ सब सुख साजू ❀ विनु रघुवीर अवध केहिकाजू

१ बिनती २ बन ३ सहारा ४ सुन्दर ५ वृक्ष ६ नदी ७ तालाब ८ मैना ९ भिल्लिनि ॥

चले साथ अस मन्त्र दृढ़ाई ❋ सुर दुर्लभ सुख सदन विहाई
रामचरण पंकज प्रिय जिनहीं ❋ विषय भोग वश करै कि तिनहीं
दो० बालक वृद्ध विहाई गृह, लगे लोग सब साथ।
तमसा तीर निवास किय, प्रथम दिवस रघुनाथ॥
रघुपति प्रजा प्रेम वश देखी ❋ सदय हृदय दुखभयउ विशेखी
करुणामय रघुनाथ गुसाईं ❋ वेगि पाइ यह पीर पराईं
कहि सप्रेम मृदु वचन सुहाये ❋ बहु विधि राम लोग समुझाये
किये धर्म उपदेश[3] घनेरे ❋ लोग प्रेम वश फिरहिं न फेरे
शील सनेह छांड़ि नहिं जाई ❋ असमंजस वश भे रघुराई
लोग शोग श्रम वश गये सोई ❋ कछुक देवमाया मति भोई
जबहिं याम[4] युग[5] यामिनि[6] बीती ❋ राम सचिव[7] सन कहेउ सप्रीती
खोज मारि रथ हांकहु ताता ❋ आन उपाय बनिहि नहिं बाता
दो० रामलषणसिय यानचढ़ि, शम्भु चरण शिरनाइ।
सचिव चलायउ तुरत रथ, इत उत खोज दुराइ॥
जागे सकल लोग भये भोरू ❋ गये रघुवीर भयो अति शोरू
रथ कर खोज कतहुँ नहिं पावहिं ❋ रामराम कहि चहुँदिशिधावहिं
मनहुँ वारिनिधि[8] बूड़ जहाजू ❋ भयउविकल जनुवणिकसमाजू
एकहि एक देहिं उपदेशू ❋ तजेउ राम हम जानि कलेशू
निन्दहिं आपु सराहहिं मीना[9] ❋ धिक जीवन रघुवीर विहीना
जोपै प्रिय वियोग विधि कीन्हा ❋ तौ कस मरण न मांगे दीन्हा
यहि विधि करत प्रलाप कलापा ❋ आये अवध भरे परितापा
विषम वियोग न जाइ बखाना ❋ अवधि आश राखहिं सबप्राना
दो० राम दरश हित नेम व्रत, लगे करन नर नारि।
मनहुँ कोककोकी कमल[1], दीन विहीन तमारि[2]॥
सीता सचिव सहित दोउ भाई ❋ शृङ्गवेर पुर पहुँचे जाई

१ कमल २ छोड़के ३ शिक्षा ४ प्रहर ५ दो ६ रात्रि ७ मन्त्री ८ समुद्र ९ मछली॥

उतरे राम देवसरि देखी ❁ कीन्ह दण्डवत हर्ष विशेखी
लषणसचिव सिय कीन्हप्रणामा ❁ सबहि सहित सुखपायउ रामा
गङ्ग सकल मुद मंगलमूला ❁ सबसुखकरनि हरनि सबशूला
कहिकहि कोटिक कथा प्रसंगा ❁ राम विलोकत गंग तरंगा
सचिवहिअनुजहिप्रियहिसुनाई ❁ विबुधनदी महिमा अधिकाई
मज्जनकीन्ह पन्थश्रम गयऊ ❁ शुचिजलपियतमुदितमनभयऊ
सुमिरत जाहि मिटहिं भवभारू ❁ तेहिश्रम यह लौकिक व्यवहारू

दो० शुद्ध सच्चिदानन्द मय, राम भानुकुल केतु।
चरित करत नर अनुहरत, संसृत सागर सेतु॥

यह सुधि गुह निषाद जब पाई ❁ मुदित लिये प्रियबन्धु बुलाई
लै फल मूल भेंट भरि भारा ❁ मिलनचल्यो हियहर्ष अपारा
करि दण्डवत भेंट धरि आगे ❁ प्रभुहि विलोकत अतिअनुरागे
सहज सनेह विवश रघुराई ❁ पूंछेउ कुशल निकट बैठाई
नाथ कुशल पद पंकज देखे ❁ भयउ भाग्यभाजन जनलेखे
देव धरणि धन धाम तुम्हारा ❁ मैं जन नीच सहित परिवारा
कृपाकरिय पुर धारिय पाऊ ❁ थापिय जन सबलोग सिहाऊ
कहेउ सत्य सब सखा सुजाना ❁ मोहिं दीन्ह पितुआयसु आना

दो० वर्ष चारिदश वासवन, मुनिव्रत वेष अहार।
ग्रामवासनहिंउचित सुनि, गुहहि भयो दुखभार॥

राम लषण सियरूप निहारी ❁ कहहिं सप्रेम नगर नरनारी
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे ❁ जिन पठये वन बालक ऐसे
एक कहहिं भूपति भलकीन्हा ❁ लोचनलाहु हमहिं जिन दीन्हा
तब निषादपति उर अनुमाना ❁ तरु शिंशपा मनोहर जाना
लै रघुनाथहिं ठौर बतावा ❁ कहेउ राम सबभांति सुहावा
पुरजन करि जुहार गृह आये ❁ रघुवर सन्ध्याकरन सिधाये

१ गंगा २ रास्ता ३ पवित्र ४ रचते ५ चतुर ६ आज्ञा ७ लाभ ८ सिरसा॥

गुह सँवारि साथरी बनाई ❀ कुशकिसलय मृदु परमसुहाई
शुचिफल मूल मृदुल मधुजानी ❀ दोना भरिभरि राखेसि आनी

दो० सिय सुमन्त्र भ्रातासहित, कंदमूल फल खाइ।
शयन कीन्ह रघुवंशमणि, पायँ पलोटत भाइ॥

उठे लषण प्रभु सोवत जानी ❀ कहि सचिवहिं सोवन मृदुबानी
कछुकदूरि सजि बाणशरासन ❀ जागन लगे बैठि वीरासन
गुह बुलाइ पाहरू[1] प्रतीती ❀ ठांव ठांव राखे अति प्रीती
आप लषण पहँ बैठेउ जाई ❀ कटि[3] भार्थों[4] शर[5] चाप चढ़ाई
सोवत प्रभुहि निहारि निषादा ❀ भयउ प्रेमवश हृदय विषादा
तनु पुलकित लोचन जलबहई ❀ वचनसप्रेम लषणसन कहई
भूपति भवन सुभाय सुहावा ❀ सुरपति सदन[6] न पटतर आवा
मणिमय रचित चारु चौवारे ❀ जनु रतिपति[7] निजहाथ सँवारे

दो० शुचिसुविचित्रसुभोगमय, सुमन सुगन्ध सुवास।
पलँग मंजु मणिदीप जहँ, सबविधिसकलसुपास॥

विविध वसन उपधान[8] तुराई ❀ क्षीरफेनु मृदु विशद सुहाई
तहँसियराम शयननिशिकरहीं ❀ निजछवि रतिमनोज मदहरहीं
ते सियराम साथरी सोये ❀ अमितवसनबिनु जाहिं न जोये
मातु पिता परिजन पुरवासी ❀ सखासुशील दास अरु दासी
जुगवहिं जिनहिं प्राणकी नाईं ❀ महि सोवत सोइ राम गुसाईं
पिता जनक जगविदित प्रभाऊ ❀ श्वशुर सुरेश सखा रघुराऊ
रामचन्द्र पति सो वैदेही ❀ महि सोवत विधिवाम न केही
सिय रघुवीर कि कानन योगू ❀ कर्म प्रधान सत्यकह लोगू

दो० केकयनन्दिनिमन्दमति, कठिनकुटिलपनकीन्ह।
जेहिंरघुनन्दनजानकिहिं, सुख अवसर दुखदीन्ह॥

भइ दिनकरकुल विटपकुठारी ❀ कुमति कीन्ह सब विश्वदुखारी

१ सोये २ रखवारे ३ कमर ४ तरकस ५ बाण ६ गृह ७ कामदेव ८ तकिया॥

भयउ विषाद निषादहि भारी ❀ राम सीय महि शयन निहारी
बोले लषण मधुर मृदुबानी ❀ ज्ञान विराग भक्ति रससानी
कोउ न काहु दुख सुखकर दाता ❀ निज कृत कर्म भोग सब भ्राता
योग वियोग भोग भल मन्दा ❀ हित अनहित मध्यम भ्रमफन्दा
जन्म मरण जहँलागि जगजालू ❀ सम्पति विपति कर्म अरु कालू
धरणि धाम धन पुर परिवारू ❀ स्वर्ग नरक जहँलागि व्यवहारू
देखिय सुनिय गुनिय मनमाहीं ❀ मोहमूल परमारथ नाहीं

दो० सपने होहि भिखारि नृप, रंक नाकपति होइ।
जागे लाभ न हानि कछु, तिमि प्रपंच जिय जोइ॥

अस विचारि नहिं कीजिय रोषू ❀ बादि काहु नहिं दीजिय दोषू
मोह निशा सब सोवनहारा ❀ देखहिं स्वप्न अनेक प्रकारा
यहि जग यामिनि जागहिं योगी ❀ परमारथी प्रपंच वियोगी
जानिय तबहिं जीव जगजागा ❀ जब सब विषय विलास विरागा
होइ विवेक मोह भ्रम भागा ❀ तब रघुवीर चरण अनुरागा
सखा परम परमारथ एहू ❀ मन क्रम वचन रामपद नेहू
राम ब्रह्म परमारथ रूपा ❀ अविगत अलख अनादि अनूपा
सकल विकार रहित मत भेदा ❀ कहि नित नेति निरूपहिं वेदा

दो० भक्त भूमि भूसुर सुरभि, सुरहित लागि कृपाल।
करत चरित धरि मनुज तनु, सुनत मिटैं जगजाल॥

सखा समुझि अस परिहरि मोहू ❀ सिय रघुवीर चरण रत होहू
कहत राम गुण भा भिनुसारा ❀ जागे जग मंगल दातारा
सकल शौच करि राम नहाये ❀ शुचि सुजान वटक्षीर मँगाये
अनुज सहित शिर जटा बनाये ❀ देखि सुमन्त्र नयन जलछाये
हृदय दाह अति वदन मलीना ❀ कह करजोरि वचन अतिदीना
नाथ कहेउ अस कोशल नाथा ❀ लै रथ जाहु राम के साथा
वन दिखाइ सुरसरि नहवाई ❀ आनेहु वेगि फेरि दोउ भाई

१ इन्द्र २ क्रोध ३ रात्रि ४ अदेख ५ विप्र ६ दूध ७ छोटा भाई ८ गंगाजी॥

राम लषण सिय आनेहु फेरी ❁ संशय सकल सँकोच निवेरी
दो० नृपअस कहेउ गुसाइँ जस, कहिय करौं बलिसोइ।
करिविनती पायँन परेउ, दीन बाल जिमिरोइ॥
तात कृपा करि कीजिय सोई ❁ जाते अवध अनाथ न होई
मन्त्रिहि राम उठाय प्रबोधा ❁ तात धर्म्म मगु तुम सब शोधा
शिबि दधीचि हरिचन्द नरेशा ❁ सहे धर्म हित कोटि कलेशा
रन्तिदेव बलि भूप सुजाना ❁ धर्म धरेउ सहि संकट नाना
धर्म्म न दूसर सत्य समाना ❁ आगम निगम पुराण बखाना
मैं सोइ धर्म सुलभ करि पावा ❁ तजे सो तिहुँपुर अपयश छावा
सम्भावित[3] कहँ अपयश लाहू ❁ मरण कोटि सम दारुण[4] दाहू
तुम सन तात बहुत का कहऊं ❁ दिये उतर पुनि पातक लहऊं
दो० पितुपदगहिकहिकोटिविधि, विनयकरबकरजोरि।
चिन्ता कवनिहुँ बात की, तातकरियजनिमोरि॥
तुम पुनि पितु समान हितमोरे ❁ विनती करौं तात करजोरे
सब विधि सोइ करतब्य तुम्हारे ❁ दुख न पाव नृप शोच हमारे
सुनि रघुनाथ सचिव सम्बादू ❁ भयउ सपरिजन बिकलनिषादू
पुनि कछु लषण कहेउ कटुबानी ❁ प्रभु वरजेउ बड़अनुचितजानी
सकुचि राम निज शपथ[5] दिवाई ❁ लषण सँदेश कहब जनिजाई
कह सुमन्त्र पुनि भूप सँदेशू ❁ सहिनसकिहिसियाविपिन[6]कलेशू
जेहिविधि अवध आवफिरिसीया ❁ सोइ रघुनाथ तुमहिं करनीया
नतरु[7] निपट अवलम्ब विहीना ❁ मैं न जियबजिमिजलबिनुमीना[8]
दो० मैके ससुरे सकल सुख, जबहिं जहां मनमान।
तब तहँ रहब सुखेन सिय, जबलगिविपतिबिहान॥
विनती कीन्ह भूप जेहि भांती ❁ आरति प्रीति न सो कहिजाती
पितु सँदेश सुनि कृपानिधाना ❁ सियहिंदीन्हशिपकोटिविधाना

१ राजा २ कलंक ३ प्रतिष्ठित ४ कठिन ५ सौगन्द ६ वन ७ नहीं तो ८ मछली॥

सासु ससुर गुरु प्रिय परिवारू ❋ फिरहु तो सबकर मिटै खँभारू
सुनि पतिवचन कहति वैदेही ❋ सुनहु प्राणपति परमसनेही
प्रभु करुणामय परम विवेकी ❋ तनुतजिछांह रहत किमिछेकी
प्रभा जाइ कहँ भानु विहाई ❋ कहँ चन्द्रिका चन्द्र तजि जाई
पतिहि प्रेममय विनय सुनाई ❋ कहत सचिवसन गिरासुहाई
तुम पितु श्वशुरसरिस हितकारी ❋ उतरु देउँ फिरि अनुचितभारी

दो० आरत वश सम्मुख भइउँ, बिलग न मानब तात ।
आरँयसुत पदकमल बिनु, बादि जहांलगि नात ॥

पितु वैभर्वविलास मैं दीठा ❋ नृपमणिमुकुट मिलतपदपीठा
सुखनिधान अस पितुगृह मोरे ❋ पतिविहीन मन भाव न भोरे
श्वशुर चक्रवै कोशलराऊ ❋ भुवन चारिदश प्रकटप्रभाऊ
आगे है जेहि सुरपँति लेई ❋ अर्द्ध सिंहासन आसन देई
श्वशुर एतादृश अवध निवासू ❋ प्रिय परिवार मातुसम सासू
बिनु रघुपति पद पँद्म परागा ❋ मोहिंकोउसपनेहुसुखदनलागा
अगमपन्थँ वन भूमि पहारा ❋ करि केहरि सर सरित अपारा
कोल किरात कुरंग विहंगा ❋ मोहिं सब सुखद प्राणपतिसंगा

दो० सासुससुरसन मोरिहुति, विनय करब परिपाय ।
मोरशोच जनिकरियकछु, मैं वन सुखी सुभाय ॥

प्राणनाथ प्रिय देवर साथा ❋ वीर धुरीण धरे धनु भार्था
नहिं मगश्रम भ्रम दुख मन मोरे ❋ मोहिंलगिशोचकरियजनिभोरे
सुनि सुमन्त्र सियशीतलबानी ❋ भयेविकल जनु फँणिमणिहानी
नयन न सूझ सुनै नहिं काना ❋ कहि न सकैकछुअतिअकुलाना
राम प्रबोध कीन्ह बहुभांती ❋ तदपि होइ नहिं शीतलछाती
यतन अनेक साथ हित कीन्हा ❋ उचित उतर रघुनन्दन दीन्हा
मेटि जाय नहिं राम रजाई ❋ कठिनकर्म्मगति कछु न बसाई

१ दुःख २ किरण ३ पति ४ ऐश्वर्य ५ इन्द्र ६ कमल ७ मार्ग ८ तरकस ६ सर्प ॥

राम लषण सिय पद शिरनाई ❀ फिरेउ वणिक जिमि मूरगँवाई

दो॰ रथ हांके हय राम तन, हेरि हेरि हिहिनाहिं ।
देखिनिषादविषादवश, शिरधुनिधुनि पछिताहिं ॥

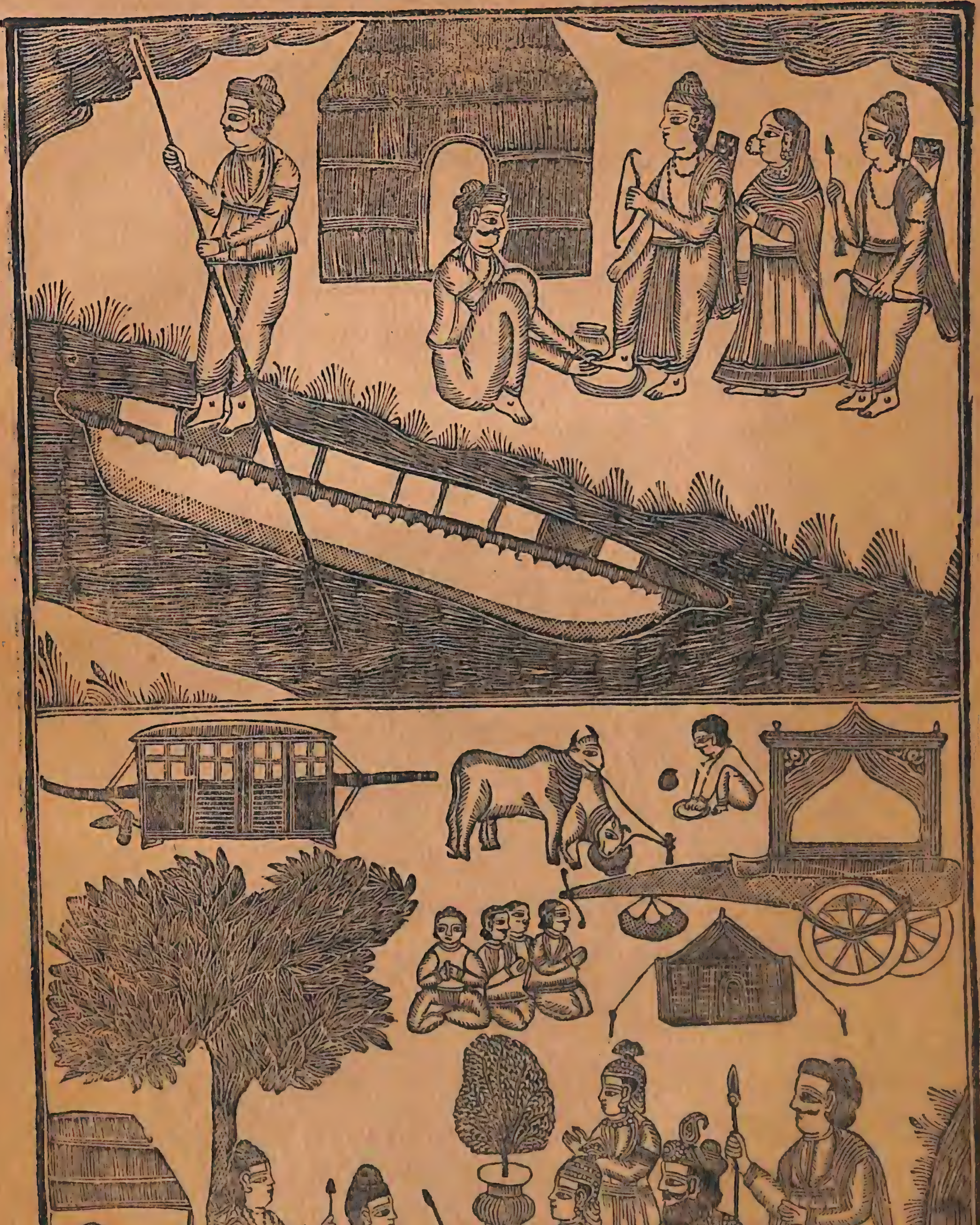
जासु वियोग विकल पशु ऐसे ❀ प्रजा मातु पितु जीवहिं कैसे
बरबस राम सुमन्त्र पठाये ❀ सुरसरि तीर आपु चलिआये
मांगी नाव न केवट आना ❀ कहै तुम्हार मर्म मैं जाना
चरणकमल रजकहँ सब कहई ❀ मानुषकरणि मूरि कछुअहई
छुवत शिला भइ नारि सुहाई ❀ पाहन ते न काठ कठिनाई
तरणिउँ मुनिघरणी ह्वै जाई ❀ बाट परै मोरि नाव उड़ाई
यहिप्रतिपालों सब परिवारू ❀ नहिं जानौं कछु और कबारू
जो प्रभु अवशि पारगा चहहू ❀ तौ पदपद्म पखारन कहहू

छं॰ पदपद्म धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं ।
मोहिं शपथ राउरि आन दशरथ बात सब सांची कहौं ॥
बरु तीर मारहु लषण पै जबलगि न पांव पखारिहौं ।
तबलगि न तुलसीदास नाथ कृपालु पार उतारिहौं ॥

सो॰सुनि केवट के बयन, प्रेम लपेटे अटपटे ।
बिहँसे करुणा अयन, चितै जानकी लषणतन ॥

कृपासिन्धु बोले मुसुकाई ❀ सोइ करहु जेहि नाव न जाई
वेगि आनि जल पांव पखारू ❀ होत विलम्ब उतारहु पारू
जासु नाम सुमिरत यकबारा ❀ उतरहिं नर भवसिन्धु अपारा
सो कृपालु केवटहि निहोरा ❀ जेहिं किय जग तिहुँपगते थोरा
पदनख निरखि देवसरि हरषी ❀ सुनि प्रभुवचन मोहमतिकरषी
केवट राम रजायसु पावा ❀ पानि कठौता भरि लै आवा
अतिआनन्द उमँगि अनुरागा ❀ चरणसरोज पखारन लागा
वरषि सुमन सुर सकल सिहाहीं ❀ यहिसम पुण्यपुञ्ज कोउ नाहीं

१ घोड़ा २ गंगाजी ३ आप की ४ धोलो ५ देर ६ संसारसागर ७ आशा ८ कमल ॥



दो० पदपखारि जलपानकरि, आपु सहित परिवार।
पितरपारकरि प्रभुहिंपुनि, मुदित गयउ लैपार॥
उतरि ठाढ़ भये सुरसरि रेता ❀ सीय राम गुहं लषण समेता
केवट उतरि दण्डवत कीन्हा ❀ प्रभु सकुचे कछु याहि न दीन्हा
पिय हियकी सिय जाननहारी ❀ मणिसुँदरी मन मुदित उतारी
कहेउ कृपालु लेहु उतराई ❀ केवट चरण गहेउ अकुलाई
नाथ आजु हम काह न पावा ❀ मिटे दोष दुख दारिद दावा
अमित काल मैं कीन्ह मँजूरी ❀ आजु दीन्ह विधि सब भरिपूरी
अब कछु नाथ न चाहिय मोरे ❀ दीनदयालु अनुग्रह तोरे
फिरतिबार जो कछु मोहिं देबा ❀ सो प्रसाद मैं शिर धरि लेबा
दो० बहुत कीन्ह प्रभु लषण सिय, नहिं कछु केवटलेइ।
बिदा कीन्ह करुणायतन, भक्तिविमलवर देइ॥
तब मज्जन करि रघुकुलनाथा ❀ पूजि पारथी नायउ माथा
सिय सुरसरिहि कहेउ करजोरी ❀ मातु मनोरथ पुरवहु मोरी
पति देवर सँग कुशल बहोरी ❀ आइ करौं जेहि पूजा तोरी
सुनि सिय विनय प्रेमरससानी ❀ भइ तब विमल वारि वरबानी
सुनु रघुवीर प्रिया वैदेही ❀ तव प्रभाव जगविदित न केही
लोकप होहिं विलोकत तोरे ❀ तोहिं सेवहिं सब सिधि करजोरे
तुम जो हमहिं बड़ि विनय सुनाई ❀ कृपा कीन्ह मोहिं दीन्ह बड़ाई
तदपि देवि मैं देउँ अशीशा ❀ सफल होनहित निजवागीशा
दो० प्राणनाथ देवर सहित, कुशल कोशलां आइ।
पूजिहि सब मनंकामना, सुयश रहिहि जगछाइ॥
गङ्ग वचन सुनि मङ्गलमूला ❀ मुदित सीय सुरसरि अनुकूला
तब प्रभु गुहहिं कहा घरजाहू ❀ सुनत सूखमुख भा उरदाहू
दीन वचन गुह कह करजोरी ❀ विनय सुनियरघुकुलमणिमोरी

१ प्रसन्न २ केवट ३ अग्नि ४ कृपा ५ अयोध्या ६ इच्छा ७ जलन ८ बिनती॥

नाथ साथ रहि पन्थ[१] दिखाई ❀ करि दिन चारि चरण सेवकाई
जेहि वन जाइ रहब रघुराई ❀ पर्णकुटी मैं करब सुहाई
तब मोकहँ जस देब रजाई[२] ❀ सो करिहौं रघुबीर दुहाई
सहज सनेह राम लखि तासू ❀ सङ्गलीन्ह गुह हृदय हुलासू
पुनि गुहज्ञाति बोलि सब लीन्हें ❀ करि परितोष बिदा सब कीन्हें

दो० तबगणपतिशिवसुमिरिप्रभु, नाइसुरसरिहि माथ।
सखाअनुज सियसहितवन, गमनकीन्हरघुनाथ॥

तेहि दिन भयउ विटप[३]तरवासू ❀ लषणसखा सब कीन्ह सुपासू
प्रात प्रातकृत करि रघुराई ❀ तीरथराज[४] दीख प्रभु जाई
सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी ❀ माधव सरिस मीत हितकारी
चारि पदारथ भरा भँडारू ❀ पुण्य प्रदेश देश अतिचारू
क्षेत्र अगम गढ़ गाढ़ सुहावा ❀ सपनेहु नहिं प्रतिपक्षिन पावा
सेनसकल तीरथवर वीरा ❀ कलुष[५]अनीक[६] दलन रणधीरा
संगम सिंहासन सुठि सोहा ❀ छत्र अक्षयवट मुनिमन मोहा
चमर यमुन अरु गंग तरंगा ❀ देखि होहिं दुखदारिद भंगा

दो० सेवहिंसुकृतीसाधुशुचि[७], पावहिं सब मनकाम।
वन्दी वेद पुराणगण, कहहिं विमलगुणग्राम[८]॥

को कहि सकै प्रयाग प्रभाऊ ❀ कलुष पुंज कुंजर[९] मृगराऊ
अस तीरथपति देखि सुहावा ❀ सुखसागर रघुवर सुखपावा
कहिसियअनुजहिंसखहिंसुनाई ❀ श्रीमुख तीरथराज बड़ाई
करि प्रणाम देखत वनबागा ❀ कहत महातम अति अनुरागा
यहिविधि आइ विलोकेउ वेनी ❀ सुमिरत सकल सुमङ्गल देनी
मुदित नहाइ कीन्ह शिवसेवा ❀ पूजि यथाविधि तीरथदेवा
तब प्रभु भरद्वाज पहँ आये ❀ करत दण्डवत मुनि उरलाये
मुनिमन मोद न कछु कहिजाई ❀ ब्रह्मानन्द राशि जनु पाई

१ रास्ता २ आज्ञा ३ वृक्ष ४ प्रयाग ५ पाप ६ फ़ौज ७ पवित्र ८ समूह ९ हाथी॥

दो० दीन्ह अशीश मुनीश उर, अतिआनँद असजानि।
लोचनगोचर सुकृतफल, मनहुँकियेविधिआनि॥

कुशल प्रश्न करि आसन दीन्हा ❁ पूजि प्रेम परिपूरण कीन्हा
कन्दमूल फल अंकुर नीके ❁ दिये आनि मुनि मनहुँ अमीके
सीय लषण जन सहित सुहाये ❁ अतिरुचि राम मूल फल खाये
भये विगतश्रम राम सुखारे ❁ भरद्वाज मृदु वचन उचारे
आजु सफल तप तीरथ त्यागू ❁ आजु सफल जप योग विरागू
सफल सकल शुभ साधन साजू ❁ राम तुमहिं अवलोकत आजू
लाभ अवधि सुख अवधि न दूजी ❁ तुम्हरे दरश आश सब पूजी
अब करि कृपा देव वर येहू ❁ निज पद सरसिज सहज सनेहू

दो० कर्म्मवचनमनछांड़ि छल, जबलगिजन न तुम्हार।
तबलगिसुखसपनेहुँ नहीं, किये कोटि उपचार॥

सुनि मुनि वचन राम सकुचाने ❁ भाव भक्ति आनन्द अघाने
तब रघुवर मुनि सुयश सुहावा ❁ कोटि भांति कहि सबहिं सुनावा
सो बड़ सो सब गुण गण गेहू ❁ जेहि मुनीश तुम आदर देहू
मुनि रघुवीर परस्पर नवहीं ❁ वचन अगोचरसुख अनुभवहीं
यह सुधिपाइ प्रयाग निवासी ❁ बटु तापस मुनि सिद्ध उदासी
भरद्वाज आश्रम सब आये ❁ देखन दशरथ सुवन सुहाये
राम प्रणाम कीन्ह सबकाहू ❁ मुदित भये लहि लोचन लाहू
देहिं अशीश परम सुखपाई ❁ फिरे सराहत सुन्दरताई

दो० रामकीन्ह विश्रामनिशि, प्रात प्रयाग नहाइ।
चलेसहितसियलषणजन, मुदितमुनिहिंशिरनाइ॥

राम सप्रेम कह्यो मुनि पाहीं ❁ नाथ कहहु हम किहि मगुजाहीं
मुनिमुनिविहँसि रामसन कहहीं ❁ सुगमसकलमगु तुमकहँ अहहीं
साथ लागि मुनि शिष्य बुलाये ❁ सुनि मनमुदित पचासक आये

१ अमृत २ कमल ३ गृह ४ स्थान ५ पुत्र ६ लाभ ७ रात्रि ८ प्रसन्न ॥

सबहि राम पद प्रेम अपारा ❀ सकल कहहिं मगु दीख हमारा।
मुनि वटु चारि संग तब दीन्हे ❀ जिन बहुजन्म सुकृत बड़ कीन्हे
करि प्रणाम मुनि आयसु पाई ❀ प्रमुदित हृदय चले रघुराई
ग्राम निकट जब निसरहिं जाई ❀ देखहिं दरश नारि नर धाई
होहिं सनाथ जन्म फल पाई ❀ फिरहिं दुखित मन संग पठाई

दो० बिदाकीन्ह वटु विनयकरि, फिरे पाइ मनकाम ।
उतरि नहाये यमुन जल, जो शरीरसमश्याम॥

सुनत तीरवासी नर नारी ❀ धाये निजनिज काज बिसारी
राम लषण सिय सुन्दरताई ❀ देखि करहिं निज भाग्य बड़ाई
अति लालसा सबहिं मन माहीं ❀ नाम ग्राम पूंछत सकुचाहीं
जे तिन महँ वय वृद्ध सयाने ❀ तिन करियुक्ति राम पहिंचाने
सकल कथाकहि तिनहिं सुनाई ❀ वनहिं चले पितु आयसुपाई
सुनि सविषाद सकल पछिताहीं ❀ रानी राय कीन्ह भल नाहीं
तेहि अवसर तापस इक आवा ❀ तेज पुंज लघु वयस सुहावा
कवि अलखित गति वेष विरागी ❀ मन क्रम वचन राम अनुरागी

दो० सजलनयन तनुपुलक निज, इष्टदेव पहिंचानि ।
पर्यो धरणितल दण्ड जिमि, दशा न जाय बखानि॥

राम सप्रेम पुलकि उरलावा ❀ परम रंक जनु पारस पावा
मनहुँ प्रेम परमारथ दोऊ ❀ मिलत धरे तनु कह सब कोऊ
बहुरि लषण पायन सो लागा ❀ लीन्ह उठाय उमँगि अनुरागा
पुनि सिय चरण धूरि धरि शीशा ❀ जननिजानिसुतदीन्हअशीशा
कीन्ह निषाद दण्डवत तेही ❀ मिले मुदित लखि राम सनेही
पियत नयन पुट रूप पियूखा ❀ मुदित सुअशनपायजिमिभूखा
पुनि प्रभुपद सरोज शिरनावा ❀ देखि प्रीति रघुवर मन भावा
उरधरि धीर रजायसु पाई ❀ चले मुदित मन अति हर्षाई

१ रास्ता २ द्विजपुत्र ३ मनुष्य ४ समय ५ अवस्था ६ अमृत ७ कमल ॥

राम लषण सियरूप निहारी ❀ शोच सनेह विकल नरनारी
ते पितु मातु कहौ सखि कैसे ❀ जिन पठये वन बालक ऐसे
दो॰ तब रघुवीर अनेक विधि, सखहिसिखावनदीन्ह ।
रामरजायसु शीश धरि, गवन भवन तिहिंकीन्ह॥
पुनि सिय राम लषण करजोरी ❀ यमुनहिं कीन्ह प्रणाम बहोरी
गमने सीय सहित दोउ भाई ❀ रवितनया कर करत बड़ाई
पथिक अनेक मिलहिं मगुजाता ❀ कहहिं सप्रेम देखि दोउभ्राता
राज सुलक्षण अङ्ग तुम्हारे ❀ देखि शोच हिय होत हमारे
मारग चलहु पयादेहि पाये ❀ ज्योतिष झूठ हमारे भाये
अगम पन्थ गिरि काननभारी ❀ तेहि महँ साथ नारि सुकुमारी
करि केहरि वन जाहिं न जोई ❀ हम सँगचलहिं जो आयसु होई
जाब जहां लगि तहँ पहुँचाई ❀ फिरब बहोरि तुमहिं शिरनाई
दो॰ यहिविधि बूझहिं प्रेमवश, पुलकगात जल नैन ।
कृपासिन्धु फेरहिं तिनहिं, करि विनती मृदुबैन ॥
जे पुर ग्राम बसहिं मगु माहीं ❀ तिनहिं नागसुर नगर सिहाहीं
केहि सुकृती केहि घरी बसाये ❀ धन्य पुण्यमय परम सुहाये
जहँ जहँ रामचरण चलिजाहीं ❀ तेहिसमान अमरावति नाहीं
पुण्यपुञ्ज मगु निकट निवासी ❀ तिनहिं सराहहिं सुरपुरवासी
जो भरिनयन विलोकहिं रामहिं ❀ सीतालषणसहित घनश्यामहिं
जे सरसरित राम अवगाहहिं ❀ तिनहिं देवसर सरित सराहहिं
जेहि तरुतर प्रभु बैठहिं जाई ❀ करहिं कल्पतरु तासु बड़ाई
परसि राम पद पद्म परागा ❀ मानति भूरिभूमि निजभागा
दो॰ छांह करहिं घन विबुधगण, वरषहिंसुमन सिहाहिं ।
देखत गिरिवन विहँगमृग, राम चले मगु जाहिं ॥
सीता लषण सहित रघुराई ❀ गांव निकट जब निसरहिं जाई

१ आज्ञा २ यमुना ३ बटोही ४ बन ५ हाथी ६ सिंह ७ इन्द्रपुरी ८ रामचन्द्र ९ पुष्परस॥

सुनि सब बाल वृद्ध नर नारी ❀ चलहिं तुरत गृहकाज विसारी
राम लषण सिय रूप निहारी ❀ पाइ नयनफल होहिं सुखारी
सजलनयन अतिपुलक शरीरा ❀ सबभये मगन देखि दोउ वीरा
वरणि न जाइ दशा तिन केरी ❀ लही रंकै जनु सुरमणि ढेरी
एकहिं एक बोलि शिष देहीं ❀ लोचनलाहु लेहु क्षण येहीं
रामहिं देखि एक अनुरागे ❀ चितवत चले जाहिं सँगलागे
एक नयन मगुछवि उरै आनी ❀ होहिं शिथिल तनमानसबानी

दो० एक देखि वटछांह भलि, डासि मृदुल तृणपात।
कहहिंगँवाइयक्षणकश्रम, गमनबअबहिं कि प्रात॥

एक कलशभरि आनहिं पानी ❀ अँचइय नाथ कहहिं मृदुबानी
सुनि प्रियवचन प्रीति अतिदेखी ❀ रामकृपालु सुशील विशेखी
जानी सीय श्रमितै मन माहीं ❀ घरिक विलम्ब कीन्ह वटैछाहीं
मुदित नारि नर देखहिं शोभा ❀ रूप अनूप देखि मनलोभा
इकटक सब जोवहिं चहुँओरा ❀ रामचन्द्र मुखचन्द्र चकोरा
तरुण तमाल वरण तनुसोहा ❀ देखत काम कोटि मनमोहा
दामिनि वरण लषण सुठि नीके ❀ नखशिख सुभग भावतेजीके
मुनिपट कटिन कसे तूणीरा ❀ सोहत करकमलन धनुतीरा

दो० जटामुकुटशीशनसुभग, उरभुजनयन विशाल।
शरदपर्व विधु वदनवर, लसत स्वेदैकण जाल॥

वरणि न जाइ मनोहर जोरी ❀ शोभाअमितै मोरिमति थोरी
राम लषण सिय सुन्दरताई ❀ सब चितवहिंमनबुधिचितलाई
थके नारि नर प्रेम पियासे ❀ मनहुँ मृगीमृग देखि दियैासे
सीय समीप ग्रामतिय जाहीं ❀ पूछत अतिसनेह सकुचाहीं
बारबार सब लागहिं पाये ❀ कहहिं वचन मृदुसरल सुहाये
राजकुमारि विनय हम करहीं ❀ तियस्वभाव कछु पूछत डरहीं

१ ग़रीब २ हृदय ३ कोमल ४ थकी हुई ५ बरगद ६ पसीना ७ बेहद ८ दीपक ॥

स्वामिनि अविनय क्षमब हमारी ❀ बिलग न मानब जानिगँवारी
राजकुँवर दोउ सहज सलोने ❀ इनते लहि द्युति मरकत सोने
दो० श्यामल गौर किशोर वर, सुन्दर सुषमाऐन ।
शरद शर्वरीनाथ मुख, शरद सरोरुह नैन ॥
कोटि मनोज लजावनहारे ❀ सुमुखि कहहु को अहहिं तुम्हारे
सुनि सनेहमय मञ्जुलबानी ❀ सकुचि सीय मनमहँ मुसुकानी
तिनहिंविलोकिविलोकेउधरणी ❀ दुहुँसकोच सकुचति वरवरणी
सकुचि सप्रेम बाल मृगनयनी ❀ बोली मधुरवचन पिकबयनी
सहज स्वभाव सुभग तनुगोरे ❀ नाम लषण लघु देवर मोरे
बहुरि वदनविधु अंचल ढांकी ❀ पियतन चितै भौंहकरि बांकी
खंजनमंजु तिरीछे नयनन ❀ निजपतिकह्योतिनहिंपियसयनन
भईं मुदित सब ग्राम बधूटी ❀ रंकन रतन राशि जनु लूटी
दो० अतिसप्रेमसियपांयपरि, बहुविधि देहिं अशीश ।
सदासुहागिनि रहहु तुम, जबलगिमहिअहिशीश ॥
पारवती सम पति प्रिय होहू ❀ देवि न हमपर छांड़ब छोहू
पुनि पुनि विनयकरहिं करजोरी ❀ जो यहि मारग फिरिय बहोरी
दरशन देब जानि निज दासी ❀ लखी सीय सब प्रेम पियासी
मधुर वचन कहिकहि परितोषी ❀ जनु कुमुदिनी कौमुदी पोषी
तबहिं लषण रघुवर रुख जानी ❀ पूंछेउ मगु लोगन मृदुबानी
सुनत नारि नर भये दुखारी ❀ पुलकित अंग विलोचन वारी
मिटा मोद मन भये मलीने ❀ विधिनिधिदीन्हलीन्हजनुछीने
समुझि कर्म गति धीरज कीन्हा ❀ शोधिसुगममगुतिनकहिदीन्हा
दो० लषणजानकी सहित वन, गमन कीन्ह रघुनाथ ।
फेरे सब प्रिय वचन कहि, लिये लाइ मन साथ ॥
फिरत नारिनर अति पछिताहीं ❀ दैवहि दोष देहिं मनमाहीं

१ छोट २ खँड़ैचा पक्षी ३ शषनाग ४ कृपा ५ चांदनी ६ खज़ाना ॥

सहित विषाद परस्पर कहहीं ❋ विधि करतब सब उलटे अहहीं
निपट निरंकुश निठुर निशंकू ❋ जेहिंशशिकीन्ह सरुजसकलंकू
रूख कल्पतरु सागर खारा ❋ तेहिं पठये वन राजकुमारा
जोपै इनहिं दीन्ह वनवासू ❋ कीन्ह बादि विधि भोगविलासू
ये बिचरहिं मगु बिनु पदत्राना ❋ रचे बादि विधि वाहन नाना
ये महि परहिं डासि कुश पाता ❋ सुभग सेज कत कीन्ह विधाता
तरुतर वास इनहिं विधि दीन्हा ❋ धवलधाम रचि कत श्रमकीन्हा

दो० जो ये मुनिपटधर जटिल, सुन्दर सुठि सुकुमार ।
विविध भांति भूषणवसन, बादि किये करतार ॥

जो ये कन्दमूल फल खाहीं ❋ बादि सुधादि अशन जगमाहीं
एक कहहिं यह सहज सुहाये ❋ आपु प्रकटभे विधि न बनाये
जहँलगि वेद कहहिं विधिकरणी ❋ श्रवण नयन मनगोचर वरणी
देखहु खोजि भुवन दशचारी ❋ कहँ अस पुरुष कहां अस नारी
इनहिं देखि विधि मन अनुरागा ❋ पटतर योग बनावन लागा
कीन्ह बहुतश्रम एक न आये ❋ तेहि इरषा वन आनि दुराये
एककहहिं हम बहुत न जानहिं ❋ आपुहि परमधन्य करिमानहिं
ते पुनि पुण्य पुंज हम लेखे ❋ जे देखहिं देखिहैं जिन देखे

दो० यहिविधिकहिकहिवचनप्रिय,लेहिंनयनभरिनीर ।
किमिचलिहैं मारग अगम,सुठिसुकुमारशरीर॥

नारि सनेह विकल सब होहीं ❋ चकई सांझसमय जिमि सोहीं
मृदुपद कमल कठिन मगजानी ❋ गहबरि हृदय कहहिं मृदुबानी
परसत मृदुल चरण अरुणारे ❋ सकुचति महि जिमि हृदयहमारे
जो जगदीश इनहिं वन दीन्हा ❋ कस न सुमनमय मारग कीन्हा
जो मांगे पाइय विधि पाहीं ❋ राखिय सखि इन आंखिनमाहीं
जे नर नारि न अवसर आये ❋ ते सिय राम न देखन पाये

१ जूता २ सवारी ३ वृक्ष ४ भोजन ५ समता ६ डाह ७ समूह ८ लाल ॥

सुनि स्वरूप पूंछहिं अकुलाई ❀ अबलगि गये कहांलगि भाई
समरथ धाइ विलोकहिं जाई ❀ प्रमुदित फिरहिं जन्मफलपाई

दो॰ अबला बालक वृद्धजन, कर मींजहिं पछिताहिं ।
होहिं प्रेमवश लोग इमि, राम जहां जहँ जाहिं ॥

गांव गांव अस होहि अनन्दा ❀ देखि भानुकुल कैरवचन्दा
जे कछु समाचार सुनि पावहिं ❀ ते नृप रानिहिं दोष लगावहिं
कहहिं एक अतिभल नरनाहू ❀ दीन्ह हमहिं जिनलोचनलाहू
कहहिं परस्पर लोग लुगाई ❀ बातैं सरल सनेह सुहाई
ते पितु मातु धन्य जिन पाये ❀ धन्य सो नगर जहां ते आये
धन्य सो शैल देश वन गाऊं ❀ जहँ जहँ जाहिं धन्य सो ठाऊं
सुखपायो विरंचि रचि तेही ❀ ये जेहिके सबभांति सनेही
राम लषण सिय कथा सुहाई ❀ रही सकल मग कानन छाई

दो॰ यहिविधिरघुकुलकमलरवि, मगलोगन सुखदेत।
जाहिंचले देखत विपिन, सियसौमित्रिसमेत॥

आगे राम लषण पुनि पाछे ❀ तापस वेष विराजत आछे
उभय मध्य सिय शोभित कैसी ❀ ब्रह्म जीव विच माया जैसी
बहुरि कहौं छवि जस मन बसई ❀ जनु मधु मर्दन मध्य रति लसई
उपमा बहुरि कहौं जिय जोही ❀ जनुबुधविधु विच रोहिणिसोही
प्रभु पदरेख बीच विच सीता ❀ धरहिं चरण मग चलत सभीता
सीय राम पद अंक बराये ❀ लषण चलहिं मग दाहिन बांये
राम लषण सिय प्रीति सुहाई ❀ वचन अगोचर किमिकहिजाई
खग मृग मगन देखि छविहोहीं ❀ लिये चोरि चित राम बटोहीं

दो॰ जिनजिनदेखेपथिकप्रिय, सीय सहित दोउभाइ ।
भव मग अगम अनन्दते, बिनु श्रम रहे सिराइ ॥

अजहुँ जासु उर सपनेहुँ काऊ ❀ बसहिं राम सिय लषण बटाऊ

१ स्त्रियां २ कुमुद ३ पर्वत ४ ब्रह्मा ५ वन ६ दोनों ७ बसन्त ८ कामदेव ९ कामदेव की स्त्री १० चिह्न ॥

राम धाम पथ जाइहि सोई ❀ जो पथ पाव कबहुँ मुनिकोई
तब रघुवीर श्रमित सिय जानी ❀ देखि निकट वट शीतल पानी
तहँ बसि कन्दमूल फल खाई ❀ प्रात नहाय चले रघुराई
देखत वन सर शैल सुहाये ❀ बालमीकि आश्रम प्रभुआये
राम दीख मुनि वास सुहावन ❀ सुन्दर गिरि कानन जलपावन
सरन सरोज विटप वन फूले ❀ गुंजत मंजु मधुप रस भूले
खग मृग विपुलकुलाहल करहीं ❀ रहित वैर प्रमुदित मन चरहीं

दो॰ शुचिसुन्दरआश्रमनिरखि, हरषे राजिव नैन।
सुनि रघुवर आगमन मुनि, आगे आये लैन॥

मुनि कहँ राम दण्डवत कीन्हा ❀ आशिरवाद विप्रवर दीन्हा
देखि राम छवि नयन जुड़ाने ❀ करि सनमान आश्रमहिं आने
तब मुनि आसन दिये सुहाये ❀ मुनिवरअतिथि प्राणप्रिय पाये
कन्दमूल फल मधुर मँगाये ❀ सिय सौमित्रि राम फल खाये
बालमीकि मन आनँद भारी ❀ मंगल मूरति नयन निहारी
तब करकमल जोरि रघुराई ❀ बोले वचन श्रवण सुखदाई
तुम त्रिकाल दरशी मुनिनाथा ❀ विश्व बदर जिमि तुम्हरेहाथा
अस कहि सब प्रभु कथाबखानी ❀ जेहिजेहि भांति दीन्हवनरानी

दो॰ तात वचन पुनि मातुमत, भाइ भरत अस राउ।
मोकहँ दरश तुम्हार प्रभु, सब ममपुण्यप्रभाउ॥

देखि पांय मुनिराय तुम्हारे ❀ भये सुकृत सब सफल हमारे
अब जहँ राउर आयसु होई ❀ मुनि उद्वेग न पावहिं कोई
मुनि तापस जिनते दुख लहहीं ❀ ते नरेश बिनु पावकै दहहीं
मंगलमूल विप्र परितोषू ❀ दहै कोटि कुल भूसुरै रोषू
अस जिय जानि कहिय सो ठाऊं ❀ सिय सौमित्रि सहित तहँ जाऊं
तहँ रचि रुचिर पर्ण तृण शाला ❀ वास करौं कछु काल कृपाला

१ वृक्ष २ कान ३ बेरफल ४ ऊबना ५ अग्नि ६ विप्र ७ पत्ते॥

सहज सरल सुनि रघुवर बानी ❀ साधुसाधु बोले मुनि ज्ञानी
कस न कहहु अस रघुकुलकेतू ❀ तुम पालक सन्तत श्रुतिसेतू

छं॰ श्रुतिसेतु पालक राम तुम जगदीश माया जानकी।
जो सृजति जग पालतिहरति रुखपाइ कृपानिधानकी॥
जोसहसशीशअहीश महिधरु लषणसचराचर धनी।
सुरकाजहितनरराजतनु धरि दलेनखलनिशिचरअनी॥

सो॰ राम स्वरूप तुम्हार, वचन अगोचर बुद्धिवर।
अविगत अकथअपार, नेतिनेति नितनिगमकह॥

जग पेखन तुम देखनहारे ❀ विधि हरि शम्भु नचावनहारे
तेउ न जानहिं मर्म्म तुम्हारा ❀ अपर तुमहिं को जाननहारा
सो जानै जेहि देहु जनाई ❀ जानत तुमहिं तुमहिं ह्वै जाई
तुम्हरी कृपा तुमहिं रघुनन्दन ❀ जानहिं भक्त भक्ति उरचन्दन
चिदानन्दमय देह तुम्हारी ❀ विगत विकार जान अधिकारी
नरतनु धरेहु सन्त सुरकाजा ❀ कहहु करहु जस प्राकृत राजा
राम देखि सुनि चरित तुम्हारे ❀ जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे
तुम जो कहहु करहु सब सांचा ❀ जस काछिय तस चाहिय नाचा

दो॰ पूछेउ मोहिं कि रहौं कहँ, मैं कहतेउ सकुचाउँ।
जहँ न होहु तहँ देहुँ कहि, तुमहिं दिखावौं ठाउँ॥

सुनि मुनि वचन प्रेम रससाने ❀ सकुचि राम मनमहँ मुसुकाने
बालमीकि हँसि कहहिं बहोरी ❀ वाणी मधुर अमिय³ रसबोरी
सुनहु राम अब कहौं निकेता⁴ ❀ बसहु जहां सिय लषण समेता
जिनके श्रवण समुद्र समाना ❀ कथा तुम्हारि सुभग सरिनाना
भरहिं निरन्तर होहिं न पूरे ❀ तिनके हिये सदन तव⁵ रूरे
लोचन चातक जिन करि राखे ❀ रहहिं दरश जलधर⁶ अभिलाखे
निदरहिं सिन्धु सरित सरवारी ❀ रूप बुन्द जल होहिं सुखारी

१ उत्पन्न करती २ नाशकरना ३ अमृत ४ गृह ५ तुम्हारे ६ बादल॥

तिनके हृदय सदन सुखदायक ❀ बसहु लषण सिय सह रघुनायक

दो० यशतुम्हार मानसविमल, हंसिनि जीहा[1] जासु ।
मुक्काहल[2] गुणगण चुगहिं, बसहु राम हिय तासु ॥

प्रभु प्रसाद शुचि सुभग सुवासा ❀ सादर जासु लहै नितनासा
तुमहिं निवेदित भोजन करहीं ❀ प्रभुप्रसाद पट भूषण[3] धरहीं
शीश नवहिं सुरगुरु द्विज देखी ❀ प्रीतिसहितकरि विनयविशेखी
कर[4] नित करहिं रामपद पूजा ❀ राम भरोस हृदय नहिं दूजा
चरण राम तीरथ चलि जाहीं ❀ राम बसहु तिनके मन माहीं
मंत्रराज नित जपहिं तुम्हारा ❀ पूजहिं तुमहिं सहित परिवारा[5]
तर्पण होम करहिं विधिनाना ❀ विप्र जेंवाइ देहिं बहु दाना
तुमते अधिक गुरुहि जियजानी ❀ सकल भाव सेवहिं सनमानी

दो० सब कर मांगहिं एकफल, रामचरण रति होउ ।
तिनके मन मन्दिर बसहु, सिय रघुनन्दन दोउ ॥

काम क्रोध मद मान न मोहा ❀ लोभ न क्षोभ न राग न द्रोहा
जिनके कपट[6] दम्भ[7] नहिं माया ❀ तिनके हृदय बसहु रघुराया
सबके प्रिय सबके हितकारी ❀ दुख सुख सरिस प्रशंसागारी
कहहिं सत्य प्रियवचन विचारी ❀ जागत सोवत शरण तुम्हारी
तुमहिं छांड़ि गति दूसरि नाहीं ❀ राम बसहु तिनके मन माहीं
जननी[8] सम जानहिं परनारी ❀ धन पराय विषते विषभारी
जे हरषहिं पर सम्पति देखी ❀ दुखित होहिं पर विपतिविशेखी
जिनहिं राम तुम प्राण पियारे ❀ तिनके मन शुभसदन तुम्हारे

दो० स्वामिसखा पितुमातु गुरु, जिनके सब तुम तात ।
तिनके मन मन्दिर बसहु, सीयसहित दोउभ्रात[9]॥

अवगुण तजि सबके गुण गहहीं ❀ विप्र धेनु हित संकट सहहीं
नीतिनिपुण जिनकीजगलीका ❀ घर तुम्हार तिनके मननीका

१ जीभ २ मोती ३ गहना ४ हाथ ५ कुटुम्ब ६ छल ७ पाखण्ड ८ माता ९ भाई ॥

गुण तुम्हार समुझहिं निजदोसू ❀ जेहि सब भांति तुम्हार भरोसू
रामभक्त प्रिय लागहिं जेही ❀ तेहि उर बसहु सहित वैदेही
जाति पांति धन धर्म्म बड़ाई ❀ प्रिय परिवार सदन समुदाई
सब तजि तुमहिं रहै लवलाई ❀ तिनके हृदय बसहु रघुराई
स्वर्ग्ग नरक अपवर्ग्ग समाना ❀ जहँ तहँ दीखधरे धनुबाना
मनक्रम वचन जो राउर चेरा ❀ राम करहु तिनके मन डेरा

दो॰ जाहि न चाहियकबहुँकछु, तुमसन सहज सनेह।
बसहु निरन्तर तासु उर, सो राउर निज गेह॥

यहिविधि मुनिवर ठाउँ दिखाये ❀ वचन सप्रेम राम मन भाये
कह मुनि सुनहु भानुकुलनायक ❀ आश्रमकहौं समय सुखदायक
चित्रकूट गिरि करहु निवासू ❀ तहँ तुम्हार सब भांति सुपासू
शैल सुहावन कानन चारू ❀ करि केहरि मृग विहँग विहारू
नदी पुनीत पुराण बखानी ❀ अत्रितीय निज तपबलआनी
सुरसरिधार नाम मन्दाकिनि ❀ जो सब पातकपोतंक डाकिनि
अत्रि आदि मुनिवर तहँबसहीं ❀ करहिं योग जप तप तनुकसहीं
चलहु सफल श्रम सबकर करहू ❀ राम देहु गौरव गिरिवरहू

दो॰ चित्रकूट महिमा अमित, कही महामुनि गाय।
आइ नहाने सरितवर, सीयसहित दोउभाय॥

रघुवर कहेउ लषण भलघाटू ❀ करहु कतहुँ अब ठाहर ठाटू
लषण दीख पै उतर करारा ❀ चहुँदिशिफिस्योधनुषजिमिनारा
नदी पनच शर शम दम दाना ❀ सकल कलुषकलि साउंजनाना
चित्रकूट जनु अचल अहेरी ❀ चूक न घात मारु मुठभेरी
असकहि लषण ठाउँ दिखरावा ❀ थलविलोकि रघुपति सुखपावा
रमेउ राम मन देवन जाना ❀ चले सहित सुरपति परधाना
कोल किरात वेष धरि आये ❀ रच्यो पर्णतृण सदन सुहाये

१ मोक्ष २ आपके ३ प्रेम ४ गृह ५ पर्वत ६ वन ७ बया ८ बड़ाई ९ रोदा १० शिकार॥

वरणि न जाहिं मंजु द्वै शाला ❀ एक ललितलघु एक विशाला

दो॰ लषण जानकी सहित प्रभु, राजत पर्णनिकेत ।
सोह मदन मुनिवेष जनु, रति ऋतुराज समेत ॥

अमर नाग किन्नर दिकपाला ❀ चित्रकूट आये तेहि काला
राम प्रणाम कीन्ह सब काहू ❀ मुदित देव लहि लोचन लाहू
वरषि सुमन कह देव समाजू ❀ नाथ सनाथ भये हम आजू
करि विनती दुखदुसह सुनाये ❀ हरषित निज निजगेह सिधाये
चित्रकूट रघुनन्दन छाये ❀ समाचार सुनि सुनि मुनि आये
आवत देखि मुदित मुनिवृन्दा ❀ कीन्ह दण्डवत रघुकुलचन्दा
मुनि रघुवरहिं लाइ उरलेहीं ❀ सफल होनहित आशिष देहीं
सिय सौमित्रि राम छवि देखहिं ❀ साधनसकलसफलकरि लेखहिं

दो॰ यथायोग्य सनमानि प्रभु, बिदा किये मुनिवृन्द ।
करहिं योग जप यज्ञ तप, निजआश्रमनस्वछन्द ॥

यह सुधि कोल किरातन पाई ❀ हरषे जनु नवनिधि घर आई
कन्दमूल फल भरि भरि दोना ❀ चले रंक जनु लूटन सोना
तिन महँ जिन देखे दोउ भ्राता ❀ अपर तिनहिं पूछहिं मगुजाता
कहत सुनत रघुवीर निकाई ❀ आय सबन देखे दोभाई
करहिं जोहारि भेंटधरि आगे ❀ प्रभुहिंविलोकत अति अनुरागे
चित्रलिखे जनु जहँ तहँ ठाढ़े ❀ पुलक शरीर नयन जल बाढ़े
राम सनेह मगन सब जाने ❀ कहि प्रियवचन सकलसनमाने
प्रभुहिं जोहारि बहोरि बहोरी ❀ वचन विनीत कहहिं करजोरी

दो॰ अबहम नाथ सनाथसब, भये देखि प्रभुपाय ।
भाग्य हमारे आगमन, राउर कोशलराय ॥

धन्य भूमि वन पन्थ पहारा ❀ जहँ जहँ नाथ पांव तुम धारा
धन्य विहँग मृग काननचारी ❀ सफल जन्मभये तुमहिं निहारी

१ पत्तों का गृह २ बसन्त ३ गरीब ४ प्रणाम ५ तसवीर ६ पक्षी ॥

हम सब धन्य सहित परिवारा ❀ देखि नयनभरि दरश तुम्हारा
कीन्ह वास भल ठाउँ विचारी ❀ इहां सकलऋतु रहब सुखारी
हम सब भांति करब सेवकाई ❀ करि[1] केहरि[2] अहि[3] बाघ बराई
वन बेहड़ गिरि कन्दर खोहा ❀ सब हमार प्रभु पगपग जोहा[4]
तहँ तहँ तुमहिं अहेर खेलाउब ❀ सर निर्झर[5] सब ठाउँ दिखाउब
हम सेवक परिवार समेता ❀ नाथ न सकुचब आयसु[6] देता

दो० वेदवचन मुनिमन अगम, ते प्रभु करुणाऐन।
वचन किरातनके सुनत, जिमि पितु बालकबैन॥

रामहिं केवल प्रेम पियारा ❀ जानि लेहु जो जाननहारा
राम सकल वनचर पँरितोषे ❀ कहि मृदुवचन प्रेम परिपोषे
बिदा किये शिरनाय सिधाये ❀ प्रभुगुण कहत सुनत घरआये
यहिविधि सीयसहित दोउ भाई ❀ बसहिं विपिन सुरमुनिसुखदाई
जबते आइ रहे रघुनायक ❀ तबते भो वन मंगलदायक
फूलहिंफलहिंविटर्प[8] विधिनाना ❀ ललित मंजु वरबेलि विताना[9]
सुरतरुसरिस स्वभाव सुहाये ❀ मनहुँ विबुधवन परिहरि आये
गुंजत मंजुल मधुकर श्रेनी ❀ त्रिविध बयारि बहै सुखदेनी

दो० नीलकण्ठकलकण्ठशुक, चातक चक्र चकोर।
भांतिभांति बोलहिं विहँग, श्रवणसुखदचितचोर॥

करि केहरि कपि कोल कुरंगा ❀ विगत वैर विहरहिं यकसंगा
फिरत अहेर राम छवि देखी ❀ होहिं मुदित मृगवृन्द विशेखी
विबुध विपिन जहँलगजगमाहीं ❀ देखि राम वन सकल सिहाहीं
सुरसरि सरस्वति दिनकरकन्या ❀ मेकलसुता गोदावरि धन्या
सब सर सिन्धु नदी नद नाना ❀ मन्दाकिनि कर करहिं बखाना
उदय अस्त गिरि अरु कैलासू ❀ मन्दर मेरु सकल सुर वासू
शैल हिमाचल आदिक जेते ❀ चित्रकूट यश गावहिं तेते

१ हाथी २ सिंह ३ सांप ४ ढूंढ़ा ५ झरना ६ आज्ञा ७ प्रसन्नकिये ८ वृक्ष ९ मंडप॥

विन्ध्य मुदितमन सुख न समाई ❀ बिनु श्रम विपुल बड़ाई पाई
दो० चित्रकूट के विहँग मृग, बेलि विटपतृण जाति।
पुण्यपुंज सब धन्य अस, कहहिं देव दिन राति॥
नयनवन्त रघुपतिहि विलोकी ❀ पाइ जन्मफल होहिं विशोकी
परसि चरणरज अचर सुखारी ❀ भये परमपद के अधिकारी
सो वन शैल सुभाय सुहावन ❀ मंगलमय अतिपावन पावन[1]
महिमा कहौं कवन विधि तासू ❀ सुखसागर जहँ कीन्ह निवासू
पयपयोधि[2] तजि अवध विहाई ❀ जहँ सिय राम लषण रहे आई
कहिनसकहिंसुखभाजसकानन ❀ जो शतसहस होहिं सहसानन
सो मैं वरणि कहौं विधि केहीं ❀ डाबर कमठ कि मन्दर लेहीं
सेवहिं लषण कर्म मन वानी ❀ जाइ न शील सनेह बखानी
दो० क्षणक्षण सियलखिरामपद, जानि आपुपर नेह।
करत लषण सपने न चित, बन्धु मातु पितु गेह॥
राम संग सिय रहहिं सुखारी ❀ पुर परिजनगृह सुरति बिसारी
क्षणक्षण पिय विधु वदन निहारी ❀ प्रमुदित मनहुँ चकोर कुमारी
नाह नेह नित बढ़त विलोकी ❀ हरषितरहतिदिवस[3]जिमिकोकी
सिय मन रामचरण अनुरागा ❀ अवधसहस सम वन प्रियलागा
पर्णकुटी प्रिय पीतम संगा ❀ प्रिय परिवार कुरंग[4] विहंगा
सासुससुरसमसुनितियसुनिवर ❀ अशन अमियसम कन्दमूलफर
नाथ साथ साथरी सुहाई ❀ मयन[5] सेज शत सम सुखदाई
लोकप[6] होहिं विलोकत जासू ❀ तेहि किमिमोहै विषय विलासू
दो० सुमिरतरामहिंतजहिंजन, तृणसम[7]विषयविलास।
रामप्रियाजगजननिसिय, कछु न आचरज तास॥
सीयलषणजेहिविधिसुखलहहीं ❀ सोइ रघुनाथ करैं जोइ कहहीं
कहहिं पुरातन कथा कहानी ❀ सुनहिंलषणसियअतिसुखमानी

१ पवित्र २ क्षीरसमुद्र ३ दिन ४ हरिण ५ कामदेव ६ लोकस्वामी ७ तिनुका॥

जब जब राम अवध सुधि करहीं ❀ तब तब वारि विलोचन भरहीं
सुमिरि मातु पितु परिजन भाई ❀ भरत सनेह शील सेवकाई
कृपासिन्धु प्रभु होहिं दुखारी ❀ धीरज धरहिं कुसमय विचारी
लखिसियलषण विकल ह्वैजाहीं ❀ जिमि पुरुषहि अनुहर परिछाहीं
प्रियाबन्धु गति लखि रघुनन्दन ❀ धीर कृपालु भक्त उरचन्दन
लगे कहन कछु कथा पुनीता ❀ सुनिसुखलहहिंलषणअरुसीता

दो० राम लषण सीता सहित, सोहत पर्ण[1]निकेत।
जिमिवासव[2]बस अमरपुर, शची[3] जयन्त समेत॥

जुगवहिं प्रभु सिय अनुज[4]हि कैसे ❀ पलक विलोचन गोलक जैसे
सेवहिं लषण सीय रघुवीरहिं ❀ जिमि अविवेकी पुरुष शरीरहिं
यहिविधि प्रभुवनबसहिंसुखारी ❀ खग मृग सुर तापस हितकारी
कहेउँ राम वन गमन सुहावा ❀ सुनहु सुमंत अवधजिमिआवा
फिरेउ निषाद प्रभुहि पहुँचाई ❀ सचिव सहित रथ देखेउ आई
मन्त्री विकल विलोकि निषादू ❀ कहि न सकहिं जसभयउविषादू
राम राम सिय लषण पुकारी ❀ परेउ धरणितल व्याकुलभारी
देखि दक्षिण दिशि हय[5]हिहिनाहीं ❀ जिमिबिनुपंखविहँगअकुलाहीं

दो० नहिंतृणचरहिंनपियहिंजल, मोच[6]त लोचनवारि।
व्याकुल भयउ निषादपति, रघुवरवाजि निहारि॥

धरिधीरज तब कहहि निषादू ❀ अब सुमन्त परिहरहु विषादू
तुम पण्डित परमारथ ज्ञाता ❀ धरहु धीर लखि वाम विधाता
विविधकथा कहि कहि मृदुबानी ❀ रथ बैठारेउ बरबस आनी
शोकशिथिलरथसकहिं न हांकी ❀ रघुवर विरह पीर उरबांकी
तरफराहिं मगु चलहिं न घोरे ❀ वन मृग मनहुँ आनिरथजोरे
अटकि परहिं फिरिचितवहिंपीछे ❀ राम वियोग विकल दुख तीछे
जो कह राम लषण वैदेही ❀ हिकरि हिकरि हय हेरहिं तेही

१ पत्तोंका गृह २ इन्द्र ३ इन्द्राणी ४ छोटाभाई ५ घोड़े ६ छोड़त ७ त्यागहु॥

वाजिविरहगतिकिमिकहिजाती ❀ बिनुमणिफणीविकलजेहिभांती
दो० भये निषाद विषाद वश, देखत सचिवै तुरंग।
बोलि सुसेवक चारि तब, दिये सारथी संग॥
गुह सारथिहि फिरेहु पहुँचाई ❀ विरह विषाद वरणि नहिं जाई
चले अवध लै रथहि निषादा ❀ होत क्षणहिं क्षण मगनविषादा
शोच सुमन्त विकल दुखदीना ❀ धिक जीवन रघुवीर विहीना
रहिहि न अन्तहु अधम शरीरू ❀ यश न लहेउ बिछुरत रघुवीरू
भयो अयश अघ भाजन प्राना ❀ कौन हेतु नहिं करत पयाना
अहह मन्दमति अवसर चूका ❀ अजहु न हृदय होत दुइटूका
मींजि हाथ शिर धुनि पछिताई ❀ मनहु कृपण धन राशि गँवाई
विरद बांधि वर वीर कहाई ❀ चलेउ सुभट जनु समर पराई
दो० विप्र विवेकी वेद विद, सम्मत साधु सुजाति।
जिमि धोखे मदपानकर, सचिव शोचतेहिभांति॥
जिमि कुलीन तिय साधुसयानी ❀ पति देवता कर्म्म मन वानी
रहै कर्म्म वश परिहरि नाहू ❀ सचिव हृदय तिमि दारुण दाहू
लोचन सजल दृष्टि भइ थोरी ❀ सुनै न श्रवण विकलमतिभोरी
सूखे अधर लागि मुहँलाटी ❀ जिय न जाइ उर अवध कपाटी
विवरण भयउ न जाइ निहारी ❀ मारेसि मनहुँ पिता महतारी
हानिगलानि विपुल मन व्यापी ❀ यमपुर पन्थ शोच जिमिपापी
वचन न आव हृदय पछिताई ❀ अवध काह कहिहौं मैं जाई
राम रहित रथ देखिहि जोई ❀ सकुचिहि मोहिं विलोकतसोई
दो० धाइ पूंछिहहिं मोहिं जब, विकल नगर नरनारि।
उतर देब मैं सबहिं तब, हृदय वज्र बैठारि॥
पुंछिहहिं दीन दुखित सब माता ❀ कहब काह मैं तिनहिं विधाता
पुंछिहहिं जबहिं लषण महतारी ❀ कहिहौं कौन सँदेश सुखारी

१ सर्प २ मन्त्री ३ रथवान् ४ पाप ५ कुच ६ सूम ७ कान ८ ओंठ ९ मार्ग॥

रामजननि जब आइहि धाई ❀ सुमिरि बच्छ जिमि धेनु लवाई
पूंछत उतर देब मैं तेही ❀ गे वन राम लषण वैदेही
जेइ पूंछिहि तेहि उत्तर देबा ❀ जाइ अवध अब यह सुख लेबा
पूंछहिं जबहिं राव दुख दीना ❀ जीवन जासु राम आधीना
देहौं उतर कवन मुहँलाई ❀ आयउँ कुशल कुँवर पहुँचाई
सुनत लषण सिय राम सँदेशू ❀ तृण[1] इव तनु परिहरहिं नरेशू

दो० हृदय न बिदरे[2] तपङ्क[3] जिमि, बिछुरत प्रीतम नीर।
जानतहौं मोहिं दीन्ह विधि, यम यातनाँ[4] शरीर॥

यहि विधि करत पन्थ पछितावा ❀ तमसा तीर तुरत रथ आवा
बिदा किये करि विनय निषादू ❀ फिरे पांय परि विकल विषादू
पैठत नगर सचिव[5] सकुचाई ❀ जनु मारेसि गुरु ब्राह्मण गाई
बैठि विटप तर दिवस गँवावा ❀ सांझ समय तेइँ अवसर पावा
अवध प्रवेश कीन्ह अँधियारे ❀ पैठ भवन रथ राखि दुवारे
जिन जिन समाचार सुनिपाये ❀ भूप द्वार रथ देखन आये
रथ पहिंचानि विकल लखि घोरे ❀ गरहिं गात जिमि आतप[6] ओरे[7]
नगर नारि नर व्याकुल कैसे ❀ निघटत नीर मीनगण जैसे

दो० सचिव आगमन सुनत सब, विकल भयो रनिवास।
भवन भयङ्कर लाग तेहि, मानहुँ प्रेत निवास॥

अति आरत सब पूंछहिं रानी ❀ उतर न आव विकल भइ बानी
सुनै न श्रवण नयन नहिं सूझा ❀ कहहु कहां नृप जेहि तेहि बूझा
दासिन दीख सचिव विकलाई ❀ कौशल्या गृह गईं लिवाई
जाइ सुमन्त दीख कस राजा ❀ अमियँ[8] रहित जस चन्द्र विराजा
अशन[9] न शयन विभूषणहीना ❀ परेउ भूमितल निपट मलीना[10]
भूपति विकल परेउ यहि भांती ❀ सुरपुरते जनु खस्यो ययाती
लेत शोचभरि क्षण क्षण छाती ❀ जनु जरि पङ्ख परेउ सम्पाती

१ तिनुका २ फाटत ३ कीच ४ पीड़ा ५ मंत्री ६ घाम ७ पत्थर ८ अमृत ९ भोजन १० उदास॥

को कहिसकै भूप विकलाई ❋ रघुवर विरह अधिक अधिकाई
राम राम कह राम सनेही ❋ पुनि कह राम लषण वैदेही
दो॰ देखिसचिव जयजीवकहि, कीन्हेसि दण्डप्रणाम।
सुनतउठे व्याकुलनृपति, कहु सुमन्त कहँ राम॥
भूप सुमन्त लीन्ह उरलाई ❋ बूड़त कछु अधार जनु पाई
सहित सनेह निकट बैठारी ❋ पूंछत राव नयन भरि वांरी
राम कुशल कहु सखा सनेही ❋ कहँ रघुनाथ लषण वैदेही
आनेहु फेरि कि वनहिं सिधाये ❋ सुनत सचिव लोचन जल छाये
शोक विकल पुनि पूंछ नरेशू ❋ कहु सिय राम लषण संदेशू
राम रूप गुण शील स्वभाऊ ❋ सुमिरि सुमिरि उर शोचतराऊ
राज्य सुनाइ दीन्ह वनवासू ❋ सुनि मन भयउ न हरषहरासू
सो सुत बिछुरत गयो न प्राना ❋ को पापी जग मोहिं समाना
दो॰ सखा राम सिय लषण जहँ, तहां मोहिं पहुँचाउ।
नाहिंत चाहत चलन अब, प्राण कहौं सतिभाउ॥
पुनि पुनि पूंछत मंत्रिहि राऊ ❋ प्रीतम सुवंन सँदेश सुनाऊ
सुनहु सखा सोइ करिय उपाऊ ❋ राम लषण सिय आनि दिखाऊ
सचिव धीरधरि कहि मृदुबानी ❋ महाराज तुम पण्डितज्ञानी
वीर सुधीर धुरन्धर देवा ❋ साधुसमाज सदा तुम सेवा
जन्ममरण सब दुख सुखभोगा ❋ हानिलाभ प्रियमिलनवियोगा
काल कर्म्म वश होहिं गुसाईं ❋ बरबस राति दिवस की नाईं
सुखहर्षहिं जड़ दुख बिलखाहीं ❋ दोउ सम धीर धरहिं मनमाहीं
धीरज धरहु विवेक विचारी ❋ छांड़िय शोच सकल हितकारी
दो॰ प्रथम वास तमसाभयउ, दूसर सुरसरि तीर।
न्हायरहे जलपान करि, सिय समेत दोउ वीर॥
केवट कीन्ह बहुत सेवकाई ❋ सो यामिनि शृंगबेर गँवाई

१ जल २ राजा ३ पुत्र ४ जुदाई ५ जबर्दस्ती ६ मूर्ख ७ रात्रि॥

होत प्रात वट क्षीर मँगावा ❀ जटामुकुट निज शीश बनावा
राम सखा तब नाव मँगाई ❀ प्रिया चढ़ाइ चढ़े रघुराई
लषण धरे धनु बाण बनाई ❀ आपु चढ़े प्रभु आयसु पाई
विकल विलोकि मोहिं रघुवीरा ❀ बोले मधुर वचन धरिधीरा
तात प्रणाम तात सन कहेऊ ❀ बारबार पद पंकज गहेऊ
करब पायँ परि विनय बहोरी ❀ तात करिय जनि चिन्तामोरी
वन मग मंगल कुशल हमारे ❀ कृपा अनुग्रह पुण्य तुम्हारे

छं०तुम्हरे अनुग्रह तात कानन जात सब सुखपाइहौं।
प्रतिपालि आयसु कुशल देखन पायँ पुनि फिरि आइहौं॥
जननी सकल परितोष करि परि पायँ करि विनती घनी।
तुलसीकरेहुसोइयत्नजेहिविधि कुशलरहकोशलधनी॥

सो० गुरुसनकहबसँदेश, बारबार पद पद्म गहि।
करब सोइ उपदेश, जेहि न शोचमोहिंअवधपति॥

पुरजन परिजन सकल निहोरी ❀ तात सुनायहु विनती मोरी
सोइ सब भांति मोर हितकारी ❀ जाते रह नरनाह सुखारी
कहब सँदेश भरत के आये ❀ नीति न तजब राजपद पाये
पालहु प्रजहि कर्म मन बानी ❀ सेवहु मातु सकल सम जानी
और निबाहब भायप भाई ❀ करि पितु मातु सुजन सेवकाई
तात भांति तेहि राखब राऊ ❀ शोचमोर जेहि करहिं न काऊ
लषण कहेउ कछु वचन कठोरा ❀ बरजि राम पुनि मोहिं निहोरा
बारबार निज शपथ दिवाई ❀ कहब न तात लषण लरिकाई

दो० करिप्रणामकछुकहनालिय,सियभइशिथिलसनेह।
थकितवचन लोचनसजल, पुलकि पल्लवित देह॥

तेहि अवसर रघुवर रुखपाई ❀ केवट पारहि नाव चलाई

१ आज्ञा २ कमल ३ माता ४ राजा ५ बराबर ६ सौगन्द ७ समय॥

रघुकुलतिलक चले यहिभांती ❋ देखेउँ ठाढ़ कुलिश[1] धरिछाती
मैं आपन किमि कहब कलेशू ❋ जियत फिरेउँ लै रामसँदेशू
असकहि सचिव[2] वचन रहिगयऊ ❋ हानिगलानि शोचवश भयऊ
सुनत सुमन्त्र वचन नरनाहू ❋ परेउ धरणि उर दारुण दाहू
तलफत विषम मोह मन मापा ❋ मांजा[3] मनहुँ मीन कहँ व्यापा
करि विलाप सब रोवहिं रानी ❋ महाविपति किमि जाइ बखानी
सुनि विलाप दुखहू दुखलागा ❋ धीरजहू कर धीरज भागा

दो॰ भयोकोलाहल अवधअति, सुनि नृप राउर शोर।
विपुलविहँग[4]वनपरेउनिशि, मानहुँकुलिशकठोर॥

प्राणकण्ठगत भयउ भुवालू ❋ मणिविहीनजिमिव्याकुलव्यालू
इन्द्रियसकल विकल भइँ भारी ❋ जनु सर सरसिजवन बिनुवारी
कौशल्या नृप दीख मलाना ❋ रविकुल रवि अथवत जियजाना
उर धरि धीर राम महतारी ❋ बोलीं वचन समय अनुहारी
नाथसमुझिमन करिय विचारू ❋ राम वियोग पयोधि[5] अपारू
कर्णधार तुम अवधि जहाजू ❋ चढ़ेउ सकल प्रियपथिकसमाजू
धीरज धरिय तो पाइय पारू ❋ नाहिंत बूड़हि सब परिवारू
जो जियधरिय विनय पियमोरी ❋ राम लषण सिय मिलहिं बहोरी

दो॰ प्रियावचनमृदु सुनतनृप, चितयउआंखिउघारि।
तलफतमीनमलीन जनु, सींचत शीतल वारि[6]॥

धरि धीरज उठि बैठ भुवालू ❋ कहु सुमन्त्र कहँ रामकृपालू
कहां लषण कहँ राम सनेही ❋ कहँ प्रिय पुत्रबधू वैदेही
बिलपत राव विकल बहुभांती ❋ भइयुग सरिस सिराति[7] न राती
तापस[8] अन्ध शाप सुधि आई ❋ कौशल्यहि सब कथा सुनाई
भयउ विकल वरणत इतिहासा ❋ राम रहित धिक जीवन श्वासा
सो तनु राखि करब मैं काहा ❋ जेइ न प्रेमप्रण मोर निबाहा

१ वज्र २ मन्त्री ३ नये जलका फेन ४ पक्षी ५ समुद्र ६ जल ७ कटती ८ श्रवण का पिता॥

हा रघुनन्दन प्राण पिरीते ❀ तुमबिनु जियत बहुतदिन बीते
हा जानकी लषण हा रघुवर ❀ हा पितुहितचितचातक[1] जलधर[2]

दो० राम राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम।
तनु परिहरि रघुवर विरह, राव गयो सुरधाम[3]॥

जियन मरण फल दशरथ पावा ❀ अण्ड अनेक अमल यश छावा
जियत राम विधुवदन निहारी ❀ राम विरहमरि मरण सँवारी
शोक विकल सब रोवहिं रानी ❀ रूप शील बल तेज बखानी
करहिं विलाप अनेक प्रकारा ❀ परहिं भूमितल बारहिंबारा
विलपहिं विकल दास अरु दासी ❀ घरघर रुदन करहिं पुरवासी
अथयउ आजु भानुकुल भानू[4] ❀ धर्म्मअवधि गुणरूप निधानू
गारी सकल केकयिहि देहीं ❀ नयन विहीन कीन्ह जगजेहीं
यहिविधि विलपत रैनि बितानी ❀ आये सकल महामुनि ज्ञानी

दो० तब वशिष्ठमुनिसमयसम, कहि अनेक इतिहास।
शोक[5] निवारेउ सबन कर, निज विज्ञान प्रकास॥

तेल नावभरि नृप तनु राखा ❀ दूत बुलाइ बहुरि अस भाखा
धावहु वेगि भरत पहँ जाहू ❀ नृप सुधि कतहुँ कहहुजनिकाहू
इतने कहेउ भरत सन जाई ❀ गुरु बुलाइ पठये दोउ भाई
सुनि मुनि आयसु[6] धावन[7] धाये ❀ चले वेगि वरवाजि[8] लजाये
अनरथ अवध अरंभेउ जबते ❀ कुशकुन होहिं भरतकहँ तबते
देखहिं राति भयानक सपने ❀ जागि करहिं बहुकोटि कलपने
विप्र जेंवाइ देहिं बहु दाना ❀ शिवअभिषेककरहिंविधिनाना
मांगहिं हृदय महेश मनाई ❀ कुशल मातुपितु परिजन भाई

दो० यहिविधि शोचत भरतमन, धावन पहुँचे जाइ।
गुरुअनुशासन श्रवण[9] सुनि, चले गणेश मनाइ॥

चले समीर[10] वेग हय हांके ❀ लांघत सरित[11] शैलवन बांके

१ पपीहा २ बादल ३ वैकुण्ठ ४ सूर्य ५ दुःख ६ आज्ञा ७ दूत ८ घोड़ा ९ कान १० पवन ११ नदी॥

हृदय शोचबड़ कछु न सुहाई ❋ अस जानहिं जिय जाउँ उड़ाई
एक निमेष वर्ष सम जाई ❋ यहिविधि भरतनगर नियराई
अशकुन होहिं नगर पैठारा ❋ रटहिं कुभांति कुखेत करारा
खर शृगाल बोलहिं प्रतिकूला ❋ सुनि सुनि होहि भरत उरशूला
श्रीहत सर सरिता वनबागा ❋ नगर विशेष भयावन लागा
खग मृग हय गय जाहिं न जोये ❋ राम वियोग कुरोग बिगोये
नगर नारि नर निपट दुखारी ❋ मनहुँ सबन सबसम्पति हारी

दो॰ पुरजनमिलहिं न कहहिंकछु, गवहिंजोहारहिंजाहिं।
भरत कुशलपूंछि न सकहिं, भय विषादमनमाहिं॥

हाट बाट नहिं जाइ निहारी ❋ जनुपुर दशदिशि लागि दवॉरी
आवत सुत सुनि केकयनन्दनि ❋ हर्षी रविकुल जलरुह चन्दनि
सजि आरती मुदित उठिधाई ❋ द्वारहि भेंटि भवन लै आई
भरत दुखित परिवार निहारी ❋ मानहुँ तुहिन वैनज वनमारी
कैकेयी हरषित यहि भांती ❋ मनहुँ मुदित दवलाइ किराती
सुतहि सशोच देखि मन मारे ❋ पूंछति नैहर कुशल हमारे
सकल कुशल कहि भरत सुनाई ❋ पूंछी निजकुल कुशल भलाई
कहु कहँ तात कहां सब माता ❋ कहँ सिय राम लषण प्रियभ्राता

दो॰ सुनि सुत वचन सनेहमय, कपट नीर भरि नैन।
भरतश्रवण मन शूलसम, पापिनि बोली बैन॥

तात बात मैं सकल सँवारी ❋ भइ मंथरा सहाय बिचारी
कछुक काज विधि बीच बिगारा ❋ भूपति सुरपतिपुर पगु धारा
सुनत भरत भये विवश विषादा ❋ जनु सहमेउ करि केहरिनादा
तात तात हा तात पुकारी ❋ परेउ भूमितल व्याकुल भारी
चलत न देखन पायउँ तोहीं ❋ तात न रामहिं सौंपेउ मोहीं
बहुरि धीर धरि उठे सँभारी ❋ कहु पितुमरण हेतु महतारी

१ पल २ उलटे ३ शोभाहीन ४ दावानल ५ कमल ६ छल ७ ब्रह्मा ८ कारण॥

सुनि सुत वचन कहत कैकेई ❋ मर्म्म पाँछि जनु माहुरदेई
आदिहि ते सब आपनि करणी ❋ कुटिल कठोर मुदितमन वरणी
दो० भरतहिबिसरेउपितुमरण, सुनत राम वनगौन।
हेतु आपनो जानि जिय, थकित रहे धरिमौन॥
विकलविलोकिसुतहिंसमुझावति ❋ मनहुँ जरे पर लोन लगावति
तात राव नहिं शोचन योगू ❋ बिढ़इ सुकृतयश कीन्हेउ भोगू
जीवत सकल जन्म फल पाये ❋ अन्त अमरपति सदन सिधाये
अस अनुमानि शोच परिहरहू ❋ सहित समाज राज्यपुर करहू
सुनि सुठि सहमेउ राजकुमारा ❋ पाके क्षत जनु लाग अँगारा
धीरज धरि भरि लेहिं उसासा ❋ पापिनि सबहिभांति कुलनासा
जो पै कुरुचि रही अस तोहीं ❋ जन्मत काहे न मारेसि मोहीं
पेड़ काटि तैं पल्लव सींचा ❋ मीन जियनहित वारि उलीचा
दो० हंस वंस दशरथ जनक, राम लषण से भाइ।
जननी तू जननी भई, विधिते कछु न बसाइ॥
जबते कुमति कुमत मन ठयऊ ❋ खंड खंड है हृदय न गयऊ
वर मांगत मन भइ नहिं पीरा ❋ जरि न जीभ मुहँ परेउ न कीरा
भूपप्रतीति तोरि किमि कीन्ही ❋ मरणकालविधिमतिहरिलीन्ही
विधिहु न नारिहृदय गतिजानी ❋ सकल कपट अघअवगुणखानी
सरल सुशील धर्म्मरत राऊ ❋ सो किमि जानहिं तीयस्वभाऊ
अस को जीव जन्तु जगमाहीं ❋ जेहि रघुनाथ प्राण प्रिय नाहीं
भे अति अहित रामतेउ तोहीं ❋ को तू अहसि सत्यकहु मोहीं
जोहसि सोहसि मुहँ मैंसिलाई ❋ आंखि ओट उठिबैठहि जाई
दो० राम विरोधी हृदयते, प्रकटकीन्ह विधि मोहिं।
मो समान को पातकी, बादि कहौं कछु तोहिं॥
सुनि शत्रुघ्न मातु कुटिलाई ❋ जरहिं गात रिस कछु न बसाई

१ पुत्र २ वीर ३ राजा ४ पुण्य ५ गृह ६ छोड़ो ७ घाव ८ माता ९ सींचे १० स्याही॥

तेहि अवसर कुबरी तहँ आई ❋ वसन विभूषण विविध बनाई
लखिरिस भरेउ लषण लघुभाई ❋ बरत अनल[1] घृतआहुति पाई
हुमकि लात तकि कूबर मारा ❋ परिमुहँभरि महि करत पुकारा
कूबर टूटेउ फूट कपारू ❋ दलित[2]दशन[3] मुखरुधिर प्रचारू
अहह दैव मैं काह नशावा ❋ करत नीक फल अनइस पावा
पुनिरिपुहनलखिनखशिखखोंटी ❋ लगे घसीटन धरिधरिझोंटी
भरत दयानिधि दीन्ह छुड़ाई ❋ कौशल्या पहँ गे दोउ भाई

दो० मलिनवसनविवरणविकल, कृश[4] शरीर दुखभार।
कनक[5] कमल वरबेलि वन, मानहुँ हनी तुषार[6]॥

भरतहिं देखि मातु उठि धाई ❋ मूर्च्छित अवनिपरी भहराई
देखत भरत विकल भये भारी ❋ परे चरण तनुदशा बिसारी
मातु तात कहँ देहि दिखाई ❋ कहँ सिय राम लषण दोउभाई
कैकयि कत जनमी जग मांझा ❋ जो जनमी तौ भइ किन बांझा
कुल कलंक जेहिं जनमेउ मोही ❋ अपयश भाजन प्रियजन द्रोही
कोत्रिभुवनमोहिंसरिसअभागी ❋ गतिअसितोरिमातुजेहिलागी
पितु सुरपुर वन रघुकुल केतू ❋ मैं केवल सब अनरथ हेतू
धिक मोहिं भयउँवेणुवन आगी ❋ दुसह दाह दुख दूषणभागी

दो० मातु भरतके वचन मृदु[7], सुनि पुनि उठी सँभारि।
लिये उठाय लगाय उर, लोचन मोचति वारि[8]॥

सरल सुभाय मातु उरलाये ❋ अतिहितमनहुँ राम फिरिआये
भेंटेउ बहुरि लषण लघुभाई ❋ शोक सनेह न हृदय समाई
देखि स्वभाव कहत सब कोई ❋ राममातु अस काहे न होई
माता भरत गोद बैठारे ❋ आंशु पोंछि मृदुवचन उचारे
अजहुँ बच्छ बलि धीरज धरहू ❋ कुसमय समुझि शोक[9] परिहरहू
जनि मानहु जियहानि गलानी ❋ काल कर्मगति अघटित जानी

१ अग्नि २ टूटे ३ दांत ४ दुर्बल ५ सोना ६ पाला ७ कोमल ८ जल ९ दुःख॥

काहुहि दोष देहु जनि ताता ❀ भा मोहिं सबविधि वामविधाता
जो ऐसेहु दुख मोहिं जियावा ❀ अजहुँ को जानै का तेहि भावा
दो० पितु आयसु भूषण वसनं, तात तजे रघुबीर।
विस्मय हर्ष न हृदय कछु, पहिरेउ वल्कल चीर॥
मुख प्रसन्न मन राग न रोषू ❀ सबकर सबविधि करि परितोषू
चले विपिनं सुनिसियसँगलागी ❀ रही न रामचरण अनुरागी
सुनतहि लषण चले लगिसाथा ❀ रहे न यतन किये रघुनाथा
तब रघुपति सबहीं शिरनाई ❀ चले संग सिय अरु लघुभाई
राम लषण सिय वनहिं सिधाये ❀ गई न संग न प्राण पठाये
यह सब भा इन आंखिन आगे ❀ तउ न तजा तनु जीव अभागे
म्वहिं न लाज निजनेह निहारी ❀ राम सरिसंसुत मैं महतारी
जियै मरै भल भूपंति जाना ❀ मोर हृदय शतकुलिशं समाना
दो० कौशल्या के वचन सुनि, भरत सहित रनिवास।
व्याकुल विलपतराजगृह, मानहुँ शोकनिवास॥
विलपहिं विकल भरत दोउ भाई ❀ कौशल्या लिय हृदय लगाई
भांति अनेक भरत समुझाये ❀ कहि विवेकमय वचन सुनाये
भरतहु मातु सकल समुझाई ❀ कहि पुराण श्रुति कथा सुनाई
छलविहीन शुचि सरल सुवाणी ❀ बोले भरत जोरि युग पाणी
जो अघं मातु पिता गुरु मारे ❀ गाइँगोठ महिंसुरपुर जारे
जो अघ तिय बालक बध कीन्हे ❀ मीत महीपति माहुर दीन्हे
जो पातक उपपातक अहहीं ❀ कर्म वचन मन भव कवि कहहीं
ते पातक मोहिं होउ विधाता ❀ जो यह होइ मोर मत माता
दो० जे परिहरि हरि हर चरण, भजहिं भूत गणघोर।
तिनकीगतिमोहिंदेउविधि, जो जननी मतमोर॥
बेचहिं वेद धर्म्म दुहि लेहीं ❀ पिशुनं पराव पाप कहि देहीं

१ वस्त्र २ बन ३ समान ४ राजा ५ बज्र ६ पाप ७ गोशाला ८ ब्राह्मण ९ चुगुल॥

कपटी कुटिल कलहँ प्रिय क्रोधी ❋ वेद विदूषक विश्व विरोधी
लोभी लम्पट लोलुप चारा ❋ जे ताकहिं परधन परदारा
पावउँ मैं तिनकी गति घोरा ❋ जो जननी यह सम्मत मोरा
जे नहिं साधु संग अनुरागे ❋ परमारथ पथँ विमुख अभागे
जे न भजहिं हरि नरतनु पाई ❋ जिनहिं न हरिहर सुयश सुहाई
तजि श्रुति पन्थ वाम पथ चलहीं ❋ वंचकँ विरचि वेष जग छलहीं
तिनकी गति शंकर मोहिं देऊ ❋ जननी जो यह जानौं भेऊ
छं० मन वचन कर्म्म कृपायतनकर दास मैं सुनु मातुरी ।
उर बसत राम सुजान जानत प्रीति अरु छलचातुरी ॥
अस कहत लोचन बहत जल तनु पुलकनखलेखत मही ।
हियलाय लिये बहोरि जननी जानि प्रभुपदरत सही ॥
दो० मातु भरत के वचन सुनि, सांचे सरल स्वँभाय ।
कहत राम प्रिय तात तुम, सदा वचन मनकाय ॥
राम प्राण ते प्राण तुम्हारे ❋ तुम रघुपतिहि प्राणते प्यारे
विधु विष चुवै स्त्रँवै हिम आगी ❋ होइँ वारिचर वाँरि विरागी
भये ज्ञान बरु मिटै न मोहू ❋ तुम रामहिं प्रतिकूल न होहू
मत तुम्हार यह जो जग कहहीं ❋ सो सपनेहुँसुखसुगति न लहहीं
अस कहि मातु भरत हियलाई ❋ थन पयँ स्रवहिं नयन जलछाई
करत विलाप विपुल यहि भांती ❋ बैठे बीति गई सब राती
वामदेव वशिष्ठ मुनि आये ❋ सचिव महाजन सकल बुलाये
मुनि बहुभांति भरत उपदेशे ❋ कहि परमारथ वचन सुदेशे
दो० तात हृदय धीरज धरहु, करहु जो अवसर आजु ।
उठे भरत गुरुवचन सुनि, करन कहेउ सब काजु ॥
नृप तनु वेद विहित नहवावा ❋ परम विचित्र विमान बनावा
गँहि पद भरत मातु सब राखा ❋ रहीं रामदर्शन अभिलाखी

१ लड़ाई २ स्त्री ३ मार्ग ४ छली ५ बानि ६ चुवै ७ जल ८ खिलाफ़ ९ दूध १० पकड़कर॥

चन्दन अगर भार बहु आये ❀ अमित अनेक सुगन्ध सुहाये
सरयु तीर रचि चिता बनाई ❀ जनु सुरपुर सोपान सुहाई
यहि विधि दाह क्रिया सब कीन्हीं ❀ विधिवत न्हाय तिलांजलि दीन्हीं
शोधि सुम्रृति सब वेद पुराना ❀ कीन्ह भरत दशगात्र विधाना
जहँ जस मुनिवर आयसु दीन्हा ❀ तहँ तस सहस भांति सब कीन्हा
भये विशुद्ध दिये सब दाना ❀ धेनु वाजि गज वाहन नाना

दो० सिंहासन भूषण वसन, अन्न धरणि धन धाम।
दिये भरत लहि भूमिसुर, भे परिपूरण काम॥

पितुहित भरत कीन्ह जस करणी ❀ सो मुख लाख जाइ नहिं वरणी
सुदिन शोधि मुनिवर तहँ आये ❀ सकल महाजन सचिव बुलाये
बैठे राजसभा सब जाई ❀ पठये बोलि भरत दोउ भाई
भरत वशिष्ठ निकट बैठारे ❀ नीति धर्म्म मय वचन उचारे
प्रथम कथा सब मुनिवर वरणी ❀ केकयि कुटिल कीन्ह जस करणी
भूप धर्म्म व्रत सत्य सराहा ❀ जेहि तनु परिहरि प्रेम निबाहा
कहत रामगुण शील स्वभाऊ ❀ सजल नयन पुलके मुनिराऊ
बहुरि लषण सिय प्रीति बखानी ❀ शोक सनेह मगन मुनि ज्ञानी

दो० सुनहु भरत भावी प्रबल, बिलखि कहेउ मुनिनाथ।
हानि लाभ जीवन मरण, यश अपयश विधि हाथ॥

अस विचारि केहि दीजिय दोषू ❀ व्यर्थ काहि पर कीजिय रोषू
तात विचार करहु मनमाहीं ❀ शोचयोग्य दशरथ नृप नाहीं
शोचिय विप्र जो वेदविहीना ❀ तजि निज धर्म्म विषय लवलीना
शोचिय नृपति नीति नहिं जाना ❀ जेहि न प्रजा प्रियप्राण समाना
शोचिय वैश्य कृपण धनवानू ❀ जो न अतिथि शिवभक्त सुजानू
शोचिय शूद्र विप्र अपमानी ❀ मुखर मान प्रिय ज्ञान गुमानी
शोचिय पुनि पतिवंचक नारी ❀ कुटिल कलहप्रिय इच्छाचारी

१ बेहद २ सीढ़ी ३ विप्र ४ मंत्री ५ क्रोध ६ सूम ७ निन्दक ८ धृष्ट ९ छलिना॥

शोचिय वटु निज व्रत परिहरई ❀ जो नहिं गुरु आयसु अनुसरई

दो० शोचिय गृही जो मोहवश, करै धर्म्म पथ त्याग ।
शोचिय यती प्रपञ्च रत, विगत विवेक विराग ॥

वैखानस सोइ शोचन योगू ❀ तप विहाय जेहि भावै भोगू
शोचिय पिशुन अकारण क्रोधी ❀ जननि जनक गुरु बन्धु विरोधी
सब विधि शोचिय पर अपकारी ❀ निज तनु पोषक निर्दय भारी
शोचनीय सबही विधि सोई ❀ जो न छांड़ि छल हरिजन होई
शोचनीय नहिं कोशलराऊ ❀ भुवन चारिदश प्रकट प्रभाऊ
भयउ न अहै न होनेउहारा ❀ भूप भरत जस पिता तुम्हारा
विधिहरिहर सुरपति दिशिनाथा ❀ वरणहिं सब दशरथ गुणगाथा
तीनिकाल त्रिभुवन जगमाहीं ❀ भूरिभाग दशरथ समनाहीं

दो० कहहुतात केहिभांतिकोउ, करहि बड़ाई तासु ।
राम लषण तुम शत्रुहन, सरिससुवनँशुचिजासु ॥

सब प्रकार भूपति बड़भागी ❀ बादि विषाद करिय तेहिलागी
यह सुनि समुझि शोच परिहरहू ❀ शिर धरि रायरजायसु करहू
राव राजपद तुम कहँ दीन्हा ❀ पितावचन फुर चाहिय कीन्हा
तजेउ राम जेहि वचनहिं लागी ❀ तनु परिहरेउ राम विरहागी
नृपहि वचनप्रिय नहिं प्रियप्राणा ❀ करहु तात पितु वचन प्रमाणा
करहु शीश धरि भूप रजाई ❀ है तुम कहँ सब भांति भलाई
परशुराम पितु आज्ञा राखी ❀ मारी मातु लोक सब साखी
तनय ययातिहि यौवन दयऊ ❀ पितुआज्ञा अघँ अयश न भयऊ

दो० अनुचितउचितविचारतजि, जे पालहिं पितु बैन ।
ते भाजन सुख सुयश के, बसहिंअमरपतिऐन ॥

अवशि नरेश वचन फुर करहू ❀ पालहु प्रजा शोक परिहरहू
सुरपुर नृप पाइहि परितोषू ❀ तुम कहँ सुकृत सुयश नहिंदोषू

१ तपस्वी २ छोड़के ३ कथा ४ भाग्यशाली ५ पुत्र ६ सच ७ पाप ८ गृह ॥

वेद विहित सम्मत सबहीका ❀ जेहि पितु देइ सो पावै टीका
करहु राज्य परिहरहु गलानी ❀ मानहु मोर वचन हितजानी
सुनि सुख लहव राम वैदेही ❀ अनुचित कहव न पंडित तेही
कौशल्यादि सकल महतारी ❀ तेउ प्रजासुख होहिं सुखारी
मरम तुम्हार राम सब जानहिं ❀ सोसबविधि तुमसन भलमानहिं
सौंपेहु राज्य राम के आये ❀ सेवा करेहु सनेह सुहाये

दो० कीजियगुरुआयेसु अवशि, कहहिंसचिवकरजोरि।
रघुपति आये उचित जस, तब तस करव बहोरि॥

कौशल्या धरि धीरज कहई ❀ पुत्र पथ्य गुरु आयसु अहई
सो आदरिय करिय हितमानी ❀ तजिय विषाद कालगतिजानी
वन रघुपति सुरपुर नरनाहू ❀ तुम यहि भांति तात कदराहू
परिजनप्रजा सचिव कह अँम्बा ❀ तुमहीं सुत सबकर अवलम्बा
लखि विधि वांम काल कठिनाई ❀ धीरज धरहु मातु बलिजाई
शिरधरि गुरु आयसु अनुसरहू ❀ प्रजापालि पुरजन दुखहरहू
गुरुके वचन सचिव अभिनन्दन ❀ सुनत भरतहियहितजनुचन्दन
सुनी बहोरि मातु मृदुबानी ❀ शील सनेह सरल रससानी

छं० सानीसरलरसमातुबानी सुनि भरत व्याकुलभये।
लोचन सरोरुह स्रवत सींचत विरह उर अंकुर नये॥
सो दशा देखत समय तेहि बिसरी सबहि सुधि देहकी।
तुलसी सराहत सकल सादर सींव सहज सनेहकी॥

सो० भरत कमल करजोरि, धर्म्म धुरन्धर धीरधरि।
वचन अमिय जनुबोरि, देत उचित उत्तर सबहिं॥

मोहिं उपदेश दीन्ह गुरु नीका ❀ प्रजा सचिव सम्मत सबहीका
मातु उचित पुनि आयसु दीन्हा ❀ अवशिशीशधरिचाहियकीन्हा

१ भेद २ आज्ञा ३ दुःख ४ कुटुम्बी ५ माता ६ सहारा ७ टेढ़ा ८ सीधी ९ कमल॥

गुरु पितु मातु स्वामि हितबानी ❀ सुनिमनमुदितकरियभलिजानी
उचितकि अनुचितकियेविचारू ❀ धर्म्म जाइ शिर पातक भारू
तुम तो देहु सरल शिष सोई ❀ जो आचरत मोर हितहोई
यद्यपि यह समुझत हौं नीके ❀ तदपि होत परितोष न जीके
अब तुम विनय मोरि सुनिलेहू ❀ मोहिं अनुहरत सिखावन देहू
उत्तर देउँ क्षमब अपराधू ❀ दुखित दोष गुन गनहिं न साधू

दो० पितु सुरपुर सिय राम वन, करनकहहु मोहिंराज ।
यहिते जानहु मोर हित, कै आपन बड़ काज ॥

हित हमार सियपति सेवकाई ❀ सो हरिलीन्ह मातु कुटिलाई
मैं अनुमानि दीख मनमाहीं ❀ आन उपाय मोर हितनाहीं
शोक समाजु राज केहि लेखे ❀ लषण राम सियपद बिनु देखे
बादि वसन बिनु भूषण भारू ❀ बादि विरति बिनु ब्रह्म विचारू
सरुजशरीर बादि सब भोगा ❀ बिनु हरिभक्ति बादि जप योगा
जाय देह बिनु जीव सुखाई ❀ बादि मोर सब बिनु रघुराई
जाउँ राम पहँ आयसु देहू ❀ एकहि आंक मोर हित येहू
मोहिं नृप करि आपन भल चहहू ❀ सो सनेह जड़ता वश कहहू

दो० कैकेयी सुत कुटिल मति, राम विमुख गतलाज ।
तुम चाहत सुख मोह वश, मोहिं से अधमके राज ॥

कहौं सांच सब सुनि पतियाहू ❀ चाहिय धर्म्म शील नरनाहू
मोहिं राज्य हठि देहहु जबहीं ❀ रसाँ रसातल जाइहि तबहीं
मोहिं समान को पापनिवासी ❀ जेहिलागि सीय राम वनवासी
राव राम कहँ कानन दीन्हा ❀ बिछुरत गमन अमरपुर कीन्हा
मैं शठ सब अनरथ कर हेतू ❀ बैठि बात सब सुनउँ सचेतू
बिनु रघुवीर विलोकिय वासू ❀ रहे प्राण सहि जग उपहासू
राम पुनीत विषय रस रूखे ❀ लोलुप भूप भोग के भूखे

१ करते हुये २ धीरज ३ सभा ४ वस्त्र ५ रोगी ६ नीच ७ पृथ्वी ८ पाताल ९ बन ॥

कहँलगि कहउँ हृदय कठिनाई ❀ निदरिकुलिशजेहिलही बड़ाई

दो० कारण ते कारज कठिन, होय दोष नहिं मोर।
कुलिशअस्थिते उपलते, लोह कराल कठोर॥

कैकेयी भव तनु अनुरागे ❀ पामर प्राण अघाइ अभागे
जो प्रिय विरह प्राणप्रिय लागे ❀ देखब सुनब बहुत अब आगे
लषण रामसिय कहँ वन दीन्हा ❀ पठइ अमरपुर पतिहित कीन्हा
लीन्ह बिधवपन अपयश आपू ❀ दीन्हेउ प्रजहिं शोकसन्तापू
मोहिं दीन्ह सुख सुयश सुराजू ❀ कीन्ह केकयी सबकर काजू
यहिते मोर कहा अब नीका ❀ तेहिपर देन कहहु तुम टीका
केकयि जठर[३] जन्मि जगमाहीं ❀ यह मोकहँ कछु अनुचित नाहीं
मोरिबात सब विधिहि बनाई ❀ प्रजा पांच कत करहु सहाई

दो० ग्रह[४]गृहीत पुनि वातवश, तेहि पुनि बीछी मार।
ताहि पियाइय वारुणी[५], कहहु कवन उपचार॥

केकयि सुवन योग जग जोई ❀ चतुरविरंचि[६] रचा मोहिं सोई
दशरथ तनय राम लघुभाई ❀ दीन्ह मोहिं विधि बादि बड़ाई
तुम सब कहहु कढ़ावन टीका ❀ राव रजायसु[७] सब कहँ नीका
उतर देउँ केहि विधि केहि केही ❀ कहहु सुखेन यथा रुचि जेही
मोहिं कुमातु समेत विहाई ❀ कहहु कहिहि को कीन्ह भलाई
मोहिं विनु को सचराचर माहीं ❀ जेहि सिय राम प्राण प्रिय नाहीं
परम हानि सब कहँ बड़ लाहू ❀ अदिन मोर नहिं दूषण काहू
संशय शील प्रेमवश अहहू ❀ सबै उचित सब जो कछु कहहू

दो० राम मातु सुठिसरलचित, मोपर प्रेम विशेखि।
कहहिं स्वभाव सनेह वश, मोरि दीनता देखि॥

गुरु विवेक सागर[८] जग जाना ❀ जिनहिं विश्व कर बदर समाना
मोकहँ तिलकसाजि साजि सोऊ ❀ भाविधिविमुख विमुखसबकोऊ

१ वज्र २ पत्थर ३ पेट ४ ग्रहपीड़ित ५ मदिरा ६ ब्रह्मा ७ आज्ञा ८ समुद्र॥

परिहरि राम सीय जग माहीं ❋ को नहिं कहिहि मोर मत्त नाहीं
सो मैं सुनब सहब सुखमानी ❋ अन्तहु कीच तहां जहँ पानी
डर न मोहिं जगकहिहि कि पोचू ❋ परलोकहु कर नाहिं न शोचू
एकै बड़ि उर दुसह दवोरी ❋ मोहिं लगि भे सियरामदुखारी
जीवन लाहु लषण भल पावा ❋ सब तजि रामचरण मनलावा
मोर जन्म रघुवर वन लागी ❋ झूठ काह पछिताउँ अभागी

दो० आपनि दारुण दीनता, सबहिं कह्यों समुझाय ।
देखे बिनु रघुवीर पद, जियकी जरनि न जाय ॥

आन उपाय मोहिं नहिं सूझा ❋ को जियकी रघुवर बिनु बूझा
एकहि आंक इहै मनमाहीं ❋ प्रातकाल चलिहौं प्रभु पाहीं
यद्यपि मैं अनभल अपराधी ❋ भइ मोहिं कारण सकल उपाधी
तदपि शरण सम्मुख मोहिं देखी ❋ क्षमि सब करिहहिं कृपाविशेखी
शील सकुचसुठि सरल स्वभाऊ ❋ कृपा सनेह सदनैं रघुराऊ
अँरिहुक अनभल कीन्ह न रामा ❋ मैं शिशुं सेवक यद्यपि वामा
तुम पै पांच मोर भल मानी ❋ आयसु आशिष देहु सुबानी
जेहिसुनिविनयमोहिंजनजानी ❋ आवहिं बहुरि राम रजधानी

दो० यद्यपि जन्म कुमातु ते, मैं शठ सदा सदोस ।
आपन जानि न त्यागिहैं, मोहिं रघुवीर भरोस ॥

भरत वचन सब कहँ प्रिय लागे ❋ राम सनेह सुधाँ जनु पागे
लोग वियोग विषम विष दागे ❋ मन्त्र सबीज सुनत जनु जागे
मातु सचिव गुरु पुर नर नारी ❋ सकल सनेह विकल भइँ भारी
भरतहि कहहिं सराहि सराही ❋ राम प्रेम मूरति जनु आही
तात भरत अस काहे न कहहू ❋ प्राण समान रामप्रिय अहहू
जो प्रमरँ आपनि जड़ताई ❋ तुमहिं सुगाइ मातु कुटिलाई
सो शठ कोटिक पुरुष समेता ❋ बसहि कल्पशत नरकनिकेता

१ असह्य २ अग्नि ३ सीधा ४ गृह ५ शत्रु ६ बालक ७ अमृत ८ नीच ९ स्थान ॥

अहिअघअवगुणमणिनहिंगहई ❀ हरै गरल दुख दारिद दहई

दो० अवशि चलिय वनरामपहँ, भरतमन्त्रभलकीन्ह।
शोकसिन्धु बूड़त सबहिं, तुमअवलम्बनदीन्ह॥

भरत वचन सुनि मोद न थोरा ❀ जनु घन धुनिसुनि चातकमोरा
चलब प्रात लगि निर्णय नीके ❀ भरत प्राण प्रिय भे सबहीके
मुनिहिं वन्दि भरतहिं शिरनाई ❀ चले सकल घर बिदा कराई
धन्य भरत जीवन जगमाहीं ❀ शील सनेह सराहत जाहीं
कहहिं परस्पर भा बड़ काजू ❀ सकल चलै कर साजहिं साजू
जेहि राखहिं घर रहु रखवारी ❀ सो जानै जनु गरदन मारी
कोउ कह रहन कहिय नहिं काहू ❀ को न चहै जग जीवन लाहू

दो० जरै सुसम्पति सदन सुख, सुहृद मातु पितुभाइ।
सम्मुख होत जो राम पद, करै न सहज सहाइ॥

घर घर वाहनँ साजहिं नानाँ ❀ हर्षहिं हृदय प्रभाँत पयाना
भरत जाइ घर कीन्ह विचारू ❀ नगर वाजि गज भवन भँडारू
सम्पति सब रघुपति कै आही ❀ जो बिनु यतन चलौं तजि ताही
तौ परिणांम न मोरि भलाई ❀ पाप शिरोमणि साइँदुहाई
करहि स्वामि हित सेवक सोई ❀ दूषण कोटि देइ किन कोई
अस विचारि शुचि सेवक बोले ❀ जे सपनेहुँ निजधर्म न डोले
कहि सब मर्म धर्म सब भाखा ❀ जो जेहिलायक सो तहँ राखा
करि सब यतन राखि रखवारे ❀ राममातु पहँ भरत सिधारे

दो० आरत जननी जानि सब, भरत सनेह सुजान।
कहेउ सजावन पालकी, सुखद सुखासन यान॥

चक चकई इव पुर नर नारी ❀ चलब प्रात उर आनँद भारी
जागत सब निशि भयउ बिहानाँ ❀ भरत बुलाये सचिव सुजाना
कहेउ लेहु सब तिलक समाजू ❀ वनहिं देव मुनि रामहिं राजू

१ सर्प २ विष ३ सलाह ४ सवारी ५ तरह ५ के ६ सुबह ७ अन्त ८ कलंक ९ सबेरा॥

वेगि चलहु सुनि सचिवं जुहारे ❀ तुरत तुरँग रथ नाग सँवारे
अरुन्धती अरु अग्नि समाजू ❀ रथचढ़ि चले प्रथम मुनिराजू
विप्र वृन्द चढ़ि वाहन नाना ❀ चले सकल तप तेज निधाना
नगर लोग सब सजि सजियानां ❀ चित्रकूट कहँ कीन्ह पयाना
शिविकां सुभग न जाइँ बखानी ❀ चढ़ि चढ़ि चलत भईं सबरानी

दो० सौंपि नगर शुचिसेवकन, सादर सबहिं चलाइ।
सुमिरि रामसियचरण तब, चले भरत दोउभाइ॥

राम दरशहित सब नर नारी ❀ जनु करि करिणिचलेतकिवारी
वन सिय राम समुझि मनमाहीं ❀ सानुज भरत पयादेहि जाहीं
देखि सनेह लोग अनुरागे ❀ उतरिचले हय गय रथत्यागे
जाइ समीप राखि निज डोली ❀ राम मातु मृदु वाणी बोली
तात चढ़हु रथ बलि महतारी ❀ होइहि प्रियपरिवार दुखारी
तुम्हरे चलत चलहिं सब लोगू ❀ सकल शोककृश नहिं मग योगू
शिर धरि वचन चरण शिरनाई ❀ रथ चढ़ि चलत भये दोउ भाई
तमसा प्रथम दिवस करि वासू ❀ दूसर गोमति तीर निवासू

दो० पयँअहारफल अशनइक, निशि भोजनसबलोग।
करत राम हित नेम व्रत, परिहरि भूषण भोग॥

सई तीर बसि चले बिहाने ❀ शृङ्गबेर पुर सब नियराने
समाचार सब सुने निषादा ❀ हृदय विचार करै सविषादा
कारण कवन भरत वन जाहीं ❀ है कछु कपटभाव मनमाहीं
जो पै जिय न होत कुटिलाई ❀ तौ कस लीन्ह सङ्ग कटकाई
जानहिं सानुज रामहिं मारी ❀ करौं अकण्टकराज सुखारी
भरत न राजनीति उरआनी ❀ तब कलङ्क अब जीवनहानी
सकल सुरासुर जुरहिं जुझारा ❀ रामहिं समर न जीतनहारा
का आश्चर्य भरत अस करहीं ❀ नहिं विषबेलिअमियफलफरहीं

१ मंत्री २ हाथी ३ सवारी ४ पालकी ५ हाथी ६ हथिनी ७ जल ८ भोजन ९ बेखटके॥

दो० असविचारि गुहज्ञातिसन, कहेउ सजग[1] सबहोहु।
हथवासहु बोरहु तरणि[2], कीजिय घाटा रोहु॥
होइ सजग सब रोकहु घाटा ❀ ठाटहु सकल मरण के ठाटा
सम्मुख लोह भरत सन लेहू ❀ जियत न सुरसरि उतरन देहू
समर मरण पुनि सुरसरि तीरा ❀ रामकाज क्षणभंगु शरीरा
भरतभाइ नृप मैं जन नीचू ❀ बड़े भाग्य अस पाइय मीचू
स्वामिकाज करिहौं रण रारी ❀ लेहौं सुयश भुवनदशचारी
तजहुँ प्राण रघुनाथ निहोरे ❀ दुहूं हाथ मुद मोदक[3] मोरे
साधु समाज न जाकर लेखा ❀ रामभक्ति उर जासु न रेखा
जाय जियत जग सो महिभारू ❀ जननी[4] यौवन विटप कुठारू
दो० विगतविषाद निषादपति, सबहिं बढ़ाय उछाह।
सुमिरिराम मांगेउ तुरत, तरकस धनुष सनाह॥
वेगिहि भाइ सजहु संजोऊ ❀ सुनि रजाय कदराय न कोऊ
भले नाथ सब कहहिं सहर्षा ❀ एकहि एक बढ़ावहिं कर्षा[5]
चले निषाद जुहारि जुहारी ❀ शूर सकल रण रुचै न रारी
सुमिरि राम पद पंकज पनहीं ❀ भाथा बांधि चढ़ावहिं धनुहीं
अँगुरी[6] पहिरि कूंड़ि[7] शिरधरहीं ❀ फरसा बांस सेल[8] सम करहीं
एक कुशल अति ओड़न खांड़े ❀ कूदहिं गगन मनहुँ क्षिति छांड़े
निज निज साज समाज बनाई ❀ गुहरावतहिं जुहारहिं जाई
देखि सुभट सब लायक जाने ❀ लै लै नाम सकल सनमाने
दो० भाइहु लावहु धोख जनि, आजु काज बड़मोहिं।
सुनि सरोष बोले सुभट, वीर अधीर न होहिं॥
राम प्रताप नाथ बल तोरे ❀ करहिं कटक बिनु भट बिनु घोरे
जियत पांव नहिं पीछे धरहीं ❀ रुण्ड मुण्डमय मेदिनि[9] करहीं
दीख निषाद नाथ भल टोलू ❀ कहेउ बजाउ जुझाऊ ढोलू

१ चैतन्य २ नौका ३ लड्डू ४ माता ५ उत्तेजित ६ दस्ताने ७ टोप ८ बरछी ९ पृथ्वी॥

इतना कहत छींक भइ बांये ❁ कहेउ शकुनियन खेत सुहाये
बूढ़ एक कह शकुन विचारी ❁ भरतहि मिलिय न होइहिरारी
रामहिं भरत मनावन जाहीं ❁ शकुन कहै अस विग्रह नाहीं
सुनि गुह कहै नीक कह बूढ़ा ❁ सहसाकरि पछिताहिं विमूढ़ा
भरत स्वभाव शील बिनु बूझे ❁ बड़िहित हानि जानि बिनुजूझे

दो॰ गहहुघाटभटसिमिटसब, लेउ मर्म्म मिलिजाय।
बूझिमित्रअरि मध्यगति, तब तस करब उपाय॥

लखब सनेह स्वभाव सुहाये ❁ वैर प्रीति नहिं दुरत दुराये
अस कहि भेंट सजोवन लागे ❁ कन्दमूल फल खग मृग मांगे
मीनैं पीन पाठीन पुराने ❁ भरि भरि भार कहारन आने
मिलनसाजसजिमिलनसिधाये ❁ मंगलमूल शकुन शुभ पाये
देखि दूरिते कहि निज नामू ❁ कीन्ह मुनीशहिं दण्डप्रणामू
जानि राम प्रिय दीन्ह अशीशा ❁ भरतहिं कहेउ बुझाइ मुनीशा
राम सखा सुनि स्यन्दनैं त्यागा ❁ चले उतरि उमँगत अनुरागा
गांव जाति गुह नाउँ सुनाई ❁ कीन्ह जुहार माथ महिलाई

दो॰ करत दण्डवत देखि तेहि, भरत लीन्ह उरलाइ।
मनहुँ लषण सन भेंटभइ, प्रेम न हृदय समाइ॥

भेंटे भरत ताहि अति प्रीती ❁ लोग सिहाहिं प्रेम की रीती
धन्य धन्य ध्वनि मंगलमूला ❁ सुर सराहि तेहि वर्षहिं फूला
लोक वेद सब भांतिहि नीचा ❁ जासु छांह छुइ लेइय सींचा
तेहि भरि अंक राम लघुभ्राता ❁ मिलत पुलक परिपूरित गाता
राम राम कहि जे जमुहाहीं ❁ तिनहिं न पाप पुंज समुहाहीं
यहि तौ राम लाय उर लीन्हा ❁ कुल समेत जग पावनँ कीन्हा
कर्म्मनाश जल सुरसरि परई ❁ तेहि को कहहु शीश नहिं धरई
उलटा नाम जपत जग जाना ❁ बालमीकि भे ब्रह्म समाना

१ यकायक २ इकट्ठा करना ३ मछली ४ रथ ५ छोटाभाई ६ समूह ७ पवित्र ॥

दो॰ श्वपचशबरखसंयवनजड़, पामर कोल किरात।
राम कहत पावन परम, होत भुवन विख्यात॥

नहिं अचरजयुगयुग चलिआई ❁ केहि न दीन्ह रघुवीर बड़ाई
राम नाम महिमा सुर कहहीं ❁ सुनिसुनिअवधलोगसुखलहहीं
रामसखहिं मिलि भरत सप्रेमा ❁ पूछहिं कुशल सुमंगल क्षेमा
देखि भरत कर शील सनेहू ❁ भा निषाद तेहि समय विदेहू
सकुच सनेह मोद मन बाढ़ा ❁ भरतहिं चितवत इकटक ठाढ़ा
धरि धीरज पद वन्दि बहोरी ❁ विनय सप्रेम करत करजोरी
कुशल मूल पद पंकजै पेखी ❁ मैं तिहुँकाल कुशल निज लेखी
अब प्रभु परम अनुग्रह तोरे ❁ सहित कोटि कुल मंगल मोरे

दो॰ समुझिमोरिकरतूतिकुल, प्रभु महिमा जिय जोइ।
जो न भजै रघुवीर पद, जग विधि वंचक सोइ॥

कपटी कायर कुमति कुजाँती ❁ लोक वेद बाहिर सब भांती
राम कीन्ह आपन जबहींते ❁ भयउँ भुवन भूषण तबहींते
देखि प्रीति सुनि विनय सुहाई ❁ मिले बहोरि लषण लघुभाई
कहि निषाद निज नाम सुबानी ❁ सादर सकल जुहारी रानी
जानि लषण सम देहिं अशीशा ❁ जियहु सुखी सौ लाख बरीशा
निरखि निषाद नगर नर नारी ❁ भये सुखी जनु लषण निहारी
कहहिं लहेउ यहिं जीवन लाहू ❁ भेंटेउ राम भाइ भरि बाहू
सुनि निषाद निज भाग्य बड़ाई ❁ प्रमुदितमन लै चलेउ लिवाई

दो॰ सनकारे सेवक सकल, चले स्वामि रुख पाइ।
घर तरु तर सर बाग वन, वास बनायउ जाइ॥

शृंगबेर पुर भरत दीख जब ❁ भे सनेह वश अंग शिथिल तब
सोहत लिये निषादहि लागू ❁ जनु तनु धरे विनय अनुरागू
यहिविधि भरत सेन सब सङ्गा ❁ दीख जाय जगपावनि गङ्गा

१ पहाड़ीलोग २ कमल ३ कृपा ४ छली ५ डरपोक ६ दुर्बुद्धी ७ नीच ८ फिरि ९ वर्ष॥

रामघाट कहँ कीन्ह प्रणामा ❀ भा मन मगन मिले जनु रामा
करहिं प्रणाम मगन नर नारी ❀ मुदित ब्रह्ममय वांरि[1] निहारी
करि मज्जन मांगहिं करजोरी ❀ रामचन्द्र पद प्रीति न थोरी
भरत कह्यो सुरसरि[2] तव रेनू ❀ सकल सुखद सेवक सुरधेनू[3]
जोरि पाणि वर मांगौं एहू ❀ सीय रामपद सहज सनेहू

दो० यहिविधिमज्जनभरतकरि, गुरु अनुशासन[4] पाइ।
मातु नहानी जानि सब, डेरा चले लिवाय॥

जहँ तहँ लोगन डेरा कीन्हा ❀ भरत शोधि[5] सबही कर लीन्हा
गुरु सेवा करि आयसु पाई ❀ राम मातु पहँगे दोउ भाई
चरणचापि कहिकहि मृदुबानी ❀ जननी सकल भरत सनमानी
भाइहि सौंपि मातु सेवकाई ❀ आपु निषादहि लीन्ह बुलाई
चले सखा करसों करजोरे ❀ शिथिल शरीर सनेह न थोरे
पूंछत सखहिं सो ठांव दिखाऊ ❀ नेकु नयन मन जरनि जुड़ाऊ
जहँ सिय राम लषण निशि सोये ❀ कहत भरे जल लोचन कोये
भरत वचन सुनि भयउ विषादू ❀ तुरत तहां लै गयउ निषादू

दो० जहँ शिंशपा पुनीत तरु, रघुवर किय विश्राम।
अति सनेह सादर भरत, कीन्ह्यउ दण्डप्रणाम॥

कुश साथरी निहारि सुहाई ❀ कीन्ह प्रणाम प्रदक्षिण लाई
चरण रेख रज आंखिन लाई ❀ बनै न कहत प्रीति अधिकाई
कनकबिन्दु[6] दुइ चारिक देखे ❀ राखे शीश सीय सम लेखे
सजल विलोचन हृदय गलानी ❀ कहत सखा सन वचन सुबानी
श्रीहत सीय विरह द्युति हीना ❀ यथा अवध नर नारि मलीना
पिता जनक देउँ पटुतर केही ❀ करतल[7] भोग योग जग जेही
श्वशुर भानुकुल भानु भुवालू ❀ जेहि सिहात अमरावतिपालू[8]
प्राणनाथ रघुनाथ गुसांई ❀ जो बड़ होत सो राम बड़ाई

१ जल २ गंगाजी ३ कामधेनु ४ आज्ञा ५ पता ६ सितारा ७ हथेली ८ इन्द्र॥

दो॰ पति देवता सुतीय मणि, सीय साथरी देखि।
बिहरत[1] हृदय न हहरि मम, पवि[2] तेकठिनविशेखि॥

लालनयोग्य लषण लघु लोने ❋ भे न भाइ अस अहहिं न होने
पुरजन प्रिय पितु मातु दुलारे ❋ सिय रघुवीरहि प्राण पियारे
मृदुमूरति सुकुमार स्वभाऊ ❋ ताति वायु तनु लागि न काऊ
ते वन बसहिं विपति सब भांती ❋ निदरेउ[3] कोटिकुलिशयहिछाती
राम जननि जग कीन्ह उजागर ❋ रूपशील गुण सब सुखसागर
पुरजन परिजन गुरु पितु माता ❋ रामस्वभाव सबहिं सुखदाता
बैरिउ राम बड़ाई करहीं ❋ बोलनिमिलनिविनय मनहरहीं
शारद कोटि कोटि शत शेखा ❋ करि न सकहिं प्रभुगुणगणलेखा

दो॰ सुखस्वरूप रघुवंशमणि, मंगल मोद निधान।
ते सोवतकुशडासिमहि, विधिगतिअतिबलवान॥

राम सुना दुख कानन काऊ ❋ जीवन तरु जिमि जुगवत राऊ
पलकनयनफणि[4] मणिजेहिभांती ❋ जुगवहिंजनै[5] निसकल दिनराती
ते अब फिरत विपिन[6] पदचारी ❋ कन्दमूल फल फूल अहारी
धिक कैकेयि अमंगलमूला ❋ भइसि प्राणप्रीतम प्रतिकूला
मैं धिकधिक अघ[7] उदधि[8] अभागी ❋ सब उतपात भयउ जेहिलागी
कुलकलंक करि सृजेउ विधाता ❋ साइँ द्रोह मोहिं कीन्ह कुमाता
सुनि सप्रेम ससुभाव निषादू ❋ नाथ करिय कत बादि विषादू
राम तुमहिं प्रिय तुम प्रिय रामहिं ❋ यह निर्दोष दोष विधि वामहिं

छं॰ विधिवामकीकरणी कठिन जेहिमातु कीन्हीबावरी।
तेहि राति पुनि पुनि करहिं प्रभु सादर सराहन रावरी॥
तुलसी न तुमसों राम प्रीतम कहतहौं सौहैं किये।
परिणाम मंगल जानि अपने आनिये धीरज हिये॥

१ फाटत २ वज्र ३ निन्दाकी ४ सर्प ५ माता ६ वन ७ पाप ८ समुद्र ९ रक्षा॥

सो० अन्तरयामी राम, सकुचसप्रेम कृपायतन।
चलिय करिय विश्राम, यह विचारदृढ़आनिमन॥

सखा वचन सुनि उर धरिधीरा ❋ वास चले सुमिरत रघुवीरा
यह सुधि पाइ नगर नर नारी ❋ चले विलोकन आरत भारी
परदक्षिण करि करहिं प्रणामा ❋ देहिं केकयिहि खोरि निकामा
भरिभरि वारि विलोचन लेहीं ❋ वाम विधातहिं दूषण देहीं
एक सराहहिं भरत सनेहू ❋ कोउ कह नृपति निबाहेउ नेहू
निन्दहिं आपु सराह निषादहि ❋ को कहिसकै विमोह विषादहि
यहिविधि राति लोगसबजागा ❋ भा भिनुसार उतारा लागा
गुरुहि सुनाव चढ़ाय सुहाई ❋ नई नाव सब मातु चढ़ाई
दण्डचारि महँ भा सब पारा ❋ उतरि भरत तब सबहिं सँभारा

दो० प्रातक्रिया करि मातु पद, वन्दि गुरुहिं शिरनाइ।
आगे किये निषादगण, दीन्हेउ कटक चलाइ॥

किये निषादनाथ अगुआई ❋ मातु पालकी सकल चलाई
साथ बुलाइ भाइ लघु लीन्हा ❋ विप्रन सहित गमन गुरु कीन्हा
आपु सुरसरिहिं कीन्ह प्रणामू ❋ सुमिरेउ लषण सहित सियरामू
गमने भरत पयादेहि पांये ❋ कोतल संग जाहिं डोरिआये
कहहिं सुसेवक बारहिंबारा ❋ होइय नाथ अश्व असवारा
राम पयादेहि पांव सिधाये ❋ हमकहँ रथ गज वाजि बनाये
शिरभरिजाउँ उचित अस मोरा ❋ सबते सेवक धर्म्म कठोरा
देखि भरतगति सुनि मृदुबानी ❋ सब सेवकगण गरहिं गलानी

दो० भरत तीसरे पहर कहँ, कीन्ह प्रवेश प्रयाग।
कहत राम सिय राम सिय, उमँगिउमँगिअनुराग॥

झलका झलकत पांयन कैसे ❋ पंकजकोस ओस कण जैसे
भरत पयादेहि आये आजू ❋ देखिदुखित सुनि सकल समाजू

१ खबर २ जल ३ दोष ४ सबेरा ५ फ़ौज ६ खाली घोड़े ७ कमलकामध्य ८ समस्त॥

खबरिलीन्ह सब लोग नहाये ❋ कीन्ह प्रणाम त्रिवेणी आये
सविधि सितासित[1] नीर नहाने ❋ दिये दान महिसुर[2] सनमाने
देखत श्यामल धवल[3] हिलोरे[4] ❋ पुलक शरीर भरत करजोरे
सकल कामप्रद तीरथराऊ ❋ वेद विदित जग प्रकट प्रभाऊ
मांगौं भीख त्यागि निज धर्मू ❋ आरत काह न करहि कुकर्मू
अस जिय जानि सुजान सुदानी ❋ सफल करहु जग याचक बानी

दो० अर्थ न धर्म न कामरुचि, गति न चहौं निर्वान।
जन्म जन्म रति रामपद, यह वरदान न आन॥

जानहिं राम कुटिल करि मोही ❋ लोग कहैं गुरु साहब द्रोही
सीताराम चरण रति मोरे ❋ अनुदिन[5] बढ़ै अनुग्रह तोरे
जलद जन्म भरि सुरति बिसारे ❋ याचत जल पवि पाहन डारे
चातक रटनि घटे घटि जाई ❋ बढ़े प्रेम सब भांति भलाई
कनकहि बान[6] चढ़ै जिमि दाहे ❋ तिमि प्रीतम पद प्रेम निबाहे
भरत वचन सुनि मांझ त्रिवेनी ❋ भै मृदुवाणि सुमंगल देनी
तात भरत तुम सब विधि साधू ❋ रामचरण अनुराग अगाधू
बादि गलानि करहु मन माहीं ❋ तुमसम रामहिं प्रिय कोउ नाहीं

दो० तनु पुलके हिय हरषि सुनि, वेणि वचन अनुकूल।
भरत धन्य कहि धन्य सुर, हरषित वर्षहिं फूल॥

प्रमुदित तीरथराज निवासी ❋ वैखानस[7] वटु गृही उदासी
कहहिं परस्पर मिलि दश पांचा ❋ भरत सनेह शील शुचिसांचा
सुनत राम गुण ग्राम सुहाये ❋ भरद्वाज मुनिवर पहँ आये
दण्डप्रणाम करत मुनि देखे ❋ मूरतिवन्त भाग्य निज लेखे
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हे ❋ दीन्ह अशीश कृतारथ कीन्हे
आसन दीन्ह नाइ शिर बैठे ❋ चहत सकुचि गृह जनुभरि पैठे
मुनि पूंछब कछु यह बड़ शोचू ❋ बोले ऋषि लखि[8] शील सँकोचू

१ श्वेतश्याम २ ब्राह्मण ३ श्वेत ४ लहरें ५ नितप्रति ६ शोभा ७ वानप्रस्थ ८ देखकर॥

सुनहु भरत हम सब सुधि पाई ❀ विधि करतब पर कछु न बसाई

दो० तुमगलानिजियजनिकरहु,समुझि मातु करतूति।
तात केकयिहि दोष नहिं, गई गिरा मति धूति॥

यहौ कहत भल कहै न कोऊ ❀ लोक वेद बुध सम्मत दोऊ
तात तुम्हार विमल यश गाई ❀ पाइहि लोकहु वेद बड़ाई
लोक वेद सम्मत सब कहई ❀ जेहि पितु राज्यदेइ सो लहई
राव सत्यव्रत तुमहिं बुलाई ❀ देत राज्य सुख धर्म बड़ाई
राम गमन वन अनरथ मूला ❀ जो सुनि सकल विश्वभइ शूला
सो भावीवश रानि अयानी ❀ करिकुचाल अन्तहु पछितानी
तहँउँ तुम्हार अल्प अपराधू ❀ कहै सो अधम अयान असाधू
करतेहु राज्य तुमहिं नहिं दोषू ❀ रामहिं होत सुनत सन्तोषू

दो० अबअतिकीन्हेउभरतभल,तुमहिं उचित मतएहु।
सकल सुमंगलमूल जग, रघुवर चरण सनेहु॥

सो तुम्हार धन जीवन प्राना ❀ भूरिभाग्य को तुमहिं समाना
यह तुम्हार आचरज न ताता ❀ दशरथ सुवन राम लघुभ्राता
सुनहु भरत रघुपति मनमाहीं ❀ प्रेमपात्र तुम सम कोउ नाहीं
लषण राम सीतहि अति प्रीती ❀ निशि सब तुमहिं सराहत बीती
जाना मर्म्म नहात प्रयागा ❀ मगन होहिं तुम्हरे अनुरागा
तुमपर अस सनेह रघुवरके ❀ सुखजीवन जग जस जड़ नरके
यह न अधिक रघुवीर बड़ाई ❀ प्रणत कुटुम्ब पाल रघुराई
तुम तौ भरत मोर मत एहू ❀ धरे देह जनु राम सनेहू

दो० तुम कहँ भरत कलंक यह, हम सब कहँ उपदेश।
रामभक्तिरस सिद्धि हित, भा यह समय गणेश॥

नव विधु विमल तात यश तोरा ❀ रघुवर किंकर कुमुद चकोरा
उदित सदा अथइय कबहूंना ❀ घटहि न जग नभ दिनदिनदूना

१ ब्रह्मा २ छलि ३ सलाह ४ संसार ५ धीरज ६ पुत्र ७ चन्द्रमा ८ कुमोदिनी॥

कोकत्रिलोकप्रीति अति करहीं ❁ प्रभुप्रतापरविछविहि न हरहीं
निशिदिन सुखद सदा सब काहू ❁ ग्रसिहि न केकयि करतब राहू
पूरण राम सुप्रेम पियूषा ❁ गुरु अपमान दोष नहिं दूषा
राम भक्ति अब अमिय अघाहू ❁ कीन्हेउ सुलभ सुधावसुधाहू
भूप भगीरथ सुरसरि आनी ❁ सुमिरत सकल सुमङ्गलखानी
दशरथ गुण गण वरणि न जाहीं ❁ अधिक कहाजेहिसमजगनाहीं

दो॰ जासु सनेह सकोच वश, राम प्रकट भे आय ।
जे हरहिय नयनन कबहुँ, निरखे नाहिं अघाय ॥

कीरति विधु तुम कीन्ह अनूपा ❁ जहँ बस राम प्रेम मृग रूपा
तात गलानि करहु जिय जाये ❁ डरहु दरिद्रहिं पारस पाये
सुनहु भरत हम झूंठ न कहहीं ❁ उदासीन तापस वन रहहीं
सब साधन कर सफल सुहावा ❁ लषण राम सिय दरशन पावा
तेहि फलकर फल दरश तुम्हारा ❁ सहित प्रयाग सुभाग हमारा
भरत धन्य तुम जग यश लयऊ ❁ कहि अस प्रेम मगन मुनि भयऊ
सुनि मुनिवचन सभासद हरषे ❁ साधु सराहि सुमन सुर वरषे
धन्य धन्य ध्वनि गगन प्रयागा ❁ सुनिसुनिभरतमगन अनुरागा

दो॰ पुलकिगात हिय राम सिय, सजल सरोरुह नैन ।
करि प्रणाम मुनिमंडलिहिं, बोले गदगद बैन ॥

मुनि समाज अरु तीरथराजू ❁ सांचेहु शपथ अघाइ अकाजू
यहि थल जो कछु कहिय बनाई ❁ त्यहिसमअधिक न अघ अधमाई
तुम सर्वज्ञ कहौं सतिभाऊ ❁ उर अन्तरयामी रघुराऊ
म्वहिं न मातु करतब कर शोचू ❁ नहिंदुख जियजगजानहिं पोचू
नाहिं न डर बिगरहि परलोकू ❁ पितहु मरेकर नाहिं न शोकू
सुकृत सुयश भरि भुवन सुहाये ❁ लक्ष्मण रामसरिस सुत पाये
राम विरह तजि तनु क्षणभंगू ❁ भूप शोचकर कवन प्रसंगू

१ अमृत २ निन्दा ३ पृथ्वी ४ गङ्गाजी ५ हरिण ६ पुष्प ७ आकाश ८ कमल ९ सौगंद ॥

राम लषण सिय बिनु पग पनहीं ❀ करि मुनिवेष फिरहिं वनवनहीं

दो० अजिंनवसनफलअंशनमहि,शयनडासिकुशपात।
बसि तरुतर नित सहत दुख,हिम तप वरषा वात॥

यहि दुखदाह दहै नित छाती ❀ भूंख न वासर नींद न राती
यहि कुरोग कर औषधि नाहीं ❀ शोधेउँ सकल विश्व मनमाहीं
मातु कुमति बढ़ई अघमूला ❀ तेहि हमार हित कीन्ह बसूला
कलिकुकाठगढ़ि कठिन कुयन्त्रू ❀ गाड़िअवध पढ़ि कठिन कुमन्त्रू
मोहिंलगि यह कुठाटजेहिंठाटा ❀ घालिसि सब जग बारहबाटा
मिटै कुयोग राम फिरि आये ❀ बसै अवध नहिं आन उपाये
भरत वचन सुनि सुनि सुखपाई ❀ सबहिं कीन्ह बहुभांति बड़ाई
तात करहु जनि शोच विशेखी ❀ सब दुख मिटिहि रामपद देखी

दो० करिप्रबोधं मुनिवर कहेउ, अतिथि प्राणप्रिय होहु।
कन्दमूल फल फूल हम, देहिं लेहु करि छोहुं॥

सुनि मुनिवचन भरतहिय शोचू ❀ भयउ कुअवसर कठिन सँकोचू
जानि गरू गुरु गिरा बहोरी ❀ चरण वन्दि बोले करजोरी
शिरधरिआयसु करिय तुम्हारा ❀ परमधर्म यह नाथ हमारा
भरत वचन मुनिवर मन भाये ❀ शुचि सेवक तब निकट बुलाये
चाहिय कीन्ह भरत पहुनाई ❀ कन्दमूल फल आनहु जाई
भले नाथ कहि तिन शिरनाये ❀ प्रमुदित निजनिजकाजसिधाये
मुनिहिं शोच पाहुन बड़नेवता ❀ तसपूजा चाहिय जस देवता
सुनिऋधिसिधिअणिमादिकआई❀आयसु होइ सो करैं गुसाईं

दो० राम विरह व्याकुल भरत, सानुज सकल समाज।
पहुनाई करि हरहु श्रम, कहेउ मुदितं मुनिराज॥

ऋधिसिधिशिरधरिमुनिवरबानी❀ बड़भागिनिआपुहि अनुमानी
कहहिं परस्पर सिधि समुदाई ❀ अतुलितं अतिथि राम लघुभाई

१ मृगचर्म २ भोजन ३ दिन ४ समझाय ५ दया ६ वाणी ७ बिछोह ८ प्रसन्न ९ बेप्रमाण॥

मुनिपदवन्दि करिय सोइ आजू ❋ होइ सुखी सब राज समाजू
अस कहि रुचिर रचे गृह[1] नाना ❋ जे विलोकि बिलखाहिं विमाना
भोग विभूति भूरि भरिराखे ❋ देखत जिनहिं अमर[2] अभिलाखे
दासी दास साज सब लीन्हे ❋ जुगवत रहहिं मनहिं मनदीन्हे
सब समाज सजि सिधि पलमाहीं ❋ जो सुख सपनेहुँ सुरपुर नाहीं
प्रथमहिं वास दिये सब केही ❋ सुन्दर सुखद यथारुचि जेही

दो॰ बहुरि सपरिजन भरतकहँ, ऋषिआयसु[3] असदीन्ह।
विधिविस्मयदायकविभव[4], मुनिवर तपबलकीन्ह ॥

सुनि प्रभाव जब भरत विलोका ❋ सब लघु लगे लोकपति लोका
सुखसमाज नहिं जाइ बखानी ❋ देखत विरति बिसारहिं ज्ञानी
अशनशयन शुचिवसनविताना ❋ वनवाटिका विहँग मृगनाना
सुरभि फूल फल अमिय समाना ❋ विमलजलाशयविविधविधाना
अशन[5] पान शुचि अमल अमीसे ❋ देखि लोक सकुचात जमीसे
सुरसुरभी[6] सुरतरु सबहीके ❋ लखि अभिलाष सुरेश शचीके
ऋतुवसन्त वह त्रिविध बयारी ❋ सबकहँ सुलभ पदारथ चारी
स्रक[7] चन्दन वनितादिक भोगा ❋ देखि हर्ष विस्मय सब लोगा

दो॰ सम्पति चकई भरत चक, मुनि आयसु खेलवार ।
तेहिनिशिआश्रमपींजरा, राखे भा भिनुसार ॥

कीन्ह निमज्जन तीरथराजा ❋ नाइ मुनिहि शिर सहितसमाजा
ऋषिआयसु अशीश शिरराखी ❋ करिदण्डवत विनय बहु भाखी
पथ गथ कुशल साथ सब लीन्हे ❋ चले चित्रकूटहिं चित दीन्हे
राम सखा कर दीन्हे लागू ❋ चलत देहधरि जनु अनुरागू
नहिं पदत्राण[8] शीश नहिं छाया ❋ प्रेम नेम व्रत धर्म्म अमाया
लषण राम सिय पंथ[9] कहानी ❋ पूछत सखहि कहत मृदुबानी
रामवास थल विटप विलोके ❋ उर अनुराग रहत नहिं रोके

१ घर २ देवता ३ आज्ञा ४ ऐश्वर्य ५ भोजन ६ कामधेनु ७ माला ८ जूता ९ रास्ता ॥

देखि दशा सुर वर्षहिं फूला ❀ भइ मृदु[1] महि मगु मंगलमूला

दो० किये जाहिं छाया जलद[2], सुखद बहत वर वात[3]।
तसमगुभयउ न रामकहँ, जसभा भरतहि जात॥

जड़ चेतन मग जीव घनेरे ❀ जे चितये प्रभु जिन प्रभु हेरे
ते सब भये परमपद योगू ❀ भरत दरश मेटा भवरोगू
यह बड़िबात भरत की नाहीं ❀ सुमिरत जिन्हैं राम मनमाहीं
बारेकै[4] राम कहत जग जेऊ ❀ होत तरण तारण नर तेऊ
भरत राम प्रिय पुनि लघु भ्राता ❀ कस न होइ मगु मंगलदाता
सिद्ध साधु मुनिवर अस कहहीं ❀ भरतहिं निरखि हर्ष हिय लहहीं
देखि प्रभाव सुरेशहि[5] शोचू ❀ जग भल भलहि पोच कह पोचू
गुरुसन कहेउ करहु प्रभु सोई ❀ रामहिं भरतहिं भेंट न होई

दो० राम सकोची प्रेमवश, भरत सप्रेम पयोधि।
बनी बात बिगरन चहत, करियतनछलशोधि॥

वचन सुनत सुरगुरु मुसुकाने ❀ सहस नयन बिनु लोचन जाने
कह गुरु बादि क्षोभ छलछांड़ू ❀ इहां कपट करि होइय भांड़ू
मायापति सेवक सन माया ❀ करियत उलटि परे सुरराया
तब कछु कीन्ह राम रुख जानी ❀ अब कुचालकरि होइहि हानी
सुनु सुरेश रघुनाथ स्वभाऊ ❀ निज अपराध रिसाहिं न काऊ
जो अपराध भक्त कर करई ❀ राम रोष पावक[6] सो जरई
लोकहु वेद विदित[7] इतिहासा ❀ यह महिमा जानहिं दुर्वासा
भरत सरिस को राम सनेही ❀ जग जपु राम राम जपु जेही

दो० मनहुँ न आनियअमरपति[8], रघुपति भक्त अकाज।
अयशलोक परलोक दुख,दिनदिनशोकसमाज॥

सुनु सुरेश उपदेश[9] हमारा ❀ रामहिं सेवक परम पियारा
मानत सुख सेवक सेवकाई ❀ सेवक वैर वैर अधिकाई

१ कोमल २ बादल ३ हवा ४ एकबार ५ इन्द्र ६ अग्नि ७ जाना ८ देवेन्द्र ९ शिक्षा॥

यद्यपि सम नहिं राग न रोषू ❋ गहहि न पाप पुण्य गुण दोषू
कर्म प्रधान विश्व करि राखा ❋ जो जस करै सो तस फल चाखा
तदपि करहिं सम विषम विहारा ❋ भक्त अभक्त हृदय अनुसारा
अगुण अलेख अमान एकरस ❋ राम सगुण भये भक्त प्रेमवस
राम सदा सेवक रुचि राखी ❋ वेद पुराण साधु सब साखी
अस जिय जानि तजहु कुटिलाई ❋ करहु भरत पद प्रीति सुहाई

दो० रामभक्त परहित निरत, परदुख दुखी दयाल।
भक्तशिरोमणि भरत ते, जनि डरपहु सुरपाल॥

सत्यसन्ध प्रभु सुर[1] हितकारी ❋ भरत राम आयसु[3] अनुसारी
स्वारथ विवश विकल तुम होहू ❋ भरत दोष नहिं राउर मोहू
सुनि सुरवर सुरगुरु वरवानी ❋ भा प्रबोध मन मिटी गलानी
वर्षि प्रसून[4] हर्षि सुरराऊ ❋ लगे सराहन भरत स्वभाऊ
यहि विधि भरत चले मगुजाहीं ❋ दशा देखि मुनि सिद्ध सिहाहीं
जबहिं राम कहि लेहिं उसासा ❋ उमँगत प्रेम मनहुँ चहुँपासा
द्रवहिं वचन सुनि कुलिशपखाना ❋ पुरजन प्रेम न जाइ बखाना
बीच वास करि यमुनहिं आये ❋ निरखि नीर[5] लोचन जलछाये

दो० रघुवर वर्ण विलोकि वर, वारि समेत समाज।
होत विरहवारिधि मगन, चढ़े विवेक जहाज॥

यमुनतीर तेहि दिनकर वासू ❋ भयउ समय सम सबहि सुपासू
रातिहि घाट घाट की तरणी ❋ आईं अगणित जाइँ न वरणी
प्रात पार भे एकहि खेवा ❋ तोषे राम सखा करि सेवा
चले नहाइ यमुन शिरनाई ❋ साथ निषादनाथ लघु भाई
आगे मुनिवर वाहन आछे ❋ राज समाज जाय सब पाछे
तेहि पाछे दोउ बन्धु पयादे ❋ भूषण वसन वेष सुठि सादे
सेवक सुहृद सचिवसुत साथा ❋ सुमिरत लषण सीय रघुनाथा

१ दुष्टता २ देवता ३ आज्ञा ४ फूल ५ जल ६ बे प्रमाण ७ गुह ८ सुन्दर ९ अभिनन्दन॥

जहँ जहँ राम वास विश्रामा ❀ तहँ तहँ करहिं सप्रेम प्रणामा

दो॰ मगुवासी नरनारि सुनि, धाम काम तजिधाइ।
देखि स्वरूप सनेहवश, मुदित जन्म फलपाइ॥

कहहिं सप्रेम एक इक पाहीं ❀ रामलषणसखि होहिं कि नाहीं
वयं वपु वसन रूप सोइ आली ❀ शील सनेह सरिस समचाली
वेष न सो सखि सीय न संगा ❀ आगे अँनी चली चतुरंगा
नहिं प्रसन्नमुख मानस खेदा ❀ सखि सन्देह होत यहि भेदा
तासु तर्क तियगण मन मानी ❀ कहहिंसकलतोहिंसम न सयानी
तेहि सराहि वाणी फुर पूजी ❀ बोली मधुर वचन तिय दूजी
कहि सप्रेम सब कथा प्रसंगू ❀ जेहि विधि राम राज रसभंगू
भरतहि बहुरि सराहन लागी ❀ शील सनेह सुभाव सुभागी

दो॰ चलत पयादे खात फल, पिता दीन्ह तजि राज।
जात मनावन रघुवरहिं, भरत सरिस को आज॥

भायप भक्ति भरत आचरणू ❀ कहत सुनत दुख दूषण हरणू
जो कछु कहिय थोर सखि सोई ❀ रामबन्धु अस काहे न होई
तब सब सानुज भरतहिं देखे ❀ भये धन्य युवती जन लेखे
सुनि गुण देखि दशा पछिताहीं ❀ केकयि जननि योग्य सुतनाहीं
कोउ कह दूषण रानिहु नाहिन ❀ विधि सब भांतिहमहिंजोदाहिन
कहँ हमलोग वेदविधि हीना ❀ लघुकुल तिय करतूति मलीना
बसहिं कुदेश कुगांव कुठामा ❀ कहँ यह दरश पुण्य परिणामा
अस अनंद अचरज प्रति ग्रामा ❀ जनु मरुभूमि कल्पतरु जामा

दो॰ भरतदरश देखत खुलेहु, मगुलोगन कर भाग।
जनु सिंहलवासिन भयउ, विधिवशसुलभप्रयाग॥

निजगुण सहित रामगुणगाथा ❀ सुनत जाहिं सुमिरत रघुनाथा
तीरथ मुनिआश्रम सुरधामा ❀ निरखि निमज्जहिंकरहिंप्रणामा

१ उम्र २ शरीर ३ फ़ौज ४ समान ५ नगर ६ रेतलीपृथ्वी ७ भाग्यवश ८ कथा ९ वैकुण्ठ॥

मनहीं मन मांगहिं वर येहू ❋ सीय राम पद पद्मं सनेहू
मिलहिं किरात कोल वनवासी ❋ वैखानस वटु यती उदासी
करि प्रणाम पूंछहिं जेहि तेही ❋ केहि वन राम लषण वैदेही
ते प्रभु समाचार सब कहहीं ❋ भरतहिं देखि जन्मफल लहहीं
जे जन कहहिं कुशल हम देखे ❋ ते प्रिय राम लषण सम पेखे
यहि विधि बूझत सबहि सुबानी ❋ सुनत राम वनवास कहानी

दो० तेहि वासर बसि प्रातही, चले सुमिरि रघुनाथ।
राम दरश की लालसा, भरत सरिस सब साथ॥

मङ्गल शकुन होहिं सब काहू ❋ फरकहिं सुखद विलोचन बाहू
भरतहिं सहित समाज उछाहू ❋ मिलिहहिं राम मिटहिं दुखदाहू
करत मनोरथ जस जिय जाके ❋ जाहिं सनेह सुरां सब छाके
शिथिलअंगमगुपगडग डोलहिं ❋ विह्वल वचन प्रेमवश बोलहिं
रामसखा तेहि समय दिखावा ❋ शैल शिरोमणि सहज सुहावा
जासु समीप सरितपय तीरा ❋ सीय समेत बसहिं दोउ वीरा
देखि करहिं सब दण्डप्रणामा ❋ कहि जय जानकि जीवनरामा
प्रेम मगन अस राजसमाजू ❋ जनु फिरि अवध चले रघुराजू

दो० भरत प्रेम तेहि समय जस, तस कहिसकै न शेषु।
कबिहि अगम जिमि ब्रह्मसुख, अहममलिनजनेषु॥

सकल सनेह शिथिल रघुवरके ❋ गये कोस दुइ दिनकर ढरके
जल थल देखि चले निशि बीते ❋ कीन्ह गमन रघुनाथ पिरीते
उमा राम रजनी अवशेखा ❋ जागीं सीय सपन अस देखा
सहित समाज भरत जनु आये ❋ नाथ वियोग ताप तनु ताये
सकल मलिनमन दीन दुखारी ❋ देखी सासु आन अनुहारी
सुनि सियसपन भरे जल लोचन ❋ भये शोचवश शोक विमोचन
लषण सपन यह नीक न होई ❋ कठिन कुचाह सुनाइहि कोई

१ कमल २ दिन ३ इच्छा ४ मदिरा ५ पयस्विनी ६ रात्रि ७ बाकी ८ शरीर॥

अस कहि बन्धुसमेत नहाने ❋ पूजि पुरारि[1] साधु सनमाने
छं० सनमानिसुरमुनिवन्दि बैठे उतरदिशि देखतभये ।
नभ धूरि खग मृग भूरि भागे विकल प्रभु आश्रम गये ॥
तुलसी उठे अवलोकि कारण काह चित चकित रहे ।
सब समाचार किरात कोलन आइ तेहि अवसर कहे ॥
सो० सुनत सुमंगल बैन, मन प्रमोद तनु पुलक भर ।
शरद सरोरुह[2] नैन, तुलसी भरे सनेह जल ॥
बहुरि शोचवश भे सियरमनू ❋ कारण कवन भरत आगमनू
एक आय अस कहा बहोरी[3] ❋ सेनं[4] संग चतुरंग न थोरी
सो सुनि रामहिं भा अति शोचू ❋ इत पितु वच उत बन्धु सँकोचू
भरतस्वभाव समुझि मनमाहीं ❋ प्रभुचितहित थिति पावत नाहीं
समाधान तब भा यह जाने ❋ भरत कहे महँ साधु सयाने
लषण लखेउ प्रभु हृदय खँभारू ❋ कहत समय सम नीति विचारू
बिनु पूछे कछु कहउँ गुसांई ❋ सेवक समयँ[5] न ढीठ ढिठाई
तुम सर्वज्ञ शिरोमणि स्वामी ❋ आपन समुझि कहौं अनुगामी
दो० नाथसुहृदसुठिसरलचित, शील सनेह निधान ।
सबपरप्रीति प्रतीतिजिय, जानिय आपु समान ॥
विषयी जीव पाइ प्रभुताई ❋ मूढ़ मोह वश होहिं जनाई
भरत नीतिरत साधु सुजाना[6] ❋ प्रभुपद प्रेम सकल जगजाना
तेऊ आजु राजपद पाई ❋ चले धर्म मर्य्याद मिटाई
कुटिल कुबन्धु कुअवसर ताकी ❋ जानि राम वनवास इकाकी
करि कुमंत्र मन साजि समाजू ❋ आये करन अकंटक राजू
कोटिप्रकार कलपि कुटिलाई ❋ आये दलँ[7] बटोरि दोउ भाई
जो जिय होति न कपट कुचाली ❋ केहि सुहात रथ वाजिगँजाली[8]

१ शम्भु २ कमल ३ फिरि ४ फ़ौज ५ वक़्त ६ चतुर ७ फ़ौज ८ घोड़े-हाथियोंकी पांति ॥

भरतहि दोष देइ को जाये ❋ जग बौराइ राजपद पाये

दो॰ शशिगुरुतियगामीनहुष, चढ़े भूमिसुर यान।
लोक वेदते विमुख भा, अधम को वेणु समान॥

सहसबाहु सुरनाथ त्रिशंकू ❋ केहि न राजमद दीन्ह कलंकू
भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ ❋ रिपु रण रंच न राखब काऊ
एक कीन्ह नहिं भरत भलाई ❋ निदरे राम जानि असहाई
समुझिपरिहि सो आजु विशेखी ❋ समर सरोष रामरुख देखी
इतना कहत नीतिरस भूला ❋ रणरस विटपँ पुलकि जनु फूला
प्रभु पद वन्दि शीश रजराखी ❋ बोले सत्य सहज बलभाखी
अनुचित नाथ न मानब मोरा ❋ भरत हमहिं उपचारँ न थोरा
कहँलगि सहिय रहिय रिसमारे ❋ नाथ साथ धनु हाथ हमारे

दो॰ क्षत्रिजाति रघुकुलजनम, राम अनुज जगजान।
लातहु मारे चढ़त शिर, नीच को धूरि समान॥

उठि करजोरि रजायसु मांगा ❋ मनहुँ वीररस सोवत जागा
बांधिजटा शिरकसि कटिभार्था ❋ साजि शरासनँ शायक हाथा
आजु राम सेवक यश लेऊं ❋ भरतहिं समर सिखावन देऊं
राम निरादर कर फल पाई ❋ सोवहु समर सेज दोउ भाई
आइ बना भल सकल समाजू ❋ प्रकट करौं रिस पाछिल आजू
जिमि करिनिकर दलै मृगराजू ❋ लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू
तैसहि भरतहिं सेन समेता ❋ सानुज निदरि निपातौं खेता
जो सहाय कर शंकर आई ❋ तदपि हतौं रण राम दुहाई

दो॰ अति सरोष माषे लषण, लखिसुनिशपथप्रमान।
सभय लोकसबलोकपति, चाहत भभरि भगान॥

जग भै मगन गगन भै बानी ❋ लषण बाहुबल विपुल बखानी
तात प्रताप प्रभाव तुम्हारा ❋ को कहिसकै को जाननहारा

१ ब्राह्मण २ सत्रु ३ युद्ध ४ वृक्ष ५ उपाय ६ तरकस ७ धनुष ८ सिंह ९ क्रोधकिया॥

अनुचित उचित काज कछु होई ❀ समुझि करिय भल कह सबकोई
सहसा करि पाछे पछिताहीं ❀ कहहिं वेद बुध ते बुध नाहीं
सुनि सुर वचन लषण सकुचाने ❀ राम सीय सादर सनमाने
कही तात तुम नीति सुहाई ❀ सब ते कठिन राजमद भाई
जो अँचवत मातँहिं नृप तेई ❀ नाहिं न साधु सभा जिन सेई
सुनहु लषण भल भरत सरीखा ❀ विधिप्रपंच महँ सुना न दीखा

दो॰ भरतहि होइ न राजमद, विधि हरि हर पदपाइ ।
कबहुँ कि कांजीशीकरनि, क्षीर सिन्धु विनशाइ ॥

तिमिरँ तरुण तरँणिहि सकगिलई ❀ गगन मगन मकु मेघहि मिलई
गोपद जल बूड़हिं घटयोनी ❀ सहज क्षमा वरु छांड़हिं क्षोनी
मशक फूंक वरु मेरु उड़ाई ❀ होय न नृपमद भरतहिं भाई
लषण तुम्हारि शपथ पितु आना ❀ शुचि सुबन्धु नहिं भरतसमाना
सगुणक्षीरँ अवगुण जल ताता ❀ मिले रचे परपंच विधाता
भरत हंस रविवंस तड़ागा ❀ जन्मि कीन्ह गुणदोष विभागा
गहिगुण पय तजि अवगुण वारी ❀ निजयश जगत कीन्हि उजियारी
कहत भरत गुण शील स्वभाऊ ❀ प्रेम पयोधि मगन रघुराऊ

दो॰ सुनि रघुवर वाणी विबुध, देखि भरत पर हेतु ।
लगे सराहन सहसमुख, प्रभुको कृपानिकेतु ॥

जो न होत जग जन्म भरतको ❀ सकल धर्म धुरि धरणि धरतको
कविकुल अगम भरत गुणगाथा ❀ को जानै तुम बिनु रघुनाथा
लषण राम सिय सुनि सुरबानी ❀ अतिसुखलह्यो न जाइबखानी
इहां भरत सब सहित सहाये ❀ मन्दाकिनी पुनीत नहाये
सरित समीप राखि सब लोगा ❀ मांगि मातु गुरु सचिव नियोगा
चले भरत जहँ सिय रघुराई ❀ साथ निषादनाथ लघुभाई
समुझि मातु करतब सकुचाहीं ❀ करत कुतर्क कोटि मनमाहीं

१ पण्डित २ मस्तहो ३ सिरका ४ अंधेरा ५ युवा ६ सूर्य ७ दूध ८ समुद्र ९ गुह ॥

राम लषण सिय सुनि मम नाऊं ❋ उठिजन अनत जाहिं तजिठाऊं
दो० मातुमते महँ जानि मोहिं, जो कछु कराहिं सो थोर।
अघंअवगुणतजिआदरहिं, समुझि आपनी ओर॥
जो परिहरहिं मलिन मन जानी ❋ जो सनमानहिं सेवक मानी
मोरे शरण रामकी पनहीं ❋ राम सुस्वामि दोष सब जनेहीं
जग यशभाजन चातक मीना ❋ नेम प्रेम निज निपुण नवीना
अस मन गुनत चले मगुँजाता ❋ सकुचि सनेह शिथिलसबगाता
फेरति मनहुँ मातु कृत खोरी ❋ चलत भक्तिबल धीरज धोरी
जब समुझहिं रघुनाथ स्वभाऊ ❋ तब पथ परत उतावल पाऊ
भरत दशा तेहि अवसर कैसी ❋ जल प्रवाहजलअँलिगति जैसी
देखि भरत कर शोच सनेहू ❋ भा निषाद तेहि समय विदेहू
दो० लगे होन मंगल शकुन, सुनि गुनिकहतनिषाद।
मिटिहि शोचहोइहि हरष, पुनि परिणाम विषाद॥
सेवक वचन सत्य सब जाने ❋ आश्रम निकट जाय नियराने
भरत दीख वन शैल समाजू ❋ मुदित क्षुधित जनु पाइ सुनाजू
ईति भीति जनु प्रजा दुखारी ❋ त्रिविध ताप पीड़ित ग्रहभारी
जाइ सुराज सुदेश सुखारी ❋ भई भरत गति तेहि अनुहारी
राम वास वन सम्पति भ्राजा ❋ सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा
सचिव विराग विवेक नरेशू ❋ विपिनं सुहावन पावन देशू
भट यम नियम शैल रजधानी ❋ शांति सुमति शुचिसुन्दररानी
सकल अंग सम्पँन्न सुराऊ ❋ रामचरण आश्रित चितचाऊ
दो० जीति मोह महिंपाल दल, सहित विवेक भुवाल।
करत अकण्टक राजपुर, सुख सम्पदा सुकाल॥
वन प्रदेश मुनि वास घनेरे ❋ जनु पुर नगर गांव गण खेरे
विपुल विचित्र विहँगं मृगनाना ❋ प्रजा समाज न जाइ बखाना

१ पाप २ दास को ३ मछली ४ रास्ता ५ भ्रमर ६ बन ७ युक्त ८ भूपाल ९ पक्षी॥

खगहा करि हरि बाघ वराहा ❀ देखि महिष वृक साज सराहा
बैर विहाय चरहिं इकसंगा ❀ जहँ तहँ मनहुँ सेन चतुरंगा
झरना झरहिं मत्त गज गाजहिं ❀ मनहुँनिशानाविविधविधिबाजहिं
चक चकोर चातक शुकपिकगन ❀ कूजत मंजु मराल मुदितमन
अलिगण गावत नाचत मोरा ❀ जनु सुराज मंगल चहुँओरा
बेलि विटप तृण सफल सफूला ❀ सब समाज मुदमङ्गल मूला

दो० राम शैल शोभा निरखि, भरत हृदय अतिप्रेम ।
तापस तपफल पाइ जिमि, सुखी सिराने नेम ॥

तब केवट ऊंचे चढ़ि धाई ❀ कहा भरत सन भुजा उठाई
नाथ देखिये विटप विशाला ❀ पाकर जम्बु रसाल तमाला
तिन तरुवरन मध्य वट सोहा ❀ मंजु विशाल देखि मन मोहा
नील सघन पल्लव फल लाला ❀ अविचलछांह सुखद सबकाला
मानहुँ तिमिर अरुण मयरासी ❀ विरची विधि सकेलिसुषमासी
तेहि तरु सरित समीप गोसांई ❀ रघुवर पर्णकुटी तहँ छाई
तुलसी तरुवर विविध सुहाये ❀ कहुँकहुँ सिय कहुँ लषण लगाये
वट छाया वेदिका बनाई ❀ सिय निज पाणिसरोज सुहाई

दो० जहँ बैठैं मुनिगण सहित, नित सिय राम सुजान ।
सुनहिंकथा इतिहास सब, आगम निगम पुरान ॥

सखा वचन सुनि विटप निहारी ❀ उमँगे भरत विलोचन वारी
करत प्रणाम चले दोउ भाई ❀ कहत प्रीति शारद सकुचाई
हर्षहिं निरखि राम पद अंका ❀ मानहुँ पारस पायहु रंका
रजशिरधरिहियनयनलगावहिं ❀ रघुवरमिलनसारिस सुखपावहिं
देखि भरत गति अकथ अतीवा ❀ प्रेम मगन खग मृग जड़जीवा
सखहि सनेह विवश मगभूला ❀ कहि सुपंथ सुर वर्षहिं फूला
निरखि सिद्ध साधक अनुरागे ❀ सहज सनेह सराहन लागे

१ गैंडा २ सिंह ३ वृक्ष ४ पर्वत ५ आम ६ अंधेरा ७ चिह्न ८ निर्धनी ९ न कहने योग्य ॥

होत न भूतल[1] भाव भरतको ❀ अचर सचर चर अचर करतको

दो० प्रेमअमिय[2] मन्दर विरह, भरत पयोधि[3] गँभीर।
मथि प्रकटे सुर साधुहित, कृपासिन्धु रघुवीर॥

सखा समेत मनोहर जोटा ❀ लखेउ न लषण सघन वनओटा
भरत दीख प्रभु आश्रम पावन ❀ सकल सुमंगल सदन सुहावन
करत प्रवेश मिटा दुखदावा ❀ जनु योगी परमारथ पावा
देखे लषण भरत प्रभु आगे ❀ पूछत वचन कहत अनुरागे
शीश जटा कटि मुनिपट बांधे ❀ तूर्ण[4] कसे कर शर धनु कांधे
वेदी पर मुनि साधु समाजू ❀ सीय सहित राजत रघुराजू
वलकल[5] वसन जटिल तनुश्यामा ❀ जनु मुनिवेष कीन्ह रतिकामा
कर कमलन धनु शायक फेरत ❀ जीकी जरनि हरत हँसि हेरत

दो० लसत मंजु मुनिमण्डली, मध्य सीय रघुचन्द।
ज्ञानसभा जनु तनु धरे, भक्ति सच्चिदानन्द॥

सानुज सखा समेत मगनमन ❀ बिसरे हर्ष[6] शोक[7] सुख दुखगन
पाहि नाथ कहि पाहि गुसाईं ❀ भूतल परे लकुट की नाईं
वचन सप्रेम लषण पहिंचाने ❀ करत प्रणाम भरत जिय जाने
बन्धु सनेह सरस यहि ओरा ❀ उत साहिब सेवा बरजोरा
मिलि न जाइ नहिं गुदरत बनई ❀ सुकविलषण मनकी गतिभनई
रहे राखि सेवा पर भारू ❀ चढ़ी चङ्ग जनु खैंच खिलारू
कहत सप्रेम नाइ महिमाथा ❀ भरत प्रणाम करत रघुनाथा
उठे राम सुनि प्रेम अधीरा ❀ कहुँ पट कहुँ निषंग[8] धनुतीरा

दो० बरबस लिये उठाय उर, लाये कृपानिधान।
भरतरामकी मिलनिलखि, बिसरेउ सबहिं अपान॥

मिलनिप्रीति किमिजाइबखानी ❀ कविकुल अगम कर्म मन वानी
परम प्रेम पूरण दोउ भाई ❀ मनबुधि चित अहमिति बिसराई

१ पृथ्वी २ अमृत ३ समुद्र ४ तरकस ५ छालके कपड़े ६ खुशी ७ दुःख ८ पतंग ९ तरकस॥

कहहु सो प्रेम प्रकट को करई ❀ केहि छाया कविमति अनुसरई
कविहि अर्थ आखर बलसांचा ❀ अनुहर तालगतिहि नटनाचा
अगम सनेह भरत रघुवर को ❀ जहँ न जाइमन विधिहरिहरको
सो मैं वरणि कहौं केहि भांती ❀ बाजु सुराग कि गांड़र तांती
मिलनिविलोकिभरतरघुवरकी ❀ सुरगण सभय धुकधुकी धरकी
समुझाये सुरगुरु जड़ जागे ❀ वरषि प्रसून प्रशंसन लागे

दो० मिलि सप्रेम रिपुसूदनहिं, केवट भेंटे राम।
भूरि भाग्य भेंटे भरत, लक्ष्मणकरत प्रणाम॥

भेंटेउ लषण ललकि लघुभाई ❀ बहुरि निषाद लीन्ह उरलाई
पुनि मुनिगण दोउ भाइनवन्दे ❀ अभिमत[१] आशिष पाइ अनन्दे
सानुज भरत उमँगि अनुरागा ❀ धरि शिर सियपद पद्म[३] परागा
पुनि पुनि करत प्रणाम उठाये ❀ सियकर कमल परसि बैठाये
सीय अशीश दीन्ह मनमाहीं ❀ मगन सनेह देह सुधि नाहीं
सबविधि सानुकूल[४] लखि सीता ❀ भे अशोच उर अपडर बीता
कोउ कछु कहै न कोउ कछु पूछा ❀ प्रेम भरा मन निज गति छूछा
तेहि अवसर[५] केवट धीरजधरि ❀ जोरिपाणि विनवत प्रणामकरि

दो० नाथ साथ मुनिनाथ के, मातु सकल पुरलोग।
सेवक सेनप सचिव सब, आये विकल वियोग॥

शीलसिन्धु सुनि गुरु आगमनू ❀ सीय समीप राखि रिपुदमनू[६]
चले सवेग राम तेहि काला ❀ धीर धर्म्मधुर दीनदयाला
गुरुहि देखि सानुज अनुरागे ❀ दण्डप्रणाम करन प्रभु लागे
मुनिवर[७] धाइ लिये उर लाई ❀ प्रेम उमँगि भेंटे दोउ भाई
प्रेम पुलकि केवट कहि नामू ❀ कीन्ह दूरिते दण्डप्रणामू
रामसखा ऋषि बरबस भेंटे ❀ जनु महि लुटत सनेह समेटे
रघुपति भक्ति सुमंगलमूला ❀ नभ[८] सराहि सुर वरषहिंफूला

१ भेड़ २ वाञ्छित ३ कमल ४ प्रसन्न ५ समय ६ शत्रुघ्न ७ वशिष्ठजी ८ आकाश॥

यहिसम निपट नीच कोउ नाहीं ❋ बड़ वशिष्ठ सम को जगमाहीं

दो० जेहिलखिलषणहुतेअधिक, मिलेमुदितमुनिराउ।
सो सीतापति भजन को, प्रकट प्रताप प्रभाउ॥

आरत लोग राम सब जाना ❋ करुणाकर सुजानं भगवाना
जो जेहि भांति रहा अभिलाखी ❋ तेहि तेहिकी तैसी रुचि राखी
सानुज मिलि पलमहँ सब काहू ❋ कीन्ह दूरि दुख दारुण दाहू
यह बड़िबात राम कै नाहीं ❋ जिमि घटकोटि एकरवि छाहीं
मिलि केवटहि उमँगि अनुरागा ❋ पुरजन सकल सराहहिं भागा
देखी राम दुखित महतारी ❋ जनु सुबेलि अवली हिमेमारी
प्रथम राम भेंटे कैकेयी ❋ सरलस्वभाव भक्ति मति भेयी
पगपरि कीन्ह प्रबोध बहोरी ❋ कालकर्म्म विधि शिरधरिखोरी

दो० भेंटे रघुवर मातु सब, करि प्रबोध परितोष।
अम्ब ईश आधीन जग, काहु न देइय दोष॥

गुरुतिय पद वन्दे दोउ भाई ❋ सहित विप्रतिय जे सँग आई
गङ्ग गौरिसम सब सनमानी ❋ देहिं अशीश मुदित मृदुबानी
गहिपद लगे सुमित्रा अङ्का ❋ जनु भेंटी सम्पति अति रङ्का
पुनि जननीचरणन दोउ भ्राता ❋ परे प्रेम व्याकुल सब गाता
अति अनुराग अम्ब उरलाये ❋ नयन सनेह सँलिल नहवाये
तेहि अवसर कर हर्ष विषादू ❋ किमि कवि कहै मूकजिमिस्वादू
मिलि जननिहिं सानुज रघुराऊ ❋ गुरुसन कहेउ कि धारिय पाऊ
पुरजन पाइ मुनीश नियोगू ❋ जलथल तकि तकि उतरे लोगू

दो० महिसुर मंत्री मातु गुरु, गने लोग लिय साथ।
पावन आश्रम गमन किय, भरत लषण रघुनाथ॥

सीय आइ मुनिवर पग लागी ❋ उचित अशीश लही मनमांगी
गुरुपत्निहि मुनितियन समेता ❋ मिलि सप्रेम कहि जाइ न जेता

१ चतुर २ सूर्य ३ पंक्ति ४ पाला ५ ग़रीब ६ माता ७ जल ८ गूंगा ९ ब्राह्मण॥

वन्दि वन्दि पद सिय सबहीके ❀ आशिष वचन लहे प्रियजीके
सासु सकल जब सीय निहारी ❀ मूँदेउ नयन सहमि सुकुमारी
परी बधिकवश मनहुँ मराली ❀ काह कीन्ह करतार कुचाली
तिनसियनिरखिनिपटदुखपावा ❀ सो सब सहिय जो दैव सहावा
जनकसुता तब उर धरि धीरा ❀ नीलनलिन लोचन भरि नीरा
मिली सकलसासुन शिरनाई ❀ तेहि अवसर करुणा महिछाई

दो० लागिलागिपगसबनि सिय, भेंटति अतिअनुराग।
हृदय अशीशहिं प्रेमवश, रहिहौ भरी सुहाग ॥

विकल सनेह सीय सब रानी ❀ बैठन सबहि कहेउ गुरुज्ञानी
प्रथम कही जगगति मुनिनाथा ❀ कहे कछुक परमारथ गाथा
नृपकर सुरपुर गमन सुनावा ❀ सुनि रघुनाथ दुसह दुख पावा
मरण हेतु निज नेह विचारी ❀ भे अति विकल धीर धुरधारी
कुलिश कठोर सुनत कटुबानी ❀ विलपत लषण सीय सबरानी
शोक विकलअति सकलसमाजू ❀ मानहुँ राज अकाजेउ आजू
मुनिवर बहुरि राम समुझाये ❀ सहित समाजसुसरित नहाये
व्रत निरंबु तेहि दिन प्रभु कीन्हा ❀ मुनिहुँ काहु जल पान न लीन्हा

दो० भोर भये रघुनन्दनहिं, जो मुनि आयसु दीन्ह।
श्रद्धा भक्ति समेत प्रभु, सो सब सादर कीन्ह ॥

करि पितु क्रिया वेद जस वरणी ❀ भे पुनीत पातक तम तरणी
जासु नाम पावक अघ तूला ❀ सुमिरत सकल सुमंगल मूला
शुद्ध सो भये साधु सम्मत अस ❀ तीरथ आवाहन सुरसरि जस
शुद्ध भये दुइ वासर बीते ❀ बोले गुरुसन राम पिरीते
नाथ लोग सब निपट दुखारी ❀ कन्दमूल फल अम्बु अहारी
सानुज भरत सचिव सब माता ❀ देखि मोहिं पल जिमि युगजाता
सब समेत पुर धारिय पाऊ ❀ आपु इहां अमरावति राऊ

१ जानकी २ वज्र ३ निर्जल ४ आबा ५ अंधेरा ६ नौका ७ अग्नि ८ दिन ९ जल ॥

बहुत कहेउँ सब कहेउँ ढिठाई ❀ उचित होइ तस करिय गुसांई
दो० धर्महेतु करुणायतन, कस न कहहु अस राम।
लोकदुखित दिनदुइ दरश, देखि लहहिं विश्राम॥
राम वचन सुनि सभय समाजू ❀ जनु जलनिधि महँ विकल जहाजू
सुनि सुनि गिरा सुमंगलमूला ❀ भयउ मनहुँ मारुत अनुकूला
पावनपय तिहुँकाल नहाहीं ❀ जेहि विलोकि अघओघनशाहीं
मंगल मूरति लोचन भरि भरि ❀ निरखहिं हरषि दंडवत करि करि
राम शैल वन देखन जाहीं ❀ जहँ सुखसकल सकलदुखनाहीं
झरना झरहिं सुधासम वारी ❀ त्रिविध तापहर त्रिविध बयारी
विटप बेलि तृण अगणित जाती ❀ फल प्रसून पल्लव बहुभांती
सुन्दर शिला सुखद तरुछाहीं ❀ जाइ वरणि छवि वन केहि पाहीं
दो० सरन सरोरुह जल विहँग, कूजत गुंजत भृंग।
वैर विगत विहरत विपिन, मृग विहंग बहुरंग॥
कोल किरात भिल्ल वनवासी ❀ मधु शुचि सुंदर स्वादु सुधोसी
भरि भरि पर्णकुटी रचि रूरी ❀ कन्दमूल फल अंकुर जूरी
सबहि देहिं करि विनय प्रणामा ❀ कहि कहि स्वादु भेद गुणनामा
देहिं लोग बहु मोल न लेहीं ❀ फेरत राम दोहाई देहीं
कहहिं सनेह मगन मृदु बानी ❀ मानत साधु प्रेम पहिंचानी
तुम सुकृती हम नीच निपादा ❀ पावा दर्शन राम प्रसादा
हमहिं अगम अतिदरश तुम्हारा ❀ जस मरुधरणि देवसरि धारा
राम कृपालु निषाद नेवाजा ❀ परिजन प्रजा चलिय जस राजा
दो० यह जिय जानि सकोच तजि, करिय छोह लखि नेहु।
हमहिं कृतारथ करन लगि, फल तृण अंकुर लेहु॥
तुम प्रिय पाहुन वन पगुधारे ❀ सेवा योग न भाग हमारे
देब कहा हम तुमहिं गुसांई ❀ ईंधन पात किरात मिताई

१ पापसमूह २ अमृतसी ३ कोमल ४ रेतलीपृथ्वी ५ गंगाजी ६ कृपा ७ अँखुआ ८ लकड़ी॥

यह हमारि अतिबड़ि सेवकाई ❁ लेहिं न बासन बसन चुराई
हम जड़ जीव जीवगणघाती ❁ कुटिलकुचाली कुमति कुजाती
पाप करत निशि वासर जाहीं ❁ नहिं कटि पट नहिं पेट अघाहीं
सपनेहुँ धर्म्मबुद्धि कस काऊ ❁ यह रघुनन्दन दरश प्रभाऊ
जबते प्रभु पद पद्म निहारे ❁ मिटे दुसह दुख दोष हमारे
वचन सुनत पुरजन अनुरागे ❁ तिनके भाग्य सराहन लागे

छं० लागे सराहन भाग सब अनुराग वचन सुनावहीं ।
बोलनि मिलनि सियरामचरणसनेह लखिसुखपावहीं ॥
नरनारि निदरहिंनेहनिज सुनि कोलभिल्लनकी गिरा ।
तुलसी कृपा रघुवंशमणिकी लोह लै नौका तरा ॥
सो० विहरहिंवन चहुँओर, प्रतिदिन प्रमुदितलोगसब ।
जलजिमिदादुर मोर, भये पीन पावस प्रथम ॥

पुर नर नारि मगन अति प्रीती ❁ वासर जाहिं पलक सम बीती
सीय सासु प्रतिवेष बनाई ❁ सादर करहिं सरिस सेवकाई
लखा न मर्म राम बिनु काहू ❁ माया सब सिय माया माहू
सीय सासु सेवा वश कीन्हीं ❁ तिनलहिसुखशिषआशिषदीन्हीं
लखि सियसहित सरलदोउभाई ❁ कुटिल रानि पछितानि अघाई
अब जिय महँ याचति कैकेई ❁ महि न बीचु विधि मीचु न देई
लोकहु वेद विदित कवि कहहीं ❁ रामविमुख थल नरक न लहहीं
यह संशय सबके मनमाहीं ❁ राम गमन विधि अवध किनाहीं

दो० निशि न नींद नहिं भूखदिन, भरतविकलसुठिशोच ।
नीच कीचबिच मगन जस, मीनहिंसलिलसँकोच ॥

कीन्ह मातु मिसु काल कुचाली ❁ ईति भीति जस पाकत शाली
केहि विधि होइ राम अभिषेकू ❁ मोहिं अनुभवत उपाय न एकू

१ कमर २ कमल ३ निन्दते हैं ४ वाणी ५ मेंढ़क ६ मोटे ७ रात्रि ८ धान ९ राजतिलक ॥

अवशि फिरहिं गुरुआयसुमानी ❀ मुनि पुनि कहब रामरुचिजानी
मातु कहे बहुरहिं रघुराऊ ❀ रामजननि हठ करब न काऊ
मोहिं अनुचर कर केतिक बाता ❀ तेहि महँ कुसमय वाम विधाता
जो हठ करौं तो निपट कुकरमू ❀ हरगिरि ते गुरुसेवक धरमू
एकौ युक्ति न मन ठहरानी ❀ शोचत भरतहिं रैनि सिरानी
प्रात नहाइ प्रभुहिं शिरनाई ❀ बैठत पठये ऋषय बुलाई

दो॰ गुरुपदकमल प्रणाम करि, बैठे आयसु पाइ।
विप्र महाजन सचिव सब, जुरे सभासद आइ॥

बोले मुनिवर समय समाना ❀ सुनहु सभासद भरत सुजाना
धर्म्म धुरीण भानुकुल भानू ❀ राजा राम स्ववश भगवानू
सत्यसन्ध पालक श्रुतिसेतू ❀ राम जन्म जग मंगलहेतू
गुरु पितु मातु वचन अनुसारी ❀ खल दल दलन देव हितकारी
नीति प्रीति परमारथ स्वारथ ❀ कोउ न रामसम जान यथारथ
विधिहरिहरशशिरविदिशिपाला ❀ माया जीव कर्म कुलिकाला
अहिप महिप जहँलगि प्रभुताई ❀ योग सिद्धि निगमागम गाई
करि विचार जिय देखहु नीके ❀ राम रजाय शीश सबहीके

दो॰ राखे राम रजाय रुख, हम सबकर हित होइ।
समुझि सयाने करहु अब, सब मिलि सम्मत सोइ॥

सब कहँ सुखद राम अभिषेकू ❀ मंगलमूल मोद मगुएकू
केहि विधि अवध चलहिं रघुराई ❀ कहहु समुझि सोइ करैं उपाई
सब सादर सुनिवर सुनि बानी ❀ नय परमारथ स्वारथ सानी
उतर न आव लोग भे भोरे ❀ तव शिरनाय भरत कर जोरे
भानुवंश भे भूप घनेरे ❀ अधिक एक ते एक बड़ेरे
जन्महेतु सबकर पितु माता ❀ कर्म शुभाशुभ देइ विधाता
दलि दुख सृजे सकल कल्याना ❀ अब अशीश राउर जग जाना

१ आज्ञा २ दास ३ ब्रह्मा ४ कैलाश ५ मन्त्री ६ सूर्य ७ पुल ८ नीति ९ राजा॥

सो गुसाइँ विधि गति जेइ छेकी ❀ सकै को टारि टेकं जो टेकी
दो० बूझिय मोहिं उपाय अब, सो सब मोर अभाग ।
सुनि सनेहमय वचन गुरु, उर उपजा अनुराग ॥
तात बात फुर राम कृपाहीं ❀ राम विमुख सुख सपनेहु नाहीं
सकुचौं तात कहत इकबाता ❀ अर्ध तजहिं बुध सर्बस जाता
तुम कानन गमनहु दोउ भाई ❀ फेरिय लषण सीय रघुराई
सुनि शुभवचन हर्ष दोउ भ्राता ❀ भे प्रमोद परिपूरण गाता
मन प्रसन्न तनु तेज विराजा ❀ जनु जिय राव राम भे राजा
बहुत लाभ लोगन लघु हानी ❀ सम दुख सुख सब रोवहिं रानी
कहहिं भरत मुनि कहा सो कीजै ❀ फल जगजीवन अभिमत दीजै
कानन करौं जन्म भरि वासू ❀ यहिते अधिक न मोर सुपासू
दो० अन्तरयामी राम सिय, तुम सर्वज्ञ सुजान ।
जो फुरकहहु तो नाथ निज, कीजिय वचनप्रमान॥
भरत वचन सुनि देखि सनेहू ❀ सभा सहित मुनि भये विदेहू
भरत महामहिमा जल रासी ❀ मुनिमति ठाढ़ि तीर अबलासी
भा चह पार यतन बहु हेरा ❀ पावति नाव न बोहित बेरा
और करहि को भरत बड़ाई ❀ सरसरि सीपकि सिन्धु समाई
भरत मुनिहिं मन भीतर पाये ❀ सहित समाज राम पहँ आये
प्रभुप्रणाम करि दीन्ह सुआसन ❀ बैठे सुनि सब मुनि अनुशासन
बोले मुनिवर वचन विचारी ❀ देश काल अवसर अनुहारी
सुनहु राम सर्वज्ञ सुजाना ❀ धर्मनीति गुण ज्ञान निधाना
दो० सबके उर अन्तर बसहु, जानहु भाव कुभाव ।
पुर जन जननी भरतहित, होइ सो करिय उपाव ॥
आरत कहहिं विचार न काऊ ❀ सूझ जुआरिहि आपन दाऊ
सुनि मुनि वचन कहत रघुराऊ ❀ नाथ तुम्हारेहि हाथ उपाऊ

१ प्रण २ सांच ३ पंडित ४ वन ५ वाञ्छित ६ स्त्री ७ जहाज़ ८ ताल, नदी ९ दुःखी ॥

सब कर हित रुख राउर राखे ❀ आयसु दिये मुदित फुर भाखे
प्रथम जो आयसु मोकहँ होई ❀ माथे मानि करौं शिष सोई
पुनि जेहि कहँ जस होब रजाई ❀ सो सब भांति करिहि सेवकाई
कह मुनि राम सत्य तुम भाखा ❀ भरत सनेह विचार न राखा
तेहिते कहौं बहोरि बहोरी ❀ भरत भक्ति भइ मम मति भोरी
मोरे जान भरत रुचि राखी ❀ जो कीजिय सो शुभ शिव साखी

दो० भरत विनय[२] सादर सुनिय, करिय विचार बहोरि।
करब साधुमतलोक मत,नृपनयनिगमनिचोरि॥

गुरु अनुराग भरत पर देखी ❀ राम हृदय आनन्द विशेखी
भरतहिं धर्म धुरन्धर जानी ❀ निज सेवक तन मानस बानी
बोले गुरु आयसु अनुकूला ❀ वचन मंजु मृदु मङ्गलमूला
नाथ शपथ[३] पितु चरण दुहाई ❀ भयउ न भुवन भरत सम भाई
जे गुरु पद अम्बुज[४] अनुरागी ❀ ते लोकहु वेदहु बड़ भागी
राउर जापर अस अनुरागू ❀ को कहि सकै भरत कर भागू
लखि लघु बन्धु बुद्धि सकुचाई ❀ करत वदन पर भरत बड़ाई
भरत कहहिं सो किये भलाई ❀ अस कहि राम रहे अरँगाई[५]

दो० तब मुनि बोले भरत सन, सब सँकोच तजि तात।
कृपासिन्धु प्रियबन्धु सन, कहहु हृदय की बात॥

सुनि मुनि वचन राम रुखपाई ❀ गुरु साहिब अनुकूल अघाई
लखि अपने शिर सब छरभारू ❀ कहि न सकैं कछु करैं विचारू
पुलक शरीर सभा भे ठाढ़े ❀ नीरज[६] नयन नेहँ जल बाढ़े
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा ❀ यहिते अधिक कहौं मैं काहा
मैं जानौं निज नाथ स्वभाऊ ❀ अपराधिहु पर कोह[८] न काऊ
मोपर कृपा सनेह विशेखी ❀ खेलत खुनस[९] कबहुँ नहिं देखी
शिशुपन ते परिहरेउ न संगू ❀ कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू

१ आज्ञा २ बिनती ३ सौगंद ४ कमल ५ चुप ६ कमल ७ प्रेम ८ क्रोध ९ रिस॥

मैं प्रभु कृपा रीति जिय जोहीं ❀ हारेउ खेल जितावहिं मोहीं
दो० महूं सनेह सँकोच वश, सम्मुख कहेउँ न बैन।
दर्शन तृप्ति न आजु लगि, प्रेम पियासे नैन॥
विधि न सकेउ सहि मोर दुलारा ❀ नीच बीच जननी मिसु पारा
इहौ कहत मोहिं आजु न शोभा ❀ आपन समुझि साधु शुचि कोभा
मातु मन्द मैं साधु सुचाली ❀ उर अस आनत कोटि कुचाली
फरै कि कोदव बालि सुशाली ❀ मुक्ता प्रसव कि शम्बुक ताली
सपनेहुँ दोष कलेश न काहू ❀ मोर अभाग्य उदधि अवगाहू
बिनु समुझे निज अघ परिपाकू ❀ जारेउँ जाइ जननि कह काकू
हृदय हेरि हारेउँ सब ओरा ❀ एकहि भांति भलहि भल मोरा
गुरु गुसाइँ साहिब सियरामू ❀ लागत मोहिं नीक परिणामू
दो० साधुसभा प्रभु गुरु निकट, कहौं सुथल सतिभाव।
प्रेम प्रपंच कि झूँठ फुर, जानहिं मुनि रघुराव॥
भूपति मरण प्रेम प्रण राखी ❀ जननी कुमति जगत सबसाखी
देखि न जाहिं विकल महतारी ❀ जरहिं दुसह ज्वर पुर नर नारी
महीं सकल अनरथ कर मूला ❀ सो सुनि समुझि सहौं सब शूला
सुनि वन गमन कीन्ह रघुनाथा ❀ करि मुनिवेष लषण सिय साथा
बिनु पनहीं अरु प्यादेहि पाये ❀ शंकर साखि रह्यों यहि घाये
बहुरि निहारि निषाद सनेहू ❀ कुलिश कठिन उर भयउ न बेहू
अब सब आंखिन देखेउँ आई ❀ जियत जीव जड़ सबै सहाई
जिनहिंनिरखिमगुसांपिनिबीछी ❀ तजहिं विषमविष तामस तीछी
दो० तेइ रघुनन्दन लषण सिय, अनहित लागे जाहि।
तासु तनय तजि दुसह दुख, दैव सहावै काहि॥
सुनि अति विकलभरतवरबानी ❀ आरति प्रीति विनय नय सानी
शोक मगन सब सभा खँभारू ❀ मनहुँ कमल वन पर्‍यो तुषारू

१ बहाना २ सुन्दर धान ३ घोंघी ४ छेद ५ रास्ता ६ क्रोध ७ पुत्र ८ पाला॥

कहि अनेक विधि कथा पुरानी ❀ भरत प्रबोध कीन्ह मुनि ज्ञानी
बोले उचित वचन रघुनन्दू ❀ दिनकर[1] कुल कैरव[2]वन चन्दू
तात हृदय जनि करहु गलानी ❀ ईश अधीन जीव गति जानी
तीनि काल त्रिभुवन मत मोरे ❀ पुण्यश्लोक तात वश तोरे
उर आनत तुम पर कुटिलाई ❀ जाइ लोक परलोक नशाई
दोष देहिं जननिहिं जड़ तेई ❀ जिन गुरु साधु सभा नहिं सेई

दो० मिटहिं पाप परपंच सब, अखिल अमंगल भार।
लोकसुयश परलोकसुख, सुमिरत नाम तुम्हार॥

कहौं स्वभाव सत्य शिव साखी ❀ भरत भूमि रह राउर राखी
तात कुतर्क[3] करहु जनि जाये ❀ वैर प्रेम नहिं दुरै दुराये
मुनिगणनिकटविहँगमृगजाहीं ❀ बाधक बधिक विलोकि पराहीं
हित अनहित पशु पक्षिहु जाना ❀ मानुषतनु गुण ज्ञान निधाना
तात तुमहिं मैं जानौं नीके ❀ करौं कहा असमंजस जीके
राखेउ राव सत्य मोहिं त्यागी ❀ तनु परिहरेउ प्रेम प्रण लागी
तासु वचन मेटत बड़ शोचू ❀ तेहिते अधिक तुम्हार सँकोचू
तापर गुरु मोहिं आयसु दीन्हा ❀ अवशि जोकहहुचहौं सो कीन्हा

दो० मनप्रसन्नकरिसकुचतजि, कहहु करौं सो आज।
सत्यसन्ध रघुवरवचन, सुनिभा सुखी समाज॥

सुरगण सहित सभय सुरराजू[4] ❀ शोचहिं चाहत होन अकाजू
करत विचार बनत कछु नाहीं ❀ राम शरण सब गे मनमाहीं
बहुरि विचार परस्पर करहीं ❀ रघुवर भक्त भक्तिवश अहहीं
सुधि करि अम्बरीष दुर्वासा ❀ भे सुर सुरपति निपट निरासा
सहे सुरन बहुकाल विषादा ❀ नरहरि[5] किये प्रकट प्रहलादा
लगिलगिकानकहहिंधुनिमाथा ❀ अब सुरकाज[6] भरत के हाथा
आन उपायँ[7] न देखिय देवा ❀ मानत राम सुसेवक सेवा

१ सूर्य २ कुमोदिनी ३ नीचविचार ४ इन्द्र ५ नृसिंह ६ देवकार्य ७ यत्न॥

हिय सप्रेम सेवहिं सब भरतहिं ❀ निजगुण शीलरामवशकरतहिं

दो० सुनि सुरमत सुरगुरु कहेउ, भल तुम्हार बड़भाग।
सकल सुमंगलमूल जग, भरत चरण अनुराग॥

सीतापति सेवक सेवकाई ❀ कामधेनु शत सरिस सुहाई
भरत भक्ति तुम्हरे मन आई ❀ तजहु शोच विधि बात बनाई
देखु देवपति भरत प्रभाऊ ❀ सहज स्वभाव विवश रघुराऊ
मन थिर करहु देव डर नाहीं ❀ भरतहिं जानि राम परिछाहीं
सुनि सुरगुरु सुर सम्मत शोचू ❀ अन्तरयामी प्रभुहि सँकोचू
निजशिर भार भरत जिय जानी ❀ करत कोटिविधि उर अनुमानी
करि विचार मन दीन्ह्यो टीका ❀ राम रजायसु आपन नीका
निजप्रण तजि राखेउ प्रण मोरा ❀ छोह सनेह कीन्ह नहिं थोरा

दो० कीन्ह अनुग्रह अमित अति, सब विधि सीतानाथ।
करि प्रणाम बोले भरत, जोरिजलजयुगहाथ॥

कहउँ कहावउँ का अब स्वामी ❀ कृपा अम्बुनिधि अन्तरयामी
गुरु प्रसन्न साहिब अनुकूला ❀ मिटी मलिनमन कल्पितशूला
अपडर डरेउँ न शोच समूले ❀ रविहि न दोष देव दिशि भूले
मोर अभाग्य मातु कुटिलाई ❀ विधिगति विषम कालकठिनाई
पांव रोपि सब मिलि मोहिं घाला ❀ प्रणतपाल प्रण आपन पाला
यह नइ रीति न राउरि होई ❀ लोकहु वेद विदित नहिं गोई
जग अनभल भल एक गुसांई ❀ कहिय होइ भल कासु भलाई
देव देवतरु सरिस स्वभाऊ ❀ सम्मुख विमुख नकाहुहि काऊ

दो० जाइ निकट पहिंचानि तरु, छांह शमन सब शोच।
मांगत अभिमत पाव फल, राव रंक भल पोच॥

लखि सब विधि गुरु स्वामिसनेहू ❀ मिटेउ छोभ नहिं मन संदेहू
अब करुणाकर कीजिय सोई ❀ जनहित प्रभुचित छोभ न होई

१ बृहस्पति २ कृपा ३ समुद्र ४ डरयुक्त ५ श्रीरामचन्द्र ६ कल्पवृक्ष ७ कभी ८ वाञ्छित॥

जो सेवक साहिब संकोची ❋ निजहित चहै तासुमति पोची
सेवक हित साहिब सेवकाई ❋ करै सकल सुख लोभ विहाई
स्वारथ नाथ फिरे सबहीका ❋ किये रजाइ कोटि विधि नीका
यह स्वारथ परमारथ सारू ❋ सकलसुकृतफलसुगति शृँगारू
देव एक विनती सुनि मोरी ❋ उचित होइ तस करब बहोरी
तिलकसमाजसाजि सब आना ❋ करियसफल प्रभु जो मनमाना

दो॰ सानुज पठइय मोहिं वन, कीजिय सबहिं सनाथ।
नातरु फेरिय बन्धु दोउ, नाथ चलौं मैं साथ॥

नतरु जाहिं वन तीनिउँ भाई ❋ बहुरिय सीय सहित रघुराई
जेहि विधि प्रभु प्रसन्न मन होई ❋ करुणासागर कीजिय सोई
देव दीन्ह सब मोपर भारू ❋ मोरे नीति न धर्म्म विचारू
कहौं वचन सब स्वारथ हेतू ❋ रहत न आरत के चित चेतू
उतर देइ बिनु स्वामि रजाई ❋ सो सेवक लखि लाज लजाई
अस मैं अवगुण उदधि अगाधू ❋ स्वामि सनेह सराहत साधू
अब कृपालु मोहिं सो मत भावा ❋ सकुच स्वामि मन जाइ न पावा
प्रभु पद शपथ कहौं सति भाऊ ❋ जग मंगल हित एक उपाऊ

दो॰ प्रभुप्रसन्न मन सकुच तजि, जो जेहि आयसु देव।
सो शिरधरिधरिकरहिं सब, मिटिहिअनटअवरेव॥

भरत वचन शुचि सुनि सुर हर्षे ❋ साधु सराहि सुमन सुर वर्षे
असमंजस वश अवध निवासी ❋ प्रमुदित मन तापस वनवासी
चुप रहिगे रघुनाथ सँकोची ❋ प्रभु गति देखि सभा सब शोची
जनक दूत तेहि अवसर आवा ❋ मुनिवशिष्ठ सुनि वेगि बुलावा
करि प्रणाम तिन राम निहारे ❋ वेष देखि भे निपट दुखारे
दूतहिं मुनिवर पूंछी बाता ❋ कहहु विदेहँ भूप कुशलाता
सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा ❋ बोले चरवर जोरे हाथा

१ नहीं तो २ लौटिये ३ होश ४ समुद्र ५ आज्ञा ६ फूल ७ जनक ८ दूत॥

बूझत राउर सादर साईं ❀ कुशल हेतु सो भयउ गुसाईं

दो० नाहित कोशलनाथ के, साथ कुशल गइ नाथ।
मिथिला अवध विशेषते, जग सब भयउ अनाथ॥

कोशलपतिगति सुनिजनकौरा ❀ भे सब लोग शोचवश बौरा
जेहि देखा तेहि समय विदेहू ❀ नाम सत्य अस लागु न केहू
रानि कुचालि सुनत महिपालै ❀ सूझन कछुजसमणि बिनुव्यालै
भरत राज रघुवर बनवासू ❀ भा मिथिलेशहि हृदय हरासू
नृप बूझे बुधं सचिवैं समाजू ❀ कहहु विचारि उचित का आजू
समुझि अवध असमंजस दोऊ ❀ चलियकिरहिय न कहकछुकोऊ
नृपति धीर धरि हृदय विचारी ❀ पठये अवध चतुरचर चारी
बूझि भरत गति भाउ कुभाऊ ❀ आयहु वेगि न होइ लखाऊ

दो० गये अवध चर भरतगति, बूझि देखि करतूति।
चले चित्रकूटहि भरत, चार चले तिरहूति॥

दूतन आइ भरत की करणी ❀ जनक समाज यथामति वरणी
सुनि गुरुपुरजनसचिवमहीपति ❀ भे सब शोच सनेह विकलमति
धरि धीरज करि भरत बड़ाई ❀ लिये सुभट साहनी बुलाई
घर पुर देश राखि रखवारे ❀ हयँ गयँ रथ बहु यान सँवारे
दुघड़ी साधि चले ततकाला ❀ किय विश्राम न मगु महिपाला
भोरहि आजु नहाइ प्रयागा ❀ चले यमुन उतरन सब लागा
खबरि लेन हम पठये नाथा ❀ तिन कहि अस महिनायहुमाथा
साथ किरात छ सातक दीन्हे ❀ मुनिवर तुरत बिदा चर कीन्हे

दो० सुनतजनकआगमन सब, हर्षेउ अवध समाज।
रघुनन्दनहिं सँकोच बड़, शोचविवश सुरँराज॥

गरे गलानि कुटिल कैकेई ❀ काहि कहै केहि दूषण देई
अस मन आनि मुदितँ नरनारी ❀ भयउ बहोरि रहब दिन चारी

१ जनकपुरी २ दुःख ३ पण्डित ४ मन्त्री ५ फ़ौज ६ घोड़े ७ हाथी ८ इन्द्र ९ हर्षित॥

यहिप्रकार गत¹ वासर² सोऊ ❋ प्रात नहान लगे सब कोऊ
करि मज्जन पूजहिं नर नारी ❋ गणपति गौरि पुरारि³ तमारी⁴
रमारमण पद वन्दि बहोरी ❋ बिनवहिं अंचल अंजलि जोरी
राजा राम जानकी रानी ❋ आनँद अवधि अवध रजधानी
सुबस बसै फिरि सहित समाजा ❋ भरतहिं राम करहिं युवराजा
यहि सुखसुधा सींचि सबकाहू ❋ देव देहु जग जीवन लाहू

दो० गुरु समाज भाइन सहित, रामराज पुर होउ।
अछत राम राजा अवध, मरिय मांगु सब कोउ॥

सुनि सनेहमय पुरजन बानी ❋ निन्दहिं योग विरति मुनिज्ञानी
यहि विधि नित्यकर्मकरिपुरजन ❋ रामहिंकरहिं प्रणामपुलँकितन⁵
ऊँच नीच मध्यम नर नारी ❋ लहैं दरश निज निज अनुहारी
सावधान सबही सनमानहिं ❋ सकल सराहत कृपानिधानहिं
लरिकाई ते रघुवर बानी ❋ पालत प्रीति रीति पहिंचानी
शील सँकोच सिन्धु रघुराऊ ❋ सुमुख सुलोचन सरल सुभाऊ
कहत राम गुणगण अनुरागे ❋ सब निज भाग्य सराहन लागे
हम सम पुण्य पुंज⁶ जग थोरे ❋ जिनहिं राम जानत करि मोरे

दो० प्रेममगनतेहिसमय सब, सुनि आवत मिथिलेश⁷।
सहित सभा संभ्रम⁸ उठे, रविकुलकमलदिनेश⁹॥

भाइ सचिव गुरु पुरजन साथा ❋ आगे गमन कीन्ह रघुनाथा
गिरिवर दीखजनक नृपजबहीं ❋ करि प्रणाम त्यागा रथ तबहीं
राम दरश लालसा उछाहू ❋ पथ श्रम लेश कलेश न काहू
मन तहँ जहँ रघुवर वैदेही ❋ बिनुमनतनदुख सुखसुधिकेही
आवत जनक चले यहि भांती ❋ सहित सनेह प्रेम मदमाती
आये निकट देखि अनुरागे ❋ सादर मिलन परस्पर लागे
लगे जनक मुनिगणपद वन्दन ❋ ऋषिन प्रणाम कीन्ह रघुनन्दन

१ बीता २ दिन ३ शम्भु ४ सूर्य्य ५ रोमांचित ६ समूह ७ राजा जनक ८ चकित ९ सूर्य्य॥

भाइन सहित राम मिलि राजहिं ❋ चले लिवाइ समेत समाजहिं
दो० आश्रम सागर शान्तरस, पूरण पावन पाथ।
सैन मनहुँ करुणा सरित, लिये जात रघुनाथ ॥
बोरति ज्ञान विराग करारे ❋ वचन सशोक मिलत नदि नारे
शोच उसास समीर तरंगा ❋ धीरज तट तरुवर कर भंगा
विषम विषाद तुरावति धारा ❋ भय भ्रम भवँरावर्त अपारा
केवट बुध विद्या बड़ि नावा ❋ सकहि न खेइ एक नहिं आवा
वनचर कोल किरात विचारे ❋ थके विलोकि पथिक हिय हारे
आश्रम उदधि मिली जब जाई ❋ मनहुँ उठेउ अम्बुधि अकुलाई
शोक विकल दोउ राजसमाजा ❋ रहा न ज्ञान न धीरज लाजा
भूप रूप गुण शील सराही ❋ शोचहिं शोक सिन्धु अवगाही
छं० अवगाहिशोकसमुद्रशोचहिं नारिनरव्याकुलमहा।
दै दोष सकल सरोष बोलहिं वाम विधि कीन्हीं कहा ॥
सुरसिद्ध तापस योगिजन मुनिदशा देखि विदेह की।
तुलसी न समरथ कोउ जो तरिसकै सरित सनेह की ॥
सो० किये अमित उपदेश, जहँ तहँ लोगन मुनिवरन।
धीरज धरिय नरेश, कहेउ वशिष्ठ विदेह सन ॥
जासुज्ञान रवि भवँ निशिनाशा ❋वचनकिरणिमुनिकमलविकाशा
तेहि कि मोह ममता नियराई ❋ यह सिय राम सनेह बड़ाई
विषयी साधक सिद्ध सयाने ❋ त्रिविध जीव जग वेद बखाने
राम सनेह सरस मन जासू ❋ साधु सभा बड़ आदर तासू
सोह न राम प्रेम बिनु ज्ञाना ❋ कर्णधार बिनु जिमि जलयाना
मुनि बहु विधि विदेह समुझाये ❋ रामघाट सब लोग नहाये
सकल शोक संकुल नर नारी ❋ सो वासर बीतेउ बिनु वारी

१ जल २ नदी ३ पवन ४ जलचक्र ५ समुद्र ६ अपार ७ संसार ८ मल्लाह ९ नौका ॥

पशु खग मृगन न कीन्ह अहारा ❀ प्रिय परिजनकर कवन विचारा
दो० दोउ समाज निमिराजं रघु, राज नहाने प्रात।
बैठे सब वट विटप तर, मनमलीनकृशगात॥
जे महिसुंर दशरथ पुरवासी ❀ जे मिथिलापति नगर निवासी
हंस वंस गुरु जनक पुरोधा ❀ जिन जग मग परमारथ शोधा
लगे कहन उपदेश अनेका ❀ सहित धर्म नय विरति विवेका
कौशिक कहि कहि कथा पुरानी ❀ समुझाई सब सभा सुबानी
तब रघुनाथ कौशिकहि कहेऊ ❀ नाथ कालिह बिनु जल सब रहेऊ
मुनि कह उचित कहत रघुराई ❀ गयउ बीति दिन पहर अढ़ाई
ऋषिरुखलखिकहतिरहुतिराजू ❀ इहां उचित नहिं अशनअनाजू
कहा भूप भल सबहि सोहाना ❀ पाइ रजायसु चले नहाना
दो० तेहि अवसर फल फूल दल, मूल अनेक प्रकार।
लैआये वनचर विपुल, भरिभरिकांवरिभार॥
कामँद भे गिरि राम प्रसादा ❀ अवलोकत अपहरत विषादा
सर सरिता वन भूमि विभागा ❀ जनु उमँगत आनँद अनुरागा
बेलि विटप सब सफल सफूला ❀ बोलत खगमृग अतिअनुकूला
तेहि अवसर वन अधिक उछाहू ❀ त्रिविध समीर सुखद सबकाहू
जाइ न वरणि मनोहरताई ❀ जनु महि करति जनक पहुनाई
तब सब लोग नहाइ नहाई ❀ राम जनक मुनिआयसु पाई
देखि देखि तरुवर अनुरागे ❀ जहँ तहँ पुरजन उतरन लागे
दल फल फूल कन्द विधि नाना ❀ पावन सुन्दर सुधा समाना
दो० सादर सबकहँ राम गुरु, पठये भरि भरि भार।
पूजि पितर सुर अतिथि गुरु, लगे करन फलहार॥
यहि विधि वासर बीते चारी ❀ राम निरखि नर नारि सुखारी
दुहुँसमाज अस रुचि मनमाहीं ❀ बिनु सियराम फिरब भल नाहीं

१ जनक २ दुर्बल ३ ब्राह्मण ४ पुरोहित ५ भोजन ६ वनवासी ७ कामदाता ८ अमृत॥

सीता राम संग वनवासू ❀ कोटि अमरपुर सरिस सुपासू
परिहरि लषण राम वैदेही ❀ जेहि घर भाव वाम विधि तेही
दाहिन दैव होइ जब सबहीं ❀ राम समीप बसिय वन तबहीं
मन्दाकिनिमज्जन तिहुँ काला ❀ रामदरश मुद मंगल माला
अटन[१] रामगिरि वन तापसथल ❀ अशन[२] अमियसमकन्दमूलफल
सुख समेत संवत दुइ साता ❀ पलसम होहिं न जानिय जाता

दो० यहि सुखयोगन लोग सब, कहहिं कहां असभाग ।
सहजसुभाव समाज दुहुँ, रामचरण अनुराग ॥

यहि विधि सकल मनोरथकरहीं ❀ वचन सप्रेम सुनत मन हरहीं
सीय मातु तेहि समय पठाई ❀ दासी देखि सुअवसर आई
सावकाश सुनि सब सियसासू ❀ आई जनकराज रनिवासू
कौशल्या सादर सनमानी ❀ आसन दीन्ह समय सम आनी
शील सनेह सरस दुहुँ ओरा ❀ द्रवहिं देखि सुनि कुलिश कठोरा
पुलकशिथिलतनुवारिविलोचन ❀ महिनखलिखनै[३]लगींसबशोचन
सब सियराम प्रेमकी मूरति ❀ जनु करुणा बहु वेष बिसूरति
सीयमातु कह विधि बुधि बांकी ❀ जिमि पयफेनु फोर पवि टांकी

दो० सुनिय सुधा देखिय गरल[४], सब करतूति कराल ।
जहँ तहँ काँक[५] उलूक बक, मानस सकृत मराल[६] ॥

सुनि सशोच कह देवि सुमित्रा ❀ विधिगतिअतिविपरीतविचित्रा
जो सृजि पालै हरै बहोरी ❀ बालकेलिसम विधिमति भोरी
कौशल्या कह दोष न काहू ❀ कर्मविवश दुख सुख क्षति[७] लाहू
कठिन कर्मगति जान विधाता ❀ जो शुभ अशुभ कर्म फलदाता
ईश रजाइ शीश सबहीके ❀ उत्पति थिति लय[८] विषहुअमीके
देवि मोहवश शोचिय वादी ❀ विधिप्रपंच अस अचल अनादी[९]
भूपति जियब मरब उर आनी ❀ शोचियसखिलखिनिजहितजानी

१ घूमना २ भोजन ३ खोदना ४ ज़हर ५ कौवा ६ हंस ७ हानि ८ नाश ९ आदिरहित ॥

सीयमातु कह सत्य सुबानी ❀ सुकृती अवधि[1] अवधपतिरानी

दो० लषण राम सिय जाहिंवन, भलपरिणाम न पोचँ।
गह्वरिहिय कह कौशला, मोहिं भरतकर शोच॥

ईश प्रसाद[3] अशीश तुम्हारी ❀ सुत सुतवधू देवसरि[4] वारी
राम शपथ मैं कीन्ह न काऊ ❀ सो करि सखी कहौं सतिभाऊ
भरतशील गुण विनय बड़ाई ❀ भायप भक्ति भरोस भलाई
कहत शारदहु कै मति हीचै ❀ सागर सीप कि जाहि उलीचै
जानौ सदा भरत कुलदीपा ❀ बारबार मोहिं कहेउ महीपा
कसे कनक[5] मणि पारिख पाये ❀ पुरुष परखिये समय सुभाये
अनुचित आजु कहब अस मोरा ❀ शोक सनेह सयानप थोरा
सुनि सुरसरि सम पावनि बानी ❀ भईं सनेह विकल सब रानी

दो० कौशल्या कह धीर धरि, सुनहु देवि मिथिलेशि[6]।
को विवेकनिधि वल्लभहि, तुमहिं सकै उपदेशि॥

रानि राव सन अवसर पाई ❀ आपनि भांति कहब समुझाई
राखहिं लषण भरत गमनहिं वन ❀ जो यह मत मानै महीप मन
तौ भलि यतन सुकरहु विचारी ❀ मोरे शोच भरत कर भारी
गूढ़ सनेह भरत मन माहीं ❀ रहे नीक मोहिं लागत नाहीं
लखिस्वभाव सुनिसरलँसुबानी ❀ सब भईँ मगन करुणरस सानी
नभ प्रसून[8] झरि धन्य धन्य धुनि ❀ शिथिलसनेह सिद्धयोगीमुनि
सब रनिवास थकित लखि रहेऊ ❀ तब धरि धीर सुमित्रा कहेऊ
देवि दण्ड युग यामिनि[9] बीती ❀ राममातु सुनि उठी सप्रीती

दो० वेगि पांय धारिय थलहि, कह सनेह सतिभाय।
हमरे तौ अब ईश गति, की मिथिलेश सहाय॥

लखि सनेह सुनि वचन विनीता ❀ जनकप्रिया गहि पांव पुनीता
देवि उचित अस विनय तुम्हारी ❀ दशरथघरनि राम महतारी

१ हद २ तुच्छ ३ कृपा ४ गंगाजी ५ सोना ६ सुनयना ७ सीधी ८ फूल ९ रात्रि॥

प्रभु अपने नीचहु आदरहीं ❋ अग्नि धूम गिरि शिर तृणधरहीं
सेवक राव कर्म्म मन बानी ❋ सदा सहाय महेश भवानी
रौरे अंगयोग्य जग कोहै ❋ दीपसहाय कि दिनकर सोहै
राम जाय वन करि सुरकाजू ❋ अचल अवधपुर करिहहिं राजू
अमर नाग नर राम बाहुबल ❋ सुखवसिहहिं अपने अपने थल
यह सब याज्ञवल्क्य कहि राखा ❋ देवि न होइ मृषा मुनि भाखा
दो० असकहिपगुपरिप्रेमअति, सियहितविनय सुनाइ ।
सियसमेत सियमातु तब, चली सुआयसु पाइ ॥
प्रिय परिजनहिं मिली वैदेही ❋ जो जेहि योग्य भांति तस तेही
तापस वेष जानकिहि देखी ❋ भे सब विकल विषाद विशेखी
जनक राम गुरु आयसु पाई ❋ चले थलहि सिय देखी आई
लीन्ह लाइउर जनक जानकी ❋ पाहुनि पावनि प्रेम प्रानकी
उर उमँगेउ अम्बुधि अनुरागू ❋ भयहु भूप मन मनहुँ प्रयागू
सिय सनेहवट बाढ़त जोहा ❋ तापर राम प्रेम शिशु सोहा
चिरंजीवि मुनि ज्ञानविकलजनु ❋ बूड़त लहेउ बाल अवलम्बनु
मोहमगन मति नहिं विदेहकी ❋ महिमा सिय रघुवर सनेहकी
दो० सिय पितुमातु सनेहवश, विकल न सकी सँभारि ।
धरणिसुता धीरज धरेउ, समय सुधर्म विचारि ॥
तापस वेष जनक सिय देखी ❋ भयउ प्रेम परितोष विशेखी
पुत्रि पवित्र किये कुल दोऊ ❋ सुयश धवल जग कह सबकोऊ
जिमि सुरसरि कीरति सरि तोरी ❋ गमन कीन्ह विधि अण्ड करोरी
गंग अवनिथल तीनि बड़ेरे ❋ यहि किय साधु समाज घनेरे
पितु कह सत्य सनेह सुबानी ❋ सीय सकुचि मनमांह समानी
पुनि पितु मातु लीन्ह उरलाई ❋ शिप आशिषहित दीन्ह सुहाई
कहति न सीय सकुच मनमाहीं ❋ इहां बसब रजनी भल नाहीं

१ धुआँ २ पार्वतीजी ३ मूंड ४ सहारा ५ जनक ६ जानकी ७ उज्ज्वल ८ पृथ्वी ९ रात्रि ॥

लखि रुख रानि जनायउ राऊ ❋ हृदय सराहत शील स्वभाऊ

दो० बारबार मिलिभेंटि सिय, बिदा कीन्ह सनमानि ।
कहीसमयशिरभरतगति, रानि सुबानि सयानि ॥

सुनि भूपाल भरत व्यवहारू ❋ सोन सुगन्ध सुधा शशिसारू
मूंदे सजल नयन पुलके तन ❋ सुयश सराहन लगे मुदितमन
सावधान सुनु सुमुखि सुलोचनि ❋ भरतकथा भवबन्ध विमोचनि
धर्मराज नय ब्रह्म विचारू ❋ यहां यथामति मोर प्रचारू
सो मति मोरि भरत महिमाहीं ❋ कहौं काह छलि छुअति न छाहीं
विधिगणपतिअहिपतिशिवशारद❋कविकोविदबुध बुद्धिविशारद
भरतचरित कीरति करतूती ❋ धर्म्मशील गुण विमल विभूती
समुझत सुनत सुखद सबकाहू ❋ लोक लाभ परलोक निबाहू

दो० निरवधिगुणनिरुपमपुरुष, भरत भरतसम जानि ।
कहिय सुमेरु कि सेरसम, कविकुलमतिसकुचानि॥

अगम सबहिं वरणत वरवरणी ❋ जिमि जलहीनमीनमगतरणी
भरत अमितमहिमा सुनु रानी ❋ जानहिं राम न सकहिं बखानी
वरणि सप्रेम भरत अनुभाऊ ❋ तियजियकी रुचि लखिकहराऊ
बहुरहिं लषण भरत वन जाहीं ❋ सबकर भल सबके मन माहीं
देवि परन्तु भरत रघुवरकी ❋ प्रीति प्रतीति जाइ नहिं तरकी
भरत सनेह अवधि ममताके ❋ यद्यपि राम सींव समताके
परमारथ स्वारथ सुख सारे ❋ भरत न सपनेहुँ मनहुँ निहारे
साधन सिद्धि राम पद नेहू ❋ मोहिं लखि परत भरत मत येहू

दो० भोरेहु भरत न पेलिहैंहिं, मन महँ राम रजाइ ।
करिय न शोच सनेहवश, कहेउ भूप बिलखाइ ॥

राम भरत गुण कहत सप्रीती ❋ निशिदम्पतिहि पलकसमबीती
राज समाज प्रात युग जागे ❋ न्हाइ न्हाइ सुर पूजन लागे

१ चंद्रमा २ संसार ३ अपार ४ मछली ५ त्याग ६ आज्ञा ७ राजा ८ सत्पुरुष ॥

गे नहाइ गुरु पहँ रघुराई ❀ वन्दि चरण बोले रुख पाई
नाथ भरत पुरजन महतारी ❀ शोच विकल वनवास दुखारी
सहित समाज राव मिथिलेशू ❀ बहुत दिवस भे सहत कलेशू
उचित होय सो कीजिय नाथा ❀ हित सबही कर रौरे हाथा
अस कहि अति सकुचे रघुराऊ ❀ मुनि पुलके लखि शील स्वभाऊ
तुम बिनु राम सकल सुख साजा ❀ नरक सरिस दुहुँ राज समाजा

दो० प्राण प्राण के जीव के, जिय सुखके सुखराम ।
तुमतजितातसोहातगृह, जिनहिंतिनहिंविधिबाम॥

सो सुख कर्म धर्म जरि जाऊ ❀ जहँ न राम पद पंकज भाऊ
योग कुयोग ज्ञान अज्ञानू ❀ जहां न राम प्रेम परधानू
तुम बिनु दुखी सुखी तुम तेही ❀ तुमजानहु जिय जो जेहि केही
राउर आयसु शिर सबहीके ❀ विदित कृपालुहिं गतिसबनीके
आपु आश्रमहिं धारिय पाऊ ❀ भये सनेह शिथिल मुनिराऊ
करि प्रणाम तब राम सिधाये ❀ ऋषि धरि धीर जनक पहँ आये
राम वचन गुरु नृपहिं सुनाये ❀ शील सनेह सुभाय सुहाये
महाराज अब कीजिय सोई ❀ सब कर धर्म्म सहित हित होई

दो० ज्ञाननिधान सुजान शुचि, धर्म्म धीर नरपाल ।
तुमबिनु असमंजस शमन, को समर्थ यहिकाल ॥

सुनि मुनि वचन जनक अनुरागे ❀ लखि गति ज्ञान विराग विरागे
शिथिल सनेह गुणंत मनमाहीं ❀ आये इहां कीन्ह भल नाहीं
रामहिं राव कहेउ वन जाना ❀ कीन्ह आपु प्रिय प्रेम प्रमाना
हम अब वन ते वनहिं पठाई ❀ प्रमुदित फिरब विवेक बड़ाई
तापस मुनि महीप गति देखी ❀ भये प्रेमवश विकल विशेखी
समय समुझि धरि धीरज राजा ❀ चले भरत पहँ सहित समाजा
भरत आय आगे है लीन्हा ❀ अवसर सरिस सुआसन दीन्हा

१ जनक २ वर ३ चतुर ४ राजा ५ नाशक ६ शोचत ७ राजा ८ समय ॥

तात भरत कह तिरहुति राऊ ❋ तुमहिं विदित रघुवीर स्वभाऊ
दो॰ राम सत्य व्रत धर्म्मरत, सब कर शील सनेहु ।
संकट सहत सँकोचवश, कहिय जो आयसु[1] देहु ॥
सुनितनुपुलकि नयनभरि वारी ❋ बोले भरत धीर धरि भारी
प्रभु प्रिय पूज्य पिता सम आपू ❋ कुलगुरुसम हित माय न बापू
कौशिकादि[2] मुनिसचिव समाजू ❋ ज्ञान अम्बुनिधि आपन आजू
शिशु सेवक आयसु अनुगामी[3] ❋ जानि मोहिं शिष देइय स्वामी
यहि समाज थल बूझब राउर ❋ मन मलीन मैं बोलब बाउर
छोटे वदन कहौं बड़ि बाता ❋ क्षमब तात लखि वाम विधाता
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना ❋ सेवक धर्म्म कठिन जग जाना
स्वामिधर्म स्वारथहि विरोधू ❋ बधिरै[4] अन्ध प्रेमहि न प्रबोधू
दो॰ राखि राम रुख धर्म्म व्रत, पराधीन मोहिं जानि ।
सबके सम्मत सर्व हित, करिय प्रेम पहिंचानि ॥
भरत वचन सुनि देखि स्वभाऊ ❋ सहित समाज सराहत राऊ
सुगम अगम मृदु मंजु कठोरा ❋ अर्थ अमित[5] अति आखर थोरा
जो मुख मुकुर मुकुर निजपाणी ❋ गहि न जाय अस अद्भुत वाणी
भूप भरत मुनि साधु समाजू ❋ गे जहँ विबुध कुमुद द्विजराजू
सुनिसुधिशोचविकलसबलोगा ❋ मनहुँ मीनगण नवजल योगा
देव प्रथम कुलगुरु गति देखी ❋ निरखि विदेह[6] सनेह विशेखी
राम भक्तिमय भरत निहारे ❋ सुर स्वारथी हहरि हिय हारे
सब कहँ राम प्रेममय पेखा ❋ भये अलेख शोचवश लेखा
दो॰ राम सनेह सँकोचवश, कह सशोच सुरराज[7] ।
रचहु प्रपंचहि पंच मिलि, नाहिंत भयउ अकाज ॥
सुरन सुमिरि शारदा सराही ❋ देवि देव शरणागत पाही
फेरु भरतमति करि निजमाया ❋ पालुविबुध[8]कुल करि छलछाया

१ आज्ञा २ विश्वामित्र ३ सेवक ४ बहिरा ५ अप्रमाण ६ जनक ७ इन्द्र ८ देवता ॥

विबुध विनय सुनि देवि सयानी ❀ बोली सुरस्वारथि जड़ जानी
मोसन कहहु भरत मति फेरू ❀ लोचन सहस¹ न सूझ सुमेरू
विधि हरि हर माया बड़िभारी ❀ सो न भरतमति सकै निहारी
सो मति मोहिं कहत करु भोरी ❀ चन्द्रनि करै कि चन्द्रकि चोरी
भरत हृदय सियराम निवासू ❀ तहँ कि तिमिर² जहँतरणि³प्रकासू
अस कहि शारदगइविधिलोका ❀ विबुधविकलनिशिमानहुँकोका

दो० सुरस्वारथी मलीन मन, कीन्ह कुमंत्र कुठाट।
रचि प्रपंच मायाप्रबल, भयभ्रम अरत उचाट॥

करि कुचाल शोचत सुरराजू ❀ भरतहाथ सब काज अकाजू
गये जनक रघुनाथ समीपा ❀ सनमाने सब रघुकुलदीपा
समय समाज धर्म्म अविरोधा ❀ बोले तब रघुवंश पुरोधा
जनक भरत संवाद सुनाई ❀ भरत कहावति कही सुहाई
तात राम जस आयसु देहू ❀ सो सब करैं मोर मत येहू
सुनि रघुनाथ जोरि युगपाणी ❀ बोले सत्य सरल मृदुवाणी
विद्यमान आपुन मिथिलेशू ❀ मोर कहा सब भांति भदेशू
राउर राव रजायसु होई ❀ राउरि शपथ⁵ सही शिर सोई

दो० रामशपथसुनि मुनिजनक, सकुचे सभा समेत।
सकलविलोकहिं भरतमुख, बनै न उत्तर देत॥

सभा सकुचवश भरत निहारी ❀ रामबन्धु धरि धीरज भारी
कुसमय देखि सनेह सँभारा ❀ बढ़तविन्ध्यजिमिघट⁶जनिवारा
शोक कनक⁷लोचन मति छोनी ❀ हरी विमलगुणगण जगयोनी
भरतविवेक वराह विशाला ❀ अनायास उघरे तेहि काला
करि प्रणाम सब कहँ करजोरी ❀ राम राव गुरु साधु निहोरी
क्षमब आजु अति अनुचित मोरा ❀ कहउँ वदन मृदुवचन कठोरा
हिय सुमिरी शारदा सुहाई ❀ मानस ते मुख पंकज⁸ आई

१ हज़ार २ अँधेरा ३ सूर्य ४ पास ५ सौगन्द ६ अगस्त्य ७ हिरण्याक्ष ८ कमल॥

विमल विवेक धर्मनय शाली ❀ भरत भारती मंजु मराली
दो० निरखि विवेकविलोचनहिं, शिथिल सनेह समाज।
करिप्रणाम बोले भरत, सुमिरि सीय रघुराज॥
प्रभु पितु मातु सुहृद गुरु स्वामी ❀ पूज्य परमहित अन्तरयामी
सरल सुसाहिब शीलनिधानू ❀ प्रणतपाल सरवज्ञ सुजानू
समरथ शरणागत हितकारी ❀ गुणग्राहक अवगुण अघहारी
स्वामि गुसाइँहि सदृश गुसाई ❀ मोहिं समान मैं स्वामि दोहाई
प्रभु पितु वचन मोहवश पेली ❀ आयउँ इहां समाज सकेली
जग भल पोच ऊंच अरु नीचू ❀ अँमिय सजीवन माहुर मीचू
राम रजाइ मेटि मन माहीं ❀ देखा सुना कतहुँ कोउ नाहीं
सो मैं सबविधि कीन्ह ढिठाई ❀ प्रभु मानी सनेह सेवकाई
दो० कृपा भलाई आपनी, नाथ कीन्ह भल मोर।
दूषण भे भूषणसरिस, सुयश चारु चहुँ ओर॥
राउर रीति सुवाणि[1] बड़ाई ❀ जगतविदित निगमागम गाई
कूर कुटिल खल कुमति कलंकी ❀ नीच निशील निरीश[2] निशंकी
तेउ सुनि शरण सामुहे आये ❀ सकृत प्रणाम किये अपनाये
देखि दोष कबहुँ न उर[3] आने ❀ सुनि गुण साधु समाज बखाने
को साहिब सेवकहि निवाजी ❀ आपु समान साज सब साजी
निजकरतूति न समुझिय सपने ❀ सेवक सकुच शोच उर अपने
सो गुसाइँ नहिं दूसर कोपी ❀ भुजा उठाइ कहौं प्रण रोपी
पशु नाचत शुक[8] पाठप्रवीना ❀ गुणगति नटपाठक आधीना
दो० सो सुधारि सनमानि जन, किये साधु शिरमोर।
को कृपालु बिनु पालिहै, विरदावलि बरजोर॥
शोक सनेह कि बाल सुभाये ❀ आयउँ लाइ रजायसु बांये
तबहुँ कृपालु हेरि निज ओरा ❀ सबहि भांति भल मानेहु मोरा

१ वाणी २ पाप ३ बुरा ४ अमृत ५ आज्ञा ६ स्वतन्त्र ७ हृदय ८ तोता ९ आज्ञा॥

देखेउँ पांय सुमंगलमूला ❀ जानेउँ स्वामि सहज अनुकूला
बड़े समाज विलोकेउँ भागू ❀ बड़ी चूक साहिब अनुरागू
कृपा अनुग्रह अंग अघाई ❀ कीन्ह कृपानिधि सब अधिकाई
राखा मोर दुलार गुसाईं ❀ अपने शील सुभाव भलाई
नाथ निपट मैं कीन्ह ढिठाई ❀ स्वामिसमाज सँकोच विहाई
अविनय विनय यथारुचि बानी ❀ क्षमिय देव अतिआरत जानी

दो० सुहृदसुजान सुसाहिबहि, बहुत कहब बड़िखोरि।
आयसु देइय देव अब, सबै सुधारिय मोरि॥

प्रभुपद पद्मे पराग दुहाई ❀ सत्य सुकृत सुखसींव सुहाई
सो करि कहौं हिये अपनेकी ❀ रुचि जागत सोवत सपनेकी
सहज सनेह स्वामि सेवकाई ❀ स्वारथ छल फल चारि विहाई
आज्ञासम न सुसाहिब सेवा ❀ सो प्रसाद जन पावै देवा
अस कहि प्रेमविवश भे भारी ❀ पुलक शरीर विलोचन वाँरी
प्रभु पदकमल गहे अकुलाई ❀ समय सनेह न सो कहिजाई
कृपासिन्धु सनमानि सुवाणी ❀ बैठाये समीप गहि पाँणी
भरतविनय सुनि देखि स्वभाऊ ❀ शिथिल सनेह सभा रघुराऊ

छं० रघुराउशिथिलसनेहसाधुसमाजमुनिमिथिलाधनी
मनमहँ सराहत भरत भायप भक्तिकी महिमा घनी॥
भरतहिं प्रशंसत विबुध वरषत सुमंन मानसमलिनसे।
तुलसी विकल सबलोग सुनि सकुचे निशागमनलिनसे॥

सो० देखि दुखारी दीन, दुहुँ समाज नर नारि सब।
मघवा महामलीन, मुये मारि मंगल चहत॥

कपट कुचालि सींव सुरराजू ❀ पर अकाज प्रिय आपन काजू
काकसमान पोंकरिपु रीती ❀ छली मलीन न कतहुँ प्रतीती

१ प्रसन्न २ छोड़के ३ दुःखी ४ कमल ५ जल ६ हाथ ७ पुष्प ८ सन्ध्या ९-१० इन्द्र॥

प्रथम कुमति करि कपट सकेला ❀ सो उचाट सबके शिर मेला
सुरमाया सब लोग विमोहे ❀ रामप्रेम अतिशय न विछोहे
भय उचाट वश मन थिर नाहीं ❀ क्षण वनरुचि क्षण सदनै सुहाहीं
द्विविध मनोगति प्रजा दुखारी ❀ सरित सिंधु संगम जिमि वारी
द्विचित कतहुँ परितोष न लहहीं ❀ एक एकसन मर्म न कहहीं
लखि हिय हँसि कह कृपानिधानू ❀ सरिस श्वान[2] मघवा निजबानू

दो० भरतजनकमुनिगणसचिव, साधु सचेत विहाइ ।
लगी देवमाया सबहिं, यथायोग्य जन पाइ ॥

कृपासिंधु लखि लोग दुखारे ❀ निजसनेह सुरपति छल भारे
सभा राव गुरु महिसुर[3] मंत्री ❀ भरतभक्ति सब की मतियंत्री
रामहिं चितवत चित्र लिखेसे ❀ सकुचत बोलत वचन सिखेसे
भरत प्रीति नय विनय बड़ाई ❀ सुनत सुखद वरणत कठिनाई
जासु विलोकि भक्ति लवलेशू ❀ प्रेममगन मुनिगण मिथिलेशू[4]
महिमा[5] तासु कहै किमि तुलसी ❀ भक्तिप्रभाव सुमति हिय हुलसी
आपु छोट महिमा बड़ि जानी ❀ कविकुलकानिमानि सकुचानी
कहि न सकत गुणरुचिअधिकाई ❀ मतिगति बालवचन की नाई

दो० भरतविमलयशविमलविधु[6], सुमति चकोरकुमारि ।
उदित विमलजनहृदय नभ, इकटक रही निहारि ॥

भरत स्वभाव न सुगम निगमहू[7] ❀ लघुमति चापलता कवि क्षमहू
कहत सुनत सतिभाव भरतको ❀ सीय राम पद होइ न रतको
सुमिरत भरतहिं प्रेम रामको ❀ जेहि न सुगम तेहि सरिस वामको
देखि दयालु दशा सबहीकी ❀ राम सुजान जानि जनजीकी
धर्म धुरीण धीर नयनागर[8] ❀ सत्य सनेह शील सुख सागर
देश काल लखि समय समाजू ❀ नीति प्रीति पालक रघुराजू
बोले वचन वाणि सरवससे ❀ हितपरिणाम सुनत शशिरसंसे[9]

१ वर २ कुत्ता ३ ब्राह्मण ४ जनक ५ बड़ाई ६ चन्द्रमा ७ वेद ८ चतुर ९ अमृत ॥

तात भरत तुम धर्म धुरीणा ❁ लोक वेद विधि परम प्रवीणा
दो० कर्मवचन मानस विमल, तुम समान तुम तात।
गुरुसमाज लघु बंधु गुण, कुसमय किमि कहि जात॥
जानहु तात तरणि[1]कुल रीती ❁ सत्यसन्ध[2] पितु कीरति प्रीती
समय समाज लाज गुरुजनकी ❁ उदासीन हित अनहित मनकी
तुमहिं विदित सबही कर मर्मू ❁ आपन मोर परम हित धर्मू
मोहिं सब भांति भरोस तुम्हारा ❁ तदपि कहौं अवसर अनुसारा
तात तात बिनु बात हमारी ❁ केवल कुलगुरु कृपा सम्हारी
नतरु प्रजा पुरजन परिवारू ❁ हमहिं सहित सब होत दुखारू
जो बिनु अवसर अथव दिनेशू ❁ जग केहि कहौ न होइ कलेशू
तस उत्पात तात विधि[4] कीन्हा ❁ मुनिमिथिलेशराखिसबलीन्हा
दो० राज काज सब लाज पति, धर्म धरणि धन धाम।
गुरुप्रभाव पालिहि सबहिं, भल होइहि परिणाम॥
सहित समाज तुम्हार हमारा ❁ घर वन गुरुप्रसाद रखवारा
मातु पिता गुरु स्वामि निदेशू[5] ❁ सकल धर्म धरणीधर शेशू
सो तुम करहु करावहु मोहू ❁ तात तरणिकुलपालक होहू
साधन एक सकल सिधि देनी ❁ कीरति[6] सुगति भूतिमय बेनी
सो विचारि सहि संकट भारी ❁ करहु प्रजा परिवार सुखारी
बांटि विपति सबही मिलि भाई ❁ तुमहिंअवँधिभरिअतिकठिनाई
जानि तुमहिं मृदु कहौं कठोरा ❁ कुसमय तात न अनुचित मोरा
होहिं कुठांव कुबन्धु सुहाये ❁ आड़िय हाथ अशनि के घाये
दो० सेवक कर पद नयन से, मुख से साहिब होइ।
तुलसी प्रीति कि रीति सुनि, सुकवि सराहहिं सोइ॥
सभा सकल सुनि रघुवरबानी ❁ प्रेमपयोधि अमिय जनु सानी
शिथिल समाज सनेह समाधी ❁ देखि दशा चुप शारद साधी

१ चतुर २ सूर्यवंश ३ सत्यसंकल्प ४ ब्रह्मा ५ आज्ञा ६ यश ७ हद ८ वज्र ९ समुद्र॥

भरतहिं भयउ परम संतोषू ❀ सम्मुख स्वामि विमुख दुख दोषू
मुख प्रसन्न मन मिटा विषादू ❀ भा जनु गूंगहि गिरा प्रसादू
कीन्ह सप्रेम प्रणाम बहोरी ❀ बोले पाणिपंकरुह जोरी
नाथ भयो सुख साथ गयेको ❀ लहेउँ लाभ जग जन्म भयेको
अब कृपालु जस आयसु होई ❀ करौं शीश धरि सादर सोई
सो अवलम्ब देव मोहिं देवा ❀ अवधि पार पावउँ जेहि सेवा

दो॰ देव देव अभिषेक हित, गुरु अनुशासन पाइ।
आनेउँ सब तीरथसलिल, तेहि कहँ काह रजाइ॥

एक मनोरथ बड़ मन माहीं ❀ सभय सकोच जात कहि नाहीं
कहहु तात प्रभु आयसु पाई ❀ बोले वाणि सनेह सुहाई
चित्रकूट मुनि थल तीरथ वन ❀ खगमृगसरसरिनिर्भरगिरिगन
प्रभुपदअंकित अवनि विशेखी ❀ आयसु होय तौ आवौं देखी
अवशि अत्रिआयसु शिर धरहू ❀ तात विगतभय कानन चरहू
मुनिप्रसाद वन मंगल दाता ❀ पावन परम सुहावन भ्राता
ऋषिनायक जहँ आयसु देहीं ❀ राखेहु तीरथजल थल तेहीं
सुनि प्रभुवचन भरत सुखपावा ❀ मुनिपदकमल मुदितशिरनावा

दो॰ भरतराम संवाद सुनि, सकल सुमंगल मूल।
सुर स्वारथी सराहि कुल, हरषित वर्षहिं फूल॥

धन्य भरत जय राम गुसाँई ❀ कहत देव हर्षत बरिआई
मुनि मिथिलेशसभा सब काहू ❀ भरतवचन सुनि भयउ उछाहू
भरत राम गुणग्राम सनेहू ❀ पुलकि प्रशंसत राव विदेहू
सेवक स्वामि सुभाव सुहावन ❀ नेम प्रेम अति पावन पावन
मति अनुसार सराहन लागे ❀ सचिव सभासद अति अनुरागे
सुनि सुनि राम भरत संवादू ❀ दुहुँ समाज हिय हर्ष विषादू
राम मातु दुख सुख सम जानी ❀ कहि गुण दोष प्रबोधी रानी

१ वाणी २ कमल ३ जल ४ पृथ्वी ५ वन ६ पवित्र ७ मंत्री ८ समझाया॥

एक करहिं रघुबीर बड़ाई ❀ एक सराहत भरत भलाई
दो० अत्रि कहेउ तब भरतसन, शैल समीप सुकूप।
राखिय तीरथतोय तहँ, पावन अमल अनूप॥
भरत अत्रि अनुशासन पाई ❀ जलभाजन सब दिये चलाई
सानुज आपु अत्रिमुनि साधू ❀ सहित गये जहँ कूप अगाधू
पावन पाथ पुण्य थल राखा ❀ प्रमुदित प्रेम अत्रि अस भाखा
तात अनादि सिद्धि थल येहू ❀ लोपेउ काल विदित नहिं केहू
तब सेवकन सरस थल देखा ❀ कीन्ह सुजल हित कूप विशेखा
विधिवश भयउ विश्व उपकारू ❀ सुगम अगम अति धर्मविचारू
भरतकूप अब कहिहहिं लोगा ❀ अति पावन तीरथजल योगा
प्रेम सनेम निमज्जहिं प्राणी ❀ होइहि विमल कर्म मन वाणी
दो० कहत कूपमहिमा सकल, गये जहां रघुराव।
अत्रि सुनायहु रघुवरहिं, तीरथ पुण्य प्रभाव॥
कहत धर्म इतिहास सप्रीती ❀ भयउ भोर निशि सो सुख बीती
नित्य निबाहि भरत दोउ भाई ❀ राम अत्रि गुरुआयसु पाई
सहित समाज साज सब सादे ❀ चले राम वन अटन पयादे
कोमल चरण चलत बिनुपनहीं ❀ भै मृदु भूमि सकुचि मनमनहीं
कुश कंटक कांकरी कुराई ❀ कटुक कठोर कुवस्तु दुराई
महि मंजुल मृदु मारग कीन्हे ❀ बहत समीर त्रिविधि सुख लीन्हे
सुमन बरषि सुर घन करि छाहीं ❀ विटप फूल फलदल मृदुलाहीं
मृग विलोकि खगबोलि सुबानी ❀ सेवहिं सकल राम प्रिय जानी
दो० सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु, राम कहत जमुहात।
राम प्राणप्रिय भरत कहँ, यह न होइ बड़िबात॥
यहिविधि भरत फिरत वनमाहीं ❀ नेम प्रेम लखि मुनि सकुचाहीं
पुण्यजलाशय भूमि विभागा ❀ खर्गमृग तरुतृण गिरिवनबागा

१ जल २ वर्तन ३ स्नान ४ निर्मल ५ बड़ाई ६ घूमना ७ पवन ८ हरिण ९ पक्षी॥

चारु विचित्र पवित्र विशेखी ❀ बूझत भरत दिव्य सब देखी
सुनि मनमुदित कहत ऋषिराऊ ❀ हेतु नामगुण पुण्य प्रभाऊ
कतहुँ निमज्जन कतहु प्रणामा ❀ कतहु विलोकत वन अभिरामा
कतहुँ बैठि मुनि आयसु पाई ❀ सुमिरत सीयसहित दोउ भाई
देखि स्वभाव सनेह सुसेवा ❀ देहिं अशीश मुदित मन देवा
फिरहिं गये दिन पहर अढ़ाई ❀ प्रभुपदकमल विलोकेहिं आई

दो॰ देखे थल तीरथ सकल, भरत पांच दिन मांझ।
कहत सुनत हरिहरसुयश, गयउदिवस भइसांझ॥

भोर न्हाइ सब जुरा समाजू ❀ भरत भूमिसुर तिरहुँतिराजू
भलदिन आजु जानि मनमाहीं ❀ रामकृपालु कहत सकुचाहीं
गुरु नृप भरतसभा अवलोकी ❀ सकुचिरामफिरिअवँनिविलोकी
शील सराहि सभा सब शोची ❀ कहुँ न रामसम स्वामि सँकोची
भरत सुजान रामरुख देखी ❀ उठि सप्रेम धरि धीर विशेखी
करि दण्डवत कहत करजोरी ❀ राखीं नाथ सकल रुचिमोरी
मोहिं लगि सबहिं सहेउ संतापू ❀ बहुत भांति दुख पावा आपू
अब गुसाइँ मोहिं देहु रजाई ❀ सेवौं अवध अवँधिलगि जाई

दो॰ जेहि उपाय पुनि पांय जन, देखै दीनदयालु।
सो शिष देइय अवधिलगि, कोशलपाल कृपालु॥

पुरजन परिजन प्रजा गुसाईं ❀ सब शुचिसरस सनेह सगाईं
राउर वदि भल भव दुखदाहू ❀ प्रभु बिनु बादि परमपद लाहू
स्वामि सुजाँन जानि सबहीकी ❀ रुचिलालसा रहनि जनजीकी
प्रणतपाल पालहिं सब काहू ❀ देव दुहूँ दिशि ओर निबाहू
अब मोहिं सबविधि भूरि भरोसो ❀ किये विचार न शोच खरोसो
आरति मोरि नाथ कर छोहू ❀ दुहुँ मिलि कीन्ह ढीठ हठि मोहू
यह बड़ दोष दूरि करि स्वामी ❀ तजिसँकोच सिखइय अनुगामी

१ आज्ञा २ देखहिं ३ जनक ४ पृथ्वी ५ दुःख ६ हद ७ चतुर ८ सेवक॥

भरतविनय सुनि सबहिं प्रशंसा ❋ क्षीरे नीर विवरणगति हंसा
दो॰ दीनबन्धु सुनि बन्धुके, वचन दीन छलहीन।
देश काल अवसर सरिस, बोले राम प्रवीन॥
तात तुम्हारि मोरि परिजनकी ❋ चिन्ता गुरुहिं नृपहिं घरवनकी
माथेपर गुरु मुनि मिथिलेशू ❋ हमहिं तुमहिं सपनेहुँ न कलेशू
मोर तुम्हार परम पुरुषारथ ❋ स्वारथ सुयश धर्म परमारथ
पितु आयसु पालिय दुहुँ भाई ❋ लोक वेद भल भूप भलाई
गुरु पितु मातु स्वामिशिष पालै ❋ चलत सुमगु पग परत न खालै
अस विचारि सब शोच विहाई ❋ पालहु अवध अवधिभरि जाई
देश कोश पुरजन परिवारू ❋ गुरुपद रजहि लाग छरभारू
तुम मुनि मातु सचिवशिषमानी ❋ पालहु पुहुमि प्रजा रजधानी
दो॰ मुखिया मुख सों चाहिये, खान पान को एक।
पालै पोषै सकल अँग, तुलसी सहित विवेक॥
राज धर्म्म सरबस इतनोई ❋ जिमि मनमाहिं मनोरथ गोई
बन्धु प्रबोध कीन्ह बहुभांती ❋ बिनु अधार मन तोष न शांती
भरतशील गुरु सचिव समाजू ❋ सकुच सनेह विवश रघुराजू
प्रभु करि कृपा पांवरी दीन्हीं ❋ सादर भरत शीश धरि लीन्हीं
चरणपीठि करुणानिधान के ❋ जनु युग यामिक प्रजाप्रानके
सम्पुट भरत सनेह रतनके ❋ आखर युग जनु जीवजतनके
कुल कपाट कर कुशल कर्मके ❋ विमल नयन सेवा सुधर्मके
भरत मुदित अवलम्ब लहेते ❋ अस सुख जस सिय राम रहेते
दो॰ मांगेउ बिदा प्रणामकरि, राम लिये उरलाय।
लोग उचाटे अमँरपति, कुटिल कुअवसर पाय॥
सो कुचाल सब कहँ भइ नीकी ❋ अवधिआश सब जीवनजीकी
नतरु लषणसियराम वियोगा ❋ हहरि मरत सबलोग कुरोगा

१ दूध २ जनक ३ आज्ञा ४ पृथ्वी ५ खड़ाऊं ६ पहरुआ ७ इन्द्र ८ हायहायकर॥

राम कृपा अवरेव सुधारी ❀ विबुधधार भइ गुणद गुहारी
भेंटत भुज भरि भाइ भरतसो ❀ राम प्रेमरस कहि न परतसो
तन मन वचन उमँगि अनुरागा ❀ धीर धुरन्धर धीरज त्यागा
वारिजलोचन मोचत वारी ❀ देखि दशा सुरसभा दुखारी
मुनिगण गुरुजन धीर जनकसे ❀ ज्ञान अनल मन कसे कनकसे
जे विरंचि निर्लेप उपाये ❀ पद्मपत्र जिमि जल जगजाये

दो० तेउ विलोकि रघुवर भरत, प्रीति अनूप अपार।
भये मगन तन मन वचन, सहित विराग विचार॥

जहां जनक गुरुगति मति भोरी ❀ प्राकृति प्रीति कहत बड़ि खोरी
वर्णत रघुवर भरत वियोगू ❀ सुनि कठोर कवि जानहिं लोगू
सो सँकोचवश अकथ सुवानी ❀ समय सनेह समुझि सकुचानी
भेंटि भरत रघुवर समुझाये ❀ पुनि रिपुदमन हरषि हियलाये
सेवक सचिव भरत रुख पाई ❀ निज निज काज लगे सब जाई
सुनि दारुण दुख दुहूं समाजा ❀ लगे चलन के साजन साजा
प्रभु पदपद्म वन्दि दोउ भाई ❀ चले शीश धरि राम रजाई
मुनि तापस वनदेव निहोरी ❀ सब सनमानि बहोरि बहोरी

दो० लषणहिंभेंटिप्रणामकरि, शिर धरि सियपदधूरि।
चले सप्रेम अशीश सुनि, सकल सुमंगलमूरि॥

सानुज राम नृपहिं शिरनाई ❀ कीन्हीं बहुविधि विनय बड़ाई
देव दयावश बड़ दुख पायहु ❀ सहित समाज काननँहिं आयहु
पुर पगु धारिय देइ अशीशा ❀ कीन्ह धीर धरि गमन महीशा
मुनि महिदेव साधु सनमाने ❀ बिदा किये हरिहर सम जाने
सासु समीप गये दोउ भाई ❀ फिरे वन्दि पद आशिष पाई
कौशिक वामदेव जाबाली ❀ परिजन पुरजन सचिव सुचाली
यथायोग्य करि विनय प्रणामा ❀ विदा किये सब सानुज रामा

१ कमलनयन २ कमलपत्र ३ जुदाई ४ शत्रुघ्न ५ कठिन ६ आज्ञा ७ वन ८ राजा॥

नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे ❀ सब सनमानि कृपानिधि फेरे

दो० भरतमातु सब वन्दिप्रभु, शुचिसनेह मिलि भेंटि।
विदाकीन्ह सजिपालकी, सकुच शोच सब मेटि॥

परिजनमातुपितहिमिलि सीता ❀ फिरी प्राणप्रिय प्रेम पुनीता
करि प्रणाम भेंटीं सब सासू ❀ प्रीति कहत कवि हिय न हुलासू
सुनि शिष अभिमत आशिषपाई ❀ रही सीय दुहुँ प्रीति समाई
रघुपति पट पालकी मँगाई ❀ करि प्रबोध सब मातु चढ़ाई
बारहिं बार मिले दोउ भाई ❀ सम सनेह जननी पहुँचाई
साजि वाजि गज वाहन नाना ❀ भूप भरतदल कीन्ह पयानाँ
हृदय राम सिय लषण समेता ❀ चले जाहिं सबलोग अचेता
वसहँ वाजि गज पशु हियहारे ❀ चले जाहिं परवश मन मारे

दो० गुरु गुरुतिय पद वन्दि प्रभु, सीता लषण समेत।
फिरे हर्ष विस्मय सहित, आये पर्णनिकेत॥

बिदा कीन्ह सनमानि निषादू ❀ चलेउ हृदय बड़ विरह विषादू
कोल किरात भिल्ल वनचारी ❀ फेरे फिरे जोहारि जोहारी
प्रभु सिय लषण बैठि वट छाहीं ❀ प्रियपरिजन वियोग बिलखाहीं
भरत सनेह सुभाव सुबानी ❀ प्रिया अनुजसन कहत बखानी
प्रीति प्रतीति वचन मन करणी ❀ श्रीमुख राम प्रेमवश वरणी
तेहि अवसर खगमृगजलमीनाँ ❀ चित्रकूट चर अचर मलीना
विबुध विलोकि दशा रघुवरकी ❀ वरषिसुमँन कहि गतिघरघरकी
प्रभु प्रणाम करि दीन्ह भरोसो ❀ चले मुदित मन डर न खरोसो

दो० सानुज सीय समेत प्रभु, राजत पर्णकुटीर।
भक्ति ज्ञान वैराग्य जनु, सोहत धरे शरीर॥

मुनि महिसुर गुरु भरत भुवालू ❀ राम विरह सब साज बिहालू
प्रभु गुण ग्राम गुणत मनमाहीं ❀ सब चुपचाप चले मगुँ जाहीं

१ दयासागर २ प्रजालोग ३ वांछित ४ कूच ५ बैल ६ मछली ७ पुष्प ८ रास्ता॥

यमुना उतरि पार सब भयऊ ❀ सो वासर[2] विनु भोजन गयऊ
उतरि देवसरि[1] दूसर वासू ❀ राम सखा सब कीन्ह सुपासू
सई उतरि गोमती नहाये ❀ चौथे दिवस अवधपुर आये
जनक रहे पुर वासर चारी ❀ राजकाज सब साज सँभारी
सौंपि सचिव गुरु भरतहिं राजू ❀ तिरहुति चले साजि सब साजू
नगर नारि नर गुरुशिष मानी ❀ बसे सुखेन राम रजधानी

दो० रामदरश हित लोग सब, करत नेम उपवास।
तजितजि भूषण भोग सुख, जियत अवधि की आस॥

सचिव[3] सुसेवक भरत प्रबोधे ❀ निजनिजकाज पाइ शिष शोधे
पुनि शिष दीन्ह बोलि लघुभाई ❀ सौंपी सकल मातु सेवकाई
भूसुर[4] बोलि भरत करजोरे ❀ करि प्रणाम वर विनय निहोरे
ऊंच नीच कारज भल पोचू ❀ आयसु देब न करब सँकोचू
परिजन पुरजन प्रजा बुलाये ❀ समाधान करि सुबस बसाये
सानुज गे गुरु गेह[5] बहोरी ❀ करि दण्डवत कहत करजोरी
आयसु होय तो रहौं सनेमा ❀ बोले मुनि तब पुलकि सप्रेमा
समुझब कहब करब तुम सोई ❀ धर्म्म सार जग कहँ हित होई

दो० मुनि शिष पाइ अशीश बड़ि, गणक[6] बोलि दिन साधि।
सिंहासन प्रभु पादुका, बैठारी निरुपाधि॥

राम मातु गुरुपद शिरनाई ❀ प्रभु पद पीठि रजायसु पाई
नन्दिग्राम करि पर्णकुटीरा ❀ कीन्ह निवास धर्म्मधुरधीरा
जटाजूट शिर मुनिपटधारी ❀ महि खनि कुशसाथरी सँवारी
अँशन[7] वसन बासन व्रत नेमा ❀ करत कठिन ऋषिधर्म्म सप्रेमा
भूषण वसन भोग सुखभूरी ❀ मन क्रम वचन तजे तृणतूरी
अवधराज सुरराज सिहाहीं ❀ दशरथधन लखि धनद[8] लजाहीं
तेहिपुर बसत भरत बिनु रागा ❀ चञ्चरीक[9] जिमि चम्पक बागा

१ गंगाजी २ दिन ३ मन्त्री ४ ब्राह्मण ५ घर ६ ज्योतिषी ७ भोजन ८ कुबेर ९ भ्रमर॥

रमा विलास राम अनुरागी ❀ तजत बमन जिमि नरबड़भागी

दो० रामप्रेम भाजन भरत, बड़ी न यह करतूति।
चातक हंस सराहियत, टेक विवेक विभूति॥

देह दिनहिं दिन दूबरि होई ❀ घट न तेज बल सुखछबि सोई
नित नव राम प्रेम प्रण पीना ❀ बढ़त धर्म्मदल मन न मलीना
जिमि जल निघटत शरदप्रकासे ❀ विलसत वियत सुवनंजविकासे
शम दम संयम नेम उपासा ❀ नखत भरतहियविमलअकासा
ध्रुव विश्वास अवधि राकासी ❀ स्वामि सुरति सुरवीथि विकासी
रामप्रेम विधु अचल अदोखा ❀ सहित समाज सोह नित चोखा
भरत रहनि समुझनि करतूती ❀ भक्ति विरति गुण विमलविभूती
वरणत सकल सुकवि सकुचाहीं ❀ शेश गणेश गिरा गमनाहीं

दो० नित पूजत प्रभु पांवरी, प्रीति न हृदय समाति।
मांगिमांगिआयसु करत, राजकाज बहुभांति॥

पुलकगात हिय सिय रघुवीरू ❀ जीभ नाम जपु लोचन नीरू
लषण राम सिय कानन वसहीं ❀ भरत भवनवसि तप तनु कसहीं
दुहुँदिशि समुझिकहतसबलोगू ❀ सब विधि भरत सराहन योगू
सुनि व्रत नेम साधु सकुचाहीं ❀ देखि दशा मुनिराज लजाहीं
परम पुनीत भरत आचरनू ❀ मधुर मंजु मृदु मंगलकरनू
हरण कठिन कलिकलुष कलेशू ❀ महामोह निशि दलन दिनेशू
पाप पुंज कुंजर मृगराजू ❀ शमन सकल सन्ताप समाजू
जन रंजन भंजन भव भारू ❀ राम सनेह सुधा कर सारू

छं० सियराम प्रेमपियूष पूरण होत जन्म न भरतको।
मुनिमनअगमयमनियमशमदमविषमव्रतआचरतको
दुखदाह दारिद दम्भ दूषण सुयश मिसु अपहरतको।

१ कमल २ जल ३ पातक ४ सूर्य ५ ढेर ६ हाथी ७ सिंह ८ संसार ९ अमृत १० दस्तूर॥

कलिकाल तुलसीसे शठहि हठि[1] रामसम्मुख करतको॥

सो॰ भरतचरित करि नेम, तुलसी जे सादर[2] सुनहिं।
सीय राम पद प्रेम, अवशि होइ भव[3]रसविरति[4]॥

इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेअयोध्याकाण्डे विमलविज्ञानवैराग्यसम्पादनोनामद्वितीयस्सोपानः॥ २ ॥



१ ज़बरदस्ती २ आदरसमेत ३ संसार ४ विराग॥





श्रीगोस्वामि

तुलसीदासकृत रामायण

आरण्यकाण्ड

मङ्गलाचरणम् ॥

श्लोक ॥ मूलन्धर्मतरोर्विवेकजलधौ पूर्णेन्दुमानन्ददं वैराग्याम्बुजभास्करं ह्यघहरं ध्वान्तापहं तापहम्। मोहाम्भोधरपुञ्जपाटनविधौ खे संभवं शंकरं वन्दे ब्रह्मकुलं कलङ्कशमनं श्रीरामभूपप्रियम् ॥ १ ॥ सान्द्रानन्दपयोदसौभगतनुम्पीताम्बरं सुन्दरं पाणौ बाणशरासनं कटिलसत्तूणीरभारंवरम्। राजीवायतलोचनं धृतजटाजूटेन संशोभितं सीतालक्ष्मणसंयुतं पथिगतं रामाभिरामं भजे ॥ २ ॥

सो० उमा रामगुण गूढ़, पण्डित मुनि पावहिं विरति।
पावहिं मोह विमूढ़, जे हरिविमुख न धर्मरति ॥

पूरण भरत प्रीति मैं गाई ❀ मति अनुरूप अनूप सुहाई

अब प्रभुचरित सुनो अति पावन[1] ❀ करत जो वन सुरनरमुनिभावन
एक बार चुनि कुसुम सुहाये ❀ निज कर भूषण राम बनाये
सीतहिं पहिराये प्रभु सादर ❀ बैठे फटिक शिला परमादर
सुरपतिसुत धरि वायस[2] वेखा ❀ शठ चाहत रघुपति बल देखा
जिमि पिपीलिका[3] सागर थाहा ❀ महामन्दमति पावन चाहा
सीता चरण चोंच हति भागा ❀ मूढ़ मन्दमति कारण कागा
चला रुधिर रघुनायक जाना ❀ सींक धनुष शायक सन्धाना

दो॰ अति कृपालु रघुनायक, सदा दीन पर नेह।
तासन आइ कीन्ह छल, मूरुख अवगुण गेह॥

बिनुऽपराध प्रभु हतैं न काहू ❀ अवसर परे ग्रसै शशि राहू
जब प्रभु लीन्ह धनुष सिक बाना ❀ क्रोधजानि भा अनॅल[4] समाना
प्रेरित मन्त्र ब्रह्मशर धावा ❀ चला भाजि वायस भय पावा
धरि निज रूप गयउ पितु पाहीं ❀ राम विमुख राखा तिन नाहीं
भा निराश उपजी हिय त्रासा ❀ यथा चक्र भय ऋषि दुर्वासा
ब्रह्मधाम शिवपुर सब लोका ❀ फिरा श्रमितव्याकुलभयशोका
काहू बैठन कहा न ओही ❀ राखि को सकै रामकर द्रोही
मातु मृत्यु पितु शमन[5] समाना ❀ सुधा होइ विष सुनु हरियाँना[6]
मित्र करै शत रिपुकै करणी ❀ ता कहँ विबुधनँदी[7] वैतरणी
सब जग ताहि अनल ते ताता ❀ जो रघुवीर विमुख सुनु भ्राता

दो॰ जिमिजिमिभाजतशक्रसुत,व्याकुलअतिदुखदीन
तिमितिमि धावत रामशर, पाछे परम प्रवीन॥

बचहि उरग[8] बरु ग्रसे खगेशा ❀ रघुपति शर छुटि बचब अँदेशा
नारद देखा विकल जयन्ता ❀ लागि दया कोमलचित सन्ता
दूरिहिते कहि प्रभु प्रभुताई ❀ भजे जात बहु विधि समुझाई
पठवा तुरत राम पहँ ताही ❀ कहसि पुकारि प्रणतहित पाही

१ पवित्र २ कौवा ३ चींटी ४ अग्नि ५ यम ६ गरुड़ ७ गंगाजी ८ जयंत ९ सर्प॥

आतुर सभय गहेसि पद जाई ❋ त्राहि त्राहि दयालु रघुराई
अतुलित बल अतुलित प्रभुताई ❋ मैं मतिमन्द जानि नहिं पाई
निज कृत कर्म जनित फल पायउँ ❋ अब प्रभुपाहिशरणतकिआयउँ
सुनि कृपालु अति आरत बानी ❋ एक नयन करि तजा भवानी

सो० कीन्ह मोह वश द्रोह, यद्यपि तेहिकर बधउचित।
प्रभु छांड़ेउ करि छोह, को कृपालु रघुवीर सम ॥

रघुपति चित्रकूट बसि नाना ❋ चरित करत श्रुति सुधासमाना
बहुरि राम अस मन अनुमाना ❋ होइहि भीर सबहिं मोहिं जाना
सकल मुनिन सन बिदा कराई ❋ सीता सहित चले दोउ भाई
अत्री के आश्रम प्रभु गयऊ ❋ सुनत महामुनि हरषित भयऊ
पुलकित गात अत्रि उठि धाये ❋ देखि राम आतुर चलि आये
करत दण्डवत मुनि उरलाये ❋ प्रेम वारि दोउ जन नहवाये
देखि राम छवि नयन जुड़ाने ❋ सादर निज आश्रम तब आने
करि पूजा कहि वचन सुनाये ❋ दिये मूल फल प्रभु मन भाये

सो० प्रभु आसन आसीन, भरिलोचन शोभानिरखि।
मुनिवर परमप्रवीन, जोरि पाणि अस्तुति करत ॥

छं० नमामि भक्तवत्सलं * कृपालु शीलकोमलं ॥
भजामि ते पदाम्बुजं * अकामिनां स्वधामदं ॥
निकाम श्यामसुन्दरं * भवाम्बुनाथ मन्दरं ॥
प्रफुल्ल कञ्ज लोचनं * मदादि दोष मोचनं ॥
प्रलम्ब बाहु विक्रमं * प्रभो ऽप्रमेय वैभवं ॥
निषंग चाप शायकं * धरं त्रिलोक नायकं ॥
दिनेश वंश मण्डनं * महेश चाप खण्डनं ॥
मुनीन्द्र सन्त रंजनं * सुरारि वृन्द भंजनं ॥

१ शीघ्र २ वैर ३ बैठे हुये ४ हाथ ५ निष्कामी ६ वैकुण्ठ ७ कमल ८ सूर्य ९ शिव ॥

मनोज वैरि वन्दितं * अजादि देव सेवितं ॥
विशुद्ध बोध विग्रहं * समस्त दुःख तापहं ॥
नमामि इन्दिरापतिं * सुखाकरं सतां गतिं ॥
भजे सशक्ति सानुजं * शचीपति प्रियानुजं ॥
त्वदंघ्रिमूल ये नरा * भजन्ति हीन मत्सरा ॥
पतन्ति नो भवार्णवे * वितर्क वीचि संकुले ॥
विविक्तवासिनो यदा * भजन्ति मुक्तिदं मुदा ॥
निरस्य इन्द्रियादिकं * व्रजन्ति ते गतिस्वकं ॥
त्वमेकमद्भुतं प्रभुं * निरीहमीश्वरं विभुं ॥
जगद्गुरुं च शाश्वतं * तुरीयमेव केवलं ॥
भजामि भाववल्लभं * कुयोगिनां सुदुर्ल्लभं ॥
स्वभक्त कल्पपादपं * समस्त सेव्यमन्वहं ॥
अनूप रूप भूपतिं * नतोहमुर्विजा पतिं ॥
प्रसीद मे नमामि ते * पदाब्जभक्ति देहि मे ॥
पठन्ति ये स्तवं इदं * नरादरेण ते पदं ॥
व्रजन्ति नात्र संशयं * त्वदीय भक्ति संयुतं ॥

दो० विनतीकरि मुनिनाइशिर, कह करजोरि बहोरि ।
चरण सरोरुह नाथ जनि, कबहुँ तजै मति मोरि ॥

देखि राम मुनि विनय प्रणामा * विविधि भांति पायउ विश्रामा
जन्म जन्म तव पद सुखकन्दा * बढ़े प्रेम चकोर जिमि चन्दा
अनसूया के पद गहि सीता * मिली बहोरि सुशील विनीता
जो सिय सकल लोक सुखदाता * अखिललोकब्रह्माण्ड कि माता
ते सिय पाईं मुनिवर भामिनि * सुखी भईं कुमुदिनि जिमि यामिनि

१ जाते हैं २ चेष्टाहीन ३ स्तोत्र ४ नहीं ५ कमल ६ पकड़कर ७ सम्पूर्ण ८ स्त्री ॥

ऋषिपत्नी मन सुख अधिकाई ❀ आशिष देइ निकट बैठाई
दिव्य वसन भूषण पहिराये ❀ जे नित नूतन[1] अमल सुहाये
जाहि निरखि दुख दूरि पराहीं ❀ गरुड़ देखि जिमि पन्नग[2] जाहीं
दो० ऐसे वसन विचित्र सुठि, दिये सीय कहँ आनि ।
सनमानी प्रिय वचन कहि, प्रीति न जाइ बखानि ॥
कह ऋषिवधू सरल मृदुबानी ❀ नारिधर्म्म कछु व्याजबखानी
मातु पिता भ्राता हितकारी ❀ मितसुखप्रद सुनु राजकुमारी
अमित दान भर्त्ता वैदेही ❀ अधम सो नारि जो सेव न तेही
धीरज धर्म मित्र अरु नारी ❀ आपतकाल परखिये चारी
वृद्ध रोगवश जड़ धनहीना ❀ अन्ध बधिर क्रोधी अतिदीना
ऐसेहु पतिकर किय अपमाना ❀ नारि पाव यमपुर दुख नाना
एकै धर्म्म एक व्रत नेमा ❀ काय वचन मन पतिपद प्रेमा
जग पतिव्रता चारि विधि अहहीं ❀ वेद पुराण सन्त अस कहहीं
दो० उत्तम मध्यम नीच लघु, सकल कहौं समुझाय ।
आगे सुनहिं ते भव[3] तरहिं, सुनहु सीय चितलाय ॥
उत्तम के अस बस मनमाहीं ❀ सपनेहु आनपुरुष जग नाहीं
मध्यम परपति देखहिं कैसे ❀ भ्राता पिता पुत्र निज जैसे
धर्म विचारि समुझि कुल रहहीं ❀ सो निकृष्टतिय श्रुति[4] अस कहहीं
बिनु अवसर भयते रह जोई ❀ जानेहु अधमनारि जग सोई
पतिवंचक[5] परपति रति करई ❀ रौरव नरक कल्पशत परई
क्षणसुख लागि जन्म शतकोटी ❀ दुख न समुझ तेहिसम को खोटी
बिनु श्रम नारि परमगति लहई ❀ पतिव्रत धर्म छांड़ि छल गहई
पतिप्रतिकूल[6] जनमि जहँ जाई ❀ विधवा होइ पाइ तरुणाई[7]
सो० सहज अपावनि[8] नारि, पतिसेवत शुभगति लहहि ।
यश गावत श्रुति चारि, अजहुँ तुलसी हरिहिं प्रिय ॥

१ नवीन २ सर्प ३ संसार ४ वेद ५ छली ६ विमुख ७ जवानी ८ अपवित्र ॥

सुनु सीता तव[1] नाम, सुमिरिनारिपतिव्रतकरहिं ।
तोहिं प्राणप्रिय राम, कहेउँ कथा संसार हित ॥

सुनि जानकी परम सुखपावा ❀ सादर तासु चरण शिरनावा
तब मुनिसन कह कृपानिधाना ❀ आयसु होइ जाउँ वन आना
सन्तत[2] मोपर कृपा करेहू ❀ सेवक जानि तजेहु जनि नेहू
धर्म्मधुरन्धर प्रभु की बानी ❀ सुनि सप्रेम बोले मुनि ज्ञानी
जासु कृपा अज[3] शिव सनकादी ❀ चहत सकल परमारथवादी
ते तुम राम अकाम पियारे ❀ दीनबन्धु मृदु वचन उचारे
अब जानी मैं श्री चतुराई ❀ भजिय तुमहिं सब देव विहाई[4]
जेहि समान अतिशय नहिं कोई ❀ ताकर शील कस न अस होई
केहिविधि कहौं जाहु अब स्वामी ❀ कहहु नाथ तुम अन्तरयामी
असकहिप्रभुविलोकिमुनिधीरा ❀ लोचन जल बह पुलकशरीरा

छं॰ तनु पुलक निर्भर[5] प्रेमपूरण नयन मुखपंकज दिये ।
मन ज्ञान गुण गोतीत प्रभु मैं दीख जप तप का किये ॥
जप योग धर्मसमूह ते नर भक्ति अनुपम पावहीं ।
रघुबीरचरित पुनीत निशि दिन दासतुलसी गावहीं ॥

दो॰ मुनिहुँकिअस्तुतिकीन्हप्रभु, दीन्ह सुभग वरदान ।
सुमनवृष्टि नभ संकुल, जयजयकृपानिधान ॥
कलिमल शमन दमन दुख, राम सुयश सुखमूल ।
सादर सुनहिं जे तिनपर, राम रहहिं अनुकूल[6] ॥

सो॰ कठिन काल मल कोस, धर्म न ज्ञान न योग बल ।
परिहँरि[7] सकल भरोस, रामहिं भजहिं ते चतुर नर ॥

सुनि पदकमल नाइकरि शीशा ❀ चले वनहिं सुर नर मुनिईशा
आगे राम लषण पुनि पाछे ❀ मुनिवर वेष बने अति आछे

१ तुम्हारा २ हमेशह ३ ब्रह्मा ४ त्यागके ५ अत्यन्त ६ प्रसन्न ७ छोड़के ॥

उभय बीच सिय सोहति कैसी ❀ ब्रह्म जीव बिच माया जैसी
सरिता वन गिरि अवघटघाटा ❀ पति पहिंचानि देहिं वरबाटा
जहँ जहँ जाहिं देव रघुराया ❀ करहिं मेघ नभ तहँ तहँ छाया
आश्रम विपुल दीख वन माहीं ❀ देव सदन तेहि पटतर नाहीं
बहु तड़ाग सुन्दर अमराई ❀ भांति भांति सबमुनिन लगाई
दिव्य विटप वन चहुँदिशि सोहें ❀ देखत सकल सुरन मन मोहें
तेहिदिन तहँ प्रभु कीन्ह निवासा ❀ सकलमुनिनमिलिकीन्हसुपासा

दो० निजनिजआश्रम वेदिका, तिहिपरतुलसि विराज।
अनुजजानकीसहित तहँ, राजंत भे रघुराज॥
आनिसुआश्रममुदितमन, पूजि पहुनई कीन्ह।
कन्दमूलफल अमियसम, आनि रामकहँ दीन्ह॥

अनुजसीय सह भोजन कीन्हा ❀ जो जिहि भाव सुभगवर दीन्हा
होत प्रभात मुनिन शिरनावा ❀ आशिर्वाद सबहिंसन पावा
सुमिरि उमा सुर सिद्ध गणेशा ❀ पुनि प्रभु चले सुनहु विहँगेशा
वन अनेक सुन्दर गिरि नाना ❀ लांघत चलेजाहिं भगवाना
मिला असुर विराध मगु जाता ❀ गरजत घोर कठोर रिसाता
रूप भयङ्कर मानहुँ काला ❀ वेगवन्त धायउ जिमि व्याला
गगन देव मुनि किन्नर नाना ❀ तेहिक्षण हृदयहारि भय माना
तुरतहि सो सीतहिं लैगयऊ ❀ रामहृदय कछु विस्मय भयऊ
समुझा हृदय कैकयी करणी ❀ कहा अनुजसन बहुविधिवरणी
बहुरि लषण रघुवरहि प्रबोधा ❀ पांच बाण छांड़े करि क्रोधा

छं० भयेक्रोधलषणसँधानिधनुशरमारितेहिव्याकुलकिये।
पुनि उठि निशाचर राखि सीतहिं शूल लै धावत भये॥
जनु कालदण्ड कराल धावा विकल सब खगमृगभये।

१ आकाश २ तालाब ३ बागीचा ४ सोहत ५ प्रसन्न ६ अमृत ७ गरुड़ ८ आकाश ९ बाण॥

धनुतानिश्रीरघुवंशमणि पुनि काटितेहि रजसम किये ॥

दो॰ बहुरि[1] एक शर मारेउ, पराधरणि धुनि माथ ।
उठा प्रबल पुनि गर्जेउ, चला जहां रघुनाथ ॥

ऐसे कहत निशाचर धावा ❋ अब नहिं बचहु तुमहिं मैं खावा
तासु तेज शतमरुत[2] समाना ❋ टूटहिं तरु बहु उड़हिं पखाना
जीवजन्तु जहँ लगि रहे जेते ❋ व्याकुल भाजि चले सब तेते
आव प्रबल यहि विधि जनु भूधर[3] ❋ होइहि काह कहहिं व्याकुलसुर
उरग समान जोरि शर साता ❋ आवतही रघुवीर निपाता
तुरतहिं रुचिर रूप तेहिं पावा ❋ देखि दुखी निजधाम पठावा
तासु अस्थि गाड़ेउ प्रभु धरणी ❋ देव मुदितमन लखि प्रभुकरणी
सीता आइ चरण लपटानी ❋ अनुज सहित तब चले भवानी
उहां शक्र जहँ मुनि शरभंगा ❋ आये सकल देव निजसंगा
गये कहन प्रभु देव सिखावन ❋ दिशि बल भेद बसत जहँ रावन

दो॰ सुरपति संशय तम सम, रघुपति तेज दिनेश[4] ।
रावण जीतन निशि सम, बीते छुटहिं कलेश ॥

सुनासीर[5] प्रभु तिहि क्षण देखा ❋ तेजनिधान शुभ्र अति वेखा
तुरँग चारि बल मरुतसमाना ❋ रथ रविसम नहिं जाय बखाना
क्षिति न परत अन्तरहित रहई ❋ श्वेत छत्र चामर शिर ढुरई
अनुजहिं प्रियहिं कहा समुझाई ❋ सुरपति महिमा गुण प्रभुताई
जिहि कारण वासव तहँ आये ❋ सो कछु वचन कहन नहिं पाये
बीचहि सुनि आउब प्रभुकेरा ❋ कहि सारथी[6] तुरत रथ फेरा
दूरिहिते कहि प्रभुहिं प्रणामा ❋ हरषि सुरेश गये निजधामा
पुनि आये जहँ मुनि शरभङ्गा ❋ सुन्दर अनुज जानकी सङ्गा

दो॰ देखि राम मुखपंकज, मुनिवर लोचन भृंग[7] ।
सादर[8] पान करत अति, धन्य जन्म शरभंग ॥

१ फिरि २ पवन ३ पर्वत ४ सूर्य ५ इन्द्र ६ रथवान ७ भ्रमर ८ आदरसमेत ॥

कह मुनि सुनु रघुवीर कृपाला ❀ शङ्कर मानसराज मराला[१]
जात रहेउँ विरञ्चि के धामा ❀ सुनेउँ श्रवण वन आवत रामा
चितवत पन्थ[२] रहेउँ दिनराती ❀ अब प्रभु देखि जुड़ानी छाती
नाथ सकल साधन मैं हीना ❀ कीन्हीं कृपा जानि जन दीना
सो कछु देव न मोर निहोरा ❀ निजप्रण राखेउ जनमन चोरा
तबलगि रहहु दीनहित लागी ❀ जबलगि मिलौं तुम्हैं तनुत्यागी
योग यज्ञ जप तप व्रत कीन्हा ❀ प्रभु कहँ देइ भक्ति वर लीन्हा
यहिविधि सर[३] रचि मुनि शरभङ्गा ❀ बैठे हृदय छांड़ि सब सङ्गा

दो० सीता अनुज समेत प्रभु, नील जलद[४] तनुश्याम।
मम हिय बसहु निरन्तर, सगुण रूप श्रीराम॥

अस कहि योगअग्नि तनु जारा ❀ रामकृपा वैकुण्ठ सिधारा
ताते मुनि हरिलीन न भयऊ ❀ प्रथमहिं भेद भक्तिवर लयऊ
ऋषिनिकाय मुनिवरगति देखी ❀ सुखी भये निज हृदय विशेखी
अस्तुति करहिं सकल मुनिवृंदा ❀ जयति प्रणतहित करुणा[५]कंदा
पुनि रघुनाथ चले वन आगे ❀ मुनिवर वृन्द विपुल सँग लागे
अस्थि समूह[६] देखि रघुराया ❀ पूंछा मुनिन लागि अतिदाया
जानतहहु का पूंछहु स्वामी ❀ समदर्शी तुम अन्तरयामी
निशिचरनिकरसकलमुनिखाये ❀ सुनि रघुनाथ नयन जल छाये

दो० निशिचरहीन करौं महि, भुज उठाय प्रण कीन्ह।
सकलमुनिनकेआश्रमन, जाइ जाइ सुख दीन्ह॥

सुनि अगस्त्यकर शिष्य सुजाना[७] ❀ नाम सुतीक्षण रत भगवाना
मन क्रम वचन रामकर सेवक ❀ सपनेहु आन भरोस न देवक
प्रभु आगमन श्रवण सुनिपावा ❀ करत मनोरथ आतुर[८] धावा
हे विधि दीनबन्धु रघुराया ❀ मोसे शठपर करिहहिं दाया
सहित अनुज मोहिं रामगुसाईं ❀ मिलिहहिं निज सेवक[९] की नाईं

१ हंस २ रास्ता ३ चिता ४ मेघ ५ दया ६ ढेर ७ चतुर ८ शीघ्र ९ दास ॥

मोरे जिय भरोस दृढ़ नाहीं ❀ भक्ति न विरति ज्ञान मनमाहीं
नहिं सतसंग योग जप यागा ❀ नहिं दृढ़ चरणकमल अनुरागा
एक बानि करुणानिधानकी ❀ सो प्रिय जाके गति न आनकी
छं० सोउप्रियअतिपातकीजिनकबहुँप्रभुसुमिरणकरयो।
ते आजु मैं निजनयन देखौं पूरिपुलकित हियभरयो॥
जे पदसरोज अनेकमुनि करि ध्यान कबहुँ न आवहीं।
ते राम श्रीरघुवंशमणि प्रभु प्रेम ते सुख पावहीं॥
दो० पन्नगारि सुनु प्रेमसम, भजन न दूसर आन।
यहविचारि पुनिपुनिमुनी, करत रामगुणगान॥
ह्वैहैं सफल आजु ममलोचन ❀ देखि वदन पंकज[३] भवमोचन
निर्भर[४] प्रेम मगन मुनि ज्ञानी ❀ कहि न जाइ सो दशा भवानी
दिशिअरुविदिशिपंथनहिंसूझा ❀ को मैं कहांचल्यों नहिं बूझा
कबहुँक फिरि पाछे पुनिजाई ❀ कबहुँक नृत्य करै गुणगाई
अविरल प्रेम भक्ति मुनि पाई ❀ प्रभु देखहिं तरु ओट लुकाई
अतिशय प्रीति देखि रघुबीरा ❀ प्रकटे हृदय हरण भवभीरा
मुनि मगुमांझ अचल ह्वै वैसा ❀ पुलक शरीर पनसफल[५] जैसा
तब रघुनाथ निकट चलि आये ❀ देखि दशा निजजनमन भाये
सो० राम सुसहज सुभाव, सेवक सुख दारिददमन।
मुनिसन कह प्रभुआव, उठउठद्विजममप्राणसम॥
मुनिहिं राम बहुभांति जगावा ❀ जाग न ध्यानजनितसुखपावा
भूपरूप तब राम दुरावा[६] ❀ हृदय चतुर्भुज रूप दिखावा
मुनि अकुलाइ उठा तब कैसे ❀ विकल हीनफणि मणिबिनुजैसे
आगे देखि राम तनु श्यामा ❀ सीता अँनुज[७] सहित सुखधामा
परेउ लकुटइव चरणन लागी ❀ प्रेम मगन मुनिवर बड़भागी
भुजाविशाल गहि लिये उठाई ❀ प्रेम प्रीति राखेउ उरलाई

१ गद्गद २ कृतार्थ ३ कमल ४ निरन्तर ५ कटहल ६ छिपावा ७ छोटाभाई॥

मुनिहिं मिलत अस सोह कृपाला ❀ कनकतरुहि जनु भेंट तमाला
रामवदन विलोकि मुनि ठाढ़ा ❀ मानहुँ चित्रमांझ लिखि काढ़ा

दो० तब मुनि हृदय धीरधरि, गहिपद बारहिंबार।
निजआश्रमप्रभुआनिकरि, पूजा विविध प्रकार॥

कह मुनि प्रभु सुनु विनती मोरी ❀ अस्तुति करौं कौनविधि तोरी
महिमा अमित मोरि मति थोरी ❀ रविसम्मुख खद्योत[1] अजोरी
श्याम तामरस[2] दामशरीरा ❀ जटा मुकुट परिधन मुनि चीरा
पाणि चाप शर कटि तूणीरं ❀ नौमि निरन्तर श्रीरघुवीरं
मोहविपिन घनदहन कृशानू ❀ सन्त सरोरुह कानन भानू
निशिचर करि वरूथ[3] मृगराजं ❀ त्रातु सदा नो भवखगवाजं
अरुण नयन राजीव सुवेशं ❀ सीता नयन चकोर निशेशं
हर हृद मानसराज मरालं[4] ❀ नौमि राम उर बाहु विशालं
संशय सर्प ग्रसन उरगादं[5] ❀ शमन सकल सन्ताप विषादं
भय भंजन रंजन सुरयूथं ❀ त्रातु सदा नो कृपावरूथं
निर्गुण सगुण विषम समरूपं ❀ ज्ञान गिरा गोतीतमनूपं
अमल अखिल अनवद्य अपारं ❀ नौमि राम भंजन महिभारं
भक्त कल्पपादप[6] आरामं ❀ तर्जन क्रोध लोभ मद कामं
अतिनागर भवसागर सेतुं ❀ त्रातु सदा दिनकरकुलकेतुं
अतुलित भुज प्रताप बलधामं ❀ कलिमल विपुल विभंजननामं
धर्म्म वर्म्म नर्म्मद गुणग्रामं ❀ सन्तत शं[7] तनोतु ममकामं
यदपि विरजव्यापक अविनासी ❀ सबके हृदय निरन्तरवासी
तदपि अनुज सिय सहित खरारी[8] ❀ बसहु मनसि मम काननचारी
जे जानहिं ते जानहु स्वामी ❀ सगुण अगुण उर अन्तरयामी
जो कोशलपति राजिवनयना ❀ करौ सो राम हृदय मम अयना

सो० मायावश जिमि जीव, रहहिं सदा सन्तत मगन।

१ जुगनू २ कमल ३ झुण्ड ४ हंस ५ गरुड़ ६ कल्पवृक्ष ७ कल्याण ८ राम ॥

तिमि लागहु मोहिं पीव, करुणाकर सुन्दर सुखद ॥
अस अभिमान जाय जनि भोरे ❋ मैं सेवक रघुपति पति मोरे
रामभक्ति तजि चह कल्याना ❋ सो नर अधम शृगालसमाना
सुनि मुनिवचन राम मनभाये ❋ बहुरि हरषि मुनिवर उरलाये
परम प्रसन्न जानि मुनि मोहीं ❋ जो वर मांगु देउँ मैं तोहीं
मुनि कह मैं वर कबहुँ न यांचा ❋ समुझि न परै झूठ का सांचा
तुमहिं नीक लागै रघुराई ❋ सो मोहिं देहु दास सुखदाई
अविरलभक्ति विरति विज्ञाना ❋ होहु सकल गुण ज्ञाननिधाना
प्रभु जो दीन्ह सो वर मैं पावा ❋ अब सो देहु मोहिं जो भावा
दो० अनुज जानकीसहित प्रभु, चाप बाण धरि राम ।
मम हिय गगन इन्दु इव, बसहु सदा निष्काम ॥
एवमस्तु कहि रमानिवासा ❋ हरषि चले कुम्भजऋषि पासा
मुनि प्रणाम करि युगकर जोरी ❋ सुनहु नाथ कछु विनती मोरी
बहुत दिवस गुरुदरश न पाये ❋ भये मोहिं यहि आश्रम आये
अब प्रभु संग जाउँ गुरुपाहीं ❋ तुम कहँ नाथ निहोरा नाहीं
चले जात मग तव पदकंजा ❋ देखिहौं जो विराध मदगंजा
देखि कृपानिधि मुनि चतुराई ❋ लिये संग बिहँसे दोउ भाई
पन्थ कहत निजभक्ति अनूपा ❋ मुनिआश्रम पहुँचे सुरभूपा
आश्रम देखि महाशुचि सुन्दर ❋ सरित सरोवर कानन भूधर
जलचर थलचर जीव जहीते ❋ वैर न करहिं प्रीति सबहीते
दो० तरु बहुविधि विहंग मृग, बोलत विविध प्रकार ।
बसहिं सिद्धमुनि तपकरहिं, महिमा गुण आगार ॥
तुरत सुतीक्षण गुरु पहँ गयऊ ❋ करिदण्डवत कहत अस भयऊ
नाथ कोशलाधीश कुमारा ❋ आये मिलन जगत आधारा
राम अनुज समेत वैदेही ❋ निशि दिन देव जपतहहु जेही

१ सियार २ चन्द्रमा ३ राम ४ अगस्त्य ५ दिन ६ वन ७ मकान ८ जानकी ॥

सुनत अगस्त्य तुरत उठिधाये ❀ हरि विलोकि लोचनजलछाये
मुनिपदकमल परे दोउ भाई ❀ ऋषिअति प्रीति लिये उरलाई
सादर कुशल पूंछि मुनि ज्ञानी ❀ आसन पर बैठारे आनी
पुनि करि बहु प्रकार प्रभु पूजा ❀ मोहिं सम भाग्यवन्त नहिं दूजा
जहँ लगि रहे अपर मुनिवृन्दा ❀ हर्षे सब विलोकि सुखकन्दा

दो० मुनि समूह महँ बैठ प्रभु, सम्मुख सबकी ओर।
शरद इन्दु जनु चितवत, मानहुँ निकर चकोर॥

पाइ सुथल जल हरषित मीना ❀ पारस पाइ सुखी जिमि दीना
प्रभुहिंनिरखिसुखभा यहिभांती ❀ चातक जिमि पायो जल स्वाती
तब रघुवीर कहा मुनि पाहीं ❀ तुमसन प्रभु दुराव कछु नाहीं
तुम जानहु जेहि कारण आयउँ ❀ ताते तात न कहि समुझायउँ
अब सो मन्त्र देहु प्रभु मोही ❀ जेहिं प्रकार मारौं मुनि द्रोही
द्विजद्रोही न बचहिं मुनिराई ❀ जिमि पंकजवन हिमऋतुपाई
मुनि मुसुकाने सुनि प्रभु बानी ❀ पूंछहु नाथ मोहिं का जानी
तुम्हरे भजन प्रभाव अघारी ❀ जानौं महिमा कछुक तुम्हारी

सो० भृकुटी निरखत नाथ, रहत सदा पदकमल तर।
जिन डारे निज हाथ, विविध विधाता सिद्ध हर॥

अति कराल सबपर जग जाना ❀ औरौ कहौं सुनिय भगवाना
डूमरि तरु विशाल तव माया ❀ फल ब्रह्माण्ड अनेक निकाया
जीव चराचर जन्तु समाना ❀ भीतर बसहिं न जानहिं आना
ते फल भक्षक कठिन कराला ❀ तव भय डरत सदा सो काला
ते तुम सकल लोकपति साईं ❀ पूंछेहु मोहिं मनुज की नाईं
यह वर मांगौं कृपानिकेता ❀ बसहु हृदय सिय अनुज समेता
अविरल भक्ति विरत सतसंगा ❀ चरण सरोरुह प्रीति अभंगा
यद्यपि ब्रह्म अखण्ड अनन्ता ❀ अनुभवगम्य भजहिं जेहि सन्ता

१ नेत्र २ और ३ पपीहा ४ शत्रु ५ पापहारी ६ गूलर ७ मृत्यु ८ कमल ९ अन्तरहित॥

अस तव रूप बखानौं जानौं ❁ फिरि फिरि सगुणब्रह्मरतिमानौं

दो॰ जेहि जीवहु पर तव कृपा, सन्तत रहत हुलास।
तिनकी महिमा को कहै, जे अनन्य प्रिय दास॥

सन्तत दासन देहु बड़ाई ❁ ताते मोहिं पूंछेहु रघुराई
है प्रभु परम मनोहर ठाऊँ ❁ पावन[1] पंचवटी तेहि नाऊँ
गोदावरी नदी तहँ बहई ❁ चारिहु युग प्रसिद्ध सो अहई
दण्डक वन पुनीत प्रभु करहू ❁ उग्र शाप मुनिवर के हरहू
वास करहु तहँ रघुकुलराया ❁ कीजै सकल मुनिन पर दाया
चले राम मुनि आयसु[2] पाई ❁ तुरतहिं पंचवटी नियराई
दिव्यलता द्रुम प्रभु मन भाये ❁ निरखि राम ते भयउ सुहाये
लषण राम सिय चरण निहारी ❁ कानन[3] अघ गा भा सुखकारी

दो॰ गृध्रराज सों भेंट भइ, बहु विधि प्रीति दृढ़ाय।
गोदावरी समीप प्रभु, रहे पर्णगृह छाय॥

जब ते राम कीन्ह तहँ वासा ❁ सुखी भये मुनि बीती त्रासा[4]
गिरि वन नदी ताल छवि छाये ❁ दिनदिन प्रति अति होतसुहाये
खग मृग वृन्द अनन्दित रहहीं ❁ मधुप मधुर गुंजत छवि लहहीं
सो वन वरणि न सक अहिराजा[5] ❁ जहां प्रकट रघुवीर विराजा
एक बार प्रभु सुख आसीना[6] ❁ लक्ष्मण वचन कहे छल हीना
सुर नर मुनि सचराचर साईं ❁ मैं पूंछौं निज प्रभुकी नाईं
मोहिं समुझाइ कहौ सोइ देवा ❁ सब तजि करौं चरणरज सेवा
कहहु ज्ञान विराग अरु माया ❁ कहहु सो भक्ति करहु जेहि दाया

दो॰ ईश्वर जीवहि भेद[7] प्रभु, सकल कहहु समुझाइ।
जाते होइ चरण रति, शोक[8] मोह भ्रम जाइ॥

थोरे महँ सब कहौं बुझाई ❁ सुनहु तात मति मन चितलाई
मैं अरु मोर तोर ते माया ❁ जेहि वश कीन्हे जीव निकाया[9]

१ पवित्र २ आज्ञा ३ वन ४ डर ५ शेष ६ बैठेहुये ७ फ़र्क़ ८ दुःख ९ समूह॥

गो गोचर जहँ लगि मन जाई ❀ सो सब माया जानेहु भाई
तेहिकर भेद सुनहु तुम सोऊ ❀ विद्या अपरं अविद्या दोऊ
एक दुष्ट अतिशय दुख रूपा ❀ जा वश जीव परा भवं कूपा
एक रचै जग गुण वश जाके ❀ प्रभु प्रेरित नहिं निजबल ताके
ज्ञान मान जहँ एकौ नाहीं ❀ देखत ब्रह्म रूप सब माहीं
कहिय तात सो परम विरागी ❀ तृणसम सिद्धितीनिगुणत्यागी

दो० माया ईश न आपु कहँ, जानि कहिय सो जीव।
बद्ध मोक्षप्रद सर्वपर, माया प्रेरक सीव॥

धर्म्म ते विरति योग ते ज्ञाना ❀ ज्ञान मोक्षप्रद वेद बखाना
जाते वेगि द्रवौं मैं भाई ❀ सो मम भक्ति भक्तसुखदाई
सो स्वतंत्र अवलम्बं न आना ❀ जेहि आधीन ज्ञान विज्ञाना
भक्ति तात अनुपम सुखमूला ❀ मिलहि जो सन्तहोहिं अनुकूला
भक्ति के साधन कहौं बखानी ❀ सुगम पन्थं मोहिं पावहिं प्रानी
प्रथमहिं विप्रचरण अति प्रीती ❀ निजनिजधर्मनिरत श्रुतिनीती
यहिकर फल मन विषयविरागा ❀ तब ममचरण उपज अनुरागा
श्रवणादिक नव भक्ति दृढ़ाहीं ❀ ममलीलारति अति मनमाहीं
सन्त चरण पंकज अतिप्रेमा ❀ मन क्रम वचन भजन दृढ़ नेमा
गुरु पितु मातु बन्धु पति देवा ❀ सब मोहिंकहँ जानै दृढ़सेवा
ममगुण गावत पुलकशरीरा ❀ गद्गद गिरा नयन बह नीरा
काम आदि मद दम्भ न जाके ❀ तात निरन्तर वश मैं ताके

दो० वचन कर्म मन मोरि गति, भजन करैं निष्कामं।
तिनके हृदयकमल महँ, करौं सदा विश्राम॥

भक्ति योग सुनि अति सुखपावा ❀ लक्ष्मण प्रभुचरणन शिरनावा
नाथ सुने गत मम सन्देहा ❀ भयउ ज्ञान उपजेउ नवनेहा
अनुजवचन सुनि प्रभुमन भाये ❀ हरषि राम निजहृदय लगाये

१ और २ संसार ३ आश्रय ४ उपमारहित ५ मार्ग ६ जल ७ कामनारहित॥

यहिविधि गये कछुक दिनबीती ❀ कहत विराग ज्ञान गुण नीती
शूर्पणखा रावण की बहिनी ❀ दुष्टहृदय दारुण जिमि अँहिनी
पञ्चवटी सो गइ इकबारा ❀ देखि विकलभइ युगलकुमारा
भ्राता पिता पुत्र उरगारी ❀ पुरुष मनोहर निरखत नारी
होइ विकलसक मन नहिं रोकी ❀ जिमिरविमणिद्रवरविहिंविलोकी

दो० अधमनिशाचरिकुटिलअति, चलीकरनउपहास।
सुनु खगेश भावी प्रबल, भाचहनिशिचरनास॥

रुचिररूप धरि प्रभुपहँ जाई ❀ बोली वचन मधुर मुसुकाई
तुमसम पुरुष न मोसम नारी ❀ यह सँयोग विधि रचा विचारी
मम अनुरूप पुरुष जग नाहीं ❀ देखेउँ खोजि लोक तिहुँ माहीं
ताते अबलगि रहिउँ कुमारी ❀ मनमाना कछु तुमहिं निहारी
सीतहिं चितइ कही प्रभु बाता ❀ अहै कुमार मोर लघुभ्राता
गइ लक्ष्मण रिपुभगिनी जानी ❀ प्रभु विलोकि बोले मृदुबानी
सुन्दरि सुनु मैं उनकर दासा ❀ पराधीन नहिं तोर सुपासा
प्रभु समरथ कोशलपुर राजा ❀ जो कछु करहिं उन्हैं सबछाजा

दो० केहरि सम नहिं करिवर, लवा कि बाज समान।
प्रभु सेवक इमि जानहु, मानहु वचन प्रमान॥

सेवक सुख चह मान भिखारी ❀ व्यसनीधनशुभगतिव्यभिचारी
लोभी यश चह चार गुमानी ❀ नभ दुहि दूध चहत कोउ प्रानी
पुनि फिरि रामनिकट सो आई ❀ प्रभु लक्ष्मणपहँ बहुरि पठाई
लक्ष्मण कहा तोहिं सो वरई ❀ जो तृणतोरि लाज परिहरई
तब खिसिआनि रामपहँ गई ❀ रूप भयङ्कर प्रकटत भई
बिथुरे केश रदन विकराला ❀ भृकुटीकुटिल करणलगिगाला
सीतहिं सभय देखि रघुराई ❀ कहा अनुजसन सैन बुझाई
अनुज रामनकी गति जानी ❀ उठे रिसाइ सो सुनहु भवानी

१ सर्पिणी २ दोनों ३-४ गरुड़ ५ छोटा ६ बहिन ७ छोड़े ८ दांत ९ कान॥

दो० लक्ष्मणअतिलाघवतिहिं, नाक कान बिनु कीन्ह ।
ताके कर रावण कहँ, मनहुँ चुनौती दीन्ह ॥

नाक कान बिनु भइ बिकरारा ❀ जनु स्रव शैल[1] गेरु कै धारा
खरदूषणपहँ गइ बिलखाता ❀ धिक धिक तव पौरुष बलभ्राता
तेइ पूंछा सब कहेसि बुझाई ❀ यातुधान सुनि सैन बुलाई
चौदह सहस सुभट सँगलीन्हे ❀ जिन सपनेहु रण पीठि न दीन्हे
धाये निशिचरनिकर[2] वरूथा ❀ जनु सपक्ष कज्जलगिरि यूथा
नाना वाहन नानाकारा ❀ नाना आयुध[3] घोर अपारा
श्यामघटा देखत नभ केरी ❀ तहँ वासव[4] धनु मनहुँ उयेरी
शूर्पणखहिं आगे करिलीनी ❀ अशुभरूप श्रुति नासा हीनी

दो० निजनिजबलसबमिलिकहहिं, एकहिं एक सुनाइ ।
बाजन बाज जुझाऊ, हर्ष न हृदयसमाइ ॥

अशकुन अमित होहिं भयकारी ❀ गनहिं न मृत्युविवश भयभारी
गर्जहिं तर्जहिं गगन उड़ाहीं ❀ देखि कटक भट अति हरषाहीं
कोउ कह जियत धरहु दोउ भाई ❀ धरि मारहु तियलेहु छुड़ाई
कोउ कह सुनौ सत्य हम कहहीं ❀ कानन फिरहिं वीर कोउ अहहीं
एकै कहा मष्ट है रहहू ❀ खरके आगे अस जनि कहहू
यहिविधि कहत वचन रणधीरा ❀ आये सकल जहां रघुवीरा
धूरि पूरि नभमण्डल रहेऊ ❀ राम बोलाइ अनुजसन कहेऊ
लै जानकिहिं जाहु गिरिकन्दर ❀ आवा निशिचर कटक भयंकर
रहेउ सजग सुनि प्रभुकै वाणी ❀ चले सहितसिय शरधनुपाणी
देखि राम रिपु दल चढ़ि आवा ❀ बिहँसि कठिन कोदण्ड चढ़ावा

छं०कोदण्डकठिनचढ़ाइप्रभुशिरजटाबांधतसोहज्यों ।
मरकतशयलपरलसतदामिनि[6]कोटिसोयुगभुजँगज्यों ।
कटिकसिनिषंगविशालभुजगहिचापविशिख[8]सुधारिकै ।

१ पर्वत २ झुण्ड ३ अस्त्र ४ इन्द्र ५ धनुष ६ बिजली ७ सर्प ८ बाण ॥

चितवत मनहुँ मृगराज[1] प्रभु गजराजघटा निहारिकै ॥

सो० आय गये बगमेल, धरहु धरहु धाये सुभट ।
यथा विलोकि अकेल, बालरविहिं घेरत दनुज[2] ॥

घेरि रहे निशिचर समुदाई ❀ दण्डक खग[3] मृग चले पराई
प्रभु विलोकि शर सकहिं न डारी ❀ थकित भये रजनीचर झारी
सचिव[4] बोलि बोले खरदूषण ❀ यह कोउ नृप बालक नरभूषण
सुर नर नाग असुर मुनि जेते ❀ देखे सुने हते हम केते
हम भरि जन्म सुनहु सब भाई ❀ देखी नहिं अस सुन्दरताई
यद्यपि भगिनी कीन्ह कुरूपा ❀ बधलायक नहिं पुरुष अनूपा
देहिं तुरत निजनारि दुराई ❀ जीवत भवन जाहिं दोउ भाई
मोर कहा तुम ताहि सुनावहु ❀ तासु वचन सुनि आतुर[5] आवहु

दो० भये कालवश मूढ़ सब, जानहिं नहिं रघुवीर ।
मशकफूंक किमि मेरु उड़, सुनहु गरुड़ मतिधीर ॥

दूतन कहा रामसन जाई ❀ सुनत राम बोले मुसुकाई
आजु भयो बड़भाग्य हमारा ❀ तुम्हरे प्रभु अस कीन्ह विचारा
हम क्षत्रिय मृगया[6] वन करहीं ❀ तुमसे खल[7] मृग खोजत फिरहीं
रिपु बलवन्त देखि नहिं डरहीं ❀ एक बार कालहुसन लरहीं
यद्यपि मनुज दनुजकुलघालक ❀ मुनिपालक खलशालकबालक
जो न होइ बल घर फिरि जाहू ❀ समरविमुख मैं हतौं न काहू
रण चढ़ि करिय कपट चतुराई ❀ रिपुपर कृपा परम कदराई
दूतन जाइ तुरत सब कहेऊ ❀ सुनि खरदूषण उर अति दहेऊ

छं० उरदहेउकहेउकि धरहुधावहुविकटभटरजनीचरा।
शरचाप तोमर शक्ति शूल कृपाण[8] परिघ परशूधरा ॥
प्रभु कीन्ह धनुष टँकोर प्रथम कठोर घोर भयो महा ।

१ सिंह २ दानव ३ पक्षी ४ मन्त्री ५ शीघ्र ६ शिकार ७ दुष्ट ८ तलवार ॥

भये बँधिर[1] व्याकुल यातुधान[2] न ज्ञान तेहिअवसर रहा ॥

दो० सावधान ह्वै धाये, जानि सबल आराति[3] ।
लागे वर्षन राम पर, अस्त्र शस्त्र बहु भांति ॥
तिनके आयुध[4] तृण सम, करि काटे रघुवीर ।
तानि शरासन[5] श्रवणलगि, पुनि छांड़े निज तीर ॥

छं० तब चले बाण कराल * फुंकरत जनु बहुव्याल[6] ॥
कोपेउ समर श्रीराम * चलेविशिख[7]निशित[8]निकाम ॥
अवलोकि खर तर तीर * मुरिचले निशिचर वीर ॥
यक एक कहँ न सँभार * कर तात मात पुकार ॥
कोउ कहै खर कह कीन्ह * जो युद्ध इनसन लीन्ह ॥
ये बाण अतिहि कराल * ग्रसे आइ मानहुँ काल ॥
भय क्रुद्ध तीनों भाइ * जो भागि रणते जाइ ॥
तेहि बधब हम निजपानि[9] * फिरे मरणमनमहँठानि ॥

दो० उमा एक निज प्रभुहिवश, पुनि इनके बड़ भाग ।
तरण चहहिं प्रभुशर लगे, विना योग जप याग ॥

छं० आयुध अनेक प्रकार * सम्मुखते करहिं प्रहार ॥
रिपु परम कोपे जानि * प्रभु धनुष शर सन्धानि ॥
छांड़े विपुल नाराच * लगेकटनविकटपिशाच ॥
उर शीश कर भुज चरन * जहँ तहँ लगे महिपरन ॥
चिक्करत लागत बान * धरपरत कुधर समान ॥
भटकटत तनुशतखंड * पुनि उठत करिपाखंड ॥
नभ उड़त बहुभुजमुंड * बिनु मौलि धावत रुंड ॥
खग कंक काक शृगाल * कटकटहिं कठिन कराल ॥

१ बहिरा २ राक्षस ३ शत्रु ४ हथियार ५ धनुष ६ सर्प ७ बाण ८ पैने ९ हाथ ॥

छं० कटकटहिंजम्बुकभूतप्रेतपिशाचखप्पर साजहीं ।
वैताल वीर कपाल ताल बजाइ योगिनि नाचहीं ॥
रघुवीरबाण प्रचण्ड खण्डहिं भटनके उर भुज शिरा ।
जहँ तहँ परहिं उठि लरहिं धरुधरुकरहिंसकलभयंकरा ॥
अंतावरी गहि उड़हिं गृध्र पिशाच कर गहि धावहीं ।
संग्राम पुरवासी मनहुँ बहु बाल गुँड़ी उड़ावहीं ॥
मारे पछारे उर बिदारे विपुल भट कहरत परे ।
अवलोकिनिजदलविकलभटत्रिशिरादिखरदूषणफिरे ।
शर शक्ति तोमर परशु शूल कृपाण एकहि बारहीं ।
करि कोप श्रीरघुवीरपर अगणित निशाचर डारहीं ॥
प्रभुनिमिषमहँ रिपुशर निवारि प्रचारि डारे शायका ।
दशदशविशिखउरमांझमारे सकलनिशिचरनायका ॥
महिपरतउठिभटभिरतमरत न करतमायाअतिघनी ।
सुरडरत चौदहसहस निशिचर एक श्रीरघुकुलमनी ॥
सुरमुनिसभयप्रभु देखि मायानाथ अतिकौतुककर्‌यो ।
देखतपरस्पर राम करि संग्राम रिपुदल लरि मर्‌यो ॥
दो० राम रामकरि तनु तजहिं, पावहिं पद निर्वान ।
करि उपाय रिपु मारेव, क्षणमहँ कृपानिधान ॥
हरषित वरषहिं सुमन सुर, बाजहिं गगननिशान ।
अस्तुतिकरिकरि सबचले, शोभितविविधविमान ॥
जब रघुनाथ समर रिपुजीते ❀ सुर नर मुनि सबके दुखबीते
तब लछमण सीतहिं लै आये ❀ प्रभुपद परत हरषि उरलाये
सीता निरखि श्याम मृदुगाता ❀ परम प्रेम लोचन न अघाता

१ सियार २ खोपड़ी ३ आंतें ४ पतंग ५ बहुत ६ तलवार ७ एकपल ८ पुष्प ॥

पंचवटी बसि श्रीरघुनायक ❁ करतचरित सुरमुनिसुखदायक
धुआं देखि खरदूषण केरा ❁ शूर्पणखा तव रावण प्रेरा
बोली वचन क्रोधकरि भारी ❁ देश कोशकी सुरति बिसारी
करसि पान सोवसि दिनराती ❁ सुधि न तोहिं शिरपर आराती
राज नीति बिनु धन बिनु धर्मा ❁ हरिहि समर्पे बिनु सतकर्मा
विद्या बिनु विवेक उपजाये ❁ श्रमफल पाठ किये अरु गाये
संग ते यती कुमन्त्रते राजा ❁ मान ते ज्ञान पान ते लाजा
प्रीति प्रणय बिनु मद ते गुनी ❁ नाशहिं वेगि नीति अस सुनी

सो० रिपु रुज पावक पाप, प्रभुअहिगनियनछोटकरि।
असकहिविविधविलाप, पुनि लागिरोदनकरन॥

दो० सभामांझ व्याकुल परी, बहुप्रकार करि रोइ।
तोहिं जियत दशकन्धरैं, मोरि कि असगतिहोइ॥

सुनत सभासद उठ अकुलाई ❁ समुझाई गहि बांह उठाई
कह लङ्केश कहसि निज बाता ❁ केइँ तव नासाँ कान निपाता
अवधनृपति दशरथ के जाये ❁ पुरुषसिंह वन खेलन आये
समुझिपरी मोहिं उनकी करणी ❁ रहित निशाचर करिहैं धरणी
जिनकर भुजबल पाइ दशानन ❁ अभयँ भये मुनिविचरहिंकानन
देखत बालक काल समाना ❁ परम धीर धन्वी गुण नाना
अतुलित बल प्रताप दोउ भ्राता ❁ खलबधरत सुरमुनिसुखदाता
शोभाधाम राम अस नामा ❁ तिनके सँग इकनारि ललामा

सो० अतिसुकुमारिपियारि, पटतरयोग्यनआहिकोउ।
मैं मन दीख विचारि, जहँरहतेहिसमआननहिं॥

रूपराशि विधि नारि सँवारी ❁ रति शतकोटि तासु बलिहारी
अजहुँ जाय देखब तुम जबहीं ❁ हैहौ विकल तासु वश तबहीं
जीवनमुक्ति लोकवश ताके ❁ दशमुख सुनु सुन्दरि असजाके

१ शत्रु २ अच्छेकर्म्म ३ रोग ४ रावण ५ नाक ६ काटे ७ निडर ८ वन ९ अतौल॥

तासु अनुज काटी श्रुति नासा ❀ सुनि तव भगिनीकरि परिहासा
बिनुऽपराध अस हाल हमारी ❀ अपराधी किमि बचहिं सुरारी
खर दूषण सुनि लाग गुहारा ❀ क्षणमहँ सकलकटक उन मारा
खर दूषण त्रिशिरा कर घाता ❀ सुनि दशशीश जरा सब गाता
भयो शोचवश नहिं विश्रामा ❀ बीतहिं पल मानहुँ शतयामा

दो० शूर्पणखहिं समुझाइकरि, बलबोलेसिबहुभांति।
भवनगयउ अतिशोचवश, नींद परी नहिं राति ॥

सुर नर असुर नाग खगमाहीं ❀ मोरे अनुचर सम कोउ नाहीं
खर दूषण मोसम बलवन्ता ❀ तिन्हैं को मारे बिनु भगवन्ता
सुररञ्जन भञ्जनै महिभारा ❀ जो जगदीश लीन्ह अवतारा
तौ मैं जाइ बैर हठ करिहौं ❀ प्रभुशर ते भवसागर तरिहौं
होइ भजन नहिं तामस देहा ❀ मन क्रम वचन मन्त्र दृढ़ एहा
जो नर रूप भूप सुत कोऊ ❀ हरिहौं नारि जीति रण दोऊ
चला अकेल यानँ चढ़ि तहवां ❀ बस मारीच सिन्धुतट जहवां
रथ अनूप जोरे खर चारी ❀ वेगवन्त इमि जिमि उँरगारी

छं० उरगारिसमअतिवेगवरणत,जायनहिं उपमाकही।
शिरछत्र शोभितश्यामघनँ जनु चमर श्वेतविराजही ॥
यहिभांति नांघत सरित शैल अनेक वापी सोहहीं।
वन बाग उपवन वाटिका शुचिनगर मुनिमन मोहहीं ॥

दो० बहुतड़ागशुचिविहँग मृग, बोलत विविधि प्रकार।
यहिविधिआयहुसिन्धुतट, शतयोजन विस्तार ॥

सुन्दर जीव विविधिविधि जाती ❀ करहिं कुलाहल दिन अरु राती
कूदहिं ते गरजहिं घन नाई ❀ महाबली बल वरणि न जाई
कनक बाल सुन्दर सुखदाई ❀ बैठहिं सकल जन्तु तहँ आई

१ कान २ बहिन ३ प्रहर ४ नाश ५ क्रोध ६ राजा ७ सवारी ८ गरुड़ ९ मेघ ॥

तिहिपर दिव्यलता तरु लागे ❀ जिहि देखत मुनिमन अनुरागे
गुहा विविधि विधि रहहिं बनाई ❀ वरणत शारद मन सकुचाई
चाहिय जहां ऋषिनकर वासा ❀ तहां निशाचर करहिं निवासा
दशमुख देखि सकल सकुचाने ❀ जे जड़ जीव सजीव पराने
इहां राम जसि युक्ति बनाई ❀ सुनहु उमा[1] सो कथा सुहाई

दो० लक्ष्मण गये वनहिं जब, लेन मूल फलकन्द।
जनकसुता सन बोले, बिहँसि कृपासुखकन्द॥

सुनहु प्रिया व्रत रुचिर सुशीला ❀ मैं कछु करब ललित नरलीला
तुम पावक[2] महँ करहु निवासा ❀ जब लगि करौं निशाचरनासा
जबहिं राम सब कहेउ बखानी ❀ प्रभुपद धरिहिय अनलसमानी
निज प्रतिबिम्ब राखि तहँ सीता ❀ तैसइ शील स्वरूप विनीता
लक्ष्मणहू यह मर्म न जाना ❀ जो कछु चरित रच्यो भगवाना
दशमुख गयउ जहां मारीचा ❀ नाय माथ स्वारथरत नीचा
नवनि नीचकी अति दुखदाई ❀ जिमि अंकुश धनु उरग[3] बिलाई
भयदायक खलकी प्रियबानी ❀ जिमि अकाशके कुसुम भवानी

दो० करि पूजा मारीच तब, सादर पूंछी बात।
कवनहेतु मन व्यग्र[4] अति, यकसर आयउ तात॥

दशमुख सकल कथा तेहि आगे ❀ कही सहित अभिमान[5] अभागे
होहु कपटमृग[6] तुम छलकारी ❀ जेहि विधि हरिआनौं नृपनारी
तेइँ पुनि कहा सुनहु दशशीशा ❀ ते नर रूप चराचर ईशा
तासों तात वैर नहिं कीजै ❀ मारे मरिय जिआये जीजै
मुनिमख[7] राखन गयउ कुमारा ❀ बिनुफरशर रघुपति मोहिं मारा
शत योजन आयउँ क्षणमाहीं ❀ तिन सन वैर किये भल नाहीं
भइ मति कीटभृङ्ग[8] की नाई ❀ जहँ तहँ मैं देखौं दोउ भाई
जो नर तात तदपि अति शूरा ❀ तिनहिं विरोध न आइहि पूरा

१ पार्वती २ अग्नि ३ सर्प ४ विकल ५ घमण्ड ६ हरिण ७ यज्ञ ८ भँभीरी॥

दो॰ जेइँ ताड़का सुबाहु हति, खण्डेउ हरकोदण्ड ।
खर दूषण त्रिशिरा बधेउ, मनुजकि असबरिबण्ड ॥

रा अस नाम सुनत दशकन्धर ❋ रहत प्राण नहिं मम उर अन्तर
जाहु भवन कुलकुशल विचारी ❋ सुनतहि शठदीन्हेसि बहुगारी
गुरु जिमि मूढ़ करसि ममबोधा[1] ❋ कहु जग मोहिंसमान को योधा
तव मारीच हृदय अनुमाना ❋ नवहिं विरोधे नहिं कल्याना
शस्त्री मर्मी प्रभु शठ धनी ❋ वैद्य वन्दि कवि कोविद गुनी
उभय भांति देखा निज मरणा ❋ तब ताकेसि रघुनायक शरणा
उतर देत मोहिं बँधिहि[3] अभागी ❋ कस न मरौं रघुपति शर[4] लागी
अस जिय जानि दशाननसंगा ❋ चला रामपद प्रेम अभंगा
मन अति हर्ष जनाव न तेही ❋ आजु देखिहौं परमसनेही

छं॰ निजपरमप्रीतमदेखिलोचनसफलकरिसुखपाइहौं ।
श्रीसहित अनुजसमेत कृपानिकेत पद मन लाइहौं ॥
निर्वाणदायक क्रोध जाकर भक्त अवशहि वशकरी ।
निजपाणिशरसन्धानिसो मोहिं बधहिंसुखसागरहरी ॥

दो॰ मम पाछे धर धावत, धरे शरासन बान ।
फिरिफिरिप्रभुहिंविलोकिहौं, धन्य न मोसमआन ॥

सीता लषण सहित रघुराई ❋ जेहिवनबसहिं मुनिनसुखदाई
तेहिवन निकट दशानन गयऊ ❋ तब मारीच कपटमृग भयऊ
अतिविचित्र कछु वरणि न जाई ❋ कनक[6]देह मणिरची बनाई
सीता परम रुचिर मृग देखा ❋ अंग अंग सुमनोहर वेखा
सुनहु देव रघुवीर कृपाला ❋ यहि मृगकर अतिसुन्दर छाला[7]
सत्यसन्ध प्रभु बध करि एही ❋ आनहु चर्म कहति वैदेही
तब रघुपति जाना सब कारन ❋ उठे हरषि सुरकाज सँवारन
मृग बिलोकि कटि[8]परिकर[9] बांधा ❋ करतल चाप रुचिरशर सांधा

१ सिखापन २ बली ३ मारेगा ४ बाण ५ धनुष ६ सोना ७ खाल ८ कमर ९ फेंट ॥

रा० श्रा० चि० नं० ६



प्रभु लक्ष्मणहिं कहा समुझाई ❁ फिरतविपिन निशिचरबहुभाई
सीता केरि करेहु रखवारी ❁ बुधि विवेक बल समय विचारी
दो० अस कहि चले तहां प्रभु, जहां कपटमृग नीच।
देव हर्ष विस्मय विवश, चातक[1] वर्षा बीच॥
प्रभुहिं विलोकि चला मृग भाजी ❁ धाये राम शरासन[2] साजी
निगमनेति शिव ध्यान न पावा ❁ मायामृग पाछे सोइ धावा
कबहुँ निकट पुनि दूरि पराई ❁ कबहुँक प्रकटै कबहुँ छपाई
प्रकटत दुरत करत छल भूरी ❁ यहिविधि प्रभुहिं गयो लै दूरी
तब तकि राम कठिन शर मारा ❁ धरणि पस्यो करि घोर चिकारा
लक्ष्मण कर प्रथमहिं लै नामा ❁ पाछे सुमिरेसि मनमहँ रामा
प्राण तजत प्रकटेसि निजदेही ❁ सुमिरेसि राम समेत सनेही
अन्तरप्रेम तासु पहिंचाना ❁ मुनिदुर्लभ गति दीन्ह सुजाना
दो० विपुल[3] सुमन सुर वर्षहिं, गावहिं प्रभुगुण गाथ।
निजपद दीन्हों असुरकहँ, दीनबन्धु रघुनाथ॥
खलबधि तुरत फिरे रघुवीरा ❁ सोह चाप कर कटि तूणीरा[5]
आरतगिरा सुनी जब सीता ❁ कह लक्ष्मणसन परम सभीता
जाहु वेगि संकट तव भ्राता ❁ लक्ष्मण बिहँसि कहा सुनु माता
भृकुटि विलास सृष्टि लय होई ❁ सपनेहुँ संकट परै कि सोई
सौंपिगये मोहिं रघुपति थाती ❁ जो तजि जाउँ तोष[6] नहिं छाती
यह जिय जानि सुनहु ममभाता ❁ पूंछब कहब कवन मैं बाता
मर्मवचन सीता जब बोली ❁ हरि प्रेरित लक्ष्मणमति डोली
चहुँदिशि रेखा खींचि अहीशा[7] ❁ बारबार नाये पद शीशा
वन दिशि देव सौंपि सब काहू ❁ चले जहां रावण शशि राहू
चितवहिंलषणसियहिंफिरिकैसे ❁ तजत बच्छ निजमातुहिं जैसे
दो० एक डरत डर रामके, दूजे सीय अकेलि।

१ पपीहा २ धनुष ३-४ बहुत ५ तरकस ६ धीरज ७ शेष अर्थात् लक्ष्मण॥

लषण तेजतन हतभये, जिमि डाँढ़ी[1] दवँ[2]बेलि ॥
शून्य वीच दशकन्धर देखा ❀ आवा निकट यँती[3] के वेखा
जाके डर सुर असुर डराहीं ❀ निशि न नींद दिनअन्न न खाहीं
सो दशशीश श्वान की नाईं ❀ इत उत चितै चला भँड़िहाईं
जिमि कुपन्थ पग देत खँगेशा[4] ❀ रह न तेज बल बुधि लवलेशा
करि अनेक विधि छल चतुराई ❀ मांगेउ भीख दशानन जाई
अतिथिजानि सिय कंदमूल फल ❀ देन लगी तेइँ कीन्ह बहुरि छल
कह दशमुख सुनु सुन्दरि बानी ❀ बांधी भीख न लेउँ सयानी
विधि गति वाम काल कठिनाई ❀ रेख लांघि सिय बाहर आई
दो० विश्वभरनिअँघ[5]दलदलनि, करनिसकलसुरकाज।
जाना नहिं दशशीश तेहि, मूढ़ कपट के साज ॥
नाना विधि कहि कथा सुनाई ❀ राजनीति भय प्रीति देखाई
कह सीता सुनु यती गुसाईं ❀ बोलेसि वचन दुष्ट की नाईं
तब रावण निजरूप दिखावा ❀ भइ सभीत जब नाम सुनावा
कह सीता धरि धीरज गाढ़ा ❀ आयगये प्रभु खल रहु ठाढ़ा
जिमि हरिवँधुहि[6] क्षुद्रशश चाहा ❀ भयेसिकालवश निशिचरनाहा
वायस चह खगपति की समता ❀ सिन्धुसमान होइ किमिसरिता
खरि कि होइ सुरधेनु समाना ❀ जाहु भवन निज सुनु अज्ञाना
सुनत वचन दशशीश लजाना ❀ मनमहँ चरण वन्दि सुख माना
दो० क्रोधवन्त तब रावण, लीन्हेसि रथ बैठाय।
चलेउ गगँनपथ[7] आतुर, भयवश हांकि न जाय ॥
हा जगदीश वीर रघुराया ❀ केहि अपराध बिसारेहु दाया
आरतहरण शरण सुखदायक ❀ हा रघुकुलसरोज दिननायक
हा लक्ष्मण तुम्हार नहिं दोषा ❀ सो फल पायउँ कीन्हेउँ रोषा
कैकेयी मन जो कछु रहेऊ ❀ सो विधि आजु मोहिं दुखदयऊ
पंचवटी के खग मृग जाती ❀ दुखी भये वनचर बहु भांती

१ जली २ वनकी अग्नि ३ तपस्वी ४ गरुड़ ५ पाप ६ सिंहिनी ७ आकाशमार्ग ॥

विविध विलाप करति वैदेही ❀ भूरि कृपा प्रभु पूरि सनेही
विपति मोरि को प्रभुहिं सुनावा ❀ पुरोडास चह रासभ खावा
सीता कर विलाप सुनि भारी ❀ भये चराचर जीव दुखारी
दो० बहुविधि करत विलाप नभ, लिये जात दशशीश।
डरत न खल वर पाइ भल, जो दीन्हो अज ईश॥
गृध्रराज सुनि आरत बानी ❀ रघुकुलतिलक नारि पहिंचानी
अधम निशाचर लीन्हे जाई ❀ जिमि मलेच्छवश कपिलागाई
अहह प्रथम बल ममतनु नाहीं ❀ तदपि जाइ देखौं बल ताहीं
सीतापुत्रि करसि जनि त्रासा ❀ करिहौं यातुधान कर नासा
धावा क्रोधवन्त खग कैसे ❀ छूटै पँवि पर्वत पहँ जैसे
रे रे दुष्ट ठाढ़ किन होहीं ❀ निर्भयचलेसि न जानेसि मोहीं
आवत दीख कृतांत समाना ❀ फिरिदशकन्ध करत अनुमाना
की मैनाक कि खगपति होई ❀ ममबल जानि सहित पति सोई
जाना जरठ जटायू येहा ❀ मम कर तीरथ छांड़िहि देहा
दो० ममभुजबल नहिं जानत, आवत तपिन सहाइ।
समर चढ़ै तौ यहि हतौं, जियत न निजथलजाइ॥
सुनत गृध्र क्रोधातुर धावा ❀ कह सुनु रावण मोर सिखावा
तजि जानकी कुशल गृह जाहू ❀ नाहिंत अस होइहि बहुबाहू
रामरोष पावक अति घोरा ❀ होइहि सकल शलभ कुलतोरा
उतर न देइ दशानन योधा ❀ तवहिं गृध्र धावा करि क्रोधा
धरि कँच विरथ कीन्ह महि गिरा ❀ सीतहिं राखि गृध्र पुनि फिरा
दशमुख उठि कृतशर संधाना ❀ गृध्र आइ काटेउ धनुबाना
चोंचन मारि बिदारेसि देही ❀ दण्ड एक भइ मूर्च्छा तेही
दो० जेइँ रावण निजवशकिये, मुनिगण सिद्ध सुरेश।
तेइँ रावण सन समर अति, धीर वीर गृध्रेश॥

१ यज्ञकीखीर २ गधा ३ दुःख ४ राक्षस ५ वज्र ६ काल ७ बाल ८ फाड़ी ९ युद्ध॥

स्वस्थ भये सो पुनि उठि धावा ❀ मारे गृध्र न सम्मुख आवा
कीन्हेसि बहु जब युद्ध खगेशा ❀ थकित भयो तब जरंठ[1] गिधेशा
तबसक्रोधनिशिचरखिसियाना ❀ काढ़ेसि परम कराल कृपाना[2]
काटेसि पंख परा खग धरणी ❀ सुमिरि रामकी अद्भुत करणी
मनमहँ गृध्र परम सुख माना ❀ रामकाज मम लाग्यो प्राना
सीतहिं यान[3] चढ़ाय बहोरी ❀ चला उताइल त्रास न थोरी
करति विलापजातिनभ सीता ❀ व्याधविवश[4] जनु मृगी सभीता
गिरिपर बैठे कपिन निहारी ❀ कहि हरिनाम दीन्ह पट डारी
यहिविधि सीतहिं सो लै गयऊ ❀ वन अशोक महँ राखत भयऊ

दो० हारिपरा खल बहुत विधि, भय अरुप्रीति दिखाइ।
तब अशोक पादप तरे, राखेसि यतन कराइ॥

उहां विधाता मन अनुमाना ❀ सुरपति बोलि मंत्र अस ठाना
तात जनकतनया पहँ जाहू ❀ सुधि न पाव जिहिनिशिचरनाहू
असकहि विधि सुन्दरहविआनी ❀ सौंपि बहुरि बोले मृदुबानी
यहि भक्षण कृत क्षुधा[5] न प्यासा ❀ वर्ष सहसदश संशय नासा
सो प्रसाद लै आयसु पाई ❀ चले हृदय सुमिरत रघुराई
कछु वासव माया निज गोई ❀ रक्षक रहे गये तहँ सोई
तदपि डरत सीता पहँ आयउ ❀ करिप्रणाम निज नाम सुनायउ
निश्चय जानि सुरेश[6] सुजाना ❀ पिता जनक दशरथ सम माना
करि परितोष दूरिकरि शोका ❀ हव्य खवाय गये निज लोका

दो० जेहिविधि कपटकुरंगसँग, धाय चले श्रीराम।
सो छवि सीता राखि उर, रटतिरहतिहरिनाम॥

रघुपति अनुजहिं आवत देखी ❀ वाहिज[8] चिंता कीन्ह विशेखी
जनकसुता परिहरेउ अकेली ❀ आयहु तात वचन मम पेली
निशिचरनिकरफिरहिंवनमाहीं ❀ मम मन सीता आश्रम[9] नाहीं

१ बूढ़ा २ तलवार ३ सवारी ४ बहेलिया ५ भूख ६ इन्द्र ७ हरिण ८ ऊपरसे ९ स्थान॥

अहह तात भल कीन्हेउ नाहीं ❀ सिय विहीन मम जीवन काहीं
यहिते कवन विपति बड़ि भाई ❀ खोयहु सीय काननहिं आई
गहि पदकमल अनुज करजोरी ❀ कहेउ नाथ कछु मोरि न खोरी
अनुज समेत गये प्रभु तहँवां ❀ गोदावरितट आश्रम जहँवां
आश्रम देखि जानकी हीना ❀ भये विकल जस प्राकृत दीना

दो० कानन रहेउ तड़ाग इव, चकचकई सिय राम।
रावणनिशिबिछुरनाकिये, दुख बीते चहुँयामे॥

परदुखहरण शोक दुख नाहीं ❀ भा विषाद तिनके मनमाहीं
हा गुणखानि जानकी सीता ❀ रूप शील व्रत नेम पुनीता
लक्ष्मण समुझाये बहु भांती ❀ पूंछत चले लता तरु पांती
हे खग मृग हे मधुकर श्रेनी ❀ तुम देखी सीता मृगनैनी
खंजन शुक कपोत मृग मीना ❀ मधुपनिकर कोकिला प्रवीना
कुन्दकली दाड़िम दामिनी ❀ कमलशरद शशिअहिभामिनी
वरुणपाश मनोजधनु हंसा ❀ गज केहरि निज सुनत प्रशंसा
श्रीफल कनक कदलि हरषाहीं ❀ नेकु न शंक सकुच मनमाहीं
सुनु जानकी तोहिं बिनु आजू ❀ हर्षे सकल पाइ जनु राजू
किमिसहिजातअनखतोहिंपाहीं ❀ प्रिया वेगि प्रकटति कस नाहीं
यहिविधिविलपतखोजतस्वामी ❀ मनो महाविरही अतिकामी

दो० फणिमणिहीन दीन जिमि, मीनहीनजिमिवारि।
तिमिव्याकुलभयेलषणतहँ, रघुवरदशानिहारि॥

धरि उर धीर बुझावहिं रामहिं ❀ तजहिंनशोकअधिकसुखधामहिं
पूरण काम राम सुखराशी ❀ मनुजचरितकरअजअविनाशी
सरवर अमित नदी गिरि खोहा ❀ बहुविधि रामलषण तहँ जोहा
शोच हृदय कछु कहि नहिं आवा ❀ टूट धनुष शर आगे पावा
कहुँ कहुँ शोणित देखिय कैसे ❀ श्रावण जल भा डाबर जैसे

१ विना २ प्रहर ३ भ्रमर ४ कबूतर ५ अनार ६ हाथी ७ बेल ८ खून ९ मटमैला॥

कहत राम लक्ष्मणहिं बुझाई ❋ काहू कीन्ह युद्ध यहि ठाईं
आगे परा गृध्रपति देखा ❋ सुमिरत रामचरण की रेखा

दो० करसरोज शिर परसेउ, कृपासिन्धु रघुबीर।
निरखिराम छविधाममुख, बिगत भई सब पीर॥

तब कह गृध्र वचन धरि धीरा ❋ सुनहु राम भञ्जन भवभीरा
नाथ दशानन यह गति कीन्हीं ❋ तेहिखलजनकसुता हरिलीन्हीं
लै दक्षिण दिशि गयउ गोसाईं ❋ विलपति अति कुररी की नाईं
दरश लागि प्रभु राखेउँ प्राना ❋ चलन चहत अब कृपानिधाना
राम कहा तनु राखहु ताता ❋ मुख मुसुकाइ कही तेइँ बाता
जाकर नाम मरत मुख आवा ❋ अधमौ मुक्त होइँ श्रुति गावा
सो मम लोचनगोचर आगे ❋ राखौं देह नाथ केहि लागे
जल भरि नयन कहा रघुराई ❋ तात कर्म निजते गति पाई
परहित बस जिनके मनमाहीं ❋ तिनकहँ जग दुर्लभ कछुनाहीं
तनु तजि तात जाहु ममधामा ❋ देउँ कहा तुम पूरणकामा

दो० सीताहरण तात जनि, कहेउ पिता सन जाइ।
जो मैं राम तौ कुलसहित, कहिहि दशानन आइ॥

गृध्रदेह तजि धरि हरिरूपा ❋ भूषण बहु पट पीत अनूपा
श्याम गात विशाल भुज चारी ❋ अस्तुति करत नयन भरि वारी

छं० जय रामरूप अनूप निर्गुण सगुण गुणप्रेरक सही।
दशशीश बाहु प्रचण्डखण्डन चण्ड शर मण्डन मही॥
पाथोदगात सरोजमुख राजीव आयतलोचनं।
नित नौमि राम कृपालु बाहुविशाल भवभयमोचनं॥
बलमप्रमेयमनादिमजमव्यक्तमेकमगोचरं। ❋ ।
गोविन्द गोपरद्वन्द हर, विज्ञान घन धरणीधरं॥

१ जटायु २ नाश ३ वेद ४ अलभ्य ५ वैकुण्ठ ६ मेघ ७ लम्बी ८ संसार॥

जे राममंत्र जपन्त सन्त अनन्त जनमनरञ्जनं ।
नित नौमि राम अकामप्रिय कामादिखलदलगञ्जनं ॥
जेहि श्रुति निरंतर ब्रह्म व्यापक विरज अज कहि गावहीं ।
करि ज्ञान ध्यान विराग योग अनेकमुनि जेहि पावहीं ॥
सो प्रकट करुणाकन्द शोभावृन्द अग जग मोहई ।
मम हृदयपङ्कज भृङ्ग अङ्ग अनङ्ग बहु छवि सोहई ॥
जो अगम सुगम स्वभाव निर्मल असम सम शीतल सदा ।
पश्यन्ति यं योगी यतन करि करत मन गोवश सदा ॥
सो राम रमानिवास सन्तत दासवश त्रिभुवन धनी ।
मम उर बसहु सो शमनसंसृति जासु कीरति पावनी ॥
दो० अविरल भक्ति मांगि बर, गृध्र गयउ हरिधाम ।
तेहिकी क्रिया यथोचित, निजकर कीन्हीं राम ॥
कोमलचित अति दीनदयाला ❀ कारण बिनु रघुनाथ कृपाला
गृध्र अधम खग आमिषभोगी ❀ गतितेहिदीन्हि जो याचतयोगी
सुनहु उमा ते लोग अभागी ❀ हरि तजि होहिं विषयअनुरागी
पुनि सीतहिं खोजत दोउ भाई ❀ चले विलोकत वन बहुताई
संकुल लता विटप घन कानन ❀ बहु खग मृग तहँ गज पञ्चानन
आवत पन्थ कबन्ध निपाता ❀ तेइ सब कही शापकी बाता
दुर्वासा मोहिं दीन्हों शापा ❀ प्रभुपद देखि मिटा सो पापा
सुनु गन्धर्व कहौं मैं तोही ❀ मोहिं न सुहाइ ब्रह्मकुल द्रोही
दो० मन क्रम वचन कपट तजि, जो कर भूसुर सेव ।
मोहिंसमेत विरञ्चि शिव, वश ताके सब देव ॥
शापत ताड़त परुष कहन्ता ❀ विप्र पूज्य अस गावहिं सन्ता
पूजिय विप्र शील गुण हीना ❀ नहिन शूद्र गुण ज्ञान प्रवीना

१ निर्मल २ कमल ३ कामदेव ४ देखते हैं ५ नीच ६ मांस ७ पूर्ण ८ सिंह ॥

कहि निजधर्म्म ताहि समुझावा ❁ निजपद प्रीति देखि मन भावा
रघुपति चरणकमल शिरनाई ❁ गयउ गगन आपनि गति पाई
ताहि देइ गति रामउदारा ❁ शवरी के आश्रम पगु धारा
शवरी दीख राम गृह आये ❁ मुनिके वचन समुझि जियभाये
सरसिजै लोचन बाहु विशाला ❁ जटा मुकुट शिर उर वनमाला
श्याम गौर सुन्दर दोउ भाई ❁ शवरी परी चरण लपटाई
प्रेममगन मुख वचन न आवा ❁ पुनिपुनि पदसरोजैं शिरनावा
सादर जल लै चरण पखारे ❁ पुनि सुन्दर आसन बैठारे

दो० कन्दमूल फल सरस अति, दिये रामकहँ आनि।
प्रेम सहित प्रभु खायउ, बारहिंबार बखानि॥

पाणि जोरि आगे भइ ठाढ़ी ❁ प्रभुहिंविलोकिप्रीतिअतिबाढ़ी
केहि विधि अस्तुतिकरौंतुम्हारी ❁ अधम जाति मैं जड़मति भारी
अधमते अधम अधम अतिनारी ❁ तिन महँ मैं अतिमन्द अघारी
कह रघुपति सुनु भामिनि वाता ❁ मानौं एक भक्ति कर नाता
जाति पांति कुल धर्म बड़ाई ❁ धन बल परिजन गुण चतुराई
भक्तिहीन नर सोहै कैसे ❁ बिनु जल वाँरिद देखिय जैसे
नवधा भक्ति कहौं तोहि पाहीं ❁ सावधान सुनु धरु मनमाहीं
प्रथम भक्ति सन्तन कर संगा ❁ दूसरि रत मम कथा प्रसंगा

दो० गुरु पदपंकज सेवा, तीसरि भक्ति अमान।
चौथिभक्तिममगुणगण, करै कपट तजि गान॥

मंत्र जाप मम दृढ़ विश्वासा ❁ पंचम भजन सो वेद प्रकासा
षट दम शील विरत बहु कर्म्मा ❁ निरत निरन्तर सज्जन धर्म्मा
सतईं सब मोहिं मय जग देखै ❁ मोते सन्त अधिक करि लेखै
अठईं यथालाभ सन्तोषा ❁ सपनेहुँ नहिं देखै परदोषा
नवम सरल सब सों छल हीना ❁ मम भरोस हिय हर्ष न दीना

१ अपना २ आकाश ३ कमल ४ चरणकमल ५ रसीला ६ स्त्री ७ मेघ ८ सीधा॥

नवमहँ एकौ जिनके होई ❀ नारि पुरुष सचराचर कोई
सो अतिशय प्रिय भामिनि मोरे ❀ सकल प्रकार भक्ति दृढ़ तोरे
योगिवृन्द[1] दुर्लभ गति जोई ❀ तो कहँ आजु सुलभ भइ सोई
मम दर्शन फल परम अनूपा ❀ जीव पाव निज सहज[2] स्वरूपा

दो० सब प्रकार तव भाग्य बड़, ममचरणन अनुराग।
तवमहिमाजेहि उरबसिहि, तासु परम बड़भागु॥

सुनि शुभ वचन हर्ष कहँ पाई ❀ पुनि बोले प्रभु गिरा सुहाई
जनकसुता[3] के सुधि है भामिनि ❀ जानिहु तौ कहु करिवरगामिनि[4]
पम्पासरहिं जाहु रघुराई ❀ मुनिवर विपुल[5] रहे जहँ छाई
ऋषि मतंग महिमा गुण भारी ❀ जीव चराचर रहत सुखारी
वैर न कर काहू सन कोई ❀ जासन वैर प्रीति करु सोई
शिखर सुहावन कानन[6] फूले ❀ खग मृग जीव जन्तु अनुकूले
करहु सफल श्रम सबकर जाई ❀ तहां होइ सुग्रीव मिताई
सो सबकहिहि देव रघुवीरा ❀ जानतहौ पूंछहु मतिधीरा
बारबार प्रभु पद शिरनाई ❀ प्रेमसहित सब कथा सुनाई

छं० कहिकथासकलविलोकिहरिमुखहृदयपदपंकजधरे।
तजि योगपावक[7] देह हरिपद लीन भइ जहँ नहिं फिरे॥
नर विविध कर्म अधर्म बहुमत शोकप्रद सब त्यागहू।
विश्वास करि कह दास तुलसी रामपद अनुरागहू॥

दो० जातिहीन अघजन्ममय, मुक्त कीन्ह अस नारि।
महामन्दमन सुखचहसि, ऐसे प्रभुहिं बिसारि॥

चले राम त्यागा वन सोऊ ❀ अतुलित बल नर केहरि[8] दोऊ
विरही इव प्रभु करत विषादा ❀ कहत कथा अनेक संवादा
लक्ष्मण देखहु कानन शोभा ❀ देखत केहिकर मन नहिं क्षोभा

१ समूह २ सहज ३ जानकी ४ गजगामिनी ५ बहुत ६ वन ७ योगाग्नि ८ सिंह॥

नारिसहित सब खग मृग वृन्दा ❀ मानहुँ मोरि करतहहिं निन्दा
हमहिं देखि मृग निकर पराहीं ❀ मृगी कहहिं तुम कहँ भय नाहीं
तुम आनन्द करहु मृग जाये ❀ कंचन मृग खोजन ये आये
संग लाइ करिणी करि लेहीं ❀ मानहुँ मोहिं सिखावन देहीं
शास्त्रसुचिंतित पुनि पुनि देखिय ❀ भूपसुसेवित वश नहिं लेखिय
राखिय नारि यदपि उर माहीं ❀ युवती शास्त्र नृपति वश नाहीं
देखहु तात वसन्त सुहावा ❀ प्रियाहीन मोहिं भय उपजावा

दो० विरहविकलबलहीन मोहिं, जानेसिनिपटअकेल ।
सहितविपिनमधुकरखगन, मदन कीन्ह बगमेल ॥
देखि गयो भ्राता सहित, तासु दूत सुनि बात ।
डेरे कीन्हेउ मनहुँ तिन, कटकैनभटकहिजात॥

विटप विशाल लता अरुझानी ❀ विविध वितान दिये जनु तानी
कदलि ताल वर ध्वजा पताका ❀ देखि न मोह धीर मन जाका
विविध भांति फूले तरु नाना ❀ जनु बानैत बने बहु बाना
कहुँ कहुँ सुन्दर विटप सुहाये ❀ जनु भट बिलग बिलग ह्वै छाये
कूजत पिक मानहुँ गज माते ❀ ढेके महोख ऊंट वेषराते
मोर चकोर कीर वर वाजी ❀ पारावत मराल सब ताजी
तीतर लावा पदचर यूथा ❀ वरणि न जाइ मनोज वरूथा
रथ गिरि शिला दुन्दुभी झरना ❀ चातक वन्दी गुणगण वरना
मधुकर मुखर भेरि सहनाई ❀ त्रिविधि बयारि बसीठी आई
चतुरंगिनी सेन सब लीन्हे ❀ विचरत सबहिं चुनौती दीन्हे
लक्ष्मण देखहु काम अनीका ❀ रहहिं धीर तिनके जगलीका
यहिके एक परम बल नारी ❀ तेहिते उबर सुभट सोइ भारी

दो० ताततीनिअतिप्रबलखल, काम क्रोध अरु लोभ ।
मुनि विज्ञान धाम मन, करहिंनिमिषमहँक्षोभ॥

१ पक्षी २ हथिनी ३ फौज ४ वृक्ष ५ केला ६ तोता ७ कबूतर ८ कामदेव ९ शब्द ॥

लोभ के इच्छा दम्भबल, कामके केवल नारि।
क्रोध के परुष वचन बल, मुनिवर कहहिं विचारि॥

गुणातीत सचराचर स्वामी ❀ राम उमा सब अन्तरयामी
कामिन कै दीनता देखाई ❀ धीरनके मन विरति दृढाई
क्रोध मनोज लोभ मद माया ❀ छूटहिं सकल राम की दाया
सो नर इन्द्रजाल नहिं भूला ❀ जापर होइ सो नट अनुकूला
उमा कहौं मैं अनुभव अपना ❀ सति हरिभजनजगतसबसपना
पुनि प्रभु गये सरोवर तीरा ❀ पम्पा नाम सुभग गम्भीरा
सन्तहृदय जस निर्मल वारी ❀ बांधे घाट मनोहर चारी
जहँतहँ पियहिंविविधिमृगनीरा ❀ जनु उदार गृह याचकभीरा

दो॰ पुरइनि सघन ओटजल, वेगि न पाइय मर्म।
मायाछन्न न देखिये, जैसे निर्गुण ब्रह्म॥
सुखी मीन सब एकरस, अतिअगाध जलमाहिं।
यथा धर्म्म शीलान्हके, दिन सुखसंयुत जाहिं॥

विकसे सरसिज[1] नाना रङ्गा ❀ मधुर मुखर गुंजत बहुभृङ्गा[2]
बोलत जलकुक्कुट[3] कलहंसा ❀ प्रभु विलोकि जनु करत प्रशंसा
चक्रवाक बक खग समुदाई ❀ देखत बनै वरणि नहिं जाई
सुन्दर खगगण गिरा सुहाई ❀ जात पथिक जनु लेत बुलाई
ताल समीप मुनिन गृह छाये ❀ चहुँदिशि कानन[4] विटप सुहाये
चम्पक बकुल कदम्ब तमाला ❀ पाटल पनस[5] पलाश रसाला[6]
नवपल्लव कुसुमित तरु नाना ❀ चञ्चरीक पटली कर गाना
शीतल मन्द सुगन्ध सुभाऊ ❀ सन्तत बहै मनोहर बाऊ
कुहू कुहू कोकिल ध्वनि करहीं ❀ सुनि रव[7] सरस ध्यान मुनि टरहीं

दो॰ फलभारन नव विटप[8] सब, रहे भूमि नियराइ।
पर उपकारी पुरुष जिमि, नवहिं सुसम्पति पाइ॥

१ कमल २ भ्रमर ३ जलमुर्गा ४ वन ५ कटहल ६ आम ७ शब्द ८ वृक्ष॥

देखि राम अतिरुचिर तलावा ❀ मज्जन कीन्ह परम सुख पावा
देखी सुन्दर तरुवर छाया ❀ बैठे अनुज सहित रघुराया
तहँ पुनि सकल देव मुनि आये ❀ अस्तुति करि निजधाम सिधाये
बैठे परम प्रसन्न कृपाला ❀ कहत अनुजसन कथा रसाला
विरहवन्त भगवन्तहिं देखी ❀ नारदमन भा शोच विशेखी
मोर शाप करि अङ्गीकारा ❀ सहत राम नाना दुखभारा
ऐसे प्रभुहिं विलोकौं जाई ❀ पुनि न बनिहि असअवसरआई
यह विचारि नारद कर बीना ❀ गये जहां प्रभु सुख आसीना
गावत रामचरित मृदुबानी ❀ प्रेमसहित बहुभांति बखानी
करत दण्डवत लिये उठाई ❀ राखे बड़ी बार उरलाई
स्वागत पूंछि निकट बैठारे ❀ लक्ष्मण सादर चरण पखारे

दो० नाना विधि विनती करी, प्रभु प्रसन्न जिय जानि।
नारद बोले वचन तब, जोरि सरोरुह पानि॥

सुनहु उदार परम रघुनायक ❀ सुन्दर अगम सुगम वरदायक
देहु एक वर मांगों स्वामी ❀ यद्यपि जानहु अन्तरयामी
जानहु मुनि तुम मोर स्वभाऊ ❀ जनसन कबहुँ कि करौं दुराऊ
कवनवस्तु अस प्रियमोहिंलागी ❀ जो मुनिवर न सकहु तुम मांगी
जनकहँ कछु अदेय नहिं मोरे ❀ अस विश्वास तजहु जनि भोरे
तब नारद बोले हर्षाई ❀ अस वर मांगों करौं ढिठाई
यद्यपि प्रभु के नाम अनेका ❀ श्रुति कह अधिक एकते एका
राम सकल नामन ते अधिका ❀ होहु नाथ अघखगगणबधिका

दो० राकारजनी भक्ति तव, रामनाम सोइ सोम।
अपरनामउडुगण विमल, वसहु भक्त उरव्योम॥
एवमस्तु मुनिसन कहेउ, कृपासिन्धु रघुनाथ।
तब नारद मन हर्ष अति, प्रभुपद नायउ माथ॥

१ कुशल क्षेम २ पाप ३ पक्षी ४ बहेलिया ५ रात्रि ६ चन्द्रमा ७ तारे ८ आकाश॥

अतिप्रसन्न रघुनाथहिं जानी ❀ पुनि नारद बोले मृदुबानी
राम जबहिं प्रेरेहु निज माया ❀ मोहेहु मोहिं सुनहु रघुराया
तब विवाह चाहौं मैं कीन्हा ❀ प्रभु केहि कारण करै न दीन्हा
सुनु मुनि तोहिं कहौं सहरोसा ❀ भजहिंजेमोहिंतजिसकलभरोसा
करौं सदा तिनकी रखवारी ❀ जिमि बालक पालै महतारी
गहि शिशु बच्छ अनलं अहिधाई ❀ तहँ राखै जननी अरगाई
प्रौढ़ भये तेहि सुतपर माता ❀ प्रीति करै नहिं पाछिलि बाता
मोरे प्रौढ़ तनय सम ज्ञानी ❀ बालकसुतसम दास अमानी
जिनहिं मोर बल निजबल ताहीं ❀ दुहुँ कहँ काम क्रोध रिपु आहीं
यहविचारि पण्डितमोहिंभजहीं ❀ पायहु ज्ञान भक्ति नहिं तजहीं

दो० काम क्रोध लोभादि मद, प्रबल मोहकी धारि।
तिनमहँ अतिदारुणदुखद, मायारूपी नारि॥

सुनु मुनि कह पुराण श्रुति सन्ता ❀ मोहविपिनकहँ नारि वसन्ता
जप तप नेम जलाशय भारी ❀ है ग्रीषम शोषै सब वारी
काम क्रोध मद मत्सर भेका ❀ इनहिं हर्षप्रद वर्षा एका
दुर्वासना कुमुद समुदाई ❀ तिनकहँ शरद सदासुखदाई
धर्म सकल सरसीरुह वृन्दा ❀ है हिम तिन्हैं देत दुख मन्दा
पुनि ममता जवास बहुताई ❀ पलुहै नारि शिशिर ऋतु पाई
पाप उलूक निकर सुखकारी ❀ नारि निबिड़ रजनी अँधियारी
बुधिबल शील सत्य सब मीनो ❀ बंसी सम त्रिय कहहिं प्रवीना

दो० अवगुणमूल शूलप्रद, प्रमदा सब दुखखानि।
ताते कीन्ह निवारण, मुनि मैं यह जियजानि॥

सुनि रघुपति के वचन सुहाये ❀ मुनितनु पुलक नयनभरिआये
कहहु कवन प्रभु कै अस रीती ❀ सेवकपर ममता अतिप्रीती
जे न भजहिं अस प्रभु भ्रम त्यागी ❀ ज्ञानरंक नर मन्द अभागी
पुनि सादर बोले मुनि नारद ❀ सुनहु राम विज्ञान विशारद

१ अग्नि २ कमल ३ रात्रि ४ मछली ५ स्त्री ६ कङ्गाल ७ आदरसमेत ८ चतुर॥

सन्तन के लक्षण रघुवीरा ❁ कहहु राम भञ्जन भवभीरा
सुनु मुनि सन्तन के गुण कहऊं ❁ जेहि ते मैं उनके वश रहऊं
षटविकारजित अनघ अकामा ❁ अचलअकिंचनशुचि सुखधामा
अमित बोध अनीह मित भोगी ❁ सत्यसार कवि कोविद योगी
सावधान मद मान विहीना ❁ धीर धर्म्मगति परम प्रवीना

दो० गुणागार संसार दुख, रहित विगत सन्देह।
तजिममचरणसरोजप्रिय, तिनकहँ देह न गेह ॥

निजगुण श्रवण सुनत सकुचाहीं ❁ परगुण सुनत अधिक हर्षाहीं
समशीतल नहिं त्यागहिं नीती ❁ सरल स्वभाव सबहिंसन प्रीती
जप तप व्रत दम संयम नेमा ❁ गुरु गोविन्द विप्र पद प्रेमा
श्रद्धा क्षमा मइत्री दाया ❁ मुदिता ममपद प्रीति अमाया
विरति विवेक विनय विज्ञाना ❁ बोध यथारथ वेद पुराना
दम्भ मान मद करहिं न काऊ ❁ भूलि न देहिं कुमारग पाऊ
गावहिं सुनहिं सदा मम लीला ❁ हेतुरहित परहितरत शीला
सुनु मुनि साधुन के गुण जेते ❁ कहि न सकहिं शारँद श्रुति तेते

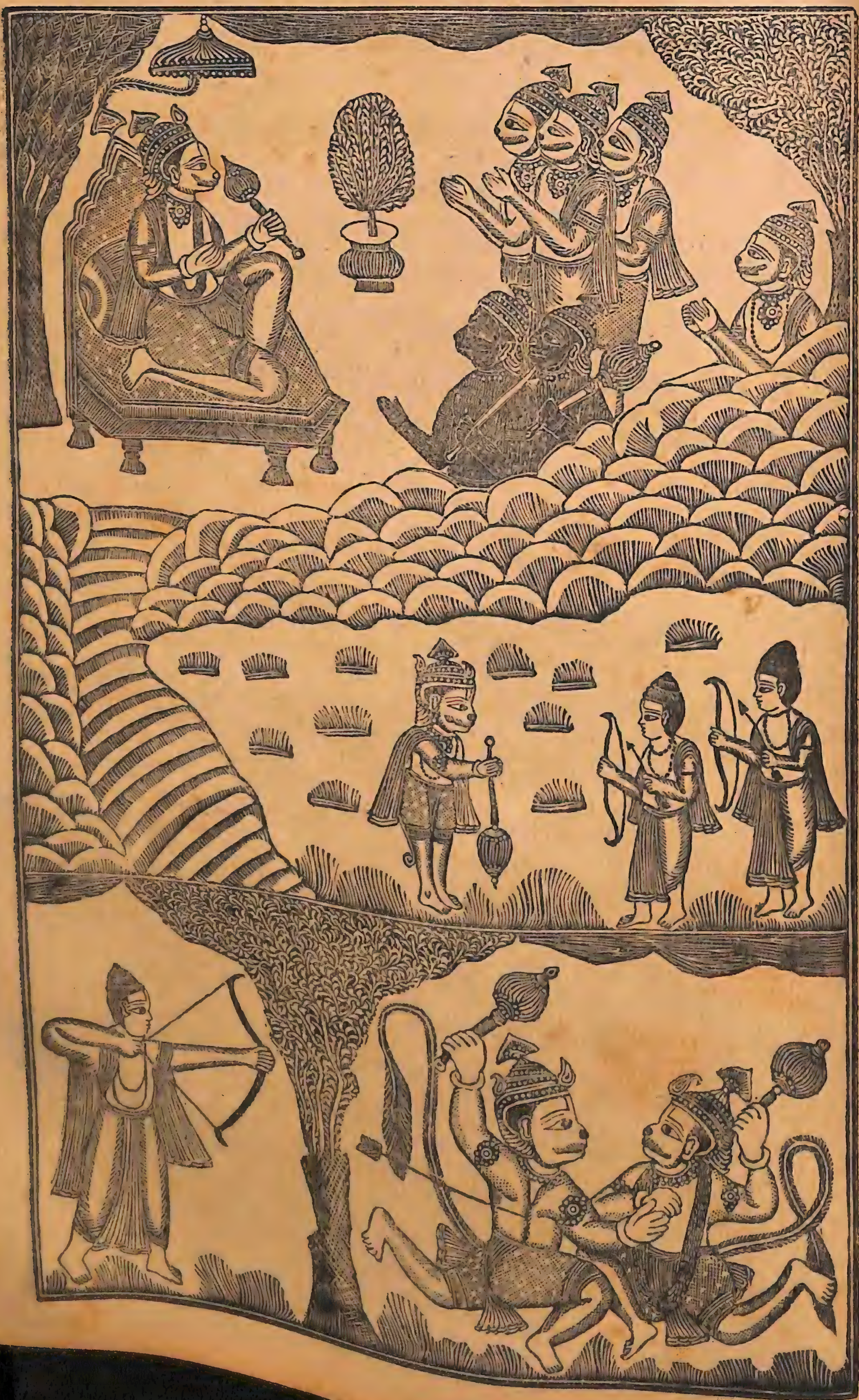
छं० कहि सक न शारद शेष नारद सुनत पदपंकज गहे।
अस दीनबन्धु कृपालु अपने भक्तगुण निजमुख कहे ॥
शिर नाय बारहिंबार चरणन ब्रह्मपुर नारद गये।
ते धन्य तुलसीदास आस विहाय जे हरिरँगरये ॥

दो० रावणारि यश पावन, गावहिं सुनहिं जे लोग।
रामभक्ति दृढ़ पावहीं, बिनुविराग जप योग ॥
दीपशिखासम युवतिरस, मन जनि होसि पतंग।
भजहिंराम तजिकाममद, करहिं सदा सतसंग ॥

इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेआरण्यकाण्डे विमलवैराग्यसम्पादनोनामतृतीयस्सोपानः ॥ ३ ॥

१ निष्पाप २ दरिद्री ३ तृष्णारहित ४ पण्डित ५ चतुर ६ गुणोंकाघर ७ सरस्वती ॥

रा० कि० चि० नं० ७





श्रीगोस्वामि

तुलसीदासकृत रामायण

किष्किन्धाकाण्ड

मङ्गलाचरणम् ॥

श्लोक ॥ कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ शोभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ । मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्मवन्तौ हितौ सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः ॥ १ ॥

ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा । संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् ॥ २ ॥

सो० मुक्तिजन्म महि जानि, ज्ञानखानि अघहानिकर ।
जहँ बस शम्भु भवानि, सो काशी सेइय कस न ॥
जरत सकल सुरवृन्द, विषमगरलजेहिपानकिय।
तेहिनभजसिमतिमन्द, को कृपालु शङ्कर सरिस ॥

आगे चले बहुरि रघुराई ❀ ऋष्यमूक पर्वत नियराई
तहँ रह सचिवसहित सुग्रीवा ❀ आवत देखि अतुलबल सीवा
अतिसभीत कह सुनु हनुमाना ❀ पुरुष युगल बल रूप निधाना
धरि बटुरूप देखु तैं जाई ❀ कहेसु मोहिं जिय सैन बुझाई
पठवा बालि होइ मनमैला ❀ भागौं तुरत तजौं यह शैला
विप्ररूप धरि कपि तहँ गयऊ ❀ माथ नाय पूंछत अस भयऊ
को तुम श्यामल गौर शरीरा ❀ क्षत्रिय रूप फिरहु वन वीरा
कठिन भूमि कोमलपदगामी ❀ कवनहेतु वन विचरहुं स्वामी
मृदुल मनोहर सुन्दर गाता ❀ सहत दुसह वन आतप वाता
की तुम तीनि देवमहँ कोऊ ❀ नर नारायण की तुम दोऊ

दो० जगकारण तारणभवहिं, भंजन धरणीभार ।
की तुम अखिलभुवनपति, लीन्ह मनुज अवतार ॥

सुनि बोले रघुवंशकुमारा ❀ विधिकर लिखा को मेटनहारा
कोशलेश दशरथ के जाये ❀ हम पितुवचन मानि वनआये
नाम राम लक्ष्मण दोउ भाई ❀ संग नारि सुकुमारि सुहाई
इहां हरी निशिचर वैदेही ❀ खोजत विप्र फिरहिं हम तेही
आपन चरित कहा हम गाई ❀ कहहु विप्र निजकथा बुझाई
प्रभु पहिंचानि परे गहि चरणा ❀ सो सुख उमा जाइ नहिं वरणा
पुलकिततनु मुखआव न वचना ❀ देखत रुचिर वेष की रचना
पुनि धीरजधरि अस्तुतिकीन्हा ❀ हरषि हृदय निजनाथहिं चीन्हा
मोर न्याव मैं पूंछौं साईं ❀ तुम कस पूंछहु नरकी नाईं

१ तुल्य २ घूमना ३ कोमल ४ घाम ५ नाशन ६ संपूर्ण ७ पार्वती ८ तरह ॥

तव मायावश फिरौं भुलाना ❀ ताते मैं नहिं प्रभु पहिंचाना

दो० एक मन्द मैं मोहवश, कुटिल हृदय अज्ञान।
पुनि प्रभु मोहिं बिसारेहु, दीनबन्धु भगवान॥

यदपि नाथ अवगुण बहु मोरे ❀ सेवक प्रभुहि परै जनु भोरे
नाथ जीव तव माया मोहू ❀ सो निस्तरै तुम्हारे छोहू
तापर मैं रघुवीर दुहाई ❀ जानौं नहिं कछु भजन उपाई
सेवक सुत पितु मातु भरोसे ❀ रहैं अशोच बनै प्रभु पोसे
अस कहि चरणपरे अकुलाई ❀ निजतनु प्रकट प्रीति उरछाई
तब रघुपति उठाइ उरलावा ❀ निज लोचनजल सींचिजुड़ावा
सुनुकपि जिय जनि मानसिऊना ❀ तैं मम प्रिय लक्ष्मण ते दूना
समदर्शी मोहिं कह सब कोई ❀ सेवक प्रिय अनन्यगति सोई

दो० सो अनन्य अस जाहिकै, मति न टरै हनुमन्त।
मैं सेवक सचराचर, रूपराशि भगवन्त॥

देखि पवनसुत पति अनुकूला ❀ हृदय हर्ष बीते सब शूला
नाथ शैल पर कपिपति रहई ❀ सो सुग्रीव दास तव अहई
तासन नाथ मइत्री कीजै ❀ दीनजानि तेहि अभय करीजै
सो सीताकर खोज कराइहि ❀ जहँतहँ मरकट कोटि पठाइहि
यहिविधि सकल कथा समुझाई ❀ लिये दोउ जन पीठि चढ़ाई
तब सुग्रीव रामकहँ देखा ❀ अतिशय धन्यजन्म करिलेखा
सादर मिल्यो नाइ पदमाथा ❀ भेंटे अनुज सहित रघुनाथा
कपि के मन विचार यह नीती ❀ करिहहिं विधि मोसन ये प्रीती

दो० तबहनुमन्त उभयँदिशि, कहि सब कथा बुझाइ।
पावक साखी देइकरि, जोरी प्रीति दृढ़ाइ॥

कीन्हप्रीति कछु बीच न राखा ❀ लक्ष्मण रामचरित सब भाखा
कह सुग्रीव नयन भरि वारी ❀ मिलिहि नाथ मिथिलेशकुमारी

१ कृपा २ अपने ३ हनुमान् ४ दुःख ५ पर्वत ६ बंदर ७ दोनों ८ अग्नि ९ जल॥

मंत्रिन सहित इहां इकबारा ❀ बैठरहउँ कछु करत विचारा
गगनपन्थ देखी मैं जाता ❀ परवशपरी बहुत बिलखाता
राम राम हा राम पुकारी ❀ ममदिशि देखि दीन्ह पटडारी
मांगा राम तुरत सो दीन्हा ❀ पट उरलाइ शोच अति कीन्हा
कह सुग्रीव सुनहु रघुवीरा ❀ तजहु शोक मनआनहुधीरा
सब प्रकार करिहौं सेवकाई ❀ जेहिविधि मिलहिं जानकी माई

दो० सखावचन सुनि हरषे, रघुपति करुणासींव।
कारण कवन बसहु वन, मोसन कहु सुग्रीव॥

नाथ बालि अरु मैं दोउ भाई ❀ प्रीतिरही कछु वरणि न जाई
मयसुत मायावी तेहि नाऊं ❀ आवा सो प्रभु हमरे गाऊं
अर्द्धरात्रि पुरद्वार पुकारा ❀ बालिहु रिपुबल सहै न पारा
धावा बालि देखि सो भागा ❀ मैं पुनि गयउँ बन्धुसँग लागा
गिरिवरगुहा पैठि सो जाई ❀ बालि मोहिं तब कहा बुझाई
परखेउ मोहिं एक पखवारा ❀ नहिं आवौं तौ जानेहु मारा
मास दिवस तहँ रहेउँ खरारी ❀ निसरी रुधिरधार तहँ भारी
तब मैं निजमन कीन्ह विचारा ❀ जाना असुर बन्धुकहँ मारा
बालि हतेसि मोहिं मारिहि आई ❀ शिला द्वार दै चलेउँ पराई
मंत्रिन पुर देखा बिनुसाई ❀ दीन्हेउ राज्य मोहिं बरिआई
बाली ताहि मारि गृह आवा ❀ देखि मोहिं जिय भेद बढ़ावा
रिपु समान मोहिं मारेसि भारी ❀ हरिलीन्हेसि सर्बस अरु नारी
ताके भय रघुवीर कृपाला ❀ सकल भुवन मैं फिरेउँ बिहाला
इहां शापवश आवत नाहीं ❀ तदपि सभीत रहौं मनमाहीं
सुनि सेवकदुख दीनदयाला ❀ फरकि उठे दोउभुजा विशाला

दो० सुनु सुग्रीव मैं मारिहौं, बालिहि एकहि बाण।
ब्रह्म रुद्र शरणागतहु, गये न उबरहिं प्राण॥

१ आकाश २ हद ३ कंदरा ४ रामचन्द्र ५ खून ६ पत्थर ७ विकल ८ डराहुआ॥

जे न मित्रदुख होहिं दुखारी ❀ तिन्हैं विलोकत पातकभारी
निजदुखगिरिसमरजकरिजाना ❀ मित्रके दुख रज, मेरु समाना
जिनके असमति सहज न आई ❀ ते शठ हठ कत करत मिताई
कुपथ[1] निवारि सुपन्थ चलावा ❀ गुणप्रकटहिं अवगुणहिं दुरावा
देत लेत मन शंक न धरहीं ❀ बल अनुमान सदा हितकरहीं
विपतिकाल कर शतगुण नेहा ❀ श्रुतिकह सत्यमित्र गुणएहा
आगे कह मृदुवचन बनाई ❀ पाछे अनहित मन कुटिलाई
जाकरचित अहिगति समभाई[2] ❀ अस कुमित्र परिहरे[3] भलाई

दो॰ मित्र मित्रसों प्रीतिकरि, हृदय आन मुख आन।
जाके मन वच प्रेम नहिं, दुरे दुराये जान॥

सेवकशठ नृपकृपण कुनारी ❀ कपटीमित्र शूल सम चारी
सखा शोच त्यागहु बल मोरे ❀ सबविधि करब काज मैं तोरे
कह सुग्रीव सुनहु रघुवीरा ❀ बालि महाबल अति रणधीरा
दुन्दुभि अस्थिताल दिखराये ❀ बिनुप्रयास रघुनाथ ढहाये
देखि अमितबल बाढ़ी प्रीती ❀ बालिबधनकी भइ परतीती
बारहिंबार नाइ पदशीशा ❀ प्रभुहिं जानि मनहर्ष कपीशा
उपजा ज्ञान वचन तब बोला ❀ नाथकृपा मन भयउ अडोला
सुख सम्पति परिवार बड़ाई ❀ सब परिहरि करिहौं सेवकाई
ये सब रामभक्ति के बाधक ❀ कहहिं सन्त तवपद अवराधक[5]
शत्रु मित्र दुख सुख जगमाहीं ❀ मायाकृत परमारथ नाहीं
बालि परमहित जासु प्रसादा ❀ मिलेहु राम तुम शमन[6] विषादा[7]
सपने जेहिसन होइ लराई ❀ जागे समुझत मन सकुचाई
अब प्रभु कृपाकरहु यहिभांती ❀ सब तजि भजनकरौं दिनराती
सुनि विरागसंयुत कपिवाणी ❀ बोले विहँसि राम धनुपाणी
जो कछु कहेउ सत्य सब सोई ❀ सखा वचन मम मृषा[8] न होई

१ कुमार्ग २ सर्प ३ छोड़े ४ छोड़के ५ ध्यानी ६ नाशक ७ दुःख ८ झूठ॥

नट मरकट इव सबहिं नचावत ❀ राम खगेश वेद अस गावत
लै सुग्रीव संग रघुनाथा ❀ चले चाप शायक गहिहाथा
तब रघुपति सुग्रीव पठावा ❀ गर्जेसि जाइ निकट बलपावा
सुनत बालि क्रोधातुर धावा ❀ गहिकर चरण नारि समुझावा
सुनु पति जिनहिं मिला सुग्रीवा ❀ ते दोउ बन्धु तेज बलसींवा
कोशलेशसुत लक्ष्मण रामा ❀ कालहु जीतिसकहिं संग्रामा
सोइ रघुवीर हृदयमहँ आनहु ❀ छांड़हु मोह कहा मम मानहु

दो० कहा बालि सुनु भीरुप्रिय, समदरशी रघुनाथ।
जो कदापि मोहिं मारिहैं, तौ पुनि होब सनाथ॥

अस कहि चला महाअभिमानी ❀ तृणसमान सुग्रीवहिं जानी
बालि देखि सुग्रीवहिं ठाढ़ा ❀ हृदयक्रोध पुनि बहुविधि बाढ़ा
भिरेउ युगल बाली अति तर्जा ❀ मुष्टिकमारि महाध्वनि गर्जा
तब सुग्रीव विकल ह्वै भागा ❀ मुष्टिप्रहार वज्रसम लागा
मैं जो कहा रघुवीर कृपाला ❀ बन्धु न होइ मोर यह काला
एक रूप तुम भ्राता दोऊ ❀ तेहि भ्रमते नहिं मारेउँ सोऊ
कर परसा सुग्रीवशरीरा ❀ तनुभा कुलिश गई सब पीरा
मेली कण्ठ सुमनकी माला ❀ पठवा पुनि बलदेइ विशाला
पुनि नानाविधि भई लराई ❀ विटपओट देखहिं रघुराई

दो० बहु छल बल सुग्रीवकरि, हृदयहारि भय मानि।
माराबालिहिं राम तब, हिये मांझ शर तानि॥

परा विकल महि शरके लागे ❀ पुनि उठिबैठ देखि प्रभु आगे
श्यामगात शिरजटा बनाये ❀ अरुणनयन शर चाप चढ़ाये
पुनि पुनि चितै चरण चित दीन्हे ❀ सफलजन्म माना प्रभुचीन्हे
हृदय प्रीति मुख वचनकठोरा ❀ बोला चितै रामकी ओरा
धर्महेतु अवतरेहु गोसाईं ❀ मारेहु मोहिं व्याधकी नाईं

१ गरुड़ २ धनुष ३ डरिहुई ४ रिस ५ वज्र ६ फूल ७ वृक्ष ८ बाण ९ लाल॥

मैं वैरी सुग्रीव पियारा ❀ कारण कवन नाथ मोहिं मारा
अनुजबधू भगिनी सुतनारी ❀ सुनु शठ ये कन्यासम चारी
इन्हें कुदृष्टि विलोके जोई ❀ ताहि बधे कछु पाप न होई
मूढ़ तोहिं अतिशय अभिमाना ❀ नारिसिखावन करेसि न काना
ममभुजबलआश्रित तेहिजानी ❀ मारा चहसि अधम अभिमानी
दो० सुनहु राम स्वामी सुभग, चलन चातुरी मोरि ।
प्रभु अजहूं मैं पातकी, अन्तकाल गति तोरि ॥
सुनत राम अति कोमलवाणी ❀ बालिशीश परसा निजपाणी
अचल करौं तनु राखहु प्राना ❀ बालि कहा सुनु कृपानिधाना
जन्म जन्म मुनि यतन कराहीं ❀ अन्त राम कहि आवत नाहीं
जासु नाम बल शङ्कर काशी ❀ देत सबहि समगति अविनाशी
ममलोचन गोचर सोइ आवा ❀ बहुरिकि अस प्रभु बनहिबनावा
छं० सोनयनगोचरजासुगुणनित नेतिकहि श्रुतिगावहीं।
जितिपवनमनगोनिरसकरि मुनिध्यानकबहुँकपावहीं ॥
मोहिंजानिअतिअभिमानवश प्रभुकहेउराखुशरीरहीं ।
अस कवन शठ हठ काटि सुरतरु बारि करहि बबूरहीं ॥
अब नाथ करि करुणा विलोकहु देहु जो वर मांगऊं ।
जेहि योनि जन्मौं कर्मवश तहँ रामपद अनुरागऊं ॥
यह तनय मम सम विनयबल कल्याणप्रद प्रभुलीजिये ।
गहिबांह सुरनरनाह अंगद दास आपन कीजिये ॥
दो० रामचरण दृढ़ प्रीतिकरि, बालि कीन्ह तनु त्याग ।
सुमनमाल जिमि कण्ठते, गिरत न जानै नाग ॥
राम बालि निजधाम पठावा ❀ नगर लोग सब व्याकुल धावा
नाना विधि विलापकर तारा ❀ छूटे केश न देह सँभारा

१ बहिन २ पतोहू ३ घमण्ड ४ नीच ५ जुआ ६ सन्मुख ७ वेद ८ हाथी ॥

पुनि पुनि तासु शीश उर धरई ❋ वदन विलोकि हृदयमहँ हतई
मैं पति तुमहिं बहुत समुझावा ❋ कालविवश पिय मनहिं न आवा
अंगद कहँ कछु कहन न पायहु ❋ बीचहि सुरपुर प्राण पठायहु
तारा विकल देखि रघुराया ❋ दीन्ह ज्ञान हरिलीन्ही माया
क्षिति[1] जल पावक गगन समीरा[2] ❋ पंचरचित यह अधम शरीरा
प्रकट सो तनु तवआगे सोवा ❋ जीवनित्य तुम केहिलगि रोवा
उपजा ज्ञान चरण तब लागी ❋ लीन्हेसि परमभक्ति वर मांगी
उमा दारुयोषित[3] की नाईं ❋ सबहिं नचावत राम गोसाईं
तब सुग्रीवहिं आयसु दीन्हा ❋ मृतककर्म विधिवत सब कीन्हा
राम कहा अनुजहिं समुझाई ❋ राज्य देहु सुग्रीवहिं जाई
रघुपतिचरण नाइकरि माथा ❋ चले सकल प्रेरित रघुनाथा

दो० लक्ष्मण तुरत बुलावा, पुरजन विप्र समाज।
राज्य दीन्ह सुग्रीव कहँ, अंगद कहँ युवराज॥

उमा रामसम हित जग माहीं ❋ गुरु पितु मातु बन्धु कोउ नाहीं
सुर नर मुनि सबकी यह रीती ❋ स्वारथ लागि करैं सब प्रीती
बालित्रास व्याकुल दिनराती ❋ तनुविवरण[4] चिंता जरु छाती
सो सुग्रीव कीन्ह कपिराऊ ❋ अतिकोमल रघुवीर स्वभाऊ
जानतहू अस प्रभु परिहरहीं ❋ काहे न विपतिजाल नर परहीं
पुनि सुग्रीवहिं लीन्ह बुलाई ❋ बहुप्रकार नृपनीति सिखाई
कह प्रभु सुनु सुग्रीव हरीशा[5] ❋ पुर न जाउँ दशचारि बरीशा
गत ग्रीषम वर्षाऋतु आई ❋ रहिहौं निकट शैल[6]पर छाई
अंगदसहित करहु तुम राजू ❋ सन्तत[7] हृदय राखि मम काजू
तब सुग्रीव भवन फिरि आये ❋ राम प्रवर्षण गिरिपर छाये

दो० प्रथमहिं देवन गिरिगुहा, राखी रुचिर बनाय।
रामकृपानिधिकछुकदिन, वास करहिंगे आय॥

१ पृथ्वी २ पवन ३ कठपुतली ४ कांतिहीन ५ वानरेश ६ पर्वत ७ सदा॥

रा० कि० चि० नं० ८



सुन्दरवन कुसुमित[1] अति शोभा ❀ गुंजत चंचरीक मधुलोभा
कन्दमूल फल पत्र सुहाये ❀ भये बहुत जबते प्रभुआये
देखि मनोहर शैल अनूपा ❀ रहे तहँ अनुजसहित सुरभूपा
मधुकर खग मृग तनुधरिदेवा ❀ करहिं सिद्ध मुनि प्रभुकी सेवा
मंगलमूल भये वन तबते ❀ कीन्ह निवास रमापति जबते
फटिकशिला अतिशुभ्र[2] सुहाई ❀ सुखआसीन तहां दोउभाई
कहत अनुजसन कथा अनेका ❀ भक्ति विरति नृपनीति विवेका
वर्षाकाल मेघ नभ छाये ❀ गर्जत लागत परमसुहाये

दो० लक्ष्मण देखहु मोरगण, नाचत वारिद पेखि।
गृही विरतिरत हर्ष युत, विष्णुभक्त कहँ देखि ॥

घनघमण्ड नभ गरजत घोरा ❀ प्रियाहीन डरपत मनमोरा
दामिनि[3] दमकिरही घनमाहीं ❀ खलकी प्रीति यथा थिरनाहीं
वरषहिं जलद[4] भूमि नियराये ❀ यथा नवहिं बुध विद्यापाये
बूंदअघात[5] सहैं गिरि कैसे ❀ खलके वचन सन्त सहैं जैसे
क्षुद्रनदी भरि चलि उतराई ❀ जस थोरेधन खल इतराई
भूमि परत भा डाबर पानी ❀ जिमि जीवहिं माया लपटानी
सिमिटिसिमिटिजलभरैंतलावा ❀ जिमि सद्गुण सज्जनपहँ आवा
सरिताजल जलनिधिमहँ जाई ❀ होइअचल जिमि जन हरिपाई

दो० हरितभूमि तृणसंकुल, समुझिपरै नहिं पन्थ।
जिमि पाखण्डविवाद ते, लुप्त भये सद्ग्रन्थ ॥

दादुर[6] धुनि चहुँ ओर सुहाये ❀ वेद पढ़ैं जनु वटु समुदाये
नवपल्लव भे विटप[7] अनेका ❀ साधुकेमन जस मिले विवेका
अर्क जवास पातबिनु भयऊ ❀ जिमि सुराज्य खलउद्यम गयऊ
खोजत पन्थ मिलै नहिं धूरी ❀ करै क्रोध जिमि धर्महिं दूरी
सँसिसम्पन्न[8] सोह महि कैसी ❀ उपकारी की सम्पति जैसी

१ फूलाहुआ २ सफ़ेद ३ बिजली ४ बादल ५ चोट ६ मेढ़क ७ वृक्ष ८ अन्न ॥

निशितमघन खद्योत विराजा ❀ जनु दम्भिनकर जुरा समाजा
महावृष्टि चलि फूटि कियारी ❀ जिमि स्वतंत्र है बिगरहिं नारी
कृषी निरावहिं चतुर किसाना ❀ जिमि बुध तजहिं मोहमदनाना
देखियत चक्रवाक खगनाहीं ❀ कलिहि पाइ जिमिधर्म पराहीं
ऊषर वरषै तृण नहिं जामा ❀ सन्तहृदय जस उपज न कामा
विविध जन्तु संकुल महि भ्राजा ❀ बढ़ै प्रजा जिमि पाइ सुराजा
जहँ तहँ पथिक रहे थकिनाना ❀ जिमि इन्द्रियगण उपजतज्ञाना

दो० कबहुँ प्रबल चल मारुत, जहँ तहँ मेघ बिलाहिं।
जिमि कुपूत कुल ऊपजे, सम्पति धर्म नशाहिं॥
कबहुँ दिवस महँ निबिड़ तम, कबहुँक प्रकट पतंग।
उपजै विनशै ज्ञान जिमि, पाइ सुसंग कुसंग॥

वर्षा विगत शरद ऋतु आई ❀ देखहु लक्ष्मण परम सुहाई
फूले कास सकल महि छाई ❀ जनु वर्षाऋतु प्रकट बुढ़ाई
उदित अगस्त्य पन्थजल शोषा ❀ जिमि लोभहिं शोषै सन्तोषा
सरिता सर जल निर्मल सोहा ❀ सन्त हृदय जस गत मद मोहा
रस रस शोष सरित सर पानी ❀ ममतात्यागकरहिं जिमि ज्ञानी
जानि शरदऋतु खञ्जन आये ❀ पाइ समय जिमि सुकृत सुहाये
पंक न रेणु सोह अस धरणी ❀ नीतिनिपुण नृपकी जसकरणी
जलसंकोच विकलभये मीना ❀ अबुध कुटुम्बी जिमि धनहीना
विनु घन निर्मल सोह अकाशा ❀ जिमिहरिजनपरिहरिसबआशा
कहुँ कहुँ वृष्टि शरदऋतु थोरी ❀ कोउइक पाव भक्तिजिमि मोरी

दो० चले हरषि तजि नगर नृप, तापस वणिक भिखारि।
जिमि हरिभक्ति पाइजन, तजहिं आश्रमी चारि॥

सुखी मीन जहँ नीरअगाधा ❀ जिमि हरि शरण न एकौबाधा
फूले कमल सोह सर कैसे ❀ निर्गुणब्रह्म सगुण भये जैसे

१ खेती २ बहुत ३ दिन ४ अँधेरा ५ सूर्य ६ कीच ७ मछली ८ तालाब॥

गुञ्जत मधुकर मुखर अनूपा ❀ सुन्दर खगरव नानारूपा
चक्रवाक मन दुख निशि पेखी ❀ जिमि दुर्जन परसम्पति देखी
चातक रटत तृषा अति वोही ❀ जिमि सुख लहै न शंकरद्रोही
शरदातप निशि शशि अपहरई ❀ सन्तदरश जिमि पातक टरई
देखहिं विधु[1] चकोर समुदाई ❀ चितवहिंहरिजन हरिजिमिपाई
मसक[2] दंश बीते हिम त्रासा ❀ जिमि द्विजद्रोह[3] किये कुलनासा

दो० भूमिजीव संकुल रहे, गये शरदऋतु पाइ।
सतगुरुमिलेतेजाहिंजिमि, संशय भ्रम समुदाइ॥

वर्षाविगत शरद ऋतु आई ❀ सुधि न तात सीताकी पाई
एकबार कैसेउ सुधि पावों ❀ कालहुजीति निमिष[4]महँ लावों
कतहुँ रहै जो जीवति होई ❀ तात यतनकरि आनौं सोई
सुग्रीवहु सुधि मोरि बिसारी ❀ पावा राज्य कोष[5] पुर नारी
जेहि शायक[6] मैं मारा बाली ❀ तेहिशर हतौं मूढ़कहँ काली
जासुकृपा छूटै मद मोहा ❀ ताकहँ उमा कि सपनेहु कोहा
जानहिं यह चरित्र मुनिज्ञानी ❀ जिन रघुवीरचरण रति मानी
लक्ष्मण क्रोधवन्त प्रभुजाना ❀ धनुष चढ़ाइ गहे करवाना

दो० तब अनुजहि समुझायहू, रघुपति करुणासीव।
भय देखाइ लै आवहू, तात सखा सुग्रीव॥

इहां पवनसुत हृदय विचारा ❀ रामकाज सुग्रीव विसारा
निकट जाइ चरणन शिरनावा ❀ चारिहुविधि तेहिकहिसमुझावा
सुनि सुग्रीव परमभय[7] माना ❀ विषय मोर हरिलीन्हेउ ज्ञाना
अब मारुतसुत[8] दूतसमूहा ❀ पठवहु जहँ तहँ वानरयूहा
कहहु पाखमहँ आव न जोई ❀ मोरे कर ताकर बध होई
तब हनुमन्त बुलाये दूता ❀ सबकर करि सनमान बहूता
भय अरु प्रीति नीति दिखराई ❀ चले सकल चरणन शिरनाई

१ चन्द्रमा २ मच्छड़ ३ वैर ४ एकपल ५ खज़ाना ६ बाण ७ डर ८ हनुमान॥

तेहि अवसर लक्ष्मण पुर आये ❀ क्रोध देखि जहँ तहँ कपि धाये

दो० धनुष चढ़ाइ कहा तब, जारि करौं पुर क्षार।
व्याकुल नगर देखि तब, आवा बालिकुमार॥

चरण नाइ शिर विनती कीन्ही ❀ लक्ष्मण अभयबाहँ तेहिदीन्ही
क्रोधवन्त लक्ष्मण सुनि काना ❀ कहकपीशअतिशय अकुलाना
सुनु हनुमन्त संग लै तारा ❀ करि विनती समुझाउ कुमारा
तारा सहित जाइ हनुमाना ❀ चरणवन्दि प्रभु सुयश बखाना
करि विनती मन्दिर लैआये ❀ चरणपखारि पलँग बैठाये
तब कपीश चरणन शिरनावा ❀ गहिभुजलक्ष्मण कण्ठलगावा
नाथ विषयसम मद कछु नाहीं ❀ मुनिमन मोह करै क्षणमाहीं
सुनत विनीत वचन सुखपावा ❀ लक्ष्मण तेहि बहुविधिसमुझावा
पवनतनय सबकथा सुनाई ❀ जेहिविधि गये दूत समुदाई

दो० हरषि चले सुग्रीव तब, अंगदादि कपि साथ।
राम अनुज आगे किये, आये जहँ रघुनाथ॥

नाथ चरण शिर कह करजोरी ❀ नाथ मोरि कछु नाहिं न खोरी
अतिशय प्रबल देव तव माया ❀ छूटै राम करहु जब दाया
विषयविवश सुरनरमुनि स्वामी ❀ मैं पामर पशु कपि अतिकामी
नारिनयनशर जाहि न लागा ❀ घोरक्रोधतम निशि जो जागा
लोभपाश जेहि गर न बँधाया ❀ सो नर तुमसमान रघुराया
यह गुण साधनते नहिं होई ❀ तुम्हरी कृपा पाव कोइ कोई
तब रघुपति बोले मुसुकाई ❀ तुमप्रिय मोहिं भरत जिमिभाई
अब सोइयतन करहु मनलाई ❀ जेहिविधि सीताकीसुधि पाई

दो० यहिविधि होत बतकही, आये वानर यूथ।
नानाबरण अतुलबल, देखिय कीश वरूथ॥

वानरकटक उमा मैं देखा ❀ सो मूरुख जो कियचह लेखा

१ बालिकी स्त्री २ बन्दर ३ बाण ४ फांसी ५ समूह ६ फ़ौज ७ शुमार॥

आय रामपद नावहिं माथा ❀ निरखि वदन सब होहिं सनाथा
अस कपि एक न सेना माहीं ❀ रामकुशल पूंछी जेहि नाहीं
यह नहिं कछु प्रभुकी अधिकाई ❀ विश्वरूप व्यापक रघुराई
ठाढ़े जहँ तहँ आयसु पाई ❀ कहि सुग्रीव सबहिं समुझाई
रामकाज अरु मोरनिहोरा ❀ वानरयूथ जाहु चहुँओरा
जनकसुता कहँ खोजहु जाई ❀ मास दिवसमहँ आयहु भाई
अवधि मेटि जो बिनु सुधिपाये ❀ ताहि बधौं मैं निजकर आये

दो० वचन सुनत सब वानर, जहँ तहँ चले तुरन्त।
तब सुग्रीव बुलायउ, अंगद नल हनुमन्त॥

सुनहु नील अंगद हनुमाना ❀ जामवन्त मतिधीर सुजाना
सकल सुभट मिलि दक्षिण जाहू ❀ सीतासुधि पूंछेहु सब काहू
मन वच क्रम सों यतन विचारेहु ❀ रामचन्द्र कर काज सँवारेहु
भानु पीठि सेइय उरआगी ❀ स्वामी भजिय कपट छलत्यागी
तजि माया सेइय परलोका ❀ मिटहिं सकल भवसंभवशोका
देह धरे कर यह फल भाई ❀ भजिय राम सब काम विहाई
सोइ गुणज्ञ सोई बड़भागी ❀ जो रघुवीरचरण अनुरागी
आयसु मांगि चरण शिरनाई ❀ चले सकल सुमिरत रघुराई
पाछे पवनतनय शिरनावा ❀ जानिकाज प्रभु निकट बुलावा
परसा शीश सरोरुहपानी ❀ करमुद्रिका दीन्ह सहिदानी
बहुप्रकार सीतहिं समुझायहु ❀ कहि बल वीर वेगि तुमआयहु
हनुमत जन्म सफल करिजाना ❀ चले हृदय धरि कृपानिधाना
यद्यपि प्रभु जानत सब बाता ❀ राजनीति राखत सुरत्राता

दो० चले सकल वन खोजत, सरिता सर गिरिखोह।
रामकाज लवलीन मन, बिसरा तनुकर छोह॥

कतहुँ होइ निशिचरसन भेंटा ❀ प्राण लेहिं इक एक चपेटा

१ अपने हाथ २ चतुर ३ योद्धा ४ संसार ५ कमल ६ नदी ७ तालाब ८ कन्दरा॥

बहुप्रकार गिरि कानन हेरहिं ❀ कोउमुनि मिलै ताहिसबघेरहिं
लागि तृषा अतिशय अकुलाने ❀ मिलै न जल वनगहन भुलाने
मन हनुमान कीन्ह अनुमाना ❀ मरणचहत सब बिनुजलपाना
चढ़िगिरिशिखर चहूंदिशिदेखा ❀ भूमिविवर इक कौतुक पेखा
चकवाक बक हंस उड़ाहीं ❀ बहुतकखगप्रविशहिंतेहिमाहीं
गिरि ते उतरि पवनसुत आवा ❀ सबकहँ लै सो विवर दिखावा
आगेकरि हनुमन्तहिं लीन्हा ❀ पैठे विवर विलम्ब न कीन्हा

दो० दीखजाइ उपवन सुभग, सर विकसे बहुकंज।
मन्दिर एक रुचिर तहँ, बैठि नारि तपपुंज॥

दूरिहिते तेहि सब शिरनावा ❀ पूंछेसि निज वृत्तान्त सुनावा
तब तेहिं कहा करहु जलपाना ❀ खाहु सरस सुन्दरफल नाना
मज्जन कीन्ह मधुरफल खाये ❀ तासु निकटपुनि सब चलिआये
तेहिं सब आपनि कथा सुनाई ❀ मैं अब जाउँ जहां रघुराई
मूंदहु नयन विवरँ तजि जाहू ❀ पैहहु सीतहि जनि कदराहू
नयन मूंदि सब देखहिं वीरा ❀ ठाढ़े सकल सिंधु के तीरा
सो पुनि गई जहां रघुनाथा ❀ जाइ कमलपद नायसिमाथा
नानाभांति विनय तेइँ कीन्ही ❀ अनपाँवनी भक्ति प्रभु दीन्ही

दो० बदरीवन कहँ सो गई, प्रभुआज्ञा धरि शीश।
उरधरि रामचरण युग, जो वंदित अजं ईश॥

इहां विचारहिं कपि मनमाहीं ❀ बीती अवँधि काज कछु नाहीं
सब मिलि करहिं परस्पर बाता ❀ बिनु सुधिलिये करब का भ्राता
कह अंगद लोचन भरि वारी ❀ दुहुँ प्रकार भइ मृत्यु हमारी
इहां न सुधि सीताकर पाई ❀ उहां गये मारिहि कपिराई
पिताबधे पर मारत मोहीं ❀ राखा रामनिहोरा वोहीं
पुनि पुनि अंगद कह सब पाहीं ❀ मरण भयो कछु संशयं नाहीं

१ हाल २ नज़दीक ३ छेद ४ अचल ५ दो ६ ब्रह्मा ७ हद ८ संदेह॥

अंगदवचन सुनत कपिवीरा ❀ बोलि न सकहिं नयन बहनीरा
क्षण इक शोक मगन ह्वैगये ❀ पुनि अस वचन कहत सब भये
हम सीताकी बिनु सुधि लीने ❀ फिरब न सुनु युवराज प्रवीने
अस कहि लवर्णसिंधु तटजाई ❀ बैठे कपि सब दर्भ डसाई
जामवन्त अंगद दुख देखी ❀ कही कथा उपदेश विशेखी
तात रामकहँ नर जनि जानहु ❀ निर्गुणब्रह्म अजित अज मानहु
हम सब सेवक अति बड़भागी ❀ सन्तत सगुणब्रह्म अनुरागी

दो० निजइच्छाअवतरेउप्रभु, सुर द्विज गो महिलागि।
सगुणउपासकरहहिं सब, मोक्षसकलसुखत्यागि॥

यहिविधि कहत कथा बहुभांती ❀ गिरिकन्दरा सुना सम्पाती
बाहर ह्वै देखे सब कीशा ❀ मोहिं अहार दीन्ह जगदीशा
आजु सबनकहँ भक्षण करऊँ ❀ दिन बहुगे अहार बिनु मरऊँ
कबहुँ न मिल भरिउदर अहारा ❀ आजु दीन्ह विधि एकहिबारा
डरपे गृध्रवचन सुनिकाना ❀ अब भा मरण सत्य हम जाना
कपि सब उठे गृध्र कहँ देखी ❀ जामवन्त मन शोच विशेखी
कह विचारि अंगद मनमाहीं ❀ धन्य जटायुसरिस कोउनाहीं
रामकाज कारण तनु त्यागी ❀ हरिपुर गयउ परम बड़भागी
जो रघुवीरचरण चितलावै ❀ तिहिसम धन्य न आन कहावै
सुनि खग हर्ष शोक युत बानी ❀ आवा निकट कपिन भयमानी
ताहि देखि सब चले पराई ❀ ठाढ़ कीन्ह तिन शपथ दिवाई
तिन्हें अभयकरि पूंछेसि जाई ❀ कथा सकल तिन ताहि सुनाई
सुनि सम्पाति बन्धुकी करणी ❀ रघुपतिमहिमा बहुविधि वरणी

दो० म्वहिं लैचलहु सिन्धुतट, देउँ तिलांजलि ताहि।
वचनसहाय करब मैं, पैहहु खोजहु जाहि॥

अनुजक्रिया करि सागरतीरा ❀ कह निजकथा सुनहु कपिवीरा

१ खारी समुद्र २ कुश ३ तुल्य ४ वैकुण्ठ ५ पक्षी ६ सौगन्द ७ निडर ८ तारीफ़॥

हम दोउ बन्धु प्रथम तरुणाई ❀ गगनगये रविनिकट उड़ाई
तेज न सहिसक सो फिरि आवा ❀ मैं अभिमानी रवि नियरावा
जरे पंख रवितेज अपारा ❀ परेउँ भूमि करि घोर चिकारा
मुनि इक नाम चन्द्रमा ओही ❀ लागी दया देखिकर मोही
बहुप्रकार तिन ज्ञान सिखावा ❀ देहजनित अभिमान छुड़ावा
त्रेता ब्रह्म मनुजतनु धरिहैं ❀ तासुनारि निशिचरपति हरिहैं
तासु खोज पठवहिं प्रभु दूता ❀ तिन्हैं मिले तुम होब पुनीता[१]
जमिहहिंपंख करसि जनिचिंता ❀ तिन्हैं देखाइ देव तैं सीता
यहकहिमुनि निजआश्रमगयऊ ❀ तिहिक्षण हृदय ज्ञान कछु भयऊ
सदा रामकर सुमिरण करऊँ ❀ निशिदिनमगजोवतदिनभरऊँ
मुनिकी गिरा[३] सत्यभइ आज़ू ❀ सुनि ममवचन करहु प्रभुकाजू
गिरि त्रिकूट ऊपर बस लङ्का ❀ तहँरह रावण सहज अशङ्का
तहँ अशोक उपवन जहँ रहई ❀ सीय बैठि तहँ शोचति अहई

दो० मैं देखौं तुम नाहिंन, गृध्रहि दृष्टि अपार।
बूढ़ भयों नतु करतेउँ, कछुक सहाय तुम्हार॥

जो लांघै शत[४] योजन सागर ❀ करै सो रामकाज मतिआगर
जो कोइ करै रामकर काजू ❀ तेहिसमधन्य आन नहिं आजू
मोहिं विलोकि धरहु मनधीरा ❀ रामकृपा कस भयउ शरीरा
पापिउ जाकर नाम सुमिरहीं ❀ अति अपार भवसागर तरहीं
तासु दूत तुम तजि कदराई[५] ❀ राम हृदय धरि करहु उपाई
असकहि उमा गृध्र जब गयऊ ❀ तिनके मन अतिविस्मय भयऊ
निजनिज बल सबकाहू भाखा ❀ पार जानकर संशय राखा
जरठ[६] भयों अब कह ऋक्षेशा ❀ नहिं तनु रहा प्रथमबल लेशा
जबहिं त्रिविक्रम[७] भये खरारी ❀ तब मैं तरुणरहा बलभारी

दो० बलि बांधत प्रभु बाढ़ेऊ, सो तनु[८] बरणि न जाइ।

१ पवित्र २ खोजना ३ वाणी ४ सौ ५ कायरता ६ बूढ़ा ७ विष्णु ८ शरीर॥

उभय घरी महँ कीन्ह मैं, सात प्रदक्षिण धाइ ॥
अंगद कहा जाउँ मैं पारा ❀ जिय संशय कछु फिरतीबारा
जामवन्त कह तुम सबलायक ❀ किमिपठवौं सबहीकर नायक
कहा ऋक्षपति सुनु हनुमाना ❀ का चुप साधिरहा बलवाना
पवनतनय बल पवनसमाना ❀ बुधि विवेक विज्ञान निधाना
कौन सो काज कठिन जगमाहीं ❀ जो नहिं तात होइ तुमपाहीं
रामकाज लगि तव अवतारा ❀ सुनि कपि भयउ पर्व्वताकारा
कनकवरण तनु तेज विराजा ❀ मानहुँ अपरगिरिनकर राजा
सिंहनाद करि बारहिंबारा ❀ लीलहिंलांघौं जलनिधिखारा
सहित सहाय रावणहिं मारी ❀ आनौं इहां त्रिकूट उपारी
जामवन्त मैं पूंछों तोहीं ❀ उचित सिखावन दीजै मोहीं
इतना करहु तात तुम जाई ❀ सीतहि देखि कहौ सुधि आई
तव निजभुजबलराजिवनयना ❀ कौतुकलागि संग कपिसयना

छं० कपिसेनसंगसँहारिनिशिचर रामसीतहिं आनिहैं ।
त्रयलोकपावन सुयश सुर मुनि नारदादि बखानिहैं ॥
जो सुनत गावत कहत समुझत परमपद नर पावहीं ।
रघुवीर पद पाँथोज मधुकर दासतुलसी गावहीं ॥

दो० भवभेषजरघुनाथयश, सुनैं जे नर अरु नारि ।
तिनकरसकलमनोरथ, सिद्धि करहिं त्रिपुरारि ॥

सो० नीलोत्पल तनु श्याम, कामकोटिशोभाअधिक ।
सुनिय तासु गुणग्राम, जासुनामअघखगबधिक ॥

इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेकिष्किन्धाकाण्डे
विमलवैराग्यसम्पादनोनामचतुर्थस्सोपानः ॥ ४ ॥

१ दो २ पवित्र ३ कमल ४ भौंरा ५ संसार ६ औषध ७ कीर्त्ति ८ महादेव ॥

रा० सु० चि० नं० ६



श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीगोस्वामि

तुलसीदासकृत रामायण

सुन्दरकाण्ड

मङ्गलाचरणम् ॥

श्लोक ॥ शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम्। रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ॥ १ ॥ नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा। भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ॥ २ ॥ अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्। सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ॥ ३ ॥

जामवन्त के वचन सुहाये ❀ सुनि हनुमान हृदय अतिभाये
तब लगि मोहिं परखियहु भाई ❀ सहि दुख कन्दमूल फल खाई

जबलगि आवौं सीतहिं देखी ❀ होइकाज मोहिं हर्ष विशेखी
असकहि नाइ सबनकहँ माथा ❀ चले हरषि हियधरि रघुनाथा
सिन्धुतीर इक सुन्दरभूधर ❀ कौतुक कूदि चढ़े तिहि ऊपर
बारबार रघुवीर सँभारी ❀ तरकेउ पवनतनय बलभारी
जेहिगिरि चरण देइ हनुमन्ता ❀ सो चलिजाय पताल तुरन्ता
जिमि अमोघ रघुपति के बाना ❀ ताहीभांति चला हनुमाना
जलनिधि रघुपतिदूत विचारी ❀ तैं मैनाक होसि श्रमहारी

सो० सिन्धु वचन सुनि कान, तुरत उठे मैनाक तब।
कपिकहँ कीन्ह प्रणाम, बारबार कर जोरिकै॥

दो० हनूमान तेहि परसिकरि, पुनितेहि कीन्ह प्रणाम।
रामकाज कीन्हे बिना, मोहिं कहां विश्राम॥

जात पवनसुत देवन देखा ❀ जाना चह बलबुद्धि विशेखा
सुरसा नाम अहिनकी माता ❀ पठयउ सुरन कही तेहिं बाता
आजु सुरन मोहिं दीन्ह अहारा ❀ सुनि हँसि बोला पवनकुमारा
रामकाज करि फिरि मैं आवों ❀ सीताकी सुधि प्रभुहिं सुनावों
तब तुव वदन पैठिहौं आई ❀ सत्यकहौं मोहिं जानदे माई
कवनिहुँयतन देहि नहिं जाना ❀ असँसि न मोहिं कहा हनुमाना
योजन भरि तेहि वदन पसारा ❀ कपितनुकीन्ह दुगुन विस्तारा
सोरह योजन मुख तेइँठयऊ ❀ तुरत पवनसुत बत्तिसभयऊ
जस जस सुरसा वदन बढ़ावा ❀ तासु दुगुन कपिरूप दिखावा
शतयोजन तेहिं आननँ कीन्हा ❀ अतिलघुरूप पवनसुत लीन्हा
वदन पैठि पुनि बाहर आवा ❀ मांगी बिदा ताहि शिरनावा
मोहिं सुरन जेहिलागि पठावा ❀ बुधि बल मर्म्म तोर मैं पावा

दो० रामकाज सब करिहहु, तुम बल बुद्धिनिधान।
आशिष दै सुरसा चली, हरषि चले हनुमान॥

१ पर्वत २ कूदा ३ समुद्र ४-७ मुँह ५ घेरना ६ चारकोस ८ भेद॥

निशिचर एक सिन्धु महँ रहई ❀ करिमाया नभ के खगं गहई
जीव जन्तु जे गगनं उड़ाहीं ❀ जलविलोकि तिनकी परिछाहीं
गहै छांह सक सो न उड़ाई ❀ यहिविधि सदा गगनचर खाई
सोइ छल हनूमानसन कीन्हा ❀ तासु कपट कपि तुरतहिं चीन्हा
ताहि मारि मारुतसुत वीरा ❀ वाँरिधि पार गयउ मतिधीरा
तहां जाइ देखी वनशोभा ❀ गुञ्जत चंचरीकँ मधु लोभा
नाना तरु फल फूल सुहाये ❀ खग मृग वृन्द देखि मन भाये
शैल विशाल देखि इक आगे ❀ तापर कूदि चढ़ेउ भय त्यागे
उमा न कछु कपिकी अधिकाई ❀ प्रभुप्रताप जो कालहि खाई
गिरिपर चढ़ि लङ्का तेहिं देखी ❀ कहि न जाइ अतिदुर्ग विशेखी
अतिउतंग जलनिधि चहुँपासा ❀ कनककोट कर परम प्रकासा

छं० कनकँकोट विचित्रमणिकृत सुन्दरायत अतिघना।
चौहट्ट हाट सुबाट वीथी चारु पुर बहुविधि बना॥
गज वाजि खच्चर निकरपदचर रथवरूथन को गनै।
बहुरूप निशिचरयूँथ अतिबल सेन वर्णत नहिं बनै॥
वन बाग उपवन वाटिका सर कूप वापी सोहहीं।
नर नाग सुर गन्धर्वकन्या रूप मुनिमन मोहहीं॥
कहुँ मल्ल देह विशाल शैलसमान अतिबल गर्जहीं।
नाना अखारन भिरहिं बहुविधि एक एकन तर्जहीं॥
करियतनभटकोटिनविकटतनु नगरचहुँदिशिरक्षहीं।
कहुँमहिष मानुषधेनु खँर अजँ खल निशाचर भक्षहीं॥
यहिलागि तुलसीदास इनकी कथा संक्षेपहि कही।
रघुवीरशरतीरथसरित तनु त्यागि गति पैहैं सही॥
दो० पुर रखवारे देखि बहु, कपिमनकीन्ह विचार।

१ पक्षी २ आकाश ३ समुद्र ४ भ्रमर ५ सोना ६ समूह ७ गधा ८ बकरी॥

अति लघुरूप धरौं निशि, नगर करौं पैसार ॥
मसकसमानरूप कपि धरी ❀ लङ्कहि चलेउ सुमिरि नरहरी
नाम लङ्किनी एक निशिचरी ❀ सो कह चलेसि मोहिं निन्दरी
जानसि नाहिं मर्म[1] शठ मोरा ❀ मोर अहार लंककर चोरा
मुष्टिक एक ताहि कपि हनी ❀ रुधिर बमंत[2] धरणी ठनमनी
पुनि सम्भारि उठी सो लङ्का ❀ जोरिपाणि कर विनय संशङ्का[3]
जब रावणहिं ब्रह्म वर दीन्हा ❀ चलत विरंचि कहा मोहिंचीन्हा
विकल होसि जब कपि के मारे ❀ तब जानेसि निशिचर संहारे
तात मोर अति पुण्य बहूता ❀ देखेउँ नयन रामकर दूता
दो० सात स्वर्ग अपवर्ग[4] सुख, धरिय तुला[5] इक अंग।
तुलै न ताहिसकल मिलि, जो सुख लवसतसंग ॥
प्रविशि नगर कीजै सब काजा ❀ हृदय राखि कोशलपुर राजा
गरलसुधा रिपु करै मिताई ❀ गोपद सिंधु अनल शितलाई
गरुअ सुमेरु रेणु सम ताही ❀ राम कृपाकरि चितवहिं जाही
अति लघुरूप धरेउ हनुमाना ❀ पैठे नगर सुमिरि भगवाना
मन्दिर मन्दिर प्रति करि शोधा ❀ देखे जहँ तहँ अगणित[6] योधा
गयउ दशानन मन्दिर माहीं ❀ अतिविचित्रकहिजातसोनाहीं
शयन[7] किये देखा कपि तेही ❀ मन्दिर महँ न दीख वैदेही
भवन एक पुनि दीख सुहावा ❀ हरिमन्दिर तहँ भिन्न बनावा
रामनामअंकित गृह सोहा ❀ वरणि न जाइ देखि मनमोहा
दो० रामनामअंकित गृह, शोभा वरणि न जाय।
नवतुलसी के वृन्द[8] तहँ, देखि हर्ष कपिराय ॥
लंका निशिचरनिकर निवासा ❀ इहां कहां सज्जन कर वासा
मन महँ तर्क करन कपि लागा ❀ ताही समय विभीषण जागा
राम राम तेहिं सुमिरण कीन्हा ❀ हृदय हर्ष कपि सज्जन चीन्हा

१ भेद २ उगलार करना ३ डर कर ४ मोक्ष ५ तराजू ६ बेप्रमाण ७ सोते ८ झुंड ॥

यहिसन हठि करिहौं पहिंचानी ❀ साधु ते होइ न कारज हानी
विप्ररूप धरि वचन सुनावा ❀ सुनत विभीषण उठितहँआवा
करि प्रणाम पूंछी कुशलाई ❀ विप्र कहहु निजकथा बुझाई
की तुम हरिदासनमहँ कोई ❀ मोरे हृदय प्रीति अतिहोई
की तुम दीनबन्धु अनुरागी ❀ आयहु मोहिं करन बड़भागी

दो० तब हनुमन्त कही सब, राम कथा निजनाम।
सुनतयुगलतनपुलकअति,मगनसुमिरिगुणग्राम॥

सुनहु पवनसुत रहनि हमारी ❀ जिमि दंशनन महँजीभ बिचारी
तात कबहुँ मोहिं जानि अनाथा ❀ करिहहिं कृपा भानुकुलनाथा
तामस तनु कछु साधन नाहीं ❀ प्रीति न पदसरोज मनमाहीं
अब मोहिं भा भरोस हनुमन्ता ❀ बिनुहरिकृपामिलहिंनहिंसन्ता
जो रघुवीर अनुग्रह कीन्हा ❀ तौ तुम मोहिं दरश हठि दीन्हा
सुनहु विभीषण प्रभु की रीती ❀ करहिं सदा सेवक पर प्रीती
कहहु कवन मैं परमकुलीना ❀ कपि चंचल सबहीविधि हीना
प्रात लेइ जो नाम हमारा ❀ ता दिन ताहि न मिलै अहारा

दो० अस मैं अधम सखा सुनु, ताहू पर रघुवीर।
कीन्ही कृपा सुमिरि गुण, भरे विलोचन नीर॥

जानतहूं अस स्वामि बिसारी ❀ ते नर काहे न होहिं दुखारी
यहिविधि कहत रामगुण ग्रामा ❀ पावा अनिर्वाच्य विश्रामा
पुनि सब कथा विभीषण कही ❀ जेहिविधि जनकसुता जहँ रही
तब हनुमन्त कहा सुनु भ्राता ❀ देखा चहौं जानकी माता
युक्ति विभीषण सकल सुनाई ❀ चलेउ पवनसुत बिदाकराई
धरि सोइ रूप गयउ पुनि तहँवां ❀ वन अशोक सीता रह जहँवां
देखि मनहिं मन कीन्ह प्रणामा ❀ बैठे बीतिगई निशि यामा
कृशतन शीशजटा इक वेणी ❀ जपति हृदय रघुपतिगुणश्रेणी

१ दांत २ रामचन्द्रजी ३ कृपा ४ भोजन ५ जल ६ जो वाणी में न आसके ७ सीता ८ पहर॥

दो० निजपद नयनदिये मन, रामचरण लव लीन।
परमदुखी भा पवनसुत, निरखि जानकी दीन॥

तरुपल्लव महँ रहा लुकाई ❋ करै विचार करौं का भाई
तेहि अवसर रावण तहँ आवा ❋ संग नारि बहु किये बनावा
बहुविधिखल सीतहिंसमुझावा ❋ साम दाम भय भेद दिखावा
कह रावण सुनु सुमुखि सयानी ❋ मन्दोदरी आदि सब रानी
तव अनुचरी करौं पन मोरा ❋ एक बार विलोकु मम ओरा
तृण धरि ओट कहति वैदेही ❋ सुमिरि अवधपति परमसनेही
सुनु दशमुख खद्योत प्रकाशा ❋ कबहुँकिनलिनीकरहिंविकाशा
असमन समुझहु कहत जानकी ❋ खल सुधि नहिं रघुवीर बानकी
शठ सूने हरिआनेसि मोहीं ❋ अधम निलज लाज नहिं तोहीं

दो० आपुहि सुनि खद्योत सम, रामहिं भानु समान।
परुषवचनसुनिकाढ़िअसि,बोलाअतिखिसियान॥

सीता तैं मम कृत अपमाना ❋ काटौं तव शिर कठिन कृपाना
नाहित सपदि मानु ममबानी ❋ सुमुखि होत नतु जीवनहानी
श्यामसरोज दामसम सुन्दर ❋ प्रभुभुज करिकरसम दशकन्धर
सोइ भुजकंठकि तव असिघोरा ❋ सुनु शठ असप्रमाणपन मोरा
चन्द्रहास हरु मम परितापा ❋ रघुपति विरह अनल संतापा
शीतलनिशि तव असिवरधारा ❋ कह सीता हरु ममदुख भारा
सुनत वचन पुनि मारनधावा ❋ मयतनया कहि नीतिबुझावा
कहेसि सकल निशिचरी बुलाई ❋ सीतहि बहु विधि त्रासहु जाई
मास दिवस महँ कहा न माना ❋ तौ मैं मारब कठिन कृपाना

दो० भवन गयउ दशकन्ध तब, इहां निशाचरि वृन्द।
सीतहि त्रासैं दिखावहीं, धरहिं रूप बहु मन्द॥

त्रिजटा नाम राक्षसी एका ❋ रामचरण रत निपुण विवेका

१ दासी २ जुगनू ३ कमलिनी ४ शीघ्र ५ मन्दोदरी ६ तलवार ७ दुःख ८ नीच॥

सबहिं बुलाय सुनायसि सपना ❀ सीतहिं सेइ करो हित अपना
सपने वानर लङ्का जारी ❀ यातुधान सेना सब मारी
खर आरूढ़ नगन दशशीशा ❀ मुण्डितशिरखण्डितभुजबीशा
यहिविधिसो दक्षिण दिशिजाई ❀ लङ्का मनहुँ विभीषण पाई
नगर फिरी रघुवीर दुहाई ❀ तब प्रभु सीतहिं बोलिपठाई
यह सपना मैं कहौं विचारी ❀ होइहि सत्य गये दिनचारी
तासु वचन सुनि ते सब डरीं ❀ जनकसुता के चरणन परीं

दो० जहँ तहँ गईं सकलमिलि, सीता के मन शोच।
मास दिवस बीते मोहिं, मारिहि निशिचरपोच ॥

त्रिजटासन बोलीं करजोरी ❀ मातु विपतिसंगिनि तैं मोरी
तजौं देह करु वेगि उपाई ❀ दुसह विरह अब सहा न जाई
आनिकाठ रचिचिता बनाई ❀ मातु अनल तुम देहु लगाई
सत्य करहि ममप्रिया सयानी ❀ सुनै को श्रवण शूलसम बानी
सुनतवचन पदगहि समुझावा ❀ प्रभुप्रताप बल सुयश सुनावा
निशिन[1] अनल[2]मिलुराजकुमारी ❀ असकहिसो निजभवनसिधारी
कह सीता विधिभा प्रतिकूला[3] ❀ मिलै न पावक मिटै न शूला
देखियत प्रकट गगन अंगारा ❀ अवनि न आवत एकौतारा
पावकमयशशि स्रवत न आगी ❀ मानहुँ मोहिं जानि हतभागी
सुनहु विनयमम विटप अशोका ❀ सत्य नाम करु हरु ममशोका
नूतन किसलय[6] अनल समाना ❀ देहु अगिनिमम करहु निदाना
देखि परम विरहाकुल सीता ❀ सो क्षण कपिहि कल्पसम बीता

सो० कपिकरिहृदयविचार, दीन्ह मुद्रिका डारि तब।
जनु अशोक अंगार, लीन्हहरषिउठिकरगहेउ ॥

तब देखी मुद्रिका मनोहर ❀ रामनाम अङ्कित[8] अतिसुन्दर
चकित चितै मुद्रिक पहिंचानी ❀ हर्ष विषाद हृदय अकुलानी

१ सवार २ रात्रि ३-५ अग्नि ४ उलटा ६ पत्ते ७ मुंदरी ८ चिह्नित ॥

जीति को सकै अजय रघुराई ❋ मायाते अस रची न जाई
सीता मन विचार कर नाना ❋ मधुरवचन बोले हनुमाना
रामचन्द्र गुण वर्णन लागे ❋ सुनतहि सीताके दुखभागे
लागी सुनै श्रवण मनलाई ❋ आदिहिते सब कथा सुनाई
श्रवणामृत जिन कथा सुनाई ❋ काहे न प्रकट होत सो भाई
तब हनुमन्त निकट चलिगयऊ ❋ फिरि बैठी मन विस्मय भयऊ
रामदूत मैं मातु जानकी ❋ सत्य शपथ[१] करुणानिधानकी
यह मुद्रिका मातु मैं आनी ❋ दीन्ह राम तुमकहँ सहिदानी[२]
नर वानरहि संग कहु कैसे ❋ कही कथा संगतिभइ जैसे

दो॰ कपिके वचन सप्रेमसुनि, उपजा मन विश्वास।
जाना मन क्रम वचन यह, कृपासिन्धुकर दास॥

हरिजन जानि प्रीति अतिबाढ़ी ❋ सजल नयन रोमावलि ठाढ़ी
बूड़त विरहजलधि[३] हनुमाना ❋ भयहु तात मोकहँ जलयाना[४]
अब कहु कुशल जाउँ बलिहारी ❋ अनुजसहित सुखभवन खरारी
कोमलचित कृपालु रघुराई ❋ कपि केहिहेतु धरी निठुराई
सहजबानि सेवक सुखदायक ❋ कबहुँक सुरति करत रघुनायक
कबहुँ नयन मम शीतल ताता ❋ ह्वैहैं निरखि श्यामपृदुगाता
वचन न आव नयनभरि वारि[५] ❋ अहह नाथ मोहिं निपट बिसारी
देखि विरह व्याकुल अति सीता ❋ बोलेउ कपि मृदुवचन विनीता[६]
मातु कुशल प्रभु अनुज समेता ❋ तव दुख दुखी सो कृपानिकेता
जननी जनि मानहु मन ऊना ❋ तुमते प्रेम रामकहँ दूना

दो॰ रघुपतिकर सन्देश अब, सुनु जननी धरि धीर।
असकहि कपि गदगद भयउ, भरे विलोचन नीर॥

राम कहा वियोग तव सीता ❋ मोकहँ सकल भयउ विपरीता
नूतन[७] किसलय मनहुँ कृशानू ❋ कालनिशासमनिशिशशिभानू[८]

१ सौगन्द २ साक्षी ३ समुद्र ४ नौका ५ जल ६ नीतियुक्त ७ नवीन ८ सूर्य॥

कुवलय[1] विपिन कुन्तवनसरिसा ❋ वारिद तप्ततेल जनु बरिसा
जेहि तरु रहौं करत सो पीरा ❋ उरगश्वास सम त्रिविध समीरा
कहेते दुख नहिं घटि कछु होई ❋ काहि कहौं यह जान न कोई
तत्त्व प्रेमकर मम अरु तोरा ❋ जानत प्रिया एक मन मोरा
सो मन रहत सदा तोहिं पाहीं ❋ जानु प्रीतिरस इतनेहि माहीं
प्रभुसंदेश सुनत वैदेही ❋ मगनप्रेम तनुसुधि नहिं तेही
कह कपि हृदय धीरधरु माता ❋ सुमिरि राम सेवक सुखदाता
उर आनहु रघुपति प्रभुताई ❋ सुनि ममवचन तजहु विकलाई

दो॰ निशिचर निकर पतङ्गसम, रघुपतिबाण कृशानु[2]।
जननि हृदय निज धीरधरु, जरे निशाचर जानु ॥

जो रघुवीर होत सुधि पाई ❋ करते नहिं विलम्ब रघुराई
रामबाण रवि उदय जानकी ❋ तमवरूथ कहँ यातुधानकी[3]
अबहिं मातु मैं जाउँ लिवाई ❋ प्रभुआयसु नहिं राम दुहाई
कछुक दिवस[4] जननी धरु धीरा ❋ कपिन सहित ऐहैं रघुवीरा
निशिचर मारि तुमहिं लैजैहैं ❋ तिहुँपुर नारदादि यश गैहैं
हैं सुत कपि सब तुम्हैं समाना ❋ यातुधान भट अति बलवाना
मोरे हृदय परम सन्देहा ❋ सुनिकपि प्रकटकीन्ह निजदेहा
कनकभूधराकार[5] शरीरा ❋ समर भयङ्कर अति रणधीरा
सीता मन भरोस तब भयऊ ❋ पुनि लघुरूप पवनसुत लयऊ

दो॰ सुनु माता शाखामृग[6]हिं, नहिं बलबुद्धि विशाल।
प्रभु प्रतापते गरुड़ही, खाइ परम लघु व्याल ॥

मन सन्तोष सुनत कपिबानी ❋ तनु अतिपुलक नयन ढरपानी
भक्ति प्रताप तेज बल सानी ❋ आशिष दीन्ह राम प्रिय जानी
अजरअमरगुणनिधि सुत होहू ❋ करहि सदा रघुनायक छोहू
करहिंकृपा प्रभु अस सुनिकाना ❋ निर्भर[7] प्रेम मगन हनुमाना

१ कमल २ अग्नि ३ राक्षस ४ दिन ५ स्वर्णपर्वताकार ६ वानर ७ पूर्ण ॥

बारबार नायउ पद शीशा ❀ बोला वचन जोरिकर कीशा
अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता ❀ आशिष तव अमोघ विख्याता
सुनियमातुमोहिंअतिशयभूखा ❀ लागि देखि सुन्दर फलरूखा
सुनु सुत करैं विपिन रखवारी ❀ परम सुभट रजनीचर[1] भारी
तिनकर भय माता मोहिं नाहीं ❀ जो तुम सुख मानहु मनमाहीं

दो० देखि बुद्धिबलनिपुण कपि, कहेउ जानकी जाहु ।
रघुपतिचरण हृदय धरि, तात मधुरफल खाहु ॥

चलेउ नाइ शिर पैठेउ बागा ❀ फल खाये तरु[2] तोरन लागा
रहे तहां बहु भट रखवारे ❀ कछु मारे कछु जाइ पुकारे
नाथ एक आवा कपि भारी ❀ तेइँ अशोकवाटिका[3] उजारी
खायेसि फल अरु विटप उपारे ❀ रक्षक मर्दि मर्दि महि डारे
सुनि रावण पठये भट नाना ❀ तिनहिं देखि गरजा हनुमाना
सब रजनीचर कपि संहारे ❀ गये पुकारत कछु अधमारे
पुनि पठवा तेइँ अक्षयकुमारा ❀ चला संग लै सुभट[4] अपारा
आवत देखि विटप गहि तर्जा ❀ ताहि निपाति महाधुनि गर्जा

दो० कछु मारेसि कछु मर्देसि, कछुक मिलायसि धूरि ।
कछु पुनि जाइ पुकारे, प्रभु मर्कट[5] बल भूरि ॥

सुनि सुतबध लङ्केश रिसाना ❀ पठवा मेघनाद बलवाना
मारेसिजनि सुत बांधेसि ताही ❀ देखौं कीश कहांकर आही
चला इन्द्रजित अतुलित योधा ❀ बन्धुबधन सुनि उपजा क्रोधा
कपि देखा दारुणभट आवा ❀ कटकटाइ गरजा अरु धावा
अतिविशाल तरु एक उपारा ❀ विरथ कीन्ह लङ्केशकुमारा
रहे महाभट ताके संगा ❀ गहिगहिकपि मर्देसि[6]निजअंगा
तिन्हें निपाति ताहिसन बाँजा[7] ❀ भिरे युगल मानहुँ गजराजा
मुष्टिक[8] मारि चढ़ा तरु जाई ❀ ताहि एकक्षण मूर्छा आई

१ राक्षस २ वृक्ष ३ फुलवारी ४ योद्धा ५ बन्दर ६ मारके ७ भिड़ा ८ घूंसा ॥

उठि बहोरि कीन्हेसि बहुमाया ❀ जीति न जाइ प्रभञ्जनजाया

दो॰ ब्रह्मअस्त्र तेइँ साधेऊ, कपि मन कीन्ह विचार ।
जो न ब्रह्मशर मानऊं, महिमा मिटै अपार ॥

ब्रह्मबाण ते कपिकहँ मारा ❀ परतिहु बार कटंक संहारा
तेइँ जाना कपि मूर्च्छित भयऊ ❀ नागफांस बांधेसि लैगयऊ
जासु नाम जपि सुनहु भवानी ❀ भवबन्धन काटहिं नरज्ञानी
तासुदूत बन्धनतर आवा ❀ प्रभुकारजलगि आपु बँधावा
कपिबंधन सुनि निशिचर धाये ❀ कौतुक लागि सभा लैआये
दशमुख सभा दीख कपि जाई ❀ कहि न जाय कछु अतिप्रभुताई
करजोरे सुरदिशप विनीता ❀ भृकुटि विलोकहिं सकलसभीता
देखि प्रताप न कपिमन शङ्का ❀ जिमिअहिगणमहँगरुड़अशङ्का

दो॰ कपिहि विलोकि दशानन, विहँसि कहेसि दुर्बाद ।
सुतबध सुरति कीन्ह पुनि, उपजा हृदय विषाद ॥

कह लंकेश कवन तैं कीशा ❀ केहिकेबल घालेसि वनखीशा
कीधौं श्रवण सुनेसि नहिं मोहीं ❀ देखौं अतिअशङ्क शठ तोहीं
मारेसि निशिचर केहिअपराधा ❀ कहु शठ तोहिं न प्राणकी बाधा
सुनु रावण ब्रह्माण्ड निकाया ❀ पाइ जासुबल विरचत माया
जाके बल विरञ्चि हरि ईशा ❀ पालत हरत सृजत दशशीशा
जा बल शीश धरे सहसानन ❀ अण्डकोश समेत गिरिकानन
धरे जो विविध देह सुरत्राता ❀ तुमसे शठन सिखावनदाता
हरकोदण्ड कठिन जेइँ भञ्जा ❀ तोहिं समेत नृपदलमद गँञ्जा
खर दूषण विराध अरु बाली ❀ बधे सकल अतुलितबलशाली

दो॰ जाके बल लवलेश ते, जितेउ चराचर भारि ।
तासु दूतहौं जाहि की, हरिआनेहु प्रियनारि ॥

जानौं मैं तुम्हारि प्रभुताई ❀ सहसबाहुसन परी लराई

१ फ़ौज २ पार्वती ३ सर्प ४ नाश ५ उत्पन्न करते ६ धनुष ७ नाशकिया ८ बहादुरी ॥

समर बालिसन करि यश पावा ❋ सुनिकपिवचनविहँसिबहलावा
खायउँ फल मोहिं लागी भूखा ❋ कपिस्वभाव ते तोरेउँ रूखा
सबके देह परमप्रिय स्वामी ❋ मारहिं मोहिं कुमारगगामी
जिन मोहिंमारा तेहिं मैं मारा ❋ तेहिपर बांधेउ तनय तुम्हारा
मोहिं न कछु बांधेकर लाजा ❋ कीन्ह चहौं निजप्रभुकरकाजा
विनती करौं जोरि कर रावन ❋ सुनहु मानतजि मोरसिखावन
देखहु तुम निजहृदय विचारी ❋ भ्रम तजि भजहु भक्तभयहारी
जाके डर अति काल डराई ❋ जो सुर असुर चराचर खाई
तासों वैर कबहुँ नहिं कीजै ❋ मोरे कहे जानकी दीजै

दो० प्रणतपाल रघुवंशमणि, करुणासिन्धु खरारि।
गये शरण प्रभु राखिहैं, तव अपराध बिसारि॥

रामचरणपङ्कज उर धरहू ❋ लंका अचलराज्य तुम करहू
ऋषिपुलस्त्य यश विमलमयङ्का ❋ तेहिकुलमहँ जनिहोसिकलङ्का
रामनामबिनु गिरा न सोहा ❋ देखु विचारि त्यागि मद मोहा
वसनहीन नहिं सोह सुरारी ❋ सब भूषण भूषित वरनारी
रामविमुख सम्पति प्रभुताई ❋ जाय रही पाई बिनुपाई
शैलमूल जेहि सरितां नाहीं ❋ वरषिगये पुनि तबहिं सुखाहीं
सुनु दशकण्ठ कहौं प्रणरोपी ❋ रामविमुख त्राता नहिं कोपी
शङ्कर सहस विष्णु अज तोही ❋ सकहिं न राखि रामकरद्रोही

दो० मोह मूल बहु शूलप्रद, त्यागहु तुम अभिमान।
भजहु राम रघुनायकहि, कृपासिन्धु भगवान॥

यदपिकही कपि अतिहित बानी ❋ भक्ति विवेक विरति नय सानी
बोला विहँसि अधम अभिमानी ❋ मिला हमहिं कपिगुरु बड़ज्ञानी
मृत्यु निकट आई खल तोहीं ❋ लागेसि अधम सिखावन मोहीं
उलटा होइ कहा हनुमाना ❋ मतिभ्रम तोरि प्रकट मैं जाना

१ बन्दर २ पुत्र ३ हाथ ४ देवता ५ दयासागर ६ रामजी ७ नदी ८ कोईभी ९ नीति॥



सुनिकपिवचन बहुत रिसियाना ❋ वेगि न हरहु मूढ़कर प्राना
सुनत निशाचर मारन धाये ❋ सचिवनसहित विभीषणआये
नाइ शीश करि विनय बहूता ❋ नीतिविरोध न मारिय दूता
आनदण्ड कछु करिय गुसांई ❋ सबही कहा मन्त्र भल भाई
सुनत विहँसि बोला दशकन्धर ❋ अंग भंगकरि पठवहु बन्दर

दो० कपिकर ममता पूंछपर, सबहिं कहा समुझाइ।
तेलबोरि पट बांधि पुनि, पावक देहु लगाइ॥

पूंछहीन बन्दर जब जाइहि ❋ तब शठ निजनाथहि लैआइहि
जिनकी कीन्हेसि अमित बड़ाई ❋ देखौं धौं तिनकी प्रभुताई
वचन सुनत कपि मन मुसुकाना ❋ भइ सहाय शारद मैं जाना
यातुधान सुनि रावणवचना ❋ लागे रचन मूढ़ सोइ रचना
रहा न नगर वसन घृत तेला ❋ बाढ़ी पूंछ कीन्ह कपिखेला
कौतुक कहँ आये पुरवासी ❋ मारहिं चरण करहिं बहुहांसी
बाजहिं ढोल देहिं सब तारी ❋ नगर फेरि पुनि पूंछ प्रजारी
पावक जरत दीख हनुमन्ता ❋ भयउ परमलघुरूप तुरन्ता
निबुँकिचढ़ेउ पुनि कनकअटारी ❋ भई सभीत निशाचर नारी

दो० हरि प्रेरित तेहि अवसर, बहीं पवन उनचाश।
अट्टहास करि गरजा, कपि बढ़िलागअकाश॥

देह विशाल परम हरुआई ❋ मन्दिरते मन्दिर चढ़िजाई
जरा नगर भे लोग बिहाला ❋ लपटझपट बहुकोटि कराला
तात मात सब करहिं पुकारा ❋ यहिअवसर को हमहिं उबारा
हम जो कहा यह कपि नहिंहोई ❋ वानर रूप धरे सुर कोई
साधु अवज्ञा कर फल ऐसा ❋ जरै नगर अनाथ कर जैसा
जारा नगर निमिष इकमाहीं ❋ एक विभीषणको गृह नाहीं
जाकर भक्त अनल तेइँसिरिजा ❋ जरा न सो तेहिकारण गिरिजा

१ वस्त्र २ अग्नि ३ राक्षस ४ जलाई ५ कूदके ६ अनादर ७ पार्वती॥

उलटि पलटि लङ्का कपिजारी ❀ कूदिपरा तब सिन्धु मँझारी

दो० पूंछ बुझाई खोय श्रम, धरि लघुरूप बहोरि।
जनकसुता के आगे, ठाढ़ भयउ करजोरि॥

मातु मोहिं दीजै कछु चीन्हा ❀ जैसे रघुनायक मोहिं दीन्हा
चूड़ामणि उतारि तब दयऊ ❀ हर्षसमेत पवनसुत लयऊ
कहेउ तात अस मोर प्रणामा ❀ सब प्रकार प्रभु पूरणकामा
दीनदयालु विरद सम्भारी ❀ हरहु नाथ मम संकट भारी
तात शक्रसुत कथा सुनायहु ❀ बाणप्रताप प्रभुहि समुझायहु
मास दिवस महँ नाथ न आवहिं ❀ तौ पुनिमोहिंजियत नहिं पावहिं
कहुकपि केहिविधि राखौं प्राना ❀ तुमहूं तात कहत अब जाना
तुमहिं देखि शीतल भइ छाती ❀ पुनि मोकहँ सोइदिन सोइराती

दो० जनकसुतहिसमुझाइकरि, बहुविधि धीरज दीन्ह।
चरणकमलशिरनाइकरि, गमन रामपहँ कीन्ह॥

चलत महाधुनि गरजेउ भारी ❀ गर्भस्रवहिं सुनि निशिचरनारी
लांघि सिंधु यहिपारहिं आवा ❀ शब्दकिलकिला कपिनसुनावा
हरषे सब विलोकि हनुमाना ❀ नूतनै जन्म कपिन तब जाना
मुख प्रसन्न तनु तेज विराजा ❀ कीन्हेसि रामचन्द्रकर काजा
मिले सकल अतिभये सुखारी ❀ तलफत मीन पाव जनु वौरी
चले हरषि रघुनायक पासा ❀ पूंछत कहत नवलै इतिहासा
तब मधुवन भीतर सब आये ❀ अंगद सहित मधुरफल खाये
रखवारे जब बरजन लागे ❀ मुष्टि प्रहार करत सब भागे

दो० जाइ पुकारे सकल ते, वन उजार युवराज।
सुनि सुग्रीवहिं हर्ष अति, करिआये प्रभुकाज॥

जो न होत सीता सुधि पाई ❀ मधुवनके फल को सक खाई
यहिविधि मन विचारकर राजा ❀ आयगये कपि सहित समाजा

१ जयन्त २ टपकें ३-५ नवीन ४ जल ६ घूंसा ७ खुशी॥

आइ सबहिं नावा पद शीशा ❋ मिले सबन अतिप्रेम कपीशा
पूंछेउ कुशल कुशलपद देखी ❋ रामकृपा भा काज विशेखी
नाथ काज कीन्हेउ हनुमाना ❋ राखे सकल कपिनकर प्राना
सुनि सुग्रीव बहुरि उठि मिलेऊ ❋ कपिनसहित रघुपतिपै चलेऊ
राम कपिनकहँ आवत देखा ❋ किये काज मन हर्ष विशेखा
फटिकशिला बैठे दोउ भाई ❋ परे सकल कपि चरणन जाई

दो० प्रीति सहित भेंटे सकल, रघुपति करुणापुंज।
पूंछेउ कुशल नाथ अब, कुशल देखि पदकंज[1] ॥

जामवन्त कह सुनु रघुराया ❋ जापर नाथ करहु तुम दाया
ताहि सदा शुभ कुशल निरन्तर[2] ❋ सुर नर मुनि प्रसन्न तेहि ऊपर
सो विजयी विनयी गुणसागर ❋ तासुसुयश तिहुँलोक उजागर
प्रभुकी कृपा भयउ सब काजू ❋ जन्म हमार सफल भा आजू
नाथ पवनसुत[3] कीन्ह जो करणी ❋ सो मुखलाखहु जाइ न वरणी
पवनतनय के चरित सुहाये ❋ जामवन्त रघुपतिहि सुनाये
सुनत कृपानिधि मन अतिभाये ❋ पुनि हनुमान हरषि उरलाये
कहहु तात केहिभांति जानकी ❋ रहति करति रक्षा स्वप्रानकी

दो० नाम पाहरू दिवस निशि, ध्यान तुम्हार कपाट[4] ।
लोचन निजपद यन्त्रिका[5], प्राण जाहिं केहिबाट ॥

चलतीबार कह्यो म्वहिं टेरी ❋ सुरति कराय शक्रसुत[6] केरी
चलत मोहिं चूड़ामणि दीन्ही ❋ रघुपतिहृदयलाइ तेहि लीन्ही
नाथ युगललोचन भरि वारी ❋ वचन कह्यो कछु जनककुमारी
अनुज समेत गहेहु प्रभुचरणा ❋ दीनबन्धु प्रणतारतिहरणा
मन क्रम वचन चरण अनुरागी ❋ केहि अपराध नाथ मोहिंत्यागी
अवगुण एक मोर मैं जाना ❋ बिछुरत प्राण न कीन्ह पयाँना[7]
नाथ सो नयनन कर अपराधा ❋ निसरत प्राण करहिं हठिबाधा

१ कमल २ सदा ३ हनुमान् ४ किवाड़ ५ ज़ंजीर ६ जयन्त ७ गमन ॥

पुकारकर

मुकेश
पीड़ा

विरह अनल[1] तनु तूल[2] समीरा[3] ❀ श्वास जरै क्षणमाहिं शरीरा
नयनस्रवैं जल निज हितलागी ❀ जरै न पाव देह विरहागी
सीताकी अतिविपति विशाला ❀ विना कहे भल दीनदयाला

दो० निमिषनिमिषकरुणायतन, जाहिंकल्प[4]शतबीति।
वेगि चलिय प्रभुआनिये, भुजबल खलदलजीति॥

सुनि सीतादुख प्रभु सुखअयना ❀ भरिआये दोउ राजिवनयना
वचन काय मन ममगति जाही ❀ सपन्यहु विपतिकिबूझियताही
कह हनुमान विपति प्रभु सोई ❀ जब तव सुमिरणभजन न होई
कितिकबात प्रभु यातुधानकी ❀ रिपुहिजीति आनिये जानकी
सुनु कपि तोहिं समान उपकारी ❀ नहिंकोउ सुर नर मुनि तनुधारी
प्रतिउपकार करौं का तोरा ❀ सम्मुख ह्वै न सकत मनमोरा
सुनु सुत तोहिं उऋण मैं नाहीं ❀ देखेउँ करि विचार मनमाहीं
पुनिपुनिकपिहिचितवसुरत्राता[5] ❀ लोचननीर पुलकि अतिगाता

दो० सुनि प्रभुवचनविलोकिमुख, हृदय हर्ष हनुमन्त।
चरण परेउ परमाकुल, त्राहि त्राहि भगवन्त॥

बारबार प्रभु चहत उठावा ❀ प्रेम मगन तेहि उठब न भावा
प्रभुपदपङ्कज[6] कपिकर शीशा ❀ सुमिरिसो दशा मगनगौरीशा[7]
सावधान मन करि पुनि शंकर ❀ लागे कहन कथा अतिसुन्दर
कपि उठाय प्रभु हृदय लगावा ❀ करगहि परम निकट बैठावा
कहु कपि रावणपालित लंका ❀ केहि विधि दहेउ दुर्ग अतिबंका
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना ❀ बोले वचन विगत अभिमाना
शाखामृग की अति मनुसाई ❀ शाखा ते शाखा पर जाई
लांघि सिन्धु हाटकपुर जारा ❀ निशिचरगणबधिविपिन[8]उजारा
सो सब तव प्रताप रघुराई ❀ नाथ न कछुक मोरि प्रभुताई

दो० ताकहँ प्रभु कछुअगम नहिं, जापर तुम अनुकूल।

१ अग्नि २ रुई ३ हवा ४ देवतों के दो हज़ार युग ५ रक्षक ६ कमल ७ शिव ८ बन॥

तव प्रताप बड़वानलहि, जारि सकै खल तूल ॥
सुनत वचन प्रभु बहु सुखमाना ❋ मनक्रमवचन दास निजजाना
मांगु वचन सुत वरअनुकूला ❋ देउँ आजु तुमकहँ सुखमूला
नाथ भक्ति तव सब सुखदायिनि ❋ देहुकृपाकरि सो अनपायिनि
सुनि प्रभु परमसरल कपिबानी ❋ एवमस्तु तब कहेउ भवानी
उमा[2] रामस्वभाव जिनजाना ❋ ताहिभजनतजि भाव न आना
यह संवाद जासु उर आवा ❋ रघुपति चरणभक्ति तेइँ पावा
सुनि प्रभु वचन कहैं कपिवृन्दा ❋ जय जय जय कृपालुसुखकन्दा
तब रघुपति कपिपतिहि बुलावा ❋ कहा चलैकर करहु बनावा
अब विलम्ब केहि कारण कीजै ❋ तुरत कपिनकहँ आयसु[3] दीजै
कौतुक देखि सुमन सुर वर्षे ❋ नभ ते भवन चले अति हर्षे
दो० कपिपति वेगि बुलायउ, आये यूथपयूथ।
नानावरण अतुलबल, वानर भालु वरूथ ॥
प्रभु पद पङ्कज[4] नावहिं शीशा ❋ गर्जहिं भालु महाबल कीशा
देखी राम सकल कपिसैना ❋ चितव कृपाकरि राजिवनैना
रामकृपा बल पाइ कपिन्दा ❋ भये पक्षयुत मनहुँ गिरिन्दा
हरषि राम तब कीन्ह पयाना[5] ❋ शकुन भये सुन्दर शुभनाना
जासु सकल मंगलमय कीती ❋ तासु पयान शकुन यह नीती
प्रभु पयान जाना वैदेही ❋ फरके वामअंग शुभतेही
जो जो शकुन जानकिहि होई ❋ अशकुन भयउ रावणहिंसोई
चला कटक[6] को वरणै पारा ❋ गरजहिं वानर भालु अपारा
नख आयुध गिरि पादँप[7]धारी ❋ चले गगन महि इच्छाचारी
केहरि नाद भालु कपि करहीं ❋ डगमगाहिं दिग्गज चिकरहीं
छं० चिक्करहिंदिग्गजडोलमहि गिरिलोलसागरखरभरे।
मनहर्ष दिनकर[8] सोम सुर मुनि नाग किन्नर दुखटरे ॥

१ पुत्र २ पार्वती ३ आज्ञा ४ कमल ५ कूच ६ फ़ौज ७ वृक्ष ८ सूर्य ॥

कटकटहिं मर्कट विकटभट बहुकोटिकोटिन धावहीं ।
जयराम प्रबल प्रताप कोशलनाथ गुणगण गावहीं ॥
सकसहि न भार अपार अहिपति बारबार विमोहई ।
गहि दशन पुनिपुनि कमठपीठकठोर सो किमिसोहई ॥
रघुवीर रुचिर पयान प्रास्थिति जानि परम सुहावनी ।
जनु कमठखप्पर सर्पराज सो लिखतअविचलपावनी ॥
दो॰ यहिविधि जाइ कृपानिधि, उतरे सागर तीर ।
जहँ तहँ लागे खान फल, भालु विपुलकपिवीर ॥

उहां निशाचर रहहिं सशंका ❋ जबते जारिगयउ कपि लंका
निज निज गृहसब करें विचारा ❋ नहिं निशिचरकुलकेर उबारा
जासु दूतबल वरणि न जाई ❋ तेहि आये पुर कवनि भलाई
दूतिन सन सुनि पुरजन बानी ❋ मन्दोदरी हृदय अकुलानी
रहसि जोरिकर पतिपद लागी ❋ बोली वचन नीतिरस पागी
कन्त कर्ष हरिसन परिहरहू ❋ मोर कहा अतिहित चित धरहू
समुझत जासु दूतकी करणी ❋ स्रवहिं गर्भ रजनीचरघरणी
तासु नारि निज सचिव बुलाई ❋ पठवहु कन्त जो चहहु भलाई
तव कुलकमल विपिन दुखदाई ❋ सीता शीतनिशासम आई
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें ❋ हित न तुम्हार शम्भुअजकीन्हें
दो॰ रामबाण अहिगण सरिस, निकरनिशाचरभेकं ।
जबलगिग्रसत न तबहिंलगि, यतनकरहुताजिटेक ॥
श्रवण सुनत शठ ताकी बानी ❋ विहँसाजगतविदितअभिमानी
सभय स्वभाव नारिकर सांचा ❋ मंगल महँ भय मन अतिकांचा
जो आवै मरकट कटकाई ❋ जियहिंविचारे निशिचरखाई
कम्पहिं लोकप जाके त्रासा ❋ तासुनारि भयकरि बड़िहासा

१ उद्यत २ वैर ३ गिरते हैं ४ वन ५ मेढ़क ६ बन्दर ७ डर ॥

असकहि विहँसि ताहि उरलाई ❀ चलेउ सभा ममताअधिकाई
मन्दोदरी हृदय कर चीता ❀ भयो कन्तपर विधि विपरीता
बैठेउ सभा खबरि अस पाई ❀ सिन्धुपार सेना सब आई
बूझेसि सचिव उचितमत कहहू ❀ ते सब हँसे मौन करि रहहू
जितेहु सुरासुर तब श्रम नाहीं ❀ नर वानर केहि लेखे माहीं

दो० सचिव वैद्य गुरु तीनि जो, प्रिय बोलहिं भयआश।
राज धर्म तन तीनकर, होइ वेगिही नाश॥

सोइ रावण कहँ बनी सहाई ❀ अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई
अवसर जानि विभीषण आवा ❀ भ्राता चरण शीश तेहि नावा
पुनि शिरनाइ बैठ निजआसन ❀ बोला वचन पाइ अनुशासन
जो कृपालु पूँछेहु मोहिं बाता ❀ मति अनुरूप कहब मैं ताता
जो आपन चाहो कल्याना ❀ सुयशसुमतिशुभगतिसुखनाना
तौ परनारि लिलार गुसाईं ❀ तजौ चौथिचन्दा की नाईं
चौदह भुवन एक पति होई ❀ भूत द्रोह तिष्ठै नहिं सोई
गुणसागर नागर नर जोऊ ❀ अल्पलोभ भल कहै न कोऊ

दो० काम क्रोध मद लोभ सब, नाथ नरककर पन्थ।
सब परिहरि रघुवीर पद, भजहु कहहिं सदग्रन्थ॥

तात राम नहिं नर भूपाला ❀ भुवनेश्वर कालहु के काला
ब्रह्म अनामय अज भगवन्ता ❀ व्यापकअजितअनादिअनन्ता
गो द्विज धेनु देव हितकारी ❀ कृपासिन्धु मानुष तनुधारी
जनरञ्जन भञ्जन खल व्राता ❀ वेद धर्म्म रक्षक सुरत्राता
ताहि वैर तजि नाइय माथा ❀ प्रणतारति भञ्जन रघुनाथा
देहु नाथ प्रभुकहँ वैदेही ❀ भजहु राम बिनुकाम सनेही
शरण गये प्रभु ताहु न त्यागा ❀ विश्वद्रोहकृत अघ जेहि लागा
जासु नाम त्रयताप नशावन ❀ सोइप्रभु प्रकटसमुझुजियरावन

१ माथा २ चतुर ३ छोड़के ४ नाराग ५ ब्राह्मण ६ समूह ७ देवता ८ पाप॥

दो० बारबार पद लागौं, विनयकरौंदशशीश।
परिहरि मान मोह मद, भजहुकोशलाधीश॥
मुनिपुलस्त्यनिजशिष्यसन, कहिपठई यह बात।
तुरत सो मैं तुमसन कही, पायसुअवसरतात॥

मालवन्त अति सचिव सयाना ❋ तासुवचनसुनि अति सुखमाना
तात अनुज तव नीतिविभूषण ❋ सोइ उरधरहु जो कहत विभीषण
रिपुउतकर्ष कहत शठ दोऊ ❋ दूरि न करहु इहां है कोऊ
मालवन्त गृह गयउ बहोरी ❋ कहेउ विभीषण पुनि कर जोरी
सुमति कुमति सबके उर रहई ❋ नाथ पुराण निगम अस कहई
जहां सुमति तहँ सम्पति नाना ❋ जहां कुमति तहँ विपतिनिदाना
तव उर कुमति बसी विपरीती ❋ हित अनहित मानहु रिपुप्रीती
कालरात्रि निशिचरकुलकेरी ❋ तेहि सीतापर प्रीति घनेरी

दो० तात चरण गहि मांगौं, राखहु मोर दुलार।
सीता देहु रामकहँ, अतिहित होइ तुम्हार॥

बुध पुराण श्रुति सम्मति बानी ❋ कही विभीषण नीति बखानी
सुनत दशानन उठा रिसाई ❋ खलतोहिंमृत्युनिकटचलिआई
जियसि सदा शठ मोर जियावा ❋ रिपुकर पक्ष मूढ़ तोहिं भावा
कहसि न खल अस को जगमाहीं ❋ भुजबल जेहिं जीता हम नाहीं
ममपुर बसि तपसिनपर प्रीती ❋ शठ मिलुजाइ तिनहिं कहु नीती
असकहि कीन्हेसि चरणप्रहारा ❋ अनुज गहे पद बारहिंबारा
उमा सन्त की यही बड़ाई ❋ मन्द करत जो करै भलाई
तुम पितुसरिस भले मोहिं मारा ❋ राम भजे हित नाथ तुम्हारा
सचिव संगलै नभपंथ गयऊ ❋ सबहि सुनाइ कहत अस भयऊ

दो० राम सत्यसंकल्प प्रभु, सभा कालवश तोरि।
मैं रघुनायक शरण अब, जाउँ खोरि नहिं मोरि॥

१ मौका २ हाथ ३ वेद ४ शत्रु ५ पार्वती ६ आकाशमार्ग ७ कलंक॥

असकहि चला विभीषण जबहीं ❀ आयुहीन भे निशिचर तबहीं
साधुअवज्ञा[1] तुरत भवानी ❀ कर कल्याण अखिल कर हानी
रावण जबहिं विभीषण त्यागा ❀ भयो विभव बिनु तबहिं अभागा
चलेउ हरषि रघुनायकपाहीं ❀ करत मनोरथ बहु मनमाहीं
देखिहौं जाइ चरणजलजाता[2] ❀ अरुण मृदुल सेवक सुखदाता
जे पद परसि तरी ऋषिनारी[3] ❀ दण्डक कानन पावनकारी
जे पद जनकसुता उरलाये ❀ कपट कुरंग[4] संग धरिधाये
हर उर सर सरोजपद जोई ❀ अहोभाग्य मैं देखब सोई

दो० जिन पायँन की पादुका[5], भरत रहे मनलाइ।
ते पद आजु विलोकिहौं, इन नयनन अबजाइ॥

यहिविधि करत सप्रेम विचारा ❀ आये सपदि[6] सिन्धु के पारा
कपिन विभीषण आवत देखा ❀ जानेउ कोउ रिपुदूत विशेखा
ताहि राखि कपिपतिपहँ आये ❀ समाचार सब तिनहिं सुनाये
कह सुग्रीव सुनिय रघुराई ❀ आवा मिलन दशाननभाई
कह प्रभु सखा बूझिये काहा ❀ कहा कपीश सुनहु नरनाहा
जानि न जाइ निशाचरमाया ❀ कामरूप केहिकारण आया
भेद हमार लेन शठ आवा ❀ राखिय बांधि मोहिं असभावा
सखा नीति तुम नीकि विचारी ❀ मम प्रण शरणागतभयहारी
सुनि प्रभुवचन हरषि हनुमाना ❀ शरणागत वत्सल भगवाना

दो० शरणागतकहँजेतजहिं, निजअनहितअनुमानि।
ते नर पामर[7] पापमय, तिनहिं विलोकत हानि॥

कोटि विप्रबध लागहिं जाहू ❀ आये शरण तजौं नहिं ताहू
सम्मुख होइ जीव मोहिं जबहीं ❀ जन्मकोटिअघ नाशौं तबहीं
पापवन्तकर सहज स्वभाऊ ❀ भजन मोर तेहि भाव न काऊ[8]
जो पै दुष्ट हृदय सो होई ❀ मोरे सम्मुख आव कि सोई

१ अपमान २ कमल ३ अहल्या ४ मृग ५ खड़ाऊँ ६ शीघ्र ७ नीच ८ कभी॥

निर्मल मन जन सो मोहिं पावा ❀ मोहिं कपट छल छिद्र न भावा
भेद लेन पठवा दशशीशा ❀ तबहुँ न कछु भयहानि कपीशा
जगमहँ सखा निशाचर जेते ❀ लक्ष्मण हनहिं निमिषमहँ तेते
जो सभीत आवा शरणाई ❀ रखिहौं ताहि प्राणकी नाईं

दो० उभय[1] भांति लैआवहु, हँसि कह कृपानिधान।
जयकृपालु कहि कपिचले, अङ्गदादि हनुमान॥

सादर तेहि आगे करि वानर ❀ चले जहां रघुपति करुणाकर
दूरिहिते देखे दोउ भ्राता ❀ नयनानन्ददान के दाता
बहुरि राम छविधाम विलोकी ❀ रहे ठिठुकि इकटक पल रोकी
भुजप्रलम्ब कञ्जारुण[2] लोचन ❀ श्यामलगात प्रणत भयमोचन
सिंहकन्ध आयत उरसोहा ❀ आनन[3] अमित मदन[4] छविमोहा
नयननीर पुलकित अतिगाता ❀ मन धरिधीर कही मृदुवाता
नाथ दशानन कर मैं भ्राता ❀ निशिचर वंश जन्म सुरत्राता
सहज पापप्रिय तामसदेहा ❀ यथा उलूकहिं[5] तम[6]पर नेहा

दो० श्रवणसुयश सुनि आयऊं, प्रभु भञ्जन भवभीर।
त्राहि त्राहि आरतहरण, शरणसुखद रघुवीर॥

असकहि करत दण्डवत देखा ❀ तुरत उठे प्रभु हर्ष विशेखा
दीनवचन सुनि प्रभुमन भावा ❀ भुजविशाल गहि हृदय लगावा
अनुजसहित मिलि ढिगबैठारी ❀ बोले वचन भक्तभयहारी
कहु लंकेश सहित परिवारा ❀ कुशल कुठाहर वास तुम्हारा
खलमण्डली बसहु दिनराती ❀ सखा धर्म निबहै केहि भांती
मैं जानौं तुम्हारि सब रीती ❀ अतिशयनिपुण न भाव अनीती
बरु भलवास नरककर ताता ❀ दुष्टसंग जनि देइ विधाता
अब पद देखि कुशल रघुराया ❀ जो तुम कीन्ह जानिजनदाया

दो० तबलगिकुशल न जीवकहँ, सपनेहु मन विश्राम[7]।

१ दोनों २ लालकमल ३ मुख ४ कामदेव ५ घुग्घूपक्षी ६ अँधेरा ७ आराम॥

जबलगि भजन न रामके, शोकधामतजिकाम ॥
तबलगि हृदय बसत खलनाना ❀ लोभ मोह मत्सर मद माना
जबलगि उर न बसत रघुनाथा ❀ धरे चाप शायक कटिभाथा
ममता तिमिर[1] तरुण अँधियारी ❀ राग द्वेष उलूक सुखकारी
तबलगि बसत जीव मनमाहीं ❀ जबलगि प्रभुप्रताप रवि नाहीं
अब मैं कुशल मिटे भवभारे ❀ देखि राम पदकमल तुम्हारे
तुम कृपालु जापर अनुकूला ❀ ताहि न व्याप त्रिविध भवशूला
मैं निशिचर अतिअधमस्वभाऊ ❀ शुभआचरण कीन्ह नहिं काऊ
जासु रूप मुनि ध्यान न पावा ❀ सो प्रभु हरषि हृदय मोहिं लावा
दो॰ अहोभाग्यमम[2]अमित[3]अति, रामकृपा सुखपुंज।
देखेउँ नयन विरंचि शिव, सेव्य युगल पदकंज॥
सुनहु सखा निज कहहुँ स्वभाऊ ❀ जानु भुशुण्डि शंभु गिरिजाऊ
जो नर होइ चराचर द्रोही ❀ आवै सभय शरणतकि मोही
तजि मद मोह कपट छलनाना ❀ करौं सद्य[4] तेहि साधु समाना
जननी जनक बन्धु सुत दारा[5] ❀ तन धन भवन सुहृद परिवारा
सबकै ममताताग बटोरी ❀ ममपद मनहिं बांधि बटिडोरी
समदरशी इच्छा कछु नाहीं ❀ हर्ष शोक[6] भय नहिं मनमाहीं
अस सज्जन ममउर बस कैसे ❀ लोभीहृदय बसत धन जैसे
तुमसारिखे सन्त प्रियमोरे ❀ धरौं देह नहिं आन निहोरे
दो॰ सगुण उपासक परमहित, निरत[7] नीति दृढ़ नेम।
ते नर प्राणसमान मोहिं, जिनके द्विजपद प्रेम ॥
सुनु लङ्केश सकल गुण तोरे ❀ ताते तुम अतिशय प्रियमोरे
रामवचन सुनि वानरयूथा ❀ सकल कहहिं जय कृपावरूथा
सुनत विभीषण प्रभुकी बानी ❀ नहिं अघात श्रवणामृत जानी
पदअम्बुज[8] गहि बारहिंबारा ❀ हृदय समात न प्रेम अपारा

१ अंधेरा २ मेरे ३ बेप्रमाण ४ ढेर ५ तुरन्त ६ स्त्री ७ दुःख ८ लगाहुआ ९ चरणकमल ॥

सुनहु देव सचराचरस्वामी ❁ प्रणतपाल उर अन्तरयामी
उर कछु प्रथम वासना रहेऊ ❁ प्रभुपद प्रीति सरित सो बहेऊ
अब कृपालु निजभक्ति पावनी ❁ देहु सदा शिवमन भावनी
एवमस्तु कहि प्रभु रणधीरा ❁ मांगा तुरत सिन्धुकर नीरा[1]
यदपि सखा तोहिं इच्छा नाहीं ❁ मम दर्शन अमोघ[2] जगमाहीं
असकहि राम तिलक तेहिसारा ❁ सुमन[3]वृष्टि नभ भई अपारा

दो० रावण क्रोधानल सरिस, श्वास समीर[4] प्रचण्ड।
जरत विभीषण राखेऊ, दीन्हेउ राज अखण्ड॥
जो सम्पति शिव रावणहिं, दीन्ह दिये दशमाथ।
सो सम्पदा विभीषणहिं, सकुचि दीन्ह रघुनाथ॥

अस प्रभु छांड़ि भजहिं जे आना ❁ ते नर पशु बिनुपूंछ विषानाँ[5]
निजजन जानि ताहि अपनावा ❁ प्रभुस्वभाव कपिकुल मनभावा
पुनि सर्वज्ञ सर्वउरवासी ❁ सर्वरूप सबरहित उदासी
बोले वचन नीतिप्रतिपालक ❁ कारण मनुज दनुज[6]कुलघालक
सुनु कपीश लंकापति वीरा ❁ केहिविधिउतरियजलधिगँभीरा
संकुल उरग[7] मकर झषजाती ❁ अतिअगाध दुस्तर सब भांती
कह लंकेश सुनहु रघुनायक ❁ कोटि सिंधु शोषक तवशायक
यद्यपि तदपि नीति अस गाई ❁ विनयकरिय सागरपहँ जाई

दो० प्रभुतुम्हारकुलगुरुजलधि, कहहि उपाय विचारि।
बिनुप्रयास सागर तरहिं, सकलभालुकपिधारि॥

सखा कहो तुम नीक उपाई ❁ करब देव जो होइ सहाई
मन्त्र न यह लक्ष्मण मनभावा ❁ रामवचन सुनि अति दुखपावा
नाथ दैवकर कवन भरोसा ❁ शोषिय सिन्धु करिय मनरोसा[9]
कादरमनकर एक अधारा ❁ दैव दैव आलसी पुकारा
सुनत बिहँसि बोले रघुवीरा ❁ ऐसइ करब धरहु मन धीरा

१ जल २ सफल ३ पुष्प ४ पवन ५ सींग ६ दैत्य ७ समुद्र ८ सांप ९ क्रोध॥

असकहि प्रभु अनुजहिसमुझाई ❀ सिन्धु समीप गये रघुराई
प्रथम प्रणाम कीन्ह प्रभु जाई ❀ बैठे तट पुनि दर्भ डसाई
जबहिं विभीषण प्रभुपहँ आये ❀ पाछे रावण दूत पठाये

दो० सकल चरित उन देखेउ, धरे कपट कपिदेह।
प्रभुगुणहृदयसराहिअति, शरणागत पर नेह॥

प्रकट बखानत रामस्वभाऊ ❀ अतिसप्रेम गा बिसरि दुराऊ
रिपुकेदूत कपिन जब जाने ❀ तिनहिंबांधि कपिपतिपहँ आने
कह सुग्रीव सुनहु सब वनचर ❀ अंगभंग करि पठवहु निशिचर
सुनि सुग्रीववचन कपि धाये ❀ बांधि कटक चहुँ पास फिराये
बहु प्रकार मारन कपि लागे ❀ दीन पुकारत तदपि न त्यागे
जो हमार हर नासा काना ❀ तेहि कोशलाधीशकर आना
सुनि लक्ष्मण तब निकट बुलाये ❀ दया लागि हँसि दीन्ह छुड़ाये
रावणकर दीन्हेउ यह पाती ❀ लक्ष्मणवचन बांचु कुलघाती

दो० कहेउ मुखागर मूढ़सन, मम सन्देश उदार।
सीता देहु मिलहु नतु, आवा काल तुम्हार॥

तुरत नाइ लक्ष्मणपद माथा ❀ चले दूत वरणत गुणगाथा
कहत रामयश लंकहि आये ❀ रावणचरण शीश तिननाये
बिहँसि दशानन पूंछेसि बाता ❀ कहसि न शुकआपनिकुशलाता
पुनि कहु कुशल विभीषण केरी ❀ जासु मृत्यु आई अतिनेरी
करत राज लंका शठ त्यागा ❀ होइहि यवकरकीटं अभागा
पुनि कहु भालु कीश कटकाई ❀ कठिन काल प्रेरित चलिआई
तिनके जीवनकर रखवारा ❀ भयउ मृदुलचित सिन्धु बिचारा
कहु तपसिनकैबात बहोरी ❀ जिनके हृदय त्रास बड़ि मोरी

दो० भई भेंट की फिरिगये, श्रवणसुयश सुनिमोर।
कहसि न रिपुदलतेजबल, कस चकित चिततोर॥

१ कुश २ फ़ौज ३ नाक ४ रामजी ५ हाथ ६ कथा ७ घुन ८ ऋक्ष ९ डर॥

नाथ कृपाकरि पूंछेहु जैसे ❀ मानहुँ वचन क्रोध तजि तैसे
मिलाजाइ जब अनुज तुम्हारा ❀ जातहि राम तिलक तेहिसारा
रावणदूत हमहिं सुनि काना ❀ कपिन बांधि दीन्हे दुखनाना
श्रवण नासिका काटन लागे ❀ रामशपथ दीन्ही तब त्यागे
पूंछहु नाथ कीशकटकाई ❀ वदन कोटि शत वरणि न जाई
नाना वरण भालु कपि धारी ❀ विकटानन विशाल भयकारी
जेइँ पुर दहेउ बधेउ सुततोरा ❀ सकल कपिनमहँ तेहिबल थोरा
अमित नाम भट कठिन कराला ❀ अमित नागबलविपुलविशाला

दो० द्विविद मयन्दरु नील नल, अंगदादि विकटासि।
दधिमुख केहरि कुमुद गव, जामवन्त बलरासि॥

ये कपि सब सुग्रीव समाना ❀ इनसम कोटि गनै को नाना
रामकृपा अंतुलित बल तिनहीं ❀ तृण समान त्रयलोकहि गिनहीं
अस मैं श्रवण सुना दशकन्धर ❀ पद्म अठारह यूथप बन्दर
नाथ कटकमहँ सो कपि नाहीं ❀ जो न तुम्हैं जीतहि रणमाहीं
परमक्रोध मींजहिं सब हाथा ❀ आयसु पै न देहिं रघुनाथा
शोषहिं सिन्धुसरितझर्षव्याला ❀ फारहिं नखधरि कुधैर विशाला
मर्दि गर्द मिलवहिं दशशीशा ❀ ऐसे वचन कहहिं सब कीशा
गर्जहिं तर्जहिं सहज अशंका ❀ मानहु ग्रसन चहत अब लंका

दो० सहज शूर कपि भालु सब, पुनि शिरपर श्रीराम।
रावण कोटिन काल कहँ, जीति सकहिं संग्राम॥

राम तेज बल बुधि विपुलाई ❀ शेष सहस शत सकहिं न गाई
सक शर एक शोषि शत सागर ❀ तव भ्रातहिं पूंछेउ नयनागर
तासु वचन सुनि सागर पाहीं ❀ मांगत पन्थ कृपा मनमाहीं
सुनत वचन विहँसा दशशीशा ❀ जो अस मति सहायकृत कीशा
सहज भीरु कर वचन दृढ़ाई ❀ सागरसन ठानी मचलाई

१ सौगंद २ बन्दर ३ बेप्रमाण ४ मछली ५ पहाड़ ६ निडर ७ रास्ता ८ डरपोक॥

मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई ❀ रिपुबलबुद्धि थाह मैं पाई
सचिव सभीत विभीषण जाके ❀ विजयविभूति कहांलगि ताके
सुनि खलवचन दूत रिस बाढ़ी ❀ समय विचारि पत्रिका काढ़ी
रामअनुज दीन्ही यह पाती ❀ नाथ बँचाइ जुड़ावहु छाती
बिहँसि वामकर लीन्हेसि रावन ❀ सचिवबोलि शठ लागबँचावन

दो० बातन मनहिंरिझाव शठ, जनिघालसिकुलखीश।
रामविरोध न उबरिहसि, शरण विष्णु अज[1] ईश[2]॥
होसि मानतजि अनुजइव, प्रभु पदपंकज[3] भृङ्ग[4]।
होहि रामशरअनल[5] खल, जनिकुल सहितपतङ्ग[6]॥

सुनत सभय मनमहँ मुसुकाई ❀ कहत दशानन सबहिं सुनाई
भूमि परा कर गहत अकासा ❀ लघुतापस कर वाकविलासा
कह शुक नाथ सत्य सब बानी ❀ समुझहुछांड़िप्रकृतिअभिमानी
सुनहु वचन मम पँरिहरि[7] क्रोधा ❀ नाथ रामसन तजहु विरोधा
अतिकोमल रघुवीर स्वभाऊ ❀ यद्यपि अखिललोककर राऊ
मिलत कृपा प्रभु तुमपर करिहैं ❀ उर अपराध न एकौ धरिहैं
जनकसुता[8] रघुनाथहिं दीजै ❀ इतना कहा मोर प्रभु कीजै
जब तेइँ देन कहेउ वैदेही ❀ चरणप्रहार कीन्ह शठ तेही
चरणनाइ शिर चला सो ताहां ❀ कृपासिन्धु रघुनायक जाहां
करि प्रणाम निजकथा सुनाई ❀ रामकृपा आपनिगति पाई
ऋषि अगस्त्यकर शाप भवानी ❀ राक्षस भयउ रहा मुनिज्ञानी
वन्दि रामपद बारहिंबारा ❀ पुनि निजआश्रमकहँ पगुधारा

दो० विनयन मानत जलधिजड़, गये तीनि दिनबीति।
बोले राम सकोप तब, भयबिनुहोय न प्रीति॥

लक्ष्मण बाण शरासन आनू ❀ शोषै वारिधि विशिखकृशानू
शठसन विनय कुटिलसन प्रीती ❀ सहज कृपणसन सुन्दर नीती

१ ब्रह्मा २ शम्भु ३ कमल ४ भौंरा ५-६ अग्नि ६ पांखी ७ छोड़के ८ सीता॥

ममतारतसन ज्ञानकहानी ❀ अतिलोभीसन विरति बखानी
क्रोधिहिशम कामिहि हरिकथा ❀ ऊषर बीज बये फल यथा
अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा ❀ यहमत लक्ष्मण के मनभावा
सन्धानेउ प्रभु विशिखकराला ❀ उठी उदधिउरअन्तर ज्वाला
मकर उरग झषगण अकुलाने ❀ जरत जन्तु जलनिधि जबजाने
कनकथार भरि मणिगण नाना ❀ विप्ररूप आये तजि माना

दो० काटे पै कदली फरै, कोटि यतन करि सींच।
विनय न मान खगेश सुनु, डाटेहि ते नव नीच॥

सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे ❀ क्षमहु नाथ सब अवगुण मेरे
गगन समीर अनल जल धरणी ❀ इनकी नाथ सहज जड़करणी
तव प्रेरित माया उपजाये ❀ सृष्टि हेतु सब ग्रन्थन गाये
प्रभुआयसु जेहिकहँ जसअहही ❀ सो तेहिभांति रहे सुख लहही
प्रभुभलकीन्ह मोहिं शिषदीन्हीं ❀ मर्य्यादा पुनि तुम्हरी कीन्हीं
ढोल गँवार शूद्र पशु नारी ❀ ये सब ताड़न के अधिकारी
प्रभुप्रताप मैं जाब सुखाई ❀ उतरिहि कटक न मोरि बड़ाई
प्रभुआज्ञा अपेल श्रुति गाई ❀ करहु वेगि जो तुमहिं सुहाई

दो० सुनत विनीतवचन अति, कह कृपालु मुसुकाइ।
जेहिविधिउतरै कपिकटक, तातसो करहु उपाइ॥

नाथ नील नल कपि दोउ भाई ❀ लरिकाईं ऋषिआशिष पाई
तिनके परस किये गिरिभारे ❀ तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे
मैं पुनि उरधरि प्रभु प्रभुताई ❀ करिहौं बल अनुमान सहाई
यहि विधि नाथ पयोधि बँधाइय ❀ जेहि यहसुयशलोकतिहुँगाइय
यहि शर मम उत्तरतट वासी ❀ हतहु नाथ खलगण अघरासी
सुनि कृपालु सागरमनपीरा ❀ तुरतहिं हरी राम रणधीरा
देखि रामबल अतुलितभारी ❀ हरषि पयोनिधि भयो सुखारी

१ समुद्र २ केला ३ आकाश ४ वायु ५ अग्नि ६ आज्ञा ७ फ़ौज ८ समुद्र॥

सकलचरितकहि प्रभुहिसुनावा ❀ चरणवन्दि पांथोधि सिधावा

छं० निजभवनगमनेउसिन्धुश्रीरघुवीरहियमतभायऊ।
यहचरितकलिमलहरणजसमति दासतुलसीगायऊ॥
सुखभवनसंशयदमन शमनविषाद रघुपतिगुणगना।
तजिसकलआशभरोसगावहिंसुनहिंसज्जनशुचिमना॥

दो० सकल सुमङ्गलदायक, रघुनायक गुणगान।
सादरसुनहिं ते तरहिं भव, सिन्धुविना जलयान॥

इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेसुन्दरकाण्डे
विमलवैराग्यसम्पादनोनामपञ्चमस्सोपानः ॥ ५ ॥



१ समुद्र २ घर ३ सन्देह ४ वश करना ५ शान्ति ६ दुःख ७ पवित्र ८ जहाज़ ॥

रा० लं० चि० नं० ११



श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीगोस्वामि

तुलसीदासकृत रामायण

लंकाकाण्ड

मङ्गलाचरणम् ॥

श्लोक ॥ रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं कालमत्तेभसिंहं योगीन्द्रं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्विकारम् । मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्मवृन्दैकदेवं वन्दे कुन्दावदातं सरसिजनयनं देवमुर्वीशरूपम् ॥ १ ॥ शङ्खेन्द्वाभमतीवसुन्दरतनुं शार्दूलचर्माम्बरं कालव्यालकरालभूषणधरं गङ्गाशशाङ्कप्रियम् । काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं श्रीशंकरं कामहम् ॥ २ ॥

दो॰ लव निमेष परमाणु युग, वर्ष कल्प शरचण्ड ।
भजसि न मन तेहि रामकहँ, काल जासु कोदण्ड ॥

सो॰ सिंधु वचन सुनि राम, सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ ।
अब विलम्ब केहि काम, रचहु सेतु उतरै कटक ॥
सुनहु भानुकुलकेतु, जाम्बवन्त करजोरि कह ।
नाथ नाम तव सेतु, नर चढ़ि भवसागर तरहिं ॥

यह लघुजलधि तरत कतवारा ❀ असतुनि पुनिकह पवनकुमारा
प्रभुप्रताप बड़वानल भारी ❀ शोषेउ प्रथम पयोनिधि वारी
तव रिपुनारिरुदन जलधारा ❀ भस्यो बहोरि भयो तेहि खारा
सुनि असउक्ति पवनसुतकेरी ❀ बिहँसे रघुपति कपितन हेरी
जाम्बवन्त बोले दोउ भाई ❀ नल नीलहिं सबकथा सुनाई
रामप्रताप सुमिरि उरमाहीं ❀ करहु सेतु प्रयास कछु नाहीं
बोलिलिये कपिनिकर बहोरी ❀ सकल सुनहु बिनती इकमोरी
रामचरणपङ्कज उर धरहू ❀ कौतुक एक भालु कपि करहू
धावहु मर्कट विकट वरूथा ❀ आनहु विटप गिरिन के यूथा
सुनि कपि भालु चले करि हूहा ❀ जय रघुवीर प्रतापसमूहा

दो० अति उतंग तरु शैलगण, लीलहिं लेहिं उठाइ।
आनि देहिं नल नीलकहँ, विरचहिं सेतु बनाइ॥

शैल विशाल आनि कपि देहीं ❀ कन्दुकइव नल नील सो लेहीं
देखि सेतु अतिसुन्दर रचना ❀ बिहँसि कृपानिधि बोले वचना
परम रम्य सुन्दर यह धरणी ❀ महिमा अमित जाइ नहिंवरणी
करिहौं इहां शम्भु थापना ❀ मोरे हृदय परम कल्पना
सुनि कपीश बहु दूत पठाये ❀ मुनिवर निकर बोलि लै आये
लिंग थापि विधिवत करि पूजा ❀ शिव समान प्रिय मोहिं न दूजा
शिवद्रोही मम दास कहावै ❀ सो नर स्वप्नेहु मोहिं न भावै
शंकर विमुख भक्ति चह मोरी ❀ सो नर मूढ़ मन्द मति थोरी

दो० शङ्करप्रिय मम द्रोही, शिवद्रोही मम दास।
ते नर करहिं कल्पभरि, घोर नरक महँ वास॥

जो रामेश्वर दर्शन करिहैं ❀ सो तनु तजि ममधाम सिधरिहैं
जो गङ्गाजल आनि चढ़ाइहि ❀ सो सायुज्यमुक्ति नर पाइहि
है अकाम जो छल तजि सेइहि ❀ भक्तिमोरि तेहि शङ्कर देइहि

१-३ समुद्र २ अग्नि ४ पुल ५ कमल ६ कुण्ड ७ वृक्ष ८ गेंद॥

ममकृत सेतु जे दर्शन करिहैं ❋ ते विनुश्रम भवसागर तरिहैं
रामवचन सब के मन भाये ❋ मुनिवर निजनिज आश्रमआये
गिरिजा[1] रघुपतिकी यह रीती ❋ सन्तत करहिं प्रणतपर प्रीती
बांधेउ सेतु नील नल नागर ❋ रामकृपा यश भयउ उजागर
बूड़हिं आनहिं बोरहिं जेई ❋ भये उपल बोहितसम तेई
महिमा यह न जलधि[2]की वरणी ❋ पाहनगुण न कपिनकी करणी

दो० श्रीरघुवीर प्रताप ते, सिन्धु तरे पाषान।
ते मतिमन्द जे राम तजि, भजहिं जाय प्रभु आन॥

बांधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा ❋ देखि कृपानिधि के मन भावा
चली सेन[3] कछु वरणि न जाई ❋ गरजहिं मरकट भट समुदाई
सेतुबन्ध ढिग चढ़ि रघुराई ❋ चितव कृपालु सिन्धु बहुताई
देखन कहँ प्रभु करुणाकन्दा ❋ प्रकट भये सब जलचर वृन्दा
नाना मकर नक्र झष[4] व्याला ❋ शतयोजन तनु परमविशाला
ऐसे एक तिनहिं धरिखाहीं ❋ एकन के डर एक पराहीं[5]
प्रभुहि विलोकहिं टरहिं न टारे ❋ मन हरषित सब भये सुखारे
तिनकी ओट न देखिय वारी ❋ मगन भये हरिरूप निहारी
चला कटक कछु वरणि न जाई ❋ को कहि सक कपिदलविपुलाई

दो० सेतुबन्ध भइ भीर अति, कपि नभपन्थ[6] उड़ाहिं।
अपरजलचरन उपरचढ़ि, बिनुश्रमपारहि जाहिं॥

अस कौतुक विलोकि दोउभाई ❋ बिहँसि चले कृपालु रघुराई
सेन सहित उतरे रघुवीरा ❋ कहि न जात कछु यूथपभीरा[7]
सिन्धु पार प्रभु डेरा कीन्हा ❋ सकलकपिनकहँ आयसु दीन्हा
खाहुजाइ फल मूल सुहाये ❋ सुनत भालु कपि जहँ तहँ धाये
सब तरु फले राम हितलागी ❋ ऋतुअनऋतुहिकालगतित्यागी
खाहिं मधुरफल विटपहिलावहिं ❋ लंका सम्मुख शिखर चलावहिं

१ पार्वती २ समुद्र ३ फ़ौज ४ मछली ५ भागते हैं ६ रास्ता ७ सेनप॥

जहँ कहुँ फिरत निशाचर पावहिं ❀ घेरि सकल तेहि नाचनचावहिं
दशनैन काटि नासिका काना ❀ कहि प्रभुसुयश देहिं तबजाना
जिन कर नासा कान निपाता ❀ तिन रावणहिं कही सब बाता
सुनत श्रवण वारिधि बन्धाना ❀ दशमुख बोलि उठा अकुलाना

दो० बांधेउ वननिधिनीरनिधि, जलधिसिन्धुवारीश।
सत्य तोयनिधि पङ्कनिधि, उदधिपयोधिनदीश॥

व्याकुलता निज समुझि बहोरी ❀ बिहँसि चलागृहकरिमतिभोरी
मन्दोदरी सुना प्रभु आये ❀ कौतुकही पाथोधि बँधाये
करगहिपतिहिभवननिजआनी ❀ बोली परम मनोहर बानी
चरण नाइ शिर अंचल रोपा ❀ सुनहु वचन पिय परिहरिकोपा
नाथ वैर कीजै ताही सों ❀ बुधिबल जीतिसकियजाही सों
तुमहिं रघुपतिहिं अंतर कैसा ❀ खलु खद्योत दिवाकर जैसा
अतिबल मधुकैटभ जिनमारा ❀ महावीर दितिसुत संहारा
जेहि बलि बांधि सहसभुज मारा ❀ सोइ अवतरेउ हरण महि भारा
तासु विरोध न कीजिय नाथा ❀ काल कर्म गुण जिनके हाथा

दो० रामहिं सौंपहु जानकी, नाइ कमलपद माथ।
सुत कहँ राज्य देइ वन, जाइ भजहु रघुनाथ॥

नाथ दीनदयालु रघुराई ❀ बाघौ सम्मुख गये न खाई
चाहिय करन सो सब करि बीते ❀ तुम सुर असुर चराचर जीते
वेद कहहिं अस नीति दशानन ❀ चौथेपनहिं जाइ नृप काननन
तासु भजन कीजिय तहँ भर्त्ता ❀ जो कर्त्ता पालक संहर्त्ता
सोइ रघुवीर प्रणत अनुरागी ❀ भजहु नाथ ममता मद त्यागी
मुनिवर यतन करहिं जेहि लागी ❀ भूप राज्य तजि होहिं विरागी
सोइ कोशलाधीश रघुराया ❀ आये करन तोहिंपर दाया
जो पिय मानहु मोर सिखावन ❀ होइहि सुयश तिहूँपुर पावन

१ राक्षस २ दांतों से ३ जुगुनू ४ सूर्य ५ पृथ्वी ६ वन ७ नाशनेवाला ८ त्यागी॥

दो॰ असकहि लोचन वारिभरि, गहिपद कम्पित गात।
नाथ भजहु रघुनाथपद, ममअहिवात न जात॥
तब रावण मयसुता उठाई ❀ कहै लाग खल निज प्रभुताई
सुनु तैं प्रिया मृषा भय माना ❀ जग योधा को मोहिं समाना
वरुण कुबेर पवन यम काला ❀ भुजबलजिते सकलदिक्पाला
देव दनुज नर सब वश मोरे ❀ कौनहेतु भय उपजा तोरे
नाना विधि कहि तेहि समुझाई ❀ सभा बहोरि बैठ सो जाई
मन्दोदरी हृदय अस जाना ❀ कालविवश उपजा अभिमाना
सभा जाइ मन्त्रिन सों बूझा ❀ करियकवनविधि रिपुँसनजूझा
कहहिंसचिवँसुनुनिशिचरनाहा ❀ बारबार प्रभु पूंछहु काहा
कहहु कवन भय करिय विचारा ❀ नर कपि भालु अहार हमारा
दो॰ वचन सबनके श्रवणसुनि, कह प्रहस्त करजोरि।
नीतिविरोध न करियप्रभु, मंत्रिनमति अतिथोरि॥
कहहिं सचिव सब ठकुरसुहाती ❀ नाथ न पूरि आव यहिभांती
वाँरिधि लांघि एक कपि आवा ❀ तासु चरित मनमहँ सबगावा
क्षुधा न रही तुमहिं तब काहू ❀ जारत नगर कस न धरि खाहू
सुनत नीक आगे दुखपावा ❀ सचिवन असमतप्रभुहिंसुनावा
जेइँ वाँरीश बँधायउ हेलाँ ❀ उतरे कपिदल सहित सुबेला
सो मनु मनुज खाब हम भाई ❀ वचन कहहु सब गाल फुलाई
सुनि ममवचनतात अतिआदर ❀ जनिमनगुणहुमोहिंकरिकादर
प्रियवाणी जे सुनहिं जे कहहीं ❀ ऐसे जग निकाय नर अहहीं
वचन परमहित सुनत कठोरे ❀ कहहिं सुनहिं ते नर जग थोरे
प्रथम बसीठँ पठव सुनु नीती ❀ सीतहि देइ करिय पुनि प्रीती
दो॰ नारि पाइ फिरि जाहिं जो, तौ न बढ़ाइय रार।
नाहिंतो सम्मुख समरमहँ, नाथ करिय हठ मार॥

१ मन्दोदरी २ झूठ ३ घमण्ड ४ शत्रु ५ मन्त्री ६-७ समुद्र ८ खेल ९ दूत॥

यह मत जो मानहु प्रभु मोरा ❋ उभय प्रकार सुयश जगतोरा
सुतसन कह दशकन्ध रिसाई ❋ असमततोहिंशठकौन सिखाई
अवहींते उर संशय होई ❋ वेणुंमूल सुत भयसि घमोई
सुनि पितुगिरा परुष अतिघोरा ❋ चलाभवन कहि वचनकठोरा
हितमत तोहिं न लागत कैसे ❋ कालविवश कहँ भेषंज जैसे
सन्ध्या समय जानि दशशीशा ❋ भवन चला निरखत भुजबीशा
लङ्काशिखर उपर आगारा ❋ अति विचित्र तहँ होय अखारा
बैठ जाय तेहि मन्दिर रावन ❋ लागे किन्नर गन्धर्व गावन
बाजैं ताल पखावज वीणा ❋ नृत्य करहिं अप्सरा प्रवीणा

दो० सुनासीर शत सरिस सो, सन्तत करै विलास।
परम प्रबल रिपु शीशपर, तदपि न कछु मनत्रास॥

इहां सुबेल शैल रघुवीरा ❋ उतरे सेनसहित अतिभीरा
शैलशृङ्ग इक सुन्दर देखी ❋ अति उतङ्ग समसुभग विशेखी
तहँ तरु किसलय सुमन सुहाये ❋ लक्ष्मण रचि निज हाथ डसाये
तेहिपर रुचिर मृदुल मृगछाला ❋ तेहि आसन आसीन कृपाला
प्रभुकृत शीश कपीश उछंगा ❋ वामदहिन दिशि चाप निषंगा
दुहुँ करकमल सुधारत बाना ❋ कह लंकेश मन्त्र लगिकाना
बड़भागी अङ्गद हनुमाना ❋ चरणकमल चापत विधिनाना
प्रभु पाछे लक्ष्मण वीरासन ❋ कटि निषंग कर बाण शरासन

दो० यहिविधि करुणाशीलगुण, धाम राम आसीन।
ते नर धन्य जो ध्यानयहि, रहत सदा लवलीन॥
पूरब दिशा विलोकि प्रभु, देखा उदित मयङ्क।
कहो सबहिं देखहुशशिहि, मृगपतिसरिसअशङ्क॥

पूरब दिशि गिरिगुहा निवासी ❋ परमप्रताप तेज बल रासी
मत्त नाग तम कुम्भ बिदारी ❋ शशि केहरी गगन वनचारी

१ बांस २ वाणी ३ औषध ४ मकान ५ तरकस ६ कमर ७ चन्द्रमा ८ हाथी॥

बिथुरे नभ मुक्ताहल तारा ❀ निशिसुन्दरी केर शृङ्गारा
कह प्रभु शशिमहँ मेचकताई[1] ❀ कहहु कहा निजनिजमति भाई
कह सुग्रीव सुनहु रघुराया ❀ शशिमहँ प्रकट भूमिकी छाया
मारेहु राहु शशिहि कह कोई ❀ उर महँ परी श्यामता सोई
कोउकहजबविधिरतिसुखकीन्हा ❀ सारभागशशिकर हरिलीन्हा
छिद्र सो प्रकट इन्दु[2]उर माहीं ❀ तेहि मग देखिय नभ परिछाहीं
कह प्रभु गरल बन्धु शशिकेरा ❀ अतिप्रीतम उर दीन्ह बसेरा
विषसंयुत कैर[3]निकर पसारी ❀ जारत विरहवन्त नर नारी

दो॰ कह मारुतसुत सुनहु प्रभु, शशितुम्हारप्रियदास।
तव मूरति विधु उरबसत, सोइ श्यामता भास ॥
पवनतनय के वचनसुनि, बिहँसे राम सुजान।
दक्षिणदिशाविलोकिप्रभु, बोले कृपानिधान ॥

देखु विभीषण दक्षिण आँसा[4] ❀ घनघमण्ड दामिनी विलासा
मधुर मधुर गर्जत घनघोरा ❀ होइ वृष्टि जनु उपल[5] कठोरा
कहत विभीषण सुनहु कृपाला ❀ होइ न तड़ित[6] न वारिद माला
लङ्का शिखर उपर आगारा ❀ तहँ दशकन्धर केर अखारा
छत्र मेघडम्बर शिरधारी ❀ सो जनु जलद घटा अतिकारी
मन्दोदरी श्रवँण[7] ताटंका[8] ❀ सोइ प्रभु जनु दामिनी दमंका
बाजहिं ताल मृदंग अनूपा ❀ सोइ रवसरिस सुनहु सुरभूपा
प्रभु मुसुकान देखि अभिमाना ❀ चाप चढ़ाइ बाण सन्धाना

दो॰ छत्र मुकुट ताटंक सब, हते एकही बान।
सबके देखत महि गिरे, मर्म न कोऊ जान ॥
यह कौतुककरि रामशर, प्रविश्यो आइ निषंग।
रावण सभा सशंक सब, देखि महा रसभंग ॥

१ श्यामता २ चन्द्रमा ३ किरण ४ दिशा ५ पत्थर ६ बिजली ७ कान ८ कर्णफूल ॥

कम्प न भूमि न मरुत विशेखा ❀ अस्त्रशस्त्र कोउ नयन न देखा
शोचहिं सब निजहृदय विचारी ❀ अशकुन भयउ भयंकर भारी
रावण दीख सभा भय पाई ❀ बिहँसि वचन कह युक्ति बनाई
शिरौ गिरे सन्तत शुभजाही ❀ मुकुटगिरे कस अशकुन ताही
शयनकरहु निजनिजगृह जाई ❀ गमने भवन सकल शिरनाई
मन्दोदरी शोच उर बसेऊ ❀ जबते श्रवणफूल महिखसेऊ
सजलनयन कह युग कर जोरी ❀ सुनहु प्राणपति विनती मोरी
राम विरोध कन्त परिहरहू ❀ जानि मनुज जनि हठ उरधरहू

दो० विश्वरूप रघुवंशमणि, करहु वचन विश्वास ।
लोक कल्पना वेद कह, अंग अंग प्रति जास ॥

पद पाताल शीश अजधामा ❀ अपर लोक अँग अँग विश्रामा
भृकुटिविलास भयंकर काला ❀ नयन दिवाकर कच घनमाला
जासु घ्राण अश्विनीकुमारा ❀ निशि अरु दिवस निमेषअपारा
श्रवण दिशादश वेद बखानी ❀ मारुत श्वास निगम निजबानी
अधर लोभ यम दशनकराला ❀ मायाहास बाहु दिक्पाला
आनन अनल अम्बुपति जीहा ❀ उतपति पालन प्रलय समीहा
रोमावलि अष्टादश भारा ❀ अस्थि शैल सरिता नस जारा
उदर उदधि अधगोकुयातना ❀ जगमय प्रभुकी बहुत कल्पना

दो० अहंकार शिव बुद्धि अज, मन शशि चित्त महान ।
मनुजवास चर अचर मय, रूपराशि भगवान ॥
असविचारिसुनुप्राणपति, प्रभुसन वैर बिहाइ ।
प्रीति करहु रघुवीरपद, मम अहिवात न जाइ ॥

बिहँसा नारिवचन सुनिकाना ❀ अहो मोहमहिमा बलवाना
नारिस्वभाव सत्य कवि कहई ❀ अवगुण आठ सदा उर रहई
सहसा अनृत चपलता माया ❀ भय अविवेक अशौच अदाया

१ पवन २ ब्रह्मा ३ सूर्य ४ बाल ५ नाक ६ हाड़ ७ छोड़के ८ झूठ ॥

रिपु[1]कर रूप सकल तैं गावा ❋ अतिविशाल भय मोहिं सुनावा
सो सब प्रिया सहज वश मोरे ❋ समुझिपरा प्रसाद अब तोरे
जानेउँ प्रिया तोरि चतुराई ❋ यहि मिसु[2] कहेउ मोरि प्रभुताई
तव[3] बतकही गूढ़ मृग[4]लोचनि ❋ समुझतसुखदसुनतभयमोचनि
मन्दोदरि मनमहँ अस ठयऊ ❋ पियहि कालवशमतिभ्रमभयऊ

दो० बहुविधिजल्प[5]तसकलनिशि, प्रातभये दशकन्ध।
सहज अशंक[6] सो लंकपति, सभागयो मदअन्ध॥

सो० फूलै फलै न बेत, यदपि सुधाँ[7] वर्षहिं जलद।
मूरुख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहिं विरञ्चिसम॥

अथ क्षेपक॥

दो० मन्त्रिनसहितदशानन, चढ़ेउ धवरहर जाय।
सारण कह तब राजसन, देखहु कपि समुदाय॥

ये जो सिंहनाद किलकरहीं ❋ सप्तताल उन्नत संचरहीं
सहसकोटि अतुलित बलवाना ❋ इनके सँग वानर परिमाना
रणअजीत ये सहज अशंका ❋ नाद सुने कांपै गढ़ लंका
सब निरखहु इनके लंगूरे ❋ जनु ऋतुपावस युग धनुपूरे
विश्वकर्म्मा के सुत गुणखानी ❋ इन परसे पय शिल उतरानी
बसहिं ताम्रगिरिकन्दर माहीं ❋ गोदावरी विमलजल पाहीं
अखिल आगे धावहिं वीरा ❋ इनपर कृपाकरहिं रघुवीरा
करहिं यमहु कर संगर ढीला ❋ कज्जलवरण नाम नल नीला

दो० पद्म अठारह कपि कटक, चल इनकी भुज छाहँ।
निजकर सुरभि[8] सुमन लै, रघुपति पूजी बाहँ॥

यह जो आवत अचल समाना ❋ चौदह ताड़ ऊंच परिमाना
वास पुलिन्दा के तट करई ❋ अम्बुदनिकर निरखि करधरई

१ बैरी २ बहाना ३ तुम्हारी ४ हरिण ५ बका ६ निडर ७ अमृत ८ सुगन्धित॥

रक्तकमलदल सम सब देहा ❋ जनु बिकसेउ सन्ध्याकरमेहा
हतै मेदिनी¹ पूंछ भँवाई ❋ लङ्का सौंह चितव जनु खाई
तारासुवन² बालिको जायो ❋ अतिजुझार रघुपति मन भायो
हृदय गगन यहिके प्रभु भानू ❋ पञ्च पदुम कपिनिकर पयानू
करै वज्र वासव³ कर भङ्गा ❋ उदयाचल कहँ लेइ उछङ्गा
परम चतुर सेनप यहि लागी ❋ रघुपतिकृपा परम बड़भागी

दो० पांव धरा धरि चापै, पन्नग⁴ होइ अकाज।
सेन अग्रसर देखहु, यह अङ्गद युवराज॥

यह जो श्वेत वरण तनु रेखा ❋ मनहुँ रजत⁵ गिरिशृङ्ग विशेखा
दीर्घकेश दारुण भुजदण्डा ❋ चपल चलत बलबुद्धि प्रचण्डा
वास करै जलनिधि के तीरा ❋ पान करै गोमती सुनीरा
नृप सुग्रीवकेर अधिकारी ❋ सबलव्यूह यह रचै सँवारी
जनमत चन्द्रहि ग्रसन उड़ाना ❋ यहिकर पुरुषारथ जगजाना
निरखिगगन राका⁶ शशिसोहा ❋ शिशुअजानतेहिलगिमनमोहा
धरणी धसकि धरन जब उड़ेऊ ❋ सत्तरियोजन ते पुनि फिरेऊ

दो० कोटि पञ्चशत मर्कट, रहैं सर्वदा साथ।
कालहुते रण लरिसकैं, कुमुदनाम कपिनाथ॥

ये देखहु जे चहुँदिशि घुमड़े ❋ मनहुँ लङ्क सावनघन उमड़े
आगू पीछू दशदिशि धावहिं ❋ शिला शृङ्ग तरु तोरतआवहिं
सहसनाग बल सबहि समाना ❋ सप्तपदुम इनकर परिमाना
काशीपुरी वास इनकेरी ❋ समरँ कतहुँ जिन पीठिन फेरी
तीक्षण दन्त नखायुधधारी ❋ द्वन्द्व युद्ध ये जानहिं भारी
धूम्रकेतु यूथप इनकेरा ❋ लङ्का निकट कीन्ह जेहिं डेरा
यहिकर जेठ बन्धु जमवन्ता ❋ तेहिके बलकर पाव को अन्ता
देव दनुज को जूझै ताही ❋ धरा होइ कर कन्दुक⁸ जाही

१ पृथ्वी २ पुत्र ३ इन्द्र ४ शेष ५ चांदी ६ पूर्णमासी ७ लड़ाई ८ गेंद॥

बसै अशङ्क नर्मदा तीरा * अशनि समान अभेद्य शरीरा

दो० सचिव सुकण्ठराजकर, रघुवरकर प्रियदास।
सो जड़ मन्द जो याहिरण, चह जीतनकी आस॥

अब देखहु यह यूथ अपारा * पीतवरण है गयो पहारा
बाल अरुण मरीचि जसफूटी * निशिचरनिकर तमी चहछूटी
चौबिसअर्बुद इनकर यूहा * सहस बुन्दसम कोटिसमूहा
शिला शैल जे आगे परहीं * पांयन मर्दि गर्द सम करहीं
कञ्चनें गिरि कन्दर के वासी * इनकर यूथनाथ अविनासी
अतिबल वासवकर हितकारी * सखा सुकण्ठ केर सुखकारी
पान करै गङ्गाकर नीरा * पर्वत शृङ्ग समान शरीरा
छिन छिन सिंहनाद जो होई * गर्जत आवत है कपि सोई

दो० यशतिहुँमण्डलगलितगर्ज,बलकरनाहिंनअन्त।
यह कपिराजा केशरी,सुवनजासुहनुमन्त॥

उत्तर दिशि देखहु रजधानी * जनु दुकाललगिशलभँ उड़ानी
मरकटनिकर विकल बल टूटे * आवत उदधिकूल जनु छूटे
यहि दल यूथनाथ जो अहई * अति बलवन्त राजसँग रहई
कपिकेरूप अनल अविनासी * ये द्वौ पारिपात्र के वासी
अतिसुन्दर अरु समरविपक्षा * महाबली द्वौ गवय गवक्षा
ये द्वौ गर्जत अति रणधीरा * पीवहिं तुङ्गभद्र कर नीरा
सत्तरि सहस नागबल जाही * इनमहँ एक कहौं मैं ताही
अपर बली गँधमादन नामा * रणअजेय पुनि सब गुणधामा

दो० वासव विबुधवृन्दमहँ, तेजनमहँ जस भानु।
पनसनाम यह वानर, अतिबल नीतिनिधानु॥

यह जो कुमुदपत्र सम देहा * जस कैलास शरदकर मेहा
लोचनमधु पिंगल अति लोने * कामरूप चितवत चहुँकोने

१ वज्र २ किरण ३ मींजि ४ सोना ५ जल ६ हाथी ७ टीड़ी ८ बन्दर॥

लङ्का सौंह लँगूर फिराई ❀ गर्जत प्रलयमेघ की नाई
सुरपति साथ युद्ध कहँ गयऊ ❀ तबते कामरूप यह भयऊ
मघवा[1] यहिसन कीन्ह मिताई ❀ करै सदा यह दैव सहाई
सहसकोटि कपि[2] यहि के सङ्गा ❀ राते पीत श्वेत बहु रङ्गा
वचनमृषा मम प्रभु यह नाहीं ❀ अपरबालि जानहु मनमाहीं
दर्दुर शैल सदन[3] यहिकेरा ❀ मन वच कर्म्म रामकर चेरा
दो० गिरिवर लांघत आवत, चलत उड़ावत रेणु।
तरणि[4] तेज इन रूंधेउ, तारातनय सुषेणु॥
यह कपि लसत मनहुँ गिरि गेरू ❀ दिनमुखछवि जस लहतसुमेरू
सोइकपि प्रथम लङ्क जेहिं जारी ❀ प्रभु केहिलगि आवत यहिबारी
अञ्जनि गर्भ जन्म जब भयऊ ❀ क्षुधित[5] जननिसन आरतठयऊ
तेइँकह सुपक अरुण फल खाहू ❀ सुनत चितव इतउत चितचाहू
बालअरुण लखि गगन उड़ाना ❀ ग्रसेसि तरणि वासव तब जाना
मारेउ वज्र चिबुक[6] भइ टेढ़ी ❀ कोपि पवन समीरसम बेढ़ी
देव विकल ह्वै अस्तुति कीन्हा ❀ कुलिश होउ तनु अस वर दीन्हा
विद्या पढ़त भानु के पाहीं ❀ उलटीगति रवि आगे जाहीं
वारिधि[7] लांघेउ गोपद जैसे ❀ यहि कपीशसन जूझब कैसे
दो० अम्बक पीत बालरवि, वदन तेज अतिराज।
पवनते वेगअधिकजनु, अनल नितम्ब सुभ्राज॥
अतसी कुसुम वरण तनुरेखा ❀ पुरुष पुराण धरे नर वेखा
मत्त गजेन्द्र शुण्ड भुजदण्डा ❀ धनुष बाण असि धरे प्रचण्डा
उर विशाल अति उन्नत कन्धर ❀ कम्बुकण्ठ रेखा प्रसन्न वर
मुखछवि की उपमा कवि जोहै ❀ शशि सरोज सम कहै न सोहै
दशन पांतिकी कान्ति कहैको ❀ ललकत मन पटतरिय लहैको
देखत अधरन की अरुणाई ❀ बिम्बाफल बन्धूक[8] लजाई

१ इन्द्र २ बन्दर ३ घर ४ सूर्य ५ भूखा ६ ठोढ़ी ७ समुद्र ८ दुपहरिया॥

शुकतुण्डहि नासिका लजावै ❁ थके सुकवि नहिं पटतरआवै
शीशजटा के मुकुट बनाये ❁ भालविशालतिलक अतिभाये
दक्षिणदिशि लक्ष्मण बलवीरा ❁ रामबाहु सम अति रणधीरा
दो० बायें भाग विभीषण, शिर अभिषेका राज।
बीजमन्त्र सब जानहिं, यकसर करहिं सुकाज ॥
अब देखहु यह सेनै सुहाई ❁ भादों मेघघटा जनु छाई
कन्या एक ब्रह्म उपजाई ❁ नयन भूरि अरु रूपलुनाई
बालभाव दिनकर बल दीन्हा ❁ ऋतु जानी वासव रतिकीन्हा
जातक जमल वीर द्वौ जाये ❁ देव अंश वानर तनु पाये
किष्किन्धापर इनकर थाना ❁ देवसरिसँ मधुवन उद्याना
ऋष्यमूक इनकर विश्रामा ❁ चातुर्मास बसे जहँ रामा
बाली ज्येष्ठ राम रण मारा ❁ यहिकहँ राजतिलक प्रभुसारा
तारा तासु भई पटरानी ❁ जेहिकर सुतै अंगद अतिज्ञानी
सहस शंकुकर अर्बुद एका ❁ अर्बुदसहस कि बिन्दु विवेका
सहसबिन्दु गणकन गनिमाना ❁ महापद्म तेहिकर परिमाना
ऐसे पद्म अठारह साजा ❁ विग्रह बढ़ेउ राम के काजा
वीर वेष अरु नयन विशाला ❁ कम्बुकण्ठ मोतिन की माला
दो० हस्ती साठि सहस्रबल, सदा धर्म्म की सींवँ।
श्वेत छत्र शिर शोभित, यह राजा सुग्रीव ॥
यहिविधि सकल दिखाये, सारनँ कपिदल यूह।
गनै न रावण कालवश, अतिशय गर्व्व समूह ॥
इति क्षेपक ॥
इहां प्रात जागे रघुराई ❁ पूंछा मत सब सचिवँ बुलाई
कहहु वेगि का करिय उपाई ❁ जामवन्त कह पद शिरनाई
सुनु सर्वज्ञ सकल उरवासी ❁ सर्व्वरूप सब रहित उदासी

१ क्रौज २ समान ३ बन ४ पुत्र ५ शंख ६ हद ७ दूत ८ मन्त्री ॥

मन्त्रकहउँ निजमति अनुसारा ❀ दूत पठाइय बालिकुमारा
नीक मन्त्र सबके मन माना ❀ अंगदसन कह कृपानिधाना
बालितनय बुधि बल गुणधामा ❀ लंकाजाहु तात मम कामा
बहुत बुझाइ तुमहिं का कहऊं ❀ परमचतुर मैं जानत अहऊं
काज हमार तासुहित होई ❀ रिपुसन करेहु बतकही सोई

सो० प्रभु आज्ञा धरि शीश, चरण वन्दि अंगद कहेउ।
सोइ गुणसागर ईश, राम कृपा जापर करहु ॥
स्वयं सिद्ध सब काज, नाथ मोहिं आदर दयउ।
अस विचारि युवराज, तनुपुलकितहरषितभयउ॥

वन्दिचरण उर[1] धरि प्रभुताई ❀ अंगद चल्यो सबहिं शिरनाई
प्रभुप्रताप उर सहज अशंका[3] ❀ रणबांकुरा बालिसुत बंका
पुर पैठत रावणकर बेटा ❀ खेलत रहा सो ह्वैगइ भेटा
बातहिं बात कर्ष[4] बढ़िआई ❀ युगल[5] अतुलबल पुनि तरुणाई
तेहि अंगद कहँ लात उठाई ❀ गहिपद पटकेउ भूमि भ्रमाई
निशिचर[6] निकर देखि भटभारी ❀ जहँ तहँ चले न सकहिं पुकारी
एक एकसन मर्म न कहहीं ❀ समुझि तासु बल चुपह्वै रहहीं
भयउ कोलाहल[7] नगर मँझारी ❀ आवा कपि लंका जेइँजारी
अबधौं काह करिहि करतारा ❀ अति सभीत सब करहिंविचारा
बिनु पूछे मर्ग[8] देहिं बताई ❀ जेहि बिलोक सो जाहिसुखाई

दो० गयो सभा दरबार रिपु, सुमिरि राम पदकंज।
सिंह ठवनि इत उत चितै, धीर वीर बलपुंज ॥

तुरत निशाचर एक पठावा ❀ समाचार रावणहिं सुनावा
सुनत वचन बोलेउ दशशीशा[9] ❀ आनहु बोलि कहांकर कीशा
आयसु पाइ दूत बहु धाये ❀ कपिकुंजरहिं बोलि लैआये
अंगद दीख दशानन वैसा ❀ सहित प्राण कज्जलगिरि जैसा

१ मेरे २ हृदय ३ निडर ४ रिस ५ दोनों ६ राक्षस ७ शब्द ८ रास्ता ९ रावण ॥

भुजा विटप शिरशृङ्ग समाना ❀ रोमावली लताविधि नाना
मुख नासिका नयन अरु काना ❀ गिरिकन्दरा खोह अनुमाना
गयउ सभा मन नेकु न मुरा ❀ बालितनय अतिबल बांकुरा
उठे सभासद कपि कहँ देखी ❀ रावण उर भा क्रोध विशेखी

दो० यथा मत्तगजयूथ महँ, पंचानन¹ चलिजाय।
रामप्रताप सँभारि उर, बैठ सभा शिरनाय॥

कह दशकन्ध कवन तैं बन्दर ❀ मैं रघुवीर दूत दशकन्धर
मम जनकहि तोहिं रही मिताई ❀ तव हितकारण आयउँ भाई
उत्तमकुल पुलस्त्यकर नाती ❀ शिव विरंचि² पूज्यो बहुभांती
वरपायउ कीन्हेउ सब काजा ❀ जीतेहु लोकपाल सुरराजा
नृप अभिमान मोहवश किम्बा ❀ हरिआनेउ सीता जगदम्बा
अब शुभ कहा करहु तुम मोरा ❀ सब अपराध क्षमहिं प्रभु तोरा
दशनै³ गहहु तृण कंठकुठारी ❀ पुरजन संग सहित निजनारी
सादर जनकसुता⁴ करि आगे ❀ यहिविधिचलहुसकलभयत्यागे

दो० प्रणतपाल रघुवंशमणि, त्राहि त्राहि अब मोहिं।
सुनतहिंआरतवचनप्रभु, अभयँ⁵ करहिंगे तोहिं॥

रे कपि पोच⁶ बोलु संभारी ❀ मूढ़ न जाने मोहिं सुरारी
कहु निजनाम जनककर भाई ❀ केहि नाते मानिये मिताई
अंगद नाम बालि कर बेटा ❀ तासों कबहुँ भई तोहिं भेटा
अंगद वचन सुनत सकुचाना ❀ रहा बालि वानर मैं जाना
अंगद तुहीं बालिकर बालक ❀ उपजेउ वंश अनल⁷ कुलघालक
गर्भ न गयउ वृथा तुम जाये ❀ निज मुख तापस दूत कहाये
अब कहुकुशल बालि कहँअहई ❀ बिहँसि वचन अंगद तब कहई
दिन दश गये बालि पहँ जाई ❀ पूंछेहु कुशल सखा उरलाई
राम विरोध⁸ कुशल जस होई ❀ सो सब तुमहिं सुनाइहि सोई

१ सिंह २ ब्रह्मा ३ दांत ४ सीताजी ५ निडर ६ नीच ७ अग्नि ८ वैर॥

सुनु शठ भेद होइ मन ताके ❋ श्रीरघुवीर हृदय नहिं जाके

दो० हम कुलघालक सत्यतुम, कुलपालक दशशीश।
अन्धउबधिर न कहहिंअस, श्रवणनयन तवबीश॥

शिव विरंचि सुर मुनि समुदाई ❋ चाहत जासु चरण सेवकाई
तासु दूत ह्वै हम कुल बोरा ❋ ऐसी मति उर बिहरु न तोरा
सुनि कठोरवाणी कपि केरी ❋ कहत दशानन नयन तरेरी
खल तव वचन कठिन मैं सहऊं ❋ नीतिधर्म सब जानत अहऊं
कह कपि धर्मशीलता तोरी ❋ हमहुँ सुनी कृत परतिय चोरी
देखेउ नयन दूत रखवारी ❋ बूड़ि न मरेहु धर्म व्रतधारी
नाककान बिनु भगिनिनिहारी ❋ क्षमा कीन्ह तुम धर्म विचारी
धर्मशीलता तव जग जागी ❋ पावा दरश हमहुँ बड़भागी

दो० जनिजल्पसिजड़जन्तुकपि, शठविलोकुममबाहु।
लोकपाल बलविपुल शशि, ग्रसनहेतु जिमिराहु॥
पुनि नभसर ममकरनिकर, कर कमलनपर बास।
शोभित भयो मरालइव, शम्भुसहित कैलास॥

तुम्हरे कटकमाहिं सुनु अङ्गद ❋ मोसन भिरहि कवन योधा बद
तवप्रभु नारिविरह बलहीना ❋ अनुज तासुदुख दुखितमलीना
तुम सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ ❋ बन्धु हमार भीरु अति सोऊ
जामवन्त मन्त्री अतिबूढ़ा ❋ सो किमि होइ समर आरूढ़ा
शिल्पकर्म जानत नलनीला ❋ है कपि एक महाबलशीला
आवा प्रथम नगर जेहिं जारा ❋ सुनि हँसि बोलेउ बालिकुमारा
सत्यवचन कह निशिचरनाहा ❋ सांचहु कीश कीन्ह पुरदाहा
रावण नगर अल्प कपि दहई ❋ को अस झूंठ कहै को सुनई
जो अतिसुभट सराहेहु रावन ❋ सो सुग्रीवकेर लघुधावन
चलै बहुत सो वीर न होई ❋ पठवा खबरिलेन हम सोई

१ नाशक २ बहिरा ३ संसार ४ तालाब ५ छोटाभाई ६ लड़ाई ७ रावण॥

दो० अब जाना पुरदहेउ कपि, बिनु प्रभु आयसु पाइ।
गयउ न फिरि निजनाथ पहँ, तेहि भय रहेउ लुकाइ॥
सत्य कहसि दशकण्ठ तैं, मोहिं न सुनि कछु कोह।
कोउ न हमारे कटक अस, तुमसन लरत जो सोह॥
प्रीति विरोध समान सन, करिय नीति अस आहि।
जो मृगपति वध मेढुकहि, भलो कहै को ताहि॥
यद्यपि लघुता राम कहँ, तोहिं बधे बड़ दोष।
तदपि कठिन दशकण्ठ सुनु, क्षत्रिजाति कर रोष॥
हँसि बोलेउ दशमौलि तब, कपिकर बड़ गुण एक।
जो प्रतिपालै तासु हित, करै उपाय अनेक॥

धन्य कीश जो निज प्रभु काजा ❀ जहँ तहँ नाचहिं परिहरि लाजा
नाचि कूदि करि लोग रिझाई ❀ पतिहित करत कर्म निपुणाई
अङ्गद स्वामिभक्त तव जाती ❀ प्रभुगुण कस न कहसि यहि भांती
मैं गुणगाहक परम सुजाना ❀ तव कटु वचन करौं नहिं काना
कह कपि तव गुणगाहकताई ❀ सत्य पवनसुत मोहिं सुनाई
वन विध्वंसि सुत बधि पुर जारा ❀ तदपि न तेइ कृत कछु अपकारा
सोइ विचारि तव प्रकृति सुहाई ❀ दशकन्धर मैं कीन्ह ढिठाई
देखेउँ आइ जो कछु कपि भाषा ❀ तुम्हरे लाज न रोष न माषा

दो० वक्रउक्ति धनु वचन शर, हृदय दह्यो रिपु कीश।
प्रतिउत्तर सँगसी मनहुँ, काढ़त भट दशशीश॥

जो असमति पितु खायहु कीशा ❀ कहि अस वचन हँसा दशशीशा
पितहि खाइ खातेउँ अब तोहीं ❀ अबहीं समुझि परा कछु मोहीं
बालि विमलयश भाजन जानी ❀ हतौं न तोहिं अधम अभिमानी
सुनु रावण रावण जग केते ❀ मैं निज श्रवण सुने सुनु तेते

१ रिस २ फ़ौज ३ चतुरता ४ कड़वे ५ तेरी ६ वर्तन ७ अपने ८ कान॥

बलि जीतन यक गयउ पताला ❀ राखा बांधि शिशुन हयशाला
खेलहिं बालक मारहिं जाई ❀ दयालागि बलि दीन्ह छुड़ाई
एक बहोरि सहसभुज देखा ❀ धाइधरा जनु जन्तु विशेखा
कौतुक लागि भवन लै आवा ❀ सो पुलस्त्यमुनि जाइ छुड़ावा

दो० एककहतमोहिंसकुचअति, रहा बालि की कांख ।
तिनमहँ रावण कवन तैं, सत्यकहसितजिमाख ॥

सुनु शठ सोइ रावण बलशीला ❀ हरगिरि जानु जासु भुजलीला
जानु उमापति जासु शुराई ❀ पूजे जेहि शिरसुमन चढ़ाई
शिरसरोज निजकरन उतारी ❀ पूजे अमितबार त्रिपुरारी
भुजविक्रम जानहिं दिकपाला ❀ शठ अजहूं जिनके उरशाला
जानहिं दिग्गज उर कठिनाई ❀ जब जब भिरेउँ जाइ बरिआई
जिनके दशन करालन फूटे ❀ उर लागत मूलक इव टूटे
जासुचलत डोलत इमि धरणी ❀ चढ़त मत्तगज जिमि लघुतरणी
सोइरावण जग विदित प्रतापी ❀ सुने न श्रवण अलीकप्रलापी

दो० तेहि रावणकहँ लघुकहसि, नरकर करसि बखान ।
रे कपि बर्बर खर्ब खल, तव न जान अब जान ॥

सुनि अंगद सकोप कहबानी ❀ बोलुसँभारि अधम अभिमानी
सहसबाहु भुज गहन अपारा ❀ दहन अनल सम जासु कुठारा
जासु परशु सागर खरधारा ❀ बूड़े नृप अगणित बहुबारा
तासु गर्व जेहि देखत भागा ❀ सो नर किमि दशकंठ अभागा
राम मनुज कस रे शठ बङ्गा ❀ धन्वी काम नदी पुनि गङ्गा
पशु सुरधेनु कल्पतरु रूखा ❀ अन्न दान पुनि रस कि पियूखा
वैनतेय खग अहि सहसानन ❀ चिन्तामणिपुनिउपल दशानन
सुनु मतिमन्द लोक वैकुण्ठा ❀ लाभ कि रघुपतिभक्ति अकुण्ठा

दो० सेन सहित तव मानमथि, वन उजारि पुरजारि ।

१ घोड़शाल २ मूंड़हीफूल ३ भूंठ ४ वन ५ अग्नि ६ मनुष्य ७ अमृत ८ गरुड़ ॥

कस रे शठ हनुमान कपि, गयेउ जो तवसुतमारि॥
सुनु रावण परिहरि चतुराई ❋ भजसि न कृपासिन्धु रघुराई
जो खल भयसि रामकर द्रोही ❋ ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही
मूढ़ मृषा जनि मारसि गाला ❋ रामवैर होइहि अस हाला
तव शिरनिकर कपिन के आगे ❋ परिहैं धरणि राम शर लागे
ते तव शिर कन्दुकइव नाना ❋ खेलहिं भालु कीश चौगाना
जबहिं समर कोपहिं रघुनायक ❋ छूटहिं अतिकराल बहुशायक
तबकिचलिहिअसगालतुम्हारा ❋ अस विचारि भजु रामउदारा
सुनत वचन रावण फिरि जरा ❋ बरत महानल जनु घृत परा
दो॰ कुम्भकर्ण सम बन्धु मम, सुत प्रसिद्ध शक्रारि।
मोर पराक्रम सुनेसि नहिं, जितेउँ चराचर भारि॥
शठ शाखामृग जोरि सहाई ❋ बांधा सिन्धु इहै प्रभुताई
लांघहिं खग अनेक वारीशा ❋ शूर न होहिं सुनहु जड़कीशा
मम भुजसागर बलजल पूरा ❋ जहँ बूड़े बहु सुर नर शूरा
बीस पयोधि अगाध अपारा ❋ को अस वीर जो पावहि पारा
दिकपालन मैं नीर भरावा ❋ भूपसुयश खल मोहिं सुनावा
जो पै समर सुभट तव नाथा ❋ पुनिपुनिकहसिजासु गुणगाथा
तौ बसीठ पठवा केहि काजा ❋ रिपुसनप्रीति करत नहिं लाजा
हरगिरिमथन निरखि ममबाहू ❋ पुनि शठकपि निजस्वामिसराहू
दो॰ शूर कवन रावण सरिस, निजकर काटे शीश।
हुतेउँ अनलमहँ बारबहु, हरषित साखि गिरीश॥
जरतविलोकेउँ जबहिं कपाला ❋ विधि के लिखे अंक निजभाला
नर के कर आपन बध बांची ❋ हँसेउँजानि विधिगिरा असांची
सो मन समुझि त्रास नहिं मोरे ❋ लिखा विरञ्चि जरठ मतिभोरे
आन वीर को शठ मम आगे ❋ पुनिपुनि कहसि लाजपरित्यागे

१ महादेव २ झूंठ ३ गेंद ४ समुद्र ५ दूत ६ कैलास ७ मूंड़ ८ ब्रह्मवाणी॥

कह अंगद सलज्ज जगमाहीं ❀ रावण तोहिं समान कोउ नाहीं
लाजवन्त तव सहजस्वभाऊ ❀ निजगुणनिजमुखकहसिनकाऊ
शिर अरु शैल कथा चितरही ❀ ताते बार बीस तैं कही
सो भुजबल राखेउ उर घाली ❀ जितेउ न सहसबाहु बलि बाली
सुनु मतिमन्द देह अब पूरा ❀ काटे शीश न होइय शूरा
बाजीगर कहँ कहिय न वीरा ❀ काटै निजकर सकल शरीरा

दो॰ जरहिं पतंग विमोहवश, भार बहहिं खर[2]वृन्द ।
ते नहिं शूर कहावहीं, समुझि देखु मतिमन्द ॥

अब जनि बतबढ़ाव खलकरई ❀ सुनु ममवचन मान परिहरई
दशमुख मैं न बसीठी आयउ ❀ अस विचारि रघुवीर पठायउ
बारबार इमि कहेउ कृपाला ❀ नहिं गजारि[4]यश बधे शृगाला[5]
मनमहँ समुझि वचन प्रभुकेरे ❀ सहेउँ कठोर वचन शठ तेरे
नाहिंत करि मुखभंजन तोरा ❀ लै जातेउँ सीतहिं बरजोरा
जानेउँ तव बल अधम सुरारी ❀ सूने हरिआनी परनारी
तैं निशिचरपति गर्व बहूता ❀ मैं रघुपति सेवक कर दूता[3]
जो न राम अपमानहिं डरऊँ ❀ तव देखत अस कौतुक[6] करऊँ

दो॰ तोहिंपटकिमहिसेनहति, चौपट करि तव गाउँ ।
मन्दोदरी समेत शठ, जनकसुतहि लैजाउँ ॥

जो असकरउँ न तदपि बड़ाई ❀ मुये बधे कछु नहिं मनुसाई
कौल[7] कामवश कृपण विमूढ़ा ❀ अतिदरिद्र अयशी अतिबूढ़ा
सदा रोगवश सन्तत क्रोधी ❀ रामविमुख श्रुतिसन्त विरोधी
तनुपोषक निन्दक अघखानी[8] ❀ जीवत शव सम चौदहप्रानी
अस विचारि खल बधौं न तोहीं ❀ अब जनिरिस उपजावसिमोहीं
सुनिसकोप कहनिशिचरनाथा ❀ अधर[9] दशनगहि मीजतहाथा
रे कपि पोच मरण अबचहसी ❀ छोटे वदन बात बड़ि कहसी

१ कोई २ गदहा ३ दूत ४ सिंह ५ सियार ६ खेल ७ वाममार्गी ८ पापी ९ ओठ ॥

कटु जल्पसि जड़कपि बलजाके ❋ बुधिबल तेज प्रताप न ताके

दो॰ अगुणअमानविचारितेहि, दीन्ह पिता वनवास।
सो दुखअरुयुवती विरह, पुनिनिशिदिनममत्रास॥
जिनके बलको गर्व तोहिं, ऐसे मनुज अनेक।
खाहिंनिशाचरदिवसनिशि, मूढ़समुझुतजिटेक॥

जबतेहिं कीन्ह रामकी निन्दा ❋ क्रोधवन्त तब भयउ कपिन्दा
हरिहर निन्दा सुनहिं जो काना ❋ होय पाप गोघात समाना
कटकटाइ कपिकुञ्जर भारी ❋ दोउभुजदण्ड तमकि महिमारी
डोलत धरणि सभासद खसे ❋ चले भागि मारुत भय ग्रसे
गिरत दशानन उठा सँभारी ❋ भूतल परे मुकुट षटचारी
कछु निजकरले शिरन सँवारे ❋ कछु अंगद प्रभु पास पँवारे
आवत मुकुट देखि कपि भागे ❋ दिनहीं लूक परन विधि लागे
की रावण करि कोप चलाये ❋ कुलिशचारि आवत अतिधाये
कह प्रभु हँसि जनि हृदयडराहू ❋ लूक न अशनि केतु नहिं राहू
ये किरीट दशकन्धर केरे ❋ आवत बालितनय के प्रेरे

दो॰ कूदि गहे कर पवनसुत, आनिधरे प्रभु पास।
कौतुक देखहिंभालुकपि, दिनकर सरिस प्रकास॥

उहां कहत दशकन्ध रिसाई ❋ धरिमारहु कपि भागि न जाई
यहिविधि वेगिसुभट सब धावहु ❋ खाहु भालु कपि जहँतहँ पावहु
महि अकीशकरि फेरि दुहाई ❋ जियत धरहु तपसी दोउभाई
पुनि सकोप बोलेउ युवराजा ❋ गालबजावत तोहिं न लाजा
मरु गलकाटि निलज कुलघाती ❋ बलविलोकि बिहरतनहिंछाती
रे तियचोर कुमारगगामी ❋ खलमलराशि मन्दमति कामी
सन्निपात जल्पसि दुर्वादा ❋ भयसि कालवश शठ मनुजादा
याको फल पावहुगे आगे ❋ वानर भालु चपेटन लागे

१ स्त्री २ प्रण ३ हाथी ४ वायु ५ दश ६-७ वज्र ८ सूर्य ९ राक्षस॥

राम मनुज बोलत असबानी ❀ गिरहिं न तवरसनो अभिमानी
गिरिहैं रसना संशय नाहीं ❀ शिरन समेत समरमहि माहीं
सो० सोनरक्यों दशकन्ध, बालिबधेउ जिन एकशर।
बीसहु लोचन अन्ध, धिकतवजन्मकुजातिजड़॥
तवशोणितकी प्यास, तृषित रामशायकनिकर।
तजेउँतोहिं तेहित्रास, कटुजल्पसिनिशिचरअधम
मैं तव दर्शन तोरिबे लायक ❀ आयसु पै न दीन्ह रघुनायक
अस रिसहोत दशौमुख तोरों ❀ लङ्का गहि समुद्रमहँ बोरों
गूलरफल समान तव लङ्का ❀ बसहु मध्य जनु जन्तु अशङ्का
मैं वानर फल खात न बारा ❀ आयसु दीन्ह न राम उदारा
युक्ति सुनत रावण मुसुकाई ❀ मूढ़ सिखेसिकहँ अधिकझुठाई
बालिकबहुँ अस गाल न मारा ❀ मिलि तपसिन तैं भयसिलबारा
सांचहु मैं लबार दशशीशा ❀ जो न उपारों तव भुजबीशा
रामप्रताप सुमिरि कपिकोपा ❀ सभामांझ प्रणकरि पदरोपा
जो ममचरण सकसि शठ टारी ❀ फिरहिं राम सीता मैं हारी
सुनहु सुभट सब कह दशशीशा ❀ पदगहि धरणि पछारहु कीशा
इन्द्रजीत आदिक बलवाना ❀ हरषि उठे जहँ तहँ भटनाना
झपटहिं करि बल विपुलउपाई ❀ पद न टरै बैठहिं शिरनाई
पुनि उठि झपटहिं सुरआराती ❀ टरै न कीशचरण यहिभांती
पुरुष कुयोगी जिमि उरगारी ❀ मोह विटप नहिं सकहिं उपारी
दो० भूमि न छांड़ै कपि चरण, देखत रिपुमद भाग।
कोटिविघ्न जिमिसन्तकहँ, तदपि नीति नहिंत्याग॥
कपिबलदेखि सकल हियहारे ❀ उठा आप युवराज प्रचारे
गहत चरण कह बालिकुमारा ❀ मम पद गहे न तोर उबारा
गहसि न रामचरण शठजाई ❀ सुनत फिरा मन अति सकुचाई

१ जीभ २ रक्त ३ समूह ४ दांत ५ मेघनाद ६ राक्षस ७ गरुड़ ८ वृक्ष॥

भयो तेजहत श्री सब गई ❀ मध्यदिवस जिमि शशि सोहई
सिंहासन बैठा शिरनाई ❀ मानहु सम्पति सकल गँवाई
जगदाधार प्राणपति रामा ❀ तासु विमुख किमि लह विश्रामा
उमा रामकर भृकुटि विलासा ❀ होइ विश्व पुनि पावै नासा
तृणते कुलिश कुलिशतृणकरहीं ❀ तासुदूत पद कहु किमि टरहीं
पुनिकपिकही नीतिविधिनाना ❀ मानत नाहिं काल नियराना
रिपुमदमथि प्रभुसुयश सुनाये ❀ असकहि चले बालिनृपजाये
अबहीं सुख का करौं बड़ाई ❀ हतिहौं तोहिं खेलाइखेलाई
प्रथमहिं तासुतनय कपिमारा ❀ सो सुनि रावण भयो दुखारा
यातुधान अङ्गद बल देखी ❀ भे व्याकुलअति हृदय विशेखी

दो० रिपुबल धर्षित हर्षि हिय, बालितनय बलपुञ्ज।
सजलसुलोचनपुलकमन, गहे रामपदकञ्ज॥
सांझजानि दशकण्ठ तब, भवन गयो बिलखाइ।
मन्दोदरिनिशिचरपतिहिं, बहुरि कहा समुझाइ॥

कन्तसमुझिमनतजहुकुमतिही ❀ सोह न समर तुमहिं रघुपतिही
रामअनुज लघुरेख खँचाई ❀ सो नहिं लांघेउ अस मनुसाई
पिय तेहिते जीतब संग्रामा ❀ जाके दूतन के अस कामा
कौतुक सिन्धु लांघि तव लङ्का ❀ आयउ कपिकेहरी अशङ्का
रखवारे हति विपिन उजारा ❀ देखत तुमहिं अक्षय जिहिंमारा
जारि नगर जेइँ कीन्हेसि छारा ❀ कहां रहा बल गर्व तुम्हारा
अब पति मृषा गाल जनि मारहु ❀ मोरकहा कछु हृदय विचारहु
पतिरघुपतिहिंमनुजजनिजानहु ❀ अगजगनाथ अतुलबल मानहु
बाण प्रताप जान मारीचा ❀ तासु कहा नहिं मानेहु नीचा
जनकसभा अगणित महिपाला ❀ रहेउ तुमहुँ बल गर्व विशाला
भंजि धनुष जानकी विवाही ❀ तब संग्राम जितेहु नहिं ताही

१ चन्द्रमा २ भौंह ३ वज्र ४ राक्षस ५ समूह ६ वन ७ झूठ ८ राजा ९ तोड़के॥

सुरपतिसुत जाना बलथोरा ❀ राखाजियत आंखि इक फोरा
शूर्पणखा की गति तुम देखी ❀ तदपि हृदय नहिं लाज विशेखी
दो० बधि विराध खरदूषणहिं, लीलहि हतेउ कबन्ध।
बालि एक शर मारेउ, तेहि नर कह दशकन्ध॥
जेहि जलनाथ बँधायो हेला ❀ उतरेउ कपिदल सहित सुबेला
कारुणीक दिनकर[1]कुलकेतू ❀ दूत पठायउ तव हित हेतू
सभा मांझ जेइँ तवबल मथा ❀ करिवरूथ[3] महँ मृगपति[4] यथा
अंगद हनुमत अनुचर जाके ❀ रणबांकुरे वीर अति बांके
तेहिकहँ पिय पुनिपुनि नरकहहू ❀ मृषा मान ममता मद गहहू
अहह कन्त कृत रामविरोधा ❀ काल विवश मनउपज न बोधा
काल दण्ड गहि काहु न मारा ❀ हरै धर्म्म बल बुद्धि विचारा
निकटकाल जेहि आवत साईं ❀ तेहिभ्रमहोइ तुम्हारिहि नाईं
दो० दुइसुत मारेउ दहेउपुर, अजहुँ पीय सिय देहु।
कृपासिन्धु रघुवीर भजि, नाथ विमलयश लेहु॥
नारिवचनसुनिविशिख[5]समाना ❀ सभा गयो उठि होत बिहाना
बैठा जाइ सिंहासन फूली ❀ अतिअभिमान त्रास सब भूली
उहां राम अंगदहि बुलावा ❀ आइ चरणपङ्कज शिरनावा
अति आदर समीप बैठारी ❀ बोले बिहँसि कृपालु खरारी[6]
बालितनय अतिकौतुक मोहीं ❀ तात सत्य कहु पूंछों तोहीं
रावण यातुधान[7] कुल टीका ❀ भुजबलअतुल जासु जगलीका
तासु मुकुट तुम चारि चलाये ❀ कहहु तात कवनी विधि पाये
सुनु सर्वज्ञ प्रणत हितकारी ❀ मुकुट न होइँ भूपगुण[8] चारी
साम दाम अरु दण्ड विभेदा ❀ नृप उर बसहिं नाथ कह वेदा
नीति धर्म्म के चरण सुहाये ❀ असजियजानि नाथपहँ आये
दो० धर्म्महीन प्रभुपद विमुख, काल विवश दशशीश।

१ जयन्त २ सूर्य ३ हाथियों का झुण्ड ४ सिंह ५ बाण ६ राम ७ राक्षस ८ राजगुण॥

आये गुण तजि रावणहिं, सुनहु कोशलाधीश ॥
परमचतुरता श्रवण सुनि, बिहँसे राम उदार ।
समाचार पुनि सब कहे, गढ़के बालिकुमार ॥

रिपुके समाचार जब पाये ❀ राम सचिव[1] सब निकटबुलाये
लङ्का बङ्का चारि दुआरा ❀ केहिविधिलांघिय करहुविचारा
तब कपीश[2] ऋक्षेश[3] विभीषण ❀ सुमिरि हृदय दिनकरकुलभूषण
करिविचार तिन मन्त्र दृढ़ावा ❀ चारि अनी[4] कपिकटक बनावा
यथायोग्य सेनापति कीन्हे ❀ यूथप सकल बोलि तब लीन्हे
प्रभुप्रताप सब कहि समुझाये ❀ सुनि कपि सिंहनादकरि धाये
हरषित रामचरण शिर नावैं ❀ गहि गहि शिखरैं वीर सब धावैं
गर्जहिं तर्जहिं भालु कपीशा ❀ जय रघुवीर कोशलाधीशा
जानत परम दुर्ग अति लङ्का ❀ प्रभुप्रताप कपि चले अशङ्का
घटाटोप करि चहुँदिशि घेरी ❀ मुखहिं निशान बजावहिं भेरी

दो॰ जयति राम भ्राता सहित, जय कपीश सुग्रीव ।
गर्जैं केहरिनाद कपि, भालु महाबल सीव ॥

लंका भयउ कोलाहल भारी ❀ सुनेउ दशानन अति अहँकारी
देखहु बँदरन केरि ढिठाई ❀ बिहँसि निशाचरसेन बुलाई
आये कीश काल के प्रेरे ❀ क्षुधावन्त रजनीचर मेरे
सुभटसकल चारिहुदिशि जाहू ❀ धरिधरि भालु कीश सबखाहू
असकहि अट्टहास शठ कीन्हा ❀ गृह बैठे अहार विधि दीन्हा
उमा रावणहिं अस अभिमाना ❀ जिमि टिटीनगण सूतउताना
चले निशाचर आयसु मांगी ❀ गहि कर भिन्दिपाल वरसांगी
तोमर मुद्गर परिघ प्रचण्डा ❀ शूल कृपाण परशु गिरिखण्डा
जिमिअरुणोपल[6]निकरनिहारी ❀ धाये खग शठ मांस अहारी
चोंचभङ्ग दुख तिनहिं न सूझा ❀ तिमि धाये मनुजाद[7] अबूझा

१ मन्त्री २ सुग्रीव ३ जाम्बवान् ४ फ़ौज ५ कँगूरा ६ लालपत्थर ७ राक्षस ॥

दो० नानायुध शर चाप धरि, यातुधान बलवीर।
कोट कँगूरन चढ़िगये, कोटि कोटि रणधीर॥
कोट कँगूरन सोहहिं कैसे ❋ मेरुशृंग पर जनु घन बैसे
बाजहिं ढोल निशान जुझाऊ ❋ सुनिसुनि सुभटन के मनचाऊ
बाजहिं भेरि नफीरि अपारा ❋ सुनि कादर[1] उर होहिं दरारा
देखि न जाइ कपिन कर ठट्टा ❋ अतिविशालतनु भालु सुभट्टा
धावहिं गनहिं न औघटघाटा ❋ पर्वत फोरि करहिं गहिबाटा
कटकटाहिं कोटिन भट[2] गर्जहिं ❋ दशन[3]नओंठकाटि अतितर्जहिं
उत रावण इत राम दुहाई ❋ जयतिजयतिकहि परी लराई
निशिचर शिखरसमूह ढहावहिं ❋ कूदि धरहिं कपि फेरि चलावहिं
छं०धरिकुधर[4]खण्डप्रचण्ड मर्कट[5] भालु गढ़पर डारहीं।
झपटैंचरणगहि पटकिमहि भजिचलत बहुरिप्रचारहीं॥
अतितरल तरुण प्रतापतर्जहिं तमकि गढ़पर चढ़िगये।
कपिभालुचढ़ि मन्दिरन जहँतहँ रामयश गावत भये॥
दो० एकएक गहि रजनिचर, पुनि कपि चले पराइ।
ऊपर आपुन तर असुर, गिरहिं धरणिपर आइ॥
राम प्रताप प्रबल कपियूथा ❋ मर्दहिं निशिचरनिकरवरूथा
चढ़े दुर्ग पुनि जहँ तहँ वानर ❋ जय रघुवीरप्रताप दिवाकर
चले तमीचर[6] निकर पराई ❋ प्रबलपवन जिमि घन[7] समुदाई
हाहाकार भयो पुर भारी ❋ रोवहिं आरत बालक नारी
सब मिलि देहिं रावणहिं गारी ❋ राज्य करत जेहि मृत्यु हँकारी
निजदलविचलसुना जबकाना ❋ फिरे सुभट लंकेश रिसाना
जेहि रणविमुख फिरा मैं जाना ❋ तेहि मारिहौं कराल कृपाना[8]
सर्बस खाइ भोगकरि नाना ❋ समरभूमि भा दुर्लभ प्राना

१ कायर २ योधा ३ दांतन ४ पहाड़ ५ वानर ६ राक्षस ७ बादल ८ तलवार॥

उग्र वचन सुनि सकल डराने ❁ फिरे क्रोधकरि सुभट लजाने
सम्मुखमरण वीर की शोभा ❁ तब तिन तजा प्राणकर लोभा

दो० बहुआयुध धरि सुभटसब, भिरहिं प्रचारि प्रचारि।
कीन्हे व्याकुलभालुकपि, परिघप्रचण्डन मारि॥

भयआतुर कपि भागन लागे ❁ यद्यपि उमा जीतिहैं आगे
कोउकह कहँ अङ्गद हनुमन्ता ❁ कहँ नल नील द्विविदबलवन्ता
निजदल बिचल सुना हनुमाना ❁ पश्चिमद्वार रहा बलवाना
मेघनाद तहँ करै लराई ❁ टूट न द्वार परम कठिनाई
पवनतनय मनभा अतिक्रोधा ❁ गर्जेउ प्रलयकाल समयोधा
कूदि लङ्कगढ़ ऊपर आवा ❁ गहि गिरि मेघनाद पर धावा
भंजेउ रथ सारथी निपाता ❁ तासु हृदय महँ मारेउ लाता
दूसर सूतै विकल तेहि जाना ❁ स्यँन्दनघालि तुरत घरआना

दो० अङ्गदसुनेउ कि पवनसुत, गढ़पर गयउ अकेल।
समरबांकुरा बालिसुत, तर्किचढ़ेउ कपिखेल॥

युद्ध विरुद्ध क्रुद्ध दोउ बन्दर ❁ रामप्रताप सुमिरि उरअन्तर
रावण भवन चढ़े दोउ धाई ❁ करहिं कोशलाधीश दुहाई
कलशसहित गहि भवन ढहावा ❁ देखि निशाचर अतिभय पावा
नारिवृन्द कर पीटहिं छाती ❁ अब दोउ कपि आये उतपाती
कपिलीलाकरितिनहिं डरावहिं ❁ रामचन्द्रकर सुयश सुनावहिं
पुनि करगहि कञ्चनँ के खम्भा ❁ करनलगे उत्पात अरम्भा
कूदिपरे रिपुकटक मँझारी ❁ लागे मर्दन भुजबल भारी
काहू लात चपेटन केहू ❁ भजेहु न रामहिं सो फल लेहू

दो० एक एक सन मर्दिकरि, तोरि चलावहिं मुण्ड।
रावण आगे परहिं ते, जनु फूटहिं दधिकुण्ड॥

महा महा मुखिया जे पावहिं ❁ ते पदगहि प्रभुपास चलावहिं

१ योद्धा २ हथियार ३ मारा ४ सारथी ५ रथ ६ घर ७ सोना ८ फ़ौज॥

कहहिं विभीषण तिनके नामा ❋ देहिं राम तिनकहँ निजधामा
खलमनुंजाद जो आमिषै भोगी ❋ पावहिं गति जो याचत योगी
उमाँ राम मृदुचित्त करुणाकर ❋ वैरभावमोहिं सुमिरत निशिचर
देहिं परमगति अस जियजानी ❋ को कृपालु अस अहै भवानी
जे अस प्रभु न भजहिं भ्रमत्यागी ❋ नर मतिमन्द ते परम अभागी
अंगद अरु हनुमन्त प्रवेशा ❋ कीन्ह दुर्ग असकह अवधेशा
लंकामहँ कपि सोहहिं कैसे ❋ मथहिं सिन्धु दुइ मन्दर जैसे
दो० भुजबलरिपुदलदलिमलेउ, देखिदिवसकरअन्त।
कूदे युगल प्रयास बिनु, आये जहँ भगवन्त॥
प्रभुपदकमल शीश तिन नाये ❋ देखि सुभट रघुपति मनभाये
राम कृपा करि युगल निहारे ❋ भये विगतश्रम परम सुखारे
गये जानि अंगद हनुमाना ❋ फिरे भालु मर्कट भटनाना
यातुधानँ प्रदोष बल पाई ❋ धाये करि दशशीश दुहाई
निशिचरअँनी देखि कपि फिरे ❋ जहँ तहँ कटकटाइ भटभिरे
दोउदल प्रबल प्रचारि प्रचारी ❋ लरहिं सुभट नहिं मानहिंहारी
वीर तमीचर सब अतिकारे ❋ नाना वरण बलीमुंख भारे
सबल युगँलदलसम बल योधा ❋ विविधप्रकार भिरहिं करिक्रोधा
प्रावृँट शरद पँयोद घनेरे ❋ लरत मनहुँ मारुत के प्रेरे
अनिपअकम्पनअरुअतिकाया ❋ बिचलत सेन करी तिन माया
भयउनिमिषमहँअतिअँधियारा ❋ काहु न सूझै अपन परारा
मारु खाहु सब करहिं पुकारा ❋ वृष्टि होय रुधिरोपल क्षारा
दो० देखिनिबिड़तमदशहुदिशि, कपिदलभयउखभार
एकहि एक न देखहीं, जहँतहँ करहिंपुकार॥
सकल मर्म्म रघुनायक जाना ❋ लिये बोलि अंगद हनुमाना
समाचार सब कहि समुझाये ❋ सुनत कोपि कपिकुञ्जर धाये

१-४ राक्षस २ मांस ३ पार्वती ५ सेना ६ बानर ७ दोनों ८ वर्षा ९ बादल १० घना॥

पुनि कृपालु हँसि चापचढ़ावा ❀ पावकशायक सेपदि चलावा
भयउ प्रकाश कतहुँ तम नाहीं ❀ ज्ञानउदय जिमि संशय जाहीं
भालु बलीमुख पाइ प्रकासा ❀ धाये कोपि विगतश्रम त्रासा
हनूमान अंगद रण गाजे ❀ हांक सुनत रजनीचर भाजे
भागतभट पटकहिं गहिधरणी ❀ करहिं भालु कपि अद्भुतकरणी
गहिपद डारहिं सागर माहीं ❀ मकर उरग झषै धरिधरि खाहीं

दो० कछु घायल कछु रणपरे, कछु गढ़ चले पराइ।
गर्जे मर्कट भालु भट, रिपुदलबल बिचलाइ॥

निशाँ जानि कपि चारिउअनी ❀ आये सब जहँ कोशलधनी
राम कृपाकरि चितवा जबहीं ❀ भये विगतश्रम वानर तबहीं
उहां दशानन सचिव हँकारे ❀ सबसन कहेसि सुभट जे मारे
आधा कटक कपिन संहारा ❀ कहहु वेगि का करिय विचारा
मालवन्त यक जरँठ निशाचर ❀ रावण मातुपिता मन्त्रीवर
बोला वचन नीति अतिपावन ❀ तात सुनहु कछु मोर सिखावन
जबते तुम सीता हरिआनी ❀ अशकुन होहिं न जात बखानी
वेद पुराण जासु यश गावा ❀ तासुविमुख सुख काहु न पावा

दो० हिरण्याक्ष भ्राता सहित, मधुकैटभ बलवान।
जेइ मारेउ सोइ अवतरेउ, कृपासिन्धु भगवान॥
कालरूप खल वन दहन, गुणागार घनबोध।
ज्यहिसेवहिंशिवकमलभव,त्यहिसनकौनविरोध॥

परिहरि वैर देहु वैदेही ❀ भजहु कृपानिधि परमसनेही
ताके वचन बाणसम लागे ❀ करियामुख करिजाहु अभागे
बूढ़ भयसि नतु मरतेउँ तोहीं ❀ अबजनि वदनँ देखावसिमोहीं
तेइँ अपने मन अस अनुमाना ❀ बध्योचहत याहि कृपानिधाना
सो उठि गयउ कहत दुर्वादा ❀ तब सकोप बोलेउ घननादा

१ जल्द २ मछली ३ रात्रि ४ बूढ़ा ५ गुणमन्दिर ६ ब्रह्मा ७ मुख ८ मेघनाद॥

कौतुक प्रात देखियहु मोरा ❀ करिहौं बहुत कहत हौं थोरा
सुनि सुतवचन भरोसा आवा ❀ प्रीति समेत निकट बैठावा
करत विचार भयउ भिनुसारा ❀ लगे भालु कपि चारिहु द्वारा
कोपि कपिन दुर्गम गढ़ घेरा ❀ नगर कोलाहल भयउ घनेरा
विविधअस्त्र गहि निशिचरधाये ❀ गढ़ते पर्व्वत शिखर ढहाये

छं० ढाहे महीधँरशिखरकोटिनविविधविधिगोलाचले।
घहरात जिमि पँविपात गर्जत प्रलयके जनु बादले ॥
मँर्कट विकटभट जुटत कटत न लरततनु जर्जरभये ।
गहिशैलतेगढ़पर चलावहिं जहँ सो तहँ निशिचरहये॥

दो० मेघनाद सुनि श्रवणअस, गढ़ पुनि छेंका आइ ।
उतरि दुर्ग ते वीरवर, सम्मुख चला बजाइ ॥

कहँ कोशलाधीश दोउ भ्राता ❀ धन्वी सकललोक विख्याता
कहँ नल नील द्विविद सुग्रीवा ❀ कहँ हनुमत अङ्गद बलसीवा
कहां विभीषण भ्राता द्रोही ❀ आजु शठहि हठि मारउँ ओही
अस कहि कठिन बाण सन्धाने ❀ अतिशयकोपि श्रवणलगिताने
शरसमूह सो छांड़न लागा ❀ जनु सपक्ष धावैं बहु नागा
जहँ तहँ परतदेखि अहि वानर ❀ सम्मुखहोइ नसकततेहिअवसर
भागे भयव्याकुल कपि ऋच्छा ❀ बिसरी सबहिं युद्धकी इच्छा
सो कपि भालु न रण में देखा ❀ कीन्हेसि जेहि न प्राणअवशेखा

दो० मारेसिदशदश विशिखँसब, परे भूमि कपिवीर ।
सिंहनाद करि गर्ज तब, मेघनाद रणधीर ॥

देखि पवनसुत कटक बिहाला ❀ क्रोधवन्त धावा जनु काला
महा महीधर तमकि उपारा ❀ अति रिस मेघनाद पर डारा
आवत देखि गयउ नभँ सोई ❀ रथ सारथी तुरँग सब खोई

१ पास २ सवेरा ३ पहाड़ ४ वज्र ५ वानर ६ सांप ७ बाण ८ आकाश ॥

बारबार प्रचार हनुमाना ❀ निकट न आव मर्म सो जाना
रामसमीप गयो घननादा ❀ नाना भांति कहत दुर्वादा
अस्त्र शस्त्र बहु आयुध डारे ❀ कौतुकही प्रभु काटि निवारे
देखि प्रभाव मूढ़ खिसियाना ❀ करैलाग माया विधि नाना
जिमि कोउ करै गरुड़सनखेला ❀ डरपावहि गहि स्वल्पसपेला
दो० जासु प्रबल माया विवश, शिव विरंचि बड़ छोट।
ताहि देखावै रजनिचर, निजमायामतिखोट॥
नभचढ़ि वर्षै विपुल अँगारा ❀ महिते प्रकट होइ जलधारा
नाना भांति पिशाच पिशाची ❀ मारु काटु ध्वनि बोलहिंनाची
विष्ठा पीब रुधिर कैंच हाड़ा ❀ वर्षै कबहुँ उर्पल बहु छाड़ा
वरषि धूरि कीन्हेसि अँधियारा ❀ सूझ न आपन हाथ पसारा
अकुलाने कपि माया देखे ❀ सबकर मरण बना यहि लेखे
कौतुक देखि राम मुसुकाने ❀ भये सभीत सकल कपिजाने
एकहि बाण काटि सब माया ❀ जिमिदिनकरहरतिमिरनिकाया
कृपादृष्टि कपि भालु विलोके ❀ भये प्रबल रण रहहिं न रोके
दो० आयसु मांगी रामपहँ, अंगदादि कपि साथ।
लक्ष्मण चले सकोपि तब, बाण शरासन हाथ॥
क्षतंजनयन उर बाहु विशाला ❀ हिमगिरिनिभँतनुकछुइकलाला
उहां दशानन सुभट पठाये ❀ नाना अस्त्र शस्त्र गहि धाये
भूधर नख विटपायुध भारी ❀ धाये कपि जय राम पुकारी
भिरे सकल जोरी सन जोरी ❀ इतउत जय इच्छा नहिं थोरी
मुठिकन लातन दांतन काटहिं ❀ कपिगिरिशिलामारिपुनिडाटहिं
मारु मारु धरु धरु धरु मारू ❀ शीश तोरि गहि भुजा उपारू
अस ध्वनि पूरिरही नवखण्डा ❀ धावहिं जहँतहँ रुण्ड प्रचण्डा
देखहिं कौतुक नभ सुर बृन्दा ❀ कबहुँक विस्मय कबहुँ अनन्दा

१ भेद २ रक्त ३ बाल ४ पत्थर ५ समूह ६ रुधिर ७ प्रभा ८ वृक्ष ९ देवता॥

दो० जमेउगाड़ भरि भरि रुधिर, ऊपर धूरि उड़ाइ।
जिमि अंगारन राशि पर, मृतकक्षार रहिछाइ॥
घायल वीर विराजहिं कैसे ❋ कुसुमित किंशुक के तरु जैसे
लक्ष्मण मेघनाद दोउ योधा ❋ भिरहिं परस्पर करि अतिक्रोधा
एकहि एक सकैं नहिं जीती ❋ निशिचर छलबल करैं अनीती
क्रोधवन्त तब भये अनन्ता ❋ भंजेउ रथ सारथी तुरन्ता
नानाविधि प्रहारकरि शेषा ❋ राक्षस भयउ प्राण अवशेषा
रावणसुत निजमन अनुमाना ❋ संकट भये हरिहि मम प्राना
वीरघातिनी छांड़ेसि सांगी ❋ तेजपुञ्ज लक्ष्मणउर लागी
मूर्च्छा भई शक्ति के लागे ❋ तबचलिगयउ निकटभयत्यागे
दो० मेघनाद सम कोटिशत, योधा रहे उठाय।
जगदाधार अनन्त सो, उठहिं न चलाखिसाय॥
सुनु गिरिजा क्रोधानल जासू ❋ जारै भुवन चारिदश आसू
सक संग्राम जीति को ताही ❋ सेवहिं सुर नर अग जग जाही
यह कौतुक जानहि जन सोई ❋ जेहिपर कृपा रामकी होई
सन्ध्या भई फिरीं दोउ ऐनी ❋ लगे सँभारन निजनिजसैनी
व्यापकब्रह्म अजित भुवनेश्वर ❋ लक्ष्मणकहँ पूछा करुणाकर
तौलगि लैआये हनुमाना ❋ अनुजदेखिप्रभुअतिदुखमाना
जामवन्त कह वैद्य सुषेना ❋ लंकारह पठइय कोउ लेना
धरि लघुरूप गये हनुमन्ता ❋ आनेउ भवन समेत तुरन्ता
दो० रघुपति चरण सरोज शिर, नायउ आय सुषेन।
कहा नाम गिरि औषधी, जाहु पवनसुत लेन॥
रामचरण सरसिजँ उरराखी ❋ चलेउ प्रभंजनसुत बलभाखी
उहां दूत यक मर्म जनावा ❋ रावण कालनेमि गृह आवा
दशमुख कहा मर्म तेहिसुना ❋ पुनिपुनि कालनेमि शिरधुना

१ ढांक २ लक्ष्मण ३ पास ४ पार्वती ५ शीघ्र ६-७ कमल ८ वायुपूत॥

देखत तुमहिं नगर जेहि जारा ❀ तासु पन्थ को रोकनहारा
भजिरघुपतिहिकरहुहितअपना ❀ तजौ नाथ अब मृषा कल्पना
नीलकंज तनु सुन्दरश्यामा ❀ हृदयराखु लोचन अभिरामा
अहंकार ममता मद त्यागहु ❀ महामोह निशि सोवत जागहु
काल व्याल कर भक्षक जोई ❀ सपनेहु समर कि जीतिय सोई

दो० सुनिदशकन्धरिसानअति,तेइँ मन कीन्ह विचार।
रामदूतकर मरण वर,यहखलनतुमोहिंमार॥

असकहि चला रची मगमाया ❀ सर मन्दिर वर बाग बनाया
मारुतसुत देखा शुभआश्रम ❀ मुनिहिंबूझिजलपियोंजायश्रम
राक्षस कपटवेष तहँ सोहा ❀ मायापति दूतहि चह मोहा
जाय पवनसुत नायउ माथा ❀ लागा कहन रामगुणगाथा
होत महारण रावण रामहिं ❀ जीतहिं राम न संशय यामहिं
इह्वां भये मैं देखौं भाई ❀ ज्ञानदृष्टिबल मोहिं अधिकाई
मांगा जल तेइँ दीन्ह कमण्डल ❀ कपि कह नहिं अघाउँ थोरेजल
सर मज्जनकरि आतुर आवहु ❀ दीक्षादेउँ ज्ञान जेहि पावहु

दो० सर पैठत कपिपद गहेउ, मकरी अति अकुलान।
मारी सो धरि दिव्यतनु, चली गगन चढ़ि यान॥

कपि तव दरश भइउँ निष्पापा ❀ मिटा तात मुनिवर कर शापा
मुनि न होइ यह निशिचरघोरा ❀ मानहु सत्यवचन कपि मोरा
असकहि गई अप्सरा जबहीं ❀ निशिचरनिकटगयउकपितबहीं
कहकपि मुनि गुरुदक्षिणा लेहू ❀ पाछे हमहिं मन्त्र तुम देहू
शिर लंगूर लपेटि पछारा ❀ निजतनु प्रकटेसि मरतीबारा
राम राम कहि छांड़ेसि प्राना ❀ सुनि मन हरषिचले हनुमाना
देखा शैल न औषधि चीन्हा ❀ सहसा कपि उपारि गिरिलीन्हा
गहिगिरिनिशिनभधावतभयऊ ❀ अवधपुरी ऊपर कपि गयऊ

१ झूठ २ घमंड ३ सांप ४ स्थान ५ जल्द ६ उपदेश ७ विमान ८ पहाड़ ९ यकायक॥

दो० देखा भरत विशाल अति, निशिचर मन अनुमानि।
बिनु फर शायक मारेउ, चांप श्रवणलगितानि॥

परेउ मूर्च्छि महि लागतशायक ❀ सुमिरत रामराम रघुनायक
सुनि प्रियवचन भरत उठिधाये ❀ कपिसमीप अतिआतुर आये
विकल विलोकि कीश उरलावा ❀ जागत नहिं बहुभांति जगावा
मुखमलीन मन भयउ दुखारी ❀ कहत वचन भरिलोचन वांरी
जेहि विधि रामविमुखमोहिंकीन्हा ❀ तेहि पुनि यह दारुणदुखदीन्हा
जो मोरे मन वच अरु काया ❀ प्रीति रामपदकमल अमाया
तौ कपि होउ विगत श्रम शूला ❀ जो मोपर रघुपति अनुकूला
वचन सुनत उठिबैठ कपीशा ❀ कहिजयजयति कोशलाधीशा

सो० लीन्हकपिहिउरलाइ, पुलकगात लोचनसजल।
प्रीति न हृदय समाइ, सुमिरिरामरघुकुलतिलक॥

तात कुशलकहु सुखनिधानकी ❀ सहित अनुज अरु मातुजानकी
कपि सबचरित सँक्षेप बखाने ❀ भये दुखित मनमहँ पछिताने
अहह दैव मैं कत जग जायों ❀ प्रभुके एकौ काज न आयों
जानिकुअवसर मन धरिधीरा ❀ पुनि कपिसन बोले बलवीरा
तात गहरु ह्वैहै तुहिं जाता ❀ काज नशाइहि होत प्रभाता
चढ़ु मम शायक शैल समेता ❀ पठवों तोहिं जहँ कृपानिकेता
सुनि कपिमन उपजा अभिमाना ❀ मोरे भार चलहि किमि बाना
राम प्रताप विचारि बहोरी ❀ वन्दि चरण बोलेउ करजोरी
तवप्रताप उर राखि गोसाईं ❀ जैहों राम बाण की नाईं
हरषि भरत तब आयसु दीन्हा ❀ पदशिरनाय गमन कपिकीन्हा

दो० भरत बाहुबल शीलगुण, प्रभुपद प्रीति अपाँर।
जात सराहत मनहिं मन, पुनिपुनि पवनकुमार॥

१ धनुष २ जल ३ कठिन ४ हनूमान् ५ बाण ६ आज्ञा ७ बेहद॥

उहां राम लक्ष्मणहिं निहारी ❀ बोले वचन मनुज अनुहारी
अर्द्धरात्रि गइ कपि नहिं आवा ❀ राम उठाइ अनुजे उरलावा
सकेहु न दुखित देखि मोहिं काऊ ❀ बन्धु सदा तव मृदुलस्वभाऊ
ममहित लागि तजे पितु माता ❀ सहेउ विपिनै हिम आतैपवाता
सो अनुराग कहां अब भाई ❀ उठहु विलोकि मोरि विकलाई
जो जनत्यों वन बन्धु बिछोहू ❀ पिता वचन नहिं मनत्यों वोहू
सुतै वित नारि भवन परिवारा ❀ होहिं जाहिं जग बारहिंवारा
असविचारि जिय जागहु ताता ❀ मिलहि न जगत सहोदरभ्राता
यथा पंखबिनु खगपति दीना ❀ मणिबिनुफणि करिवरकरहीना
अस मम जिवन बन्धुबिनु तोहीं ❀ जो जड़ दैव जियावै मोहीं
जैहों अवध कवन मुहँ लाई ❀ नारिहेतु प्रियबन्धु गँवाई
बरु अपयश सहतेउँ जगमाहीं ❀ नारिहानि विशेष क्षति नाहीं
अब अवलोकि शोक यह तोरा ❀ सहै कठोर निठुर उर मोरा
निजजननी के एक कुमारा ❀ तात तासु तुम प्राणअधारा
सौंपेउ मोहिं तुमहिं गहि पानी ❀ सबविधि सुखद परमहितजानी
उतर ताहि देहौं का जाई ❀ उठि किन म्वहिं समुझावहु भाई
बहुविधिशोचत शोचविमोचन ❀ स्रवत सलिलै राजिवदललोचन
उमा अखण्ड राम रघुराई ❀ नरगति भाव कृपालु दिखाई

सो० प्रभु विलाप सुनि कान, विकलभये वानरनिकँर ।
आय गये हनुमान, जिमिकरुणामहँवीररस॥

हरषि राम भेंटे हनुमाना ❀ अतिकृतज्ञ प्रभु परमसुजाना
तुरत वैद्य तब कीन्ह उपाई ❀ उठि बैठे लक्ष्मण हर्षाई
हृदय लाइ भेंटे प्रभु भ्राता ❀ हर्षे सकल भालु कपि व्राता
पुनि कपि वैद्य तहां पहुँचावा ❀ जेहिविधितबहिं ताहि लैआवा
यह वृत्तान्त दशानन सुनेऊ ❀ अतिविषादपुनिपुनिशिरधुनेऊ

१ छोटाभाई २ वन ३ घाम ४ पुत्र ५ पानी ६ कमल ७ समूह ८ झुण्ड ९ हाल ॥

व्याकुल कुम्भकर्णपहँ गयऊ ❀ करि बहुयतन जगावत भयऊ
जागा निशिचर देखिय कैसा ❀ मानहुँ कालदेह धरि वैसा
कुम्भकर्ण पूछा सुनु भाई ❀ काहे तव मुख रहा सुखाई
कथा कही सब तेहिं अभिमानी ❀ जेहिप्रकार सीता हरि आनी
तात कपिन निशिचर संहारे ❀ महामहा योधा सब मारे
दुर्मुख सुररिपु मनुजअहारी ❀ भट अतिकाय अकम्पन भारी
अपर महोदर आदिक वीरा ❀ परे समरमहँ सब रणधीरा

दो० दशकन्धर के वचन सुनि, कुम्भकर्ण बिलखान।
जगदम्बा हरिआनिकै, शठचाहसि कल्यान॥

भल न कीन्ह तैं निशिचरनाहा ❀ अब मोहिं आनिजगायहुकाहा
अजहुँ तात त्यागहु अभिमाना ❀ भजहु राम होइहि कल्याना
हैं दशशीश मनुज रघुनायक ❀ जिनके हनूमान से पायक
अहह बन्धु तैं कीन्ह खुटाई ❀ प्रथमहिं मोहिं न जगायहु आई
कीन्हेहु प्रभुविरोध तेहि देवक ❀ शिव विरँचि सुर जाके सेवक
नारदमुनि मोहिं ज्ञान जो कहेऊ ❀ कहतेउँ तोहिं समय नहिं रहेऊ
अब भरि अंक भेंटु मोहिं भाई ❀ लोचन सफल करौं मैं जाई
श्यामगात सरसीरुह लोचन ❀ देखौं जाइ तापत्रयमोचन

दो० रामरूपगुण सुमिरि मन, मगन भयो क्षण एक।
रावण मांगेउ कोटि घट, मद अरुमहिष अनेक॥

महिष खाइ करि मदिरापाना ❀ गर्जेउ वज्रघात अनुमाना
कुम्भकर्ण दुर्म्मद रणरङ्गा ❀ चला दुर्ग तजि सेन न सङ्गा
देखि विभीषण आगे आयउ ❀ पुनिपदगहि निजनामसुनायउ
अनुज उठाय हृदय तेहि लावा ❀ रघुपतिभक्त जानि मनभावा
तात लात मोहिं रावण मारा ❀ कहत परमहित मन्त्र विचारा
तेहिगलानिरघुपतिपहँआयउँ ❀ दीनजानि प्रभुके मन भायउँ

१ गर्वीला २ नाशकिये ३ योद्धा ४ लड़ाई ५ सीता ६ मनुष्य ७ ब्रह्मा ८ गोदी ॥

सुनु सुत भयउ कालवश रावन ❀ सो किमि मानै परम सिखावन
धन्य धन्य तैं धन्य विभीषण ❀ भयउ तात निशिचरकुलभूषण
बन्धु वंश तैं कीन्ह उजागर ❀ भजहु राम शोभा सुखसागर

दो० मन क्रम वचन कपट तजि, भजहु राम रणधीर।
जाहु न निजपर सूझमोहिं, भयउँ कालवश वीर॥

बन्धुवचन सुनि फिरा विभीषण ❀ आयउ जहँ त्रैलोक्यविभूषण
नाथ भूधराकार[2] शरीरा ❀ कुम्भकर्ण आवत रणधीरा
इतना कपिन सुना जब काना ❀ किलकिलाइ धाये बलवाना
लिये उपारि विटप[3] अरु भूधर ❀ कटकटाइ डारे तिहिं ऊपर
कोटि कोटि गिरिशिखर[4] प्रहारा ❀ करहिं भालु कपि एकहिबारा
गिरै न मुरै टरै नहिं टारे ❀ जिमि गज आँकफ[5]लन के मारे
तब मारुतसुत मुष्टिक हनेऊ ❀ परेउधरणि व्याकुल शिरधुनेऊ
पुनि उठि तेइँ मारेउ हनुमन्ता ❀ घुर्मित घायल परेउ तुरन्ता
पुनि नलनीलहिंआनिपछारेसि ❀ जहँतहँ पटकिपटकिभटमारेसि
चली बलीमुख[6] सेन पराई ❀ अतिभयत्रासित न कोउ ससुहाई

दो० अङ्गदादि कपि मूर्च्छित, करि समेत सुग्रीव।
कांखदाबि कपिराज कहँ, चला अमित बलसीव॥

उमा करत रघुपति नरलीला ❀ खेलगरुड़जिमिअहिगणमीला
भृकुटिभङ्ग जिहि कालहि खाई ❀ ताहि कि ऐसी सोह लराई
जगपावन कीरति विस्तरहीं ❀ गाइगाइ नर भवनिधि तरहीं
मूर्च्छा गइ मारुतसुत जागा ❀ सुग्रीवहिं तब खोजन लागा
कपिराजहुकर मूर्च्छा बीती ❀ निबुकि[7]गयो तेहिमृतकसप्रीती
काटेसि दशन नासिका काना ❀ गर्जि अकाश चला तेहि जाना
गहेसिचरणत्यहि धरणि पछारा ❀ अतिलाघव[8] पुनि उठितेहिमारा
पुनि आयउ प्रभुपहँ बलवाना ❀ जयतिजयतिजय कृपानिधाना

१ पुत्र २ पर्वतसरीखा ३ वृक्ष ४ कँगूरा ५ मदार ६ वानर ७ कूदकर ८ शीघ्र॥

नाक कान काटे तेहि जानी ❀ फिरा क्रोधकरि मानि गलानी
सहजभीम पुनि बिनुश्रुतिनासा ❀ देखत कपिदल उपजा त्रासा
दो० जय जय जय रघुवंशमणि, धाये कपि करि हूह।
एकहिबार जो तासु पर, डारे गिरि तरु जूह॥
कुम्भकर्ण रणरङ्ग विरोधा ❀ सम्मुख चला काल जनु क्रोधा
कोटि कोटि कपि धरिधरि खाई ❀ जनु टीड़ी गिरिगुहा समाई
कोटिन गहि शरीर महँ मर्दा ❀ कोटिन मींजि मिलायसि गर्दा
मुख नासिका श्रवणकी बाटा ❀ निकसि पराहिं भालुकपि ठाटा
रण मदमत्त निशाचर दर्पा ❀ मानहुँ विश्वग्रसन कहँ अर्पा
भिरे सुभट रण फिरहिं न फेरे ❀ सूझ न नयन सुनहिं नहिं टेरे
कुम्भकर्ण कपिफौज बिडारी ❀ सुनि धाये रजनीचर भारी
देखी राम विकल कटकाई ❀ रिपु अनीक नाना विधि आई
दो० सुनहु विभीषण लषणसह, सकल सँभारहु सैन।
मैं देखौं खलबल दलहिं, बोले राजिवनैन॥
कर शारंग विशिख कटिभाथा ❀ मृगपतिठवनि चले रघुनाथा
प्रथम कीन्ह प्रभु धनुटंकोरा ❀ रिपुदल बधिरभये सुनिशोरा
सत्यसंध छांड़े शरलक्षा ❀ कालसर्प्प जनु चले सपक्षा
अतिबल चले निकर नाराचा ❀ लगे कटन भट विकट पिशाँचा
कटहिं चरण शिर उर भुजदण्डा ❀ बहुतक वीर होहिं शतखण्डा
घूर्मि घूर्मि घायल भटपरहीं ❀ उठहिंसँभारिसुभट फिरिलरहीं
लागत बाण जलद जिमि गाजैं ❀ बहुतक देखि कठिनशर भाजैं
रुण्डप्रचण्ड मुण्डबिनु धावहिं ❀ धरु धरु मारु मारु गोहरावहिं
दो० क्षणमहँ प्रभुके शायकन, काटे विकट पिशाच।
पुनि रघुपति के त्रोणमहँ, प्रविशे सब नाराच॥
कुम्भकर्ण मन दीख विचारी ❀ क्षणमहँ हते निशाचर भारी

१ कान २ योधा ३ फ़ौज ४ श्रीराम ५ बाण ६ सिंह ७ राक्षस ८ बादल ९ तर्कस॥

भयउ क्रोध दारुण बलवीरा ❋ करि मृगनायक नादगँभीरा
कोपि महीधर लिये उपारी ❋ डारेसि जहँ मर्कट भटभारी
आवत देखि शैल प्रभु भारे ❋ शरनकाटि रजसम करिडारे
पुनि धनुतानि कोपि रघुनायक ❋ छांड़े अतिकराल बहुशायक
तनमहँप्रविशि निसरिशरजाहीं ❋ जिमिदामिनि घनमाहिंसमाहीं
शोणित[१] स्रवत सोह तनुकारे ❋ जिमि कज्जलगिरि गेरुपनारे
विकलविलोकि भालुकपि धाये ❋ बिहँसाजबहिं निकटचलिआये

दो॰ गर्जत धायउ वेग अति, कोटि कोटि गहि कीश ।
महि पटकै गजराज इव, शपथ[२] करै दशशीश ॥

भागे भालु कपिन के यूथा ❋ वृकं[४] विलोकि जिमि मेष[५]वरूथा
चले भालु कपि भाजि भवानी ❋ विकल पुकारत आरतबानी
यह निशिचर दुकालसम अहई ❋ कपिकुल देश परन अब चहई
कृपा वारिधर राम खरारी ❋ पाहि पाहि प्रणतारतिहारी
करुणा[६]वचन सुनत भगवाना ❋ चले सुधारि शरासन बाना
राम सेन निज पाछे घाली ❋ चले सकोप महाबलशाली
खैंचि धनुष शत शर संधाने ❋ छूटे तीर शरीर समाने
लागत शर धावा रिस भरा ❋ कुधर[७] डगमगेउ डोली धरा
लीन्ह एक तेइँ शैल उपाटी ❋ रघुकुलतिलक भुजा सोइ काटी
धावा वामबाहु गिरि धारी ❋ प्रभु सो भुजा काटि महि डारी
काटे भुज सोहै खल कैसा ❋ पक्षहीन मन्दरगिरि जैसा
उग्रविलोकनि प्रभुहिं विलोका ❋ मानहुँ ग्रसन चहत त्रैलोका

दो॰ करि चिकार मुख घोरअति, धावा वदन पसार ।
गगन सिद्ध सुर त्रसित सब, हाहाकार पुकार ॥

सभय देव करुणाकर जाने ❋ श्रवण प्रयन्त शरासन ताने
विशिखनिकरनिशिचरमुखभरेऊ ❋ तदपि महाबल भूमि न परेऊ

१ खून २ सुवत ३ क़सम ४ भेड़िया ५ भेड़ीसमूह ६ मीठीबात ७ पहाड़ ॥

शरन भरा मुख सम्मुख धावा ❀ कालत्रोण[1]जनु तनु धरिआवा
तब प्रभु कोपि तीव्रशर लीन्हा ❀ धड़ते भिन्न तासु शिर कीन्हा
सो शिर परा दशानन आगे ❀ विकलभयोजिमिफणिमणित्यागे
धरणि धसै धरधाव प्रचण्डा ❀ तब प्रभु काटिकीन्ह युगखण्डा
परे भूमि जिमि नभ ते भूधर ❀ तरे दाबि कपि भालु निशाचर
तासु तेज प्रभुवदन समाना ❀ सुर मुनि सबहिं अचम्भवमाना
नभ दुन्दुभी बजावहिं हर्षहिं ❀ जयजयकहि प्रसून सुर वर्षहिं
करि विनती सुरसकल सिधाये ❀ तब तेहि समय देवऋषि आये
गगनोपरि[2] हरिगुणगण गाये ❀ रुचिर वीररस प्रभुहि सुनाये
वेगि हतहु खल मुनि कहिगये ❀ राम समरमहँ शोभितभये

छं० संग्रामभूमिविराजरघुपति अतुलबल शोभाधनी।
श्रमबिन्दु[3]मुखराजीवलोचन रुचिरतनु शोणितकनी॥
भुजयुगलफेरत शरशरासन भालुकपि चहुँदिशि बने।
कहदासतुलसी कहि न सक छबि[4] शेष जेहि आननघने॥

दो० निशिचरअधममलायतन, ताहिदीन्हनिजधाम।
गिरिजा ते नर मन्दमति[5], जे न भजहिं श्रीराम॥

दिनके अन्त फिरीं दोउ अनी ❀ समर भई सुभटनसन घनी
रामकृपाबल कपिदल बाढ़ा ❀ जिमि तृण[6]बढ़े लगे अतिडाढ़ा
छीजहिंनिशिचर दिनअरुराती ❀ निजमुख कहे धर्म्म जेहि भांती
बहु विलाप दशकन्धर करई ❀ पुनि पुनि बन्धुशीशं[7] उरधरई
रोवहिं नारि हृदय हति पानी ❀ तासु तेज बल विपुलबखानी
मेघनाद तेहि अवसर आवा ❀ कहि बहुकथा पितहिं[8]समुझावा
देखहु कालिह मोरि मनुसाई ❀ अबहिं बहुत का करौं बड़ाई
इष्टदेव सन जो वर पायउँ ❀ सो बल तात न तुमहिं सुनायउँ
यहिविधिजल्पत भयो बिहाना ❀ चारिहु द्वार लगे कपि नाना

१ तरकस २ आकाश में ३ पसीना ४ शोभा ५ मूढ़ ६ घास ७ मस्तक ८ पिता॥

इत कपि भालु कालसम वीरा ❀ उत रजनीचर अति रणधीरा
लरहिं सुभट निजनिज जयहेतू ❀ वरणि न जाइ समर खगकेतू

दो॰ मेघनाद माया विरचि, रथचढ़ि गयो अकास।
गर्जेउप्रलयपयोदजिमि, भा कपिदल अतित्रास॥

शक्ति शूल शर परिघ कृपाना ❀ अस्त्र शस्त्र कुलिशायुध नाना
डारै परशु परिघ पाषाणा ❀ लागा वृष्टि करै बहु बाणा
रहे दशहुँ दिशि शायक छाई ❀ मानहुँ मघा मेघ झरिलाई
धरु धरु मारु सुनहिं कपिकाना ❀ जो मारै तेहि कोउ न जाना
गहिगिरि तरु¹ अकाशकपिधावैं ❀ देखहिंतेहि न दुखितफिरिआवैं
अवघट घाट बाट गिरिकन्दर ❀ मायावश कीन्हेसि शरपञ्जर
जाहिं कहां भय व्याकुल बन्दर ❀ सुरपति वन्दि परे जिमि मन्दर
मारुतसुत² अंगद नल नीला ❀कीन्हेसिविकलसकलबलशीला
पुनि लक्ष्मण सुग्रीव विभीषन ❀ शरनमारि कीन्हेसि जर्जरतन
पुनि रघुपतिसन जूझनलागा ❀ छांड़त शर ह्वै लागहिं नागा³
व्यालफांस⁴ वश भये खरारी ❀ स्ववश अनन्त एक अविकारी
नटइव चरितकरत विधिनाना ❀ सदा स्वतन्त्र राम भगवाना
रणशोभाहित आपु बँधावा ❀ देखि दशा देवन भयपावा

दो॰ खगपति⁵ जाकर नामजपि, नर काटहिं भवफांस।
सो प्रभु आव कि बन्धतर, व्यापकविश्वनिवास॥

चरित रामके सगुण भवानी ❀ तर्कि न जाइँ बुद्धि मन बानी
अस विचारि जे तज्ञ विरागी ❀ रामहिं भजहिं तर्क⁶ सब त्यागी
व्याकुल कटक कीन्ह घननादा⁷ ❀ पुनिभा प्रकट कहत दुर्वादा
जामवन्त कह खल रहु ठाढ़ा ❀ सुनिकै ताहि क्रोध अतिबाढ़ा
बूढ़ जानि शठ छांड़ेउँ तोहीं ❀ लागेसि अधम प्रचारन मोहीं
असकहि ताहि त्रिशूल चलावा ❀ जामवन्त सो कर गहिधावा

१ वृक्ष २ हनुमान् ३ सर्प ४ नागफांस ५ गरुड़ ६ विचार ७ मेघनाद॥

मारेउ मेघनाद की छाती ❀ परा धरणि घुर्मित सुरघाती
पुनि रिसाइ गहिचरण फिरावा ❀ महिपछारि निजबल दिखरावा
वर प्रसाद सो मरहि न मारा ❀ तब पद गहि लङ्कापर डारा
इहां देवऋषि गरुड़ पठाये ❀ रामसमीप सपदि सो आये

दो० खगपति सब धरि खायऊ, माया नाग वरूथ।
माया विगत भये सब, हर्षे वानर यूथ॥
गहि गिरि पादप उपल नख, धाये कीश रिसाइ।
चले तमीचर विकल तब, गढ़पर चढ़े पराइ॥

मेघनाद की मूर्च्छा जागी ❀ पितहिंविलोकिलाजअतिलागी
तुरत गयो सो गिरिवर कन्दर ❀ करौंअजयमखअस मनमहँधर
सो सुधिपाइ विभीषण कहई ❀ सुनु प्रभु समाचार अस अहई
मेघनाद मख करै अपावन ❀ खल मायावी देव सतावन
सो प्रभु सिद्धि होइ जो पाइहि ❀ नाथ वेगि रिपु जीति न जाइहि
सुनिरघुपतिअतिशयसुखमाना ❀ बोलि लिये अङ्गद हनुमाना
लक्ष्मण संग जाहु सब भाई ❀ यज्ञ विध्वंस करहु तुम जाई
तुम लक्ष्मण रण मारेहु ओही ❀ देखि सभय सुर बड़दुख मोहीं
मारेहु तेहि बल बुद्धि उपाई ❀ जेहि छीजै निशिचर सुनु भाई
जामवन्त कपिराज विभीषन ❀ सेन समेत रहेहु तीनों जन
जब रघुवीर दीन्ह अनुशासन ❀ कटि निषंग कसि साजिशरासन
प्रभु प्रताप उरधरि रणधीरा ❀ बोले घनइव गिरा गँभीरा
जो तेहिं आजु बधे विनु आवों ❀ तौ रघुपति सेवक न कहावों
जो शत शङ्कर करहिं सहाई ❀ तदपि हतौं रघुवीर दुहाई

दो० वन्दि रामपद कमलयुग, चले तुरन्त अनन्त।
अङ्गद नील मयन्द नल, सङ्ग सुभट हनुमन्त॥

जाइ कपिन देखा सो वैसा ❀ आहुति देत रुधिर अरु भैंसा

१ वृक्ष २ यज्ञ ३ अपवित्र ४ बहुत ५ मेघनाद ६ सुग्रीव ७ आज्ञा ८ खून॥

कीन्ह कपिन तब यज्ञ विध्वंसा ❀ जब न उठै तब करहिं प्रशंसा
तदपि न उठै धरहिं कच जाई ❀ लातन हति हति चलहिं पराई
लै त्रिशूल धावा कपि भागे ❀ आये राम अनुज के आगे
आवा परमक्रोध करि मारा ❀ गर्जि घोर रव बारहिंबारा
कोपि मरुतसुत अङ्गद धाये ❀ हति त्रिशूल उर धरणि गिराये
प्रभुपर छांड़ेसि शूल प्रचण्डा ❀ शरहतिकृत अनन्तयुगखण्डा
उठि बहोरि मारुत युवराजा ❀ हतेउ कोपि तेहि घाव न बाजा
फिरे वीर रिपु मरै न मारा ❀ पुनि धावा करि घोर चिकारा
आवत देखि क्रोध जनु काला ❀ लक्ष्मण छांड़े विशिख कराला
आवत देखि वज्रसम बाना ❀ तुरत भयो खल अन्तर्द्धाना
विविध वेष धरि करै लड़ाई ❀ कबहुँक प्रकट कबहुँ दुरिजाई
तब त्रिशूल छांड़ेसि लक्ष्मणपर ❀ काटिकीन्ह शतखण्डधरणिधर
शिखर एक लै पुनि सो धावा ❀ रामअनुज सो काटि खसावा

दो॰ आयुधविविधप्रहार किय, रजसमकीन्ह फणीश।
हर्ष विवश कपि रीछ सब, विबुधसहित सुरईश॥

बहुरि विविध शर छांड़नलागा ❀ रणकारण छूटहिं जिमि नागा
राम अनुज शर गरुड़ समाना ❀ उमा ग्रसत छूटहिं अभिमाना
देखि अजयरिपु डरपेउ कीशा ❀ परमक्रुद्ध तब भये अहीशा
देखिय जिमि रवितेज समाना ❀ फुकरत मनहुँ व्याल अनुमाना
लक्ष्मण मन अस मन्त्र दृढ़ावा ❀ यहिपापिहिं मैं बहुत खेलावा
सुमिरि कोशलाधीश प्रतापा ❀ शर सन्धान कीन्ह अतिदापा
छांड़ा बाण तासु उरलागा ❀ शीश भुजा काटे नृपनागा
घनसमान सो गर्जि अभागा ❀ मरतीबार कपट सब त्यागा

दो॰ रामअनुजकहि रामकहि, असकहि छांड़ेसि प्रान।
धन्य शक्रजित मातुतव, कह अङ्गद हनुमान॥

१ श्रीलक्ष्मण २ हथियार ३ इन्द्र ४ लगतेही ५ बड़े घमंडले ६ मेघनाद॥

बिनु प्रयास हनुमान उठाये ❋ लङ्काद्वार राखि तेहि आये
तासु मरण सुनि सुर गन्धर्वा ❋ चढ़ि विमान आये नभ सर्वा
बरषि सुमन दुन्दुभी बजावहिं ❋ श्रीरघुवीर विमलयश गावहिं
जय अनन्त जय जगदाधारा ❋ तुम प्रभु सर्व देव निस्तारा
अस्तुतिकरि सुरसिद्ध सिधाये ❋ लक्ष्मण कृपासिन्धुपहँ आये

अथ क्षेपक ॥

प्रभुहिं विलोकि शीशपदनाये ❋ उठि प्रभु अनुज हरषि उरलाये
कृपादृष्टि करि अनुजहिं हेरा ❋ विगतभयो श्रम[1] जब करफेरा
बाण बेधि तनु देखियत कैसे ❋ कनक[2]तूण शर पूरित जैसे
मुख प्रसन्नता देखि छके सब ❋ रिपुबध कहा विभीषणहू तब
धारेउ शीश आनि प्रभु आगे ❋ वानर भालु विलोकन लागे
प्रभुकौतुकी निरखि सोइशीशा ❋ राखन कहेउ कोशलाधीशा

दो० प्रभुआयसुसुनिकीशपँति[3], राखेउ यतन कराय ।
कटकसहित रघुवंशमणि, शोभितअतिदोउभाय॥

कृपादृष्टि सब कटक निहारे ❋ भे श्रम रहित राम बैठारे
सुनहु उमा यहिविधि रिपुँ[4] मारे ❋ सुर गँधर्व मुनि भये सुखारे
अब सो सुनहु भुजा तेहिकेरी ❋ खगँ[5] जिमि गई लंक शरप्रेरी
मेघनाद आंगन में परी ❋ बाणबेधि शोणितसों भरी
देखति तहां सुलोचनि कैसी ❋ रति ते रुचिर रूप गुण जैसी
नागसुता दशकन्ध पतोहू ❋ वासवरिपुतिय[6] छविमय जोहू
हेमसिंहासन सोहत बाला ❋ सेवत विद्याधरि त्रयकाला
पूजत विविध विनय कर ताही ❋ मुख प्रमोद[7] को सकत सराही
तहँ पतिभुजा परी यहिभांती ❋ मनहुँ सकल सुखतरु की कांती

दो० तब निजदासिन देखितहँ, शोणस्रवत भुजदण्ड ।
भयउ समर आश्चर्यमय, मनहुँअखण्डनखण्ड॥

१ थकावट २ सुवर्ण ३ सुग्रीव ४ दुश्मन ५ गरुड़ ६ मेघनाद की स्त्री ७ आनन्द ॥

सुनिकर सकल सखी मुखवैना ❀ तजि सिंहासन उठी सुनैना
प्रेम सुभाय धुकधुकी धरकी ❀ सूचकअशुभ दहिनभुज फरकी
होत महारण रावण रामहिं ❀ वीर धुरीण मोर पिय तामहिं
सकल सुरासुर सकहिं न जूझी ❀ विधि वामता परत नहिं बूझी
इतना कहत गई चलि आपू ❀ पतिभुजलखि करिकोटिकलापू
कंचन मणिगण भूषण सोई ❀ महाविटप सम आन न होई
देखत मनहिं न आवत तेही ❀ जासु प्रभाव सुनत किनलेही
नींद नारि भोजन परिहरई ❀ बारह वर्ष तासु कर मरई
दो० करि विचार सम टेक दै, मैं पतिदेवत नारि।
भुजलिखि मेटहु दुचितई, सुनि कर दीन्हपसारि॥
लखि रुख तासु सखी उठिधाई ❀ सो तेहि खोजि खरी लैआई
दीन्ह हाथ मणिमय अँगनाई ❀ लिखन लषणकीरति रुचिराई
नींद नारि भोजन शतकोटी ❀ तजत तासुमहिमा अतिछोटी
अक्षय अखंड अलख अविनासी ❀ अतुल अमित घटघट के वासी
प्रकटहिं पालहिं पुनि संहरई ❀ त्रिगुणरूप त्रय मूरति धरई
जो कालहु कर काल भयंकर ❀ वर्णत शेष शारदा शंकर
लीलातनु सुर सेवक हेतू ❀ जासु नाम भवसागर सेतू
मुनि मन पुण्डरीकैं जाके घर ❀ वचन विवेक विचार बुद्धिवर
दो० कोटिकल्प वर्णत निगम, अगम जासु गुणगाथ।
तमशरीर जड़ जीवबिनु, किमिवर्णतलिखिहाथ॥
मम शिर गयो दरश रघुराई ❀ तव प्रतीतिलगि भुजा पठाई
यहिविधिलिखेउसकलभुजबाता ❀ परी भूमि तब अति विकलाता
बांचिसकलभुजलिखितयथारथ ❀ लक्ष्मण राम नाम परमारथ
त्रियास्वभाव तदपि बहुभांती ❀ बिलखतसकलसखिनकरपांती
गुणगण साहस शील नाहँको ❀ कहिरोवत बल विपुल बांहको

१ बराबर २ छोड़े ३ पतिव्रता ४ कमल ५ वेद ६ क्योंकर ७ विश्वास ८ स्वामी॥

जेहिभुजबल सुरनाथ विगोवा ❀ सो भुज आजु समरमहि सोवा
मणिगण भूषण वसन विसारत ❀ महिलोटत करतल शिरमारत
मगनविपतिनिजतनुसुधिनाहीं ❀ दारुण विपतिकहिन केहिपाहीं
छिनकप्रबोध सखी कोउ करही ❀ बहुरि शोक दावानल जरहीं
क्षणक्षण उठत परत धरणीतल ❀ पुनिपुनि सब सराहपतिकोबल

दो॰ तिनमें सखी सयानि इक, कहि समुझावत बैन ।
शोक छांड़ि पतिदेवता², सुमति करौ मतिऐन ॥

सुनिकर सहसानन तनजाता ❀ सत्य कहत तुम सखी सुमाता
विधि निर्मित दुख मोकहँ लाहू ❀ सुख परिपूर भवन सबकाहू
विजय राम लक्ष्मण कहँ आवा ❀ सुयश सकल मर्कट³कुल पावा
कुलकलंक बड़ लहेउ विभीषन ❀ कुलकुठार⁴ अस सुनेउ न दीखन
छूटि बन्दि अब सुरगणकेरी ❀ निज निज पुरन दुहाई फेरी
मुनि पुलस्त्यकर भा कुलनाशा ❀ अबरविशशिसुखकरहिंप्रकाशा
तेजवन्त पावक परिहरि दुख ❀ बहब समीर⁵ आजु अपने सुख
सलिल गंग निर्मल जल आजू ❀ सुबस बसहिं सुरनायक राजू

दो॰ यम कुबेर दिकपाल सब, प्रमुदित सुर नर नाग ।
खाय अघाय विहाय दुख, पाय सुयज्ञ विभाग ॥

इतना कहि मन्दिर महँ आई ❀ देखत मणिगण धन बहुताई
सुरपतिभवन सुपटतर नाहीं ❀ जहँ ऋधिसिधि तनुधरे कमाहीं
देखत विभव न मन अनुरागा ❀ पतिपद प्रेम निपुणमन पागा
देत दान मणि भूषण चीरा ❀ धेनु धरणि गज हाटक हीरा
मणिमय शिविका⁶ रुचिरसुहाई ❀ भुज चढ़ाइ पहिराइ बनाई
आपहु चढ़त भई पुनि आई ❀ सुरदुर्लभ सुखसदन⁷ विहाई
वीतराग⁸ जिमि तजतविषयगन ❀ तेहिंतसभांति दियोपतिपदमन
शुक सारिका⁹ सुलोचनि ज्याये ❀ कनक पींजरन राखि पढ़ाये

१ अग्नि २ पतिव्रता ३ वानर ४ कुल्हाड़ी ५ हवा ६ पालकी ७ घर ८ वैरागी ९ मैना ॥

व्याकुलकह कहँजात सुनयना ❀ सुनि धीरज परिहरत सुबयना
भये विकल खग मृग यहिभांती ❀ अपर दशा कैसे कहिजाती
प्रजालोग गृहतजि सँगलागे ❀ प्रेम उमँगि लोचन जलपागे
दो० बाजन लगे निशान[1] बहु, ढोल दुन्दुभी भेरि।
पुरजन परिजन संग सब, चले पालकी घेरि॥
देखि भीर दशकन्धर द्वारे ❀ सजग[2] भये सब वीर प्रचारे
जानेउ कटक रिपुनकर आवा ❀ अस्त्र शस्त्र कर गहिकर धावा
धनुचढ़ाइ कटितरकस बांधे ❀ कोउ असि[3] चर्म शरासन सांधे
तोमर परशु प्रचण्ड गदा गहि ❀ रोषन चोखे शूल शक्ति लहि
मारु मारु धरु धरु कहि धाये ❀ प्रकट दशानन विजय सुनाये
गर्जत तर्जत गिरा गँभीरा ❀ समर भयंकर[4] निशिचरवीरा
निपटहिं निकट पालकी आई ❀ चीन्हि सकल भट रहे लजाई
देखि जुहारि नागपतिकन्या[5] ❀ सतीशिरोमणि त्रिभुवनधन्या
दो० द्वारपाल दशकन्ध बहु, खबरि जनाई जाय।
भयउ रजायसु वेगि तब, वचन कहत बिलखाय॥
तुमहिं अछत असदशा हमारी ❀ सुख तजि भई शोक अधिकारी
नभपथ[6] है भुज ममगृह परा ❀ बाणबेधि शोणित तनुभरा
देखि भुजा मनमें अति डरी ❀ संशय जानि दीन्ह कर खरी
लिखी राम लक्ष्मण महिमा इन ❀ क्रमक्रम सों सब कथा कही तिन
ठगिसी रही बांचि गुणगाथा ❀ जरहुँ संग जो पाऊं माथा
रण कबन्ध भुज ममगृह आई ❀ शिर तहँ गयउ जहां रघुराई
करसोयतनमिलहिमोहिंशीशा ❀ तुम सामर्थ निशाचरईशा
सुनत कुलिश[8]समगिरा बधूकी ❀ जीवनआश दशानन मूकी
तदपि धीरधरि करसि प्रबोधा ❀ कहु को मोहिं समान जगयोधा
दो० राम लषण सुग्रीव नल, नील द्विविद हनुमन्त।

१ नगाड़ा २ होशियार ३ तलवार ४ विकराल ५ सुलोचना ६ आकाशमार्ग ७ शक ८ वज्र॥

माथ विभीषणऋषभकर, आनब मारि तुरन्त ॥
अबलगि रहेउ भरोसा भारी ❀ कुम्भकर्ण घननाद सुरारी
हमहुँ आजुलगि कीन्ह न जूझा ❀ इन सबकर पुरुषारथ बूझा
मरेउ सो नर वानर के मारे ❀ बात सुनत अतिलाज हमारे
गिनती कौन वीर में तिनकी ❀ अतिदुर्दशाकीन्हकपि जिनकी
तजहु शोक कुलबधू पतोहू ❀ उन समान जनि मानसि मोहू
पुत्रि विलम्ब करौ घटिचारी ❀ देखहु मोरि भयङ्कर मारी
आनि शीश तव शत्रुन केरा ❀ बिनु प्रयास नहिं लावों बेरा
भोगत जन्तु पराक्रम भोगा ❀ नतुकिन निशिचरवनचरयोगा
दो० मेरु उखारनहार जे, धरा धरत कर बीच ।
तेभट खायेमशंकशिशु, काल कुटिलता नीच ॥
क्रोधावेश प्रगल्भहिं बोली ❀ हृदयशोक तनुअचल न डोली
समाधान नहिं मानत सोई ❀ सुनि प्रलाप परितोष न होई
नर वानर पुरुषारथ देखत ❀ बड़ो प्रभाव छोट करि लेखत
कूदि सिंधु कपि लङ्का जारी ❀ लघुकर मानत ताहि सुरारी
कुम्भकरण अतिकाय महोदर ❀ ममपति गिरेउ समेतसहोदर
ते रिपु चहत दशानन जीती ❀ देखहु महामोह कर रीती
उतर देउँ तौ पातक होई ❀ कह विवादकर सर्बस खोई
फिरहिराज्य कछुमोहिं न काजू ❀ बिनु पिय सकल नरककरसाजू
दो० तुरतहि उठी सुलोचना, गइ मयतनया पास ।
पदगहि रोवत सकल कह, प्रकट शोक इतिहास ॥
आदिहिते सब कथा बखानी ❀ सुनिसुनि रोवत रावणरानी
कहनिजपतिभुजलिखितबहोरी ❀ राम लषणमहिमा नहिं थोरी
कह्यो बहुरि दशकन्धर क्रोधा ❀ सुये विडंबन कीन्हेसि बोधा
सुनि निज पुत्रबधू की बानी ❀ बोली दुखित मँदोदरिरानी

१ राक्षस २ लड़ाई ३ पतिव्रता ४ मिहनत ५ मच्छड़ ६ स्थिर ७ मन्दोदरी ८ निन्दा ॥

कहत सो मानहु सत्य सयानी ❀ सुनी जो नारदमुनिकी बानी
पाछिलि बात भई सब सांची ❀ अनुभवकीन्ह न एकहुबांची
देवि न होय मृषा ऋषिभाखा ❀ अपने महामोह मन राखा
अगली कथा समास समेता ❀ सुनु पुत्री ऋषि वरणेउ जेता
वैरभाव दशकन्धर जूझब ❀ प्राणहुगये नीति नहिं बूझब
सिया शोक सङ्कट ते छूटहिं ❀ वानर भालु राजघर लूटहिं
सुर मणि भूषण वसन विमाना ❀ भोगकरहिं वनचर कुलनाना

दो० राज्य विभीषण पाइहैं, अमर कल्प निर्वाह।
भावीवशदुखसुखजगत, उपदेशिय कहु काह॥

मुनिवर वचन मोहिं परतीती ❀ अनुभव दोउ हार अरु जीती
अब पुत्री परिहरि सब शोका ❀ पतिसँग वेगि साधु परलोका
जाहु रामपहँ पतिशिर लागी ❀ तजि सङ्कोच आनुकिन मांगी
आजु न होइ लाजकर भूषण ❀ समयहीनगुणगनिय न दूषण
है पुनि श्वशुर विभीषण तोरा ❀ बालितनय बालकसम मोरा
एक नारि व्रत रघुवर केरा ❀ लषणसुयश तुम सुनेउ घनेरा
जाम्बवन्त मन्त्री सुग्रीवा ❀ द्विविद मयंद महाबलसींवा
जानहु ब्रह्मचर्य हनुमन्ता ❀ शिवस्वरूप भव हर भगवन्ता
सदा नीतिरत राम नरेशा ❀ तहांजात कहु कवनकलेशा

दो० विदिततोरपतिभुजलिखित, लक्ष्मणराम प्रभाव।
हमहूं ऋषिभाषित कहेउ, अबविलम्बजनिलाव॥

सुनत सासुमुखकी हितबानी ❀ जाहुँ रामपहँ अस जियजानी
बार बार वर्णत शिरनाई ❀ चली जहां लक्ष्मण रघुराई
देखत कटक भालु कपि केरा ❀ सिन्धु सुबेल महीधर घेरा
उमँगेउ मनो महोदधि दूसर ❀ हरित पीत कपि धूमर धूसर
व्योमलाल भाषत अनहेरी ❀ मनहुँ लेत वड़वानल घेरी

१ विचार २ झूठ ३ वानर ४ छोड़के ५ परमधाम ६ फ़ौज ७-८ समुद्र ॥

गिरि तरु धर भुजसहस भयंकर ❀ जहँतहँ प्रकटहोइ जनु जलधर
लक्ष्मण शेष सुअङ्क शीशधर ❀ कटकजलधि सोवत राघववर
अषवट जहँ तहँ बैठि विभीखन ❀ असप्रुकृती कहुँसुने न दीखन

दो० देखत डरत सुलोचना, धीरज धरत बहोरि।
महाराज रघुवीर कहँ, विनय सुनावहु मोरि॥

वानर सकल उठे अस वोली ❀ अरिपुरते आवत इकडोली
जानि परत रावण अब बूझा ❀ भइ मति मेघनाद जब जूझा
हठ तजि सीतहिं दीन्ह पठाई ❀ तजहु शोच अब मिटी लराई
जिहिलगिप्रकटकीन्ह पुरआगी ❀ बांधेउ सेतु हेतु जेहि लागी
सोइ सीता अब विनुश्रमपाई ❀ जानहु विधि अनुकूलसहाई
विजय राम सुग्रीवहि आवा ❀ सुयश वीर वानरकुल पावा
विरह राम लक्ष्मण कर छूटा ❀ बिनु कलेश लङ्कागढ़ टूटा
युग युग कीरति चलब हमारी ❀ कहँ राक्षस कहँ लघुवनचारी

दो० यहिविधि चारु विचारकरि, निश्चयकरिमनमाहिं।
भयहु काज रघुराज कर, बात दूसरी नाहिं॥

पैठत कटक अतिहि सकुचाई ❀ अनविनारि जनु परघर आई
आगेहि जाइ देखि रघुवीरा ❀ छवि श्यामलमय गौर शरीरा
मरकत कनकछविहिं जनुनिंदत ❀ धन्य सुजन महिमाते विंदत
मत्तगयन्द शुण्ड भुजदण्डा ❀ धनुष बाण असि धरे प्रचण्डा
उर विशाल अतिउन्नत कन्धर ❀ कम्बुकण्ठ रेखा त्रय सुन्दर
दशन पांतिकी कांति कहैको ❀ लावतमन पटतरहि लहैको
देखत अधरन की अरुणाई ❀ बिम्बाफल बन्धूक लजाई
शुकतुण्डक नासिका लजाई ❀ थाकेउ कवि पटतरहि न पाई

दो० छविमय गुणमय तेजमय, राम उदधि अवगाह।
जहां न पावत पार सुर, किमिवरणैकविथाह॥

१ बादल २ फ़ौज ३ शत्रुपुर अथवा लङ्का ४ प्रसन्न ५ जीति ६ जुदाई ७ कुँडुरू ८ दुपहरिया॥

भृकुटी ललित कपोल सुहाये ❀ शीशजटाकर मुकुट बनाये
भाल विशाल तिलकयुत सोहै ❀ ध्यानसमय मुनिमानस मोहै
बलकल वसन तूण कटि बांधे ❀ करशर सुभग शरासन कांधे
वीरासन आसीन कृपाला ❀ नव पल्लव प्रसून कर माला
चरणसरोज[1] वरणि नहिं जाई ❀ जहँ मुनि मधुकर रहे लुभाई
प्रकट भई जिहि थलते गंगा ❀ श्रुतिपुराणकह कथा प्रसंगा
नमत महेश विरञ्चि जाहिको ❀ लोचन गोचर होत काहिको
जन आरतिभंजन जो कोई ❀ भवसागर तारण कै सोई

दो० प्रणतपाल विरदावली, जिन चरणनकी बानि ।
शोकहरण संशयदलन, करण सुमंगल खानि ॥

कर जोरे अंगद हनुमाना ❀ द्विविद मयंद कुमुद बलवाना
जाम्बवन्त कपिपति[5] बलशीला ❀ ऋषभ सुषेण सहित नल नीला
महावीर वानर सब राजत ❀ लषणविभीषणदोउदिशिभ्राजत
मितभाषित[6] प्रभुचरण सुसेवक ❀ चितवतरुख रघुनन्दन देवक
सभामध्य सोहत अघमोचन ❀ कीन्हेउसफलनिरखिनिजलोचन
करतदण्डवत शिर धरि धरणी ❀ तेहिकर चरित विभीषणवरणी
पुत्रवधू दशकन्धर केरी ❀ बड़ि पतिव्रता जानि प्रभुहेरी
मेघनाद की नारि सुशीला ❀ असगति तवविरोधकर लीला
करत प्रणाम प्रेम नहिं थोरे ❀ करुणावचन कहत करजोरे

दो० मुयेजानिपतिभुजहिं तब, लिखि समुझाई मोहिं ।
महाराज रघुवंशमणि, याचन आई तोहिं ॥

छं० परसे चरण कर प्रेमपूरण प्रणतपाल खरारि के ।
जेहि नमत शंकर शेष सुर मुनि धरणिभंजन भारके ॥
प्रभुजानि सो विनती सुलोचनि करत कहि विनतीघनी ।

१ भौंह २ सुन्दर ३ कमल ४ सामने ५ सुग्रीव ६ थोड़ा बोलनेवाले ७ श्रीराम ॥

जयशोकहरणकृपालुजयजयजयतिजयरघुकुलमनी॥
प्रभुब्रह्मरूप स्वभाव शीतल अतुलबल त्रिभुवनधनी।
जयहरण धरणीभार बाहुविशाल खण्डन खलअनी॥
तव दीनबन्धु दयालु अपरम्पार सबगुण आगरे।
करुणानिधान सुजान शील सनेह रूप उजागरे॥
षटअष्ट लोक जो रचत पालत प्रलय सो मायासुरी।
केहिभांतिवरणौं नाथ गुणगण नारि जड़मति बावरी॥
जे चरण ईश महेश शारद श्रुति निरन्तर ध्यावहीं।
हं भूरिभाग्य सरोजपद सोइ हर्ष शिरसि लगावहीं॥
छं० गहकरबानी शारँगपानी सबगुणखानी रामबली।
सुरसुरभीरक्षक राक्षसभक्षक भक्तिहिरक्षक मानवली॥
मैं रिपुसुतनारी जानिअघारी अधिकारी नहिंदुखभारी।
हरिविरहदवारी अतिभयकारी सहबहुबारी दुखकारी॥
तव शरणहि आई जनसुखदाई रघुराई करुणासागर।
पतिमस्तकपाऊं जरिसँगजाऊंशिरपाऊं शोभाआगर॥
पतिममतनुत्यागीअतिबड़भागीअनुरागीजिनमुक्तिलही।
ममताकिमितासूवरणौंआसूजासुअचलजगपंक्तिरही॥
यहिविधिपदपङ्कजसेव्यरमाअजशिरनमिदोउकरजोरिरही।
सुनिपङ्कजलोचनवचनसुलोचनलोचनतेजलधारबही॥
दो० अस प्रभु दीनबन्धु हरि, कारणरहित दयाल।
तुलसिदास शठ ताहि भजु, छांड़ि कपट जंजाल॥
तुम अन्तरयामी भगवाना ❀ नहिं तव आदि मध्य अवसाना
करुणा वचन सुनत रघुवीरा ❀ पुलकरोमभयो शिथिलशरीरा

१ बोझ २ निपुण ३ महादेव ४ वेद ५ देवता ६ खानि ७ नेत्र ८ अंत॥

देहुँ जियाय तोर पति आजू * लङ्का करहु कल्प शत राजू
छांड़ि शोच अब मनहरषाहू * तुरत भवन अपने फिरिजाहू
सुनि अस सत्यसन्धकर बानी * मनमें वनचर अति भयमानी
कहि न सकतकछु प्रभुरुख देखी * कहा करब करतार विशेखी
सब देवन कर शोच न जाई * जो करि कृपा राम यहि ज्याई

दो० राज्य विभीषण लङ्ककर, केहिविधिकरिहहिंजाइ।
समुझि वैर घननाद जब, गहिहि शरासन धाइ॥

सुखरुख देखि कपिन भयमाना * प्रणतपाल भगवन्त सुजाना
देखि बहुत रघुवर कर छोहू * विनय करत दशकन्धपतोहू
तुम उदार सब देवे लायक * करुणामय देवे रघुनायक
हमहुँ विचारि दीख मनमाहीं * जीवन ते अस मरण सराहीं
भुजबलजीति लोक वशकीन्हे * चौदह भुवन भोगकरिलीन्हे
रणतीरथ याचक बड़ चीन्हा * प्राण सुधन लक्ष्मणकर दीन्हा
अब न उचित पति दै उपहारा * तेहिपरअधिकसोदरशतुम्हारा
हमहूँ जाइ मरब सतसाथी * मिलबतुमहिंजसमिलतसमाधी

दो० निर्मलगति अवसर भयउ, सुनहु सत्य रघुवीर।
तुमहिं मिलत नहिं होयभव, यथा सिंधु गतनीर॥

मनकी जाननहार सुजेवा * भवसागर तारहु यह सेवा
लीन्हेउ राम कपीशै बुलाई * मेघनाद शिर दीन्ह मँगाई
पाय कृतारथ मानेउ आपू * पियाविरह सम्भव परितापू
अञ्चल पोंछत सुखकी धूरी * कहि मम प्राण सजीवनमूरी
देखि सँदेह कहत सुग्रीवा * भुजमहिलिखत जीवबिनुग्रीवा
हँसै वदन तौ तिय यह सांची * नातरु निशिचर माया कांची
कत असज्ञान मृतक भुज गावा * जो मुनिवर साधन नहिं पावा
प्रभु अस कहेउ हँसब यह शीशा * करत कुतर्क न उचित कपीशा

१ वर २ मेघनाद ३ धनुष ४ दया ५ मृत्यु ६ समुद्र ७ संसार समुद्र ८ सुग्रीव॥

दो० शिर सों कहत सुलोचना, हँसहु वेगि मम नाथ।
नातरु सत्य न मानिहैं, लिखा जो तुम्हरे हाथ॥

क्षणकविलम्बकीन्ह नहिं बोला ❀ मृतकवदन मूंदत नहिं खोला
पुनिपुनिकहत सो नागकुमारी ❀ अमितभयउ रणमें करिमारी
लगे लषण शर क्षोभ बढ़ावा ❀ प्रभुसमीप कस मोहिं लजावा
जो मन वचन कर्म यह देही ❀ पतिदेवता न आन सनेही
तौ प्रभु सभा बीच शिर बोलै ❀ रहहिछाय यश सुयशअमोलै
जो जानत तव यह गति सांई ❀ बोलि पठावत पितहि सहाई
सुनि तियवचन हँसेउ तब शीशा ❀ चौंके चकित भालु भटकीशा
हँसेउ ठठाय वदन सब देखा ❀ विस्मयभयउ सकल जिहिं पेखा
कुलिश समान सुनानहिंजाई ❀ रहेउ सो वदन बहुरि अरगाई
सकुचि कपीशहि तोषेउ नारी ❀ बड़ आश्चर्य्य भयो वनचारी
पूंछत कपिपतिपद शिरनाई ❀ कारण कवन हँसा शिरसांई
प्रभुकह सुनु सुग्रीव कपीशा ❀ शीशहँसेकर सुनहु अदीशा
मन क्रम वचन पतिहि सेवकाई ❀ तियहि न यहिसम आन उपाई
अस जियजानि करहि पतिसेवा ❀ तेहिपर सानुकूल मुनिदेवा
यह सतवति अहिराजकुमारी ❀ तेहि सतते हँस शीशमुरारी
सुनिप्रभुवचन कपिन सुखमाना ❀ पुनिपुनि चरण गहे हनुमाना
सुनु गिरिजा अस प्रभु प्रभुताई ❀ केवल भक्तहिं देत बड़ाई
जासु दृष्टि जग उपजत नाशा ❀ असकौतुककर केतिक आशा

दो० शीशपाइ प्रभुचरणगहि, बहुविधि विनयसुनाय।
आजकदिन रणँपरिहरहु, ममहित कोशलराय॥

बहुरि विभीषण पगन परीसो ❀ रघुपतिचरण दिये मन पुनिसो
तुम पितुसम दशकन्धरभाई ❀ यहिकुलकी तोहिं लाज बड़ाई
मुनि पुलस्त्य परिवारक दीपा ❀ पायउ फल रघुवीर समीपा

१ बाण २ ऋक्ष ३ रामचन्द्र ४ प्रसन्न ५ पार्वती ६ तमाशा ७ युद्ध ८ पास॥

महामोह वश अनभल माना ❀ ज्ञानभयो तब गुण पहिंचाना
युग युग करहु अकण्टक राजू ❀ सहित सुकीरति सुकृत समाजू
सुमिरततुमहिं सुजन गतिपावा ❀ रघुपतिचरित संगकर गावा
सुनत विभीषण मन करुणाभर ❀ प्रकट न कहत समय विरहाकर
काल कर्म्मगति कह समुझाई ❀ चली तुरत गुरुआयसु पाई
दो० बाहरकरि कपि कटकते, फिरेउ विभीषण आप।
बिसरेउ दशमुख वैरही, हृदय अधिक सन्ताप॥
शिर चढ़ाइ पालकी चढ़ीसो ❀ रघुपति कृपा प्रभाव बढ़ीसो
हृदय राखि मूरति घनश्यामा ❀ रसनां रटत निरन्तर नामा
सरित सिन्धुसंगम जहँ पावन ❀ अस सुधि पाय गयो तहँ रावन
संग मँदोदरि सब रनिवासू ❀ मनो शोकरवि कीन्ह प्रकासू
पाय रजायसु सेवक धाये ❀ चन्दन अगुरु सुगँध बहुलाये
रचि दृढ़ दारुण चिता बनाई ❀ जनु सुरलोक निसेनी लाई
करिप्रणाम सबजन परितोषी ❀ धीरजधरसि तासु मतिपोषी
शिर भुजधरि बैठी करिआसन ❀ भइ जनुयोगसिद्धिकर भाजन
दो० देखि अनँल ज्वाला बढ़ी, लपटगगनँ लगिताय।
लखी न काहू जात तेहि, सुरपुर पहुँची जाय॥
इति क्षेपक॥
सुतबध सुना दशानन जबहीं ❀ संभ्रम मूर्च्छिपरा मँहि तबहीं
दुखितभयउ लोचन भरिआये ❀ जनु निजमणि अहिराजगँवाये
हा सुत सन्तत आज्ञाकारी ❀ करि विलाप दशकन्ध पुकारी
शक्रँ आदि जीतेउ सब देवा ❀ सुर मुनि बन्दि करायहु सेवा
दूसर रहा न भुजबल दापा ❀ स्वर्ग भूमितल तपेउ प्रतापा
यहि विधि कर विलाप लंकेशा ❀ भयउ तेजहत सुनु उरगेशा
मन्दोदरी रुदन करिभारी ❀ उर ताड़ति बहुभांति पुकारी

१ निडर २ जीभ ३ अग्नि ४ आकाश ५ पृथ्वी ६ शेषनाग ७ इन्द्र ८ यश॥

नगर लोग सब व्याकुल शोचा ❀ सकलकहहिं दशकन्धर पोचा[1]

दो० तब दशकन्ध अनेक विधि, समुझाई सब नारि।
नश्वर[2] रूप प्रपञ्च सब, देखहु हृदय विचारि॥

तिनहिं ज्ञान उपदेशेउ रावन ❀ आपनमन्द कथा अतिपावन
पर उपदेश कुशल बहुतेरे ❀ जे आचरहिं ते नर न घनेरे
तासु क्रियाकरि निशिचरनाहा ❀ भयउ शोचवश अति उरदाहा
सचिव[3]आइ सब लगे बुझावन ❀ बादिविषाद करिय जनिरावन
सुत वित नारि त्रिविधसुख कैसे ❀ उपजहिं घटा जाहिं नभ जैसे
तड़ित विदित देखिय घनमाहीं ❀ रहै न थिर तहँ तुरत छिपाहीं
यहजियजानि सुनहु दशभाला ❀ बचहि न कोउ जग आये काला
अब प्रभु यतन विचारहु सोई ❀ रिपुकरनाश जवनविधि होई

अथ क्षेपक॥

दो० लागेउ करन विचार पुनि, बहुप्रकार दशशीश।
समुझिहृदयअहिरावणहि, आयउ जहां गिरीश॥

दण्डचारि तब तहँ निशिबीती ❀ सन्ध्यावन्दन कीन्ह सप्रीती
लागेउकरन ध्यान दशशीशा ❀ करिहरषित सम्पुट भुजबीशा
शंकर[4] सेवक अति अनुरागी ❀ सुनु खगेश[5] तेहिते वड़भागी
मन्त्राकर्षण जपि दशभाला[6] ❀ अहिरावण चित डोल पताला
लगेउ करन सो मन अनुमाना ❀ केहिकारणदशमुख अकुलाना
निशिचरनाह भुवन वश जाके ❀ जीतनकहँ न वीर कोउ ताके
मन क्रम वचन आन नहिंसेवी ❀ धरेउ ध्यान उर कामददेवी
चलेउ बहुँरि[7] आयउ सो तहँवां ❀ शिवमण्डप रावण रह जहँवां
निशिचरपतिकहितेहिशिरनायउ❀करगहि निजआसन बैठायउ

दो० अहिरावण तब रावणहिं, बूझी कुशल सप्रीति।
प्रथम कही तेहिं सबकथा, जैसे भगिनि[8] अनीति॥

१ नीच २ नाशवान् ३ मंत्री ४ महादेव ५ गरुड़ ६ रावण ७ फिरि ८ बहिनि॥

बध खर दूषण जिमि सुधिपाई ❀ मृगं मारीच कपटकृत गाई
कहेसि बहुरि सीताकर हरणा ❀ लंकदहन हनुमतकर वरणा
सेतुबांधि जिमि प्रभु चलिआयउ ❀ बालिकुमार विवाद सुनायउ
अनीअकम्पन अरु अतिकाया ❀ परे समरमहि सुनु अहिराया
तात कुशल अब सबै सिरानी ❀ कटकनिशाचर सकलनशानी
कुम्भकर्ण घननादहु मारे ❀ राम लषण दुइमनुज बिचारे
आनेउँ बोलि तोहिं निजपासा ❀ करहु सुयतन होइ रिपुँनासा
सुनत शोच भा मन अहिरावन ❀ बोला वचन सुहावन पावँन
सुनु रावण जग नीति पियारी ❀ करे अनीति होय भयभारी
विना विचार रारि तुम ठानी ❀ कीन्ह सेन कुल सर्बस हानी
मनुजप्रताप प्रभाव न जानेउ ❀ सबते बड़ तेहि लघुकरि मानेउ
यदपि न योग्य मोहिं असबाता ❀ तदपि हरहुँ तवलगि दोउभ्राता
लै पतालदेविहिं बलि देहौं ❀ यशपूरण निशिचरकुल लेहौं
लैजैहौं तुम जानेउ तबहीं ❀ रवि सम तेज होइनिशि जबहीं

दो० कहि असवचन प्रबोधकरि, शीर्षनाइ बल भाखि।
आयउ रघुपति कटक तब, निजदेविहि उरराखि॥

सूझन निजकरअतिअँधियारी ❀ मर्कटभट जागहिं तहँभारी
कहहिंजयतिजयजयतिकृपाला ❀ अतिहिअगमजहँनहिंगतिकाला
तहँ मारुतसुत रचेउ उपाई ❀ करि लंगूर कोटँ कठिनाई
सो शोभा यहि भांति सुनाई ❀ भुजगराज कुण्डली लगाई
देखिय उन्नत शैलँ समाना ❀ द्वार जहां तहँ मुख हनुमाना
देखि हृदय अहिरावण हारा ❀ किमिरविगृहकरतिमिरपसारा
एकौ युक्ति न मन ठहरानी ❀ कपटवेष तेहि कीन्ह भवानी
वेष विभीषण सब अनुहारी ❀ पवनतनय पहँ गा छलकारी

दो० सहज प्रतापी पवनसुत, पुनि सुरँपतिपतिदास।

१ हरिण २ पुल ३ फ़ौज ४ वैरी ५ पवित्र ६ हनुमानजी ७ क़िला ८ पर्वत ९ इन्द्र ॥

तिनहिं निदरिचल रामपहँ, मूढ़ हृदय नहिं त्रास॥
मर्म न जान प्रभंजनजाता ❋ कीन्हेसिगमन विभीषण भांता
ठाढ़ होउ बोलेउ सुनु भ्राता ❋ चलेउँ जहां कृपालु जनत्राता
मैं रघुपतिसन आयसु पाई ❋ सन्ध्याकरन गयउँ सुनु भाई
तेहिते तुरत चलेउँ प्रभु पाहीं ❋ भइविलम्ब जनि राम रिसाहीं
सत्यवचन कपि निजमनमाना ❋ सुनु खगेश भावी बलवाना
कपटचतुरगति जानि न जाई ❋ परमन हरै हरै धन भाई
आयसु पाइ गयउ सो तहँवां ❋ रहे फणीशरु प्रभु दोउ जहँवां
कपिपाति जाम्बवन्त नलनीला ❋ बालीसुत सुषेण बलशीला
दो० द्विविद मयन्दरु कीशगण, गय गवाक्ष कपिवीर।
सहित विभीषण अपरभट, सोये सब रणधीर॥
तिनहिं मध्य रावण शशिराहू ❋ एकसंग सोवत फणिनाहू
दक्षिण दिशि सोवत रघुनाथा ❋ अनुजै वामदिशि तेहिपरहाथा
प्रभुकर करपर राजत कैसे ❋ जातरूप पङ्कज फणि जैसे
कपि समूह जनु सागरक्षीरा ❋ तहँ सोये मानहुँ दोउ वीरा
सुभगबाण धनु धरे बनाई ❋ लक्ष्मणसह समीप रघुराई
अहिरावण मन कीन्ह प्रणामा ❋ देखि राम सुन्दर घनश्यामा
ब्रह्मादिक जेहि ध्यान न पावहिं ❋ मुनि महेश पूजा मनलावहिं
करहिं विविध जप योग विरागी ❋ जपहिंनिरन्तरनिशिदिनजागी
सो प्रभु तेहि देखा भरिलोचन ❋ कृपासिन्धु सेवक भयमोचन
बहुँरि हृदय तेहिं कीन्ह विचारा ❋ करहुँ काज रावण अनुसारा
कछु निजमायाकृत गुण आई ❋ कवनीभांति जाहिं दोउ भाई
दो० मोहन ते मोहे सकल, मन्त्रन ते मुख मूंदि।
भयउ अदृश्य उठायकरि, प्रभुहि चलेउ लै कूदि॥
यहि विधि गयउ दुहुँन लै सोई ❋ नभमारग प्रकाश अति होई

१ भेद २ आज्ञा ३ लक्ष्मण ४ छोटाभाई ५ सोहता ६ कमल ७ नेत्र ८ फिर ९ आकाश॥

सो प्रकाश जब रावण देखा ❀ किय प्रमाण तेहि वचनविशेखा
मनमहँ हर्ष करहि अतिभारी ❀ अहिरावण लैगा असुरारी
लै निजलोक गयउ पलमाहीं ❀ भयउ शोर तब कपिदलमाहीं
जागे वानर श्रीहत भारी ❀ देखिय जिमि सरिता[2] बिनुवारी
पुनिदेखियजिमिनिशि[3]बिनुइन्दू[4] ❀ भे वानर जिमि उडु बिनु चन्दू
रविबिनु दिवस जीवबिनु देहा ❀ जिमि देखिय दीपकबिनु गेहा
एकहि एक लगे तब बूझन ❀ कहां गये त्रैलोक्यविभूषन

दो० शोधेउसबमिलिकटकतिन, नहिं पाये दोउ वीर।
भे व्याकुल सब भालु कपि, जिमिजलचरगतनीर॥

सकलकहहिंयहविधिकहकीन्हा ❀ रघुपतिविरह प्राण कत लीन्हा
शोकग्रसित धरिसकहिं न धीरा ❀ कहां राम लक्ष्मण दोउवीरा
करुणा करहिं कपीश अपारा ❀ बनी बात विधि कहा बिगारा
कटक निशाचर सकल सँहारी ❀ रहा एक रावण रिपु भारी
सोउ न रहत रामशर लागे ❀ भाइउ हम सब परम अभागे
कबहुँजोदशशिरअरिरणजीतहिं ❀ उत्तर[5] कवन देव हम सीतहिं
असकहि विकलमूर्छि महिपरे ❀ लागत वज्र शैल जिमि गिरे
दशा विभीषण कही न जाई ❀ विगत वत्स[6] जनु धेनु लवाई

दो० सहित पवनसुत ऋक्षपति[7], दुखमनभाबड़िभांति।
खगपतिसूझन कतहुँकछु, तमअपार तिहिराति॥

पवनतनय पुनि कह सबपाहीं ❀ विस्मय एक होत मनमाहीं
कोउ इक आव विभीषण वेखा ❀ प्रभुके निकट जात हम देखा
पूछत वचन कहेसि अतिनीका ❀ कपटन जानियनिशिचरजीका
वचन सुनत बोलेउ लंकेशा[8] ❀ अहिरावण लैगा अवधेशा
पन्नगलोक निवासी सोई ❀ ममतनुवेष अपर नहिं कोई
महाबली जानै सब माया ❀ निश्चय तेहि दशशीश पठाया

१ खुशी २ नदी ३ रात्रि ४ चंद्रमा ५ जवाब ६ बछड़ा ७ जाम्बवान् ८ विभीषण ॥

जेहि बल होइ तहां सो जाई ❋ ताहि जीति आनै दोउ भाई
कहेउ भालुपति सुनु हनुमाना ❋ तवबल तात सकलजगजाना
वेगि सो यतन विचारहु ताता ❋ कृपासिन्धु आनहु दोउभ्राता
दो०बिलखिकहेउ कपिपतिबहुरि, सुनुमारुतसुततात।
बिनु रघुनायक जन्मधिक,पलयुगसरिसबिहात॥
यथा तृषित बिनु वारि दुखारी ❋ रविबिनु जलज मीन बिनुवारी
भट अशस्त्र रण अनी अनाथा ❋ वह्नि अनिन्धन गात अमाथा
दीप अवर्त्ति सकल क्षणभंगी ❋ तिमि हमसब देखिय बजरंगी
जिमि सीतासुधि भेषज आनी ❋ तेहिप्रकार आनहु सुखदानी
सुनत वचन मारुतसुत बोला ❋ राखहु चितथिर कटक अडोला
भुवन चारिदश तीनिहुँ लोका ❋ आनहुँ प्रभुबल प्रभु तजुशोका
अब तुम सजग रहेउ सब भाई ❋ लरेहु कालसन जो चढ़िआई
अस कहि सकृत चलेउ हनुमाना ❋ गर्जत प्रलय पँयोद समाना
चलत वाट इक तरुँतर गयऊ ❋ गीधिनि गीध कहत असभयऊ
दो० नारि गर्भिणी गृध्रकी, बोली पतिसन बैन।
आनहु आमिषमनुज पिय, खाउँ होइ जिय चैन॥
तासुवचन सुनि खग अस कह्यऊ ❋ अहिरावण रामहिं लैगयऊ
देइहि बलि देविहि सो जाई ❋ सो आमिष बड़भागन पाई
कवनेउ यतन देव में आनी ❋ असकहि विहँगवाम सनमानी
जबहिं पवनसुत अस सुधिपाई ❋ चलेउ तहां सुमिरत रघुराई
अभय प्लवंग पतालहि गयऊ ❋ अहिरावणपुर प्रविशत भयऊ
द्वारपाल मकरध्वज कीशा ❋ कपिसनडाटि कहत बहुरीशा
निदरिजात मोहिंतोहिं डरनाहीं ❋ दीपहि जिमि न पतङ्ग डराहीं
जानसु मोहिं न मरुतसुत बालक ❋ स्वामिभक्त भञ्जनमुखकालक
सो० सुनत वचन हनुमान, बोलतभे विस्मय विवश।

१ जल्द २ मछली ३ फ़ौज ४ बिनबत्ती ५ औषध ६ दुःख ७ बादल ८ वृक्ष ९ बंदर॥

अरे मूढ़ अज्ञान, मोरे सुत सपनेहुँ नहीं ॥
कहत वचन शठ संयुत खोरी ❀ कामविवश कब भइ मतिमोरी
ममसुत[1] बनसि मूढ़ केहिकाजा ❀ इतना कहत तोहिं नहिं लाजा
केहिप्रकार तैं ममसुत भयऊ ❀ निज उत्पति मोसन किनकहऊ
सुनत कहहि मकरध्वज वचना ❀ किहेउ दाह रावणपुर रचना
जब आयउचलि उदधि समीपा[2] ❀ बहेउ स्वेद तव तन कपिदीपा
सो प्रस्वेद[3] सागरमहँ गयऊ ❀ पियउ मीनें[4] तेहिते मैं भयऊ
यहि प्रकार मैं तवसुत ताता ❀ गोवहुँ नहिं निजपिता न माता
अहिरावण सेवा मैं करहूं ❀ राखहुं द्वार न कबहूं टरहूं

दो॰ सत्यवचन हनुमान कहि, पुनि पूंछी सब बात ।
लावा लक्ष्मण रामकहँ, काह करत सो तात ॥

कहहु तात तेहि अस्थल नाऊं ❀ जान चहौं मैं तव प्रभु ठाऊं
यह वृतान्त अस जानहु ताता ❀ यह मैं श्रवण सुनेउँ कछु बाता
सीतापति[5] अरु फणपति[6] साथा ❀ सो लैआयउ निशिचरनाथा
करत होम तेहि कारण आजू ❀ देविहिं बलि देई नृपराजू
जोकछु निजश्रवणनसुनिपायउँ ❀ तातसकल सो तुमहिं सुनायउँ
निजप्रभुकाज लागि दुख सहेऊं ❀ तुमसन सत्यवचन मैं कहेऊं
जान कहहु तुम जान न देऊं ❀ प्रभुआज्ञा तजि अयश न लेऊं
सुनिअस पेलिचलेउ हनुमाना ❀ भयउ क्रोध मकरध्वज जाना

दो॰ तेहिमुष्टिककपिकहँहनेउ, पुनि मारेउ कपि ताहिं ।
हनहिं परस्पर एकइक, बलसमान घटि नाहिं ॥

एकहिं एक सकहिं नहिं पारी ❀ पिता पुत्र दोऊ भट[7] भारी
सुतहिं लूम[8] सन बांधि भवानी ❀ चलेउ वातसुत विलँब न आनी
धरि लघुरूप होमगृह देखा ❀ जीव सजीव परे नहिं लेखा
तहँ देवीकर मण्डप रहई ❀ शोणितघट बहु को कहिसकई

१ पुत्र २ पाल ३ पसीना ४ मछली ५ रामचन्द्र ६ लक्ष्मण ७ योद्धा ८ पूँछ ॥

विविध भांति मेवा पकवाना ❀ धरे आनि देवी अस्थाना
मालिनि तहँ प्रसून[1] लैआई ❀ सुमनमध्य प्रविशेउ कपिराई
सुमनहुँते करि अतिहलुकाई ❀ लेत पानि[2] जेहि जानि न जाई
जब देविहिं सो पुष्प चढ़ायउ ❀ विकटरूप तब कपि दिखरायउ
दो० छुवत चरण देवी तुरत, धरणी[3] रही समाइ।
मुख बगारि ठाढ़ेभये, कपि छवि लखतैं डराइ॥
देवी प्रकट समुझि खलभारी ❀ करहिं विचार हृदय अतिभारी
कहहिं कि देवि प्रकटभइ आजू ❀ बड़भागी भा निशिचरराजू
करि प्रणाम पुनि पूजा करहीं ❀ जो चढ़ाउ सो कपिमुख परहीं
जो जहँ रही वस्तु समुदाई ❀ बची न कछू सकल कपि खाई
कपिखिलार कौतुक विस्तारा ❀ भाचह निशिचरकुल संहारा
अहिरावण उर भा सुख कैसे ❀ चढ़ै कांधपर बलिपशु जैसे
जबहीं होम सिद्ध तेहिं जाना ❀ लक्ष्मण राम तुरत तहँ आना
ठाढ़ कीन्ह प्रभु कहँ तहँआनी ❀ निशिचरबहु आयुध धरि पानी
कोऊ गदा कोऊ धनु बाणा ❀ शक्तिशूल धरि कोउ कृपाणा[5]
दो० तोमर मुद्गर परशु असि, पाश परिघ अरु बेत।
शूल भुशुण्डी पटि परशु, देखत बिसरत चेत॥
मायाबल ते सकल विचक्षण ❀ अति विकारमय मूढ़ कुलक्षण
यहिविधि सकलवीर तहँ रहहीं ❀ अहिरावण आज्ञा[6] दृढ़ गहहीं
आयसु पाइ खड्ग तिन काढ़े ❀ मारन कहँ प्रभुपर भे ठाढ़े
कोउ कह राजनीति अनुसरहू ❀ भरि त्रयदण्ड विलँब अबकरहू
पुनि अस वचन मूढ़मति कहहीं ❀ सुमिरहु जो तुम्हरे हितु अहहीं
नाहिंत काल आइ नियराना ❀ निशाँ[7]स्वप्नसम दोउजन प्राना
बोलहिं मूढ़ असम्भव बानी ❀ सकुच लगे सो कहत भवानी
दो० फणिपति[8] चितवत रामतन, रामचितव अहिराज।

१ फूल २ हाथ ३ पृथ्वी ४ देखत ५ तलवार ६ हुक्म ७ रात्रि ८ लक्ष्मण॥

प्रभुकरकौतुककहियकिमि, सुनहु दशा खगराज ॥

बिहँसि कीन्ह प्रभु हृदय विचारा ❀ जपै सकलजग नाम हमारा
जाना देवि रूप हनुमाना ❀ बिहँसि कहा तब रामसुजाना
काल कौर तुम सुमिरहु रक्षक ❀ भई तुम्हारि देवि तुव भक्षक
सुनत गिरा तिन मारनठयऊ ❀ घनसमान कपि गर्जतभयऊ
निशिचरसकल त्रसितै भे भारी ❀ कहहिं वचनभय हृदय विचारी
अहिरावण भलकीन्ह न काजू ❀ आने कपटवेष सुरराजू
तेहिते देवि क्रुद्ध कृत आजू ❀ अबभा सबकर मरण समाजू
संभ्रमवश तब निशिचरझारी ❀ बहुरिकीश गर्जेउ अतिभारी

दो० प्रकट रूप करि पवनसुत, अट्टहास गम्भीर ।
अतिभयत्रासितरजनिचर, सुनहु उमा मतिधीर ॥

डगमगान निशिचरअभिमानी ❀ मारुत वेग यथा नदि पानी
तेहिक्षण कपि लीन्हे दोउ भाई ❀ धुनत तूल निशिचर समुदाई
छीनि कृपाण लीन्ह हनुमाना ❀ काटत भुज शिर कृषीसमाना
खण्डखण्ड तब खलदलकीन्हा ❀ गहिपदडारि अनलमहँ दीन्हा
करि लंगूर कोट कपिराई ❀ तेहिमहँघिरिकोउभागि न जाई
यहिविधि सब निशिचरसंहारे ❀ अहिरावण लखि वचनउचारे
रे कपि ढीठ त्रास नहिं तोहीं ❀ अहिरावण तैं जानु न मोहीं
जम्बुमालिकहँ जिमि तैं मारा ❀ अरु रावणसुत हतेउ विचारा

दो० कालनेमि सम नाहिं मैं, करु कपिवचनप्रमान ।
अस कहि खड्ग प्रहारकिय, कपितनु वज्रसमान ॥

लै असि ताहि पवनसुत मारा ❀ काटि शीश पावकमहँ डारा
आहुतिपूर्ण दीन्ह तब कीशा ❀ लैपुनिचलेउ लषण जगदीशा
मकरध्वज प्रणाम तब कीन्हा ❀ बन्धनछोरि राज्य तेहिं दीन्हा
इहां राज्य भोगहु तुम ताता ❀ भजहु सदा ममप्रभु दोउभ्राता

१ वाणी २ मेघ ३ दुःखी ४ हनुमान् ५ निशाचर ६ पार्वती ७ रुई ८ क़िला ॥

असकहिकपिनिजदलसोंआवा ❀ हर्षेउ कटक सबन सुखपावा
मृतकशरीरप्राणजिमि आवहिं ❀ मणिगणपाइ फणी सुखपावहिं
बिछुरिअलभ्य मिले जनुआई ❀ तिमि हर्षे सब लखि दोउभाई
मिलेउ कपीश चरणधरिमाथा ❀ पुनि पदगहे निशाचरनाथा

दो० जामवन्त अङ्गद सहित, मिले भालु अरु कीश।
सनमाने कहि वचन प्रिय, लषण कोशलाधीश ॥

वहुरि सबहिं भेंटे हनुमाना ❀ कहहिं तात तुम राखे प्राना
देवन सुमनवृष्टि तव कीन्ही ❀ प्रमुदित हृदय दुन्दुभी दीन्ही
अनुज सहित हरषित रघुवीरा ❀ कहेउ वचन सुनु तनयसमीरा
तवसमान नहिं कोउ हितकारी ❀ सुर मुनि सिद्ध मनुज तनुधारी
यशतुम्हार त्रिभुवनमहँ भयऊ ❀ सुनिप्रभुवचन चरणकपिनयऊ
नाथ कीन्ह सब मैं केहि लेखे ❀ तरणी चलत अगम जल देखे
तैसे सब प्रताप तव नाथा ❀ सुनिअसमिले कपिहि रघुनाथा
कटक सहित हर्षे दोउ भाई ❀ तेहिअवसरसुखकिमिकहिजाई

छं०कहिजाइसुखकिमितेहिसमयकरसुनहुगिरिजाँचितधरे।
रघुवीररुख अवलोकि हरषित आरती सुरगण करे ॥
अतिप्रेमसों मारुतसुवन यश गाइ विबुधन अस कहा।
नर नारि यह कीरति सुनत गावत लहत मङ्गल महा ॥

दो० करिबहुविधि हरिआरती, वाणी सत्य सुनाय।
रामचरण अनुरागेउ, अमर सुमन झरिलाय॥

देव निडर प्रभुगुणगण गावहिं ❀ आरतहर कहँ विनय सुनावहिं
विबुधविनयरघुपति सुनिकाना ❀ कह प्रभु सत्यसन्ध भगवाना
चतुरानन वर दीन्ह अपेला ❀ तेहि कारण यह बाढ़यो खेला
नाहित लषण एक पलमाहीं ❀ राखत यातुधानकुल नाहीं
अजहुँ होय रण कौतुक भारी ❀ निरखहु तुम सबशोच बिसारी

१ विभीषण २ ऋक्ष ३ बन्दर ४ रामचन्द्र ५ नौका ६ फ़ौज ७ पार्वती ८ देवतन ॥

अब जो रहेउ निशाचरशेखा * भटमहँ जासु भुजाकर रेखा
ते रणमहि महँ हतहुँ प्रचारी * बिनुश्रम सबसों कहत खरारी
शम्भुकृपा अब संशय नाहीं * सुनि सुर अतिहर्ष मन माहीं

दो० सत्यवचन सुनि रामके, आनन्दित सुरयूह।
चलेकहतजयजयतिप्रभु, वर्षें सुमन समूह॥

यह चरित्र शुचि सुभग सुहावा * खगपति रामकृपा मैं गावा
अब हियहरषि सुनहु द्विजराई * मानस कहहुँ सुमिरि रघुराई
याज्ञवल्क्यपद वन्दि सप्रीती * भरद्वाज बोले शुचिनीती
यह चरित्र अतिरुचिर सुहावा * सुनि ममनाथ परमसुख पावा
अहिरावण वधान्त भगवाना * चरितकिये सो करहुबखाना
सुनि मुनिविनय ऋषय पुलकाई * बोले हृदय सुमिरि गिरिराई
प्रश्न तुम्हार तात अतिपावन * सहज सुभग सज्जन मनभावन
मानस हरिचरित्र सुठि नीका * सुनतकरत जो कोउ मन फीका

दो० सोई जगवञ्चक सुनहु, जेहि मानस न सुहाय।
भवसागर महँ भ्रमत सो, अमितकल्प चलिजाय॥

मानस सुनत न मनहिं अघाहीं * तासम धन्य अवर कोउ नाहीं
धन्यधन्य तुमसन को आना * ललितचरितअतिसुनहुसुजाना
रामलषण दलसहित विराजे * जयतिराम कहि कपिगणगाजे
रामसेन सुषमा अधिकाई * निगमागम जानेउ बुधभाई
उहां दशानन सब सुधिपाई * दूतसँदेश दीन्ह सब जाई
अहिरावणकरबध सुनि काना * भयउ तेजहत अतिदुख माना
वचन वज्रसम लागेउ ताही * संभ्रम मूर्च्छिपरेउ महिमाही
कटे पङ्ख जिमि विहँगँ बिहाला * रंगचीरगत गिरिँ हिमकाला
मुखसुखान लोचन जलबहई * वचन न आव शीश धुनिरहई

दो० मयतनया तब आइ पुनि, बहुप्रकार समुझाइ।

१ रामचन्द्र २ पवित्र ३ सुन्दर ४ चतुर ५ वेद, शास्त्र ६ पृथ्वी ७ पक्षी ८ रात्रि॥

मान न मूरुख कालवश, परमक्रोध कहँ पाइ ॥
नारिवचन सुनि तेहि रिसबाढ़ी ❀ उठि बैठेउ धरि धीरजगाढ़ी
तेहि अवसर मंत्री इक आवा ❀ करिआदर दशमुख बैठावा
सिन्धुरनाद नाम बलवाना ❀ वृद्ध ज्ञानमय परमसुजाना
सदा विभीषणकर सँग ठयऊ ❀ कबहूं दशमुख सभा न गयऊ
आवा सो भल अवसर पाई ❀ कहेसि नीति रावणहिं बुझाई
ज्ञानकथा दशमुख न सुहानी ❀ तब बहिराइ बात कह आनी
करिवरनाद हृदय अस गुनेऊ ❀ प्रभु दुहुँताग हृदयपट बुनेऊ
अब यहि कहौं सो सहजउपाई ❀ जेहि यहि मूल समूल नशाई
दो० यह विचारि बोलेउ सचिव, सुनहु दनुजकुलराउ।
धीर धरहु संशय विगत, कहहुँसोकरियउपाउ॥
अक्षादिकन सुतन बल दूना ❀ कस सुरोरि मन मानहु ऊना
सचिववचनसुनि दशमुखकहई ❀ अब हमरेकुल को भट अहई
अपने मनमहँ करहु विचारा ❀ है नारान्तक तनय तुम्हारा
मूल अभुक्त माहिं भा जोई ❀ दियो बहाय मरा नहिं सोई
शम्भुप्रसाद ताहि कछु भयऊ ❀ पुर विह्वावल नृपता दयऊ
कोटि बहत्तर एक प्रभाऊ ❀ राजा प्रजा भेद नहिं काऊ
दूत पठाइ बुलावहु ताही ❀ जीतिहि सो रिपु रणकेमाही
दनुजअधीश चतुरचर पठवो ❀ धरहु धीर चित चिन्ता घटवो
दो० तासु मन्त्र सुनि दशवदन, हृदय प्रमोद अमान।
धूम्रकेतु कहँ बोलि ढिग, समुझायउ सनमान॥
धूम्रकेतु तुम परम सयाना ❀ लै मम पाती करहु पयाना
बसत जहां नारान्तक राजा ❀ तहां न तात अवरकर काजा
अवसर पाइ हेतु समुझाई ❀ सपदि ताहि लैआनहु भाई
आयसु पाइ चार तहँ गवना ❀यहसुनिबिहँसिकह्योअहिदवना

१ समय २ रावण ३ योद्धा ४ महादेव ५ दूत ६ आनन्द ७ शीघ्र ८ आज्ञा ॥

काकनाथ यह गाथ सुहाई * मोसन तात कहहु समुझाई
नारान्तक उतपत्ति यथाविधि * पुर बिह्वाबल गा कवनीसिधि
सुमिरि काकपति उर अवधेशा * मन प्रसन्नकर कह काकेशा
अतिसुन्दर शुचि यह संवादू * चित थिरकरि सुनिये उरगादू

दो० नखं चौगुण वसुं ऊनं तहँ, सप्त अकाश मिलाइ।
इतने निशिचर एक दिन, भे रावणपुर आइ॥

पुर महँ उपजे खल इकसाथा * तब सुनि हर्षा निशिचरनाथा
निजगुरु बोलि चरण शिरनाई * बूझामुदित सो कलश धराई
भृगुनन्दन तब तेहिसन कहेऊ * आजु बाल सब सूलन भयऊ
सत्य कहत दशमुख तुम पाहीं * भये आजु जे तवपुर माहीं
वे सुत सब निजनिज पितुघाती * मुख देखत सुनु सुरआराती
घरराखे धनसहित विनाशा * होइ अवशि नहिं उबरन आशा
शुक्रवचन सुनि डरे निशाचर * कहकरिये अतिवाद परस्पर
निश्चयकीन्ह प्रसव शिशु आजू * सौंपियसिन्धुहिं अवर न काजू

दो० सपदि करहु सब काज यह, लावहु बाल बटोरि।
राखे होई हानि अति, कह दशवदन बहोरि॥

सेवक दशमुख आयसु पाई * धाये तुरत चरण शिरनाई
रावण आयसु नगर पुकारी * सुनहु सकल पुर नर अरु नारी
आजु अभुक्तमूल भये बालक * डारहु सागर सब कुलघालक
बोरे सबन बाल इकठाई * भावीवश मधुमाखी नाई
पाय अधार वृक्ष वट बोरा * पीवन लगे क्षीर चहुँ ओरा
पीवत क्षीर अब्दं भर साती * पुष्टभये खल निशिचर जाती
पुनि सब एकसङ्ग तहँ जाई * सुरसरि सङ्गम भा जेहिठांई
तहँ शिवमन्दिर परम सुहावा * सबनविलोकिमुदितशिरनावा

छं०। शिरनाइमुदितविलोकि शिवमन्दिरसुहावनपावनं।

१ बीस २ आठ ३ कम ४ शून्य ५ शीघ्र ६ वर्ष ७ गंगाजी ८ देखि॥

कछुदिन रहे तहँ सकलपुनि उठिचलेसुनु अहिदावनं ॥
रावणपुरी ते दिशाप्राची कोस शत रस चलिगये ।
बैठेजलधिमहँ पाइ थलवर शम्भु चरणन चितदये ॥
दो० जानत नहिं उतपत्ति निज, मनमहँ करत विचार ।
गे तेहि ढिग जाकर विदित, रविते छठवींबार ॥
हरिअरिगुरुनिजशिष्यनचीन्हा ❀ करत प्रणाम आशिषा दीन्हा
कहि निजनाम सवन समुझावा ❀ कुलगुरु जाना विनय सुनावा
निज उतपति बूझी शिरनाई ❀ भृगुनन्दन सो सकल सुनाई
सुनि आपन वृत्तान्त लजाने ❀ लखिरुख भृगुनायक सनमाने
करि परितोष मन्त्र गुरु दीन्हा ❀ शिक्षपाइ गमन तिन कीन्हा
ज्ञान लहेउ सब संशय त्यागी ❀ भे विरंञ्चिपद सब अनुरागी
निराहार बैठे इक आसन ❀ वर्षसहस तप किय उरगासनैं
स्वासधार कृत वर्ष हजारा ❀ रहे ऊर्ध्वमुख विना अहारा
दो० एक पाद पुहुमी दये, अपर अङ्ग अनयास ।
सबल पुष्टतनु मनहरष, सपनेहु भूख न प्यास ॥
तप अतिउग्र विचारि विधाता ❀ तिनढिग गमने सुख मुसुकाता
हंसारूढ़ कमण्डलु हाथे ❀ श्वेतमुकुट शुचि चारिउ माथे
आनन चारि नयन वसु नीके ❀ चारिउ भाल भस्म शुभ टीके
उपमामय प्रभु सवजग अयना ❀ भाष्यो दयासदन वरबयना
मांगहु वर जो सब मनभावा ❀ सुनेउ सवन विधिपदशिरनावा
नाथ चहत हम यह वरदाना ❀ हमहिं न कोउ जीतै मैदाना
एवमस्तु विधिकहेउ विचारी ❀ आनपाँणि नहिं मृत्यु तुम्हारी
हरिसुत है तुम्हार गुरुभाई ❀ तेहिसन किहेउ न कबहुँ लराई
दो० जो तेहिसन करिहौ समर, मरिहौ वचन प्रमान ।
एकहि कहँ वरदान यह, दै कह कृपानिधान ॥

१ पूर्व २ सब ३ ब्रह्मा ४ गरुड़ ५ धरती ६ मस्तक ७ हाथ ८ बधिबल ॥

दीन्ह नरान्तक कहँ वरदाना ❀ रहे अपरं जे धरि उरध्याना
तिनसन वरम्बूहि विधि कहेऊ ❀ सुनत प्रमोद सबन उर लहेऊ
सुनिविधिगिरासबनकहस्वामी ❀ देहु एक वर अन्तरयामी
देवासुर संग्रामहिं माहा ❀ जीतहिं हम यह वर सुरनाहा
असकहि रहे दनुज शिरनाई ❀ तिनसन कहेउ विरञ्चि बुझाई
तुम अजीत सबसन सबभांती ❀ वानर भालु त्यागि दुइ जाती
यहि विधि सबकहँ दै वरदाना ❀ ब्रह्मलोक गे ब्रह्म सुजाना
विधितेलहि वर तिनसुखबाढ़ा ❀ लागेकरन बहुरि तप गाढ़ा

दो॰ गिरा गिरीश समेत सब, जपहिं निरन्तरं नाम।
जोरि युगलकर एक पद, निशिदिनआठौयाम॥

बिनु प्रयास ठाढ़े सब भाई ❀ क्षुधा तृषा निद्रा बिसराई
गुण सहस्र सम्बत सब ऐसे ❀ गयबीति प्रथमहिं तप जैसे
सबन शीश पुनि अवनीदीन्हा ❀ उभयं चरण ऊरधकहँ कीन्हा
जोरे कर निरोधकर श्वासा ❀ जपहिं मन्त्र शङ्कर वरआसा
सुनिगण तिनकर साधन देखी ❀ मनमहँ मानत सकुच विशेखी
हरिइच्छा बल हृदय विचारी ❀ निरखिचले मुनि जपत पुरारी
अयुत अब्दं बीते खगनायकं ❀ भेप्रसन्न शिव जनसुखदायक
चढ़े बरदं हिमसुता समेता ❀ आये तिनतट कृपानिकेता

दो॰ बोले तिनहिं प्रशंसि शिव, मांगहु वर मनभाव।
नारान्तक करि दण्डवत, बोला सुनु सुरराव॥

मैं तप किह्यउँ दरश तवलागी ❀ नाथ दीनजन चित अनुरागी
अब मांगतआवत मोहिं लाजा ❀ ठाढ़रहा कहि निशिचरराजा
मांगु सकुचतजि अस हरं कह्यऊ ❀ नारान्तक तब मांगत भयऊ
मोहिं विभव अस देहु गोसांई ❀ भूप प्रजा नहिं परहुँ लखाई
पुर अनयास बसहि मम नाथा ❀ यह कहि रहा जोरि युग हाथा

१ और २ वाणी ३ सदा ४ दोनों ५ वर्ष ६ गरुड़ ७ बैल ८ शिव॥

एवमस्तु कहि हर सुरईशा ❀ गमने भवन सहित वागीशा
शिवप्रसाद नारान्तक पावा ❀ अन्तरिक्ष पुर सपदि बसावा
पुर विह्वावल की रुचिराई ❀ कहत कछू इक तुमसन गाई

दो० ऋतु रवि दूने कोटि सो, भवन बसे इकठोर।
जातरूपमय नग जटित, अतिशोभित चहुँओर॥

योजन ढाई शत चकलाई ❀ चौंसठ कोस उतङ्ग सुहाई
दुर्गम दुर्ग जलधि चहुँ फेरा ❀ विस्मय विश्वकर्म्म मनघेरा
चारि दुवार कुलिश पट रूरे ❀ गढ़ भीतर चौहट निधिपूरे
वणिक पद्मधन तुच्छ बखाना ❀ वन उपवनैं सरिता सर नाना
वसत प्रजा पुर सघन अपारा ❀ नारान्तक गढ़ मध्य सँभारा
षोड़श कोस कोट चहुँ ओरा ❀ मणि माणिक लागे नहिं थोरा
हय गय रथ खच्चर समुदाई ❀ कहि न जाइ खगमृग विपुलाई
कोटि बहत्तर एकै साथा ❀ विद्या पढ़न लगे खगनाथा

दो० हरि प्रेरित तेहि कालमहँ, दधिबल पहुँचा आइ।
पुर विह्वाबल निरखि सो, कछुदिन रहा लुभाइ॥

भावीवश निशिचर सँग कीशा ❀ वर्ष एक पढ़ सुनहु मुनीशा
गुरु इकबार कहेउ रिसियाई ❀ हतिहासि तैं आपन गुरुभाई
बिनुअघसुनि दधिबल गुरुशापा ❀ विदामांगि गमना करिदापा
मारग मिले देवऋषि तेही ❀ गहे सुकण्ठसुवन पग नेही
लखि अशीश दै बूझा तेही ❀ दधिबल कवन काज गे जेही
तब नारान्तकपुर प्रभुताई ❀ दधिबल नारद मुनिहिं सुनाई
सुनी निशाचर संपति भारी ❀ रहे ब्रह्मसुत हृदय विचारी
क्षणक देवऋषि कीन्ह गुमाना ❀ बारबार सुमिरे भगवाना

दो० दधिबलते नारद कहेउ, सुनहु तात चितलाइ।
तनुधरिजेहिहरिभक्तिनहिं, जन्मबादि जग जाइ॥

१ आकाश २ सोना ३ ऊंचाई ४ फुलवारी ५ सोलह ६-७ नारद॥

यह विचारि भजु रामहिं ताता ❋ उपजेउ सुनत ज्ञान मुनिबाता
ऋषिपद परसि आशिषा पाई ❋ कपिपतिसुत गमने हर्षाई
सपदि कीश तब पहुँचा जहँवां ❋ पयनिधिमध्यरुचिरगिरितहँवां
धवलागिरि तेहिनाम सुहावा ❋ सुभग देखि कपिवर मनभावा
गौरि गिरीश सुमिरि गणराई ❋ कीन्ह निवास बैठ हरषाई
नारद ताहि देइ उपदेशा ❋ गये विरञ्चि के धाम खगेशा
उत दशमुखसुत विद्यापाई ❋ जहां तहां की विविध लराई
बिन्दुनाम इक निशिचर आहा ❋ सो खल रहा वितलथल माहा

सो॰ अति रणधीर जुझार, चढ़े शक्रपर बल विपुल।
कीन्हेउ समर अपार, अब्द एक श्रुतिसन्त कह॥

सप्तकोटि निशिचर सँग ताके ❋ असितमेरु सम खल भट बांके
सुनासीर कोपेउ इकबारा ❋ सबकहँ समरमध्य संहारा
भाजि बिन्दु केवल गृहगयऊ ❋ तासुनारि निशिचर सुखदयऊ
सबनिशि भोगकरा खलपापी ❋ उपजे बहु बालक परितापी
सप्तकोटि सुत नाना नामा ❋ ऊदर वक्र सकल बलधामा
कोटि बहत्तर तनया जाके ❋ लाजहिं मृगलोचन लखिताके
तिनमहँ बिन्दुमती इकसुन्दरि ❋ नभचारिनि रतिरूप निरन्तरि
निरखिबिन्दुनिजमनअनुमाना ❋ नहिंनारान्तकसम कोउ आना

दो॰ यह विचारि चित बिन्दु तब, नारान्तकहि बुलाइ।
बिन्दुमती आदिक सुता, सुन्दर साज सजाइ॥

सकल सुता इकसङ्ग विवाही ❋ यथायोग्य जेहिकहँ जसचाही
नारान्तक सब सेन समेता ❋ करिविवाह फिरिगयउ निकेता
पुर विहाबल कीन्ह बसेरा ❋ प्रजासहित सुखकरत घनेरा
जो तिय चहिय विबुधगृह भाई ❋ सो भावीवश निशिचर पाई
नारि पतिव्रत जेहि घरमाहीं ❋ तेहिप्रताप नित अमर डराहीं

१ दधिबल २ गणेशजी ३ गरुड़ ४ इन्द्र ५ लड़की ६ कामदेवकी स्त्री ७ घर ८ देवता ॥

बिन्दुमती विद्या सम ताता ❋ बुधजन सभाचरित विख्याता
नारान्तक उतपति मैं गावा ❋ सुनु खगेश पुनि चरित सुहावा
पुनि पुनि हरि हरपद शिरनाई ❋ गुरुसन सुनेउँ सो कहेउँ बुझाई

दो० चारन दशमुख को तुरत, मगचलि पहुँचो जाय।
ग्रामान्तर योजन युगल, ठाढ़ भयउ हरषाय॥

तेहि मारुतदिशि कानन भारी ❋ पर्ण लेत देखेउ तहँ बारी
सकुचि समीप जाइ भा ठाढ़ा ❋ बूझेसि ताहि धीरधरि गाढ़ा
कवन रीति यहिपुरमहँ भाई ❋ तरुपर चढ़त भूपसुत आई
चार वचन सुनि सो मुसुकाना ❋ कवन नगर तुम बसत अयाना
नारान्तक नृप कै यह बारी ❋ तेहिकर सेवक मैं लघुचारी
धूम्रकेतु तेहि उतर न दीन्हा ❋ कछुडरिपुनिनिजमारगलीन्हा
लिये कनकघट सुषमा पूरी ❋ वारि लेन आई तिय रूरी
देखि भयउ तेहि संशय भारी ❋ बूझा सत्य कहहु सुकुमारी

दो० तुम्हरे पुर कह चेरि नहिं, रानी कहहु स्वभाव।
आइउ तुम जलभरनकहँ, बोलउ त्यागि डराव॥

दूतवचन सुनि निशिचरचेरी ❋ बोली हँसिकर एकहि बेरी
नारान्तक दासिन की दासी ❋ हम ताकी दासी विश्वासी
सदा भरें यहि सागर पानी ❋ इहँ आवहिं केहिकारण रानी
कहिहौ और काहु अस बाता ❋ पैहहु मार मुष्टिका लाता
असकहि गमनी लै जल नारी ❋ तिनसँग धूम्रकेतु मँग धारी
गढ़ भीतर कीन्हेसि पैसारी ❋ निरखे विपुल कूप सर बारी
नाना गज रथ खच्चर घोरा ❋ फिरत विलोकत पुर चहुँओरा
अन्तर गढ़ तेहि चारिदुवारा ❋ तहां न चर पावहिं पैसारा

छं० पावत नहीं पैसार चरगति द्वारलगि फिरि आयऊ।
यहि भांति रावणदूत घटिका युगल दिवस गँवायऊ॥

१ दूत २ पत्ता ३ बेसमझ ४ जल ५ टहलुई ६ घूंसा ७ रास्ता ८ कुवाँ॥

मनमहँ बिस्मरत ठाढ़ चौहट मध्य सो जब रहिगयो।
निशिचरनिकन्दनहोनलागिविधिताहिइकअवसरदयो
सो॰ गमनो भूपतिद्वार, नृत्य करन इक कौतुकी।
लीन्ह साथ तेहि धार, गढ़ इमि कीन्ह प्रवेश चर॥

बैठेउ सभा नरान्तक जाई ❋ कोटि बहत्तर संयुत भाई
व्योम[1] तीनि[3] रस[2] गुण[3] वसु[4] एका ❋ अङ्करीति लिखि गुणी विवेका
वन्दीजन नट कौतुक करहीं ❋ प्रतिदिन कवि कोविद उच्चरहीं
रावणदूत सभा सो देखी ❋ मनमहँ चकृत भयो विशेखी
तब चारण[5] मन अस अनुमाना ❋ कोटि बहत्तर रूप न आना
भूषण वसन सुआसन जोहा ❋ देखि सुखद चारण मन मोहा
याम दिवस गत अवसर पावा ❋ नारान्तक कहँ शीश नवावा
दीन्ह पत्रिका[6] पद शिरनाई ❋ कुशल तासु बूझी हरषाई

दो॰ नारान्तकनिजकुशलकहि, बूझा दशमुख हेतु।
समाचार गढ़ लङ्कपुर, वरणेउ दूत सचेतु॥

चरभाषित नारान्तक सुनेऊ ❋ क्षणकमाहिं निजकारण गुनेऊ
पुनि पत्री निशिचरपति बांची ❋ मानी चारबात सब सांची
उठेउ सभाते हृदय रिसाई ❋ गा निजभवन शोच सरसाई
बिन्दुमती कहँ बांचि सुनाई ❋ पितुपर भीर पत्रिका आई
समाचार सुनि कह तेइनारी ❋ तुम जनिकरहु रामसन रारी
गहहु चरण पिय यकसरजाई ❋ रसन[8] सफल करि विनय सुनाई
मांगि भक्तिवर प्रेम दृढ़ाई ❋ निर्भय राज्य करहु गृह आई
नारिवचनतेहि मनहिं न भावा ❋ तब उठि कोटद्वार खल आवा

दो॰ कहत बजाव निशान घन, सजहु सेन चतुरङ्ग।
जन्मभूमि जावा चहहुँ, पितुचारण के सङ्ग॥

१ शून्य २ छः ३ तीन ४ आठ ५ दूत ६ चिट्ठी ७ लड़ाई ८ जीभ॥

आयसु दीन्ह नरान्तक राजा ❀ लगे निशाचर सजन समाजा
अमित वाजि गज उष्टर नाना ❀ रथ खच्चर खेचर बहु याना
नाना अस्त्र शस्त्र गहि पानी ❀ निशिचरअनी न जाइ बखानी
जे सब संयुत साज सजाई ❀ विविध निशान हने हर्षाई
कन्त जात निश्चय जियजानी ❀ बिन्दुमती निजचित अनुमानी
राम विरोध न यहि कल्याना ❀ महूँ सङ्ग अब करहुँ पयाना
भूषण वसन[1] सुअङ्ग बनाई ❀ कन्तचरण गहि विनय सुनाई
सासु ससुर दर्शनहित नाथा ❀ हमहूँ चलब प्राणपति साथा

दो॰ दशमुखसुतसुनितियवचन, हृदय परम सुखमानि।
कहेउ चलहु सबसखिनसह, प्रमुदितछांड़िगलानि॥

सुनि पतिवचन नारि हर्षानी ❀ चली सङ्ग लै सखी सयानी
लै दल नारान्तक पगुधारा ❀ अमित सेन को कहिसकपारा
बुधजन[2] कहत सुनहु खगराजा ❀ अयुत सतावन बाजन बाजा
धूम्रकेतु कहँ ढिग सँगलीन्हे ❀ अति आतुर गमना रिसकीन्हे
चलत शकुनभल ताहि न होई ❀ गनै न मृत्युविवश शठ सोई
तासु पयान जानि दिकपाला ❀ जियमहँ संशय करत विशाला
कोल कूर्म अहिपति[3] अतिडरहीं ❀ पुनिपुनि रामचरण चितधरहीं
समुझि रामबल संशय त्यागी ❀ सुरविशेष प्रभुपद अनुरागी

दो॰ नारान्तक लङ्का तुरत, दल समेत नियरान।
दिकयोजन दलरहेउ जब, सुनु मुनीश सज्ञान॥

इहां कृपालु रमेश[4] खरारी ❀ असितजलदसम सेन निहारी
प्रभु सर्वज्ञ नीति हितसेतू ❀ सचिव[5] बोलि कह रघुकुलकेतू
सखा विलोकहु दक्षिणओरा ❀ गर्जतघन आवत नहिं थोरा
उमा[6] राम सब अन्तरयामी ❀ चरितहेतु बूझा असस्वामी
रामवचन सुनि दशमुखभ्राता[7] ❀ कहहँसि गहिप्रभुपदजलजाता[8]

१ कपड़ा २ पण्डित ३ शेषनाग ४ श्रीरामचन्द्र ५ मन्त्री ६ पार्वती ७ भाई ८ कमल ॥

देवदेव नहिं दल जलबाहा ❋ अहहिनरान्तकनिशिचरनाहा
बिह्वावलपुर बसत गुसांई ❋ पठवा तेहि दशकन्ध बुलाई
आवत धूम्रकेतु चरे संगा ❋ करत कुलाहल नाद उतंगा

दो० तेहि सँगगुणी अनेकप्रभु, गावत हनत निशान।
सेन संग चतुरंग खल, डोलत विविधदिशान॥

कहप्रभाव तेहिसुनु भगवाना ❋ बिहँसे प्रभु बल बुद्धि निधाना
पाइ रामरुख पवनकुमारा ❋ उठे हरषि हिय गरजि प्रचारा
सहित लषण प्रभुपद शिरनाई ❋ धाये कहि जय जय रघुराई
वातजात निशिचर समुदाई ❋ देखि सँपदि ढिग पहुँचे जाई
कटकटाइ गर्जे अति भारी ❋ देखेउ इमि आवत वनचारी
बूझेउ दूतहि निशिचरत्राता ❋ यह आवत धावत को भ्राता
स्वर्णशैल विकराल शरीरा ❋ गर्जत प्रलयजलद सम वीरा
तब नारान्तकसन कह दूता ❋ यहै पवनसुत बलीअकूता

दो० सिन्धुलांघि लंकहि दहेसि, पुनि हति अक्षकुमार।
कालनेमि कहँ मारि मग, लावा मेरु उपार॥

पुनि अहिरावण सहपरिवारा ❋ पैठि पताल सदल संहारा
लै आवा तापस दोउ भाई ❋ आवत अब तव ढिग सोइ धाई
यहिकर भुजबल अहै अपारा ❋ सुनि रिसान दशकण्ठकुमारा
चाप चढ़ाइ सुधारेसि बाना ❋ तजन न पाव गहेउ हनुमाना
सो शर धनुष तोरि कपिडारा ❋ पुनि रिसाइ उर मुष्टिकमारा
परा दशाननसुत महि कैसे ❋ वज्र रसातल गे गिरि जैसे
पवनपूत बल लूमँ पसारा ❋ कोटिन रथ गहि तापरडारा
रथ सारँथी चूर्ण सम भयऊ ❋ विधिवशतेहिकर प्राण न गयऊ

दो० एकदण्ड अतिविकल खल, रह भूतल धुनिमाथ।
पुनि शठ उठा सँभारि तनु, धायउ धनुधरिहाथ॥

१-५ मेघ २ दूत ३ जल्दी ४ सोना ६ पहाड़ ७ पूंछ ८ कोचवान॥

छांड़ेसि अगणितशायक कोपी ❀ क्षणइक कीशकटक गा तोपी
राम प्रताप प्रभंजनजाया ❀ करगहि अरिशर तोरि बहाया
देखि पवनसुत की प्रभुताई ❀ वर्षत सुमन विबुध झरिलाई
जय जय पिंगअक्ष सुर भाषा ❀ सुनि दशकन्धतनय मनमाषा
नारान्तक अति हृदय रिसाई ❀ कपितट पहुँचा आतुर धाई
कह कलकीश जो कछुबलधरहू ❀ मोसन मल्लयुद्ध रण करहू
गावहिं विबुध तोरभुज जोरा ❀ निजउर सहु इकमुष्टिक मोरा
लागत ठाढ़ रहै जो वानर ❀ तौ जानहुँ तव भुजबल आगर
सो० हरि सुनि ताकरबात, रामदूत रिसरोंकि उर।
अति सकोप मुसुकात, क्षणकठाढ़सम्मुखरहेउ॥
तब तेहिं कपिकहँ मुष्टिकमारा ❀ भयउ तड़ित सम शब्द अपारा
टरा न तहँ ते पग हनुमाना ❀ हृदय न निशिचर नेकु लजाना
दुइ मुष्टिक तेहिं फेरि चलावा ❀ तब मारुतसुत कोप बढ़ावा
किलकिलाय लंगूरै लपेटा ❀ डारि भूमि तेहिं दीन्ह चपेटा
विकलताहिकरिकपिअतिगाजे ❀ भे व्याकुल निशिचरबहु भाजे
कोटिन निशिचर कपिकरगहहीं ❀ रामदूतकर कौतुक अहहीं
मर्दि मर्दि बहु वारिधि डारे ❀ देखि देव जयजयति पुकारे
एक दण्डगत निशिचर जागा ❀ बहुविधि समरकरन सो लागा
छं०लागेउकरनपुनिसमरबहुविधिनिजसुभटबहुफेरिकै
खलकोटिकोटि प्रचण्डशायक कपिहिरणमहँ घेरिकै॥
रणरङ्ग रंजित वीर मारुतपूत पुनि पुनि गर्जही।
गहि गहि विपुल दनुजहिं पछारत उर बिदारत तर्जही॥
दो० सघनवाहिनी जलजवन, जिमिकरिकृतउतपात।
रिपुनहनततिमिवायुसुत, बिनुश्रम प्रमुदित गात॥
करत समर आयउ तेहिठामा ❀ जहँ नित होतरहा संग्रामा

१-२ हनुमान् ३ पुत्र ४ पूंछ ५ समुद्र ६ करोड़ ७ रंगा हुआ ८ कमल॥

लरत अकेल तहां हनुमाना ❀ धायउ बालितनय बलवाना
ता पाछे कपि चमू अपारा ❀ चले कहत जय कृपाअगारा
लीन्हे गिरिवर तरु पाषाना[1] ❀ जहँ तहँ करनलगे मैदाना
अङ्गद आइ पवनसुत पाहां ❀ कहि जय रघुवरसन द्विजनाहां
दोऊ भट इकसँग करिहूहा ❀ हतन लगे अरि[2] सेन समूहा
देखत भालु[3] कीश कृतभारी ❀ भागिचले निशिचर भयभारी
देखिअनी निज त्रसित बहूता ❀ भा अतिकुपित दशाननपूता

छं० अतिकुपितभादशसुखसुवननिजभटनशपथैंदिवाइकै।
फेरेउ सबन करि कोप बोला जात कहां पराइकै॥
विधिदीन्ह विविधअहारकपिदल खात कस न अघाइकै।
बिनु भालु कपि महिकरहु पुनि हठिधरहु तापस धाइकै॥

दो० सुनि नारान्तक सरुष वच, रजनीचर समुदाय।
लागे लरन सकोप सब, मायाकपट कुभाय॥

माया तिमिर[5] पसार अपारा ❀ अस्त्र शस्त्र बहुभांति प्रहारा
शक्ति शूलवर विशिख[6] कराला ❀ डारहिं रज तरु शैल विशाला
गिरत ऋक्षकपि लागत शायक ❀ उठहिंबहुरि कहिजयरघुनायक
निजदलविकलविलोकिखरारी ❀ सत्यसन्ध इक शर संचारी
रिपुशर काटि तिमिर करिदूरी ❀ प्रभुशर हते निशाचर भूरी
हरिनिषङ्गमहँ पुनि सो तीरा ❀ प्रविशे आइ सुनहु मुनिधीरा
निरखिप्रकाश भालुअरु कीशा ❀ गहिगिरितरुकहिजयजगदीशा
निशिचर अनी मध्य गे जबहीं ❀ दिये डारि गिरि रज तरु तबहीं

दो० मरे तमीचर[8] कोटि पट, जानि निशा परिवेश।
दलयुत अङ्गद पवनसुत, चले जहां अवधेश॥

अङ्गद हनुमदादि कपि भालू ❀ आये जहँ रघुवीर कृपालू

१ पत्थर २ शत्रु ३ ऋक्ष ४ कुसम ५ अँधेरा ६ बाण ७ तरकस ८ राक्षस॥

प्रभुहि विलोकि चरण शिरधरे ❀ भे श्रमरहित सकल सुखभरे
अतिआदर प्रभु किय सनमाना ❀ सबकहँ बैठन कह भगवाना
पुनि रजाइं लै थलन सिधाये ❀ छविवारिधि प्रभुपद शिरनाये
अङ्गद हनुमत निकट निवासी ❀ रामचरण सुषमा गुणरासी
दोउ भट कर परसत प्रभुपाऊ ❀ देखि सुरनमन भा अतिचाऊ
हमहुँ होत जग कीशस्वरूपा ❀ पदगहि नित्त रहत नरभूपा
हरिन सिहाहिं सुमन झरिलाये ❀निजनिजआश्रमअमरेंसिधाये
दो० बन्धु सचिव सेना सहित, शोभित श्रीभगवान।
तुलसिदास ते धन्यनर, जे यहि ध्यान लुभान॥
उत नारान्तक सेन समेता ❀ गयउ जहां दशकन्धनिकेता
सुतहि सुरारि मिला पुलकाई ❀ कुशल बूझि बैठेउ हरषाई
देखि नरान्तक कै समुदाई ❀ दशमुखशठ सब शोच दुराई
जेहिविधि हरिलावा जगमाता ❀ ताहि आदिकृत कृत विख्याता
कुम्भकर्ण घननादैं निपाता ❀ कहिबिलखा अहिरावणघाता
पितुमन मलिन नरान्तकदेखा ❀ बोला खल उर गर्व विशेखा
तजहु सकल संशय विबुधारी ❀ करिहहुँ प्रांत समर अतिभारी
चमूकीश बिनु क्षिति करि ताता ❀ धरिहौं तापस होत प्रभाता
छं० धारि आनि तापस भ्रातदोउ परभात बार न लाइहौं।
धरिधरिविपुलकपिभालु दीननिशाचरन अघवाइहौं॥
भुजबलकहहुँनिजनहिंबहुतकरि रिपुनप्रकटदिखाइहौं।
बिनुश्रमहिं तातनको बयरलै तवचरण शिरनाइहौं॥
दो० सुनत बीसभुज सुतवचन, बारबार उरलाइ।
लाग करावन नृत्य जड़, गुणी समूह बुलाइ॥
बिन्दुमती आदिक रनिवासू ❀ सबचलिगईं मँदोदरि पासू
सासुहिं मिलि बैठीं सब नारी ❀ मयतनया करि आदर भारी

१ आज्ञा २ देवता ३ राक्षस ४ मेघनाद ५ मारा ६ संदेह ७ सबेरा ८ मंदोदरी ॥

बूझि परस्पर रावणघरणी ❋ प्रभुयश ताहि सुनायउ वरणी
देइ पतोहुन वास सुहावन ❋ आपुलगी सुमिरन जगपावन
शयनकरहुकह सुतहिनिशाचर ❋ उठा आपु मतिमन्द अघाकर
गा तेहिभवन कुटिल दशग्रीवा ❋ जहँ मयतनया सद्गुणसीवा
आयउ पिय मन्दोदरि जानी ❋ पाइ सुअवसर गहि पग पानी
पियसुनाय अतिकोमल बयना ❋ लगीकहन जलभरि युगनयना

दो० नाथ निगमआगम विबुध, कहत प्रकट यह बात।
बुधजन सो जो आधहू, राखै सरबस जात॥

तजहि न हठ शठ सरबस खोवै ❋ यद्यपि अन्त शीशधुनि रोवै
सो विचारि प्रभु परमसुजाना ❋ मोरवचन सुनि कीजियकाना
अजहुँ करहु हठ दूरि गोसांई ❋ अनुजभांतिमिलिये प्रभुजाई
प्रथमहिं सीतहिं देहु पठाई ❋ पुनि तुम गमनहु पुत्रलवाई
प्रभुपद गहि मांगहुवर एहू ❋ पदपङ्कज रति विमल सनेहू
प्रियावचन तेहिविषसम लागा ❋ सो गृहतजिगा अनतअभागा
निजनारीकहि कटु अभिमानी ❋कीन्हशयननिशिगइबड़िजानी
सो रजनी गत भयउ प्रभाता ❋ जागे रघुवर त्रय जगत्राता

दो० ऋक्ष कीश जगदीश पद, शीश नाइ रुखपाइ।
धरि गिरि तरु धावत भये, कहि जयजयरघुराइ॥

कपि घेरा गढ़ यह सुनि काना ❋ रावण सुतलखि निपटरिसाना
साजिविपुलदल हनत निशाना ❋ गढ़ते चला निकरि बलवाना
चारिद्वार करि कठिनलराई ❋विशिखवँरषिकपिदलबिचलाई
निकरे निशिचर गढ़ ते कैसे ❋ शलभ समूह शैल ते जैसे
मारुतसुत देखा कपि भाजे ❋ कटकटाइ मतिविक्रम गाजे
कपि लँगूर चहुँ ओर भवांई ❋ रोके खल निशिचर समुदाई
पटकत महि निशिचर फलबेलू ❋ केतिक देत विदिशिदिशि मेलू

१ रावण २ हाथ ३ वचन ४ देवता ५ सब ६ सबेरा ७ बाण ८ टीड़ी॥

इकदिशि इमि हरिकृत संग्रामा ❀ दिशि दूजी अङ्गद बलधामा

दो० निशिचरसेना उदधिसम, मन्दर[1] इव दोउ कीश।
मथतदेखि जयरतनलागि, हँसे विबुध सुर[2]ईश॥

छं० इमिनिरखिपराक्रमकरतकीश ❀ भा क्रोध परम रजनीचरीश
करि प्रलयकै[3]न्द ते घोर शोर ❀ धर कुधर अस्त्र धाये कठोर
इकबार मारकर शर समूह ❀ किय विकलअस्त्रहनिकीशजूह
कोउटेरत कपिपति चितउचोट ❀ कोउसुरत करत निजधामओट
वहु चले कन्दरा शैल ताकि ❀ कोउ दबकत इतउतपात झांकि
कोउ देत दुहाई लषण राम ❀ कोउ कहत विधाता[4] भयो वाम[5]
यहि बीच नरान्तककर प्रधान ❀ तेहि धायगहेउ युवराज पा[6]नि
वहुभट लपटाने अङ्ग सङ्ग ❀ सब सङ्ग उठेउ अंगद उतङ्ग
नभ कीश कीन्ह कौतुक अभूत ❀ रविमण्डल पहुँचेउ बालिपूत
अँगगारे जारे तपनि आंच ❀ पुनिआयेउ जहँ संग्रामरांच
यहनिरखि अपर यूथप पिशाच ❀ तुर आइगयो सेनासमाच
लै विषमशूल मारेसि प्रचंड ❀ उरलाग आनि अतिकठिनदंड
महिपरेउ तनयतारा तुरन्त ❀ लखि दौरिपरेउ हनुमन्तसन्त
सोइ शूल खैंचि मारेउ प्रचंड ❀ ह्वै गिरेउ यूथपति सहँसखंड
सबचरितसुनेउ रविकुलदिनेश ❀ कह जाहुवेगि अहिराज शेश
चले नाइ माथ शंकरमनाइ ❀ धनु बांधि बांधि विकरालबाइ
उर अंगदकर धरि सुमिरि राम ❀ श्रमविगतभयउबलअतुलधाम

दो० विगत भई मूर्च्छा तुरत, बहुरिचलेउ युवराज।
लक्ष्मणचापटँकोर सुनि, फिराकीशदलसाज॥

सुनतटँकोर शरासन निशिचर ❀ वधिरभये नहिं सुनत शब्दपर
वर्षा विशिख कीन्ह अहिनाथा ❀ काटे पाणि पायँ बहु माथा
उड़हिं अकाश शीश भुज कैसे ❀ धुनकत तूल रोमगण जैसे

१ पहाड़ २ इन्द्र ३ मेघ ४ ब्रह्मा ५ टेढ़ा ६ हाथ ७ हज़ार ८ रुई॥

रुण्ड अशीश फिरहिं रणधरणी ❀ यथा अकाल क्षुधारत करणी
इत कपि भालुविजय[1]अभिलाखे ❀ उतहि निशाचर जय हितराखे
मारुतसुत अङ्गद बलवीरा ❀ समर बांकुरे अतिरणधीरा
सिंहनाद कीन्हा हेरि दोऊ ❀ भाजे कपि[2] रण गाजे सोऊ
दोउ दल युद्ध परस्पर करहीं ❀ प्रमुदित भट[3] कायर हिय डरहीं

छं॰ कायरडरहिंप्रमुदितसुभटसब लरतहारि न मानहीं।
जहँ तहँ गिरैं पुनि उठिभिरैं दुहुँओर जयति बखानहीं ॥
कौतुक[4] विलोकत विबुधगण विस्मय हरष उर आनहीं।
रघुवीरसेननपर सुमन[5] भरि लाय विनती ठानहीं ॥

दो॰ अतिअद्भुत करणी करहिं, ऋक्ष कीश बल भूरि[6]।
कर पद बिनुकर रैनिचर, तिन मुख डारहिं धूरि ॥

बहुतनके शिर तोरिचलावहिं ❀ निजभुजबलरावणहिंजनावहिं
गये याम युग दिवस भवानी ❀ नारान्तक सब सेन सिरानी
मरे निशाचर अमित[7] निहारी ❀ रावणसुवन कोपकरि भारी
रथ समेत ऊपर नभ जाई ❀ भयउ अदृश्य अस्त्र झरिलाई
क्षणमहँ करि मूर्च्छित कपिसैना ❀ पुनि शठ गा जहँ राजिवनैना
गर्जा मनहुँ मेघ समुदाई ❀ कहनलाग कटुवचन रिसाई
होसिसजग निशिचरकुलद्रोही ❀ बन्धुवैर लगि मारहुँ तोही
प्रभुकहँ कटुककहत सुनिकाना ❀ कोपेउ जामवन्त बलवाना

दो॰ शूल एक तेहि छांड़ेऊ, सो कर गहि ऋक्षेश[8]।
धाय तासु उर मारेऊ, भाषि जयति अवधेश ॥

लागत शूल सो मूर्च्छितभयऊ ❀ जामवन्त तब कर गहिलयऊ
बार अमित महिमाहिं पछारा ❀ बांधि गाड़ि बारूमहँ डारा
जागे सकल बलीमुख ऋच्छा ❀ लगेकरन रण निजनिज इच्छा
जामवन्त यह हृदय विचारा ❀ मरे नहीं यह खल मम मारा

१ जीति २ बन्दर ३ योद्धा ४ तमाशा ५ फूल ६ बहुत ७ बेहद ८ जाम्बवान् ॥

विधिइच्छा पुनि ताहि उखारी ❀ मुष्टिचारि उरमाहिं प्रहारी
गहि पद संचारा गढ़ माहा ❀ सपदिपरा जहँ निशिचरनाहा
दशौवदन हाहा करि धावा ❀ नारान्तकहि हृदय तब लावा
निरखि निशाचरगण समुदाई ❀ गढ़ कहँ गे सब सम्भ्रमधाई

दो० कपिगणसमयप्रदोषलखि, रामचरण धरिमाथ।
ठाढ़भये सबतन चितय, दयादृष्टि रघुनाथ॥

बिनुश्रम कीन्ह सबन जगदीशा ❀ गये सुवास भालु अरु कीशा
रुचिरासन आसीन रमेशा ❀ ढिग वीरासन उरग नरेशा
अङ्गद मारुतसुत प्रभुचरणा ❀ लागपलोटन सुनहु अपर्णा
पुण्यपुंज अरु भाग्यनिधाना ❀ जिनपर नितप्रसन्न भगवाना
उहां सुरारि सुतहिं पौढ़ाई ❀ बिलखहिं तासुनारि समुदाई
होत प्रभात नरान्तक जागा ❀ पितु विलोकि लज्जारस पागा
रथ चढ़ि तुरत इकाकी धावा ❀ नभपथ समरपुहुमि महँ आवा
कीशकटक यह मर्म न जाना ❀ होइलोप कीन्हेसि झरिबाना

दो० धावहिं व्योमहिभालुकपि, ताहि न हेरैं नैन।
घायल ह्वै ह्वै गिरहिंमहि, भाषहिं आरत बैन॥

बाण एक शत तड़ित समाना ❀ छांड़ेसि शठ जहँ कृपानिधाना
लागत विपुल कीश मुरझाने ❀ बहुतक कायर देखि पराने
भागि सेतु ढिग एक अयाना ❀ टेरे फिरहिं न सुनु हरियानाँ
मारुतसुत अङ्गद सुग्रीवा ❀ कुमुद मयन्द द्विविद बलसीवा
ये सब वीर हांक दे धावहिं ❀ नभपथ ताहि न खोजत पावहिं
तब सब वीर एक मत ठाना ❀ लै गिरि तरु किय लङ्क पयाना
दशमुखभवन तासु कंगूरा ❀ बैठे कपि पसारि लंगूरा
करते डारि देहिं पाषाना ❀ बहुत दनुज भे चूर्ण समाना

छं० भे चूर्ण निशिचरयूथ ❀ गईं निशिचरी भय गूथ॥

१ रावण २ सन्ध्या ३ निगाह ४ पार्वती ५ अकेले ६ पृथ्वी ७ गरुड़ ८ राक्षस॥

मुखबीन आरत दीन * भइँ भवन रावण लीन ॥
सुनिबोलिभटदशभाल * कह खाहु कीश कराल॥
करि यत्न भागैं कीश * असकहेउवचदशशीश॥
ममलहहु आयसु छोर * सोइ जानिहौं रिपुमोर ॥
सो शूर मोकहँ प्यार * जो खाय मर्कट धार॥
जो जाय आयसु छोर * सोइ जानिहौं रिपुमोर ॥

दो० ऐतु ऐतु गुण रजनिचर, एक एक भुज जोर।
रावन पावन राखि शिर, धाये करि रव घोर॥

देखि लँगूर सकल हरषाने * मधुमाखी सम सब लपटाने
कपिउर सुमिरि रमेशप्रतापा * डारे सबन पटकि करिदापा
काचेघटसम दनुज बिदारी * जयति राम जय लषण खरारी
सुभट छुहनि पुनि फेरि लँगूरा * भूमि गिरावहिं कोट कँगूरा
अतिविशाल गहि कञ्चनखम्भा * जिमि प्रयासबिनु करुआरम्भा
लै ढाहत अपकेघटजूहा * कपि तिमि तोरत दनुजसमूहा
पुनि विचारकरि हरिभट धाये * निशिचरनिकरमध्य चलिआये
करि कोटिन बिनु नासा काना * कर पद हीन कीन रिपुनाना

छं० रिपुकीन कर पदहीन अगणित दीनवचनपुकारहीं।
गढ़तेनिकरिनिशिचरअखिलखलविपिनबाँटसिधारहीं॥
पीपरपरण सम धरणिलङ्का कम्प षट कीशन करा।
तोरे कपाँट निपाटि अरितिय केश खैंचतगहिकरा॥

दो० भयउकुलाहललङ्कअति, नारान्तक सुनि कान।
नभतेस्यन्दन सहितशठ, प्रकटिपरमरिसियान॥

निरखिदशा निज नारिनकेरी * कहन लाग कटुगिरा घनेरी
शठ आयउ संग्राम बिहाई * लरत तियनसँग लाज न आई

१ बंदर २ शब्द ३ श्रीराम ४ सोना ५ कच्चा ६ रास्ता ७ किवाड़ ८ रथ॥

अबलनपै बल भट न कराहीं ❋ छांड़हु तियन लरहु ममपाहीं
सुनि मर्कटन भयउ सुखभारी ❋ तजीं निशाचरि दीनपुकारी
भाजिभवन भययुत गहिनारी ❋ लीन्ह कपिन कर शिलाउपारी
शिलप्रहार हय स्यन्दन भंजा ❋ आयुध तोरि सारथी गंजा[1]
धरि पछारि रावण दृग देखा ❋ कौतुक कीशन कीन्ह विशेखा
लागे पदगहि खलन फिरावन ❋ नाचहिं गाइ रामयशपावन

दो॰ तोरततिनतन पटकिमहि, कहत जयति रघुवीर।
करत युद्ध गत याम युग, कीश छहौ रणधीर॥

अस्ताचल रवि कीन्ह प्रवेशा ❋ वन्दे चरण जाइ अवधेशा[2]
श्याम सरोरुह[3] प्रभुतनु देखी ❋ पदधरिशिरसुखलहेउ विशेखी
राम सबन सादर सनमाना ❋ को दयालु रघुवीर समाना
कह प्रभु होहु थलनआसीना ❋ आयसु पाइ भये श्रमहीना
भये विगत श्रम वानर भालू ❋ अनुजसहित मनमुदितकृपालू
सुनहु उमा ता निशि रघुनायक ❋ गावत जन गुण सबगुणदायक
यामतीनि यामिनि गत जबहीं ❋ उत नारान्तक जागेउ तबहीं
शोचविवश मींजत दोउहाथा ❋ लज्जित हृदय निशाचरनाथा

छं॰ लाजकै रथै सँभारि वाजि[6] साजि हृष्टपुष्ट[7]।
शङ्क छांड़ि अस्त्र मांड़ि गाढ़ वीर सङ्ग दुष्ट॥
भेरि दुन्दुभी निशान गानका डकैत कर्त।
धीर वीर अग्र गौन गाजि गाजि शब्द भर्त॥
जीव त्रास त्रास भास वाजि मोह छण्ड छण्ड।
वङ्क शूर शङ्क दूर वीरता सपूर चण्ड॥
वाजि नाग[8] शोर घोर पूरिगे दशौ दिशान।
धूरि पूरि मेघ बोध शोध ना परो अपान॥

१ मारा २ श्रीराम ३ कमल ४ पहर ५ रात्रि ६ घोड़ा ७ मोटे ८ हाथी॥

कूदि कूदि व्योमपन्थ जाइ आइ जाइ भूमि।
अस्त्र शस्त्र काढ़ि काढ़ि क्रुद्ध क्रुद्ध झूमि झूमि॥
दो० प्रलय मनहुँ चाहत करन, अनी तमीचर चण्ड।
सुनु खगेश मर्कट विकट, जिमि धाये वरबण्ड॥
छं० निहारि हर्ष कीश ऋक्ष फूलि फूलि शैल भे।
बजाइ कटकटाइ हूह एक बार कै अभे॥
उपारि भूधरौ अपार वृक्ष अश्मशृङ्गहू।
मरे निशाचरानि रुण्ड झुण्ड शुण्ड भङ्गहू॥
रदी हरी मृगावती सवार उष्ट्र मण्डहू।
मनो विचित्र वाहिनी दई मनोज खण्डहू॥
हलै धरा बलै विचारि भार धारि को सकै।
सुनै पुकारि जयति राम शत्रु से नहीं धकै॥
लँगूर शूल से अकाश भीत उच्च औचट्यो।
गिरे पयोद पौन ते झपेट भेट ते कट्यो॥
सो० शब्द करत अतिघोर, इमिपहुँच्योदलभालुकपि।
आयुध झरि अतिजोर, परैलागि घन प्रलयसम॥

सजग होन कपि भालु न पाये ❀ अतिशय निकट तमीचरँ आये
असितनिशाचरअतिअँधियारी ❀ तापर करैं शस्त्र की मारी
सूझहिं कपिन न हाथ पसारे ❀ जहँ तहँ एकन एक पुकारे
सम्मुखँ कोउ न करत लराई ❀ कपिन मारि रणभूमि सोवाई
गे अनेक भजि सिन्धुँ समीपा ❀ सेन विकल लखि रघुकुलदीपा
सजि शारंग तजा इक बाना ❀ भा प्रकाश दिक तरणिसमाना
लखितम विगत भालु कपिहरषे ❀ कटकटाइ धाये रिपु धरषे
भिरे एक सन एक प्रचाँरी ❀ लागे करन कठिन हठ मारी

१ आकाश २ पहाड़ ३ कामदेव ४ राक्षस ५ सामने ६ समुद्र ७ ललकार कर॥

दो॰ शीशशिखातरु करन धरि, कांखन भरिभरि धूरि।
गरजे भालु बलीवदन, धाय धाय नभ दूरि ॥

डारहिंगिरितरुनिशिचरशीशा ❋ दधिघटसम फोरहिं भट कीशा
चढ़हिं अनेक कन्ध पर जाई ❋ काटहिं कान दृगन रजनाई
तोरहिं शूल चाप नाराचा ❋ अरिदल अस्त्र न एकौ बाचा
शस्त्रहीन रिपुसेन पराई ❋ देखि पवनसुत हँसेउ ठठाई
बैठि अवनि अति लूमं फुलाई ❋ अति उतङ्ग दीरघ चौड़ाई
तर्कित खसे निशाचर कैसे ❋ पक्षहीन नभ ते खग जैसे
गिरत कीश गहिचरण फिरावहिं ❋ पटकिभूमि गाड़हिं बिहँसावहिं
तुम्बरिसम अगणित शिरतोरत ❋ अगणितरुण्ड सिन्धुमहँ बोरत

दो॰ कोटि बयालिस तमीचरं, नारान्तक कर घात।
रामकृपा बल हति खलन, कपिन बिताई रात ॥

प्रभुतुणीर महँ हरिशर जबहीं ❋ प्रविशे कीन्ह उदय रवि तबहीं
देखि कटक निज परम बिहाला ❋ नारान्तक भट कोटि कराला
करि बहुशपथ लिये सँग वीरा ❋ वर्षत शक्ति उपलगण तीरा
शर अस्तम्भन विपुल पँवारे ❋ भये अचल कपि टरहिं न टारे
लै लै पाश निशाचर धाई ❋ बांधत जिमि चुंगालि शुक पाई
व्याध पींजरासम बहु जाना ❋ भरे जान प्रति अयुतप्रमाना
जे कपि लखैं विपुलबल बङ्का ❋ ते मूर्च्छित फेंकैं गढ़ लङ्का
रावण देखि तनय की करणी ❋ वन्दीजनँ जिमिभुजबल वरणी

दो॰ हरिइच्छा जानै न कस, सुतहिं सराहत मूढ़।
कालविवश मति संभ्रमित, सुनहु ऋषय बुधिगूढ़॥

अंगद हनूमान जब जागे ❋ नारान्तक सन जूझन लागे
क्षण इक कीश न पायउ लरई ❋ पुनि शर हति मूर्च्छावश करई
याम युगल तेहिकर वरदाना ❋ राखेउ तेहि कारण भगवाना

१ बाल २ पूँछ ३ पर ४ राक्षस ५ तरकस ६ पत्थर ७ आठ ८ पहर ॥

रिपुहिं खेलावत रघुकुलकेतू ❋ पालक बुधि वाणी श्रुतिसेतू
सो युग याम गये जब बीती ❋ तब रघुवीर सजी जयरीती
हांक देइ कपि भालु[1] जगाये ❋ भये विगत मूर्च्छा सब धाये
हनूमान अंगद जब जागे ❋ राम लषण चरणन अनुरागे
प्रभुपद शीश रहे धरि कीशा[2] ❋ तब हँसि बोले श्रीजगदीशा

सो० विधिवाचालखिआज, तात तुमहिं मूर्च्छा भई।
पुनि कह प्रभु रघुराज, अबश्रमस्वप्नेहुँअनतनाहिं॥

तुमहिं सुमिरि अंगद हनुमाना ❋ जितिहैं जगत मनुज रण नाना
अस वर जबहिं रमापति भाखा ❋ सुनत गिरा हर्षे मृगशाखा
कहेउ बहोरि वचन रघुवीरा ❋ सुनु अंगद हनुमत रणधीरा
तात तुरत तुम उभय सिधावहु ❋ लङ्क गये कपि तिन्हैं छुटावहु
सुनिदोउभट गहि शैल[3]विशाला ❋ सुमिरि कोशलाधीश कृपाला
सपदि कीश गढ़पर चढ़िगये ❋ देखि लंकमहँ खरभर भये
सकल कपिनकै मूर्च्छा बीती ❋ तोरि पाश भजि राम सप्रीती
वायुसूनु[4] युवराज निहारी ❋ हर्षे कहि जयजयति खरारी

दो० मेषवरूथहिं पाइ जिमि, वृकॅ[5]गण करहिं सँहार।
तिमिमर्दहिंदनुज[6]नसमुद, कीश भालु बरियार॥

याम एक वासर अवशेखा ❋ कह अंगद कीशनतन देखा
चलिय तात अब जहँ सुरभूपा ❋ देखिय पद पाथोज[7] अनूपा
अंगद वचन पवनसुत भाये ❋ सपदि सहितदल प्रभुपहँ आये
निशिचरकोटि नरान्तकसङ्गा ❋ करतरहे बहुविधि रणरङ्गा
मायाकरि निजगात बजावहिं ❋ जहँतहँ खल रावणयश गावहिं
अदितिनन्दलखितिनकरिमाया ❋ सभय भये जाना रघुराया
दीन्ह नाथअनुजहिंअनुशासन ❋ उठेनमितगहिविशिखशरासन
अहिपति कहेहु तिष्ठ[8] क्षण एका ❋ तैं कीन्हें रण खेल अनेका

१ रीछ २ वानर ३ पहाड़ ४ हनुमान् ५ भेड़िया ६ राक्षस ७ कमल ८ ठहर॥

छं० तैंकीन्हखेलअनेक विधि अबतिष्ठखलरणभूथला।
इमिकहिअहीशंचढ़ायधनुशरकरननिशिचरदलमला
निजअंनीनिरखि निदान हरि अरिसुवनधावारिसभरा।
डारत अनेकनराच प्रभुपर शिला तरुवर भूधरा॥
रघुवीरअनुज प्रवीणखलबलदलन श्रुति यशगावहीं।
तरुउपलगिरिअरितीरउपरहि बाण लषण चलावहीं॥
रिपुशस्त्र अस्त्र अनेकआयुध कनकं करि करि डारहीं।
सुरगणप्रफुल्लितसुमनंभरिकरि जयतिलषणपुकारहीं॥
दो० मायापति के अनुजसन, माया करत अयान।
लगत न एकौजानिजिय, तबखलनिकटतुलान॥
हना लषणउर पविसम शायक ❀ लगतगिरेरणमहि अहिनायक
पुनि खलदल भा प्रबल अपारा ❀ भक्षण लाग भालु कपिधारा
चले पराय कीशं भयभीता ❀ अब न बचब करिकालप्रतीता
निशिचर धारि भालुकपिवेषा ❀ लागे खान कपिन अस देखा
कपिडर कीश भालु डर ऋच्छा ❀ आपुआपुभयमिलनअनिच्छा
कोउ न काहु निकट नियराई ❀ जो जेहिपाव ताहि तेहि खाई
पुनि शठ साधि विभीषणरूपा ❀ गहि अंगद हनुमत कपिभूपा
काहु न यह माया कछु जानी ❀ कपटमिलाप विभीषण ठानी
दो० तेहि अवसर जागे लषण, देखा सेन विनाश।
अहिरावणछल पवनसुत, समुझत उड़ाअकाश॥
गर्जेउ जाय भयंकर भारी ❀ फटेउहृदयसुनि निशिचरझारी
मायाहत शर लषण पँवारा ❀ उघरे कपट कपाट अपारा
नारान्तक की माया बीती ❀ गयउ यज्ञशाला अतिप्रीती
खोजेसि सकल समग्री ताकी ❀ कीन्ह अरंभ विजय निजताकी

१ लक्ष्मण २ फ़ौज ३ पत्थर ४ टुकड़े ५ फूल ६ बाण ७ वानर॥

यज्ञ आसुरी तेहिं तब ठाना ❀ पशुसमूह बलिकारण आना
भये निशामुख श्रमवश सैना ❀ फिरे सुमिरि सब राजिवनैना
तुरत अहीश राम पहँ आये ❀ सहित अनी प्रभुपद शिर नाये
कृपाअयन निरखे मृगशाखा ❀ प्रभु श्रमछीन दीन अभिलाखा

दो० टिकहुथलन सबसन कहा, सुखसागर रघुनाथ।
पाय सुआयसु भालु कपि, चले सुमिरि श्रीनाथ॥

तब रघुराज[1] अनुज उरलावा ❀ निज आसन समीप बैठावा
मघवासुतसुत[2] अरु हनुमाना ❀ इनसम भाग्यवंत नहिं आना
अमलाम्बुजपदगहि निजपानी ❀ परशे सबन सनेह भवानी
जाम्बवन्त लंकेश हरीशा[3] ❀ प्रभुसमीप सब मुदित मुनीशा
अनुज सखा नारान्तक करणी ❀ युद्धप्रबलता बहुविधि वरणी
शिवप्रताप तेहि अमित प्रतापा ❀ मरण न दीन्हे बहुसन्तापा
सुने वचन रघुपति मुसुकाने ❀ अतिसनेह हरचरित बखाने
सुनहुसकल हम शम्भु न आना ❀ जिनहिं भेद ते वश अज्ञाना

दो० जे सुमिरहिं शिवसहउमा[4], ते जानहु मम प्रीय।
शंकरभजहिंसोमोहिंभजहिं, मोहिंसो शंभुअतीय॥

चारि पदारथ करतल ताके ❀ बसहिं महेश उमा उर जाके
जो ममप्रण शिव सदा निबाहा ❀ सो जयदेव न संशय आहा
सुख कलत्र जय विजय विभूती ❀ शंकर सुमिरत होइ अकूती[5]
भक्ति मोरि शंकर आधीना ❀ जलाधीन जिमि जीवन मीना
कह आश्चर्य नरान्तक येहा ❀ मोपर गिरिपति[6] परमसनेहा
सुमिरहु सदा विश्व यक साथा ❀ कपट त्यागि सब नावहु माथा
होइहि विजय धीर मन धरहू ❀ वेगि उपाव पाव सुख करहू
शम्भु उपासन कर मम दासा ❀ तातैं हृदय धरि दृढ़ विश्वासा

दो० जो नर चाहत भक्ति मम, सो छल कपट दुराइ।

१ राम २ अंगद ३ सुग्रीव ४ पार्वती ५ अप्रमाण ६ महादेव ७ पुत्र॥

शिवासमेत गिरीशपद, निशिदिनरहुमनलाइ॥

मनक्रमवचन शम्भुपद आसा ❀ करहिं ताहिउर सब गुण वासा
निर्भय करि जो हरपद नेहू ❀ ताउर रमासहित मम गेहू
भववारिधि लांघहिं बिनुखेवहिं ❀ यह विचारि बुधजन भेव सेवहिं
भवभंजन यह हित उपदेशा ❀ अनुजहिं सखहिं बुझाव रमेशा
ध्रुव वाणी सुनि अति सुखपावा ❀ अहिपति रामचरण शिरनावा
अंगद हनूमान नल नीला ❀ कपिपति अरु ऋक्षेश सुशीला
सहित विभीषण ये जन साता ❀ सुनि श्रीमुख हरयश विख्याता
रामहिं शिवहिं एक जे जाने ❀ भय तजि नाम जपत हर्षाने

दो॰ कहतसुनतइतिहासशुचि[3], निशिबीती युग याम।
खगपति[4] आये देवऋषि, जितशोभित श्रीराम॥

राम लषण सुखसींव विराजे ❀ मार अपार निहारत लाजे
निरखिमानि सुनिहृदयसनाथा ❀ उठे हरषि प्रभु रघुकुलनाथा
शीशनाइ प्रभु आसन दीन्हा ❀ आशिषपाइ हरषि हित कीन्हा
मुनि नीके हरिरूप विलोका ❀ यथा इन्दु[5] लखि सुख लहकोका
पुलकिगात तब कह ऋषिराजा ❀ सुनहु नाथ आयउँ जेहिकाजा
चतुरानन पठवा मोहिं स्वामी ❀ यदपि कृपानिधि अन्तरयामी
सदा अनाथ नाथ भगवाना ❀ विनय[6] विरञ्चि करिय परिमाना
जबलगि होन प्रभात न पावहि ❀ तबलगि हरिहरिसुत लैआवहि

दो॰ जपत निरन्तर नाम तव, सो जानहु भगवान।
विधिवरहित इत आनिये, तेहि कहँ कृपानिधान॥

नारान्तकवध है तेहि हाथा ❀ दधिबल नाम भक्त तव नाथा
नाथबहुत यहिखलहिं खिलावा ❀ रण विलोकि देवन दुख पावा
अब रघुवीर करहु सोइ बाता ❀ बिनु प्रयास[7] रिपु मरै प्रभाता
तेहिसन तुमहिं न सोह लराई ❀ दधिबल सम्मुख करहु बुलाई

१ महादेव २ निश्चय ३ पवित्र ४ गरुड़ ५ चंद्रमा ६ विनती ७ श्रम॥

सविनय नाइ शीश वर भाखी ❀ गमने मुनि प्रभुछवि उर राखी
नारद गये जबहिं विधिलोका ❀ वायुतनय तन राम विलोका
तात तुरत तुम गमनहु तहँवां ❀ वारिधिमहँ धवलागिरि जहँवां
तहँ दधिबल रह ध्यान लगाये ❀ बहुत दिवस चलिगये सुभाये

दो० अहै तपोबल तेजस्वी, तात तासु ढिग जाइ।
मन प्रसन्न करि चतुरई, आनहु वेगि बुलाइ॥

पवनकुमार पाइ अनुशासन ❀ चले वन्दि पद हरषि उदासन
वेगवन्त धावा कपि कैसे ❀ वर नाराच धनुष ते जैसे
लोक अर्द्धघटिका तेहि ठामा ❀ पहुँचे वायुपुत्र बलधामा
देखि तरणिसम तासु प्रकासा ❀ ठाढ़ भयउ कपि मन्दिरपासा
दण्डयुगल कपि अस्थित रहेऊ ❀ हियमहँ राम राम अस कहेऊ
उत रण होई होत प्रभाता ❀ इत इनकर चित हरिपदराता
क्षण इक कपि मन कीन्ह विचारा ❀ प्रभुपहँ चलिये कवनप्रकारा
जो गृहसहित चलहुँ लै येही ❀ नहिं अस आयसु भक्तसनेही

दो० बुधजनशीश शिरोरतन, अति लजात मुनिराय।
ताहि जगावन हेतु तब, कीन्हे अमित उपाय॥

अचल ध्यान कपि तासु प्रमाना ❀ तजि प्रवीणता भजि भगवाना
रामचरण चित कपिवर दयऊ ❀ दण्ड एक औरौ चलिगयऊ
विधिप्रेरित दधिबल लघुशंका ❀ करन उठेउ देखा भट बंका
जय श्रीराम वायुसुत बोला ❀ सुनिदधिबलनिजलोचँनखोला
बूझि हरिहिं कीशहिं उरलाई ❀ कही परस्पर दोउ कुशलाई
पुनि हनुमान कहेउ सुनु भ्राता ❀ चलहु विलोकनत्रिभुवनत्राता
सानुज राम सुखद पदकंजा ❀ जिनमकरन्द शिला अघगंजा
जेहिलगि तप कीन्हेउ बहुकाला ❀ सो तुमपर अनुकूल कृपाला

दो० धूरजटी हृद मानसर, बसत हंस इव जोइ।

१ हनुमान् २ समुद्र ३ आज्ञा ४ सूर्य्य ५ दो ६ श्रीराम ७ नेत्र ८ कमल ९ शिव॥

सादर तुमकहँ लेन लगि, पठवा मोहिं प्रभु सोइ ॥
सुनि शुभ वचन सुकंठकुमारा ❀ हरिपहँ हरिसँग तुरत सिधारा
आये नाथ निकट मृगशाखा ❀ देखे पद जे हर हिय राखा
रहेउ चरण गहि प्रीतिसमेता ❀ दधिबल निरखेउ कृपानिकेता
सानुज हरषि मिले सुखपुंजा ❀ तासुपाणि गहि निजकरकंजा
बैठे ताहि निकट बैठावा ❀ तेहिअवसर सुकंठ तहँ आवा
निरखि तनय कपिपति हर्षाना ❀ मिलत प्रेम नहिं जाय बखाना
गइ मणि पन्नग[1] जनु पुनि पाई ❀ देही देह मीन[2] जल जाई
सुख सुग्रीव लहेउ प्रभु भेंटे ❀ अवगुण तीन ताहि क्षण मेटे
सो० दधिबल बालिकुमार, मिले परस्पर हरषि हिय ।
भयउ आइ भिनुसार, न्हाइ सबन प्रभुपद गहे ॥
जहँ तहँ समर करन वनचारी ❀ चले कहत जय लषण खरारी
उहां नरान्तक प्रात प्रबोधा ❀ रथ चढ़ि चलेउ भयंकर योधा
निशिचर हठी सुभट सँग ताके ❀ आयुध अखिल भयानक बाके
महि संग्राम निशाचर ठाढ़े ❀ असित[3] मेघसम अतिरिस बाढ़े
करि माया तेहिं गात छिपावा ❀ भयउ प्रकट तबप्रभुढिगआवा
दधिबललखा सखा चलि आयउ ❀ भुजा पसारि हरषि उठि धायउ
नारान्तकहु दीख गुरुभाई ❀ मुदित मिले उर उभय[4] अघाई
भेंटि सप्रेम बूझि कुशलाता ❀ निजनिजदशाकीन्हविख्याता
दो० हरिपतिपूत प्रवीणअति, सुनि तेहि मुख विख्यात ।
लगे बुझावन मित्र कहँ, सुनहु वीर्यपति बात ॥
वंशस्वभाव सत्य कवि कहहीं ❀ फलपियूष विषवेलि न लहहीं
समुझहु तात विचारि निदाना ❀ किये अनीति न जग कल्याना
पितुचरित्र समुझहु मनमाहीं ❀ रामविरोध कतहुँ जय नाहीं
तुम प्रवीण भा मतिभ्रम कैसे ❀ कूप धसत विके[5] बाट अनैसे

१-२ साम ३ सर्प ४ मछली ५ काला ६ दोनों ७ गरुड़ ८ अमृत ९ भेंड़ ॥

तुमहुँ कीन्ह दिन चारि लड़ाई ❀ जानेउ भालु कीश बल भाई
तजि कुमंत्र सम्भव अज्ञाना ❀ कहहु पाहि रघुवर भगवाना
सफल करहु भव[1] प्रभुपदपरशी ❀ करिहैं अभय तोहिं समदरशी
मानहु सीख मोरि सुखकारी ❀ प्रणतपाल रघुवीर खरारी

दो० शारंगीशर तरणिसम, दशमुखवपु खग[2] लेख।
जरतराखु यहिसमय तव, करि विज्ञान विशेख ॥

सुनत वचन गुरुभ्राता केरा ❀ नारान्तक भा क्रोध घनेरा
कहनलाग खल ताहि कुभांती ❀ सहज सभीत कीश दिन राती
बालिहिं हतेउ जौन तपधारी ❀ भा अंगद तिन आज्ञाकारी
दधिबल यह वानर कुलरीती ❀ हमरे करहिं न अरिसन प्रीती
यह कहि प्रभुसम्मुख सो धावा ❀ दधिबल लूमैं[3] लपेटि टिकावा
नारान्तक कह रे शठ वानर ❀ तव मन नहीं मोर डर कादर
छांड़हुँ मूढ़ समुझि गुरुभाई ❀ कहि अस पेलि चला कठिनाई
तब सुकंठसुत क्रोधित भयऊ ❀ सर्पदि[4] जाय आगे गहिलयऊ

दो० नारान्तक दधिबल भिरे, निरखिभालु[5]अरुकीश।
लगेकरनसँगनिशिचरन, कहिजय श्रीजगदीश॥

छं० कपि शूर सँहारे शिलनमारि।
बहु मर्दि करे सिकंता[6] पहारि॥
भट बिह्वाबल वासी जितेक।
कपि मारि गिराये बच न एक॥
रह एकाकी मनुजाद[7] वीर।
किय द्वन्द्वयुद्ध उरगाद धीर॥
दोउ लरत लहैं छवि एक भांति।
गिरिकज्जल कञ्चन उभयगाति॥

१ संसार २ पक्षी ३ पूंछ ४ जल्दी ५ रीछ ६ बालू ७ राक्षस॥

युगघटिका ऊपर एक याम।
दोउ भिरे समर बलयोगधाम॥
पुनि भा अलक्ष सो करत युद्ध।
बलवन्त उभय श्रमगत सक्रुद्ध॥
कह षटप्रकार श्रुति युद्धरीति।
सुख मानेउ सुर देखत सुप्रीति॥
लखि पुत्र इक्कार्की पुलकिगात।
कह बालि अनुज अति हर्ष बात॥

दो० जाम्बवन्तसन वचन मृदु, कहेउ सुकण्ठ पुकारि।
कहहुतात दधिबल कबहिं, दनुजहि डारिहिमारि॥

समर करत लागी अति बारा [1] ❀ यह सुनि बोलेउ ऋक्षभुवारा
क्षणक हृदय धरु धीर कपीशा ❀ दधिबल गुरुसन लही अशीशा
सो अवसर अब आनि तुलाना [2] ❀ एकपलकमहँ मरिहि अयाना [3]
सुनि हरीश मनमहँ अति हर्षे ❀ तबहीं विबुध सुमनें [4] बहु वर्षे
दधिबल धन्य भुजाबल तोरा ❀ रण कौतूहल कीन्ह न थोरा
हरिअस्तुतिसुनिहरिअरि [5] कोपा ❀ कपिहिसहितखल भयोअलोपा
योजन अयुत अष्ट नभ जाई ❀ दधिबल सुमिरि हृदय रघुराई
गहि मनुजाद भूमि पर डारा ❀ करि चिकार तेहिं मरती बारा [6]

छं० मरतीसमयअतिशब्दकरिदशमुखतनयहरिहरकही।
तजिअधमतनुधरिसुभगवपुद्विजनाथमुनिसोगतिलही।
जेहिहेतु सुर मुनि सिद्ध नानाभांति जप तप मख किये।
श्रीराम करुणासिन्धु सो फल सहजहीं दनुजै दिये॥

दो० देखि तासुगति विबुधगण, अभय भये खगराइँ [7]।
प्रमुदित वर्षे पुहुपंझरि [8], रामचरण चितलाइ॥

१ देर २ पहुँचा है ३ मूर्ख ४ फूल ५ नारान्तक ६ समय ७ गरुड़ ८ फूलोंकी वर्षा॥

मरा नरान्तक दधिबल जानी ❋ तोरि तासुशिर गहि निजपानी
रुण्ड तासु गहि लङ्क सँचारी ❋ आपु चले जहँ नाथ खरारी
निशा प्रवेश भूत बैताला ❋ चढ़ि चढ़ि वाहन वेष कराला
जाइ समरमहि सुखद समेता ❋ उदर अघाइ गये सुनिकेता
आयउ दधिबल प्रभुके पासा ❋ देखि हरषि उठि रमानिवासा
सानुज राम मिले अति प्रीती ❋ परम प्रसाद नाथ नित रीती
बैठे रघुकुलमणि दोउ भाई ❋ सखासुतहिं निजढिग बैठाई
हनुमदादि मर्कट प्रभु पाहीं ❋ नाइ माथ प्रमुदित मनमाहीं

दो० रामरजायसु[२] पाय पुनि, होइ विगतश्रम कीश[३]।
तबदधिबलप्रभुचरणगहि, आगे धारि अँरिशीश॥

समुझि कौतुकी रिपुसुतशीशा ❋ सुनहु सुकंठ कह्यो जगदीशा
नारान्तक कर शीश धरावहु ❋ यतनसमेत न सेंत चलावहु
नाथ रजाय पाइ कपिराई ❋ राखेउ सो शिर यतन कराई
पुनि दधिबल हरि कीन्ह बड़ाई ❋ श्रीपति श्रीमुख बहुविधि गाई
जासु बड़ाई किय बड़ ईशा ❋ सबहिं सराहत सो जगदीशा
दधिबल प्रभु अनुकूल विलोकी ❋ सफलजन्मलखिभयउविशोकी
प्रेमवारि लोचन कर जोरी ❋ बोलेउ गिरा भक्तिरस बोरी
जगदात्मा तुम्हार यह बाना ❋ सन्तत करहु दीन मनमाना

दो० वनचर पामर सहज जड़, बुद्धि विषम अज्ञान।
विरद स्वभाव कृपालु प्रभु, सेवक सुयश बखान॥

तवयशविमलविदित अवधेशा ❋ कहत न पार पाव श्रुति शेशा
सो मैं प्रभु कहि सकहुँ न कैसे ❋ पर्णवणिक[६] गजमणिगुण जैसे
अस कहि हरि हरिपद लपटाने ❋ देखि प्रेम कपि विबुध सिहाने[७]
अनअभिमान ताहि प्रभु जाना ❋ दीनदयालु बहुरि सनमाना
मांगु बच्छ जो वर मनभावा ❋ सुनिदधिबलकरिविनयसुनावा

१ दधिबलको २ आज्ञा ३ वानर ४ वैरी ५ प्रसन्न ६ कुंजरा ७ ललचाने॥

नाथ तुम्हार रूप गुण नामा * करहि निरन्तर मम उर धामा
हों मोहिं प्रिय पदपंकंज[1] तैसे * कामिहिं वाम सूमें[2] धन जैसे
एवमस्तु तुम कहँ वर येहू * मम इच्छा कछु औरौ लेहू
सो० विह्लाबलपुर राज, करहु तात तुम मुदितमन ।
छांड़ि और सबकाज, शिवाशम्भुपद भक्ति दृढ़[3] ॥
यहै काज शुभ संतत चहई * ज्वइ स्वइ प्राणी मम मन रहई[4]
उमा राम कर यहै स्वभाऊ * जनपर प्रेम न कबहुँ दुराऊ
मोहिं निजरूप रमापति जानै * ताते बारम्बार बखानै
जानेउ श्रीरघुवरस्वभाव जिन * सब तजि प्रेम भक्ति मांगी तिन
राम भक्ति वारीश जासु उर * महिमा तासु कहत श्रुँति[5] बुधवर
सँर[6] सरिता सब सुखद सुहाये * सहजहिं आवत बिनहिं बुलाये
ताहि शुद्ध शिष दै रघुनाथा * पुनिप्रभुकीन्हातिलकनिजहाथा
शारंगी[7] रुख सबहीं पावा * अंगदादि ताकहँ शिरनावा
दो० पाइ भक्तिवर राज्यवर, प्रभु चरणन शिर नाइ ।
दधिबल पठयउ तुरतहठ, सुनहु ऋषयशुभभाइ ॥
तन मन रामचरण अनुरागे * दधिबल राज्य करत भय त्यागे
सेन सहित श्रीराजिवँनयना * राजत देखि विबुधचितचयना
हनत दुन्दुभी विविध प्रकारा * पुहुँपमाल[8] झरि करत अपारा
करि अस्तुति वर विनय पुकारे * अदितिसूनु निजगेह सिधारे
उतहिं जहां बैठा दशभाला * बिनुशिर वपु सो परा विशाला
देखि विकल आपै उठि धावा * पहिंचानत तेहि अतिदुखपावा
हा नारांतक कहि खल परा * महा खभार लंकगढ़ भरा
मयतनयाआदिक निशिचरीं * शोकसमाज विषादहिं भरीं
दो० विन्दुमतीआदिक सकल, नारान्तक की नारि ।
व्याकुल महिलोटहिंपरी, निजतनुदशा विसारि ॥

१ कमल २ लोभी ३ मज़बूत ४ हमेशा ५ वेद ६ तालाब ७ श्रीराम ८ पुष्प ॥

करिविलापजिमिनिशिचरनारी ❀ सो न जात कहि सुनु नभचारी
शोकजलधि लंकालघुतरणी ❀ चढ़ीं सकलनिशिचरकी घरणी
बूड़त जानि न कतहुँ निबाहा ❀ कहत मँदोदरि तव सबपांहा
बिन्दुमती कर गहि बैठाई ❀ नागसुता की कथा सुनाई
सुनत सुनयनाकी शुचिकरणी ❀ धारि धीर नारांतक घरणी
सबन बुझाय सासुपग लागी ❀ तजि धन धाम स्वामि अनुरागी
मातु करहु सो यतन उतांवल ❀ मिलहुँजाइ जेहिपद निजरावल
सुनु सुतबधू न आन उपाऊ ❀ जाउ जहां राजत रघुराऊ
दो॰ जेहिविधि गई सुलोचना, तेहिगतितुमभयत्यागि।
निरखहुरघुपतिपदकमल, लावहु पतिशिर मांगि॥
सासुवचन सुनि जानि प्रभाता ❀ उठिनिशिचरतियपुलकितगाता
जातरूप मय यान मँगाई ❀ निजकर गहि पतिदेह चढ़ाई
चली अकेलि यान चढ़ि जबहीं ❀ तासु सवति इक आई तबहीं
नाम चित्ररेखा अस तासू ❀ गुणगणसुभग बसैं तनु जासू
सो करि विनय चढ़ी तेहि संगा ❀ कीन्ह पयान रँगी शत रंगा
रथ अकेल आवत कपि देखा ❀ कार्यर डरपे हृदय विशेखा
आवत मानि सबल रिपु कोऊ ❀ नल अरु नील सुभट वर दोऊ
आये धाय सपदि तब आगे ❀ युगल नारि तन निरखनलागे
दो॰ समुझिबूझि वृत्तान्तदोउ, फिरि आये प्रभुपास।
वन्दि कंजपद उभय कह, सुनिये रमानिवास॥
नाथ नरान्तक की दोउ नारी ❀ आवत शरण प्रणतभयहारी
सुनि रघुवीर हृदय मुसुकाने ❀ उतहि टिकावहु सखा सयाने
सुनि प्रभुवचन बहुरि सो धाये ❀ कटकविगत रथ दूरि टिकाये
बिन्दुमती चितरेखा दूनो ❀ विनय हमारि कीश अस सूनो
कहहुजाइ तुम प्रभुहिं बुझाई ❀ केहिकारण हम दरश न पाई

१ गरुड़ २ नौका ३ स्त्री ४ जल्दी ५ सुवर्ण ६ डरपोक ७ हाल ८ कमल ९ फ़ौज॥

हम अबला कपि विनवैं तोहीं ❀ बूझि नाथसन कहबै मोहीं
नारिविनय सुनि कपि दोउ भले ❀ नीति विचारि रामपहँ चले
विनती नारि जाय नल वरणी ❀ सुनि बिहँसे प्रभु तिनकै करणी

दो० परम मृदुल रघुनाथचित, कहत सन्त बुध वेद ।
तिनकहँ देत न दरश प्रभु, सुनु खगेश सो भेद ॥

प्रेम परीक्षा हित रघुनायक ❀ कौतुक करत समर सुखदायक
नाथ सखा तव बहुरि बुझाई ❀ पुनि नल नारिनपास पठाई
कह नल सुनहु नरान्तक नारी ❀ दर्शन तुमहिं न देत खरारी
तुम गृह जाहु वचन मम मानी ❀ बोलीं सो तिय वचन सयानी
हम अबला दर्शनहित आईं ❀ नयन सफलबिनु किमि गृहजाईं
यहिविधि करतविनय दोउनारी ❀ कीशनै कटकै कीन्ह पैठारी
आवत निकट जानि रिपुरवनी ❀ यद्यपि पतिव्रत हैं सुखभवनी
तदपि नाथ तिन्हैं दरश न देहीं ❀ जाइ निकट विनती की तेहीं

दो० प्रभु सीतापति जगतपति, सुर नरपति रघुनाथ ।
देउ दरश करुणायतन, दीनबन्धु श्रुतिनाथ ॥

बोले राम न सो तिय बोलीं ❀ विमलज्ञान पतिव्रत अनुडोलीं
नाथ सत्य यह नीति बखानै ❀ पुरुष न परतिय सपनेहुँ जानै
प्राकृत पुरुषनकी यह रीती ❀ जिनके हृदय कपटपर प्रीती
समदरशी कछु दोष न स्वामी ❀ सो विचारु प्रभु अन्तरयामी
आरतबन्धु विलम्ब न कीजै ❀ करुणाकर वर दर्शन दीजै
नहिं बोले प्रभु पुनि सो कहई ❀ तव यश अस श्रुति गावतअहई
गौतमनारि नाथ तुम तारी ❀ अधम जाति भिल्लनी निस्तारी
सुनि मम हृदय परी परतीती ❀ अब प्रभु कस देखिय विपरीती

दो० तारितारि अधमन अमित, बारबार श्रमजान ।
ताते करत अनाकनी, मोरि ओर भगवान ॥

१ गरुड़ २ श्रीराम ३ वानरन ४ फ़ौज ५ शत्रुकी स्त्री ६ वेद ७ बहुतेरे ८ आगा पीछा ॥

प्रभु मुसुकाहिं न उत्तर देहीं ❀ तिनकी प्रेम परीक्षा लेहीं
विकल भई नारान्तकबाला¹ ❀ वारबार करि विनय विशाला
धर्म्म धुरन्धर प्रभु अवतारा ❀ केवल पतिव्रत धर्म्म हमारा
जो हम सत्य सत्य तुम स्वामी ❀ द्रवहु वेगि उर अन्तरयामी
वृथा करत कत प्रभु श्रुति भाषा ❀ पूजत नाथ न मम अभिलाषा
लीन भयउ पतिप्राण नाथमहँ ❀ अर्द्धभाग हम कहहु जाइँ कहँ
वृन्दाचरित नाथ सुधि करहू ❀ विनय हमारि वेगि उर धरहू
विनय प्रीति सत धर्म जनाई ❀ परीं प्रेमवश महि अकुलाई

दो० पाहि पाहि रघुवंशमणि, हतहु न विरदै² प्रतीति ।
प्रीतम प्रीति न करत डर, तुमकहँ नाथ अनीति ॥

सती निराश विनय सुनि बानी ❀ पुलके दीनदयालु भवानी
दुहुन लीन्ह निज कटक³ बुलाई ❀ परीं युगल प्रभुपदतर आई
तिन्हें उठाय राम बैठावा ❀ जगदीश्वर मृदु⁵ वचन सुनावा
बिन्दुमती तैं परम सयानी ❀ पतिपदरति दृढ़ हृदय समानी
बहुत करहुँ का तव गुण गाना ❀ मांगु वेगि वर जो मनमाना
सुनत वचन लोचन⁶ जल बाढ़ीं ❀ जोरि युगलकर दोऊ ठाढ़ीं
प्रभु तुम दानि देवतरुवरसे ❀ पद जलजात देवसरि सरिसे
परम पवित्र भई हम दोऊ ❀ हमसम धन्य नारि नहिं कोऊ

छं० को धन्य हमसम नारि जग महँ सुनहु श्रीरघुनायकं।
दै दरश कीन्हीं पतितं⁷ पावनं⁸ नाथ सुरअरि घायकं ॥
हे कृपासागर यश उजागर देहु वर सुरभावरं ।
जेहि मिलैं पति कहँ जाइ बिनुश्रम बढ़ै तव यश श्रीधरं ॥

सो० यह कहि बिन्दुकुमारि, सहितसौति प्रभुपद परीं ।
तिन्हैं उठाइ खरारि, जगत्राता इमिकहतपुनि॥

धरहु धीर तुम जनि अब डरहू ❀ निजपति लेहु भवन सुख करहू

१ स्त्री २ प्रसन्नहांवो ३ विनयकर्त्ता ४ फ़ौज ५ कोमल ६ नेत्र ७ नीच ८ पवित्र ॥

कहेउ देव हमकहँ यह नीका ❀ हमहुँ कहत अब भावत जीका
गिरिजासहित गिरीश[1] विरागी ❀ नाथ तुम्हार दरश अनुरागी
नारदादि सनकादिक जेते ❀ जप तप करहिं विविधविधितेते
तेउ न कबहुँ हमारी नाईं ❀ देखहिं पद जलजात अघाईं
हरिदर्शन लवलेश प्रमाना ❀ जगके सब सुख नाहिं समाना
अमिय[2] अघाइ गरल को खाई ❀ विनय हमारि यहै सुरसाई
देहु कन्तशिर सपदि मँगाई ❀ दया शील सागर रघुराई

दो० नारान्तक कर शीश तब, दीन्ह मँगाइ रमेश।
पाइ स्वामिशिर मुदित[3] ह्वै, बोलीं दोउ उरगेश॥

नाथ विनय हम औरौ करहीं ❀ दारु[4]विना हम केहिविधि जरहीं
सुखसागर सुनि वचन प्रमाना ❀ हनुमत अंगदादि भट नाना
कह प्रभु सखा लङ्कमहँ धावहु ❀ चन्दन अगुरु भार बहु लावहु
पाइ राम अनुशासन धाये ❀ लंकागढ़ गृह गृह सचुपाये
कपिन शोधि चन्दन बहु भारा ❀ लाये जहँ श्रीनाथ उदारा
कह रघुवीर सुनहु लंकेशा[5] ❀ तात यहै बड़ हित उपदेशा
बिन्दुमती जहँ चाहत ठांऊ[6] ❀ दाहभार सँग तुम तहँ जाऊ
दशकन्धर कर वैर विहाई ❀ चिता चारु शुचि देहु बनाई

दो० रघुवर आज्ञा धारि शिर, उठे दशानन भाइ।
अयुत भार चन्दन अगुरु, तेहि सँग चले लिवाइ॥

जहां जरी मघवाजित नारी ❀ तेही गहर[7] शुचि चिता सँवारी
उहवां अपर सौति पगुधारी ❀ बिन्दुमती मन भाव पियारी
मूर्च्छित परीं प्रथम सुधि नाहीं ❀ चलीं सुनत गति दुख मनमाहीं
चलीं चतुर्दश निशिचरि कैसे ❀ निरखि दवांस मृगीगण जैसे
हा हा बिन्दुमती पति प्यारी ❀ कहां गई तुम हमहिं बिसारी
पहुँचीं सह विलाप तहँ सोऊ ❀ हरषीं हृदय विलोकत दोऊ

१ महादेव २ अमृत ३ खुशी ४ काठ ५ विभीषण ६ स्थान ७ वनाग्नि॥

षोडश निशिचरि भई सभागी ❀ मन वच क्रम पतिपद अनुरागी
सकल नहाय मृतक नहवाई ❀ सुमिरत हृदय राम गतिदाई

दो॰ उत दशकन्धर जगेउ शठ, सुनेउ श्रवण सबहेतु।
संग मँदोदरि आदि तिय, गमना लै खगकेतु॥

बाजत ढोल कपिन सुनि काना ❀ अपने मन तिन अस अनुमाना
आव युद्धहित उत कोउ वीरा ❀ हमकहँ ठाढ़ करत यहि तीरा
कीश अयुत तब प्रभुपहँ आये ❀ पूरण प्रेम चरण शिरनाये
नाथ उतहिं दशकन्धर जाता ❀ कीश एक कह सुनु जनत्राता
प्रभु कह कुमुद तुरत तुम धावहु ❀ वेगि विभीषणकहँ लै आवहु
रामरजायसु शिर धरि धाये ❀ सपदि विभीषण पहँ सो आये
तात तुमहिं रघुराज बुलावा ❀ सुनत लङ्कपति आतुर आवा
हेतु पतोहुन कहि समुझावा ❀ कुमुदसहित रघुपतिपहँ आवा

दो॰ मोहनिशा तहँ तरुणरवि, तिनचरणन शिरनाइ।
भाग्यवन्त रावण अनुज, बैठेउ प्रभुरुख पाइ॥

दशमुख तियनसहितगा तहवां ❀ बिन्दुमती चितरेखा जहवां
देखत अति बिलखा विबुधारी ❀ करुणा करत निशाचरिझारी
सासु ससुर कहँ देखि दुखारी ❀ ज्ञान नवीन नरांतक नारी
कहि शुचिगाथ सबन समुझाई ❀ स्वामिसमेत चितापर आई
यथायोग्य बैठीं सब तैसे ❀ पतिगृह रहतरहीं नित जैसे
अग्नि दीन्ह ज्वाला अति धाई ❀ पहुँचीं सुरपुर सब तिय जाई
देखि दशा तिनकी सुररमनी ❀ तिनहिंसराहिभवननिजगमनी
रावणसहित युवति निजगेहा ❀ गयउ भरो सासति संदेहा

छं॰ सन्देह सासति भरो रावण सहित दारन गृह गयो।
इमिमयसुतादिकनिशिचरिनलखिविकलबलमूर्छितभयो॥
दशमाथगतिदेखत विपुल बिलखैं निशाचर निशिचरी।

१ कारण २ गरुड़ ३ रक्षक ४ शीघ्र ५ आज्ञा ६ रावण ७ स्वर्ग ८ देवी ९ डर॥

सन्ताप शोक विलाप भय भ्रम कटक लंकामहँ परी ॥
दो० रामविरोधिहिं जस उचित, तस दिन पहुँचा आइ ।
सो विचार करि लंकगढ़, उतरी विपति बजाइ ॥
इहां देव देवायसु जाना ❀ वर आसन शोभित भगवाना
यथायोग्य बैठे मृगशाखा ❀ सब कीन्हे प्रभुपद अभिलाखा
रिपु बड़ मरेउ हर्ष सबके मन ❀ पुनिपुनि हेरत सुभगश्यामतन
तिनकी रुचि लखि दीनदयाला ❀ शिवयश गावहु कह्यो कृपाला
भरद्वाज प्रभु आज्ञा पाई ❀ गावहिं कपि कलकंठ लजाई
डमरु भृङ्गि शृंङ्गी करतारी ❀ घ्राण पाणि मुखते वनचारी
गोंडरतन्तु वेणु मंजीरा ❀ शंख मृदंग नाद गम्भीरा
नृत्यत कीश भाव दिखरावत ❀ शिवासहित शिवकीरतिगावत
छं० शिवशिवाकीरतिविमलगावतभा लुवानरसुखभरे।
अहिनाथयुत रघुनाथछवि निरखत सकल चितपदधरे॥
प्रभुदेखि कौतुक अनुजसहित सखनबखानतश्रीमुखम्।
तुलसी पगे यहिध्यान जे जन पाइहैं नित यश सुखम् ॥
सो० गत रजनी युग याम, तब कीशन करुणाअयन ।
करि पूरण मनकाम, सबन कहेउ राजहु थलन ॥
बैठे निज निज थल रणधीरा ❀ अनुजसहित राजत रघुबीरा
सुपमासींवँ सेन युत राजैं ❀ जयजयध्वनि कपिभालुसमाजैं
उमा चरित यह रुचिर सुहावा ❀ नाथकृपा मैं तुमहिं सुनावा
अपर चरित गिरिराजकुमारी ❀ सुनहु कहत तव प्रीति निहारी
उहां मध्यनिशि रावण जागा ❀कोउकोउसचिवँसिखावनलागा
उग्र सिखावन कहि बुध वाके ❀ थके न कछु मन मानै ताके
रावण मन औरै कछु लसई ❀ मेटि को सकै जो विधि उर बसई

१ डाह २ आनन्द ३ सींग ४ मर्य्याद ५ पार्वती ६ अर्धरात्र ७ मन्त्री ॥

प्रभुविरोध करि चह कल्याना ❁ मोहविवश सो शठ अज्ञाना

इति क्षेपक ॥

निशासिरानि भयो भिनुसारा ❁ लगे भालु कपि चारिहुँ द्वारा
सुभट बुलाय दशानन बोला ❁ रणसम्मुख जाकर मन डोला
सो अबहीं बरु जाहु पराई ❁ रणसम्मुख भागे न भलाई
निजभुजबल मैं बैर बढ़ावा ❁ देहौं उतर जो रिपु चढ़िआवा
अस कहि मरुत[1]वेग रथ साजा ❁ बाजहिं सकल जुझाऊ बाजा
चले वीर सब अतुलित[2] बली ❁ जनु कज्जलकी आंधी चली
अशकुनअमित[3]होहिं तेहिकाला ❁ गनै न भुजबलगर्व विशाला

छं० अतिगर्वगिनतनशकुनअशकुनस्रवहिंआयुधहाथते।
भट गिरहिं रथते वाजि गज चिक्करत भाजत साथते ॥
गोमायु[4] गृध्र कराल खर[5] रव श्वान रोवहिं अतिघने।
जनु कालदूत उलूक बोलहिं वचन परम भयावने ॥

दो० ताहिकिसम्पतिशकुनशुभ, स्वप्नेहु मन विश्राम।
भूत द्रोहरत मोहवश, राम विमुखरतकाम॥

चली निशाचरअनी अपारा ❁ चतुरङ्गिणी चमू बहु धारा
विविध भांति वाहन रथ याना ❁ विपुल वरण पताक ध्वज नाना
चले मत्त गजयूथ घनेरे ❁ मनहुँ जलद[6] मारुत के प्रेरे
वरण वरण वर दैत्य निकाया ❁ समरशूर जानहिं बहु माया
अति विचित्र वाहिनी विराजी ❁ वीर वसन्त सेन जनु साजी
चलत कटक दिकसिन्धुर[7] डगहीं ❁ क्षुभित पयोधि कुधर डगमगहीं
उठी रेणु रवि गयउ छिपाई ❁ पवन थकित वसुधा अकुलाई
पणवनिशान घोर रव[8] बाजहिं ❁ महाप्रलय के जनु घन गाजहिं
भेरि नफीरि बाजु सहनाई ❁ मारू राग सुभट सुखदाई
केहरिनाद वीर सब करहीं ❁ निजनिजबल पौरुष उच्चरहीं

१ हवा २ बे प्रमाण ३ बेहद ४ सियार ५ गधा ६ मेघ ७ दिग्गज ८ शब्द ॥

कहै दशानन सुनहु सुभट्टा ❀ मर्दहु भालु कपिनके ठट्टा
हौं मारिहौं भूप दोउ भाई ❀ अस कहि सम्मुख फौज चलाई
यहसुधि सकल कपिन जबपाई ❀ धाये करि रघुवीर दुहाई
छं० धाये विशाल कराल मर्कट भालु कालसमान ते।
मानहुँ सपक्ष उड़ाहिं भूधरवृन्द नाना बान ते॥
नख दशन शैल महाद्रुमायुध सबल शङ्क न मानहीं।
जय राम रावण मत्तगज मृगराज सुयश बखानहीं॥
दो० दुहुँदिशिजयजयकारकरि, निजनिज जोरीजानि।
भिरे वीर इत रघुपतिहिं, उतरावणहिं बखानि॥
रावण रथी विरथ रघुवीरा ❀ देखि विभीषण भयउ अधीरा
अधिक प्रीति उर भा सन्देहा ❀ वन्दि चरण कह सहित सनेहा
नाथ न रथ नाहीं पदत्राना ❀ केहिविधि जीतब रिपुबलवाना
सुनहु सखा कह कृपानिधाना ❀ जेहि जयहोइ सो स्यन्दनआना
शौरज धर्म्म जाहि रथचाका ❀ सत्य शील दृढ़ ध्वजा पताका
बल विवेक दम परहित घोरे ❀ क्षमा दया समता रजु जोरे
ईशभजन सारथी सुजाना ❀ विरति चर्म्म सन्तोष कृपाना
दान परशु बुधि शक्ति प्रचण्डा ❀ वर विज्ञान कठिन कोदण्डा
संयम नियम शिलीमुख नाना ❀ अमल अचल मन त्रोणसमाना
कवच अभेद्य विप्रपद पूजा ❀ यहिसम विजय उपाय न दूजा
सखा धर्म्ममय अस रथ जाके ❀ जीतनकहँ न कतहुँ रिपु ताके
दो० महाअजय संसार रिपु, जीति सकै सो वीर।
जाके अस रथ होइ दृढ़, सुनहु सखा मतिधीर॥
सुनत विभीषण प्रभुवचन, हरषि गहे पदकञ्ज।
यहिविधिमोहिंउपदेशाकिय, राम कृपा सुखपुञ्ज॥

१ वानर २ पर्वतसमूह ३ दांत ४ हथियार ५ रथ ६ ज्ञान ७ धनुष ८ शत्रु॥

उत प्रचार दशकन्धर, इत अङ्गद हनुमान।
लड़तनिशाचरभालुकपि,करिनिजनिजप्रभुआन
सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना ❀ देखहिं रण नभ चढ़े विमाना
मैं हूं उमा रहेउँ तेहि सङ्गा ❀ देखत रामचरित रण रङ्गा
सुभट समररस दुहुँदिशि माते ❀ कपि जयशील रामबल ताते
एक एक सन भिरहिं प्रचारहिं ❀ एक एक मर्दहिं महि पारहिं
मारहिं काटहिं धरणि पछारहिं ❀ शीशतोरि शीशनसन मारहिं
उदर बिदारहिं भुजा उपारहिं ❀ गहिपदअवनिपटकिभटडारहिं
निशिचरभट महि गाड़हिं भालू ❀ ऊपर डारि देहिं बहु बालू
वीर बलीमुख युद्ध विरुद्धा ❀ देखिय विपुल काल जनु क्रुद्धा
छं० क्रुद्धेकृतान्तसमान कपि तनु स्रवंत शोणितराजहीं।
मर्दहिंनिशाचरकटकभट बलवन्तजिमिघन गाजहीं॥
मारहिं चपेटन काटि दांतन डारि लातन मींजहीं।
चिक्करहिंमर्कटभालुछल बलकरहिं जेहि खलछीजहीं॥
धरि गाल फारहिं उर बिदारहिं गल अँतावरि मेलहीं।
प्रह्लादपति जनु विविधतनु धरि समरअङ्गन खेलहीं॥
धरु मारु काटि पछारु घोरगिरा गगन महि भरिरही।
जयराम जो तृणते कुलिशकरु कुलिशतेकरुतृणसही॥
दो० निजदलबिचलविलोकितब,बीस भुजा दशचाप।
चला दशानन कोप करि,फिरहुफिरहुकरिदाप॥
धावा परम क्रोध दशकन्धर ❀ सम्मुख चले हूह करि बन्दर
गहि कर पादप उपल पहारा ❀ डारहिं तेहिपर एकहिबारा
लागहिं शैल वज्र तनु तासू ❀ खण्ड खण्ड है फूटहिं आसू
चला न अचल रहा रथ रोपी ❀ रणदुर्मद रावण अतिकोपी

१ सौगन्द २ संग्राम ३ पृथ्वी ४ वानर ५ बहना ६ आंगन ७ वज्र॥

इत उत झपटि दपटि कपि योधा ❀ मर्दै लाग भयो अतिक्रोधा
चले पराय भालु कपि नाना ❀ त्राहि त्राहि अङ्गद हनुमाना
पाहि पाहि रघुवीर गुसाई ❀ यह खल खाय कालकी नाई
तेहि देखे कपि सकल पराने ❀ दशहु चाप शायक संधाने
छं० संधानिधनुशरनिकरछांड़ेसिउरगजिमिउरलागहीं
रहपूरिशरधरणीगगनं दिशिविदिशिकहँ कपिभागहीं॥
भा अतिकोलाहल विकलदल कपिभालु बोलहिंआतुरे।
रघुवीर करुणासिन्धु आरतबन्धु जनरक्षा करे॥
दो० बिचलत देखी निजकटक, कटि निषङ्ग धनु हाथ।
लक्ष्मण चले सकोप तब, नाइ रामपद माथ॥
रे खल का मारसि कपि भालू ❀ मोहिं विलोकु तोर मैं कालू
खोजत रहेउँ तोहिं सुतघाती ❀ आजु निपाति जुड़ावौं छाती
असकहि छांड़ेसि बाणप्रचण्डा ❀ लक्ष्मण किये तुरत शतखण्डा
कोटिन आयुध रावण डारे ❀ तिलप्रमाण प्रभु काटि निवारे
पुनि निजबाणन कीन्ह प्रहारा ❀ स्यन्दन भञ्जि सारथी मारा
शत शत शर मारे दशभाला ❀ गिरिशृङ्गनजनुप्रविशहिंव्याला
पुनि शतशर मारे उरमाहीं ❀ परेउअवनि तनुसुधि कछुनाहीं
उठा प्रबल पुनि मूर्च्छा जागी ❀ छांड़ेसि ब्रह्मदत्त जो सांगी
छं० जो ब्रह्मदत्त प्रचण्डशक्ति अनन्तउर लागी सही।
पर्योविकलवीरउठावदशमुख अतुलबलमहिमारही॥
ब्रह्माण्ड भुवन विराज जाके एकशिर जिमि रजकनी।
तेहि चह उठावन मूढ़ रावन जान नहिं त्रिभुवनधनी॥
दो० देखत धावा पवनसुत, बोलत वचन कठोर।
आवत तेहि उरमहँ हनेसि, मुष्टिप्रहार प्रघोर॥

१ भागि २ ऋक्ष ३ बन्दर ४ समूह ५ सर्प ६ आकाश ७ कमर ८ मारि॥

जानु टेकि कपि भूमि न परेऊ ❀ उठा सँभारि बहुरि रिस भरेऊ
मुष्टिक एक ताहि कपि मारा ❀ परेउ शैल[1] जिमि वज्रप्रहारा
मूर्च्छा गई बहुरि सो जागा ❀ कपिबल विपुल[2] सराहनलागा
धिकधिक ममपौरुष धिक मोही ❀ जो तैं जियत उठा सुरद्रोही
असकहिकपिलक्ष्मणकहँ लावा ❀ देखि दशानन विस्मय पावा
कह रघुवीर समुझि जियभ्राता ❀ तुम कृतान्तभक्षक सुरत्राता[3]
सुनत वचन उठि बैठ कृपाला ❀ गगन[4] गई सो शक्ति कराला
पुनि कोदण्ड[5] बाण गहि धाये ❀ रिपु[6]सम्मुख अतिआतुर आये
छं॰ आतुरबहोरिविभञ्जि[7]स्यन्दन मारितेहिव्याकुलकियो।
गिरयोधरणिदशकन्धरविकलतनुबाणशतबेध्योहियो॥
सारथी रथ घालि दूसर ताहि लङ्का लैगयो।
रघुवीर बन्धुप्रतापपुञ्ज बहोरि प्रभुचरणन नयो॥
दो॰ उहां दशानन जायकरि, करन लाग कछुयज्ञ।
जयचाहत रघुपतिविमुख, शठहठवश अतिअज्ञ॥
इहां विभीषण सब सुधि पाई ❀ सपदि जाय रघुपतिहिं सुनाई
नाथ करै रावण इक यागा ❀ सिद्ध भये नहिं मरहि अभागा
पठवहु नाथ वेगि भट बन्दर ❀ करहिं विध्वंस आव दशकन्धर
प्रात होत प्रभु सुभट पठाये ❀ हनुमदादि अंगद सब धाये
कौतुक कूदि चढ़े कपि लंका ❀ पैठे रावण भवन अशंका
जबहीं यज्ञ करत तेहिं देखा ❀ सकल कपिन भा क्रोध विशेखा
रणते भागि निलज गृह आवा ❀ इहां आइ बक[8]ध्यान लगावा
अस कहि अंगद मारेउ लाता ❀ चितव न शठ स्वारथ मनराता
छं॰ नहिंचितवजबकपिकोपितबगहिदशनलातनमारहीं।
धरि केश नारि निकारि बाहर जब सो दीन पुकारहीं॥
तब उठा कोपि कृतान्तसम गहि चरण वानर डारई।

१ पर्वत २ बहुत ३ रक्षक ४ आकाश ५ धनुष ६ शत्रु ७ तोड़कर ८ बगुला॥

यहिबीच कपिनविध्वंसकृत मखदेखि मनमहँ हारई ॥

दो० मखविध्वंसिकपिकुशलसब, आये रघुपति पास ।
चला दशानन क्रोधकरि, तजिजीवनकीआस॥

चलत होहिं तेहि अशुभ भयङ्कर ❀ बैठहिं गृध्र उड़ाहिं शिरनपर
भयउ कालवश काहु न माना ❀ कहेसि बजावहु युद्धनिशाना
चली तमीचर अनी अपारा ❀ बहु गज रथ पदचर असवारा
प्रभुसम्मुख खल धावहिं कैसे ❀ शलभसमूह अनलकहँ जैसे
इहां देव सब विनती कीन्हीं ❀ दारुणविपतिहमहिंयहिंदीन्हीं
अब जनि नाथ खेलावहु एही ❀ अतिशय दुखित होति वैदेही
देववचन सुनि प्रभु मुसुकाना ❀ उठि रघुवीर सुधारेउ बाना
जटाजूट बांधी दृढ़ माथे ❀ सोहत सुमन बीच बिच गाथे
अरुणनयन वारिद तनुश्यामा ❀ अखिललोकलोचनअभिरामा
कटितट परिकर कसे निषंगा ❀ कर कोदण्ड कठिन शारंगा

छं०शारंगकरसुन्दर निषंग शिलीमुखाकर कटिकस्यो।
भुजदण्ड पीन मनोहरायत उर धरासुरपद लस्यो ॥
कह दासतुलसी जबहिं प्रभुशर चाप कर फेरनलगे ।
ब्रह्माण्डदिग्गज कमठअहि महिसिन्धु भूधर डगमगे॥

दो० हर्षे देव विलोकि छवि, वर्षहिं सुमन अपार ।
जयजयप्रभुगुणज्ञानबल, धाम हरण महिभार॥

ताही बीच निशाचर अनी ❀ कसमसाति आई अतिघनी
देखि चले सम्मुख कपि भट्टा ❀ प्रलयकाल के जिमि घनघट्टा
शक्ति शूल तलवार चमकहिं ❀ जनु दशादिशिदामिनीदमकहिं
गजरथ तुरँग चिकार कठोरा ❀ गर्जत मनहुँ बलाहक घोरा
कपि लंगूर विपुल नभ छाये ❀ मनहुँ इन्द्रधनु उगेउ सुहाये

१ फ़ौज २ पतिंगा ३ अग्नि ४ कठिन ५ फूल ६ लाल ७ बाणसमूह ८ मोटे ९ बिजली १० मेघ ॥

उठी रेणु मानहुँ जलधारा ❀ बाणबुन्द भइ वृष्टि अपारा
दुहुँ दिशि पर्वत करहिं प्रहारा ❀ वज्रपात जनु बारहिंबारा
रघुपति कोपि बाण झरिलाई ❀ घायल भे निशिचर समुदाई
लागत बाण वीर चिक्करहीं ❀ घुर्मिघुर्मि घायल महि परहीं
स्रवहिं शैल जनु निर्झर[1] वारी ❀ शोणितसरि कादर भयकारी

छं०कादर भयंकर रुधिरसरिता बाढ़ि परम अपावनी।
दोउ कूल[2] दल रथ रेत चक्र अवर्त्त बहति भयावनी॥
जलजन्तु गज पदचर तुरँग खर विविध वाहन को गने।
शर[3] शक्ति तोमर सर्प चाप तरंग चर्म कमठ घने॥

दो०वीर परहिं जनु तीर तरु, मज्जा बह जनु फेन।
कादर देखत डरहिं जिय, सुभटनके मन चैन॥

मज्जहिं भूत पिशाच बेताला ❀ केलि करहिं योगिनी कराला
काक कन्धधरि भुजा उड़ाहीं ❀ एकते एक छीनि धरि खाहीं
एक कहहिं ऐसिउ बहुताई ❀ शठ तुम्हार दारिद्र न जाई
कहरत भट घायल तट गिरे ❀ जहँ तहँ मनहुँ अर्द्धजल परे
खैंचत आंत गृध्र[4] तट भये ❀ जनु बंसी खेलत चित दये
बहु भट बहे चढ़े खग[5] जाहीं ❀ जिमि नावरि खेलहिं सरिमाहीं
योगिनि भरिभरि खप्परसाचहिं ❀ भूत पिशाच बधू नभ नाचहिं
भट कपाल[5] करताल बजावहिं ❀ चामुण्डा नानाविधि गावहिं
जम्बुक[6]निकर कटक कटकटहीं ❀ खाहिं अघाहिं हुआहिं दपटहीं
कोटिन रुण्ड मुण्डबिनुडोलहिं ❀ शीशपरे महि जयजय बोलहिं

छं० बोलहिंजोजयजयरुंडमुंडप्रचंड शिरबिनु धावहीं।
संग्राम भूमि अगह्य जूझहिं सुभट सुरपुर[7] पावहीं॥
निशिचर वरूथ[8] विमर्दि गर्जहिं भालु कपि दर्पित भये।

१ झरना २ किनारा ३ बाण ४ पक्षी ५ मुण्ड ६ सियार ७ स्वर्ग ८ समूह॥

संग्रामआंगन सुभट सोहहिं रामशरनिकरन हये॥
दो० हृदय विचारेसि दशवदन, भा निशिचर संहार।
मैं अकेल कपि भालु बहु, माया करौं अपार॥
देवन प्रभुहिं पयादेहिं देखा ❀ उर उपजा अति क्षोभ विशेखा
सुरपति निजरथ तुरत पठावा ❀ हर्षसहित मातलि लै आवा
तेजपुंज रथ दिव्य अनूपा ❀ बिहँसि चढ़े कोशलपुरभूपा
चंचल तुरँग मनोहर चारी ❀ अजर अमर मनसा गतिकारी
रथारूढ़ रघुनाथहिं देखी ❀ धाये कपि बल पाइ विशेखी
सही न जाय कपिन की मारी ❀ तब रावण माया विस्तारी
सो माया रघुवीरहिं बांची ❀ सब काहू मानी करि सांची
देखी कपिन निशाचर अनी ❀ बहु अंगद कपि लक्ष्मण धनी
छं० बहुबालिसुतलक्ष्मणकपीश विलोकिमर्कटअपडरे।
जनुचित्रलिखितसमेतलक्ष्मण जहँसोतहँचितवतखरे॥
निजसेनचकितविलोकिहँसिधनुताानिशरकोशलधनी।
माया हरी हरि निमिषमहँ हरषी सकल मर्कट अनी॥
दो० बहुरि राम सबतन चितय, बोले वचन गँभीर।
द्वन्द्व युद्ध देखहु सकल, श्रमित भये अति बीर॥
असकहि रथ रघुनाथ चलावा ❀ विप्र चरण पङ्कज शिरनावा
तब लङ्केश क्रोधकरि धावा ❀ गर्जितर्जि प्रभुसम्मुख आवा
जीतेहु जे भट संयुग माहीं ❀ सुनु तापस मैं तिनसम नाहीं
रावण नाम जगत यश जाना ❀ लोकप जेहिके बन्दीखाना
खर दूषण विराध तुम मारा ❀ बधेउ व्याधइव बालि बिचारा
निशिचर सुभट सकल संहारे ❀ कुम्भकरण घननादहिं मारे
आजु वैर सब लेउँ निबाही ❀ जो रणभूमि भागि नहिं जाही

१ द्वन्द्व २ समूह ३ श्रीराम ४ घोड़ा ५ सेना ६ देखि ७ पल ८ बानर ९ युद्ध॥

आज़ु करौं खल काल हवाले ❀ परेउ कठिन रावण के पाले
सुनि दुर्वचन कालवश जाना ❀ कहेउ बिहँसि तव कृपानिधाना
सत्य सत्य तव सब प्रभुताई ❀ जनि जल्पसि देखब मनुसाई
छं० जनिजल्पनाकरिसुयशनाशहिनीतिसुनुशठकरुक्षमा।
संसार महँ पूरुष त्रिविध पाटल रसाल पनस समा॥
इक सुमनप्रद इक सुमन फल इक फलै केवललागहीं।
इककहहिं करत न करहिं कहहीं करहिं यकनहिंबागहीं॥
दो० रामवचनसुनि बिहँसिकह, मोहिं सिखावहु ज्ञान।
वैर करत तब नहिं डरेहु, अब लागत प्रियप्रान॥
कहि दुर्वचन क्रोधि दशकन्धर ❀ कुलिशसमान लागछांड़न शर
नानाकार शिलीमुख धाये❀दिशिअरुविदिशिगगनमहिछाये
अनल बाण छांड़ेउ रघुवीरा ❀ क्षणमहँ जरे निशाचर तीरा
छांड़ेसि ब्रह्मशक्ति खिसियाई ❀ बाणसंग प्रभु फेरि पठाई
कोटिन चक्र त्रिशूल पँवारे ❀ बिनुप्रयास प्रभु काटिनिवारे
निफल होइँ रावणशर कैसे ❀ खलके सकल मनोरथ जैसे
तव शतबाण सारथिहि मारेसि ❀ परेउ भूमि जयराम पुकारेसि
राम कृपा करि सूत उठावा ❀ तब प्रभु परमक्रोधकहँ पावा
छं० भयेक्रुद्धयुद्ध विरुद्ध रघुपति त्रोणशायक कसमसे।
कोदँण्डध्वनिअतिचण्डसुनि मनुजादभयमारुतग्रसे॥
मन्दोदरीउर कम्प कम्पित कमठ भूधर अतित्रसे।
चिक्करहिं दिग्गज दशन गहि महि देखि कौतुक सुरहँसे॥
दो० तान्योचाप जोश्रवणलगि, छांड़े विशिख कराल।
रघुनायक शायक चले, लहलहात जनुव्याल॥
चले बाण सपक्ष जनु उरगा ❀ प्रथमहिं हते सारथी तुरगा

१ आंब २ कटहल ३ वज्र ४ फेंके ५ धनुष ६ राक्षस ७ दांत ८ कान॥

रथ विभञ्जि हति केतु पताका ❀ गर्जा अति अन्तरबल थाका
तुरतआनिरथचढ़ि खिसियाना ❀ छांड़ेसि अस्त्रशस्त्र विधिनाना
विफल होइँ सब उद्यम ताके ❀ जिमि परद्रोह निरत मनसाके
तब रावण दश शूल चलाये ❀ बाजिचारि महि मारि गिराये
तुरँग उठाय कोपि रघुनायक ❀ खैंचि शरासन छांड़े शायक
रावणशिर सरोज वनचारी ❀ चले रघुनाथ शिलीमुख धारी
दश दश बाण भाल दशमारे ❀ निसरिगये चल रुधिर पनारे
स्रवत रुधिर धावा बलवाना ❀ प्रभु पुनिकृत धनुशर सन्धाना
तीस तीर रघुवीर पँवारे ❀ भुजन समेत शीश महि पारे
काटतही पुनि भये नवीने ❀ राम बहोरि भुजा शिरछीने
कटित झटित पुनि नूतन भये ❀ प्रभु बहुवार बाहु शिर हये
पुनिपुनिप्रभुकाटहिं भुजशीशा ❀ अतिकौतुकी कोशलाधीशा
रहे छाइ नभ शिर अरु बाहू ❀ मानहुँ अमित केतु अरु राहू

छं० जनु राहुकेतुअनेक नभपथ स्रवतशोणित धावहीं।
रघुवीर तीर प्रचण्ड लागहिं भूमि गिरन न पावहीं॥
इक एकशर शिरनिकर छेदे नभउड़त इमि सोहई।
जनु कोपि दिनकरकरनिकर जहँतहँ विधुन्तुंद पोहई॥

दो० जिमिजिमिप्रभुहततासुशिर,तिमितिमिहोहिंअपार।
सेवत विषय विवर्द्ध जिमि,तिमिनितनूतनमार॥

दशमुख दीख शिरनकी बाढ़ी ❀ बिसरा मरण भई रिस गाढ़ी
गर्जेउ मूढ़ महा अभिमानी ❀ धायहु दशहु शरासन तानी
समरभूमि दशकन्धर कोपा ❀ वरषि बाण रघुपति रथ तोपा
दण्ड एक रथ देखि न परेऊ ❀ जनु निहारमहँ दिनकर दुरेऊ
हाहाकार सुरन सब कीन्हा ❀ तब प्रभुकोपि धनुषकर लीन्हा
शर निवारि रिपुके शिर काटे ❀ तेदिशिविदिशिगगनमहिपाटे

१ घोड़ा २ चुवत ३ सूर्य ४ राहु ५ नये ६ अहंकारी ७ कुहिरा ८ पृथ्वी॥

काटे शिर नभमारग धावहिं ❀ जयजयध्वनिकहिभयउपजावहिं
कहँ लक्ष्मण हनुमन्त कपीशा ❀ कहँ रघुवीर कोशलाधीशा
छं० कहँरामकहिशिरनिकरधावहिंदेखिमर्कटभजिचले।
सन्धानिधनु रघुवंशमणि तब शरन शिर बेधे भले ॥
शिरमालिका[1] गहिकालिका तहँ वृन्द वृन्दनिसों मिलीं।
करि रुधिर सरमज्जन मनहुँ संग्राम[2] वट[3] पूजन चलीं ॥
दो० पुनि रावण अतिकोपकरि, छांड़ी शक्ति प्रचण्ड।
सम्मुख चली विभीषणहिं, मनहुँ कालकरदण्ड ॥
आवत देखि शक्ति खरधारा ❀ प्रणतारति हर विरद सँभारा
तुरत विभीषण पाछे मेला ❀ सम्मुख राम सहेउ सो शेला
लगी शक्ति मूर्च्छा कछु भई ❀ प्रभुकृत खेल सुरन विकलई
देखि विभीषण प्रभु श्रमपायउ ❀ गहिकर गदा क्रोधकरि धायउ
रे कुभाग्य शठ मन्द कुबुद्धे[4] ❀ तैं सुर नर मुनि नाग विरुद्धे
सादर शिवकहँ शीश चढ़ाये ❀ एक एक के कोटिन पाये
तेहिकारण खैल अबलगिबाचा ❀ अब तवकाल शीशपर नाचा
राम विमुख शठ चहसि सम्पदा ❀ असकहि हनेसि मांझ उँरगदा
छं० उरमांझ गदाप्रहार घोर कठोर लागत महिपस्यो।
दशवदन[6] शोणितस्रवत[7]पुनि सम्भारिधायो रिसभस्यो ॥
दोउभिरे अतिबल मल्लयुद्ध विरुद्ध एकहि इक हने।
रघुवीरबल गर्वित विभीषण घाउ नहिं ताको गने ॥
दो० उमा[8] विभीषण रावणहिं, सम्मुख चितव कि काउ।
भिरतसोकालसमानअब, श्री रघुवीर प्रभाउ ॥
देखा श्रमित विभीषण भारी ❀ धावा हनूमान गिरिधारी
रथ तुरंग सारथी निपाता[9] ❀ हृदयमांझ मारेउ तेहिलाता

१ शिरोंकीमाला २ युद्ध ३ बरगद ४ दुष्ट ५ हृदय ६ रावण ७ चुवाता ८ पार्वती ९ मारा ॥

ठाढ़ रहा अति कम्पितगाता ❀ गयउ विभीषण जहँ जनत्राता[1]
पुनि रावण तेहि हतेउ प्रचारी ❀ चला गगन कपि[2] पूंछ पसारी
गहेसिपूंछ कपिसहित उड़ाना ❀ पुनिनभभिर्‌यो प्रबल हनुमाना
लरत अकाश युगल सम योधा ❀ हनत एक एकहि करि क्रोधा
शोभितनभ छलबलबहु करहीं ❀ कज्जलगिरि सुमेरु जनु लरहीं
बुधिबल निशिचर परै न पारा ❀ तब मारुतसुत प्रभुहिं सँभारा

छं० संभारि श्रीरघुवीर धीर प्रचारि कपि रावण हन्यो।
महिपरतपुनिउठिलरतदेवन युगलकहँजयजयभन्यो॥
हनुमन्त सङ्कट देखि मर्कट भालु[3] क्रोधातुर चले।
रणमत्तरावण सकल सुभट प्रचण्ड भुजबल दलिमले॥

दो० राम प्रचारे वीर सब, धाये कीश प्रचण्ड।
कपिदल विपुलविलोकितेइँ, कीन्हप्रकटपाखण्ड॥

अन्तर्द्धान भयो क्षण एका ❀ पुनि प्रकटेसि खलरूप अनेका
रघुवर कटँक[4] भालु कपि जेते ❀ जहँ तहँ प्रकट दशानन तेते
देखे कपिन अमित दशशीशा ❀ भागे भालु विकल भटकीशा
चले बलीमुख धरहिं न धीरा ❀ त्राहि त्राहि लक्ष्मण रघुवीरा
दशदिशि कोटिन धावहिं रावन ❀ गर्जहिं घोर कठोर भयावन
डरे सकल सुर चले पराई ❀ जयकी आश तजहु रे भाई
सब सुर जिते एक दशकन्धर ❀ अब बहुभये तकहु गिरिकन्दर
रहे विरँचि[5] शम्भु मुनि ज्ञानी ❀ जिननिजप्रभुकी महिमाजानी

छं० जानहिं प्रताप ते रहे निर्भय कपिन रिपु मान्योफुरे।
चलेविचालिमर्कटभालु सकल कृपालुपाहि भयातुरे॥
हनुमन्त अङ्गद नील नल बलवन्त अति रणबांकुरे[6]।
मर्दहिं दशानन कोटि कोटिन कपट[7] भूभट आंकुरे॥

१ रक्षक २ हनुमान् ३ रीछ ४ सेना ५ ब्रह्मा ६ बहादुर ७ छल॥

दो० सुर वानर देखे विकल, हँसे कोशलाधीश।
साजिशरासने निमिषमहँ, हरे सकल दशशीश॥

प्रभु क्षणमहँ माया सब काटी ❋ जिमि रविउदय जाइ तमफाटी
रावण एक देखि सुर हर्षे ❋ फिरे सुमन पुनि प्रभुपर वर्षे
भुज उठाय रघुपति कपि फेरे ❋ फिरे एक एकन के टेरे
प्रभुबल पाइ भालु कपि धाये ❋ तरलतमकि संयुग महिआये
करत प्रशंसा सुर तेइँ देखे ❋ भयउँ एक मैं इनके लेखे
शठहु सदा तुम मोर मरायल ❋ असकहि कोपि गगनपथधायल
हाहाकार करत सुर भागे ❋ शठहु जाहु कहँ मोरे आगे
देखि विकल सुर अंगद धावा ❋ कूदिचरण गहि भूमि गिरावा

छं० गहिभूमिपार्‌यो,लातमार्‌यो बालिसुतप्रभुपहँगयो।
संभारि उठि दशकण्ठ घोर कठोर रव गर्जतभयो॥
करि दाप धनुष चढ़ाइ दश सन्धानि शर बहु वर्षई।
किय सकल भट घायल बियाकुल देखि निजबल हर्षई॥

दो० तब रघुपति लङ्केशके, शीश भुजा शर चाप।
काटे भये नवीन पुनि, जिमि तीरथ के पाप॥

शिर भुज बाढ़ि देखि रिपुकेरी ❋ भालु कपिन रिसभई घनेरी
मरत न मूढ़ कटे भुज शीशा ❋ धाये कोपि भालु अरु कीशा
बालितनय मारुत नल नीला ❋ द्विविद कपीश पनस बलशीला
विटप महीधर करहिं प्रहारा ❋ सोइगिरितरुगहिकपिनसोमारा
एक नखन रिपु वपुष बिदारी ❋ भागिचलहिं यक लातन मारी
तब नलनील शिरन चढ़ि गयऊ ❋ नखन ललाट बिदारत भयऊ
रुधिर विलोकि सकोप सुरारी ❋ तिनहिं धरनकहँ भुजा पसारी
गहे न जाहिं शिरनपर फिरहीं ❋ जनु युग मधुप कमलवनचरहीं

१ धनुष २ सूर्य ३ अन्धकार ४ फूल ५ कपटी ६ आकाशमार्ग ७ देवता ८ वृक्ष ९ भौंरा॥

कोपि कूदि दोउ धरेसि बहोरी ❀ महिपटकेसि गहि भुजा मरोरी
पुनि सकोपि दशधनुकरलीन्हा ❀ शरन मारि घायल कपि कीन्हा
हनुमदादि मूर्च्छित सब बन्दर ❀ पाय प्रदोष हर्ष दशकन्धर
मूर्च्छित देखि सकल कपिवीरा ❀ जाम्बवन्त धावा रणधीरा
संग भालु भूधर तरु भारी ❀ मारन लगे प्रचारि प्रचारी
भयो क्रुद्ध रावण बलवाना ❀ गहिपद महिपटकै भट नाना
देखि भालुपति निजदल घाता ❀ कोपि मांझ उर मारेसि लाता

छं० उरलातघातप्रचण्डलागत विकलरथतेमहिगिरा।
गहिभालुबीसहुकरनमानहुँ कमलनिशिबसमधुकरा॥
मूर्च्छितविलोकिबहोरिपदहति भालुपतिप्रभुपहँ गयो।
निशिजानिस्यन्दनघालितेहि तब सूतयत्नकरतभयो॥

दो० मूर्च्छागइ कपिभालु तब, सब आये प्रभु पास।
सकलनिशाचर रावणहिं, घेरि रहे अति त्रास॥

तेहि निशिमहँ सीतापहँ जाई ❀ त्रिजटा कहि सब कथा बुझाई
शिर भुजबाढ़ि सुनत रिपुकेरी ❀ सीता उर भै त्रास घनेरी
सुख मलीन उपजी मन चिंता ❀ त्रिजटासन बोली तब सीता
होइहि कहा कहसि किनमाता ❀केहिविधिमरिहिविश्वदुखदाता
रघुपति शर शिरकटे न मरई ❀ विधि विपरीतचरित सब करई
मोर अभाग्य जिआवत ओही ❀ जेहिहौं हरिपदकमल बिछोही
जेइ कृत कनक कपटमृग झूठा ❀ अजहुँ सो दैव मोहिंपर रूठा
जेहिविधिमोहिंदुखदुसहसहावा ❀ लक्ष्मणकहँ कटुवचन कहावा
रघुपति विरह विषमशर भारी ❀ तकितकि बारबार मोहिंमारी
ऐसेहु दुख जो राखु मम प्राना ❀ सोविधिताहिजिआव न आना
बहुविधि करत विलाप जानकी ❀करिकरिसुरति कृपानिधानकी
कह त्रिजटा सुनु राजकुमारी ❀ उर शर लागत मरिहि सुरारी

१ वृक्ष २ रात्रि ३ उदास ४ संसार ५ सोना ६ कडुये ७ रोदन ८ रावण॥

ताते प्रभु उर हतहिं न तेही ❋ यहि के हृदय बसत वैदेही
छं॰ यहिके हृदय बस जानकी मम जानकी उर वासहै।
मम उदर[१] भुवन अनेक लागत बाण सबकर नासहै॥
सुनिवचन विरहविषाद मनअति देखिपुनित्रिजटाकहा।
अबमरिहिरिपु[२]यहिभांतिसुन्दरि तजहुतुम संशय[३]महा॥
दो॰ काटतशिर होइहि विकल, छूटि जाइ जब ध्यान।
तब रावण के हृदय शर, मारहिं राम सुजान॥
अस कहि बहु प्रकार समुझाई ❋ पुनि त्रिजटा निजभवनसिधाई
राम स्वभाव सुमिरि वैदेही ❋ उपजी विरहव्यथा अति तेही
निशिहिशशिहिनिन्दतबहुभांती ❋ युगसम भई बिहाति न राती
करत विलाप[४] मनहिंमन भारी ❋ राम विरह जानकी दुखारी
जब अति भयो विरह उर दाहू ❋ फरकेउ वाम नयन अरु बाहू
शकुन विचारि धरयो उरधीरा ❋ अब मिलिहहिं कृपालु रघुवीरा
इहां अर्द्धनिशि रावण जागा ❋ निजसारथिसन खीझनलागा
शठ रणभूमि छुड़ायसि मोहीं ❋ धिकधिक अधममन्दमतितोहीं
तेइँ पद गहि बहुविधि समुझावा ❋ भोरभये रथचढ़ि पुनि आवा
सुनि आगमन दशानन केरा ❋ कपिदल खरभर भयउ घनेरा
जहँ तहँ भूधर[५] विटप[६] उपारी ❋ धाये कटकटाइ भट भारी
छं॰ धाये जो मर्कट[७] विकट भालु[८] करालकर भूधरधरा।
अतिकोपि करहिं प्रहार मारत भाजि चले रजनीचरा॥
बिचलाइदल बलवन्तकीशन घेरि पुनि रावण लियो।
चहुँदिशिचपेटनमारिनखनबिदारितेहिव्याकुलकियो॥
दो॰ देखि महामरकट प्रबल, रावण कीन्ह विचार।
अन्तरहित ह्वै निमिषमहँ, कृत माया विस्तार॥

१ पेट २ शत्रु ३ सन्देह ४ रोदन ५ पहाड़ ६ वृक्ष ७ बन्दर ८ रीछ॥

छं० जबकीन्हतेइँपाखण्ड * भये प्रकट जन्तु प्रचण्ड॥
बैताल भूत पिशाच * कर धरे धनुष नराच॥
योगिनि गहे करवाल * इक हाथ मनुजकपाल॥
करि सद्य शोणित पान * नाचहिं करहिं बहुगान॥
धरु मारु बोलहिं घोर * रहि पूरि धुनि चहुँओर॥
मुख बाय धावहिं श्वान[1] * तब लगे कीश[2] परान॥
जहँ जाहिं मर्कट भागि * तहँ बरत देखहिं आगि॥
भय विकल बानर भालु * पुनि लाग वर्षन बालु॥
जहँ तहँ थकितकरि कीश * गर्जेउ बहुरि दशशीश[3]॥
लक्ष्मण कपीश समेत * भये सकल[4] वीर अचेत॥
हा राम हा रघुनाथ * कहि सुभट[5] मीजहिं हाथ॥
यहिविधि सकलबल तोरि * तेहिं कीन्ह कपट[6] बहोरि॥
प्रकटे विपुल हनुमान * धाये गहे पाषान॥
तिन राम घेरे जाइ * चहुँदिशि वरूथ बनाइ॥
मारहु धरहु जनि जाइ * कटकटहिं पूंछ उठाइ॥
दशदिशि लँगूर विराज * तेहि मध्य कोशलराज॥
छं० तेहिमध्यकोशलराजसुन्दरश्यामतनुशोभालही।
जनु इन्द्रधनुष अनेक किय वरवारि तुंग तमालही॥
प्रभुदेखि हर्ष विषाद[7] उर सुर वदति जय जय जयकरी।
रघुवीर एकहि तीर कोपित निमिषमहँ मायाहरी॥
माया विगत कपि भालु हर्षे विटपगिरि गहिसबफिरे।
शरनिकर[8] छांड़े राम रावण बाहु शिर पुनि महिगिरे॥

१ कुत्ता २ वानर ३ रावण ४ सम्पूर्ण ५ योद्धा ६ छल ७ दुःख ८ समूह॥

श्रीराम रावण समरचरित अनेक कल्प जो गावहीं ।
शत शेष शारद निगम कवि त्यउ तदपि पार न पावहीं॥
दो० कहे तासु गुणगण कछुक, जड़मति तुलसीदास ।
निजपौरुषअनुसारजिमि, मशकउड़हिंआकास॥
काटि शीश भुज बारबहु, मरै न भट लङ्केश ।
प्रभु क्रीड़त मुनि सिद्धसुर, व्याकुल देखि कलेश ॥
काटत बढ़त शीश समुदाई ❀ जिमिप्रतिलाभलोभअधिकाई
मरै न रिपु श्रम भयउ विशेखा ❀ राम विभीषण तन तब देखा
उमा[1] काल सम जाकी इच्छा ❀ सो प्रभु जनकी लेत परिच्छा
सुनु सर्वज्ञ चराचरनायक ❀ प्रणतपाल सुरमुनिसुखदायक
नाभी कुण्ड सुधा बस याके ❀ नाथ जियत रावण बल ताके
सुनत विभीषण वचन कृपाला ❀ हरषि गहे कर बाण कराला
अशकुन होनलगे विधि नाना ❀ रोवहिं बहु शृगाल[3] खर[4] स्वाना
बोलहिं खग अति आरतहेतू ❀ प्रकट भये जहँ तहँ नभकेतू
दशदिशि दाह होन तब लागा ❀ भये पर्व बिनु रवि उपरागा[5]
मन्दोदरि उर कम्पित भारी ❀ प्रतिमा स्रवहिं[6] नयन मगु वारी
छं०प्रतिमास्रवहिंपविपातनभअतिवातबहडोलतमही ।
वर्षहिं बलाहक रुधिरकचरज अशुभता सककोकही ॥
उतपातअमितविलोकिनभसुर विकलबोलहिंजयजये ।
सुर सभय जानि कृपालु रघुपति चाप शर जोरतभये ॥
दो० आकर्षेउ[7] धनु श्रवण लगि, छांड़े शर यकतीश ।
रघुनायक शायक[8] चले, मानहुँ काल फणीश ॥
शायक एक नाभिसर शोषा ❀ अपर लगे शिर भुजकरि रोषा
लै शिर बाहु चले नाराचा ❀ शिरभुजहीन रुण्ड महि नाचा

१ वेद २ पार्वती ३ सियार ४ गधा ५ ग्रहण ६ चुवैं ७ खैंचेउ ८ बाण ॥

धरणि धसै धर धाव प्रचण्डा * तब शर हति प्रभु कृतयुगखण्डा
गर्जेउ मरत घोर रव भारी * कहां राम रण हतौं प्रचारी
डोली भूमि गिरत दशकन्धर * क्षुभित सिन्धुसह दिग्गजभूधर
परेउ भूमि युग खण्ड बढ़ाई * चापि भालु मर्कट समुदाई
मन्दोदरि आगे भुज शीशा * धरि शर चले जहां जगदीशा
प्रविशे सब निषङ्ग महँ आई * देखि सुरन दुन्दुभीं बजाई
तासु तेज समान प्रभु आनन * हर्षे देखि शम्भु चतुरानन
जय ध्वनि पूरिरही नवखण्डा * जय रघुवीर प्रबल भुजदण्डा
वर्षहिं सुमन देव मुनिवृन्दा * जयकृपालु जय जयतिमुकुन्दा
छं० जयकृपाकन्दमुकुन्दद्वन्दहरण शरणसुखदाप्रभो ।
खलदलविदारण परमकारण कारुणीक सदा विभो ॥
सुर सुमन वर्षत सकल हर्षत बाजु दुन्दुभि गहगही ।
संग्राम आंगन राम अङ्ग अनङ्ग बहु शोभा लही ॥
शिरजटा मुकुट प्रसून बिचबिच अतिमनोहर राजहीं ।
जनु नीलगिरिपर तड़ितपटलसमेत उडुगण भ्राजहीं ॥
भुजदण्ड शरकोदण्ड फेरत रुधिरकण तनु अतिबने ।
जनु रायमुनिय तमाल तरुपर बैठि बहु सुख आपने ॥
दो० कृपादृष्टि करि वृष्टि प्रभु, अभय किये सुरवृन्द ।
हर्षे वानर भालु सब, जय सुखधाम मुकुन्द ॥
पति शिर दीख जबहिं मन्दोदरि * मूर्च्छितविकलखसीधरणीपरि
युवतिवृन्द रोवत उठि धाई * तेहि उठाय रावणपहँ ल्याई
पतिगतिदेखिसोकरतिपुकारा * छूटे केश न देह सँभारा
उर ताड़ना करै विधि नाना * रोदन करै प्रताप बखाना
तव बल नाथ डोल नित धरणी * तेजहीन पावक शशि तरणी

१ शब्द २ रामचन्द्र ३ नगाड़ा ४ कामदेव ५ पुष्प ६ नक्षत्र ७ पृथ्वी ८ अग्नि ॥

शेष कमठ[1] सहि सकहिं न भारा ❀ सो तनु आजु परा महिक्षारा
वरुण कुबेर सुरेश[2] समीरा ❀ रणसम्मुख धरु काहु न धीरा
भुजबल जीति काल यम साईं ❀ आजु सो परेउ अनाथ कि नाईं
जगत विदित तुम्हारि प्रभुताई ❀ सुत परिजन बल वरणि न जाई
रामविमुख अस हाल तुम्हारा ❀ रहा न कुल कोउ रोवनहारा
तव वश विधि प्रपञ्च सब नाथा ❀ सबदिशिपतितोहिंनावहिंमाथा
अब तव शिरभुज जम्बुक[3] खाहीं ❀ रामविमुख यह अनुचित नाहीं
कालविवश प्रभु कहा न माना ❀ अगजगनाथ मनुजकरिजाना

छं॰ जानेउ मनुजकरिदनुजकाननदहनपावकहरिस्वयं।
जेहिनमतशिवब्रह्मादिसुर पिय भजेहु ना करुणामयं ॥
आजन्मते परद्रोहरत पापौघमय तव तन अयं।
तुमहूं दियो निजधाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं ॥

दो॰ अहह नाथ रघुनाथसम, कृपासिन्धु को आन।
मुनिदुर्लभ जो परमगति, तुमहिं दीन्ह भगवान ॥

मन्दोदरी वचन सुनि काना ❀ सुरमुनिसिद्ध सबहिं सुखमाना
अज[4] महेश[5] नारद सनकादी ❀ जे मुनिवर परमारथ वादी
भरिलोचन रघुपतिहिं निहारी ❀ प्रेम मगन सब भये सुखारी
रोदन करत देखि नर नारी ❀ गये विभीषण मन दुखभारी
बन्धु दशा देखत दुख भयऊ ❀ तबप्रभु अनुजहि आयसु[6] दयऊ
लक्ष्मण तेहि बहुविधि समुझाये ❀ सहित विभीषण प्रभुपहँ आये
कृपादृष्टि प्रभु ताहि विलोका ❀ करहुक्रिया परिहँरि[7] सबशोका
कीन्ह क्रिया प्रभु आयसु मानी ❀ विधिवत देशकालगति जानी

दो॰ मयतनया[8]दिक नारिसब, देइँ तिलांजलि ताहि।
भवन गईं रघुवीरगुण, गणवरणति मनमाहि ॥

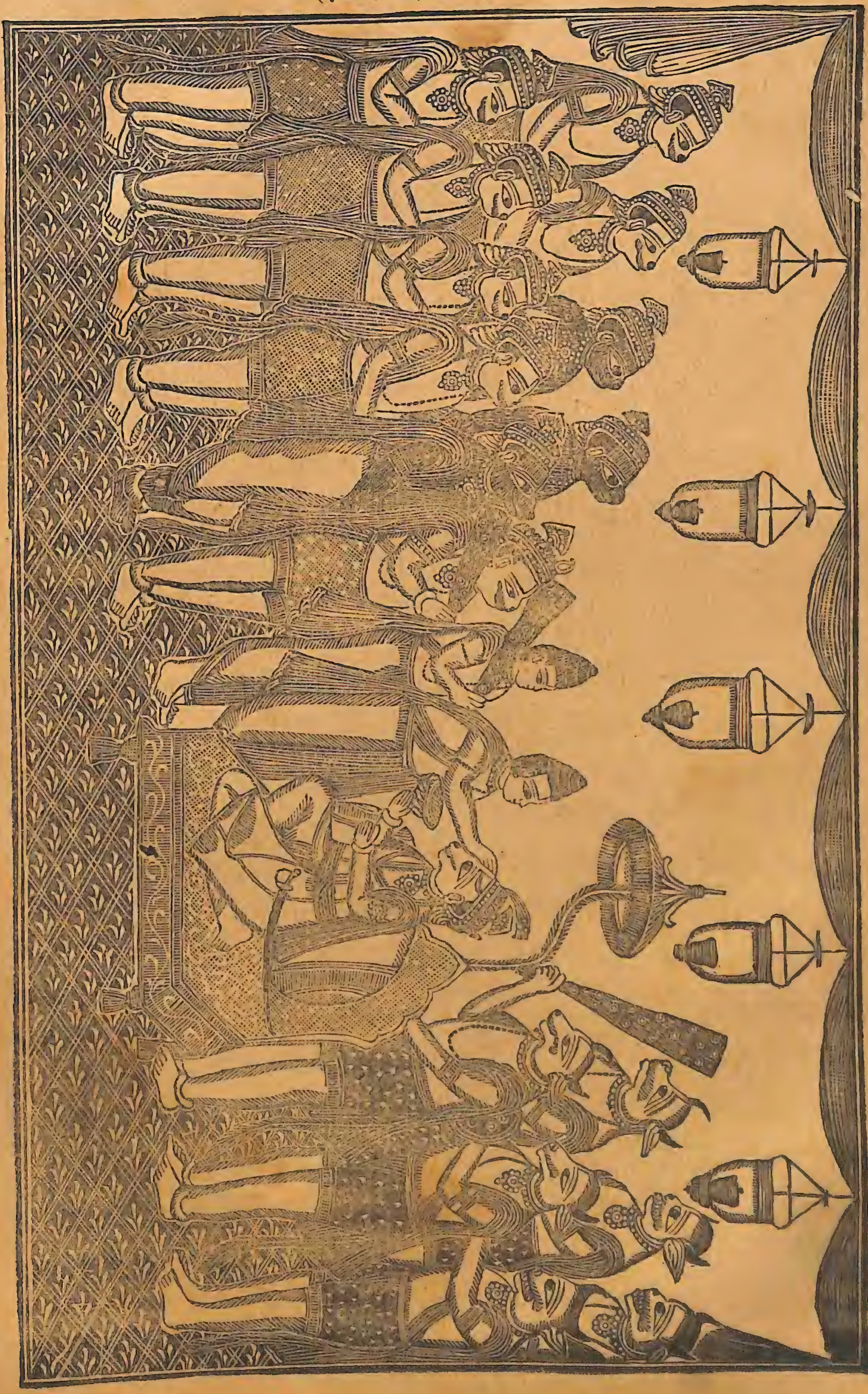
आइ विभीषण पुनि शिर नावा ❀ कृपासिन्धु तब अनुज बुलावा

१ कच्छप २ इन्द्र ३ सियार ४ ब्रह्मा ५ महादेव ६ आज्ञा ७ छोड़के ८ मन्दोदरी ॥

तुम कपीश अङ्गद नल नीला ❀ जाम्बवन्त मारुतसुत शीला
सबमिलिजाहु विभीषण साथा ❀ सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा
पिता वचन मैं नगर न जाऊं ❀ आपुसरिस प्रिय अनुज पठाऊं
तुरतचले कपि सुनि प्रभु वचना ❀ कीन्हीं जाय तिलककी रचना
सादर सिंहासन बैठारी ❀ तिलककीन्हअस्तुतिअनुसारी
जोरि पाणि सबही शिरनाये ❀ सहित विभीषण प्रभुपहँ आये
तब रघुवीर बोलि कपि लीन्हे ❀ कहिप्रियवचन सुखीसबकीन्हे
छं० कीन्हेसुखी सब कहि सुबाणी बल तुम्हारे रिपुहयो।
पायो विभीषण राज्यतिहुँपुर यश तुम्हारो नितनयो॥
मोहिंसहित शुभकीरति तुम्हारी परमप्रीति जो गाइहैं।
संसारसिन्धु अपारपार प्रयास[3] बिनु नर पाइहैं॥
दो० सुनत राम के वचन मृदु, नहिं अघात कपि पुञ्ज।
बारहिंबार बिलोकि मुख, गहहिं राम पद कञ्ज[4]॥
पुनि प्रभु बोलिलिये हनुमाना ❀ लङ्का जाहु कहेउ भगवाना
समाचार जानकिहि सुनावहु ❀ तासु कुशलले तुम चलिआवहु
तब हनुमान नगर महँ आये ❀ सुनि निशिचरी निशाचरधाये
पूजा बहुप्रकार तिन कीन्हीं ❀ जनकसुता[5] दिखायपुनिदीन्हीं
दूरिहिते प्रणाम कपि कीन्हा ❀ रघुपति दूत जानकी चीन्हा
कहहु तात प्रभु कृपानिकेता ❀ कुशल अनुज कपिसेन समेता
सबविधि कुशल कोशलाधीशा ❀ मातु समर जीत्यो दशशीशा
अविचल राज्य विभीषण पावा ❀ सुनि कपि वचन हर्ष उर छावा
छं०अतिहर्षमनतनपुलकलोचन[6]सजलपुनिपुनिकहरमा।
कादेउँतोहिं त्रैलोक्यमहँ कपि किमपि नहिं वाणीसमा॥
सुनु मातु मैं पायउँ अखिल[7] जगराज आज न संशयं।

१ हनुमान् २ हाथ ३ परिश्रम ४ कमल ५ सीता ६ नेत्र ७ सम्पूर्ण॥

रा० लं० चि० नं० १२



रणं जीति रिपुदल बन्धुयुत पश्यामि राम निरामयं ॥
दो० सुनुसुत सद्गुणसकलतव, हृदय बसैं हनुमन्त।
सानुकूल रघुवंशमणि, रहहिं समेत अनन्त ॥
अबसोइ यतन करहु तुम ताता ❀ देखौं नयन श्याम मृदु गाता
तब हनुमन्त राम पहँ आये ❀ जनकसुता कर कुशल सुनाये
सुनि वाणी पतङ्गकुलभूषण ❀ बोलिलिये युवराजविभीषण
मारुतसुत के संग सिधावहु ❀ सादर जनकसुता लैआवहु
तुरतहि सकलगये जहँ सीता ❀ सेवहिं सब निशिचरी विनीता
वेगि विभीषण तिनहिंसिखावा ❀ सादर तिन सीतहिं नहवावा
दिव्य वसन भूषण पहिराये ❀ शिबिकारुचिरसाजि पुनिलाये
तेहि पर हरषि चढ़ीं वैदेही ❀ सुमिरि राम सुखधाम सनेही
वेतपाणि रक्षक चहुँपासा ❀ चले सकल मन परमहुलासा
संग लिये त्रिजटा निशिचरी ❀ चली राम पहँ सुमिरत हरी
देखन भालु कीश बहु आये ❀ रक्षक कोटि निवारण धाये
कह रघुवीर कहा मम मानहु ❀ सीतहि सखा पयादेहि आनहु
देखहिं कपि जननी की नाईं ❀ बिहँसि कहा रघुवीर गुसाईं
सुनि प्रभुवचन भालु कपि हर्षे ❀ नभते सुरन सुमनं बहु वर्षे
सीतहिं प्रथम अग्निमहँ राखी ❀ प्रकट कीन्ह चह अन्तरसाखी
दो० तेहि कारण करुणाअयन, कहे कछुक दुर्वाद।
सुनत यातुधानी सकल, लागीं करन विषाद ॥
प्रभुके वचन शीश धरि सीता ❀ बोलीं मन क्रम वचन पुनीता
लक्ष्मण होहु धर्म्म के नेगी ❀ पावक प्रकट करहु तुम वेगी
सुनि लक्ष्मण सीताकी बानी ❀ विरह विवेक धर्म नयँ सानी
लोचन सजल जोरि कर दोऊ ❀ प्रभुसन कछुकहिसकत न ओऊ
देखि राम रुख लक्ष्मण धाये ❀ पावक प्रकट काठ बहु लाये
प्रबल अनल विलोकि वैदेही ❀ हृदय हर्ष कछु भय नहिं तेही

१ संग्राम २ वशवर्ती ३ लक्ष्मण ४ सूर्य ५ फूल ६ राक्षसी ७ नीति ८ हाथ ॥

जो मन क्रम वच मम उरमाहीं ❋ तजि रघुवीर आन गति नाहीं
तौ कृशानु सबकी गति जाना ❋ मोकहँ होहु श्रीखंड समाना
छं० श्रीखंडसमपावकप्रवेश कियसुमिरिप्रभुपदमैथिली।
जय कोशलेश महेशवन्दितचरणरज अतिनिर्मली ॥
प्रतिबिम्ब अवलोकित कलङ्क प्रचण्ड पावकमहँ जरे ।
प्रभुचरित काहु न लखेउ नभसुर सिद्ध मुनि देखहिं खरे ॥
तब अनल भूसुररूप करगहि सत्य श्री श्रुति विदितसो ।
जिमि क्षीरसागर इन्दिरा रामहिं समर्पी आनि सो ॥
सोइ रामवामविभागराजित रुचिर अतिशोभा भली ।
नव नीलनीरज निकट मानहुँ कनक पङ्कजकी कली ॥
दो० हरषि सुमन वर्षहिं विबुध, बाजहिं गगन निशान ।
गावहिं किन्नर अप्सरा, नाचहिं चढ़ी विमान ॥
श्रीजानकी समेत प्रभु, शोभा अमित अपार ।
देखि भालु कपि हर्षेउ, जय रघुपति सुखसार ॥
तब रघुपति अनुशासन पाई ❋ मातलि चलेउ चरण शिरनाई
आये देव सदा स्वारथी ❋ वचन कहहिं जनु परमारथी
दीनबन्धु दयालु रघुराया ❋ देव कीन्ह देवन पर दाया
विश्वद्रोहरत खल अतिकामी ❋ निजअघ गयउ कुमारगगामी
तुम सर्वज्ञ ब्रह्म अविनासी ❋ सदा एकरस सहज उदासी
अकल अगुण अनवद्य अनामय ❋ अजित अमोघ एक करुणामय
मीन कमठ शूकर नरहरी ❋ वामन परशुराम वपुधरी
जब जब नाथ सुरन दुखपावा ❋ नाना तनुधरि तुमहिं नशावा
रावण पापमूल सुरद्रोही ❋ काममोहमदरत अतिकोही
सो कृपालु तव धाम सिधावा ❋ यह हमरे मन अचरज आवा

१ चन्दन २ लक्ष्मी ३ देवता ४ आज्ञा ५ संसार ६ गर्व ७ स्थान ॥

हम देवता परम अधिकारी ❀ स्वारथरत तवँ भक्ति बिसारी
भव प्रवाह सन्ततँ हम परे ❀ अब प्रभु पाँहि शरण अनुसरे

दो० करि बिनती सुर सिद्ध सब, रहे जहँ तहँ करजोरि ।
अतिशँय प्रेम सरोजभव, अस्तुति करत बहोरि ।

छं० जय राम सदा सुखधाम हरे ।
रघुनायक शायक चाप धरे ॥
भव बारणँ दारण सिंह प्रभो ।
गुणसागर नागर नाथ विभो ॥
तनु काम अनेक अनूप छवी ।
गुण गावत सिद्ध मुनीन्द्र कवी ॥
यश पावन रावन नाग महा ।
खगनाथ यथा करि कोप गहा ॥
जनरञ्जन भञ्जन शोक भयं ।
गतकोह सदा प्रभु बोधमयं ॥
अवतार उदार अपार गुनं ।
मँहि भार विभञ्जन ज्ञानघनं ॥
अज व्यापकमेकमनादि सदा ।
करुणाकर राम नमामि मुदा ॥
रघुवंश विभूषण दूषणहा ।
कृतभूप विभीषण दीन रहा ॥
गुण ज्ञान निधान अमान अजं ।
नित राम नमामि विभुं विरजं ॥
भुजदण्ड प्रचण्ड प्रताप बलं ।

१ तुम्हारी २ हमेशह ३ रक्षाकरो ४ अत्यन्त ५ मन्दिर ६ हाथी ७ पृथ्वी ॥

खल[1]वृन्द निकन्द महाकुशलं ॥
बिनु कारण दीनदयालु हितं ।
छविधाम नमामि रमासहितं ॥
भवतारण कारण काजपरं ।
मनसम्भव दारुण[2] दोषहरं ॥
शर चाप मनोहर तूण धरं ।
जलजा[3]रुण लोचन भूपवरं ॥
सुखमन्दिर सुन्दर श्रीरमनं ।
मद मार मुधा ममता शमनं ॥
अनवद्य[4] अखण्ड[5] अगोचरगो ।
सब रूप सदा सब होइ न सो ॥
इति वेद वदन्ति[6] न दन्तकथा ।
रवि आतप भिन्न न भिन्न यथा ॥
कृतकृत्य विभो सब वानर ये ।
निरखन्त तवानन सादर ये ॥
धिक जीवन देव शरीर हरे ।
तव भक्ति विना भव भूलि परे ॥
अब दीनदयालु कृपा करिये ।
मति मोरि विभेदकरी हरिये ॥
जेहिते विपरीत कृपा करिये ।
दुखमें सुख मान सुखी चरिये ॥
खलखण्डन मण्डन रक्ष क्षमा ।
पदपङ्कज सेवित शम्भु उमा[7] ॥

१ दुष्ट २ कठिन ३ कमल ४ निर्दोष ५ पूर्ण ६ कहते हैं ७ पार्वती ॥

नृपनायक दे वरदानमिदं।
चरणाम्बुज प्रेम सदा शुभदं ॥

दो० विनयकीन्हबहुभांति विधि[1], प्रेम प्रफुल्लित गात।
वदन[2] विलोकत रामकर, लोचन नाहिं अघात ॥

तिहि अवसर दशरथ तहँ आये ❀ तनय[3] विलोकिनयनजलछाये
सहित अनुज प्रणाम प्रभु कीन्हा ❀ आशिर्वाद पिता तब दीन्हा
तातँ सकल तव पुण्य प्रभाऊ ❀ जीतेउँ अजय निशाचर[6]राऊ
सुनि सुतवचन प्रीति अतिबाढ़ी ❀ नयन सलिल रोमावलि ठाढ़ी
रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना ❀ चितै पितहिं दीन्हेउ दृढ़ज्ञाना
ताते उमा मोक्ष नहिं पावा ❀ दशरथ भेद भक्ति मन लावा
सगुण उपासक मोक्ष न लेहीं ❀ तिन कहँ राम भक्ति निज देहीं
बारबार करि प्रभुहिं प्रणामा ❀ दशरथ हरषि गये सुरधामा

दो० अनुज जानकीसहित प्रभु, कुशलकोशलाधीश।
छविविलोकिमनहरषिअति, अस्तुतिकर सुरईश ॥

छं० जय राम शोभाधाम * दायक प्रणत विश्राम ॥
धृत तूण वर शर चाप * भुजदण्ड प्रबल प्रताप ॥
जय दूषणारि खरारि * मर्दन निशाचर झारि ॥
यह दुष्ट मारेउ नाथ * भे देव सकल सनाथ ॥
जय हरण धरणी भार * महिमा उदार अपार ॥
जय रावणारि कृपाल * किय यातुधान[8] बिहाल ॥
लङ्केश अतिबल गर्व * किय वश्य सुर गन्धर्व ॥
मुनि सिद्ध नर खग नाग * हठि पन्थ सबके लाग ॥
परद्रोहरत अति दुष्ट * पायो सो फल पापिष्ट ॥

१ ब्रह्मा २ मुख ३ पुत्र ४ देखि ५ पिता ६ रावण ७ इन्द्र ८ राक्षस ॥

अब सुनहु दीनदयाल * राजीवनयन विशाल ॥
मोहिं रहा अतिअभिमान * नहिं कोउ मोहिं समान ॥
अब देखि प्रभुपदकंज * गतमान दुखप्रदपुंज ॥
कोउ ब्रह्म निर्गुण ध्याव * अव्यक्त जेहि श्रुतिगाव ॥
मोहिं भाव कोशलभूप * श्रीराम सगुणस्वरूप ॥
वैदेहि अनुज समेत * ममहृदय करहु निकेत ॥
मोहिं जानिये निज दास * दे भक्ति रमानिवास ॥
छं॰ दे भक्ति रमानिवास त्रासहरण शरणसुखदायकं ।
सुखधाम राम नमामि काम अनेक छवि रघुनायकं ॥
सुरवृन्दरंजन द्वन्दभंजन मनुजैतनु अतुलितबलं ।
ब्रह्मादिशङ्करसेव्यं राम नमामि करुणाकोमलं ॥
दो॰ अबकरिकृपाविलोकिमोहिं, आयसु देहु कृपालु ।
कहा करौं सुनि प्रियवचन, बोले दीनदयालु ॥
सुनु सुरपति कपि भालु हमारे * परे भूमि निशिचरन जे मारे
मम हित लागि तजे इन प्राना * सकल जियाउ सुरेश सुजाना
सुनु खगेश प्रभुकी यह बानी * अतिअगाधजानहिं मुनिज्ञानी
प्रभु चह त्रिभुवन मारि जियाई * केवल शक्रहिं दीन्हि बड़ाई
सुधा बरषि कपि भालु जियाये * हरषि उठे सब प्रभुपहँ आये
सुधावृष्टि भइ दुहुँ दल ऊपर * जिये भालु कपि नहिं रजनीचर
रामाकार भये तिनके मन * गये ब्रह्मपद तजि शरीर रन
सुरअंशक सब कपि अरु रीछा * जिये सकल रघुपतिकी इच्छा
राम सरिस को दीनहितकारी * कीन्हें मुक्त निशाचर भारी
खल मलधाम कामरत रावन * गति पाई जो मुनिवर पावन
दो॰ सुमन बरषि सब सुर चले, चढ़िचढ़िरुचिरविमान ।

१ कमल २ स्थान ३ मनुष्य ४ सेवने योग्य ५ मेरे ६ गरुड़ ७ इन्द्र ८ अमृत ॥

देखि सुअवसर रामपहँ, आये शम्भु सुजान ॥
परमप्रीति कर जोरि युग, नयननलिन भरिवारि।
पुलकिततनु गदगद गिरा, विनय करत त्रिपुरारि॥

मामभिरक्षय रघुकुल नायक ❀ धृतवर चाँप रुचिर कर शायक
मोह महाघनपटल प्रभंजन ❀ संशय विपिन अनल सुररंजन
अगुण सगुण गुणमन्दिर सुन्दर ❀ भ्रम तम प्रबल प्रताप दिवाकर३
काम क्रोध मद गज पञ्चानन४ ❀ बसहु निरन्तर जन मन कानन
विषय मनोरथ पुंज कंज१ वन ❀ प्रबल तुषार उदार पार मन
भववारिधि मन्दर पर मन्दर ❀ वारय तारय संसृति दुस्तर
श्यामगात राजीवविलोचन ❀ दीनबन्धु प्रणतारतिमोचन
अनुज जानकी सहित निरन्तर ❀ बसहु राम नृप ममउरअन्तर
मुनिरंजन महिमण्डलमण्डन ❀ तुलसिदासप्रभु त्रासविखण्डन

दो० नाथ जबहिं कोशलपुरी, होइहि तिलक६ तुम्हार ।
तब आउब हम सुनहु प्रभु, देखन चरित उदार ॥

करि विनती जब शम्भु सिधाये ❀ तब प्रभु निकट७ विभीषण आये
नाय चरण शिर कह मृदुवाणी ❀ विनय सुनिय मम शारँगपाणी
सकुल सदल प्रभु रावण मारा ❀ पावन यश त्रिभुवन विस्तारा
दीन मलीन हीनमति जाती ❀ मोपर कृपा कीन्ह बहुभांती
अब जन गृह पुनीत प्रभु कीजे ❀ मज्जनकरिय सकल श्रम छीजे
देश कोष८ मन्दिर सम्पदा ❀ देहु कृपालु कपिन कहँ मुदा
सब विधि नाथ मोहिं अपनाइय ❀ पुनिमोहिंसहितअवधपुरजाइय
सुनत वचन मृदु दीनदयाला ❀ सजलभये हरिनयन विशाला

दो० तोर कोष गृह मोर सब, सत्य वचन सुनु तात ।
दशाभरतकीसुमिरिमोहिं,निमिषकल्पसमजात॥

१ कमल २ धनुष ३ सूर्य ४ सिंह ५ पाला ६ राजगद्दी ७ पास ८ खज़ाना ॥

तापसवेष शरीर कृश, जपैं निरन्तर मोहिं।
देखौं वेगि सो यतन करु, सखा निहोरों तोहिं॥
जो जैहौं बीते अवधि, जियत न पाऊं वीर।
प्रीति भरतकी समुझि प्रभु, पुनिपुनि पुलकशरीर॥
करहुकल्पभरि राज्य तुम, सुमिरेहुमोहिंमनमाहिं।
पुनि मम धाम सिधारेउ, जहां सन्त सब जाहिं॥

सुनत विभीषण वचन रामके ❀ हरषि गहे पद कृपाधामके
वानर भालु सकल हर्षाने ❀ प्रभुपदगहि गुणविमल बखाने
बहुरि विभीषण भवन² सिधाये ❀ पुष्पक मणिगण वसन भराये
लै पुष्पक³ प्रभु आगे राखा ❀ हँसिकै कृपासिन्धु अस भाखा
चढ़िविमान सुनु सखा विभीषण ❀ गगनजाइ वर्षहु पट भूषण
नभ⁴ पर जाइ विभीषण तबहीं ❀ वरषि दिये मणि अम्बर सबहीं
जो जेहि मन भावै सो लेहीं ❀ मणि मुख मेलि डारि कपि देहीं
हँसत राम सिय अनुज समेता ❀ परम कौतुकी कृपानिकेता

दो० ध्यान न पावहिं जासु मुनि, नेति नेति कह वेद।
कृपासिन्धु सोइ कपिन सों, करत अनेक विनोद॥
उमा योग जप ज्ञान तप, नाना व्रत मख⁵ नेम।
राम कृपा नहिं करहिं तस, जस निष्केवल प्रेम॥

भालु कपिन पट भूषण⁶ पाये ❀ पहिरि पहिरि रघुपतिपहँआये
नाना जिनिस देखि प्रभु कीशा ❀ पुनिपुनि हँसत कोशलाधीशा⁷
चितै सबनपर कीन्हीं दाया ❀ बोले मधुर वचन रघुराया
तुम्हरे बल मैं रावण मारा ❀ तिलक विभीषणकहँ पुनिसारा
निजनिजगृह अब तुम सबजाहू ❀ सुमिरहु मोहिं डरहुजनिकाहू
वचन सुनत प्रेमाकुल वानर ❀ जोरि पाणि⁸ बोले सब सादर

१ दुबला २ घर ३ विमान ४ आकाश ५ यज्ञ ६ गहना ७ राम ८ हाथ॥

प्रभु जो कहहु तुमहिं सब सोहा ❋ हमरे होत वचन सुनि मोहा
दीनजानि कपि किये सनाथा ❋ तुम त्रैलोक्यईश रघुनाथा
सुनि प्रभु वचन लाज हम मरहीं ❋ मशकेकबहुँखगपेतिहितकरहीं
देखि रामरुख वानर ऋच्छा ❋ प्रेममगन नहिं गृह की इच्छा

दो० प्रभु प्रेरित कपि भालु सब, रामरूप उरराखि।
हर्ष विषाद समेत सब, चले विनय बहुभाखि॥
जाम्बवन्त कपिराज नल, अङ्गदादि हनुमन्त।
सहित विभीषण अपर जे, यूथप कपिबलवन्त॥
कहि न सकहिं कछु प्रेमवश, भरिभरिलोचनवाँरि।
सम्मुख चितवहिं रामतनु, नयन निमेष निवारि॥

अतिशय प्रीति देखि रघुराई ❋ लीन्हे सकल विमान चढ़ाई
मनमहँ विप्रचरण शिरनावा ❋ उत्तरदिशिहि विमान चलावा
चलत विमान कोलाहल होई ❋ जय रघुवीर कहै सब कोई
सिंहासन अतिउच्च मनोहर ❋ सिय समेत बैठे ताऊपर
राजत राम समेत भामिनी ❋ मेरु शृङ्ग जनु घन दामिनी
रुचिर विमान चला अतिआतुर ❋ कीन्हीं सुमनवृष्टि हर्षे सुर
परमसुखद चलि त्रिविधँ बयारी ❋ सागर सुरसरि निर्मलवारी
शकुन होहिं सुन्दर चहुँपासा ❋ मनप्रसन्न निर्मल आकासा
कह रघुवीर देखु रण सीता ❋ लक्ष्मण हत्यो इहां इँद्रजीता
हनूमान अङ्गद के मारे ❋ रणमहँ परे निशाचर भारे
कुम्भकर्ण रावण दोउ भाई ❋ इहां हतेउँ सुरमुनि दुखदाई

दो० यह लखु सुन्दरि सेतु जहँ, थापेउँ शिव सुखधाम।
सीता सहित कृपायतन, शम्भुहिं कीन्ह प्रणाम॥
जहँ जहँ करुणासिन्धु वन, कीन्ह वास विश्राम।

१ मशा २ गरुड़ ३ आनन्द ४ आंसू ५ कँगूरा ६ बादल ७ शीतल, मन्द, सुगन्ध॥

सकल दिखाये जानकिहि, कहि कहि सबके नाम॥

सपदि विमान तहां चलिआवा ❀ दण्डकवन जहँ परम सुहावा
कुम्भजादि मुनिनायक नाना ❀ गये राम सबके अस्थाना
सकल मुनिन सों पाइ अशीशा ❀ आये चित्रकूट जगदीशा
तहँ करि ऋषिनकेर सन्तोखा ❀ चला विमान तहांते चोखा
बहुरि राम जानकी दिखाई ❀ यमुना कलिमलहरणि सुहाई
पुनि देखी सुरसरी पुनीता ❀ राम कहा प्रणाम करु सीता
तीरथपति पुनि दीख प्रयागा ❀ देखत जन्म कोटि अघभागा
देखि राम पावनि पुनि बेनी ❀ हरणशोक सुरलोकनिशैनी
देखी अवधपुरी अतिपावनि ❀ त्रिविध ताप भवदाप नशावनि

दो० तब रघुनन्दन सियसहित, अवधहिकीन्हप्रणाम।
सजलविलोचनपुलकतनु, पुनिपुनि हरषित राम॥
बहुरि त्रिवेणी आय प्रभु, हरषित मज्जन कीन्ह।
कपिन समेत महीसुरन,दानविविधविधिदीन्ह॥

प्रभु हनुमन्तहि कहा बुझाई ❀ धरि द्विजरूप अवधपुर जाई
भरतहिं कुशल हमारि सुनावहु ❀ समाचार लै आतुर आवहु
तुरत पवनसुत गमनत भयऊ ❀ तब प्रभु भरद्वाज पहँ गयऊ
नाना विधि पूजा मुनि कीन्हीं ❀अस्तुतिकरिपुनिआशिषदीन्हीं
मुनिपद बन्दि युगल कर जोरी ❀ चढ़ि विमान प्रभु चले बहोरी
इहां निषाद सुना प्रभु आये ❀ नाव नाव करि लोग बुलाये
सुरसरि लांघि यान जब आवा ❀ उतरा तट प्रभु आयसु पावा
तव सीता पूजी सुरसरी ❀ बहुप्रकार करि चरणन परी
दीन्ह अशीश मुदितमन गङ्गा ❀ सुन्दरि तव अहिवात अभङ्गा
सुनतहि गुह धावा प्रेमाकुल ❀ आवा निकट परमसुखसंकुल

१ शीघ्र २ गङ्गाजी ३ सीढ़ी ४ हाल ५ हनुमान् ६ दोनों ७ विमान ८ किनारा॥

प्रभुहिं बिलोकि सहित बैदेही ❀ परेउ अवनि तनु सुधि नहिं तेही
परम प्रीति बिलोकि रघुराई ❀ हरषि उठाइ लीन्ह उरलाई

छं० लिय हृदयलाइ कृपानिधान सुजान राम रमापती।
बैठारि परम समीप पूंछी कुशल सो करि बीनती॥
अब कुशल पदपङ्कज बिलोकि बिरंञ्चि शङ्कर सेव्य जे।
सुखधाम पूरणकाम राम नमामि राम नमामि ते॥
सब भांति अधम निषाद सो हरि भरत ज्यों उरलाइये।
मतिमन्द तुलसीदास सो प्रभु मोहवश बिसराइये॥
यह रावणारिचरित्र पावन रामपदरतिप्रद सदा।
कामादिहर बिज्ञानकर सुर सिद्ध मुनि गावहिं मुदा॥

दो० समर बिजय रघुनाथ के, सुनहिं जे सदा सुजान।
बिजय बिवेक बिभूति नित, तिनहिं देहिं भगवान॥
यह कलिकाल मलायतन, मन करि देखु बिचार।
श्रीरघुनायक नाम तजि, नहिं कछु आन अधार॥

इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेलङ्काकाण्डे
विमलवैराग्यसम्पादनोनामषष्ठस्सोपानः ॥ ६ ॥

---

१ पृथ्वी २ ब्रह्मा ३ नीच ४ श्रीरामचन्द्र ५ हर्ष से ६ मल का घर॥

रा० उ० चि० नं० १२



श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीगोस्वामि

तुलसीदासकृत

रामायण

॥ उत्तरकाण्ड ॥

मङ्गलाचरणम्

श्लोक ॥ केकीकण्ठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदासुप्रसन्नम् ॥ पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानं नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामम् ॥ १ ॥ कोशलेन्द्रपदकञ्जमञ्जुलौ पद्मयोनिशितिकण्ठवन्दितौ ॥ जानकीकरसरोजलालितौ चिन्तकस्य मनभृङ्गसङ्गिनौ ॥ २ ॥ कुन्दइन्दुदरगौरसुन्दरं चाम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम् ॥ कारुणीककलकञ्जलोचनं नौमि शङ्करमनङ्गमोचनम् ॥ ३ ॥

दो॰ रहा एक दिन अवधिकर, अतिआरत पुरलोग ।
जहँ तहँ शोचहिं नारि नर, कृशतनु रामवियोग ॥
शकुन होहिं सुन्दर सकल, मन प्रसन्न सबकेर ।

प्रभु आगमन जनाव जनु, नगर रम्यं[1] चहुँफेर ॥
कौशल्यादिक मातु सब, मन अनंद अस होइ ।
आये प्रभु सिय अनुजयुत[2], कहनचहत असकोइ ॥
भरत नयन भुज दक्षिण, फरकहिं बारहिंबार ।
जानि शकुन मनहर्ष[3]अति, लागे करन विचार ॥

रहा एक दिन अवधि अधारा ❀ समुझत मन दुख भयउ अपारा
कारण कवन नाथ नहिं आये ❀ जानिकुटिलप्रभुमोहिं बिसराये
अहह धन्य लक्ष्मण बड़भागी ❀ राम पदारविन्द अनुरागी
कपटी कुटिल नाथ मोहिं चीन्हा ❀ ताते नाथ सङ्ग नहिं लीन्हा
जो करणी समुझै प्रभु मोरी ❀ नहिं निस्तार कल्पशतकोरी
जन अवगुण प्रभु मान न काऊ ❀ दीनबन्धु अतिमृदुल स्वभाऊ
मोरे जिय भरोस दृढ़[4] सोई ❀ मिलिहहिं राम शकुनशुभ होई
बीते अवधि रहे जो प्राना ❀ अधमकवन जग मोहिं समाना

दो॰ रामविरहसागर महँ, भरत मगन मन होत ।
विप्ररूप धरि पवनसुत, आइ गये जिमि पोत[6] ॥
बैठे देखि कुशासन, जटामुकुट कृशगात ।
राम राम रघुपति जपत, स्रवत नयन जलजात[7] ॥

देखत हनूमान अति हर्षे ❀ पुलकगात लोचन जल वर्षे
मनमहँ बहुतभांति सुखमानी ❀ बोले श्रवण सुधासम बानी
जासु विरह शोचहु दिन राती ❀ रटहु निरन्तर गुणगण पांती
रघुकुलतिलक सुजनसुखदाता ❀ आये कुशल देवमुनित्राता
रिपुरण जीति सुयशसुरगावत ❀ सीताअनुजसहित प्रभु आवत
सुनत वचन बिसरे सब दूखा ❀ तृषावन्त जिमि पाव पियूखा[8]
को तुम तात कहांते आये ❀ मोहिं परमाप्रिय वचन सुनाये

१ सुन्दर २ लक्ष्मण ३ खुशी ४ मुद्दत ५ मज़बूत ६ जहाज़ ७ कमल ८ अमृत ॥

मारुतसुत मैं कपि हनुमाना ❀ नाम मोर सुनु कृपानिधाना
दीनबन्धु रघुपति कर किङ्कर[1] ❀ सुनत भरत भेंटे उठि सादर[2]
मिलत प्रेम नहिं हृदय समाता ❀ नयनस्रवतजल पुलकितगाता
कपि तव दरश सकल दुख बीते ❀ मिले आजु मोहिं राम सप्रीते
बारबार पूंछी कुशलाता ❀ तो कहँ काह देउँ सुनु भ्राता[3]
यहि सन्देश सरिस जगमाहीं ❀ करि विचार देखा कछु नाहीं
नाहिंन उऋण तात मैं तोहीं ❀ अब प्रभु चरित सुनावहु मोहीं
तब हनुमान नाइ पद माथा ❀ कही सकल रघुपति गुणगाथा[4]
कहु कपि कबहुँ कृपालु गुसाईं ❀ सुमिरत मोहिं दास की नाईं

छं० निजदासज्योंरघुवंशभूषणकबहुँममसुमिरणकस्यो
सुनिभरतवचनविनीतअतिकपि पुलकतनुचरणनपस्यो
रघुवीर निजमुख जासुगुणगण कहत अगजगनाथ जो।
काहे न होहु विनीत परम पुनीत सद्गुणसिन्धु[5] सो॥

दो० राम प्राणप्रिय नाथ तुम, सत्य वचन मम तात।
पुनिपुनि मिलत भरतसन, प्रेम न हृदय समात॥

सो० भरत चरण शिरनाय, तुरत गये कपि रामपहँ।
कही कुशल सब जाय, हरषिचले प्रभु यानचढ़ि॥

हरषि भरत कोशलपुर[6] आये ❀ समाचार सब गुरुहिं सुनाये
पुनि मन्दिर महँ बात जनाई ❀ आवत नगर कुशल रघुराई
सुनत सकल जननी[7] उठिधाई ❀ कहि प्रभुकुशल भरत समुझाई
समाचार पुरवासिन पाये ❀ नर अरु नारि हरषि उठि धाये
दधि दूर्वा रोचन फल फूला ❀ नव तुलसीदल मङ्गलमूला
भरि भरि थार हेम वरभामिनि ❀ गावत चलीं सिन्धुरागामिनि[8]
जो जैसहिं तैसहिं उठि धावहिं ❀ बाल वृद्ध कोउ सङ्ग न लावहिं

१ सेवक २ आदर समेत ३ भाई ४ कथा ५ समुद्र ६ अयोध्या ७ माता ८ गजगामिनी॥

एक एक सन पूंछहिं धाई ❀ तुम देखे दयालु रघुराई
अवधपुरी प्रभु आवत जानी ❀ भई सकल शोभा की खानी
भा सरयू अतिनिर्म्मल नीरा ❀ बहै सुहावनि त्रिविध समीरा

दो० हरषित गुरु पुरजन अनुज, भूसुर वृन्द समेत।
चले भरत अतिप्रेम मन, सम्मुख कृपानिकेत॥
बहुतक चढ़ीं अटारिन, निरखहिंगगनविमान।
देखि मधुर स्वर हरषित, करहिं सुमङ्गल गान॥
राकाशशि रघुपतिपुरी, सिन्धु देखि हर्षान।
बढ़े कोलाहल करत जनु, नारि तरङ्ग समान॥

इहां भानुकुलकमलदिवाकर ❀ कपिन देखावत नगरशुभाकर
सुनु कपीश अङ्गद लङ्केशा ❀ पावनि पुरी रुचिर यह देशा
यद्यपि सब वैकुण्ठ बखाना ❀ वेद पुराण विदित जग जाना
अवधसरिस प्रिय मोहिं न सोऊ ❀ यह प्रसङ्ग जानै कोउ कोऊ
जन्मभूमि ममपुरी सुहावनि ❀ उत्तरदिशि सरयू बह पावनि
जे मज्जहिं ते विनहिं प्रयासा ❀ मम समीप नर पावहिं वासा
अतिप्रिय मोहिं इहां के वासी ❀ ममधामदा पुरी सुखरासी
हर्षे कपि सुनि प्रभु की बानी ❀ धन्य अवध जेहि राम बखानी

दो० आवत देखे लोग सब, कृपासिन्धु भगवान।
नगर निकट प्रभु प्रेरेऊ, उतरा भूमि विमान॥
बहुरि कहेउ प्रभु पुष्पकहि, तुम कुबेर पहँ जाहु।
प्रेरित राम चलेउ सो, हर्ष विरह अति ताहु॥

आये भरत सङ्ग सब लोगा ❀ कृशतनु श्रीरघुवीर वियोगा
वामदेव वशिष्ठ मुनिनायक ❀ देखा प्रभु महि धरि धनुशायक
धाइ धरे गुरुचरण सरोरुह ❀ अनुजसहितअतिपुलकतनोरुह

१ वायु २ ब्राह्मण ३ पूर्णिमाका चन्द्रमा ४ लहर ५ राम ६ कुबेरका विमान ७ कमल॥

भेंटे कुशल पूंछि मुनिराया ❋ हमरे कुशल तुम्हारिहि दाया
सकल द्विजन कहँ नायउ माथा ❋ धर्म धुरन्धर रघुकुलनाथा
गहे भरत पुनि प्रभु पदपङ्कज ❋ नवहिंजिनहिंशङ्करसुरमुनिश्रज
परे भूमि नहिं उठत उठाये ❋ बलकरि कृपासिन्धु उरलाये
श्यामलगात रोम भये ठाढ़े ❋ नवराजीव नयन जल बाढ़े

छं० राजीवलोचनस्रवतजलतनु ललितपुलकावलिबनी
अतिप्रेमहृदयलगाइअनुजहिमिलतप्रभुत्रिभुवनधनी ॥
प्रभुमिलत अनुजहिसोह मोपहँ जात नहिं उपमा[१] कही ।
जनु प्रेम अरु शृङ्गार तनुधरि मिलत वर सुषमा[२] लही॥
पूंछत कृपानिधि कुशल भरतहिं वचन वेगि न आवई ।
सुनि शिवा सो सुख वचन मनते भिन्न जान न पावई ॥
अबकुशल कोशलनाथ आरतजानि जनदर्शनदियो ।
बूड़तविरहवारिधि[३]कृपानिधि काढ़िमोहिंकरगहिलियो॥

दो० पुनि प्रभु हरषित शत्रुहन, भेंटे हृदय लगाइ ।
लक्ष्मण भेंटे भरत पुनि, प्रेम न हृदय समाइ ॥

भरत अनुज लक्ष्मण तब भेंटे ❋ दुसह विरह सम्भव दुख मेटे
सीता चरण भरत शिरनावा ❋ अनुज समेत परमसुखपावा
प्रभु विलोकि हर्षे पुरवासी ❋ जनितवियोग विपतिसबनासी
प्रेमातुर सबलोग निहारी ❋ कौतुक[४] कीन्ह कृपालु खरारी[५]
अमितरूप प्रकटे तेहि काला ❋ यथायोग्यमिलि सबहिंकृपाला
कृपादृष्टि सबलोग विलोकी ❋ किये सकल नर नारि विशोकी
क्षणमहँ सबहिं मिले भगवाना ❋ उमा मर्म[६] यह काहु न जाना
यहिविधि सबहिं सुखीकरि रामा ❋ आगे चले शीलगुणधामा
कौशल्यादि मातु सब धाईं ❋ निरखि बच्छ जनु धेनु[७] लवाईं[८]

१ उपमा २ समता ३ शोभा ४ समुद्र ५ खेल ६ श्रीरामचन्द्र ७ भेद ८ गाय ॥

छं० जनु धेनु बालकबच्छ तजि गृह चरन वनपरवश गईं।
दिनअन्त पुर रुख स्रवत थन हुङ्कार करि धावत भईं॥
अतिप्रेम प्रभु सब मातु भेंटे वचन मृदु बहुविधि कहे।
गइ विषमविपतिवियोगभवतिन हर्षसुखअगणितलहे॥
दो० भेंटेउ तनय सुमित्रा, रामचरणरत जानि।
रामहिं मिलत केकयी, हृदय बहुत सकुचानि॥
लक्ष्मण सब मातन मिले, हर्षे आशिष पाइ।
केकयिकहँपुनिपुनिमिले, मनकर क्षोभ न जाइ॥
सासुन सबहिं मिली वैदेही ❀ चरणन लागि हर्ष अति तेही
देहिं अशीश पूंछि कुशलाता ❀ होइ अचल तुम्हार अहिवाता
सब रघुपति मुखकमल विलोकी ❀ मङ्गलजानि नयनजल रोकी
कनक थार आरती उतारहिं ❀ बारबार प्रभु गात निहारहिं
नाना भांति निछावरि करहीं ❀ परमानन्द हर्ष उर भरहीं
कौशल्या पुनि पुनि रघुवीरहिं ❀ चितवहिं कृपासिन्धु रणधीरहिं
हृदय विचारति बारहिंबारा ❀ कवन भांति लङ्कापति मारा
अतिसुकुमार युगल मम बारे ❀ निशिचर सुभट महाबल भारे
दो० लक्ष्मण अरु सीतासहित, प्रभुहिं विलोकहिं मात।
परमानन्द मगन मन, पुनिपुनिपुलकितगात॥
लङ्कापति कपीश नल नीला ❀ जामवन्त अङ्गद शुभशीला
हनुमदादि सब वानर वीरा ❀ धरे मनोहर मनुजशरीरा
भरत सनेह शील व्रत नेमा ❀ सादर सब वर्णहिं अतिप्रेमा
देखि नगरवासिन की रीती ❀ सकल सराहहिं प्रभुपदप्रीती
पुनि रघुपति निज सखा बुलाये ❀ मुनिपदलागहु सबहिं सिखाये
गुरु वशिष्ठ कुलपूज्य हमारे ❀ इनकी कृपा दनुज रण मारे

१ सन्ध्या २ मीठे ३ कठिन ४ सन्देह ५ सीता ६ सोना ७ लड़के ८ राक्षस॥

ये सब सखा सुनिय मुनि मेरे ❀ भये समरसागर कहँ बेरे
मम हित लागि जन्म इन हारे ❀ भरतहुते मोहिं अधिक पियारे
सुनि प्रभुवचन मगन सब भये ❀ निमिष निमिष उपजतसुखनये
दो० कौशल्या के चरणयुग, पुनि तिन नायउ माथ।
आशिष दीन्हे हरषि तुम, मोहिंप्रियजिमिरघुनाथ॥
सुमनवृष्टि नभ संकुल, भवन चले सुखकन्द।
चढ़े अटारिन देखहीं, नगर नारि नर वृन्द॥
कञ्चन कलश विचित्र सँवारे ❀ सबन धरे सजि निज निज द्वारे
बन्दनवार पताका केतू ❀ सबन बनाये मंगल हेतू
वीथिनं सकल सुगन्ध सिंचाये ❀ गजमणि रचि बहुचौक पुराये
नानाभांति सुमङ्गल साजे ❀ हर्षनिशान नगर बहु बाजे
जहँ तहँ नारि निछावरि करहीं ❀ देहिं अशीश हर्ष उर भरहीं
कञ्चनथार आरती नाना ❀ युवती साजि करहिं कल गाना
करहिं आरती आरतहरकी ❀ रघुकुलकमलविपिनदिनकरकी
पुर शोभा सम्पति कल्याना ❀ निगम शेष शारदा बखाना
तेऊ चरित देखि ठगि रहहीं ❀ उमा तासुगुण नर किमि कहहीं
दो० नारि कुमुदिनी अवध सर, रघुपतिविरहदिनेश।
अस्त भये विकसित भईं, निरखि राम राकेश॥
होहिंशकुनशुभविविधविधि, बाजहिंगगननिशान।
पुर नर नारि सनाथ करि, भवन चले भगवान॥
प्रभु जाना केकयी लजानी ❀ प्रथम तासु गृह गये भवानी
ताहि प्रबोधि बहुत सुख दीन्हा ❀ तबनिजभवन गवनप्रभुकीन्हा
कृपासिन्धु जब मन्दिर गयऊ ❀ पुर नर नारि सुखी सब भयऊ
गुरु वशिष्ठ द्विज लिये बुलाई ❀ आजु सुघरी सुदिन सुखदाई
सब द्विज देहु हरषि अनुशासन ❀ रामचन्द्र बैठहिं सिंहासन

१ पल २ सड़कें ३ सोना ४ श्रीरामचन्द्र ५ वन ६ वेद ७ कोकाबेली॥

मुनि वशिष्ठ के वचन सुहाये ❋ सुनत सकल विप्रन[1] मन भाये
कहहिं वचन मृदु विप्र अनेका[2] ❋ जगअभिराम राम अभिषेका
अब मुनिवर विलम्ब नहिं कीजै ❋ महाराज कहँ तिलक करीजै

दो० तब मुनि कहेउ सुमन्त्रसन, तुरत चले शिरनाइ ।
रथ अनेक गज बाँजि[3] बहु, सकल सँवारे जाइ ॥
जहँ तहँ धावन पठै पुनि, मङ्गल द्रव्य मँगाइ ।
हर्ष समेत वशिष्ठ पद, पुनि शिरनायउ आइ ॥

अवधपुरी अतिरुचिर बनाई ❋ देवन सुमनवृष्टि[4] झरिलाई
राम कहा सेवकन बुलाई ❋ प्रथम सखन नहवावहु जाई
सुनत वचन जन जहँ तहँ धाये ❋ सुग्रीवादि तुरत नहवाये
पुनि करुणानिधि भरत हँकारे ❋ निज कर जटा राम निरवारे
नहवाये प्रभु तीनिहुँ भाई ❋ भक्तबछल कृपालु रघुराई
भरत भाग्य प्रभु कोमलताई ❋ शेष कोटिशत सकहिं न गाई
पुनि निज जटा राम बिवराये ❋ मुनि अनुशासन पाय नहाये
करि मज्जन भूषण प्रभु साजे ❋ अङ्ग अनङ्ग[5] कोटि छवि लाजे

दो० सासुन सादर जानकिहिं, मज्जन तुरत कराइ ।
दिव्यवसन वरभूषणनि, अँग अँग सजे बनाइ ॥
राम वाम दिशि शोभित, रमा रूपगुणखानि ।
देखि सासु सब हरषित, जन्मसफल निज[6] जानि ॥
सुनु खगेश तेहि अवसर, ब्रह्मा शिव मुनिवृन्द[7] ।
चढ़ि बिमान आये सकल, सुर देखन सुखकन्द ॥

प्रभु बिलोकि मुनिमन अनुरागा ❋ तुरत दिव्य सिंहासन मांगा
रविसम तेज बरणि नहिं जाई ❋ बैठे राम द्विजन शिरनाई
जनकसुता समेत रघुराई ❋ देखि प्रहर्षे मुनिसमुदाई

१ ब्राह्मण २ बहुत ३ घोड़ा ४ फूलोंकी वर्षा ५ कामदेव ६ अपना ७ झुंड ॥

रा० उ० चि० नं० १४



वेद मन्त्र तब द्विजन उचारे ❀ नभ सुर मुनिजयजयतिपुकारे
प्रथम तिलक वशिष्ठमुनि कीन्हा ❀ पुनि सब विप्रन आयसु दीन्हा
सुत विलोकि हरषीं महतारी ❀ बारबार आरती उतारी
विप्रन दान विविध विधि दीन्हें ❀ याचक सकल अयाचक कीन्हें
सिंहासन पर त्रिभुवनसाईं ❀ देखि सुरन दुन्दुभी बजाईं

छं० नभ दुन्दुभी बाजहिं विपुल गन्धर्व किन्नर गावहीं।
नाचहिं अप्सरावृन्द परमानन्द सुर मुनि पावहीं॥
भरतादि अनुज विभीषणाङ्गद हनुमदादि समेत जे।
गहे छत्र चामर व्यजन धनु असि चर्म शक्ति विराजते॥
सियसहित दिनकरवंशभूषण काम बहु छवि सोहहीं।
नवअम्बुधर वर गात अम्बर पीत मुनिमन मोहहीं॥
मुकुटाङ्गदादि विचित्र भूषण अङ्ग अङ्गन प्रति सजे।
अम्भोजनयन विशाल उर भुज धन्य नर निरखन्त जे॥

दो० वह शोभा सुसमाज सुख, कहत न बनै खगेश।
वरणै शारद शेष श्रुति, सो रस जानु महेश॥
भिन्न भिन्न अस्तुति करि, गे सुर निज निजधाम।
वन्दिवेष धरि वेद तब, आये जहँ श्रीराम॥
प्रभु सर्वज्ञ कीन्ह अति, आदर कृपानिधान।
लख्यो न काहू मर्म कछु, लगे करन गुणगान॥

छं० जय सगुण निर्गुणरूप राम अनूप भूपशिरोमने।
दशकन्धरादिप्रचण्डनिशिचर प्रबलखलभुजबलहने॥
अवतार नर संसारभार विभंजि दारुण दुख दहे।
जय प्रणतपाल दयाल प्रभु संयुक्त शक्ति नमामहे॥

१ आकाश २ भिखारी ३ पंखा ४ तलवार ५ कमल ६ सरस्वती ७ राजा॥

तव विषम मायावश सुरासुर नाग नर अग जग हरे ।
भवपन्थभ्रमितअमितदिवसनिशिकालकर्मगुणनभरे॥
जेहि नाथ करि करुणाविलोकहु त्रिविध दुख ते निर्बहे ।
भवखेदछेदनदक्ष हम कहँ रक्ष राम नमामहे ॥
जे ज्ञान मानविमत्त तव भवहरणि भक्ति न आदरी ।
ते पाइ सुरदुर्लभपदादपि परत हम देखत हरी ॥
विश्वास करि सब आश परिहरि दास तव जे ह्वैरहे ।
जपि नाम तव बिनुश्रम तरहिं भव नाथ राम नमामहे ॥
जे चरण शिवअजपूज्य रज शुभपरसि मुनिपत्नी तरी ।
नखनिर्गता मुनिवन्दिता त्रैलोक्यपावनि सुरसरी ॥
ध्वजकुलिशअंकुशकंजयुत वनफिरतकंटकजिनलहे ।
पदकंज द्वन्द मुकुन्द राम रमेश नित्य भजामहे ॥
अव्यक्तमूलमनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने ।
षट कन्ध शाखा पञ्चविंश अनेक पर्ण सुमन घने ॥
फलयुगलविधिकटुमधुरबेलि अकेलिजेहिआश्रितरहे ।
पल्लवित फूलत नवल नित संसारविटप नमामहे ॥
जे ब्रह्म अज अद्वैत अनुभवगम्य मनपर ध्यावहीं ।
ते कहहु जानहु नाथ हम तव सगुण यश नित गावहीं ॥
करुणायतन प्रभु सद्गुणाकर देव यह वर मांगहीं ।
मन कर्म वचन विकार तजि तवचरण हम अनुरागहीं ॥
दो० सबके देखत वेदनहु, विनती कीन्ह उदार ।
अन्तर्द्धान भये पुनि, गये ब्रह्म आगार ॥
वैनतेय सुनु शम्भु तब, आये जहँ रघुवीर ।

१ स्थावर २ जङ्गम ३ दुःख ४ अहल्या ५ वज्र ६ घर ७ गरुड़ ॥

विनय करत गद्गदगिरा, पूरित पुलक शरीर ॥
छं० जय राम रमारमणं शमनं ।
भव[1]तापभयाकुल पाहि जनं ॥
अवधेश सुरेश रमेश विभो ।
शरणागत मांगत पाहि प्रभो ॥
दशशीश[2]विनाशन बीस भुजा ।
कृत दूरि महा महि भूरि रुजा ॥
रजनीचर[3] वृन्द पतङ्ग[4] रहे ।
शर पावक तेज प्रचण्ड दहे ॥
महि मण्डल मण्डन चारुतरं ।
धृत शायक चाप निषङ्ग[5]वरं ॥
मद मोह महाममता रजनी[6] ।
तमपुंज दिवाकर तेज अनी[7] ॥
मनुजाद किरात निपात किये ।
मृगलोग कुभोग शरेण हिये ॥
हति नाथ अनाथन पाहि हरे ।
विषयावन पामर भूलि परे ॥
बहुरोग वियोगन लोग हये ।
भवदंघ्रि निरादर के फल ये ॥
भवसिन्धु अगाध[8] परे नर ते ।
पदपङ्कज प्रेम न जे करते ॥
अतिदीन मलीन दुखी नितहीं ।
जिनके पदपङ्कज प्रीति नहीं ॥

१ संसार २ रावण ३ राक्षस ४ पतिंगा ५ तरकस ६ रात्रि ७ सेना ८ अथाह ॥

अवलम्ब भवन्त कथा जिनके।
प्रिय सन्त अनन्त सदा तिनके॥
नहिं राग न रोष[२] न मान मदा।
तिनके सम वैभव वा विपदा॥
यहिते तव सेवक होत मुदा।
मुनि त्यागत योग भरोस सदा॥
करि प्रेम निरन्तर[३] नेम लिये।
पदपङ्कज सेवत शुद्ध हिये॥
सम मान निरादर आदरही।
सोइ सन्त सुखी विचरन्त मही॥
मुनि मानस पङ्कज भृङ्ग[५] भजे।
रघुवीर महारणधीर अजे॥
तव नाम जपामि नमामि हरी।
भवरोग महामद मानअरी॥
गुण शील कृपा परमायतनं।
प्रणमामि निरन्तर श्रीरमनं॥
रघुनन्द निकन्दन[६] द्वन्द घनं।
महिपाल विलोकिय दीनजनं॥
दो० बारबार वर मांगौं, हरषि देहु श्रीरंग।
पद सरोज अनपावनी, भक्ति सदा सतसंग॥
बरणि उमापति[७] रामगुण, हरषि गये कैलास।
तब प्रभु कपिन दिवाये, सबविधि सुखप्रदवास॥
सुनु खगपति यह कथा सुहावनि ❀ त्रिविध ताप भवदोष नशावनि

१ आप की २ क्रोध ३ सदा ४ पृथ्वी ५ भँवरा ६ नाशनेवाले ७ शिव॥

महाराजकर शुभ अभिषेका ❀ सुनत लहहिं नर विरति विवेका
जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं ❀ सुखसम्पति नानाविधि पावहिं
सुरदुर्लभ सुख करि जगमाहीं ❀ अन्तकाल रघुपतिपुर जाहीं
सुनहिं विमुक्त विरत अरु विषई ❀ लहहिं भक्ति सुख सम्पति नितई
खगपति रामकथा मैं वरणी ❀ सुमतिविलास त्रासदुखहरणी
विरति विवेक भक्ति दृढ़करणी ❀ मोहनदी कहँ सुन्दर तरणी
नित नव मंगल कोशलपुरी ❀ हरषित रहहिं लोग सब कुरी
नित नव प्रीति रामपदपंकज ❀ सेवत जेहि शङ्कर सुर मुनि अज
मंगँन बहु प्रकार पहिराये ❀ द्विजन दान नानाविधि पाये

दो॰ ब्रह्मानन्द मगन कपि, सबके प्रभुपदप्रीति।
जात न जानेउ दिवसनिशि, गये मास षट बीति॥

बिसरे गृह सपनेहु सुधि नाहीं ❀ जिमि परद्रोह सन्त मनमाहीं
तब रघुपति सब सखा बुलाये ❀ आइ सबन सादर शिरनाये
प्रेम समेत निकट बैठारे ❀ भक्तसुखद मृदुवचन उचारे
तुम अति कीन्हि मोरि सेवकाई ❀ मुखपर केहि विधि करौं बड़ाई
ताते मोहिं तुम अतिप्रिय लागे ❀ ममहितलागि भवनसुख त्यागे
अनुज राज सम्पति वैदेही ❀ देह गेह परिवार सनेही
सबमोहिंप्रियनहिंतुमहिंसमाना ❀ मृषा न कहौं मोर यह बाना
सबकहँ प्रिय सेवक यह नीती ❀ मोरे अधिक दास पर प्रीती

दो॰ अब गृह जाहु सखा सब, भजहु मोहिं दृढ़ नेम।
सदा सर्वगत सर्वहित, जानि करेहु अतिप्रेम॥

सुनि प्रभुवचन मगन सब भये ❀ को हम कहां बिसरि तनु गये
इकटक रहे जोरि कर आगे ❀ कहि न सकत कछु अति अनुरागे
परमप्रेम तिनकर प्रभु देखी ❀ कहा विविधविधि ज्ञान विशेखी
प्रभु सम्मुख कछु कहे न पारहिं ❀ पुनिपुनि चरणसरोज निहारहिं

१ तिलक २ नाव ३ भिखारी ४ मित्र ५ झुंड ६ स्वभाव ७ कमल॥

तब प्रभु भूषण वसन मँगाये ❀ नाना रङ्ग अनूप सुहाये
सुग्रीवहि प्रथमहिं पहिराये ❀ भरत वसन निज हाथ बनाये
प्रभु प्रेरित लक्ष्मण पहिराये ❀ लङ्कापति रघुपति मनभाये
अङ्गद बैठि रहे नहिं डोले ❀ प्रीति देखि प्रभु ताहि न बोले

दो० जाम्बवन्त नीलादि सब, पहिराये रघुनाथ।
हियधरि रामस्वरूप सब, चले नाय पद माथ॥
तब अङ्गद उठि नाइ शिर, सजलनयन करजोरि।
अतिविनीत बोले वचन, मनहुँ प्रेमरस बोरि॥

सुनु सर्वज्ञ कृपासुखसिन्धू ❀ दीन दयाकर आरतबन्धू
मरतीबार नाथ मोहिं बाली ❀ गयो तुम्हारे पगतर घाली
अशरणशरण विरद सम्भारी ❀ मोहिं जनि तजहु भक्तभयहारी
मोरे प्रभु तुम गुरु पितु माता ❀ जाउँ कहां तजि पदजलजाता
तुमहिं विचारि कहहु नरनाहा ❀ प्रभुतजि भवन काज मम काहा
बालक अबुध ज्ञान बलहीना ❀ राखहु शरण जानि जनदीना
नीच टहल गृहकी सब करिहौं ❀ पद विलोकि भवसागर तरिहौं
अस कहि चरण परे प्रभु पाहीं ❀ अब जनि नाथ कहहु गृहजाहीं

दो० अंगद वचन विनीत सुनि, रघुपति करुणासींव।
प्रभु उठाय उर लायऊ, सजल नयन राजीव॥
निजउरमाला वसन मणि, बालितनय पहिराय।
बिदा किये भगवान तब, बहुप्रकार समुझाय॥

भरत अनुज सौमित्रि समेता ❀ पठवन चले भक्तकृतचेता
अंगद हृदय प्रेम नहिं थोरा ❀ फिरिफिरिचितवतप्रभुकीओरा
बारबार करि दण्डप्रणामा ❀ मन असरहनकहहिं मोहिं रामा
रामविलोकनि बोलनि चलनी ❀ सुमिरिसुमिरिशोचतहँसिमिलनी
प्रभुरुख देखि विनय बहु भाखी ❀ चले हृदय पदपंकज राखी

१ अपने २ विभीषण ३ सब जाननेवाले ४ गरीब ५ कमल ६ राजा ७ लक्ष्मण॥

अतिआदर सब कपि पहुँचाये ❀ भाइन सहित राम फिरि आये
तब सुग्रीव चरण गहि नाना ❀ भांति विनय कीन्हीं हनुमाना
दिन दश करि रघुपतिपद सेवा ❀ तब फिरि चरण देखिहौं देवा
पुण्यपुञ्ज तुम पवनकुमारा ❀ सेवहु जाइ कृपाआगारा
अस कहि कपिपति चले तुरंता ❀ अंगद कहेउ सुनहु हनुमंता

दो० करेहु दण्डवत प्रभुसन, तुम्हहिं कहौं करजोरि ।
बारबार रघुनायकहिं, सुरति करायहु मोरि ॥
असकहिचलेउ बालिसुत, फिरि आये हनुमन्त ।
तासु प्रीति प्रभुसन कही, मगन भये भगवन्त ॥
कुलिशहुचाहिकठोरअति, कोमलकुसुँमहुचाहि ।
चित खगेश रघुनाथ अस, समुझिपरै कहुकाहि ॥

पुनि कृपालु लिय बोलिनिषादा ❀ दीन्हेउ भूषण वसन प्रसादा
जाहु भवन मम सुमिरण करेहू ❀ मन क्रम वचन धर्म अनुसरेहू
तुम मम सखा भरत सम भ्राता ❀ सदा रहेहु पुरै आवत जाता
वचन सुनत उपजा सुख भारी ❀ परेउ चरण लोचनँ भरि वारी
चरणकमल उर धरि गृह आवा ❀ प्रभुप्रभाव परिजनँहिं सुनावा
रघुपति चरित देखि पुरवासी ❀ पुनिपुनि कहहिं धन्यसुखरासी
राम राज बैठे त्रय लोका ❀ हरषित भयउ गयउ सब शोका
बैर न कर काहूसन कोई ❀ रामप्रताप विषमता खोई

दो० वर्णाश्रम निज निजधरम, निरत वेदपथ लोग ।
चलहिंसदा पावहिंसुखहिं, नहिं भय शोक न रोग॥

दैहिक दैविक भौतिक तापा ❀ रामराज्य नहिं काहुहिं व्यापा
सब नर करहिं परस्पर प्रीती ❀ चलहिं सुधर्म निरत श्रुतिनीती
चारिउ चरण धर्म जग माहीं ❀ पूरिरहा सपनेहुँ अघँ नाहीं
रामभक्तिरत नर अरु नारी ❀ सकलपरमगति के अधिकारी

१ पकड़ २ ढेर ३ फूल ४ नगर ५ आंख ६ कुटुम्बी ७ पाप ॥

अल्पमृत्यु नहिं कवनिउँ पीरा ❋ सब सुन्दर सब निरुजशरीरा
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना ❋ नहिं कोउ अबुध न लक्षणहीना
सब निर्दम्भ धर्म्मरत धुनी ❋ नर अरु नारि चतुर शुभगुनी
सब गुणज्ञ सब पण्डित ज्ञानी ❋ सब कृतज्ञ नहिं कपट सयानी

दो० रामराज्य विहगेश[1] सुनु, सचराचर जग माहिं।
काल कर्म्म स्वभाव गुण, कृतदुख काहुहि नाहिं॥

भूमि सप्त[3] सागर मेखला ❋ एक भूप रघुपति कोशला
भुवन अनेक रोम[4] प्रति जासू ❋ यह प्रभुता कछु बहुत न तासू
सो महिमा समुभत प्रभुकेरी ❋ यह वर्णत हीनता घनेरी
सोउ महिमा खगेश जिन जानी ❋ फिरियहचरिततिनहुँरतिमानी
सोउ जाने कर फल यह लीला ❋ कहहिं महामुनिवर दमशीला
राम राज्य कर सुख सम्पदा ❋ वरणि न सकहिं फणीश[5] शारदा
सब उदार सब परउपकारी ❋ विप्रचरण सेवक नर नारी
एकनारिव्रत सब नर भारी ❋ ते मन वच क्रम पतिहितकारी

दो० दण्ड यतिन कर भेद जहँ, नृत्यक नृत्यसमाज।
जीतहिं मनहिं सुनिय अस, रामचन्द्र के राज॥

फूलहिं फलहिं सदा तरु कानन[6] ❋ रहहिं एकसँग गज पञ्चानन[7]
खग मृग वैर सहज बिसराई ❋ सबन परस्पर प्रीति बढ़ाई
कूजहिं खग मृग नाना वृन्दा ❋ अभयचरहिं वन करहिं अनन्दा
शीतल सुरभि पवन बह मन्दा ❋ गुञ्जत अलि लैचलु मकरन्दा
लता विटप मांगे मधु द्रवहीं ❋ मनभावते धेनु पय स्रवहीं
ससिसम्पन्न सदा रह धरणी ❋ त्रेता भै सतयुग की करणी
प्रकटीं गिरि नानामणिखानी ❋ जगदातमा भूप पहिंचानी
सरिता सकल बहैं वरवारी ❋ शीतल अमल स्वादु सुखकारी
सागर निज मर्यादा रहहीं ❋ डारहिं रत्न तटनि नर लहहीं

१ वेसमझ २ गरुड़ ३ सात ४ रोवां ५ शेष ६ वन ७ सिंह ८ भँवरा॥

सरसिज संकुल सकल तड़ागा[1] ❀ अतिप्रसन्न दश दिशा विभागा
दो० विधु[2] महि पूर मयूखनन[3], रवि तप तेज न काज।
माँगे वारिद देहिं जल, रामचन्द्र के राज॥
कोटिन वाजिमेध[4] प्रभु कीन्हें ❀ अमितदान विप्रन कहँ दीन्हें
श्रुतिपथ पालक धर्मधुरन्धर ❀ गुणातीत अरु भोग पुरन्दर
पति अनुकूल सदा रह सीता ❀ शोभाखानि सुशील विनीता
जानति कृपासिन्धु प्रभुताई ❀ सेवति चरणकमल मनलाई
यद्यपि गृह सेवक सेवकिनी ❀ सब प्रकार सेवाविधि गुनी
निजकर गृह परिचर्य्या[5] करहीं ❀ रामचन्द्र आयसु अनुसरहीं
जेहिविधिकृपासिन्धुसुखमानहिं ❀ सोइसिय सेवाविधिउरआनहिं
कौशल्यादि सासु गृहमाहीं ❀ सेवहिं सबै मान मद नाहीं
उमा रमा[6] ब्रह्माणि वन्दिता ❀ जगदम्बा सन्तत अनिन्दिता
दो० जाकी कृपा कटाक्ष सुर, चाहत चितवनि सोइ।
राम पदारविन्द रत, रहति स्वभावहिं खोइ॥
सेवहिं सानुकूल सब भाई ❀ रामचरणरति उर अधिकाई
प्रभुपदकमल विलोकत रहहीं ❀ कबहुँ कृपालु हमहिं कछु कहहीं
राम करहिं भ्रातन पर प्रीती ❀ नाना भाँति सिखावहिं नीती
हरषित रहहिं नगर के लोगा ❀ करहिं सकल सुरदुर्लभ भोगा
अहनिशिविधिहिंमनावतरहहीं ❀ श्रीरघुवीर चरण रति चहहीं
दुइ सुत सुन्दर सीता जाये ❀ लव कुश वेद पुराणन गाये
दोउ विजयी विनयी अतिसुन्दर ❀ हरिप्रतिबिम्बमनहुँगुणमन्दिर
दुइ दुइ सुत सब भ्रातन केरे ❀ भये रूप गुण शील घनेरे
दो० ज्ञान गिरा गोतीत अज, माया मन गुण पार।
सोइ सच्चिदानन्द घन, कर नरचरित उदार॥
प्रातकाल सरयू करि मज्जँन[7] ❀ बैठहिं सभा संग द्विजसज्जन

१ तालाब २ चन्द्रमा ३ किरणें ४ अश्वमेध ५ सेवा ६ लक्ष्मी ७ स्नान॥

वेद पुराण वशिष्ठ बखानहिं ❀ सुनहिं राम यद्यपि सब जानहिं
अनुजन संयुत भोजन करहीं ❀ देखि सकल जननी सुखभरहीं
भरत शत्रुहन दोनों भाई ❀ सहित पवनसुत उपवन जाई
पूछहिं बैठि रामगुणगाहा ❀ कह हनुमान सुमतिअवगाहा
सुनतविमलगुणअतिसुखपावहिं ❀ बहुरिबहुरिकै विनय सुनावहिं
सबके गृह गृह होयँ पुराना ❀ रामचरित सुन्दर विधि नाना
नर अरु नारि रामगुणगानहिं ❀ करहिंदिवसनिशिजातनजानहिं
दो० अवधपुरी वासीन कर, सुख सम्पदा समाज।
सहसशेष नहिं कहिसकहिं, जहँ नृप राम विराज॥
नारदादि सनकादि मुनीशा ❀ दर्शन लागि कोशलाधीशा
दिनप्रतिसकलअयोध्याआवहिं ❀ देखि नगर विराग बिसरावहिं
रत्नजटित मणि कनकअटारी ❀ नाना रंग रुचिर गच ढारी
पुर चहुँपास कोट अतिसुन्दर ❀ रचे कँगूरा रंग रंग वँर
नव गृह सुन्दर निकर बनाई ❀ मनहुँ घेरि अमरावँति आई
महि बहुरूप रुचिर गचकांचा ❀ जो विलोकि मुनिवर मनरांचा
धवलधाम ऊपर नभ चुम्बत ❀ कलशमनहुँरविशँशिद्युतिनिंदत
बहुमणिरचित झरोखन भ्राजें ❀ गृहगृहप्रति मणिदीप बिराजें
छं० मणिदीप राजहिं भवन भ्राजहिं देहरी विद्रुम रची।
मणिखम्भभीति विरञ्चिविरचित कनकमणिमरकतखची॥
सुन्दर मनोहर मन्दिरायत अजिरँ मणि फटिकन रचे।
प्रतिद्वारद्वार कपाट पुरट बनाय बहु वज्रन खचे॥
दो० चारु चित्रशाला अमित, गृह प्रति रचे बनाइ।
रामधाम जो निरखत, मुनि मन लेत चुराइ॥
सुमनवाटिका सबहिं लगाई ❀ विविध भांति करि यतन बनाई
लता ललित बहुभांति सुहाई ❀ फूलहिं सदा वसन्त कि नाई

१ फुलवाड़ी २ राम ३ श्रेष्ठ ४ इन्द्रपुरी ५ चन्द्रमा ६ मूंगा ७ आंगन॥

गुञ्जत मधुकर[1] मुखर मनोहर ❀ मारुत[2] त्रिविध सदा वह सुन्दर
नाना खग बालकन जिआये ❀ बोलत मधुर उड़ात सुहाये
मोर हंस सारस पारावत ❀ भवनन पर शोभाअति पावत
जहँ तहँ देखहिं निज परिछाहीं ❀ बहुविधि कूजहिं नृत्य कराहीं
शुक[3] सारिका[4] पढ़ावहिं बालक ❀ कहहु राम रघुपति जनपालक
राजद्वार सबही विधि चारू ❀ वीथी चौहट रुचिर बजारू

छं० बाजार रुचिर न बनै वर्णत वस्तु बिनु गथ पाइये।
जहँ भूप रमानिवास तहँकी सम्पदा किमि गाइये॥
बैठे बजाज सराफ वणिक अनेक मनहुँ कुबेर ते।
सब सुखी सब सुचरित्र सुन्दर नर युवा शिशु जरठ[5] ते॥

दो० उत्तर दिशि सरयू बहै, निर्मल जल गम्भीर।
बांधे घाट मनोहर, स्वल्प पङ्क[6] नहिं तीर॥

दूरि फराक रुचिर सो घाटा ❀ जहँ जल पिवहिं वाजिगजठाटा
पनिघट परममनोहर नाना ❀ तहां न पुरुष करहिं अस्नाना
राजघाट सबही विधि सुन्दर ❀ मज्जहिं तहां वर्ण चारिउ नर
तीर तीर देवनकर मन्दिर ❀ चहुँदिशि तेहिके उपवन सुन्दर
कहुँ कहुँ सरिता तीर उदासी ❀ बसहिं ज्ञानरत मुनि संन्यासी
जहँ तहँ तुलसीवृन्द सुहाये ❀ बहुप्रकार सब मुनिन लगाये
पुर शोभा कछु वरणि न जाई ❀ बाहर नगर परम रुचिराई
देखत पुरी अखिल अघ भागा ❀ वन उपवन वापिका[7] तड़ागा

छं० वापी तड़ाग अनूप कूप मनोहरायत सोहई।
सोपान[8] सुन्दर नीर निरमल देखि सुर मुनि मोहई॥
बहु रङ्ग कंज अनेक खग कूजहिं मधुप गुंजारहीं।
आरामरम्य पिकादिखगरव मनहुँ पथिक हँकारहीं॥

१ भँवरा २ वायु ३ सुवा ४ मैना ५ बुड्ढा ६ कीचड़ ७ बावली ८ सीढ़ी॥

दो० रमानाथ जहँ राजा, सो पुर वरणि न जाइ ।
अणिमादिक सुखसम्पदा, रहीं अवधपुर छाइ ॥

जहँ तहँ नर रघुपतिगुण गावहिं ❀ बैठि परस्पर यहै सिखावहिं
भजहु प्रणतप्रतिपालक रामहिं ❀ शोभा शील रूप गुण धामहिं
जलजविलोचनश्यामलगातहिं ❀ पलकनयनइव सेवक त्रातहिं
धृत शर रुचिर चाप तूंणीरहिं ❀ सन्त कञ्ज वन रवि रणधीरहिं
काल कराल व्याल खगराजहिं ❀ नमत राम अकाम ममताजहिं
लोभ मोह मृगयूथ किरातहिं ❀ मनसिजकरिहरिजनसुखदातहिं
संशय शोक निविड़तम भानुहिं ❀ दनुजगहन वनदहन कृशानुहिं
जनकसुता समेत रघुवीरहिं ❀ कस न भजहु भञ्जनभवभीरहिं
बहु वासना मशक हिमराशिहिं ❀ सदा एकरस अज अविनाशिहिं
मुनिरञ्जन भञ्जन महिभारहिं ❀ तुलसिदास के प्रभुहि उदारहिं

दो० यहिविधि नगर नारि नर, करहिं रामगुणगान ।
सानुकूल सन्तत रहत, सबपर कृपानिधान ॥

जबते रामप्रताप खगेशा ❀ उदितभयो अतिप्रबल दिनेशा
पूरि प्रकाश रह्यो तिहुँ लोका ❀ बहुतन सुख बहुतन मन शोका
जिनहिं शोक तेहि कहौं बखानी ❀ प्रथम अविद्या निशा सिरानी
अघ उलूक जहँ तहां लुकाने ❀ काम क्रोध कैरव सकुचाने
विविध कर्म गुण काल स्वभाऊ ❀ ये चकोर सुख लहहिं न काऊ
मत्सर मान मोह मद चोरा ❀ इनकहँ सुखनहिंकवनिहुँओरा
धर्म तड़ाग ज्ञान विज्ञाना ❀ ये पङ्कज विकसे विधि नाना
सुख सन्तोष विराग विवेका ❀ विगतशोक ये कोक अनेका

दो० यह प्रतापरवि जासु उर, जब प्रभु करहिं प्रकाश ।
पाछिल बाढ़हिं प्रथम जे, कहे ते पावहिं नाश ॥

भ्रातन सहित राम इकबारा ❀ संग परमप्रिय पवनकुमारा

१ आपस २ तरकस ३ सूर्य ४ सांप ५ झुंड ६ अग्नि ७ कोकाबेली ॥

सुन्दर उपवन देखन गयऊ ❀ सब तरु[१] कुसुमित पल्लव[२] नयऊ
जानि समय सनकादिक आये ❀ तेजपुंज गुण शील सुहाये
ब्रह्मानन्द सदा लवलीना ❀ देखत बालक बहुकालीना
धरे देह जनु चारिउ वेदा ❀ समदरशी मुनि विगतविभेदा
आशा[३]वसन व्यसन यह तिनहीं ❀ रघुपतिचरित होइ तहँ सुनहीं
तहां रहे सनकादि भवानी ❀ जहँ घटसम्भव[४] मुनिवर ज्ञानी
रामकथा मुनि बहुविधि वरणी ❀ ज्ञानयोगपावक जिमि अरणी

दो० देखि राम मुनि आवत, हरषि दण्डवत कीन्ह।
स्वागत पूंछी पीतपट, प्रभु बैठन कहँ दीन्ह॥

कीन्ह दण्डवत तीनिउँ भाई ❀ सहितपवनसुत सुख अधिकाई
मुनिरघुपतिछबि[५]अतुलविलोकी ❀ भये मगनमन सकत न रोकी
श्यामलगात सरोरुहलोचन ❀ सुन्दरतामन्दर भवमोचन
इकटक रहे निमेष न लावहिं ❀ प्रभु कर जोरे शीश नवावहिं
तिनकी दशा देखि रघुवीरा ❀ स्रवत नयनजल पुलकशरीरा
कर गहि प्रभु मुनिवर बैठारे ❀ परम मनोहर वचन उचारे
आजु धन्य मैं सुनहु मुनीशा ❀ तुम्हरे दरश जाहिं अघ खीशा
बड़े भाग्य पाइय सतसंगा ❀ बिनहिं प्रयास होइँ भवभंगा

दो० सन्तसंग अपवर्ग[६]कर, कामी भवकर पंथ।
कहहिं सन्त कवि कोविद[७], श्रुति पुराण सद्ग्रंथ॥

सुनि प्रभुवचन हरषि मुनि चारी ❀ पुलकगात अस्तुति अनुसारी
जय भगवन्त अनन्त अनामय ❀ अनघ अनेक एक करुणामय
अज निर्गुण जय जय गुणसागर ❀ सुखनिधान तिहुँलोक उजागर
जय इन्दिरारमण जय भूधर ❀ अनुपमयश अनादि शोभाकर
ज्ञाननिधान अमान मानप्रद ❀ पावन सुयश पुराण वेद वद
तज्ञ कृतज्ञ अज्ञताभंजन ❀ नाम अनेक अनाम निरंजन

१ वृक्ष २ पत्ता ३ दिशा ४ अगस्त्यमुनि ५ शोभा ६ मोक्ष ७ पण्डित॥

सर्व सर्वगत सर्व उरालय ❋ बसहु सदा हमकहँ परिपालय
द्वन्द विपति भवफन्द विभंजन ❋ हृदि बसु राम काममदगंजन
दो० परमानन्द कृपायतन, तुम परिपूरण काम।
प्रेम भक्ति अनपावनी, देहु हमहिं श्रीराम॥
देहु भक्ति रघुपति अतिपावनि ❋ त्रिविधताप भवदाप नशावनि
प्रणतकाम सुरधेनु[1] कल्पतरु[2] ❋ है प्रसन्न प्रभु दीजै यह बरु
भववारिधिकुम्भज रघुनायक ❋ सेवकसुलभ सकलसुखदायक
मनसम्भव दारुण[3] दुख दारय ❋ दीनबन्धु समता विस्तारय
आस त्रास ईर्षादि निवारक ❋ विनय विवेक विरतिविस्तारक
भूपमौलिमणि मण्डन धरणी ❋ देहु भक्ति संसृति[4] सरि तरणी
मुनिमनमानस हंस निरन्तर ❋ चरणकमल वन्दित अज शङ्कर
रघुकुलकेतु सेतु श्रुतिरक्षक ❋ काल कर्म स्वभाव गुणभक्षक
तारण तरण हरण सब दूषण ❋ तुलसिदासप्रभु त्रिभुवनभूषण
दो० बारबार अस्तुति करि, प्रेम सहित शिरनाइ।
ब्रह्मभवन सनकादि गे, अतिअभीष्ट वरपाइ॥
सनकादिक विधिलोक सिधाये ❋ भ्रातन रामचरण शिरनाये
पूंछत प्रभुहिं सकल सकुचाहीं ❋ चितवहिं सब मारुतसुतपाहीं
सुनाचहहिं प्रभुमुख की बानी ❋ जो सुनि होय सकलभ्रम[5] हानी
अन्तरयामी प्रभु सब जाना ❋ पूंछत कहहु कहा हनुमाना
जोरिपाणि[6] तब कह हनुमन्ता ❋ सुनिये दीनबन्धु भगवन्ता
नाथ भरत कछु पूंछन चहहीं ❋ प्रश्नकरत मनसकुचत अहहीं
तुम जानहु कपि मोर स्वभाऊ ❋ भरतहिं मोहिं न कछू दुराऊ
सुनि प्रभुवचन भरत गहिचरणा ❋ सुनिय नाथँ[7] प्रणतारतिहरणा
दो० नाथ न मोहिं सन्देह कछु, सपनेहु शोक न मोह।
केवल कृपा तुम्हारि प्रभु, चिदानन्द सन्दोह॥

१ कामधेनु २ कल्पवृक्ष ३ कठिन ४ संसार ५ सन्देह ६ हाथ ७ स्वामी॥

करौं कृपानिधि एक ढिठाई ❀ मैं सेवक तुम जनसुखदाई
सन्तन की महिमा रघुराई ❀ बहुविधि वेद पुराणन गाई
श्रीमुख पुनि तुम कीन्ह बड़ाई ❀ तिनपर प्रभुहिं प्रीति अधिकाई
सुनाचहौं प्रभु तिनकर लक्षण ❀ कृपासिन्धु गुणज्ञानविचक्षण
सन्त असन्त भेद बिलगाई ❀ प्रणतपाल मोहिं कहिय बुझाई
सन्तन के लक्षण सुनु भ्राता ❀ अगणितश्रुतिपुराणविख्याता
सन्त असन्तनकी अस करणी ❀ जिमि कुठार चन्दन आचरणी
काटे परशु मलय सुनु भाई ❀ निज गुण देइ सुगन्ध बसाई

दो॰ ताते सुर शीशन चढ़त, जगवल्लभ श्रीखण्ड।
अनल दाहि पीटत घनहिं, परशु वदन यह दण्ड ॥

विषय अलम्पट शील गुणाकर ❀ पर दुख दुख सुख सुख देखेपर
सम अभूतरिपु विमद विरागी ❀ लोभामर्ष हर्ष भय त्यागी
कोमल चित दीननपर दाया ❀ मन वच क्रम मम भक्त अमाया
सबहिं मानप्रद आपु अमानी ❀ भरत प्राणसम मम ते प्रानी
विगतकाम मम नामपरायन ❀ शान्तिविरातिविनीतमुदितायन
शीतलता सरलता मयत्री ❀ द्विजपद प्रेम धर्म्मजनयत्री
यह सब लक्षण बसहिं जासु उर ❀ जानेउ तात सन्त सन्तत फुर
शमदमनियमनीतिनहिंडोलहिं ❀ परुषवचन कबहूं नहिं बोलहिं

दो॰ निन्दाअस्तुति उभयसम, ममता मम पदकंज।
ते सज्जन मम प्राणप्रिय, गुणमन्दिर सुखपुंज ॥

सुनहु असन्तन केर स्वभाऊ ❀ भूले सङ्गति करिय न काऊ
तिनकर सङ्ग सदा दुखदाई ❀ जिमि कपिलहिं घालै हरहाई
खलन हृदय अतिताप विशेखी ❀ जरहिं सदा परसम्पति देखी
जहँ कहुँ निन्दा सुनहिं पराई ❀ हर्षहिं मनहुँ परी निधि पाई
काम क्रोध मद लोभ परायन ❀ निर्दय कपटी कुटिल मलायन

१ होशियार २ वेद ३ फरसा ४ चन्दन ५ अग्नि ६ लालच-क्रोध ७ ख़ज़ाना ॥

वैर अकारण सब काहू सों ❋ जो करु हित अनहित ताहूसों
झूठै लेना झूठै देना ❋ झूठै भोजन झूठ चबेना
बोलहिं मधुर वचन जिमि मोरा ❋ खाहिं महाअहि हृदय कठोरा

दो० परद्रोही परदार[१] रत, परधन पर[२]अपवाद[३]।
ते नर पामर पापमय, देह धरे मनुजाद[४]॥

लोभै ओढ़न लोभै डासन ❋ शिश्नोदर पर यमपुर त्रासन
काहूकी जो सुनहिं बड़ाई ❋ श्वास लेहिं जनु जूड़ी आई
जब काहूकी देखहिं बिपती ❋ सुखी होहिं मानहुँ जगनृपती
स्वारथ रत परिवार विरोधी ❋ लम्पट काम लोभ अति क्रोधी
मातु पिता गुरु विप्र न मानहिं ❋ आपुगये अरु घालहिं आनहिं
करहिं मोहवश द्रोह परावा ❋ सन्तसङ्ग हरिभक्ति न भावा
अवगुणसिन्धु मन्दमति कामी ❋ वेदविदूषक परधन स्वामी
विप्र द्रोह[५] परद्रोह विशेषी ❋ दम्भ[६] कपट जिय धरे सुवेषी

दो० ऐसे अधम[७] मनुष्य खल, कृतयुग त्रेता नाहिं।
द्वापर कछुक वृन्द बहु, ह्वैहैं कलियुग माहिं॥

परहित[८] सरिस धर्म नहिं भाई ❋ परपीड़ा सम नहिं अधमाई
निर्णय सकल पुराण वेदकर ❋ कहेउँ तात जानहिं कोविदनर
नरशरीर धरि जे परपीरा ❋ करहिं ते सहहिं महाभवभीरा
करहिं मोहवश नर अघ नाना ❋ स्वारथरत परलोक नशाना
कालरूप में तिनकर ताता ❋ शुभ अरु अशुभ कर्मफलदाता
अस विचारि जो परमसयाने ❋ भजहिं मोहिं संसृति दुख जाने
त्यागहिं कर्म शुभाशुभदायक ❋ भजहिं मोहिं सुरनरमुनिनायक
सन्त असन्तन के गुण भाखे ❋ ते न परहिं भव जिन लखिराखे

दो० सुनहु तात मायाकृत, गुण अरु दोष अनेक।
गुण यह उभय न देखिये, देखिय सो अविवेक॥

१ सांप २ स्त्री ३ निन्दा ४ राक्षस ५ वैर ६ पाखण्ड ७ नीच ८ भलाई॥

श्रीमुख वचन सुनत सब भाई ❀ हर्ष प्रेम नहिं हृदय समाई
करहिं विनयअति बारहिंबारा ❀ हनूमान हिय हर्ष अपारा
पुनि रघुपति निज मन्दिर गये ❀ यहिविधि चरितकरत नितनये
बारबार नारदमुनि आवहिं ❀ चरित पुनीत[१] रामकर गावहिं
नितनव[२]चरित देखि मुनि जाहीं ❀ ब्रह्मलोक सब कथा कहाहीं
सुनिविरञ्चिअतिशयसुखमानहिं ❀ पुनिपुनि तातकरहुगुणगानहिं
सनकादिक नारदहिं सराहहिं ❀ यद्यपि ब्रह्मनिरत मुनि आहहिं
सुनि गुणगान समाधि बिसारी ❀ सादर सुनहिं परमअधिकारी

दो॰ जीवनमुक्त ब्रह्म पर, चरितसुनहिंतजिध्यान ।
जेहरिकथा न करहिंरति, तिनके हृदय पषान[३] ॥

एक बार रघुनाथ बुलाये ❀ गुरु द्विज[४] पुरवासी सब आये
बैठे गुरु द्विजवर मुनि सज्जन ❀ बोले वचन भक्तभयभंजन
सुनहु सकल पुरजन मम बानी ❀ कहौं न कछु ममता उर आनी
नहिं अनीति नहिं कछु प्रभुताई ❀ सुनहु करहु जो तुमहिं सुहाई
सोइ सेवक प्रीतम मम सोई ❀ मम अनुशासन मानै जोई
जो अनीति कछु भाषौं भाई ❀ तौ मोहिं बरजेहु भय बिसराई
बड़े भाग्य मानुष तनु पावा ❀ सुरदुर्लभ सद्ग्रन्थन गावा
साधन धाम मोक्ष कर द्वारा ❀ पाइ न जेहिं परलोक सँवारा

दो॰ सो परन्तु दुख पावई, शिरधुनिधुनिपछिताइ ।
कालहिंकर्म्महिंईश्वरहिं, मिथ्या दोष लगाइ ॥

यहि तनुकर फल विषय न भाई ❀ स्वर्गहु स्वल्प अन्त दुखदाई
नरतनु पाय विषय मन देहीं ❀ पलटि सुधा[६] ते शठ विष लेहीं
ताहि कबहुँ भल कहै न कोई ❀ गुंजा[७] गहै परसमणि खोई
आकर[८] चारि लाख चौरासी ❀ योनिभ्रमत यहजिवअविनासी
फिरत सदा माया के प्रेरे ❀ काल कर्म स्वभाव गुण घेरे

१ पवित्र २ नया ३ पत्थर ४ ब्राह्मण ५ झूठा ६ अमृत ७ घुँघची ८ खानि ॥

कबहुँक करि करुणा नर देही ❀ देत ईश बिनु हेतु सनेही
नरतनु भववारिधि कहँ बेरे ❀ सम्मुख मरुत अनुग्रह मेरे
कर्णधार सद्गुरु दृढ़ नावा ❀ दुर्लभ साज सुलभकरि पावा
दो० जो न तरै भवसागरहि, नर समाज अस पाय।
सोकृतनिन्दकमन्दमति, आतमहन गति जाय॥
जो परलोक इहां सुख चहहू ❀ सुनि मम वचन हृदय दृढ़ गहहू
सुलभ सुखद यह मारग भाई ❀ भक्ति मोरि पुराण श्रुति गाई
ज्ञान अगम प्रत्यूह अनेका ❀ साधन कठिन न मनमहँ टेका
करत कष्ट बहु पावत कोई ❀ भक्तिहीन प्रिय मोहिं न सोई
भक्ति स्वतंत्र सकल गुणखानी ❀ बिनु सतसंग न पावहिं प्रानी
पुण्य पुंजें बिनु मिलहिं न संता ❀ सतसंगति संसृतिकर अंता
पुण्य एक जगमहँ नहिं दूजा ❀ मन क्रम वचन विप्रपदपूजा
सानुकूल तिहिपर सब देवा ❀ जो तजि कपट करै द्विजसेवा
दो० औरौ एक गुप्त मत, सबहिं कहौं करजोरि।
शङ्करभजन विना नर, भक्ति न पावै मोरि॥
कहहु भक्तिपथ कवन प्रयासा ❀ योग न मखे जप तप उपवासा
सरल स्वभाव न मन कुटिलाई ❀ यथा लाभ सन्तोष सदाई
मोर दास कहाइ नर आसा ❀ करै तौ कहहु कहा विश्वासा
बहुत कहौं का कथा बढ़ाई ❀ यहि आचरणवश्य मैं भाई
वैर न विग्रह आश न त्रासा ❀ सुखमय ताहि सदा सब आसा
अनारम्भ अनिकेत अमानी ❀ अनघ अरोष दक्ष विज्ञानी
प्रीति सदा सज्जन संसर्गा ❀ तृणसम विषय स्वर्ग अपवर्गा
भक्तिपक्षता नहिं शठताई ❀ दुष्टकर्म्म सब दूरि विहाई
दो० मम गुणग्राम नाम रत, गत ममता मद मोह।
ताकर सुख सोइ जाने, परानन्द सन्दोह॥

१ दया २ केवट ३ विघ्न ४ समूह ५ यज्ञ ६ व्रत ७ मोक्ष ८ गर्व॥

सुनत सुधा सम वचन रामके ❀ सबन गहे पद कृपाधामके
जननि जनक गुरु बन्धु हमारे ❀ कृपानिधान प्राण ते प्यारे
तन धन धाम राम हितकारी ❀ सब विधि तुम प्रणतारतिहारी
अस शिष तुम बिनु देइ न कोऊ ❀ मातु पिता स्वारथरत ओऊ
हेतुरहित युग युग उपकारी ❀ तुम तुम्हार सेवक असुरारी
स्वारथमीत सकल जगमाहीं ❀ सपनेहुँ कोउ परमारथ नाहीं
सबके वचन प्रेमरस साने ❀ सुनि रघुनाथ हृदय हर्षाने
निज निज गृह गे आयसु पाई ❀ वर्णत प्रभु बतकही सुहाई

दो० उमा अवधवासी नर, नारि कृतारथ रूप।
ब्रह्म सच्चिदानन्द घनं, रघुनायक जहँ भूप॥

एक बार वशिष्ठ मुनि आये ❀ जहां राम सुखधाम सुहाये
अतिआदर रघुनायक कीन्हा ❀ पद पखारि चरणोदक लीन्हा
राम सुनहु मुनि कह करं जोरी ❀ कृपासिन्धु विनती इक मोरी
देखि देखि आचरण तुम्हारा ❀ होत मोह मम हृदय अपारा
महिमा अमितं वेद नहिं जाना ❀ मैं केहि भांति कहौं भगवाना
उपरोहिती कर्म्म अतिमन्दा ❀ वेद पुराण स्मृति कर निन्दा
जब न लेउँ तब विधि कह मोहीं ❀ अहै लाभ आगे सुत तोहीं
परमातमा ब्रह्म नर रूपा ❀ होइहि रघुकुलभूषण भूपा

दो० तब मैं हृदय विचार किय, योग यज्ञ व्रत दान।
जाकहँ करिय सो पाइहौं, धर्म न यहिसम आन॥

जप तप नियम योग निज धर्मा ❀ श्रुति सम्भव नानाशुभ कर्मा
ज्ञान दया दम तीरथ मज्जन ❀ जहँलगि धर्म कहैं श्रुतिसज्जन
आगम निगम पुराण अनेका ❀ पढ़े सुनै कर फल प्रभु एका
तव पदपङ्कज प्रीति निरन्तर ❀ सब साधनकर फल यह सुन्दर
छूटै मल कि मलहि के धोये ❀ घृत कि पाव कोउ वारि बिलोये

१ अमृत २ माता ३ पिता ४ समूह ५ हाथ ६ वेदप्रमाण ७ वेद ८ शास्त्र ९ जल॥

प्रेम भक्ति जल बिनु रघुराई ❀ अभ्यन्तरमल कबहुँ न जाई
सोइ सर्वज्ञ तज्ञ सोइ पंडित ❀ सोइ गुणज्ञ विज्ञान अखंडित
दक्ष सकल लक्षण युत सोई ❀ जाके पद सरोज रति होई

दो० नाथ एक वर मांगौं, राम कृपा करि देहु।
जन्म जन्म प्रभु पद कमल, कबहुँ घटै जनि नेहु॥

असकहि मुनिवशिष्ठ गृह आये ❀ कृपासिन्धु के मन अतिभाये
हनूमान भरतादिक भ्राता ❀ संग लिये सेवक सुखदाता
पुनि कृपालु पुर बाहर गयऊ ❀ गजरथ तुरँग[1] मँगावत भयऊ
देखि कृपाकरि सकल सराहे ❀ दिये उचित जिनजिन जो चाहे
हरण सकल श्रम प्रभु श्रमपाई ❀ गये जहां शीतल अमराई
भरत दीन्ह निज वसन डसाई ❀ बैठे प्रभु सेवहिं सब भाई
मारुतसुत[2] तब मारुत करई ❀ पुलकिगात लोचन जल भरई
हनूमान सम नहिं बड़भागी ❀ नहिं कोउ रामचरण अनुरागी[3]
गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई ❀ बारबार प्रभु निज मुख गाई

दो० तेहि अवसर[4] मुनि नारद, आये करतल बीन।
गावन लागे रामगुण, कीरति सदा नवीन॥

मामवलोकय पङ्कजलोचन ❀ कृपाविलोकनि शोचविमोचन
नील तामरस[5] श्याम कामअरि[6] ❀ हृदय कंज मकरन्द मधुप[7] हरि
यातुधान[8] वरूथ बल गंजन ❀ मुनिसज्जनरंजन अघभंजन
भूसुर नव ससि वृन्द बलाहक ❀ अशरणशरण दीनजनगाहक
भुजबलविपुलभारमहिखण्डित ❀ खरदूषण विराध वध पण्डित
रावणारि सुखरूप भूपवर ❀ जय दशरथकुलकुमुदसुधाकर
सुयशपुनीत विदितनिगमागम ❀ गावत सुर मुनि सन्त समागम
कारुणीक बाली मद खण्डन ❀ सबविधिकुशलकोशलामण्डन
कलिमलमथन नाम ममताहन ❀ तुलसिदास प्रभु पाहि प्रणतजन

१ घोड़ा २ हनुमान् ३ प्रीतिमान् ४ समय ५ कमल ६ महादेव ७ भँवरा ८ राक्षस॥

दो० प्रेमसहित मुनिनारद, वरणि राम गुणग्राम ।
शोभासिन्धु हृदय धरि, गये जहां विधिधाम ॥

गिरिजा सुनहु विशद यह कथा ❋ मैं सब कही मोरि मत यथा
राम चरित शतकोटि अपारा ❋ श्रुति शारदा न वरणैं पारा
राम अनन्त अनन्त गुणानी ❋ जन्म कर्म अगणित नामानी
जलशीकर महि रज गनिजाहीं ❋ रघुपतिचरित न वरणिसिराहीं
विमल कथा यह हरिपददायिनि ❋ भक्तिहोइसुनिअतिअनपायिनि
उमा कहेउँ सो कथा सुहाई ❋ जो भुशुण्डि खगपतिहि सुनाई
कछुक रामगुण कहेउँ बखानी ❋ अब का कहौं सो कहहु भवानी
सुनि शुभकथा उमा हरषानी ❋ बोलीं अतिविनीत मृदुबानी
धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी ❋ सुनेउँ रामगुण भवभय हारी

दो० तुम्हरी कृपा कृपायतन, अब कृतकृत्य न मोह ।
जानेउँ राम प्रभाव प्रभु, चिदानन्द सन्दोह ॥
नाथतवानन शशि स्रवत, कथा सुधा रघुबीर ।
श्रवणपुटन मनपानकरि, नहिंअघात मतिधीर ॥

रामचरित जे सुनत अघाहीं ❋ रसविशेष जाना तिन नाहीं
जीवनमुक्त महामुनि जेऊ ❋ हरिगुण सुनहिं निरन्तर तेऊ
भवसागर चह पार जो पावा ❋ रामकथा ताकहँ दृढ़ नावा
विषयिनकहँ पुनि हरिगुणग्रामा ❋ श्रवण सुखदअरुमनअभिरामा
श्रवणवन्त अस को जगमाहीं ❋ जिनहिं न रघुपतिचरितसुहाहीं
ते जड़ जीव निजातमघाती ❋ जिनहिं न रघुपतिकथा सुहाती
रामचरित मानस तुम गावा ❋ सुनि मैं नाथ अमितसुख पावा
तुम जो कही यह कथा सुहाई ❋ काकभुशुण्डि गरुड़प्रति गाई

दो० विरत ज्ञान विज्ञान दृढ़, रामचरण अतिनेह ।
वायसँ तनु रघुपतिभगति, मोहिं परमसन्देह ॥

१ ब्रह्मलोक २ पार्वती ३ उज्ज्वल ४ किनका ५ शिव ६ कान ७ कौवा ॥

नर सहस्र महँ सुनहु पुरारी ❀ कोउ इक होइ धर्म्मव्रतधारी
धर्म्मशील कोटिन महँ कोई ❀ विषयविमुख विरागरत होई
कोटि विरक्त मध्य श्रुति कहई ❀ सम्यक ज्ञान सुकृत कोउ लहई
ज्ञानवन्त कोटिन महँ कोई ❀ जीवनमुक्त सुकृत कोइ होई
तिन सहसनमहँ सब सुखखानी ❀ दुर्लभ ब्रह्मनिरत विज्ञानी
धर्म्मशील विरक्त अरु ज्ञानी ❀ जीवनमुक्त ब्रह्मपर प्रानी
सबते सो दुर्लभ सुरराया ❀ रामभक्तिरत गत मद माया
सो हरिभक्ति काक किमि पाई ❀ विश्वनाथ मोहिं कहहु बुझाई

दो॰ रामपरायण ज्ञानरत, गुणागार मतिधीर।
नाथ कहहु केहि कारण, पायहु काकशरीर॥

यह प्रभुचरित पवित्र सुहावा ❀ कहहु कृपालु काक किमि पावा
तुम केहिभांति सुना मदनारी ❀ कहहु मोहिं अति कौतुक भारी
गरुड़ महाज्ञानी गुणरासी ❀ हरिसेवक अतिनिकट निवासी
तेहिं केहि हेतु काक सन जाई ❀ सुनी कथा मुनि निकर बिहाई
कहहु कवन विधि भा संवादा ❀ दोउ हरिभक्त काक उरगादा
गौरिगिरा सुनि सरल सुहाई ❀ बोले शिव सादर सुखपाई
धन्य सती पार्वती मति तोरी ❀ रघुपति चरण प्रीति नहिं थोरी
सुनहु परम पुनीत इतिहासा ❀ जो सुनि होय शोक भ्रमनासा
उपजहि रामचरण विश्वासा ❀ भवनिधि तर नर बिनहिंप्रयासा

दो॰ ऐसे प्रश्न विहंगपति, कीन्ह काकसन जाइ।
सो सब सादर कहब मैं, सुनहु उमा चितलाइ॥

मैं जिमि कथा सुनी भवमोचनि ❀ सो प्रसंग सुनु सुमुखि सुलोचनि
प्रथम दक्ष गृह तव अवतारा ❀ सती नाम तब रहा तुम्हारा
दक्षयज्ञ तव भा अपमाना ❀ तुम अतिक्रोध तजा तहँ प्राना
मम अनुचरन कीन्ह मखभंगा ❀ जानहु तुम सो सकल प्रसंगा

१ अहङ्कार २ कैसे ३ शिव ४ समूह ५ गरुड़ ६ पवित्र ७ सेवक॥

तब अतिशोच भयउ मन मोरे ❁ दुखित भयउँ वियोग प्रिय तोरे
सुन्दर गिरि वन सरित तड़ागा ❁ कौतुक देखत फिरौं विभागा
गिरि सुमेरु उत्तर दिशि दूरी ❁ नील शैल इक सुन्दर भूरी
तासु कनकमय शिखर सुहाये ❁ चारि चारु मोरे मन भाये
तिनपर इक इक विटप विशाला ❁ वट पीपर पाकरी रसाला
शैलोपरि सुन्दर सर सोहा ❁ मणिसोपान देखि मन मोहा

दो० शीतल अमल मधुर जल, जलज विपुल बहुरङ्ग।
कूजत कलरव हंसगण, गुंजत मंजुल भृङ्ग॥

तेहि गिरि रुचिर बसै खग सोई ❁ तासु नाश कल्पान्त न होई
मायाकृत गुण दोष अनेका ❁ मोह मनोज आदि अविवेका
रहेउ व्यापि समस्त जगमाहीं ❁ तेहिगिरिनिकटकबहुँनहिंजाहीं
तहँबसिहरिहिभजे जिमि कागा ❁ सो सुनु उमा सहित अनुरागा
पीपर तरु तर ध्यान सो धरई ❁ जाप यज्ञ पाकरि तर करई
आंब छांह करि मानस पूजा ❁ तजिहरिभजनकाज नहिं दूजा
वट तर कह हरिकथाप्रसंगा ❁ आवहिं सुनहिं अनेक विहंगा
रामचरित विचित्र विधि नाना ❁ प्रेमसहित कर सादर गाना
सुनहिंसकलमतिविमलमराला ❁ बसहिं निरन्तर जो तेहिकाला
जब मैं जाइ सो कौतुक देखा ❁ उर उपजा आनन्द विशेखा

दो० तब कछुकाल मरालतनु, धरि तहँ कीन्ह निवास।
सादर सुनि रघुपतिचरित, पुनि आयउँ कैलास॥

गिरिजाकहेउँ सो सब इतिहासा ❁ मैं जेहिसमय गयउँ खगपासा
अब सो कथा सुनहु जेहि हेतू ❁ गयउ काकपहँ खगकुलकेतू
जब रघुनाथ कीन्ह रणक्रीड़ा ❁ समुझतचरित होत मोहिं व्रीड़ा
इन्द्रजीत कर आपु बँधावा ❁ तब नारदमुनि गरुड़ पठावा
बन्धन काटि गयउ उरगादा ❁ उपजा हृदय प्रचण्ड विषादा

१ नदी २ पर्वत ३ कँगूरा ४ सुन्दर ५ बरगद ६ आंब ७ हंस ८ लज्जा॥

प्रभु बन्धन समुझत बहु भांती ❀ करत विचार उरगआराती
व्यापक ब्रह्म विरज वागीशा ❀ माया मोह पार परमीशा
सो अवतार सुनेउँ जगमाहीं ❀ देखा सो प्रभाव कछु नाहीं

दो० भवबन्धन से छूटहीं, नर जपि जाकर नाम।
खर्व निशाचर बांधेऊ, नागफांस सोइ राम॥

नानाभांति मनहिं समुझावा ❀ प्रकट न ज्ञान हृदय भ्रम छावा
खेदखिन्न मन तर्क बढ़ाई ❀ भयउ मोहवश तुम्हरी नाई
व्याकुल गयउ देवऋषि पाहीं ❀ कहेसि जो संशय निजमनमाहीं
सुनि नारदहि लागि अतिदाया ❀ सुनु खग प्रबल रामकी माया
जो ज्ञानिन कर चित अपहरई ❀ बरिआई विमोह वश करई
जेहि बहु बार नचावा मोहीं ❀ सो व्यापेउ विहङ्गपति तोहीं
महामोह उपजा मन तोरे ❀ मिटहि न वेगि कहे खग मोरे
चतुराननं पहँ जाहु खगेशा ❀ सोइ करेहु जो देहिं निदेशा

दो० असकहि चले देवऋषि, करत रामगुणगान।
हरिमाया बल वरणत, पुनि पुनि परमसुजान॥

तब खगपति विरञ्चि पहँ गयऊ ❀ निज सन्देह सुनावत भयऊ
सुनि विरञ्चि रामहिं शिरनावा ❀ समुझि प्रताप प्रेम उरछावा
मनमहँ करहिं विचार विधाता ❀ मायावश कवि कोविद ज्ञाता
हरिमाया कर अमित प्रभावा ❀ विपुलबार जो मोहिं नचावा
अगजगमय जग मम उपजाया ❀ नहिं आश्चर्य मोह खगराया
पुनि बोले विधि गिरा सुहाई ❀ जानु महेश राम प्रभुताई
वैनतेय शङ्कर पहँ जाहू ❀ तात अनत पूंछेहु जनि काहू
तहां होइ तव संशय हानी ❀ चलाविहँगपतिसुनिविधिबानी

दो० परमातुर विहङ्गपति, तब आयउ मम पास।
जात रहेउँ कुबेर गृह, उमा रहिउ कैलास॥

१ गरुड़ २ दुःखित ३ नारद ४ पक्षी ५ ब्रह्मा ६ आज्ञा ७ बहुत॥

तेइँ मम पद सादर शिरनावा ❋ पुनि आपन सन्देह सुनावा
सुनि ताकी पुनीत मृदुबानी ❋ प्रेमसहित मैं कहेउँ भवानी
मिलेउ गरुड़ मारग महँ मोहीं ❋ कौनिभांति समुझावौं तोहीं
जब कछु काल करिय सतसङ्गा ❋ तब यह होइ मोह भ्रमभङ्गा
सुनिय तहां हरिकथा सुहाई ❋ नानाभांति मुनिन जो गाई
जेहिमहँ आदि मध्य अवसाना ❋ प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना
नित हरिकथा होइ जहँ भाई ❋ पठवौं तोहिं सुनहु तहँ जाई
जाइहि सुनत सकल सन्देहा ❋ होइहि रामचरण दृढ़ नेहा

दो० बिनु सतसङ्ग न हरिकथा, तेहिबिनु मोह न भाग।
मोह गये बिनु रामपद, होइ न दृढ़ अनुराग॥

मिलहिं न रघुपति बिनुअनुरागा ❋ किये योग जप ज्ञान विरागा
उत्तर दिशि सुन्दर गिरि नीला ❋ तहँ रह काकभुशुण्डि सुशीला
राम भक्ति पथ परम प्रवीना ❋ ज्ञानी गुणगृह बहुकालीना
रामकथा सोइ कहै निरन्तर ❋ सादर सुनहिं विविध विहंगवर
जाइ सुनहु तहँ हरिगुण भूरी ❋ होइहि मोह जनित दुख दूरी
मैं जब सब तेहि कहा बुझाई ❋ चलेउ हरषि मम पद शिरनाई
ताते उमा न मैं समुझावा ❋ रघुपतिकृपा मर्म सब पावा
होइहि कीन्ह कबहुँ अभिमाना ❋ सो खोवै चह कृपानिधाना
कछु तेहिते पुनि मैं नहिं राखा ❋ खग जानै खगहीकी भाखा
प्रभुमाया बलवन्त भवानी ❋ जाहि न मोह कवन अस ज्ञानी

दो० ज्ञानी भक्त शिरोमणि, त्रिभुवनपतिकरयान।
ताहि मोह माया प्रबल, पामर करहिं गुमान॥
शिव बिरञ्चि कहँ मोहई, को है बपुरा आन।
असजियजानिभजहिंमुनि, मायापति भगवान॥

गयउ गरुड़ जहँ बसै भुशुण्डी ❋ गति अकुण्ठ हरिभक्ति अखण्डी

१ मेरे २ पार्वती ३ रास्ता ४ अन्त ५ प्रेम ६ चतुर ७ उत्पन्न॥

देखि शैल प्रसन्न मन भयऊ ❀ माया मोह शोक सब गयऊ
करि तड़ाग मज्जन जलपाना ❀ वटतर गयउ हृदय हर्षाना
वृन्द वृन्द विहङ्ग तहँ आये ❀ सुनन राम के चरित सुहाये
कथा अरम्भ करै सो चाहा ❀ ताही समय गयउ खगनाहा
आवत देखि सकल खगराजा ❀ हर्षेउ वायस सहित समाजा
अतिआदर खगपतिकरकीन्हा ❀ स्वागत पूंछि सुआसन दीन्हा
करि पूजा समेत अनुरागा ❀ मधुर वचन बोलेउ तब कागा
दो० नाथ कृतारथ भयउँ मैं, तव दर्शन खगराज।
आयसु होय सो करहुँ अब, प्रभु आयहु केहि काज॥
सदा कृतारथरूप तुम, कह मृदुवचन खगेश।
जाकी अस्तुति सादर, निजमुखकीन्ह महेश॥
सुनहु तात जेहि कारण आयउँ ❀ सो सब भयउ दरश तव पायउँ
देखि परमपावन तव आश्रम ❀ गयउ मोह संशय नाना भ्रम
अब श्रीरामकथा अतिपावनि ❀ सदासुखद दुखपुंजनशावनि
सादर तात सुनावहु मोहीं ❀ बारबार विनवौं प्रभु तोहीं
सुनत गरुड़की गिरा विनीता ❀ सरल सप्रेम सुखद सुपुनीता
भयउ तात मन परम उछाहा ❀ कहै लाग रघुपतिगुणगाहा
प्रथमहिं अतिअनुराग भवानी ❀ रामचरित सर कहेसि बखानी
पुनि नारदकर मोह अपारा ❀ कहेसि बहुरि रावण अवतारा
प्रभु अवतार कथा पुनि गाई ❀ पुनिशिशुचरितकहेसिमनलाई
दो० बालचरितकहिविविधविधि, मनमहँ परमउछाह।
ऋषि आगमन कहेसि पुनि, श्रीरघुवीर विवाह॥
बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा ❀ पुनि नृप वचन राजरसभंगा
पुरवासिन कर विरह विषादा ❀ कहेसि राम लक्ष्मण संवादा
विपिन गमन केवट अनुरागा ❀ सुरसरि उतरि निवास प्रयागा

१ स्नान २ पक्षी ३ तुम्हारा ४ स्थान ५ सीधी ६ तिलक ७ जुदाई ८ जंगल॥

बालमीकि प्रभु मिलन बखाना * चित्रकूट जिमि बस भगवाना
सचिवागमन[1] नगर नृपमरणा * भरतागमन प्रेम अति वरणा
करि नृपक्रिया संग पुरवासी * भरत गये जहँ प्रभु सुखरासी
पुनि रघुपति बहुविधि समुझाये * लै पादुका[2] अवधपुर आये
भरत रहनि सुरपतिसुत[3] करणी * प्रभु अरु अत्रिभेंट पुनि वरणी

दो० कहि विराधबध जाहि विधि, देह तजी शरभङ्ग।
वरणि सुतीक्षण प्रेम पुनि, प्रभुअगस्त्यसतसङ्ग॥

कहि दण्डकवन पावनताई * गृध्र मयत्री पुनि तेइँ गाई
पुनि प्रभु पंचवटी[4] कृत वासा * भंजी सकल मुनिनकी त्रासा[5]
पुनि लक्ष्मण उपदेश अनूपा * शूर्पणखा जिमि कीन्ह कुरूपा
खर दूषण बध बहुरि बखाना * जिमि सब मर्म दशानन जाना
दशकन्धर मारीच बतकही * जेहिविधि भई सकल तेइँ कही
पुनि माया सीताकर हरणा * श्रीरघुवीर विरह कछु वरणा
पुनिप्रभु गृध्रक्रियाजिमिकीन्हीं * बधिकबन्धशबरिहिंगतिदीन्हीं
बहुरि विरह वरणत रघुवीरा * जेहि विधि गये सरोवर[6] तीरा

दो० प्रभु नारद संवाद कहि, मारुतिमिलनप्रसङ्ग।
पुनि सुग्रीव मिताई, बालि प्राणकर भङ्ग॥
कपिहि तिलककरि प्रभुकृत, शैल प्रवर्षण वास।
वरणत वर्षा शरद ऋतु, राम रोष कपित्रास॥

जेहिविधि कपिपति कीश पठाये * सीता खोज सकल दिशि धाये
विवँर[7] प्रवेश कीन्ह जेहि भांती * कपिन बहोरि मिला सम्पाती
सुनि सब कथा समीरकुमारा * लांघत भयउ पयोधि[8] अपारा
लङ्का कपि प्रवेश जिमि कीन्हा * पुनिसीतहिंधीरजजिमिदीन्हा
वन उजारि रावणहिं प्रबोधी * पुर दहि लांघेउ बहुरि पयोधी
आये कपि सब जहँ रघुराई * वैदेही की कुशल सुनाई

१ मन्त्री का आना २ खराऊँ ३ जयन्त ४ नाशेउ ५ क्लेश ६ तालाब ७ बिल ८ समुद्र॥

सेन समेत यथा रघुवीरा ❀ उतरे जाइ वारिनिधि तीरा[1]
मिला विभीषण जेहिविधि आई ❀ सागर निग्रह कथा सुनाई

दो० सेतु बाँधि कपिसेन जिमि, उतरे सागर पार।
गयो बसीठी[3] वीरवर, जेहिविधिबालिकुमार॥
निशिचर कीश लड़ाई, वरणेसि विविध प्रकार।
कुम्भकर्ण घननाद[4] कर, बल पौरुष संहार॥

निशिचरनिकरमरणविधिनाना ❀ रघुपति रावण समर[5] बखाना
रावण बध मन्दोदरि शोका ❀ राज्य विभीषण देव अशोका
सीता रघुपति मिलन बहोरी ❀ सुरन कीन्ह अस्तुति करजोरी
पुनि पुष्पक चढ़ि कपिन समेता ❀ अवध चले प्रभु कृपानिकेता
जेहिविधि राम नगर नियराये ❀ वायस विशद चरित सब गाये
कहेसि बहोरि राम अभिषेका ❀ पुर वर्णत नृपनीति अनेका
कथा समस्त भुशुण्डि बखानी ❀ जो मैं तुमसन कहा भवानी
सुनि शुभ रामकथा खगनाहा ❀ विगतमोह मन परमउछाहा

सो० गयउ मोर सन्देह, सुनेउँसकलरघुपतिचरित।
भयउ रामपद नेह, तव प्रसाद वायसतिलक॥
मोहिं भयउअतिमोह, प्रभुबन्धन रणमहँ निरखि।
चिदानन्द सन्दोह, राम विकल कारण कवन॥

देखि चरित अति नर अनुहारी ❀ भयउ हृदय मम संशय भारी
सो भ्रम अब मैं हितकरि माना ❀ कीन्ह अनुग्रह कृपानिधाना
जो अति आतप[6] व्याकुल होई ❀ तरु[7] छाया सुख जानै सोई
जो नहिं होत मोह अति मोहीं ❀ मिलतेउँ तात कवनविधि तोहीं
सुनतेउँ किमि हरिकथा सुहाई ❀ अतिविचित्र सबविधि तुम गाई
निगमागम[8] पुराण मत एहा ❀ कहहिं सिद्ध मुनि नहिं सन्देहा
सन्त विशुद्ध मिलहिं पुनि तेही ❀ चितवहिं राम कृपाकरि जेही

१ किनारा २ दण्ड ३ दूत ४ मेघनाद ५ युद्ध ६ घाम ७ वृक्ष ८ वेद-शास्त्र॥

रामकृपा तव दरशन भयऊ ❀ तव प्रसाद मम संशय गयऊ

दो॰ सुनि विहंगपति वाणी, सहित विनय अनुराग।
पुलकगात लोचन सजल, मन हर्षेउ अतिकाग ॥
श्रोतासुमतिसुशीलशुचि, कथारसिक हरिदास ।
पाइ उमा यह गोप्य मत, सज्जन करहिं प्रकास॥

बोलेउ काकभुशुण्डि बहोरी ❀ नभगनाथ पर प्रीति न थोरी
सबविधि नाथ पूज्य तुम मेरे ❀ कृपापात्र रघुनायक केरे
तुमहिं न संशय मोह न माया ❀ मोपर नाथ कीन्ह तुम दाया
पठै मोह मिसु खगपति तोहीं ❀ रघुपति दीन्ह बड़ाई मोहीं
तुम निज मोह कहा खगसाईं ❀ सो नहिं कछु आश्चर्य गुसाईं
नारद शिव विरंचि सनकादी ❀ जो मुनिनायक आतमवादी
मोह न अन्ध कीन्ह केहि केही ❀ को जग काम नचाव न जेही
तृष्णा केहि न कीन्ह बौराहा ❀ केहिके हृदय क्रोध नहिं दाहा

दो॰ ज्ञानी तापस शूर कवि, कोविद गुणआगार ।
केहिके लोभ विडम्बना, कीन्ह न यहि संसार ॥
श्रीमद वक्र न कीन्ह केहि, प्रभुता बधिर न काहि ।
मृगनयनी के नयनशर, को अस लागु न जाहि ॥

गुणकृत सन्निपात नहिं केही ❀ को न मान मद व्यापेउ जेही
यौवनज्वर केहि नहिं बलकावा ❀ ममता केहिकर यश न नशावा
मत्सर काहि कलङ्क न लावा ❀ काहि न शोक समीर डोलावा
चिन्तासाँपिनि काहि न खाया ❀ को जग जाहि न व्यापी माया
कीट मनोरथ दारु शरीरा ❀ जेहि न लाग घुन को अस धीरा
सुत वित नारि एषणा तीनी ❀ केहिकी मति इनकृत न मलीनी
यह सब मायाकृत परिवारा ❀ प्रबल अमित को वरणै पारा
शिव चतुरानन देखि डराहीं ❀ अपर जीव केहि लेखे माहीं

१ शरीर २ गूढ़ ३ गरुड़ ४ बहाना ५ डाह ६ वायु ७ लकड़ी ८ धन॥

दो॰ व्यापि रह्यो संसार महँ, माया कटक प्रचण्ड।
सेनापति कामादि भट[1], दम्भ कपट[2] पाखण्ड॥
सो दासी रघुवीर की, समुझै मिथ्या[3] सोपि।
छुटै न रामकृपा बिनु, नाथ कहौं प्रण रोपि॥

सो माया सब जगहि नचावा ❋ जासु चरित लखि काहु न पावा
सो प्रभु भ्रूविलास खगराजा ❋ नाच नटीइव सहित समाजा
व्यापक ब्रह्म अखण्ड अनन्ता ❋ अखिल अमोघ एक भगवन्ता
सोइ सच्चिदानन्द घनश्यामा ❋ अज विज्ञानरूप गुणधामा
अगुण अदम्भ गिरा गोतीता[4] ❋ समदर्शी अनवद्य[5] अजीता
निर्गुण निराकार निर्मोहा ❋ नित्य निरंजन सुखसंदोहा
प्रकृतिपार प्रभु सब उरवासी ❋ ब्रह्म निरीह विरज अविनासी
इहां मोह कर कारण नाहीं ❋ रवि सम्मुख तम[6] कबहुँ न जाहीं

दो॰ भक्तहेतु भगवान प्रभु, राम धरेउ तनु भूप।
किये चरित पावन परम, प्राकृत नर अनुरूप॥
यथा अनेकन वेष धरि, नृत्य करै नट कोइ।
सोइ सोइ भाव दिखावै, आपु न होइहि सोइ॥

अस रघुपतिलीला उरगारी ❋ दनुजविमोहन जनसुखकारी
जे मतिमलिन विषयवश कामी ❋ प्रभुपर मोह धरहिं इमि स्वामी
नयनदोष जाकहँ जब होई ❋ पीतवरण शशिकहँ कह सोई
जब जेहि दिशिभ्रम होइ खगेशा ❋ सो कह पश्चिम उगेउ दिनेशा[7]
नौकारूढ़ चलत जग देखा ❋ अचल मोहवश आपुहि लेखा
बालक भ्रमहिं न भ्रमहिं गृहादी ❋ कहहिं परस्पर मिथ्यावादी
हरिविषयिक अस मोह विहङ्गा ❋ सपनेहु नहिं अज्ञान प्रसङ्गा
मायावश मतिमन्द अभागी ❋ हृदय जवनिका[8] बहुविधिलागी
ते शठ हठवश संशय करहीं ❋ निज अज्ञान राम पर धरहीं

१ योद्धा २ छल ३ झूठ ४ इन्द्रियों से परे ५ अनिन्द्य ६ अन्धकार ७ सूर्य ८ कनात॥

दो० काम क्रोध मद लोभरत, गृहासक्त दुखरूप।
तेकिमिजानहिंरघुपतिहि, मूढ़ परे तमकूप॥
निर्गुणरूप सुलभ अति, सगुण न जानै कोइ।
सुगम अगम नाना चरित, सुनिमुनिमनभ्रम होइ॥

सुनु खगपति रघुपति प्रभुताई ❀ कहौं यथामति कथा सुहाई
ज्यहिविधि मोह भयउ प्रभु मोहीं ❀ सो सब चरित सुनावों तोहीं
राम कृपा भाजन[2] तुम ताता ❀ हरिगुणप्रीति मोहिं सुखदाता
ताते नहिं कछु तुमहिं दुरावों ❀ परमरहस्य मनोहर गावों
सुनहु रामकर सहज स्वभाऊ ❀ जन अभिमान न राखैं काऊ
संसृतिमूल शूलप्रद नाना ❀ सकलशोकदायक अभिमाना
ताते करहिं कृपानिधि दूरी ❀ सेवक पर ममता अतिभूरी
जिमि शिशु तन व्रण होइ गुसाईं ❀ मातु चिराव कठिन की नाईं

दो० यदपि प्रथम दुख पावै, रोवै बाल अधीर।
व्याधिनाश हित जननी, गनै न सो शिशुपीर॥
तिमिरघुपतिनिजदासकर, हरहिं मान हितलागि।
तुलसिदास ऐसे प्रभुहिं, कस न भजहु भ्रमत्यागि॥

राम कृपा आपनि जड़ताई ❀ कहौं खगेश सुनहु मनलाई
जब जब राम मनुजतनु धरहीं ❀ भक्त हेतु लीला बहु करहीं
तब तब अवधपुरी मैं जाऊं ❀ शिशुलीला विलोकि हर्षाऊं
जन्ममहोत्सव देखौं जाई ❀ वर्ष पांच तहँ रहौं लुभाई
इष्टदेव मम बालक रामा ❀ शोभावपुष कोटिशत कामा
निज प्रभु वदन[6] निहारि निहारी ❀ लोचन सफल करौं उरगारी
लघु वायस वपुँ धरि हरिसङ्गा ❀ देखौं बालचरित बहु रङ्गा

दो० लरिकाईं जहँ जहँ फिरहिं, तहँ तहँ सङ्ग उड़ाउँ।

१ अनेक २ पात्र ३ लड़का ४ फोड़ा ५ मूर्खता ६ मुहँ ७ शरीर॥

जूठन परै अँजिर महँ, सो उठाय पुनि खाउँ ॥
एकबार अतिशय प्रबल, चरित कीन्ह रघुवीर ।
सुमिरत प्रभु लीला सोई, पुलकित भयउ शरीर॥
कहै भुशुण्डि सुनहु खगनायक ❀ रामचरित सेवक सुखदायक
नृपमन्दिर सुन्दर सबभांती ❀ खचितकनकमणि नानाजाती
वरणि न जाय रुचिर[1] अँगनाई ❀ जहँ खेलहिं नित चारो भाई
बाल विनोद[2] करत रघुराई ❀ विचरत अजिर जननिसुखदाई
मरकत मृदुल कलेवँर[4] श्यामा ❀ अङ्गअङ्गप्रति छवि बहु कामा
नव राजीव अरुण मृदु चरणा ❀ पदजरुचिरनखशशिद्युतिहरणा
ललित अङ्गकुलिशादिक चारी ❀ नूपुर[5] चारु मधुर रवकारी
चारु पुरट मणि रचित बनाई ❀ कटिकिङ्किणि[6] कलमुखर सुहाई
दो० रेखा त्रय सुन्दर उदर, नाभि रुचिर गम्भीर ।
उर आयत भ्राजत विविध, बाल विभूषण चीर ॥
अरुण पाणि नख करज मनोहर ❀ बाहु विशाल विभूषण सोहर
कन्ध बाल केहरि[8] दर ग्रीवा ❀ चारु चिबुक आनन छवि सींवा
कलबल वचन अधर अरुणारे ❀ दुइ दुइ दशन विशद वरबारे
ललित कपोल मनोहर नासा ❀ सकलसुखद शशिकरसमहासा
नीलकञ्जलोचन भयमोचन ❀ भ्राजत भाल तिलक गोरोचन
विकट भृकुटि सम श्रवण सुहाये ❀ कुञ्चित कच मेचक छवि छाये
पीत झीन झँगुली तनु सोही ❀ किलकनिचितवनिभावतमोही
रूपराशि नृप अजिर विहारी ❀ नाचहिं निजप्रतिबिम्ब निहारी
मोसनकरहिं विविधविधिक्रीड़ा ❀ वर्णत चरित होत मन व्रीड़ा
किलकत मोहिं धरन जब धावहिं ❀ चलौं भाजि तब पूप[9] दिखावहिं
दो० आवत निकट हँसहिं प्रभु, भाजत रुदन कराहिं ।
जाउँ समीप गहन पद, फिरिफिरि चितैपराहिं ॥

१ आंगन २ सुन्दर ३ आनन्द ४ शरीर ५ पहुँटिया ६ करधनी ७ चौंड़ा ८ सिंह ९ पुवा ॥

प्राकृत शिशुइव लीला, देखि भयउ मोहिं मोह।
कवन चरित्र करत प्रभु, चिदानन्द सन्दोह॥

इतना मन आनत खगराया ❀ रघुपति प्रेरित व्यापी माया
सो माया न दुखद मोहिं काहीं ❀ आन जीव इव संसृति नाहीं
नाथ इहां कछु कारण आना ❀ सुनहु सो सावधान हरियांना
ज्ञान अखण्ड एक सीतावर ❀ मायावश्य जीव सचराचर
जो सबके रह ज्ञान एक रस ❀ ईश्वर जीवहि भेद कहहु कस
मायावश्य जीव अभिमानी ❀ ईशवश्य माया गुणखानी
परवेश जीव स्ववश भगवन्ता ❀ जीव अनेक एक श्रीकन्ता
द्विविधा भेद यदपि कृत माया ❀ विनु हरिजाइ न कोटि उपाया

दो० रामचन्द्र के भजन विनु, जो चह पद निर्वाण।
ज्ञानवन्त अपि सोपि नर, पशुबिनुपुच्छविषाण॥
राकापति षोड़श उगहिं, तारागण समुदाय।
सकल गिरिन दव लाइये, रवि बिनु राति न जाय॥

ऐसेहि विनु हरिभजन खगेशा ❀ मिटै न जीवन केर कलेशा
हरिसेवकहिं न व्याप अविद्या ❀ प्रभु प्रेरित तेहि व्यापै विद्या
ताते नाश न होइ दासकर ❀ भेद भक्ति बाढ़ै विहंगवर
भ्रममय चकित राम मोहिं देखा ❀ बिहँसे सो सुनु चरित विशेखा
तेहि कौतुक कर मर्म न काहू ❀ जाना अनुज न मातु पिताहू
जानु पाणि धाये मोहिं धरना ❀ श्यामलगात अरुण कर चरना
तब मैं भागि चलेउँ उरगारी ❀ राम गहन कहँ भुजा पसारी
जिमि जिमि दूरि उड़ाउँ अकासा ❀ तिमितिमिभुजदेखौंनिजपासा

दो० ब्रह्मलोक लौं गयउँ मैं, चितवत पाछे उड़ात।
युग अंगुलकर बीच रह, रामभुजाहि मोहिं तात॥

१ गरुड़ २ पराधीन ३ स्वतन्त्र ४ मोक्ष ५ सींग ६ चन्द्रमा ७ नक्षत्र ८ अग्नि॥

सप्तावरण भेद करि, जहँलगि गति रहि मोरि।
गयोंतहांप्रभुभुजनिरखि, व्याकुल भयों बहोरि॥

मूंदेउँ नयन तृषित जब भयऊं ❋ पुनि चितवत कोशलपुर गयऊं
मोहिं विलोकि राम मुसुकाहीं ❋ बिहँसत तुरत गयउँ मुखमाहीं
उदर मांझ सुनु अण्डजरांया ❋ देखेउँ बहु ब्रह्माण्ड निकाया
अतिविचित्र तहँ लोक अनेका ❋ रचना अधिक एक ते एका
कोटिन चतुरानन[2] गौरीशा ❋ अगणितउडुगण रवि रजनीशा[3]
अगणित लोकपाल यमकाला ❋ अगणित भूधर भूमि विशाला
सागर सरिता विपिन[4] अपारा ❋ नानाभांति सृष्टि विस्तारा
सुर मुनि सिद्ध नाग नर किन्नर ❋ चारि प्रकार जीव सचराचर

दो० जो नहिं देखा नहिं सुना, जो मनमहँ न समाइ।
अस अद्भुत तहँ देखेउँ, वरणिकवनविधिजाइ॥
एक एक ब्रह्माण्डमहँ, रहेउँ वर्ष शत एक।
यहि विधि मैं देखत फिरेउँ, अण्डकटाह अनेक॥

लोक लोकप्रति भिन्न विधाता ❋ भिन्नविष्णुशिवमनुदिशित्रांता[5]
नर गन्धर्व भूत वैताला ❋ किन्नरनिशिचरपशुखगव्याला
देव दनुजगण नाना जाती ❋ सकल जीव तहँ आनहिं भांती
महि सरि[6] सागर सर[7] गिरि नाना ❋ सब प्रपञ्च तहँ आनहिं आना
अण्डकोश प्रति प्रति निज रूपा ❋ देखेउँ जिनिसि अनेक अनूपा
अवधपुरी प्रति भुवन निहारी ❋ सरयू भिन्न भिन्न नर नारी
दशरथ कौशल्यादिक माता ❋ विविधरूप भरतादिक भ्राता
प्रति ब्रह्माण्ड राम अवतारा ❋ देखेउँ बाल विनोद अपारा

दो० भिन्न भिन्न सब देखेउं, अतिविचित्र हरियान।
अगणित भुवन फिरेउँ मैं, राम न देखा आन॥

१ गरुड़ २ ब्रह्मा ३ चन्द्रमा ४ वन ५ दिशाओं के रक्षक ६ नदी ७ तालाब॥

सोइ शिशुपन सोइ शोभा, सोइ कृपालु रघुवीर ।
भुवन भुवन देखत फिरेउँ, प्रेरित मोहसमीर ॥

भ्रमत मोहिं ब्रह्मारड अनेका ❀ बीते मनहुँ कल्पशत एका
फिरतफिरतनिजआश्रमआयउँ ❀ तहँ पुनि रहि कछुकाल गवायउँ
निजप्रभुजन्म अवध सुनि पायउँ ❀ निर्भर प्रेम हरषि उठि धायउँ
देखेउँ जन्म महोत्सव जाई ❀ जेहिविधि प्रथम कहा मैं गाई
राम उदर देखेउँ जग नाना ❀ देखत बनै न जात बखाना
तहँ पुनि देखेउँ राम सुजाना ❀ मायापति कृपालु भगवाना
करौं विचार बहोरि बहोरी ❀ मोहकलित व्यापित मतिभोरी
उभय घरीमहँ मैं सब देखा ❀ भयउँ भ्रमित मन मोह विशेखा

दो० देखिकृपालु विकलमोहिं, बिहँसे तब रघुवीर ।
बिहँसतही मुख बाहर, आयउँ सुनु मतिधीर ॥
सोइ लरिकाई मोहिंसन, लगे करन पुनि राम ।
कोटि भांति समुझायों, मन न लहै विश्राम ॥

देखि चरित यह सो प्रभुताई ❀ समुझत देहदशा बिसराई
धरणि परेउँ मुख आव न बाता ❀ त्राहि त्राहि आरतजन त्राता
प्रेमाकुल प्रभु मोहिं विलोकी ❀ निजमाया प्रभुता तब रोंकी
कर सरोज प्रभु मम शिर धरेऊ ❀ दीनदयालु सकल दुख हरेऊ
कीन्ह राम मोहिं विगत विमोहा ❀ सेवक सुखद कृपासन्दोहा
प्रभुता प्रथम विचारि विचारी ❀ मन महँ होइ हर्ष अतिभारी
भक्तबछलता प्रभुकै देखी ❀ उपजी मम उर प्रीति विशेखी
सजलनयन पुलकित करजोरी ❀ कीन्ही बहुविधि विनय बहोरी

दो० सुनि सप्रेम मम वाणी, देखि दीन निज दास ।
वचन सुखद गम्भीर मृदु, बोले रमानिवास ॥

१ बालपन २ मोहकी हवा ३ दुःखीलोग ४ रक्षक ५ प्रेमसे विकल ६ कोमल ॥

काकभुशुण्डी मांगु वर, अतिप्रसन्न मोहिं जानि।
अणिमादिकसिधिअपरानिधि, मोक्षसकलसुखखानि॥

ज्ञान विवेक वि.ति विज्ञाना ❁ मुनि दुर्लभ गुण जे जगजाना
आजु देउँ सब संशय नाहीं ❁ मांगु जो तोहिं भाव मनमाहीं
सुनि प्रभुवचन बहुत अनुरागेउँ ❁ मन अनुमान करन तब लागेउँ
प्रभु कह देन सकल सुख सही ❁ भक्ति आपनी देन न कही
भक्तिहीन गुण सुख सब कैसे ❁ लवँण बिना बहु व्यञ्जन जैसे
भजनहीन सुख कवने काजा ❁ अस विचारि बोलेउँ खगराजा
जो प्रभु है प्रसन्न वर देहू ❁ मोपर करहु कृपा अरु नेहू
मन भावत वर मांगौं स्वामी ❁ तुम उदार उर अन्तरयामी

दो० अविरल भक्ति विशुद्ध तव, श्रुति पुराण जो गाव।
जेहि खोजत योगीश मुनि, प्रभुप्रसाद कोउ पाव॥
भक्त कल्पतरु प्रणतहित, कृपासिन्धु सुखधाम।
सोइ निज भक्ति मोहिं प्रभु, देहु दयाकरि राम॥

एवमस्तु कहि रघुकुलनायक ❁ बोले वचन परम सुखदायक
सुनु वायस तैं परम सयाना ❁ काहे न मांगसि अस वरदाना
सब सुखखानि भक्ति तैं मांगी ❁ नहिं कोउ तोहिंसमान बड़भागी
जो मुनि कोटियत्न नहिं लहहीं ❁ करि जप योग अनलतनु दहहीं
रीझेउँ देखि तोरि चतुराई ❁ मांगेउ भक्ति मोहिं अति भाई
सुनु विहंग प्रसाद अब मोरे ❁ सब शुभगुण बसिहैं उर तोरे
भक्ति ज्ञान विज्ञान विरागा ❁ योग चरित्र रहस्य विभागा
जानब तैं सबहीकर भेदा ❁ मम प्रसाद नहिं साधन खेदा

दो० मायासम्भव सकल भ्रम, अबनहिंव्यापिहितोहिं।
जान्यसु ब्रह्म अनादिअज, अगुण गुणाकर मोहिं॥

१ बहुत खुश २ आठ सिद्धियों में एक का नाम ३ नमक ४ वेद ५ ऐसाही हो॥

मोहिं भक्त प्रिय सन्तते[2], अस विचारि सुनु काग।
काय वचन मन ममचरण, करहु अचल अनुराग ॥

अब सुनु परम विमल ममबानी ❋ सत्यसुगम निगमादि[3] बखानी
निज सिद्धान्त सुनावों तोहीं ❋ सुनि मनधरु सबतजि भजु मोहीं
मम माया सम्भवें[4] संसारा ❋ जीव चराचर विविध प्रकारा
सब मम प्रिय सब मम उपजाये ❋ सबते अधिक मनुज मोहिं भाये
तेहिमहँद्विज द्विजमहँश्रुतिधारी[5] ❋ तिनमहँ निगमधर्म अनुसारी
तिनमहँ पुनि विरक्त पुनि ज्ञानी ❋ ज्ञानिहुँ ते अतिप्रिय विज्ञानी
तेहिते पुनि मोहिं प्रिय निजदासा ❋ जेहि गति मोरि न दूसरि आसा
पुनि पुनि सत्य कहौं तोहिं पाहीं ❋ मोहिं सेवकसम प्रिय कोउ नाहीं
भक्तिहीन विरञ्चि किन होई ❋ सब जीवन सम प्रिय मोहिं सोई
भक्तिवन्त अति नीचहु प्राणी ❋ मोहिं प्राणप्रिय अस मम वाणी

दो० शुचिसुशील सेवकसुमति, कहुप्रियकाहि न लाग।
श्रुतिपुराण कह नीति अस, सावधान सुनु काग ॥

एक पिताके विपुल[6] कुमारा ❋ होइँ पृथक गुण शील अचारा
कोउ पण्डित कोउ तापस ज्ञाता ❋ कोउ धनवन्त शूर कोउ दाता
कोउ सर्वज्ञ धर्मरत कोई ❋ सबपर पितहिं प्रीति सम होई
कोउ पितुभक्त वचन मन कर्म्मा ❋ सपनेहुँ जान न दूसर धर्म्मा
सो प्रिय सुत पितु प्राण समाना ❋ यद्यपि सो सबभाँति अयानाँ[7]
यहि विधि जीव चराचर जेते ❋ त्रिजग देव नर असुर समेते
अखिल विश्व यह मम उपजाया ❋ सबपर मोरि बराबरि दाया
तिनमहँ जो परिहरि मद माया ❋ भजहिं मोहिं मन वच अरु काया

दो० पुरुष नपुंसक नारि नर, जीव चराचर कोइ।
सर्वभाव भजु कपट तजि, मोहिं परमप्रिय सोइ ॥

सो० सत्य कहौं खग तोहिं, शुचिसेवकममप्राणप्रिय।

१ सेवक २ हमेशा ३ वेदादि ४ उत्पत्ति ५ वेदपाठी ६ बहुत ७ अज्ञान ॥

अस विचारि भजु मोहिं, परिहरि आश भरोस सब॥
कबहुँ काल नहिं व्यापै तोहीं ❋ सुमिरेसु भजेसु निरन्तर मोहीं
प्रभु वचनामृत सुनि न अघाऊं ❋ तनु पुलकित मन अतिहर्षाऊं
सो सुख जानैं मन अरु काना ❋ नहिं रसनां प्रति जाइ बखाना
प्रभु शोभा सुख जानत नयना ❋ किमिकहिसकैंतिन्हैंनहिंवयना
बहुविधि मोहिं प्रबोधि शिषदेईं ❋ लगे करन शिशु कौतुकै तेईं
सजलनयन कछुमुखकरि रूखा ❋ चितै मातु तन लागी भूखा
देखि मातु आतुरं उठिधाई ❋ कहि मृदुवचन लिये उरलाई
गोदराखि कराव पय पाना ❋ रघुपतिचरितललितकरिगाना
सो० जेहि सुखलागि पुरारि, अशिववेषकृतशिवसुखद।
अवधपुरी नर नारि, तेहि सुखमहँ संततमगन॥
सोइ सुखकर लवलेश, जिन बारेक सपनेहुँ लहेउ।
ते नहिं गनहिं खगेशं, ब्रह्मसुखहिं सज्जनसुमति॥
मैं पुनि रह्यों अवध कछुकाला ❋ देख्यों बाल विनोद रसाला
रामप्रसाद भक्ति वर पायउँ ❋ प्रभुपदवन्दि निजाश्रम आयउँ
तबते मोहिं न व्यापी माया ❋ जबते रघुनायक अपनाया
यह सब गुप्त चरित मैं गावा ❋ हरिमाया जिमि मोहिं नचावा
निज अनुभव अब कहौं खगेशा ❋ बिनु हरिभजन न जाहिं कलेशा
राम कृपा बिनु सुनु खगराई ❋ जानि न जाइ राम प्रभुताई
जाने बिनु न होइ परँतीती ❋ बिनु परतीति होइ नहिं प्रीती
प्रीति विना नहिं भक्ति दृढ़ाई ❋ जिमि खगेश जलकी चिकनाई
सो० बिनु गुरु होइ कि ज्ञान, ज्ञान कि होइ विराग बिनु।
गावहिं वेद पुरान, सुखकिलहियहरिभक्तिबिनु॥
कोउ विश्राम कि पाव, तात सहज सन्तोष बिनु।
चलै कि जल बिनु नाव, कोटियतनपचिपचिमरिय

१ छोड़कर २ जीभ ३ खेल ४ शीघ्र ५ शिव ६ गरुड़ ७ विश्वास॥

बिनु सन्तोष न काम नशाहीं ❀ काम अछत सुख सपनेहुँ नाहीं
रामभजनबिनुमिटहिं कि कामा ❀ थलविहीन तरु कबहुँ कि जामा
विना ज्ञान की समता आवै ❀ कोउ अवकाश कि नभ बिनु पावै
श्रद्धा विना धर्म नहिं होई ❀ बिनु महि गन्ध कि पावै कोई
बिनु तप तेज कि करु विस्तारा ❀ जल बिनु रस कि होइ संसारा
शील कि मिलु बिनु बुधसेवकाई ❀ जिमि बिनु तेज न रूप गुसांई
निजसुख बिनु मन होइ कि थीरा ❀ परस कि होइ विहीन समीरा
कवनिउँसिद्धिकिबिनुविश्वासा ❀ बिनुहरिभजन न भवभयनासा

दो० बिनु विश्वास भक्ति नहिं, तेहि बिनु द्रवहिं न राम।
रामकृपा बिनु सपनेहुँ, मन कि लहै विश्राम॥

सो० अस विचारि मतिधीर, तजिकुतर्कसंशयसकल।
भजहु राम रणधीर, करुणाकरसुन्दरसुखद॥

निजमति सरिस नाथ मैं गाई ❀ प्रभु प्रताप महिमा खगराई
कह्यों न कछु करियुक्ति विशेखी ❀ यह सब मैं निजनयनन देखी
महिमा नाम रूप गुणगाँथा ❀ सकल अमित अनन्त रघुनाथा
निजनिजमतिमुनिहरिगुणगावहिं ❀ निगम शेष शिवपार न पावहिं
तुम्हें आदि खग मशक प्रयन्ता ❀ नभ उड़ाहिं नहिं पावहिं अन्ता
तिमि रघुपति महिमा अवगाहा ❀ तात कबहुँ कोउ पाव कि थाहा
राम काम शतकोटि सुभगतन ❀ दुर्गा कोटि अमित अरिमर्दन
शक्र कोटिशतसरिस विलासा ❀ नभशतकोटिअमित अवकासा

दो० मरुतकोटिशत विपुलबल, रविशतकोटिप्रकास।
शशिशतकोटि सुशीतल, शमनसकलभवत्रास॥
कालकोटिशतसरिसअति, दुस्तर दुर्ग दुरन्त।
धूम्रकेतु शतकोटि सम, दुराधर्ष भगवन्त॥

१ वृक्ष २ आकाश ३ पृथ्वी ४ ज्ञानी ५ हवा ६ संदेह ७ गुणोंकी कहानी ८ मशा॥

प्रभु अगाध शतकोटि पताला ❀ शमन कोटिशत सरिस कराला
तीरथअमित कोटिशत पावन ❀ नाम अखिल अघपुञ्ज नशावन
हिमगिरिकोटि अचल रघुवीरा ❀ सिन्धु कोटिशत सरिस गँभीरा
कामधेनु शतकोटि समाना ❀ सकल कामदायक भगवाना
शारद कोटि अमित चतुराई ❀ विधिशतकोटिअमितनिपुणाई
विष्णु कोटिशत पालनकर्त्ता ❀ रुद्र कोटिशत सम संहर्त्ता
धनेद कोटिशत सम धनवाना ❀ माया कोटि प्रपञ्च निधाना
धराधरण शतकोटि अहीशा ❀ निरवधि निरुपम प्रभु जगदीशा

छं० निरवधिनिरूपमरामसमनहिंआननिगमागमकहै।
जिमि कोटिशतखद्योतँ रविसम कहतअतिलघुतालहै॥
यहिभांतिनिजनिजमतिविलासमुनीशहरिहिबखानहीं।
प्रभु भावगाहक अतिकृपालु सुप्रेमते सुख मानहीं॥

दो० राम अमित गुणसागर, थाह कि पावै कोइ।
सन्तनसनजसकछुसुनेउँ, तुमहिं सुनायउँ सोइ॥

सो० भाववश्य भगवान, सुखनिधानकरुणाभुवन।
तजि ममता मद मान, भजिय राम सीतारमण॥

सुनि भुशुण्डिके वचन सुहाये ❀ हरषित खगपति पंख फुलाये
नयन नीर मन अतिहर्षाना ❀ श्रीरघुपति प्रताप उरआना
पाछिल मोह समुझि पछिताना ❀ ब्रह्म अनादि मनुज करि जाना
पुनिपुनि काक चरण शिरनावा ❀ जानि रामसम प्रेम बढ़ावा
गुरु विनु भवनिधि तरै न कोई ❀ जो विरञ्चि शंकर सम होई
संशय सर्प ग्रसेउ मोहिं ताता ❀ दुखद लहरि कुतर्क बहु वाता
तव स्वरूप गारुड़ि रघुनायक ❀ मोहिं जियायहु जनसुखदायक
तव प्रसाद मम मोह नशाना ❀ राम रहस्य अनूपम जाना

१ पापसमूह २ कुबेर ३ वेद ४ जुगनू ५ लोक ६ मनमें ७ हवा ८ उपमा रहित॥

दो० ताहि प्रशंसि विविधविधि, शीश नाइ करजोरि ।
वचन विनीत सप्रेम मृदु, बोले गरुड़ बहोरि ॥
प्रभु अपने अविवेक ते, पूछौं स्वामी तोहिं ।
कृपासिन्धु सादर कहहु, जानि दासनिज मोहिं॥

तुम सर्वज्ञ तज्ञ तम पारा ❀ सुमति सुशील सरल आचारा
ज्ञान विरति विज्ञान निवासा ❀ रघुनायक के प्रिय तुम दासा
कारण कवन देह यह पाई ❀ तात सकल मोहिं कहहु बुझाई
रामचरित सर सुन्दर स्वामी ❀ पायहु कहां कहहु नभगामी
नाथ सुना मैं अस शिवपाहीं ❀ महाप्रलयमहँ क्षय तव नाहीं
मृषा वचन नहिं शंकर कहहीं ❀ सो मोरे मन संशय अहहीं
अग जग जीव नाग नर देवा ❀ नाथ सकल जग काल कलेवा
अण्डकटाह अमित लयकारी ❀ काल महादुरतिक्रम भारी

सो० तुमहिं न व्यापै काल, अतिकराल कारणकवन ।
सो मोहिं कहहु कृपाल, ज्ञानप्रभाव कि योगबल ॥

दो० प्रभु तव आश्रम आयउँ, मोर मोह भ्रम भाग ।
कारणकवन सो नाथ अब, कहहु सहित अनुराग ॥

गरुड़ गिराँ सुनि हर्षेउ कागा ❀ बोलेउ उमा सहित अनुरागा
धन्य धन्य तव मति उरगारी ❀ प्रश्न तुम्हारि मोहिं अतिप्यारी
सुनि तव प्रश्न सप्रेम सुहाई ❀ बहुत जन्मकी सुधि मोहिं आई
सब निज कथा कहौं मैं गाई ❀ तात सुनहु सादर मनलाई
जप तप मख शम दम व्रत दाना ❀ विरति विवेक योग विज्ञाना
सबकर फल रघुपति पदप्रेमा ❀ तेइ बिनु कोउ न पाव सुखक्षेमा
यहि तनु राम भक्ति मैं पाई ❀ ताते मोहिं परम प्रिय भाई
जेहिते कछु निज स्वारथ होई ❀ तेहि पर ममता कर सब कोई

१ ब्रह्मज्ञ २ सीधा ३ संपूर्ण ४ झूंठ ५ ब्रह्माण्डसमूह ६ प्रीति ७ वाणी ८ गरुड़ ॥

सो० पन्नगारि सुनु नीति, श्रुतिसम्मत सज्जन कहहिं ।
अतिनीचहुसनप्रीति, करियजानि निजपरमहित ॥
पाट कीट ते होइ, तेहिते पाटम्बर रुचिर ।
कृमि पालै सब कोइ, परमअपावन प्राणसम ॥

स्वारथ सर्व जीव कहँ येहा ❋ मन क्रम वचन रामपद नेहा
सोइ पावन सोइ सुभग[1] शरीरा ❋ जो तनु पाइ भजै रघुवीरा
रामविमुख लहि विधिसम देही ❋ कवि कोविद[2] न प्रशंसहिं तेही
रामभक्ति यहि तनु उर जामी ❋ ताते मोहिं परमप्रिय स्वामी
तजौं न तनु निज इच्छा मरणा ❋ तनु बिनु वेद भजन नहिं वरणा
प्रथम मोह मोहिं बहुत विगोवा[3] ❋ रामविमुख सुख कबहुँ न सोवा
नानाजन्म कर्म्म पुनि नाना ❋ किये योग जप तप मख[4] दाना
कवनि योनि जन्मेउँ जहँ नाहीं ❋ मैं खगेश भ्रमि भ्रमि जगमाहीं
देखेउँ सब करि कर्म्म गुसाईं ❋ सुखी न भयउँ अबहिंकी नाईं
सुधि मोहिं नाथ जन्म बहुकेरी ❋ शिवप्रसाद मति मोह न घेरी

दो० प्रथम जन्मके चरित अब, कहौं सुनहु विहँगेश[5] ।
सुनि प्रभुपद रति ऊपजै, जाते मिटै कलेश ॥
पूर्वकल्पते एक प्रभु, युग कलियुग मलमूल ।
नर अरु नारि अधर्मरत, सकलनिगमप्रतिकूल ॥

तेहि कलियुग कोशलपुर जाई ❋ जन्मत भयउँ शूद्रतनु[6] पाई
शिवसेवक मन क्रम अरु बानी ❋ आन देव निन्दक अभिमानी
धन मदमत्त परम वाचाला[7] ❋ उग्रबुद्धि उर दम्भ विशाला
यदपि रहेउँ रघुपति रजधानी ❋ तदपि न कछु महिमा उरआनी
अब जाना मैं अवधप्रभावा ❋ निगमागम पुराण अस गावा
कवनेहुँ जन्म अवध बस जोई ❋ राम परायण सो परि होई

१ सुन्दर २ पण्डित ३ भटकाया ४ यज्ञ ५ गरुड़ ६ नीचदेह ७ बकवादी ॥

अवधप्रभाव जान तब प्राणी ❋ जब उर बसहिं राम धनुपाणी
सो कलिकाल कठिन उरगारी ❋ पापपरायण सब नर नारी

दो० कलिमल ग्रसेउ धर्म सब, गुप्त भये सदग्रन्थ।
दम्भिननिजमतिकल्पिकरि, प्रकटकीन्हबहुपन्थ॥
भये लोग सब मोहवश, लोभ ग्रसे शुभकर्म।
सुनु हरियान सुज्ञान निधि, कहौंकछुककलिधर्म॥

वर्ण धर्म नहिं आश्रम चारी ❋ श्रुति विरोधरत सब नर नारी
द्विज श्रुतिवंचक भूप प्रजासन ❋ कोउनहिंमाननिगमअनुशासन
मारग सोइ जाकहँ जो भावा ❋ पण्डित सोइ जो गाल बजावा
मिथ्यारम्भ दम्भरत जोई ❋ ताकहँ सन्त कहैं सब कोई
सोइ सयान जो परधनहारी ❋ जो करु दम्भ सो बड़ आचारी
जो बहु झूंठ मसखरी जाना ❋ कलियुग सोइ गुणवन्त बखाना
निराचार जो श्रुतिपंथ त्यागी ❋ कलियुग सोइ ज्ञानी वैरागी
जाके नख अरु जटा विशाला ❋ सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला

दो० अशुभ वेष भूषण धरे, भक्ष्याभक्ष्य जे खाहिं।
ते योगी ते सिद्ध नर, पूज्य ते कलियुग माहिं॥

सो० जे अपकारी चार, तिनकर गौरव मान्यता।
मन क्रम वचन लबार, ते वक्ता कलिकालमहँ॥

नारि विवश नर सकल गुसाईं ❋ नाचहिं नट मर्कट की नाईं
शूद्र द्विजन उपदेशहिं ज्ञाना ❋ मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना
सब नर काम लोभरत क्रोधी ❋ देव विप्र श्रुति सन्त विरोधी
गुणमन्दिर सुन्दर पति त्यागी ❋ भजहिं नारि परपुरुष अभागी
सौभागिनी विभूषण हीना ❋ विधवनके शृङ्गार नवीना
गुरु शिष अंध बधिर कर लेखा ❋ एक न सुनहिं एक नहिं देखा
हरै शिष्यधन शोकँ न हरई ❋ सो गुरु घोर नरकमहँ परई

१ दम्भी २ वेदमार्ग ३ जाहिर ४ बांचनेवाले ५ डालकर ६ गहना ७ रंज॥

मातु पिता बालकन बुलावहिं ❀ उदर भरै सोइ धर्म सिखावहिं

दो० ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर, कहहिं न दूसरि बात।
कौड़ी कारण मोहवश, करहिं विप्र गुरु घात॥
वाद शूद्र कर द्विजनसन, हम तुमते कछु घाटि।
जानै ब्रह्म सो विप्रवर, आंखि दिखावहिं डाटि॥

परतिय लम्पट कपट सयाने ❀ मोह द्रोह ममता लपटाने
तेइ अभेदवादी ज्ञानी नर ❀ देखा मैं चरित्र कलियुग कर
आपु गये अरु आनहिं घालहिं ❀ जे कोउ सत्मारग प्रतिपालहिं
कल्प कल्प भरि इक इक नर्का ❀ परहिं जे दूषहिं श्रुति करि तर्का
जे वर्णाधम तेलि कुम्हारा ❀ श्वपच[1] किरात कोल कलवारा
नारि मुई गृहसम्पति नासी ❀ मूड़ मुड़ाइ भये संन्यासी
ते विप्रनसन पांव पुजावहिं ❀ उभय[2]लोक निजहाथ नशावहिं
विप्र निरक्षर लोलुप कामी ❀ निराचार शठ वृषली[3]स्वामी
शूद्र करहिं जप तप मख दाना ❀ बैठि वरासन[4] कहहिं पुराना
सब नर कल्पित करहिं अचारा ❀ जाइ न वरणि अनीति अपारा

दो० भये वर्णसंकर कलिहिं, भिन्नसेतु[5] सब लोग।
करहिं पाप दुख पावहीं, भयरुजशोकवियोग॥
श्रुतिसम्मत हरिभक्तिपथ, संयुत विरति विवेक।
ते न चलहिं नर मोहवश, कल्पहिं पन्थ अनेक[6]॥

छं० बहुधाम सँवारहिं योगि यती।
विषया हरिलीन्ह गई विरती॥
तपसी धनवन्त दरिद्र गृही।
कलि कौतुक तात न जात कही॥
कुलवन्ति निकारहिं नारि सती[7]।

१ चांडाल २ दोनों लोक ३ शूद्रापति ४ व्यासगद्दी ५ मर्यादाहीन ६ बहुत ७ पतिव्रता॥

गृह आनहिं चेरिहिं चोरगती ॥
सुत मानहिं मातु पिता तबलौं ।
अबलानन दीख नहीं जबलौं ॥
ससुरारि पियारि लगी जबते ।
रिपुरूप कुटुम्ब भये तबते ॥
नृप पाप परायण धर्म नहीं ।
करु दण्ड विदण्ड प्रजा नितहीं ॥
धनवन्त कुलीन मलीन अपी ।
द्विज चिह्न जनेउ उघारतपी ॥
नहिं मान पुराणहिं वेदहिं जो ।
हरिसेवक सन्त सही कलि सो ॥
कविवृन्द उदार दुनी न सुनी ।
गुणदूषक व्रातन कोपि गुनी ॥
कलि बारहिंबार दुकाल परैं ।
बिनु अन्न दुखी बहुलोग मरैं ॥

दो० सुनु खगेश कलिकपट हठ, दम्भ द्वेष पाखण्ड ।
मान मोह मारादि मद, व्यापिरहेउ ब्रह्मण्ड ॥
तामस धर्म करहिं नर, जप तप मख व्रत दान ।
दैव न वर्षें धरणि पर, बये न जामहिं धान ॥

छं० अबला कच भूषण भूरि क्षुधा ।
धनहीन दुखी ममता बहुधा ॥
सुख चाहहिं मूढ़ न धर्मरता ।

१ स्त्री का मुख २ परिवार ३ अकाल ४ पृथ्वी ५ वार ६ अधिक ॥

मतिथोरि कठोरि न कोमलता ॥
नरपीड़ित रोग न भोग कहीं।
अभिमान विरोध अकारणहीं ॥
लघुजीवन संवत पञ्चदशा।
कल्पान्त न नाश गुमान अशा ॥
कलिकाल बेहाल किये मनुजा।
नहिं मानत कोउ अनुंजा तनुंजा ॥
नहिं तोष विचार न शीतलता।
सब जाति कुजाति भये मँगता ॥
इरषा परुषा छल लोलुपता।
भरिपूरिरही समता विगता ॥
सबलोग वियोग विशोक हये।
वर्णाश्रम धर्म अचार गये ॥
दम दान दया नहिं जान पनी।
जड़ता परिपञ्चकताति घनी ॥
तनुपोषक नारि नरा सगरे।
परनिन्दक जे जग में बगरे ॥

दो० सुनु व्यालारि करालकलि, मल अवगुण आगार।
गुणहु बहुत कलिकालकर, बिनु प्रयास निस्तार ॥
कृतयुग त्रेता द्वापरहुँ, पूजा मख अरु योग।
जोगतिहोइसोकलिहिंहरि, नामते पावहिं लोग ॥

कृतयुग सब योगी विज्ञानी ❀ करि हरिध्यान तरहिं भवप्रानी
त्रेता विविध यज्ञ नर करहीं ❀ प्रभुहिं समर्पि कर्म भव तरहीं

१ बहिन २ बेटी ३ लालच ४ मूर्खता ५ गल्ह ६ मन्दिर ७ सतयुग ॥

द्वापर करि रघुपति पदपूजा ❀ नर भव तरहिं उपाय न दूजा
कलि केवल हरिगुणगण गाहा ❀ गावत नर पावहिं भव थाहा
कलियुग योग यज्ञ नहिं ज्ञाना ❀ एक अधार रामगुण गाना
सब भरोस तजि जो भजु रामहिं ❀ प्रेम समेत गाव गुणग्रामहिं
सो भवतरु कछु संशय नाहीं ❀ नाम प्रताप प्रकट कलिमाहीं
कलिकर एक पुनीत प्रतापा ❀ मानस पुण्य होइ नहिं पापा

दो० कलियुगसमयुगआननहिं, जो नर करु विश्वास ।
गाइ रामगुणगण विमल, भवतरु बिनहिं प्रयास[१]॥
प्रकट चारिपद धर्म के, कलिमहँ एक प्रधान[२] ।
येन केन विधि दीन्हे, दान करै कल्यान ॥

नित युग धर्म होहिं सब केरे ❀ हृदय राम माया के प्रेरे
शुद्ध सत्त्व समता विज्ञाना ❀ कृत प्रभाव प्रसन्न मनजाना
सत्त्व बहुत कछु रज रतिकर्मा ❀ सब विधि शुभ त्रेताकर धर्मा
बहु रज सत्त्व स्वल्प कछु तामस ❀ द्वापर धर्म हर्ष भय मानस
तामस बहुत रजोगुण थोरा ❀ कलिप्रभाव विरोध चहुँ ओरा
बुध[४] युगधर्म जानि मनमाहीं ❀ तजि अधर्म रत धर्म कराहीं
कालधर्म नहिं व्यापहिं ताही ❀ रघुपतिचरण प्रीति अति जाही
नटकृत कपट विकट खगराया ❀ नट सेवकहिं न व्यापै माया

दो० हरिमाया कृत दोष गुण, बिनु हरिभजन न जाहिं ।
भजियरामसबकामतजि, अस विचारि मनमाहिं ॥
तेहि कलिकाल वर्षबहु, बसेउँ अवध विहँगेश[५] ।
परेउ दुकाल विपत्ति वश, तब मैं गयउँ विदेश ॥

गयउँ उजैन सुनहु उरगारी ❀ दीन मलीन दरिद्र दुखारी
गये काल कछु सम्पति पाई ❀ तहँ पुनि करौं शंभु[६] सेवकाई
विप्र एक वैदिक शिव पूजा ❀ करै सदा तेहि काज न दूजा

१ गुणसमूह २ मेहनत ३ मुख्य ४ पण्डित ५ गरुड़ ६ महादेव ॥

परमसाधु परमारथविन्दक ❋ शंभु उपासक नहिं हरि निन्दक
सेवों मैं तेहि कपट समेता ❋ द्विज दयालुअतिनीतिनिकेता[1]
बाहिर नम्र देखि मोहिं साईं ❋ विप्र पढ़ाव पुत्र की नाईं
शम्भुमन्त्र मोहिं द्विजवर दीन्हा ❋ शुभउपदेश विविधविधि कीन्हा
जपौं मन्त्र शिवमंदिर जाई ❋ हृदय दम्भ अहंमिति[2] अधिकाई

दो० मैं खल मल संकुल मति, नीचजाति वश मोह।
द्विज हरिजन देखत जरौं, करौं विष्णुकर द्रोह॥

सो० गुरु नित मोहिं प्रबोध, दुखित देखि आचरणमम।
मोहिंउपजैअतिक्रोध, दम्भिहि नीति कि भावई॥

एकबार गुरु लीन्ह बुलाई ❋ मोहिं नीति बहुभांति सिखाई
शिव सेवाकर फल सुत सोई ❋ अविरल भक्ति रामपद होई
रामहिं भजहिं तात शिव धाता ❋ नरपामर कर केतिक बाता
जासुचरण शिव अज अनुरागी ❋ तासु द्रोह सुख चहसि अभागी
हरकहँ हरिसेवक गुरु कहेऊ ❋ सुनि खगनाथ हृदय मम दहेऊ[3]
अधमजाति मैं विद्या पाये ❋ भयउँ यथा अहि दूध पियाये
मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती ❋ गुरुसन द्रोह करौं दिनराती
अतिदयालु गुरु स्वल्प न क्रोधा ❋ पुनिपुनिमोहिं सिखाव सुबोधा
ज्यहिते नीच बड़ाई पावा ❋ सो प्रथमहिं हठि ताहि नशावा
धूम अनॅल[4] सम्भव सुनु भाई ❋ तेहि बुझाव घनपदवी पाई
रज मगुपरी निरादर रहई ❋ सब कर पदप्रहार नित सहई
मरुत उड़ाव प्रथम तेहि भरई ❋ पुनि नृप नयन किरीटॅन[5] परई
सुनु खगपतिअससमुझिप्रसंगा ❋ बुध न करहिं अधमनकर संगा
कवि कोविद गावहिं असनीती ❋ खलसॅन[6]कलहनभलिनहिंप्रीती
उदासीन बरु रहिय गुसाईं ❋ खल परिहरिय श्वान की नाईं
मैं खल हृदय कपट कुटिलाई[7] ❋ गुरु हित कहैं न मोहिं सुहाई

१ नीति के घर २ अहंकार ३ जला ४ आगी ५ मुकुट ६ दुर्जन ७ टेढ़ाई॥

दो॰ एक बार हरमन्दिर, जपतरहेउँ शिवनाम।
गुरु आये अभिमान ते, उठिनहिंकीनप्रणाम॥
सो दयालु नहिं कहेउ कछु, उर न रोष लवलेश।
अति अँघ गुरु अपमानता, सहि नहिं सके महेश॥

मंदिर मांझ भई नभबानी ※ रे हतभाग्य अधम अभिमानी
यद्यपि तवगुरु स्वल्प न क्रोधा ※ अतिकृपालु चित सम्यकबोधा
तदपि शाप देहौं शठ तोहीं ※ नीतिविरोध सुहात न मोहीं
जो नहिं करौं दण्ड खल तोरा ※ भ्रष्ट होइ श्रुतिमारग मोरा
जे शठ गुरुसन ईर्षा करहीं ※ रौरवनरक कल्पशत परहीं
त्रिजगयोनि पुनि धरहिं शरीरा ※ अयुँत जन्मभरि पावहिं पीरा
बैठि रहेसि अजगरइव पापी ※ होसि सर्प खल मलमतिव्यापी
महाविटप कोटॅर महँ जाई ※ रहुरे अधम अधोगति पाई

दो॰ हाहाकार कीन्ह गुरु, सुनिदारुण शिवशाप।
कंपितमोहिंबिलोकिअति, उर उपजा परिताप॥
करि दण्डवत सप्रेम गुरु, शिवसम्मुखकरजोरि।
विनय करत गद्गदगिरा, समुझिघोरगतिमोरि॥

छं॰ नमामीशमीशान निर्वाणरूपं।
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं॥
अजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं।
चिदाकाशमाकाशवासं भजेहं॥
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं।
गिराज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं॥
करालं महाकालकालं कृपालं।

१ घमंड २ बड़ापाप ३ दशहज़ार ४ खोखला ५ शोक ६ भजताहूं ७ शिव॥

गुणागार संसारपारं नतोहं ॥
तुषाराद्रि संकाशगौरं गँभीरं ।
मनो भूतकोटिप्रभासी शरीरं ॥
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगंगा।
लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा ॥
चलत्कुंडलं शुभ्रनेत्रं विशालं ।
प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं ॥
मृगाधीश चर्माम्बरं मुण्डमालं ।
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं ।
अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं ॥
त्रिधाशूलनिर्मूलनं शूलपाणिं ।
भजेहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥
कलातीतकल्याण कल्पांतकारी ।
सदासज्जनानन्ददाता पुरारी ॥
चिदानन्दसंदोह मोहापहारी ।
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥
न यावत् उमानाथ पादारविन्दं ।
भजंतीह लोके परे वा नराणाम् ॥
न तावत्सुखं शांति संतापनाशं ।
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजां ।

१ हिमाचल २ सर्प ३ सिंह ४ शिव ५ मोहनाशक ६ कामदेव के वैरी शिव ॥

नतोहं सदा सर्व्वदा शम्भुतुभ्यं ॥
जराजन्मदुःखौघ तातप्यमानं ।
प्रभो पाहिशापान्नमामीशशंभो ॥

श्लो॰ रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतुष्टये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥

दो॰ सुनि विनती सर्वज्ञशिव, देखि विप्र अनुरागु ।
पुनि मन्दिर नभवाणिभइ, हे द्विजवर वरमांगु ॥
जो प्रसन्न प्रभु मोहिंपर, नाथ दीनपर नेहु ।
निजपदभक्ति देहु प्रभु, पुनि दूसर वर देहु ॥
तव मायावश जीव जड़, सन्तत फिरै भुलान ।
तेहिपर क्रोध न करियप्रभु, कृपासिन्धु भगवान ॥
शङ्कर दीनदयालु अब, यहिपर होहु कृपाल ।
शापानुग्रह होइ जेहि, नाथ थोरही काल ॥

यहिकर होइ परम कल्याना ❀ सोइ करहु अब कृपानिधाना
विप्रगिरा सुनि परहितसानी ❀ एवमस्तु इति भइ नभबानी
यदपि कीन्ह यहिं दारुण पापा ❀ मैं पुनि दीन्ह क्रोध करि शापा
तदपि तुम्हारि साधुता देखी ❀ करिहौं यहिपर कृपा विशेखी
क्षमाशील जे परउपकारी ❀ ते द्विज प्रिय मोहिं यथा खरारी
मोर शाप द्विज मृषा न जाइहि ❀ जन्म सहस्र अवशि यह पाइहि
जन्मत मरत दुसहदुख होई ❀ यहिकहँ स्वल्प न व्यापिहिसोई
कौनेहु जन्म मिटिहि नहिं ज्ञाना ❀ सुनहु शूद्र ममवचन प्रमाना
रघुपतिपुरी जन्म तव भयऊ ❀ पुनि तैं ममसेवा मन दयऊ
पुरी प्रभाव अनुग्रह मोरे ❀ रामभक्ति उपजहि उर तोरे
सुनु मम वचन सत्य अब भाई ❀ हरितोषक व्रत द्विज सेवकाई

१ शिवप्रसन्नतार्थ २ समय ३ ऐसाहीहो ४ रामचन्द्र ५ शूद्र ६ प्रसन्नकरनेवाला ॥

अब जनिकरेसि विप्रअपमाना ❀ जानसु सन्त अनन्त समाना
इन्द्र कुलिश ममशूल विशाला ❀ कालदण्ड हरिचक्र कराला
जो इनकर मारा नहिं मरई ❀ विप्ररोष पावक[1] सो जरई
अस विवेक राखेउ मनमाहीं ❀ तुम कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं
औरौ एक आशिषा मोरी ❀ अव्याहत गति होइहि तोरी

दो० सुनि शिववचन सप्रेमगुरु, एवमस्तु इति भाखि।
मोहिं प्रबोधि गयउ गृह, शम्भुचरणउरराखि॥
प्रेरित काल विन्ध्यगिरि, जायभयउँ मैं व्याल[2]।
बिनु प्रयास सो तनु तजेउँ, नाथ थोरही काल॥
जो तनु धरौं सो तजौं पुनि, अनायास हरियान[3]।
जिमि नूतनपट पहिरिकै, नर परिहरै पुरान॥
शिवराखेउश्रुतिनीतिअरु, मैं नहिं पाव कलेश।
यहिविधि धरेउँ विविधतनु, ज्ञान न गयउ खगेश॥

त्रियग देव नर जो तनु धरेऊं ❀ तहँ तहँ रामभक्ति अनुसरेऊं
एक शूल मोहिं बिसरु न काऊ ❀ गुरुकर कोमल शील स्वभाऊ
परमदेह द्विजकर मैं पाई ❀ सुरदुर्लभ पुराण श्रुति गाई
खेलों तहां बालकन मीला ❀ करौं सकल रघुनायक लीला
प्रौढ़[4] भये मोहिं पिता पढ़ावा ❀ समुझौं सुनौं गुनौं नहिं भावा
मनते सकल वासना भागी ❀ केवल रामचरण लय लागी
कहु खगेश अस कवन अभागी ❀ खरी[5] सेव सुरधेनुहिं[7] त्यागी
प्रेममगन मोहिं कछु न सुहाई ❀ हारेउ पिता पढ़ाय पढ़ाई
भयउ कालवश जब पितु माता ❀ मैं वन गयउँ भजन जनत्राता
जहँ जहँ विपिन मुनीश्वर पावों ❀ आश्रम जाइ जाइ शिर नावों
पूंछौं तिनहिं रामगुणगाहा ❀ कहौं सुनौं हरषित खगनाहा

१ अग्नि २ सांप ३ गरुड़ ४ जोड़े ५ जवान ६ गधी ७ कामधेनु॥

सुनत फिरौं हरिगुण अनुवादा * अव्याहतगति शम्भुप्रसादा
छूटी त्रिविध एषणा गाढ़ी * एक लालसा उर अति बाढ़ी
रामचरणपंकज जब देखौं * तब निजजन्मसफलकरि लेखौं
जेहि पूंछौं सो मुनि अस कहई * ईश्वर सर्वभूतमय अहई
निर्गुण मत नहिं मोहिं सुहाई * सगुणब्रह्मरति उर अधिकाई

दो० गुरुके वचन सुरति करि, रामचरण मन लाग।
रघुपति यश गावत फिरौं, क्षणक्षण नवअनुराग॥
मेरु शिखर वट छाया, मुनि लोमश आसीन।
देखि चरण शिर नायउँ, वचन कहेउँ अतिदीन॥
सुनिममवचनविनीतमृदु, मुनि कृपालु खगराज।
मोहिं सादर बूझत भयउ, द्विज[३]आयउकेहिकाज॥
तब मैं कहेउँ कृपानिधि, तुम सर्वज्ञ सुजान।
सगुण ब्रह्म आराधना, मोहिं कहहु भगवान॥

तब मुनीश रघुपतिगुणगाथा[४] * कहेउ कछुक सादर खगनाथा
ब्रह्मज्ञानरत मुनि विज्ञानी * मोहिं परमअधिकारी जानी
लागे करन ब्रह्म उपदेशा * अज अद्वैत अगुण हृदयेशा
अकल अनीह अनाम अरूपा * अनुभवगम्य अखण्ड अनूपा
मनगोतीत अमल अविनाशी * निर्विकार निरवधि सुखराशी
सो तैं ताहि तोहिं नहिं भेदा * वारि वीचि[५] इव गावहिं वेदा
विविधभांतिमोहिंमुनिसमुझावा * निर्गुणमत ममहृदय न आवा
पुनि मैं कहेउँ नाइ पदशीशा * सगुण उपासन कहहु मुनीशा
रामभक्तिजल ममन मीना[६] * किमि बिलगाइ मुनीश प्रवीना
सोइ उपदेश करहु करिदाया * निज नयनन देखौं रघुराया
भरि लोचन विलोकि अवधेशा * तब सुनिहौं निर्गुण उपदेशा
पुनि मुनि कह हरिकथा अनूपा * खंडि सगुणमत अगुण निरूपा

१ हृदय २ बर्गद ३ ब्राह्मण ४ रामकथा ५ लहरी ६ मछली ७ देखिकर॥

तब मैं निर्गुण मत करि दूरी ❀ सगुण निरूपौं करि हठ भूरी
उत्तर प्रत्युत्तर मैं दीन्हा ❀ सुनिउर भयउ क्रोधकर चीन्हा
सुनु प्रभु बहुत अवज्ञा किये ❀ उपज क्रोध ज्ञानिहुँ के हिये
अतिसंघर्षण करै जो कोई ❀ अनेल प्रकट चन्दनते होई

दो॰ बारहिंबार सकोप मुनि, करहिं निरूपण ज्ञान ।
मैं अपने मन बैठि तब, करौं विविध अनुमान॥
क्रोध कि द्वैतक बुद्धि बिनु, द्वैत कि बिनु अज्ञान ।
मायावश प्रच्छन्न जड़, जीव कि ईश समान ॥

कबहुँक दुख सब कर हित ताके ❀ तेहि कि दरिद्रपरसमणि जाके
कामी पुनि कि रहै निकैलंका ❀ परद्रोही कि होइ निश्शंका
वंश कि रह द्विजअनहित कीन्हे ❀ कर्म कि होहिं स्वरूपहि चीन्हे
काहू सुमति कि खलसँग जामी ❀ शुभगति पाव कि परैतियगामी
राज्य कि रहै नीति बिनु जाने ❀ अघ कि रहै हरिचरित बखाने
भव कि परहिं परमारथविंदक ❀ सुखी कि होहिं कबहुँ परनिंदक
पावनयश कि पुण्य बिनु होई ❀ बिनुअघ अयश कि पावै कोई
लाभ कि कछु हरिभक्ति समाना ❀ जेहि गावहिं श्रुति सन्त पुराना
हानि कि जग यहि सम कछु भाई ❀ भजिय न रामहिं नरतनु पाई
अघ कि विना तामस कछु आना ❀ धर्म कि दया सरिस हरियाना
यहिविधि अमितयुक्ति मनगुनेऊं ❀ मुनि उपदेश न सादर सुनेऊं
पुनि पुनि सगुण पक्ष मैं रोपा ❀ तब मुनि बोले वचन सकोपा
मूढ़ परम शिष देउँ न मानसि ❀ उत्तर प्रत्युत्तर बहु आनसि
सत्यवचन विश्वास न करही ❀ वायस इव सबहीसन डरही
शठ सपक्ष तव हृदय विशाला ❀ सपदि होहु पक्षी चण्डाला
लीन्ह शाप मैं शीश चढ़ाई ❀ नहिं कछु भय न दीनता आई

दो॰ तुरत भयउँ मैं काक तब, पुनि मुनिपद शिरनाइ ।

१ अग्नि २ अनेक ३ बेदाग ४ छिनरा ५ डहराया ६ कौवा ७ जल्द ॥

सुमिरि राम रघुवंशमणि, हरषित चलेउँ उड़ाइ ॥
उमा जो रामचरणरत, विगत काम मद क्रोध ।
निजप्रभुमयदेखहिंजगत, कासन करहिं विरोध ॥

सुनु खगेश नहिं कछु ऋषिदूषण ❋ उर प्रेरक रघुवंशविभूषण
कृपासिन्धु मुनिमति करि भोरी ❋ लीन्हीं प्रेम परीक्षा मोरी
मन क्रम वचन मोहिं जन जाना ❋ मुनि मति पुनि फेरी भगवाना
ऋषि मम सहजशीलता देखी ❋ रामचरण विश्वास विशेखी
अतिविस्मय पुनिपुनि पछिताई ❋ सादर मुनि मोहिं लीन्हबुलाई
ममपरितोष विविधविधिकीन्हा ❋ हरषित राममन्त्र मोहिं दीन्हा
बालक रूप रामकर ध्याना ❋ कहेउ मोहिं मुनि कृपानिधाना
सुन्दर सुखद मोहिं अतिभावा ❋ जो प्रथमहिं मैं तुमहिं सुनावा
मुनि मोहिं कछुककाल तहँ राखा ❋ रामचरित मानस सब भाखा
सादर मोहिं यह कथा सुनाई ❋ पुनि बोले मुनि गिरा सुहाई
रामचरित सर गुप्त सुहावा ❋ शम्भुप्रसाद तात मैं पावा
तोहिं निजभक्त रामकर जानी ❋ ताते मैं सब कहेउँ बखानी
रामभक्ति जिनके उर नाहीं ❋ कबहुँ न तात कहिय तेहिपाहीं
मुनिमोहिंविविधभांतिसमुझावा ❋ मैं सप्रेम मुनिपद शिरनावा
निजकरकमलपरसि मम शीशा ❋ हरषित आशिष दीन्ह मुनीशा
रामभक्ति अविरल उर तोरे ❋ बसिहि सदा प्रसाद अब मोरे

दो० सदा रामप्रिय होहु तुम, शुभगुणभवनअमान ।
कामरूप इच्छा मरण, ज्ञान विराग निधान ॥
जेहिआश्रमतुमबसबपुनि, सुमिरब श्रीभगवन्त ।
व्यापिहि तहँ न अविद्या, योजन इक पर्यन्त ॥

काल कर्म गुण दोष स्वभाऊ ❋ कछुदुखतुमहिं न व्यापिहिकाऊ
रामरहस्यललित विधि नाना ❋ गुप्त प्रकट इतिहास पुराना

१ इस्तिहान २ बड़ा आश्चर्य ३ सुख देनेवाला ४ बहुत अच्छा लगा ५ वाणी ६ छिपा ॥

बिनु श्रम तुम सब जानब सोऊ ❋ नित नवप्रेम रामपद होऊ
जो इच्छा करिहौ मनमाहीं ❋ हरिप्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं
सुनिमुनिआशिषसुनुमतिधीरा ❋ ब्रह्मगिरा भइ गगन गँभीरा
एवमस्तु तव वच मुनिज्ञानी ❋ यह ममभक्त कर्म मन बानी
सुनि नभगिरा हर्ष मोहिं भयऊ ❋ प्रेममगन मम संशय गयऊ
करि विनती मुनि आयसु पाई ❋ पदसरोज पुनि पुनि शिरनाई
हर्षसहित यहि आश्रम आयउँ ❋ प्रभुप्रसाद दुर्लभ वर पायउँ
इहां बसत मोहिं सुनु खगईशा ❋ बीते कल्प सात अरु बीशा
करौं सदा रघुपति गुणगाना ❋ सादर सुनहिं विहंग[३] सुजाना
जब जब अवधपुरी रघुवीरा ❋ धरहिं भक्तहित मनुजशरीरा
तब तब जाय अवधपुर रहऊं ❋ शिशुलीला[४]विलोकि सुखलहऊं
पुनि उर राखि राम शिशुरूपा ❋ यहि आश्रम[५] आवौं खगभूपा
कथा सकल मैं तुमहिं सुनाई ❋ काकदेह जेहि कारण पाई
कहेउँ तात सब प्रश्न तुम्हारी ❋ रामभक्ति महिमा अतिभारी

दो० ताते यह तनु मोहिं प्रिय, भयउ रामपद नेह।
निजप्रभु दरशन पायउँ, गयउ सकल संदेह॥
भक्तिपक्ष हठ करि रहेउँ, दीन्ह महामुनि शाप।
मुनि दुर्लभ वर पायउँ, देखहु भजन प्रताप॥

जे अस भक्ति जानि परिहरहीं ❋ केवल ज्ञान हेतु श्रम करहीं
ते जड़ कामधेनु गृह[६] त्यागी ❋ खोजत आक[७] फिरहिं पय[८] लागी
सुनु खगेश हरिभक्ति बिहाई ❋ जे सुख चाहहिं आन उपाई
ते शठ महासिन्धु बिनु तरणी ❋ पैरि पार चाहत जड़करणी
सुनि भुशुण्डिके वचन भवानी ❋ बोलेउ गरुड़ हरषि मृदुबानी
तव प्रसाद प्रभु मम उर माहीं ❋ संशय शोक मोह भ्रम नाहीं
सुनेउँ पुनीत रामगुणग्रामा ❋ तुम्हरीकृपा लहेउँ विश्रामा

१ आकाश २ हुकम ३ पक्षी ४ बालचरित्र ५ स्थान ६ घर ७ मदार ८ दूध॥

एक बात प्रभु पूंछौं तोहीं ❀ कहहु बुझाइ कृपानिधि मोहीं
कहहिं सन्त मुनि वेद पुराना ❀ नहिं कछु दुर्लभ ज्ञान समाना
सो मुनि तुमसन कहेउ गोसाईं ❀ नहिं आदरेउ भक्तिकी नाईं
ज्ञानहिं भक्तिहिं अन्तर केता ❀ सकल कहहु प्रभु कृपानिकेता
सुनि उरगारि[1] वचन सुखमाना ❀ सादर बोलेउ काक सुजाना
ज्ञानहिं भक्तिहिं नहिं कछु भेदा ❀ उभय[2] हरहिं भवसम्भव खेदा[3]
नाथ मुनीश कहहिं कछु अन्तर[4] ❀ सावधान है सुनहु विहँगवर
ज्ञान विराग योग विज्ञाना ❀ ये सब पुरुष सुनहु हरियाना
पुरुष प्रताप प्रबल सब भांती ❀ अबला[5] अबल[6] सहज जड़जाती

दो० पुरुष त्यागिसक नारिकहँ, जो विरक्त मतिधीर।
नहिं तो कामी विषय वश, विमुख जो पदरघुवीर॥

सो० सो मुनि ज्ञाननिधान, मृगनयनी विधुँमुख[7] निरखि।
विकल होहिं हरियान, नारि विश्व माया प्रकट॥

इहां न पक्षपात कछु राखों ❀ वेद पुराण सन्त मत भाखों
मोह न नारि नारि के रूपा ❀ पन्नगारि यह नीति अनूपा
माया भक्ति सुनहु तुम दोऊ ❀ नारिवर्ग जानै सब कोऊ
पुनि रघुवीरहिं भक्ति पियारी ❀ माया खलु नर्त्तकी विचारी
भक्तिहिं सानुकूल रघुराया ❀ ताते तेहि डरपति अति माया
रामभक्ति निरुपम निरुपाधी ❀ बसै जासु उर सदा अबाधी
तेहि विलोकि माया सकुचाई ❀ करि न सकै कछु निज प्रभुताई
अस विचारि जो मुनि विज्ञानी ❀ यांचहि भक्ति सकलगुणखानी

दो० यह रहस्य[8] रघुनाथकर, वेगि न जानै कोय।
जाने ते रघुपति कृपा, सपनेहुँ मोह न होय॥
अवरौ ज्ञान भक्ति कर, भेद सुनहु परवीण।

१ गरुड़ २ दोनों ३ दुःख ४ फ़र्क़ ५ स्त्री ६ कमज़ोर ७ चंद्रवदन ८ चरित्र॥

जो सुनि होय रामपद, प्रीति सदा अविक्षीण ॥

सुनहु तात यह अकथ कहानी ❀ समुझत बनै न जात बखानी
ईश्वर अंश जीव अविनाशी ❀ चेतन अमल सहज सुखराशी
सो मायावश भयउ गुसाईं ❀ बँध्यो कीर[1] मरकट की नाईं
जड़ चेतनहिं ग्रन्थि परिगई ❀ यदपि मृषा[2] छूटत कठिनई
तब ते जीव भयो संसारी ❀ ग्रन्थि न छूट न होइ सुखारी
श्रुति पुराण बहु कहैं उपाई ❀ छूट न अधिक अधिक अरुझाई
जीव हृदय तम[3] मोह विशेखी ❀ ग्रन्थि छुटै किमि परै न देखी
अस संयोग ईश जब करई ❀ तबहुँ कदाचित सो निरुअरई
सात्त्विक श्रद्धा धेनु सुहाई ❀ जो हरिकृपा हृदय बस आई
जप तप व्रत यम नियम अपारा ❀ जो श्रुति कह शुभ धर्म अचारा
सो तृण[4] हरित चरै जब गाई ❀ भाववत्स शिशुपाइ पन्हाई
नोइनि वृत्ति पात्र विश्वासा ❀ निर्मल मन अहीर निज दासा
परमधर्म्ममय पय दुहि भाई ❀ अवटै अनल अकाम बनाई
तोष मरुत तब क्षमा जुड़ावै ❀ धृतिसम जावन देइ जमावै
मुदिता मथै विचार मथानी ❀ दम अधार रजु[5] सत्य सुबानी
तब मथि काढ़ि लेइ नवनीता ❀ विमल[6] विराग सुभग सुपुनीता

दो० योगअग्नि करि प्रकट तब, कर्म शुभाशुभ लाइ।
बुद्धि सिरावै ज्ञान घृत, ममतामल जरिजाइ॥
तब विज्ञाननिरूपिणी, बुद्धि विशद घृत पाय।
चित्त दिया भरि धरै दृढ़, समतादियटिबनाय॥
तीन अवस्था तीनिगुण, तेहि कपास ते काढ़ि।
तूल[7] तुरीय सँवारि पुनि, बाती करै सुगाढ़ि[8] ॥

सो० यहि विधि लेसै दीप, तेजराशि विज्ञानमय।

१ सुवा २ झूंठ ३ अन्धकार ४ खर ५ रस्सी ६ स्वच्छ ७ रुई ८ तैयार करै ॥

जातहि जासु समीप, जरहिंमदादिकशलभसब॥
सोहमस्मि इति वृत्ति अखण्डा ❀ दीपशिखा सोइ परम प्रचण्डा
आतम अनुभव सुख सुप्रकाशा ❀ तब भवमूल भेदभ्रम नाशा
प्रबल अविद्याकर परिवारा ❀ मोह आदि तम मिटहिं अपारा
तब सोइ बुद्धि पाइ उजियारा ❀ उरगृह बैठि ग्रन्थि निरुवारा
छोरन ग्रन्थि पाव जब सोई ❀ तब यह जीव कृतारथ होई
छोरत ग्रन्थि जानि खगराया ❀ विघ्न अनेक करै तब माया
ऋद्धि सिद्धि प्रेरै बहु भाई ❀ बुद्धिहि लोभ दिखावै जाई
कलबल छल करि जाइ समीपा ❀ अञ्चल वात बुझावै दीपा
होइ बुद्धि जो परम सयानी ❀ तिनतनचितवनअनहितजानी
जो तेहि विघ्न बुद्धि नहिं बाधी ❀ तो बहोरि सुर करहिं उपाधी
इन्द्रिय द्वार झरोखा नाना ❀ तहँ तहँ सुर बैठे करि थाना
आवत देखहिं विषय बयारी ❀ ते हठि देहिं कपाट उघारी
जब सो प्रभञ्जन उरगृह जाई ❀ तबहिं दीपविज्ञान बुझाई
ग्रन्थि न छूट मिटा सो प्रकाशा ❀ बुद्धि विकलभइ विषयबताशा
इन्द्रियसुरन न ज्ञान सुहाई ❀ विषय भोगपर प्रीति सदाई
विषय समीर बुद्धिकृत भोरी ❀ तेहि विधि दीपको बार बहोरी

दो० तब फिरि जीव विविधविधि, पावै संसृति क्लेश।
हरिमाया अति दुस्तर, तरि न जाइविहँगेश॥
कहतकठिन समुझतकठिन, साधनकठिनविवेक।
होइ घुणाक्षर न्याय जो, पुनि प्रत्यूह अनेक॥

ज्ञानकि पन्थ कृपाणकि धारा ❀ परत खगेश न लागै बारा
जो निर्विघ्न पन्थ निर्बहई ❀ सो कैवल्य परमपद लहई
अतिदुर्लभ कैवल्य परमपद ❀ सन्त पुराण निगम आगम वद
रामभजत सो मुक्ति गुसाई ❀ अनइच्छित आवै बरिआई

१ पास २ देवता ३ हवा ४ विचार ५ विघ्न ६ तलवार ७ मोक्ष॥

जिमिथलबिनुजलरहिनसकाई ❀ कोटिभांति कोउ करै उपाई
तथा मोक्षसुख सुनु खगराई ❀ रहि न सकै हरि भक्ति बिहाई
अस विचारि हरिभक्त सयाने ❀ मुक्ति निरादर भक्ति लुभाने
भक्ति करत बिनु यतन प्रयासा ❀ संसृतिमूल अविद्या नासा
भोजन करिय तृप्तिहित लागी ❀ जिमि सो अन्न पचवै जठरांगी[1]
अस हरिभक्ति सुगम सुखदाई ❀ को अस मूढ़ न जाहि सुहाई

दो० सेवक सेव्य प्रभाव बिनु, भव न तरिय उरगारि।
भजहु रामपदपंकज, अस सिद्धान्त विचारि॥
जो चेतन कहँ जड़ करै, जड़हि करै चैतन्य।
अस समर्थ रघुनाथ कहँ, भजहिं जीव ते धन्य॥

कहेउँ ज्ञानसिद्धान्त बुझाई ❀ सुनहु भक्तिमणिकी प्रभुताई
रामभक्ति चिन्तामणि सुन्दर ❀ बसै गरुड़ जाके उर अन्तर
परम प्रकाशरूप दिन राती ❀ नहिं कछु चहिय दियाघृतबाती
मोह दरिद्र निकट नहिं आवहि ❀ लोभ वात नहिं ताहि बुझावहि
प्रबल[2] अविद्यातम मिटि जाई ❀ हारैं सकल शलभ[3] समुदाई
खलकामादि निकटनहिं जाहीं ❀ बसै भक्तिमणि जेहि उरमाहीं
गरल[4] सुधासम[5] अरि हित होई ❀ तेहिमणि बिनुसुखपाव न कोई
व्यापहिं मानस रोग न भारी ❀ जेहिके वश सब जीव दुखारी
रामभक्ति मणि उर बस जाके ❀ दुख लवलेश न सपनेहुँ ताके
चतुर शिरोमणि ते जगमाहीं ❀ जे मणि लागि सुयतन कराहीं
सो मणि यदपि प्रकट जग अहई ❀ रामकृपा बिनु कोउ न लहई
सुगम[6] उपाइ पाइबे केरे ❀ नर हतभाग्य देत भटभेरे
पावन पर्वत वेद पुराना ❀ राम कथा रुचिराकर नाना
मर्मी सज्जन सुमति कुदारी ❀ ज्ञान विराग नयनं[7] उरगारी
भावसहित जो खोदै प्रानी ❀ पाव भक्तिमणि सब सुखखानी

१ पेटकी अग्नि २ बलवान् ३ पांखी ४ विष ५ अमृत समान ६ सहज ७ नेत्र॥

मोरे मन प्रभु अस विश्वासा ❋ रामते अधिक रामकर दासा
राम सिन्धु घन सज्जनधीरा ❋ चन्दनतरु हरि सन्त समीरा
सबकर फल हरिभक्ति सुहाई ❋ सो बिनु सन्त न काहू पाई
अस विचारि जो करु सतसंगा ❋ रामभक्ति तेहि सुलभ विहंगा

दो० ब्रह्म पयोनिधि मन्दर, ज्ञान सन्त सुर आहि।
कथा सुधामथि काढ़हीं, भक्ति मधुरता जाहि॥
विरतिचर्म१ असि ज्ञानमद, लोभ मोह रिपु मारि।
जय पाई सोइ हरिभगति, देखु खगेश विचारि॥

पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ ❋ जो कृपालु मोहिं ऊपर भाऊ
नाथ मोहिं निजसेवक जानी ❋ अष्ट प्रश्न मम कहहु बखानी
प्रथमहिं कहहु नाथ मतिधीरा ❋ सबते दुर्लभ कवन शरीरा
बड़ दुख कवन कवन सुखभारी ❋ सो संक्षेपहि कहहु विचारी
सन्त असन्त मर्म तुम जानहु ❋ तिनकर सहज स्वभाव बखानहु
कवनपुण्यश्रुतिविदितविशाला ❋ कहहु कवन अघ परम कराला
मानस रोग कहहु सबगाई ❋ तुम सर्वज्ञ कृपा अधिकाई
तात सुनहु सादर अति प्रीती ❋ मैं संक्षेप कहौं यह नीती
नर समान नहिं कवनिहुँ देही ❋ जीव चराचर याचत जेही
नरक स्वर्ग अपवर्ग२ नसेनी३ ❋ ज्ञान विराग भक्ति दृढ़ देनी
सो तनुधरि हरिभजहिं न जे नर ❋ होयँ विषयरत मन्द मन्दतर
कांच किरीच बदलि ते लेहीं ❋ करते डारि परसमणि देहीं
नहिं दरिद्रसम दुख जग माहीं ❋ सन्तमिलनसम सुख कछु नाहीं
पर उपकार वचन मन काया ❋ सन्त सहज स्वभाव खगराया
सन्त सहहिं दुख परहित लागी ❋ पर दुख हेतु असन्त अभागी
भूर्ज४ तरुसम५ सन्त कृपाला ❋ परहितसहनितविपतिविशाला
शणइव६ खल७ परबन्धन करहीं ❋ खाल कढ़ाइ विपति सहि मरहीं

१ तलवार २ मोक्ष ३ सीढ़ी ४ भोजपत्र ५ वृक्षके समान ६ सन ७ क्रूर॥

खल बिनु स्वारथ पर अपकारी ❀ अहि मूषकइव सुनु उरगारी
पर सम्पदा विनाशि नशाहीं ❀ जिमिकृषिहतिहिमउपलबिलाहीं
दुष्ट उदय जग आरति हेतू ❀ यथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू
सन्त उदय सन्तत सुखकारी ❀ विश्वसुखद जिमि इन्दु तमारी
परमधर्म श्रुति विदित अहिंसा ❀ परनिंदासम अघ न गरिंसा
हरिगुरुनिन्दक दादुर होई ❀ जन्म सहस्र पाव तनु सोई
द्विजनिन्दकबहुनरकभोगकरि ❀ जग जन्मै वायस शरीर धरि
सुर श्रुतिनिंदक जो अभिमानी ❀ रौरवनरक परहिं ते प्रानी
होहिं उलूक सन्त निन्दारत ❀ मोहनिशा प्रियज्ञान भानु गत
सबकी निन्दा जे जड़ करहीं ❀ ते चमगादुर है अवतरहीं
सुनहु तात अब मानस रोगा ❀ जेहिते दुख पावहिं सबलोगा
मोह सकल व्याधिन कर मूला ❀ तेहिते पुनि उपजहिं बहु शूला
काम वात कफ लोभ अपारा ❀ क्रोध पित्त नित छाती जारा
प्रीति करहिं जो तीनों भाई ❀ उपजै सन्निपात दुखदाई
विषय मनोरथ दुर्गम नाना ❀ ते सब शूल नामको जाना
ममता दद्रु कण्डु इरषाई ❀ हर्ष विषाद गरह बहुताई
पर सुख देखि जरनि सो छई ❀ कुष्ठ दुष्टता मन कुटिलई
अहंकार अतिदुखद डमरुवा ❀ दम्भ कपट मद मान नहरुवा
तृष्णा उदरवृद्धि अतिभारी ❀ त्रिविध एषणा तरुण तिजारी
युगविधिज्वर मत्सर अविवेका ❀ कहँलगि कहौं कुरोग अनेका

दो॰ एकव्याधिवशनरमरहिं, ये असाध्य बहु व्याधि।
सन्तत पीड़हिं जीवकहँ, सोकिमिलहहिसमाधि॥
नेम धर्म आचार तप, ज्ञान यज्ञ जप दान।
भेषजपुनिकोटिनकरहिं, रुज न जाहिं हरियान॥

यहिविधि सकलजीव जगरोगी ❀ शोक हर्ष भय प्रीति वियोगी

१ सर्प २ वेद ३ पाप ४ सूर्य ५ दाद ६ औषध ७ रोग ८ संपूर्ण प्राणी॥

मानस रोग कछुक मैं गाये ❋ हैं सबके लखि बिरलहि पाये
जाने ते छीजंहिं कछु पापी ❋ नाश न पावहिं जन परितापी
विषय कुपथ्य पाइ अंकुरे ❋ मुनिहुँ हृदय का नर बापुरे
रामकृपा नाशहिं सब रोगा ❋ जो यहि भांति बनै संयोगा
सद्गुरु वैद्यवचन विश्वासा ❋ संयम यह न विषयकी आसा
रघुपति भक्ति सजीवनमूरी ❋ अनूपान श्रद्धा अतिरूरी
यहि विधि भले कुरोग नशाहीं ❋ नाहिंतो यतन कोटि नहिं जाहीं
जानिय तब मन विरुज गोसांई ❋ जब उर बल विराग अधिकाई
सुमति क्षुधा बाढ़े नित नई ❋ विषय आश दुर्बलता गई
विमलज्ञान जल जब सो न्हाई ❋ तब रहै रामभक्ति उरछाई
शिवअजशुकसनकादिकनारद ❋ जो मुनि ब्रह्मविचार विशारद
सबकर मत खगनायक येहा ❋ करिय रामपद पङ्कज नेहा
श्रुति पुराण सदग्रन्थ कहाहीं ❋ रघुपति भक्ति विना सुख नाहीं
कमठ पीठि जामहिं बरु बारा ❋ बन्ध्यासुत बरु काहुहि मारा
फूलहिं नभ बरु बहुविधि फूला ❋ जीव न लह सुख प्रभुप्रतिकूला
तृषा जाइ बरु मृगजलपाना ❋ बरु जामहिं शशशीश विषाना
अन्धकार बरु रविहि नशावै ❋ रामविमुख सुख जीव न पावै
हिमते प्रकट अनल बरु होई ❋ रामविमुख सुख पाव न कोई

दो० वारि मथे बरु होइ घृत, सिकता ते बरु तेल।
बिनु हरिभजन न भवतरिय, यह सिद्धान्त अपेल॥
मशकहि करहिं विरञ्चि प्रभु, अजहिंमशकतेहीन।
अस विचारि तजि संशय, रामहिं भजहिंप्रवीन॥

श्लो० विनिश्चितं वदामि ते नचान्यथा वचांसि मे।
हरिं नरा भजन्ति येऽतिदुस्तरं तरन्ति ते॥

कहेउँ नाथ हरिचरित अनूपा ❋ व्याससमास स्वमति अनुरूपा

१ नष्ट हों २ बुरे रोग ३ मूल ४ कमल ५ कछुआ ६ सींग ७ भजते हैं॥

श्रुति सिद्धान्त इहै उरगारी ❋ राम भजिय सबकाम बिसारी
प्रभु रघुपति तजि सेइय काही ❋ मोहिं से शठपर ममता जाही
तुम विज्ञानरूप नहिं मोहा ❋ कीन्ह नाथ मोपर अतिछोहा
पूंछेहु रामकथा अतिपावनि ❋ शुकसनकादि शम्भुमनभावनि
सत सङ्गति दुर्लभ संसारा ❋ निमिष दण्ड भरि एकोबारा
देखु गरुड़ निज हृदय विचारी ❋ मैं रघुवीर चरण अधिकारी
शकुनाधम सबभांति अपावन ❋ प्रभुमोहिंकीन्हविदितजगपावन

दो॰ आजु धन्य मैं धन्य अति, यद्यपि सबविधिहीन।
निजजन जानि राम मोहिं, सन्त समागम दीन॥
नाथ यथामति भाषेउँ, राखेउँ कछु नहिं गोय।
चरित सिन्धु रघुनाथकर, थाह कि पावै कोय॥

सुमिरि रामके गुणगण नाना ❋ पुनि पुनि हर्ष भुशुण्डि सुजाना
महिमा निगम नेति कहि गाई ❋ अतुलित बल प्रताप प्रभुताई
शिव अज[1] पूज्य चरण रघुराई ❋ मोपर कृपा परम मृदुलाई
अस स्वभाव कहुँ सुनौं न देखौं ❋ केहि खगेश रघुपतिसम लेखौं
साधक सिद्ध विमुक्त उदासी ❋ कवि कोविद कृतज्ञ संन्यासी
योगेश्वर अरु तापस ज्ञानी ❋ धर्म निरत पण्डित विज्ञानी
तरहिं न विनु सेये ममस्वामी ❋ राम नमामि नमामि नमामी
शरण गये मोसेउ अघराशी ❋ होहिं शुद्ध नमामि अविनाशी

दो॰ जासु नाम भवभेषज, हरण घोर त्रयशूल।
सो कृपालु मोहिं तोहिंपर, सदा रहहिं अनुकूल॥
सुनि भुशुण्डिके वचनवर, देखि रामपद नेह।
बोले गरुड़ सप्रेम अति, विगत मोह सन्देह॥

मैं कृतकृत्य भयउँ तव बानी ❋ सुनि रघुवीर भक्तिरस सानी
रामचरण नूतन रति भई ❋ माया जनित विपति सब गई

१ महादेव २ पक्षियों में नीच ३ ब्रह्मा ४ पापसमूह ५ प्रसन्न ६ प्रेमसहित ७ नई ८ उपजी॥

मोह जलधि बोहित तुम भयऊ ❀ मोकहँ नाथ विविध सुख दयऊ
मोसन होइ न प्रत्युपकारा ❀ वन्दौं तव पद बारहिंबारा
पूरण काम राम अनुरागी ❀ तुमसम तात न कोउ बड़भागी
सन्त विटप सरिता गिरि धरणी ❀ परहित हेतु सबन की करणी
सन्त हृदय नवनीत समाना ❀ कहा कविन पै कहै न जाना
निज परिताप द्रवै नवनीता ❀ परदुख द्रवहिं सुसन्त पुनीता
जीवन जन्म सफल मम भयऊ ❀ तव प्रसाद सब संशय गयऊ
जानेहु सदा मोहिं निज किङ्कर ❀ पुनि पुनि उमा कहै विहंगवर

दो॰ तासु चरण शिरनाइ करि, प्रेम सहित मतिधीर ।
गरुड़ गयो वैकुण्ठ तव, हृदय राखि रघुवीर ॥
गिरिजा सन्त समागम, समन लाभ कछु आन ।
बिनु हरिकृपा न होय सो, गावहिं वेद पुरान ॥

कहेउँ परम पुनीत इतिहासा ❀ सुनत श्रवण छूटहिं भवपासा
प्रणत कल्पतरु करुणापुञ्ज ❀ उपजै प्रीति रामपद कञ्ज
मन वच कर्म जनित अघजाई ❀ सुनै जो कथा श्रवण मनलाई
तीर्थाटन साधन समुदाई ❀ योग विराग ज्ञान निपुणाई
नाना कर्म धर्म तप दाना ❀ संयम दम जप मख व्रत नाना
भूत दया द्विज गुरु सेवकाई ❀ विद्या विनय विवेक बड़ाई
जहँ लगि साधन वेद बखानी ❀ सबकर फल हरिभक्ति भवानी
सोइ रघुनाथ भक्ति श्रुति गाई ❀ रामकृपा काहू यक पाई

दो॰ मुनिदुर्लभहरिभक्ति नर, पावहिं बिनहिं प्रयास ।
जे यह कथा निरंतर, सुनहिं मानि विश्वास ॥

सोइ सर्वज्ञ गुणी सोइ दाता ❀ सोइ महिमण्डित पण्डित ज्ञाता
धर्म परायण सोइ कुलत्राता ❀ रामचरण जाकर मनराता
नीति निपुण सोइ परमसयाना ❀ श्रुति सिद्धांत नीक तेइ जाना

१ बदला २ नयनू ३ दास ४ पार्वती ५ पवित्र ६ हमेशा ७ पृथ्वी ८ वंशपालक ॥

सोइ कवि कोविद¹ सोइ नरधीरा ❋ जो छल छांड़ि भजै रघुवीरा
धन्य सो देश जहां सुरसरी ❋ धन्य नारि पतिव्रत अनुसरी
धन्य सो भूप नीति जो करई ❋ धन्य सो द्विज निज धर्म न टरई
सो धन धन्य प्रथम गति जाकी ❋ धन्य पुण्यरत मति सोइ पाकी
धन्य घरी सोइ जब सतसंगा ❋ जन्म धन्य द्विजभक्ति अभंगा²

दो० सो कुल धन्य उमा सुनु, जगतपूज्य सुपुनीत।
श्रीरघुवीर परायण, जेहि नर उपज विनीत॥

मति अनुरूप³ कथा मैं भाखी ❋ यद्यपि प्रथम गुप्तकरि राखी
तब मन प्रीति देखि अधिकाई ❋ तब मैं रघुपति कथा सुनाई
यहनहिंकहियशँठहिंहठशीलहिं ❋ जो मनलाइ न सुन हरिलीलहिं
कहियनलोभिहिंक्रोधिहिंकामिहिं ❋ जो न भजै सचराचरस्वामिहिं
द्विजद्रोहिहिं न सुनाइय कबहूं ❋ सुरपति⁵ सरिस होइ नृप जबहूं
रामकथा के ते अधिकारी ❋ जिनके सतसंगति अतिप्यारी
गुरुपदप्रीति नीतिरत जोई ❋ द्विजसेवक अधिकारी सोई
ताकहँ यह विशेष सुखदाई ❋ जाहि प्राणप्रिय श्रीरघुराई

दो० रामचरण रति जो चहै, अथवा पद निर्वानं⁶।
भावसहित सो यह कथा, करै श्रवणपुट पान॥

रामकथा गिरिजा मैं वरणी ❋ कलिमलशमन मनोमलहरणी
संसृति रोग सजीवनिमूरी ❋ रामकथा गावहिं श्रुतिसूँरी
यहिमहँ रुचिर सप्त सोपाना ❋ रघुपति भक्ति केर पंथाना
अति हरिकृपा जाहिपर होई ❋ पांव देय यहि मारग सोई
मन कामना सिद्ध नर पावै ❋ जो यह कथा कपट तजि गावै
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं ❋ ते गोपदइव भवनिधि तरहीं
सुनि सबकथा हृदय अतिभाई ❋ गिरिजा बोलीं गिरा सुहाई
नाथकृपा मम गत संदेहा ❋ रामचरण उपजा नवनेहा⁸

१ विद्वान् २ पूर्ण ३ अनुसार ४ कपटी ५ इन्द्र ६ मुक्ति ७ पण्डित ८ नयाप्रेम॥

दो॰ मैं कृतकृत्य भइउँ अब, तव प्रसाद विश्वेश।
उपजी रामभक्ति दृढ़, बीते सकल कलेश॥

यह शुभ शंभु उमासंवादा ❀ सुख संपादन शमन विषादा
भवभंजन गंजन संदेहा ❀ जनरंजन सज्जन प्रिय येहा
रामउपासक जे जगमाहीं ❀ यहिसमप्रिय तिनकहँ कछुनाहीं
रघुपति कृपा यथामति गावा ❀ मैं यह पावन चरित सुहावा
यहि कलिकाल न साधन दूजा ❀ योग यज्ञ जप तप व्रत पूजा
रामहिं सुमिरिय गाइय रामहिं ❀ सन्तत सुनिय रामगुणग्रामहिं
जासु पतित पावन बड़ बाना ❀ गावहिं कवि श्रुति सन्त पुराना
ताहिभजिय तजि मन कुटिलाई ❀ राम भजे केहि गति नहिं पाई

छं॰ पाई न गतिकेहिपतितपावन रामभजु सुनु शठ मना।
गणिका अजामिल व्याध गीध गजादि खल तारे घना॥
आभीर यवन किरात खल श्वपचादि अतिअघरूप जे।
कहि नाम बारेक तेपि पावन होत राम नमामि ते॥
रघुवंशभूषण चरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं।
कलिमल मनोमल धोइ बिनुश्रम रामधाम सिधावहीं॥
शतपञ्च चौपाई मनोहर जानि जे नर उर धरैं।
दारुण अविद्या पञ्चजनित विकार श्रीरघुपति हरैं॥
सुन्दर सुजान कृपानिधान अनाथ पर कर प्रीति जो।
सो एक राम अकामहित निर्वाणप्रद सम आन को॥
जाकी कृपा लवलेश ते मतिमन्द तुलसीदासहूं।
पायो परम विश्राम रामसमान प्रभु नाहीं कहूं॥

१ नाशक २ गुणसमूह ३ मोक्ष ४ पापरूप ५ वैकुण्ठ ६ बड़ाज्ञानी ७ मुक्तिदायक॥

दो०मो सम दीन न दीन[१]हित, तुम समान रघुबीर।
अस विचारि रघुबंशमणि, हरहु विषम भव[२]पीर॥
कामिहिं नारि[३]पियारि जिमि, लोभिहिं प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरन्तर[४], प्रिय[५] लागहु मोहिं राम॥

इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेउत्तरकाण्डे
विमलवैराग्यसम्पादनोनामसप्तमस्सोपानः ॥ ७ ॥

॥ इति ॥



१ दीनों का सहायक २ संसार की पीड़ा ३ स्त्री ४ सदैव ५ प्यारे॥

रा० लवकुशकाण्डम् चि० नं० १५



श्रीगणेशाय नमः ॥

रामायण

लवकुशकाण्ड ॥

मङ्गलाचरणम्

श्लोक ॥ श्रीरामं जगदीश्वरं सुरवरं सर्वेश्वरं शर्म्मदं पश्यन्तं सुकटाक्षमोक्षनिकरैः सीतां सुनीतां शिवाम् ॥ वन्द्यैर्वन्द्यपदाम्बुजं रघुवरं संवन्द्य वन्देलिमं कुर्व्वे रामचरित्रसारविवृतिं विद्वन्मुदे भाषया ॥ १ ॥ जयति रघुवंशतिलकः कौशल्याहृदयनन्दनो रामः ॥ दशवदननिधनकारी दाशरथिः पुण्डरीकाक्षः ॥ २ ॥ श्रीशारदाचरणपद्मयुगं निधाय चित्ते गणेशचरणौ प्रणयेन नत्वा ॥ रामायणीयमखिलं मुनिभिः प्रणीतमाद्यैरहं तदिह सारतरं प्रवक्ष्ये ॥ ३ ॥

सो॰ वन्दौं चरण पुनीत, गुण प्रतिपालन गजवदन ।
जे पूजत करि प्रीत, होत परम कल्याणमय ॥
वन्दौं गुरुपद रेनु, मनरंजन अंजन दृगन ।
मुद मङ्गल सुखदेनु, सूझिपरै रघुवर चरित ॥

वन्दौं तनय[१]समीर, ज्ञानखानि रघुनाथ प्रिय ।
जासु हृदय रघुवीर, बसहिं सदा शर[२]चापधर ॥
वन्दौं अज[३] सनकादि, सनक सनातन जय विजय।
ऋषि परमारथवादि, जे नित गावहिं रामयश ॥
वन्दौं सिन्धु सुजान, शैलसुता षट[४]मुख सहित ।
सकल सुमङ्गल खान, नन्दीपति गिरिजारमण ॥

वन्दौं रघुवर पद जलजाता ❀ आरतिहरण परम सुखदाता
पुनि लक्ष्मण युग चरण नमामी ❀ वीर धुरीण राम अनुगामी
वन्दौं चरण भरत दोउ भाई ❀ शील सनेह ज्ञान अधिकाई
वन्दौं तीरथराज प्रयागा ❀ मज्जनते कोटिन अघ[५] भागा
वन्दौं साधु सन्त जग जेते ❀ करौं प्रणाम नाय शिर तेते
गिरा मूक शारद श्रुति शेशा ❀ सुर मुनि नारद सप्त ऋषेशा
महि[६] पाताल अकाश समेता ❀ भूँधर[७] विटप पयोनिधि सेता
वन्दौं कर जोरे सब काहू ❀ दनुजमण्डली रवि[८] शशि राहू
यह वर देउ धरौं पदमाथा ❀ वरणौं यश निर्मल रघुनाथा

दो० श्रोता वक्ता युगों युग, जे प्रवीण गुणखान ।
कृपा करहु सेवक समुझि, तजि इरषा अभिमान॥

आकर जेते जीव जहाना ❀ वरणौं सबहिं जोरि युगपाना
रघुवर चरित चहूंदिशि पावन ❀ सुखद भवन शुभ मोर सुहावन
स्वइ रघुवीर अनूपम गाथा ❀ कहिहौं गुरुपदरज धरि माथा
जो शिव मुदित उमासन भाषी ❀ सुनतकथारुचिअतिअभिलाषी
बोलीं सरल सुधासम बानी ❀ पारवती गिरिराज भवानी
लवकुश जन्म यथा श्रुतिगाई ❀ नाथ कृपाकरि कहौ बुझाई
सुनत वचन गिरिजा त्रिपुरारी ❀ प्रभुपद प्रीति जानि अधिकारी

१ हनुमान् २ धनुर्बाणधारी ३ ब्रह्मा ४ स्वामिकार्त्तिक ५ पाप ६ पृथ्वी ७ पर्वत ८ सूर्य ॥

धन्य धन्य हिमवन्तकुमारी ❀ तुमसम नहिंकोउ जगहितकारी
जगहित प्रश्न तुम्हार भवानी ❀ कहौं सुनहु निश्चय जियआनी

दो० सुखसागर पावन परम, रघुवर चरित अनूप।
चरणसरस्वति नायशिर, बरणौं मति अनुरूप॥

करौं ललित शुभ चरित अरम्भा ❀ ज्यहि सुनि मिटै मोह मद दम्भा
एकसमय शङ्कर अविनाशी ❀ सुषमासदन ज्ञान गुणराशी
योगासन रवि कामद सोहै ❀ देखि स्वरूप चराचर मोहै
जग जननी तहँ शैलकुमारी ❀ छिनछिनपतिआयसुअनुसारी
जो अनुशासन शङ्कर पावैं ❀ करत सो काज अबार न लावैं
नित नूतन हरिचरित अनूठे ❀ प्रथमहिं शम्भु वचन कह मीठे
गदगद कण्ठ होहिं वश प्रेमा ❀ कृपानिधान शम्भु दृढ़ नेमा
दशाविलोकि मुदित गिरिजाई ❀ बाढ़ी प्रीति चरण रघुराई
प्रथमहिं ते सब चरित सुनावा ❀ सियवनगमन सुनत दुखपावा

दो० नयननीरभरि विकल तनु, जगतमातु करजोरि।
बोलीं सम्मुख प्राणपति, वचन अमीरस बोरि॥

नाथ चरित प्रभु सिन्धु अपारा ❀ को अस मूढ़ जु चाहै पारा
प्रथमजोकहसियाविपिननिकारी ❀ सुनि सन्देह भयो उर भारी
केहि कारण प्रभु दीन सनेही ❀ दीन्ह्यो वास विपिन वैदेही
का अपराध जानकी कीन्हा ❀ कृपासिन्धुजेहिलागि वन दीन्हा
भयो शोच प्रभु शोच निवेरी ❀ कहो बुझाय जानि म्वहिं चेरी
यावत नभ विधि विष्णु पुरारी ❀ प्रथमलोक जग अवनिकुँमारी
जासु दृष्टि उपजैं गुणखानी ❀ कोटिन रमा उमा ब्रह्मानी
इन्द्रवधू सुर मुनि ऋषिनारी ❀ सदा जासु रुख रहैं निहारी
त्यागनविपिनयोग्य नहिं सीता ❀ महादेव कह विधि विपरीता

दो० विपिनवाससुनि विकलभइँ, गिरिनन्दिनी खगेश।

१ अनुसार २ आज्ञा ३ देखकर ४ समुद्र ५ वन ६ दयासागर ७ सीता ८ इन्द्राणी॥

प्रभु इतिहास अनूप तब, कह्यो बुझाय महेश ॥
अस कछु दशा विलोकि भवानी ❋ बोले हर प्रिय कोमल बानी
अतिअपारप्रियगतिजगदीशा ❋ को जानै कह अस गौरीशा
धरि उर धीर भरम सब खोई ❋ सुनहु कथा तुम पूछ्यो जोई
पिता वचन सुनि रघुकुल केतू ❋ गमने वन सिय अनुज[1] समेतू
मिलहिंविपिनऋषिकुटीअनेका ❋ सुन्दर विमल एकते एका
करत मुनिन मग दण्डप्रणामा ❋ जाहिं चले प्रभु छवि अभिरामा
देखि प्रीति ऋषिमुनिवर नारी ❋ प्रेमविवश भइँ जनककुमारी
असअभिलाष सिया उर आनी ❋ ऋषिन वधूसन बोलीं बानी
करि पूरण पितु वचन प्रमाना ❋ आवहिं कुशल अवध भगवाना
दो० तब मैं आउब अवध ते, पुजिहौं सब के पांय ।
पहिरावों भूषण[2] वसन, भोजन विविध कराय ॥
अस लालसा सिया मनमाहीं ❋ प्रभुसन कहत मुनीश लजाहीं
प्रभु सियहृदय मनोरथ जाना ❋ बोले बिहँसि राम भगवाना
जो रुचि प्रिय तुम्हरे उर होई ❋ मांगहु वेगि देउँ वर सोई
मो मनकी रुचि जानहु स्वामी ❋ घट घट के तुम अन्तरयामी
तदपि नाथ ऐसो वर पावों ❋ बहुरि नाथ यहि कानन[3] आवों
एवमस्तु[4] कह रघुकुलराया ❋ दीन्ह सुभगवर[5] सिय मनभाया
अवधचलब जब अवधि सिराई ❋ तुम्हैं विपिन सँग लषण पठाई
विधिवत पूज्यो सुर मुनिपाऊ ❋ रहै न फिरि कछु मन पछिताऊ
जब लग साध कस्यो वनवासू ❋ ह्वैहै सबविधि तुम्हैं सुपासू
दो० मुनिप्रभुवचनविनीतअति, जनकसुता खगनाथ[6] ।
चरण सरोरुह[7] नाथ निज, मुदित नवायो माथ ॥
अस कहि विपिन चले रघुवीरा ❋ सीता सहित अनुज रणधीरा
वनबसि चरित कीन्ह भगवाना ❋ सो खगेश नहिं जाय बखाना

१ लक्ष्मण २ गहना ३ जंगल ४ ऐसाहीहो ५ सुन्दरवर ६ गरुड़ ७ कमल ॥

सोकि सकै अब कहि वागीशा ❀ शारद कोटिन कोटि अहीशा
कौन लेख तहँ चेरे दासू ❀ प्रभुपद प्रीति न दृढ़ विश्वासू
बीते अवधि अवध प्रभु आये ❀ सुनहु उमा सो चरित सुहाये
आयसु पाय केकयी माता ❀ बैठे राज्य राम सुरत्राता
पुरजन आय भेंट धरि आगे ❀ बोले वचन प्रेम रस पागे
नाथ आजु बड़ि भाग्य हमारी ❀ चरणकमल रज नयन निहारी
सुर नर असुर नाग मुनि देवा ❀ मिलिमिलिगये न जान्यो भेवा

छं० नहिं भेवँ कोऊ जानमिलि प्रभुदेवमुनिहरषितचले।
तब आय ब्रह्मा कीन्ह अस्तुति जोरि युग पाँनी भले॥
अब नाथ चलिये लोक निज बहुभांति नरलीला करी।
मुनि देवतन की बन्दि छोरी भार सब वसुधा हरी॥

सो० सुनि चतुरानन बैन, प्रेम लपेटे रस भरे।
बिहँसे राजिवनैन, उतरदीन्ह कोउ जान नाहिं॥

दो० रहे उमा हमहूं तहां, देखी सकल समाज।
प्रजा सुखी अघ लेश नहिं, रामचन्द्र के राज॥

दूत चारि प्रभु लीन्ह बुलाई ❀ बोले वचन मधुर जलशाई
देश कोश पुर कुशल भलाई ❀ निशिदिन मोहिं सुनावहु आई
आयसु पाय दूत हर्षाने ❀ निज निज कारज गये सयाने
दिन प्रति खबरि अवध पहुँचावें ❀ रामचरण पङ्कज शिरनावें
बीते दिवस कछुक यहि भांती ❀ परमानन्द अवध दिनराती
एकसमय दशरथकुलनायक ❀ सुन्दरवदन श्याम सुखदायक
राजसभा शोभित रघुराजा ❀ अनुज सहित पुरलोग समाजा
राजनीति मुनिराज सुनावें ❀ सुनि प्रभु अनुजसहितसुखपावें
और विविध इतिहास पुराना ❀ कहैं वशिष्ठ सुनैं भगवाना

१ सरस्वती २ चौदहवर्ष ३ भेद ४ हाथ ५ पृथ्वी ६ ब्रह्मा ७ मीठे ८ प्रतिदिन॥

दो० त्यहि अवसर यकदूत तहँ, खबरि सुनायो आय।
कछुप्रकट कछु राखि उर, देखि सभा सकुचाय॥

दूत दशा चकित प्रभु जाना ❀ कम्पित गातअधर कुम्हिलाना
पूंछा निकट बुलाय सप्रीती ❀ कहहु यथारथ नीति अनीती
लाग्यो कहन दूत शिरनाई ❀ सकल चरित रघुवरहिं सुनाई
नाथ एक रजकी रिसिआई ❀ पति गृह तजि कहुँ रैनि गँवाई
भोर भये प्रातहि उठि आई ❀ देखत क्रोध रजक उर छाई
मार्‍यो बहुविधि कहि कटुबानी ❀ रीतिय निलज कलहकी खानी
रामसमान मोहिं तैं जाने ❀ रावण हरी नारि गृह आने
उन सम मैं नहिं सुनु अपकारी ❀ जो राखौं त्वहिं विना विचारी
वे समरथ कोशलपुरराऊ ❀ भयवश कहत न अवधसभाऊ

दो० बिनु सब भाइन के कहे, जो राखौं मैं तोहिं।
तुरत उठावें जाति ते, जाति कबीला मोहिं॥

दूत वचन अटपट सुनि काना ❀ सकलसभासुनिअतिदुखमाना
नीचजाति नहिं कीन्ह विचारा ❀ जो अस अनुचित बैन उचारा
भयउ शोचवश अवध समाजू ❀ विधि अब कीन्हचहत का आजू
जाना राम सभा भयपाई ❀ बोले मधुर वचन हरषाई
बीती निशा याम युग भाई ❀ शयनकरहु निजनिजगृह जाई
आयसु पाय चरण शिरनाई ❀ गये भवन सब करत बड़ाई
गुरुपद रेणु शीश धरि रामा ❀ भाइन सहित गये निजधामा
अनुज समेत कीन्ह ज्यवनारा ❀ पगुधारे मन्दिर स्वनारा
ज्यहि मन्दिर सोवहिं रघुराई ❀ रचना तासु वरणि नहिं जाई

छं० नहिं बनै वर्णत धाम शोभा चहुंदिशि सुवरणमई।
वागीश शारद खोजि उपमा थकित ह्वै बौरी भई॥

१ धोबी २ लड़ाई ३ लुगाई ४ अयोग्य ५ रात्रि ६ मन्दिर ७ वाग्देवता॥

मणिहेममुकता लसित बहुविधि जगमगत देखतबनी।
मति शेष निगम पुराण सकुचत कौन विधि चेरे भनी॥
दो० ज्यहिमन्दिरस्वखनारप्रभु, विविधविचित्रवितान।
लखिरचनाविधि चारमुख, हृदय बहुत सकुचान॥
पुनि सब भाइन आज्ञा दीन्हा ❀ निजनिजमहलशयनसबकीन्हा
सोय राम परयंङ्क सुहाई ❀ पौढ़ीं सिया रजायसु पाई
अति सिय देखि प्रसन्न कृपाला ❀ बोलीं मञ्जुल गिरा रसाला
नाथ विपिनमहँ जो वर दीन्हा ❀ अवशि स्वामि सो चाहौं कीन्हा
आयसु होय जाउँ वन स्वामी ❀ सुनहु विनय मम अन्तरयामी
सुनि प्रभु सीता वचन मनोहर ❀ सजहुसाज हँसिकह्यो विहँगवर
भोर होत प्रिय करहु पयाना ❀ जायहु विपिन वचन परमाना
बोलत हँसत नयन अलसाने ❀ सोवन हेतु पीतपट ताने
राम सिया सोवत इक साथा ❀ लखि शोभा रतिकाम लजाता
छं० रतिकाम होहिं सनाथ शोभा देखि सीतारामकी।
वर्णत परस्पर छवि सुहावन राम सुषमाधामकी॥
भये भोर प्रथम विदेहतनयाँ सखीसँग महलन गई।
गहि चरण कौशल्या सुमित्रा केकयी आशिष लई॥
बहुभांति सासुन दीन्ह आशिष चूमि वदन निहारहीं।
चेरे सकल रनिवास दशरथ हेम मणिगण वारहीं॥
दो० होत प्रात रघुकुलतिलक, करि सरयू अस्नान।
तबहिं नहाय वशिष्ठ पहँ, आये कृपानिधान॥
गुरुपूजा करि विविध प्रकारा ❀ आये गृह अवधेशकुमारा
सब मातन पद नायो माथा ❀ आशिष पाय हरषि रघुनाथा

१ चँदोवा २ शय्या ३ यात्रा ४ पीताम्बर ५ सीता ६ आशीर्वाद ७ सोना ८ श्रीराम॥

भरत लषण रिपुसूदन वीरा ❀ आये जहँ राजत रघुवीरा
कीन्ह प्रणाम जोरि युगपानी ❀ दीन्ह अशीश राम सुखमानी
बहुरि जाय मातन शिरनावा ❀ आशिष पाय परम सुखपावा
पुनि सीतापद नायो शीशा ❀ लह्यो परम सुखपाय अशीशा
भोजन कीन्ह संग सब भाई ❀ बैठे प्रभु सिंहासन जाई
पुरवासी सब आय जुहारी ❀ आदर सहित राम बैठारी
आये तब वशिष्ठ मुनि ज्ञानी ❀ करि दण्डवत मुनिहिं सनमानी

दो० लगे कहन मुनिराज तब, राजनीति कुलरीति।
सुनहिं राम भाइनसहित, अति आनन्द सप्रीति॥

सन्ध्या जानि उठे भगवाना ❀ सरयू जाय कीन्ह अस्नाना
करि नितकर्म्म भवन जब आये ❀ भरतहि प्रभु तब बोलि पठाये
आय भरत प्रभुपद शिरनाई ❀ बैठे राम रजायसु पाई
बोले रामचन्द्र युगपावन ❀ सुधा सरिस मृदु वचन सुहावन
तात कहौं तुमसन यह बानी ❀ सिय वनगमन प्रात मैं ठानी
सकहु तौ तात पठै वन आवहु ❀ भेद न यह तुम सियहि सुनावहु
दूत वचन सुनिकै निज काना ❀ ताते अस प्रण अब मैं ठाना
सुनि प्रभु वचन भरत रणधीरा ❀ भये विकल लोचन बह नीरा
हृदय शोच मुख आव न बानी ❀ समय देखि कछु कह्यो भवानी

दो० धरि धीरज बोले भरत, सुनहु भानुकुलचन्द।
प्रतिउत्तर नहिं दै सकौं, विनय करौं रघुनन्द॥

सियको कहा दोष प्रभु लाई ❀ जो अस प्रण करि मोहिं सुनाई
आयसु नाथ करौं शिर राखी ❀ फिरि न अवध आवों अस भाखी
कह करजोरि शपथ प्रभु तोरी ❀ मैं नहिं आउब अवध बहोरी
सुनि लघु भ्रात वचन रघुराई ❀ सियपद प्रीति बहुत दृढ़पाई
कहि बहुचरित अनुज समुझाई ❀ बहुरि राम रिपुदमन बुलाई

१ राजगद्दी २ सन्ध्यावन्दनादि ३ अमृत ४ नेत्र ५ सौगन्द ६ भरत ७ शत्रुघ्न॥

आय शत्रुहन बैठि निहोरी ❀ दण्डप्रणाम कीन्ह करजोरी
आशिष दीन्ह निकट बैठावा ❀ अतिसुन्दर मृदु वचन सुनावा
सुनु शत्रुहन कीन्ह प्रण येही ❀ आवहु छोड़ि विपिन वैदेही
इतना करहु तात हर्षाई ❀ साजि विमान सियहि लैजाई

छं० रथसाजि सियहि चढ़ाय प्रातःकाल वन लैजाइये।
जहँ सघन वन तहँ राखि सीतहिं तात फिरि पुर आइये॥
यहिभांति कह करुणाअयन रिपुदमन सुनि ठगिसे रहे।
कह दासचेरे प्रेमवश गहि चरण मृदुबानी कहे॥
अस कवन चूक विचारि प्रभु जो जानकीको परिहरी।
यह समय नहिं सिय बसहिं वन इतनो कह्यो मेरो करी॥
बरसहिं जो बालक अवध में तब नाथआयसु शिरधरों।
कछु काल बीते उचित अस रघुवंशमणि विनतीकरों॥

सो० यदपिकहीअतिनीति, भरत शत्रुसूदन अनुज।
बोले वचन सप्रीति, बिहँसिरामरघुकुलतिलक॥

नहिं त्यागों जो जनककुमारी ❀ लेहुँ अयश शिर पातक भारी
होय पाप भल कहै न कोई ❀ करहु उपाय तात अब सोई
जेहि न होय पाछे पछितावा ❀ अस विचार मोरे मन आवा
रघुवंशिन के कुल चलिआई ❀ प्राण जायँ बरु वचन न जाई
भोर होत सिय संग लिवाई ❀ त्यागि विपिनमहँ आवहु भाई
प्रभु रुख लखि शोचे रिपुदमनू ❀ जाना सत्य विपिन सियगमनू
अतिव्याकुल तनुकी सुधिनाहीं ❀ परे त्वरित मूर्च्छित क्षितिमाहीं
देखि अनुज गति श्रीरघुराई ❀ सिय बिछोह दुख उर अधिकाई
कह प्रिय वचन राम रणधीरा ❀ समुझायो रिपुसूदन वीरा

१ समीप २ नगर ३ छोड़दिया ४ समय ५ वंश ६ शीघ्र ७ पृथ्वीपर ८ हृदय ॥

दो० आयसु दीन्ही जाहु गृह, चले चरण शिरनाय ।
पठय दूत लिय बोलि तब, लक्ष्मण कहँ रघुराय ॥
लक्ष्मण आय चरण शिरनाई ❋ दीन्ह अशीश मुदित रघुराई
अतिविनीत बोले मृदुबानी ❋ प्रभु आगे अब सुनहु भवानी
आयसु होय नाथ सो करहूं ❋ बारबार पदपङ्कज धरहूं
कौन सो काज जाहिलगि स्वामी ❋ कीन्ह शोच उर अन्तरयामी
जो सेवकहि रजायसु होई ❋ पद शिरनाय करिय प्रभु सोई
जो न करहुँ आयसु रघुनाथा ❋ तौ न धरौं धनु शायक हाथा
जबलग जीव रहै तनु स्वामी ❋ तबलग मोहिं जान्यो अनुगामी
सेवक धर्म्म स्वामि सेवकाई ❋ करिय सदा तन मन चितलाई
जो प्रभु कहौं कपट छल राखी ❋ ईश सजाय देहिं शिव साखी
दो० अनुजवचन सुन्दर सलिल, विगतमोह मदमान ।
सुनि हरषे रघुकुलकमल, बोले वचन प्रमान ॥
तुम सबलायक शीलनिधाना ❋ वीरधुरीण तात मैं जाना
कस न नीति राखहु तुम भाई ❋ दीन्ह सबै विधि ईश बड़ाई
अस प्रण कीन्ह सुनहु मैं ताता ❋ गमनहिं वन सिय होत प्रभाता
विपिन त्यागि मिथिलेशकुमारी ❋ आवहु तात जाउँ बलिहारी
सुनत वचन रघुवंश खरारी ❋ लक्ष्मण उर असमंजस भारी
भई दशा लक्ष्मण की कैसी ❋ पक्षविहीन विहँगगति जैसी
जो सियको आवों वन त्यागी ❋ मोहिं समान को अधम अभागी
जो न राम आयसु अनुसरऊं ❋ कोटिन जन्म अयश शिरधरऊं
दोउ भांति दारुण दुख व्यापा ❋ बरणै को उर लषण कलापा
दो० पुनि धरि धीरज लक्ष्मण, हाथ जोरि शिरनाय ।
बोले सम्मुख अवधपति, गिरा विनीत सुहाय ॥

१ बड़े नम्र २ चरणकमल ३ बाण ४ गवाही ५ वन ६ संदेह ७ पक्षीकी दशा ॥

यदपि नाथ अनुचित महा, त्यागन जनककुमारि।
तदपि नाथ आयसु करब, सेवकधर्म्म विचारि॥
उठे त्वरित तजि सकल गलाना ❀ कह्यो सारथी साजु विमाना
सिय पहँ गये विकल अतिभारी ❀ दोउ करजोरि विनय अनुसारी
मातु विपिनकर साजहु साजा ❀ आयसु मोहिं दीन्ह रघुराजा
चलहु विपिन आवहुँ पहुँचाई ❀ सेवक उचित स्वामि सेवकाई
सिय समुझ्यो नहिं देवर बानी ❀ सुनत वचन अतिशय हर्षानी
बहु भोजन पकवान मिठाई ❀ भूषण वसन गिनाय न जाई
होत प्रात सिय रथ बैठाई ❀ लक्ष्मण चले राम शिरनाई
चलत सिया अशकुन भयेभारी ❀ तदपि लख्यो नहिं जनककुमारी
हांक्यो रथ लक्ष्मण बलवाना ❀ पवन थकित अतिवेग उड़ाना
दो॰ उतरि नदी तमसा त्वरित, दीख गोमती आय।
नित्यक्रियाकरिसियसहित, पहुँचे सुरसरि जाय॥
रथते उतरि कीन्ह परणामा ❀ सियसमेत लक्ष्मण बलधामा
भोर होत उतरे सुरसरी ❀ सघन विपिन की मारग धरी
देखिविपिनघनअतिअँधियारी ❀ केहरि नाद करें जहँ भारी
देखि विटप वट छांह घनेरो ❀ सिय लक्ष्मण तहँ लीन्ह बसेरो
बिनु भोजन सो वासर खोई ❀ वट तर दोउ मूरति रहे सोई
निशाविगत सोवति सियजागी ❀ देखि विषमवन अतिभय लागी
सहमि वचन लक्ष्मण सों बोली ❀ पीपर पात सरिस तनु डोली
यह वन नहिं जहँ मुनि तप करहीं ❀ खगमृग मुदित वैरतजि फिरहीं
यह वन तात भयंकर भारी ❀ डरपत उर वन घनहिं निहारी
दो॰ मैं जान्यों रघुनाथ मोहिं, परम पातकी जान।
गवहिं निकास्यो देश ते, दशरथकुल के भान॥

१ रथवान २ श्रीराम ३ बड़ी शीघ्रता ४ गंगा ५ सिंह ६ बरगद ७ रात्रि ८ सूर्य॥

ताते यहि वन नाथ पठाई ❀ जहँ मोहिं बाघ सिंह धरि खाई
तुमहिं न दोष तात कछु लागी ❀ मैं पापिनि सबभांति अभागी
असकहिपुनि विलापकरिसीता ❀ देखि विपिनभइअधिकसभीता
हा रघुनाथ कीन्ह नहिं नीका ❀ तज्यो मोहिं दशरथ कुलटीका
नाथ समुझि देखो मनमाहीं ❀ तुम बिनु प्राण रहैं घट नाहीं
तुम सबलायक त्रिभुवन ईशा ❀ काह विचारि तज्यो जगदीशा
देखि सियागति लक्ष्मण योधा ❀ विधिगति वाम समुझि परबोधा
धरो धीर कह लषण सुबानी ❀ पोंछ्यो नयननीर[२] निजपानी
तलफत बहुत विकल बिनु वारी ❀ सूख्यो कण्ठ विदेहकुमारी
लाय हाथ मुख सिय जल मांगी ❀ देखि लषण उर दाया लागी
धरो धीर जल लावहुँ माता ❀ अस कहि वचन चले सुरज्ञाता

दो० देखी लक्ष्मण सियागति, बिनुजल त्यागत प्राण।
चलेलेनजलविकलअति, योजन[३] एक प्रमाण ॥

करुणा करत विविध वैदेही ❀ सो दुख वरणि जाय अब केही
परी मूर्छि व्याकुल क्षिति[४]माहीं ❀ देखि दशा वनचर अकुलाहीं
रघुवर विरह शूल उर व्यापी ❀ दारुणविपति अधिक तनु कांपी
दुखित श्रमित गइँ सोय भवानी ❀ लक्ष्मण तब जलघट[५] भरिआनी
लखिमूर्च्छितक्षितिअवनि[६]कुमारी ❀ भे लक्ष्मण दुखके अधिकारी
भस्म होन हित रच्यो उपाई ❀ नभबानी[७] त्यहि समय सुनाई
गमनहु लषण अवधकी घाहीं ❀ जियै बाल कछु संशय नाहीं
सुनि नभगिरा लषण बलधारी ❀ चढ़ि वटडार बांधि घटवारी
धरि धीरज उर अनुज खरारी ❀ जोति त्वरित रथ अवध सिधारी

दो० मनहींमन पद वन्दि सिय, बहुविधि कीन्ह निहोर ।
मनमलीन तनुक्षीणअति, हांक्यो रथ पुर ओर ॥

१ तीनोंलोक २ आंसू ३ चारकोस ४ पृथिवी ५ जलका घड़ा ६ सीताजी ७ आकाशवाणी ॥

त्यागि सिया वन सघन अनेरी ❀ लक्ष्मण अवध चले रथफेरी
सिया विरह अतिदीन दुखारी ❀ भय सभीत प्रिय बन्धु खरारी
चौथे दिवसे अवध में आई ❀ रघुनायक पद शीश नवाई
पूंछा राम सिया कुशलाई ❀ तजिक्यहिवन सियआयहु भाई
ब्रह्मावर्त्त सघन वन भारी ❀ आयों त्यागि विदेहकुमारी
नाथ विरह गइँ मूर्छि भवानी ❀ तबहिं चल्यों प्रभु शारँगपानी
सुनि रघुवीर हृदय दुखपावा ❀ पुनि निजराजकाजचितलावा
सुनियह चरित सकल पुरवासी ❀ शोच विवश हरिलेत उसासी
एक कहैं नहिं विधि भलकीन्हा ❀ जोअसविपतिजानकिहिंदीन्हा

छं० असविपतिदीन्हजोजानकी।बिनुकाजरघुवरपरिहरी
जगसकल अपयश मोटबांधि बनाय शिरअपनेधरी ॥
अस कहैं पुरनरनारि मिलि दश पांच उरशोचहिं सही।
गुरु सचिवैं कोउ न बुझाय रामहिं उचितकी बातैं कही॥

सो० विधिअस करतबकीन्ह, हस्यो बुद्धि पुरलोग सब।
कोउ न मंत्रै असदीन्ह,समयनहींसियबसहिंवन॥
चेरे पुर नर नारि, शोचहिंव्याकुलजहँसुनहिं।
यथामीनँ बिनु वारि, तलफैं दोष लगाय विधि ॥

कौशल्यादि मातु उर शोचू ❀ किमि कहिसकौं कहैं विधिपोचू
भयो देश पुर शोक निवासू ❀ कहैं दीन्ह प्रभु सिय वनवासू
यह इतिहास अनूँपम गाई ❀ आगे कहों सुनहु खगराई
जब लक्ष्मण आये पहुँचाई ❀ सभय विपिनै प्रभु आयसु पाई
पस्यो बुन्द जलघट मुखमाहीं ❀ जागीं सिय कहुँ कोऊ नाहीं
अतिव्याकुल करि रोदन भारी ❀ हा लक्ष्मण तुमसम हितकारी

१ दिन २ गठरी ३ मन्त्री ४ सलाह ५ मछली ६ नीच ७ उपमारहित ८ वन ॥

केहि अपराध मोहिं तुम त्यागे ❀ गयो अवध लखि सोवत भागे
तुमहिं देखि कछु धीरज रह्यऊ ❀ तुमबिनु अधिकमोहिंदुखभयऊ
अब केहिभांति धरों उर धीरा ❀ देखि विपिन अतिगहनगँभीरा

दो० यहि प्रकार अब जानकी, शीश धुनहि बिलखाय।
समयविषाद न जातकहि, काहू ते खगराय॥

गमनविपिनतबसुनि खगपाला ❀ वायस सों बोले त्यहि काला
पूंछों नाथ चरण शिरनाई ❀ यह कौतुक प्रभु मोहिं सुनाई
मायाकृत अवतार भवानी ❀ नेतिनेति कहि निगम बखानी
जासु दृष्टि जग यावत माया ❀ होहिं नाथ परिपूरण काया
शारद शेष देव मुनि वृन्दा ❀ सेवहिं चरण त्यागि छलछन्दा
सोकि विदेहसुता वनयोगू ❀ सुनि कौतुक विस्मित भे लोगू
कहहु बुझाय सो वायसनाथा ❀ कस सिय त्याग कीन्ह रघुनाथा
सुनि खगेश के वचन अनूपा ❀ साधु साधु कह वायसभूपा
प्रश्न तुम्हार नाथ मोहिं भाई ❀ चाहहु सुनन राम प्रभुताई

सो० कहा वचन अस काग, खग आगे करजोरि कर।
चरित सुनावन लाग, ज्यहिकारणप्रभुत्यागिसिय

सियहि जो त्याग कीन्ह रघुवीरा ❀ सुनहु सो भेव गरुड़ मतिधीरा
जब प्रभु जीति समर दशशीशा ❀ अवध चलन चाह्यो जगदीशा
देव सबै तेहि अवसर आई ❀ विनयविनय निजलोक सिधाई
ताहि समय दशरथ नृप आये ❀ रामहिं देखि नयन जल छाये
पितहिं प्रणाम कीन्ह रघुराई ❀ सीता अनुंज सहित खगराई
अस अभिलाष नरेश खगेशा ❀ मोहिं लै चलैं अवध अवधेशा
पितहिं प्रेमवश लख्यो कृपाला ❀ समुझायो कहि वचन रसाला
वर्ष सहस्र राव प्रभुताई ❀ रह्यो सो भोग करब मैं जाई

१ वेद २ आश्चर्यित ३ बहुत अच्छा ४ स्वामी ५ छोड़ना ६ रावण ७ लक्ष्मण ८ पीछे॥

असकहि राम पितहिंशिरनावा ❀ दीन्ह ज्ञान निज[1]धाम पठावा

दो० सुनि असवचन विनीतबहु, भयो ज्ञान खगराय।
प्रभुमूरति उर राखि नृप, गे सुरपुर हरषाय ॥
पिता राज्य के भोग हित,असकौतुकप्रभुकीन्ह।
रहैं सिया कछु दिन अनत, त्यहिकारणबनदीन्ह॥

सो० गयो शोच खगनाथ, सुनिप्रभुचरितभुशुण्डिमुख
परसि चरण परमाथ, नाथ कृतारथ कीन्ह मोहिं ॥

दो० पाछिल कथा पुनीत अति, सुनहु खगेश सुजानि।
ज्यहि प्रकार रोदन करैं, सीता जगतभवानि ॥

महाविलाप करति वैदेही ❀ शोक विकल तनु सुधि नहिं तेही
भे खग मृग वनजीव दुखारी ❀ देखि जानकी चकित निहारी
स्रवतनयनजल दुख अधिकारी ❀ बोले वचन समय अनुहारी
तजहु शोच सुनु राजकुमारी ❀ विधि के अङ्क सकै को टारी
वनदेवत धरि धरि मुनि नारी ❀ समुझावें मृदु बैन उचारी
अ[3]वध ते सरिस जानु वनमाता ❀ ह्वैहै सब विधि मङ्गलदाता
काहू दोष न लाइय रानी ❀ जग जन[4]नी तुम मातु भवानी
करि प्रबो[5]ध मुख धोय सयानी ❀ कन्दमूल लाई मधु जानी
धरि आगे सिय पुनि समुझाई ❀ हाथ जोरि करि विनय खवाई

छं० क[6]रजोरि विनय खवाय सीतहिं बिदाह्वै गृहको गईं।
लखि विषम वन भारी भयङ्कर जानकी विस्मि[7]त भईं ॥
त्यहिसमय मुनिव[8]र बालमीकि समेत चेलन वन गये।
सुनिरुदनअबला सघनवन शिषसहित तहँ आवतभये॥

१ वैकुण्ठ २ गरुड़ ३ अयोध्या ४ माता ५ ज्ञान ६ हाथ ७ आश्चर्यित ८ मुनिश्रेष्ठ ॥

सो॰ देखा निपट मलीन, बैठी तहँ रोदन करै।
मुनिवर परम प्रवीन, निकट जाय पूंछी कथा॥

देखि ऋषय बोलीं तब सीता ❀ बानी मञ्जुल मधुर पुनीता
श्वशुर चक्कवै दशरथ राऊ ❀ जनक पिता जगविदित प्रभाऊ
पति रघुनाथ लोक तिहुँ स्वामी ❀ कहौं कहां लग अन्तरयामी
ऋषि पँचवटि पुरलोक विचारी ❀ तज्यो मोहिं रघुनाथ खरारी
लक्ष्मण वन पहुँचाय बहोरी ❀ गये अवध कह जनककिशोरी
बालमीकि सियको पहिंचानी ❀ धीरज दीन्ह पुराण बखानी
पुत्री धीर धरो उरमाहीं ❀ भयो वाम विधि कछु वशनाहीं
करि प्रबोध बहु कथा सुनाई ❀ चले संग आसनहिं लिवाई
सुन्दर सदन वास लै दीन्हीं ❀ सेवा बहुप्रकार मुनि कीन्हीं

दो॰ यहि मिसु बीते कालबहु, विपति विषाद विहाय।
युगल तनय तब प्रकटभे, सुदिन सुऔसर पाय॥

बालमीकि मुनि गन्त विचारी ❀ शुभ नक्षत्र लखि भये सुखारी
बोलि लये महिसुर हर्षाई ❀ दीन्ह दान सम्मान बड़ाई
सिय उर हर्ष भयो ज्यहि भांती ❀ शारदहू ते नहिं कहि जाती
जस दुख सह्यो लह्यो सुख भारी ❀ वदनसुभग दोउ सुवन निहारी
त्यहि अवसर मुनि कुटी सुहाई ❀ ऋद्धि सिद्धि सुख सम्पति छाई
जो ज्यहि भाव दीन्ह तेहि सोई ❀ उत्सव परम जानु जिन जोई
कीन्ह वेद लौकिक सब रीती ❀ बालमीकि मुनिवर अतिप्रीती
नामकरण उत्पत्ति उछाहू ❀ कीन्हमुदित विधि वेद निबाहू

दो॰ भे सयान विद्या सकल, बालमीकि मुनि दीन्ह।
चार वेद षटशास्त्र को, कौतुकही पढ़ि लीन्ह॥

१ पास २ चक्रवर्ती ३ श्रीरामजी ४ टेढ़ा ५ ब्राह्मण ६ पुत्र ७ समय ८ बड़ेप्रेम॥

बालचरित सुन्दर दोउ भ्रातू * हरखि निरखि सुख पावै मातू
विद्या धनुषबाण मुनि दीन्हीं * दोऊअनुजमुदित सिखिलीन्हीं
बीते जबै वर्ष दशचारी * भये कुमार युगल बलधारी
मुनिबालक सँग खेलत फिरहीं * निपट अशंक न कालहु डरहीं
फिरहिं विपिन करि वीरशृंगारा * बधें मृगा द्वउ राजकुमारा
अतुलित बल प्रताप दोउ भाई * सुठि सुकुमार वरणि नहिं जाई
दिनप्रति करहिं अहेर बराहू * फिरहिंविपिनलखिडरहिंनकाहू
निशिदिन सुखद मातु उरमाहीं * सपनेहु अवध सुरति त्यहिनाहीं
होत प्रात नित दोऊ भइया * करहिं प्रणाम मुदितमन मइया

दो० मुदितअशीशहिमातुतब, जोरी सुभँग निहारि।
बारबार चूमति वदन, जाय जाय बलिहारि॥

लव कुश जन्म उछाह भवानी * कह्यों यथामति वेद बखानी
अब जो कहौं सुनहु मनलाई * रामचरित सुन्दर सुखदाई
जबते प्रभु सिय विपिन निकारी * तबते निशिदिन रहत दुखारी
एकबार सोवत रघुवीरा * देखा स्वप्न राम रणधीरा
लङ्कापति सजि निज कटकाई * घेरयो अवध निशान बजाई
कीन्ह महारण प्रभुके साथा * ह्वै व्याकुल जागे रघुनाथा
कछु न दीख तहँ कृपानिधाना * कीन्ह जाय सरयू अस्नाना
नित्यक्रिया करि गुरुपहँ आई * गहिपद अम्बुज स्वप्न सुनाई
स्वप्न भेव जस तुमहिं सुनाई * करो उपाय वेगि मुनिराई

दो० कह्यो विचारि मुनीश तब, वचनमधुर त्यहिकाल।
ब्रह्मबीज राकस भयो, बीसभुजा दशभाल॥

करहु यज्ञ अश्वमेध सुहावन * सदा युगोंयुग पावन पावन
जानिशिरोमणि मख अतिभारी * करहिं अवशि नृपप्रभु दनुजारी

१ भाई २ दोनों ३ शिकार ४ सुन्दर ५ रावण ६ सन्ध्यावन्दनादि ७ उससमय ८ यज्ञ॥

बिनु कीन्हे मख दीनदयाला ❀ होय न क्षमित असुर दशभाला
तब प्रभु कहा सुनिय मुनिनायक ❀ करिय अरम्भ यज्ञ सुखदायक
तब मुनिनाथ कह्यो समुझाई ❀ श्यामकरण हय अमर मँगाई
हेमपत्र नृपनीति लिखाई ❀ बांधि शीशपर वाजि फिराई
चार क्षौहिणी दल सँग दीजै ❀ सेनापति रिपुसूदन कीजै
जो नृप वांधे अश्व तुम्हारा ❀ करहिं युद्ध त्यहि संग अपारा
ताहि जीति मखवाजि मँगाई ❀ चहूं दिशा यहि भांति फिराई

दो० सब भूपन मदमानमथि, कुशल सो यह वरवाज।
रिपुसूदन आवहिं अवध, यज्ञ सिद्ध रघुराज॥

सुनि मुनीश के वचन सप्रेमा ❀ मखहित राम कीन्ह दृढ़नेमा
वेगि तुरँग सुरनाथ मँगाई ❀ पूजा कीन्ह वेद जस गाई
हेमपत्र बांध्यो हय शीशा ❀ बांचत ज्यहि कोपैं अवनीशा
यूथप रिपुसूदन को कीन्हा ❀ कहिप्रभुपुनिअसआयसुदीन्हा
तात तुरङ्ग करब रखवारी ❀ सजग रहब धनुवाण सुधारी
जो भूपति तजि इरषा मोहा ❀ मिलै आय त्यहि कीन्ह्यो छोहा
अभयकरब त्यहि सभयनिहारी ❀ करब वचन परमान हमारी
जो नृप हठवश बांध तुरङ्गा ❀ प्रबल युद्ध कीन्ह्यो त्यहि सङ्गा
समरभूमि रणसेज सुवाई ❀ तुरँग छुड़ाय चलब हर्षाई

दो० ताहि जीति मखवाजि लै, सजग करब सबकाज।
फिरयोअवधकहँप्राणप्रिय, असकहिकोशलराज॥

सुनि आयसु साहब सियरमनू ❀ पद शिरनाय चले रिपुदमनू
करि आगे मखहय मुनिनाथा ❀ भेरे सुभट कीन्ह त्यहि साथा
मुनिपद वन्दि चले रणधीरा ❀ कर कमलन सोहत धनुतीरा
शत्रुदमन पुर बाहर जाई ❀ वेगि सारथी बोलि पठाई

१ घोड़ा २ सोनेका पट्टा ३ शत्रुहन ४ भूपाल ५ सेनापति ६ सावधान ७ योधा॥

तुरत सारथी स्यन्दन आना ❀ चढ़्यो विमान वीर बलवाना
वीर धुरीण भरत लघुभाई ❀ सुमिरि गजानन सेन चलाई
सेन अमित को गनै मुनीशा ❀ सकुचैं शारद गिरा फणीशा
चार क्षौहिणी सेन भवानी ❀ बड़े बड़े योधा अभिमानी
आगे चञ्चल चपल तुरंगू ❀ पाछे सुभट जाहिं त्यहि संगू

दो॰ त्यहि पाछे सेना सुभट, भरत अनुज रणधीर।
धरि वीरासन जात मग, सुमिरत सिय रघुवीर॥
सांझसमय सबभीर भट, साजि साजि सीपाह।
निजनिजबारी देखि हय, चलैं भोर उठि राह॥

गिरा मूक फणपति सकुचाई ❀ जो अब कहै प्रताप बड़ाई
फूटे मेरु खेह है जाहीं ❀ टूटे विटप परे महिमाहीं
रजसों पूरिगये नद नारे ❀ कूप तड़ाग भूर भे सारे
जहँ जहँ जाय यज्ञ वरवाजू ❀ मिलहिं भूप तहँ सहित समाजू
जहँ जे भूपति कीन्ह लड़ाई ❀ माखो ताहि भरत लघु भाई
ताहि सँहारि वाजि अगुवाई ❀ उत्सव कहिं कछु शर्म न पाई
करहिं युद्ध नहिं कालहु डरहीं ❀ नृपमानी जीतत रणं फिरहीं
कहौं कहांलगि तेज बखानी ❀ रिपुसूदन रिपुसूदन जानी
उदयअस्त महिमण्डल माहीं ❀ रिपुसूदन समान भट नाहीं

छं॰ रिपुदमनसमजगकोउनभटजोआयअबसम्मुखलड़े।
सुर असुर जेते नाग नर भयमान पद नहिं रण खड़े॥
चहुँ ओर अश्व फिराय सेन समेत रिपुसूदन बली।
यमुना उतरि सुरसरी मज्ज्यो पार उतरि सेना चली॥

सो॰ चल्यो तुरँग त्यहिकाल, बालमीकि आश्रम गयो।

१ रथ २ गणेश ३ अहंकारी ४ शेष ५ संग्राम ६ दैत्य ७ नहाया ८ स्थान॥

लखि बन बाग रसाल, हरित दूब लाग्यो चरन॥
दो० रहे तहां रखवार लव, देखि अश्व प्रिय लाग।
उठिअकेलबांध्योतुरँग, जानि चरत मुनिबाग॥
बांधि तुरङ्ग पत्र लव बांचा ❀ करों युद्ध नृपसों मनरांचा
जबलग जीव रहै तनुमाहीं ❀ तबलग अश्व देव नृप नाहीं
त्यहि अवसर भटभीरसमूहा ❀ आये हय हेरत बहु जूहा
देखि अश्व सकुचे मनमाहीं ❀ बालक बधब उचित भल नाहीं
डाटि कुँवर हय लेहु छुड़ाई ❀ रिपुसूदन पहँ गमनहु भाई
सुनि अस वचन हँसे लव वीरा ❀ कर कमलन फेरत धनु तीरा
सुभट जबै हय छोरन लागे ❀ लखि लव तुरत वीररस पागे
बोले वचन क्रोध नहिं थोरा ❀ हटो सुभट कोउ तुरँग न छोरा
जो हठवश हय छोरन जाई ❀ मारों ताहि मुनीशै दुहाई
दो० जो छोरै यहि काल हय, बधौं ताहि त्यहिकाल।
तजौं न हय कोटिन करौ, विना युद्ध महिपाल॥
सुनि लव वचन सुभट सब माखे ❀ क्रोध सँभारि वचन अस भाखे
बालक समुझि न कीन्ह लड़ाई ❀ इनतो बातन बहुत खिझाई
अब नहिं दोष लड़ाई कीजै ❀ तुरँग समेत जीति रण लीजै
अस कहि घेरि लियो लववीरा ❀ मारैं अस्त्र शस्त्र पर तीरा
लव विलोकि योधा नियराने ❀ धनुष चढ़ाय बाण सन्धाने
एकनिमिषमहँ सब भट मारे ❀ बचे ते भागे जाय पुकारे
नाथ एक बालक मुनिवेखा ❀ वीरशृंगार किये तनु देखा
वयकिशोर करणी कठिनाई ❀ अतिसुन्दर नखशिख सुघराई
तिन बांध्यो हयको अतिगाढ़ा ❀ कालसमान आपु तहँ ठाढ़ा
दो० तिन बांध्यो यह यज्ञहय, बहु उपाय हम कीन्ह।

१ घोड़ा २ हाथ ३ बाल्मीकि ४ क्रोधकिये ५ समीप आये ६ कर्तव्यता ७ दृढ़॥

युद्ध कीन्ह मारे सुभट, हठवश अश्व न दीन्ह ॥
जे भट रहे अश्व रखवारे ❀ तिनहिं त्वरित रणखेत सँहारे
अस पौरुष अबहीं ते पाई ❀ समय युवा भट जियत न जाई
अति सुकुमार महारणधीरा ❀ फिरत अकेल हाथ धनु तीरा
सुनि रिपुदमन अचम्भव माना ❀ चले तहां जहँ लव बलवाना
सेन संग घेर्‌यो वन बागू ❀ बढ़े आपु कीन्हे रथ आगू
देखाजाय बाग मुनिराई ❀ बोले सरुष भरत लघु भाई
का अँनीति हय कीन्ह तुम्हारा ❀ राख्यो बांधि मुनीशकुमारा
तुमहिं त्रास नहिं बांधत लाग्यो ❀ कस पितु मातु अबहिंते त्याग्यो
सोहत तुमहिं न अस कठिनाई ❀ वयकिशोर मृदुगात सुहाई
दो० मुनिवर वेष अनूप अति, धरे बाण धनु हाथ।
करतअनीतिफिरौविपिन, खेलत बालन साथ ॥
तुमहिं न अस हठ सोहत भइया ❀ तजि हयजाहु जहां पितु मइया
निजकुल पुनि कुठाँर जनि होहू ❀ देखि स्वरूप शोच अति मोहू
सुनि लव रिपुसूदन मृदुबानी ❀ दीन्ह उतर हँसि सुनहु भवानी
हमरे कुल युग युग चलि आई ❀ हठ न जाय बरु सरवस जाई
जो भयमानि तुरँग नृप देहीं ❀ अपने जियत अयश शिर लेहीं
हमहिं सौंपि मुनिवर यह बागा ❀ आपुगये कहुँ ऋषिमुनि यागा
खग मृग जे वनचर हैं नागू ❀ मोसन चरन न पावैं बागू
सकुचत पवँन निरखि अमराई ❀ सुर नर असुर कौन प्रभुताई
सो तुम्हार हय निज बरिआई ❀ कीन्ह निपात बाग मुनिराई
सो० बांचि पत्र हय भाल, बाग विध्वंसत देखि शठ।
निजपौरुष महिपाल, बांध्यों तुरँग न देउँ अब ॥
सुनि रिपुसूदन निरभयबानी ❀ जान्यो हृदय महाअभिमानी
बिनु संग्राम अश्व नहिं देई ❀ करि संग्राम अयश को लेई

१ योधा २ पुरुषार्थ ३ ओयसमेत ४ अन्याय ५ कुल्हाड़ी ६ नाग ७ हवा ८ विनाश ॥

जो मारै म्वहिं निपट हँसाई ❁ मैं मारौं तौ कौन बड़ाई
यहि मारे भल कहै न कोई ❁ होय पाप नहिं सिंधु समोई
जो तजि हय कोशलपुर जाऊं ❁ कौन वदन रघुवरहि दिखाऊं
जो सकोप खोलौं वरवाजू ❁ सम्मुख मरै समर करि आजू
करत विचार शत्रुहन योधा ❁ कौनिउँ भांति न होय प्रबोधा
विकल विलोकि राम लघु भाई ❁ गगनगिरा त्यहि समय सुहाई
ये न तनय मुनि ऋषय दुलारे ❁ महाबली रण टरैं न टारे

दो० जनि भरमो रिपुदमन तुम, ये न तनय मुनिराज।
क्षत्रियकुल वाणी सुभट, सब राजन के राज॥

यतन हजार कोटि विधि करहू ❁ रण सम्मुख लोहा किन धरहू
मिलै न हय किन करहु उपाधी ❁ अस कहि गगनगिरा चुपसाधी
सुनत भरत सानुज नभबानी ❁ चकितरहे नहिं जात बखानी
करि निश्चय तब उठे रिसाई ❁ सब योधन सों कह्यो सुनाई
हम अपनी दिशि बहुत बचाई ❁ मान न कुँवर काल नियराई
अब न दोष निगमागम गाई ❁ जो जस करै सो तस फल पाई
धरहु जियत वहु देहु कलेशू ❁ अब न छोट बड़ करहु अँदेशू
जो न हाथ लागै रिपुभारी ❁ समर कठिन करि डारहु मारी
अस कहि निज धनुवाण उठाई ❁ लव सम्मुख बोले मुसकाई

दो० मैंअपनीदिशि विनय किय, तुम मानी नहिं एक।
पावहु आजु सजाय भल, जस कीन्हें हठ टेक॥

चाँप चढ़ाय श्रवणलगि ताना ❁ छांड़्यो अतिकराल बहुबाना
ज्वइ शँर रिपु लव सम्मुख आई ❁ स्वइ लव पास नरेश पठाई
निफल गये रिपुसूदन बाना ❁ देखि प्रताप शोच उर आना
तब लव ललकार्‌यो रिपुवीरा ❁ युद्ध करहु जनि होहु अधीरा
राग चढ़ाय नाँग सन्धाना ❁ छांड़्यो शर बहु उरग समाना

१ अयोध्या २ आकाशवाणी ३ वेद, शास्त्र ४ धनुष ५ बाण ६ मन ७ सर्प ॥

अर्द्धनिमिष लव बाण प्रहारी ❀ दुइ क्षौहिणी अनी रिपुमारी
पुनि लव रिपुसूदन पहँजाई ❀ बोले कोपि वचन मुनिराई
सजग होहु यहि समय भुवाला ❀ अस कहि छांड़्यो बाण कराला
रिपुसूदन लवभट रणधीरा ❀ लड़ैं परस्पर द्वउ वरवीरा

छं॰ द्वउवीरलड़ैंप्रचारिअतुलितविविधविधिललकारहीं
बहु तीर अस्त्र कृपाण शूल सकोप ऊपर डारहीं ॥
रणगूढ़ लखि भाई भरत ह्वै विकल लव सम्मुख गही।
अब सजग होहु सँभार शररण आजु त्वहि मारौं सही॥

सो॰ कहा वचन अस कोपि, रिपुसूदन रणधीर भट ।
लीन्ह शरैंनते तोपि, महिसुवाय दीन्ह्यो लवहिं॥

रिपुसूदन अतिशय जब कोपे ❀ मारि शरन नखशिखते तोपे
अतिसुकुमार न योग लड़ाई ❀ पर्‍यो वीर रण में मुरझाई
यथा वारि बिनु मीन विशोकी ❀ तथा विकलरणलवहिं विलोकी
परम विकल शोचत मनमाहीं ❀ रिपुसूदन आये लव पाहीं
देखा निपट कुसाज कुमारा ❀ शोभा अमित न जाय निहारा
भरतअनुज पुनि सेन सँभारी ❀ वाजि चढ़ाय अवध पगुधारी
रहे जे लव सँग तनय मुनीशा ❀ धाये आम धुनत सब शीशा
सियसन कह्यो सकल उतपातू ❀ भज्यहि विधि लवप्राण निपातू
रथ चढ़ाय लवको युवराजू ❀ गमन्यहु भवन सहित मखवाजू

सो॰ सुनत शिशुन के बैन, व्याकुल भूतलमें परी।
भरे नीर दोउ नैन, शीशधुनहिं करुणाकरहिं॥

त्यहि अवसर कुश वनते आये ❀ मातु चरण सादर शिरनाये
देखा निपट विकल महतारी ❀ यथा मीन व्याकुल बिनु वारी
जस मणिहीन भुजंग अकुलाई ❀ तसगति जनकसुता गिरिजाई

१ सेना २ भयंकर ३ अप्रमाण ४ बाणनसे ५ दौड़ ६ पृथ्वीपर ७ आदरसमेत ८ सर्प ॥

दशा देखि जननी दुखपावा ❋ बोले वाणी सरल स्वभावा
केहि कारण यह गति महतारी ❋ वेगि कहौ त्यहिं आन हमारी
सुनि सुतवचन कछुक धरिधीरा ❋ लागी कहन नैन वह नीरा
आदि अन्त सब कथा सुनाई ❋ भूतल परी बहुत मुरझाई
सुनत भयो रिस कुश उरभारी ❋ कसि निषङ्ग धनु बाण सिधारी
जो बिनु वधे अनुजको द्रोही ❋ आवों भवन शपथ मोहिं तोही

दो० मातुशपथकरित्वरितकुश, संगलीन्ह मुनिबाल ।
चले कोप कीन्हें महा, जहां भीर महिपाल ॥

मुनिवर बाग गये कुश वीरा ❋ देख्यो जात भूप रणधीरा
आगे जाय सेन सब घेरो ❋ कहि कटुवचन नरेशहिं फेरो
को तुम कौन देशके राजा ❋ साजि सेन आये क्यहि काजा
सुठि सुकुमार मोर लघुभाई ❋ करि मूर्छित त्यहि चल्यो पराई
तुमहिं न त्रास प्राण निजकेरी ❋ भीरसंग वन फिरौ अहेरी
जस कीन्हो तस पैहौ आजू ❋ जायहु कुशल सहित मखबाजू
अस सुनि रिपुसूदन रथ फेरो ❋ कुशसम्मुख त्यहि अवसर हेरो
लवसों सरस देखि सुघराई ❋ बोले भरतअनुज मुसुकाई
छोट वदन कीन्ह्यों रिसभारी ❋ क्षमा करहु अपराध हमारी

दो० तुम्हरेअनुजहिंविविधविधि, उचितसिखावनदीन्ह ।
कालविवश तमक्योसुभट, वचनश्रवणनहिंकीन्ह ॥

चाप चढ़ाय विशिख कुश मारे ❋ दुइ क्षौहिणी कटक संहारे
मोसन आय युद्ध पुनि कीन्हो ❋ यदपि सिखावन मैं बहु दीन्हो
कुल अनुहरत भयो रिस मोरे ❋ सत्य कहौं लिखि कागद कोरे
ज्यहि रिस जाय तुम्हारी आजू ❋ करहु न विलँब सँवारहु काजू
सुनि कुश रिपुसूदन की बाता ❋ अनुज विलोकि जरे सब गाता
बन्धु शोकत्यहि समय बिसारी ❋ कीन्ह्यो सिंहनाद अतिभारी

१ सौगन्द २ तरकस ३ शत्रु ४ भागकर ५ समय ६ कान ७ फ़ौज ८ देखकर ॥

बोले अतिसकोप कुश जबहीं ❋ डगमग भयो लोक तिहुँ तबहीं
सुनत दशौ दिकपाल सकाने ❋ क्षुभ्योसिन्धु जलचर अकुलाने
उठ्यो कमठमहि कांप्यो व्यालू ❋ भयो शोर डरप्यो सुरपालू

छं॰ सुरपालकम्पेकौनविधित्यहि विष्णुशिवशंकाभई।
अस कौन वीर सकोप अति धनु बाण करकमलन लई॥
रणअंजिर अनुपम चाप कुश बलधाम जब फेरनलगे।
सुर असुर किन्नर नागनर डरमानि त्यहि अवसर भगे॥

सो॰ सुरन धर्यो नहिं धीर, क्रोधकृतान्त निहारि कुश।
भागे सब भटभीर, रहे एक रिपुदमन रथ॥

दो॰ कौन बड़ाई कुशहि यह, मातु सिया पितु राम।
को असमरथ वीर जग, जीति सकै संग्राम॥

कुश रिपुदमन समर गिरिजाई ❋ महा अगम नहिं वरणि सिराई
कोटिन बाण शत्रुहन मारे ❋ कुश वरवराड काटि महि डारे
भे बाणन ते हीन निषंगा ❋ टूटे चाप अमित बहु रंगा
मींजत हाथ अधर रद चाबू ❋ बिसर्यो वीर अवध को जाबू
रहे सुभट जहँ लग रणखेतू ❋ मार्यो त्यहि रिपुदमन समेतू
बहुरि वाजि बांध्यो तरु जाई ❋ व्याकुल गयो जहां लघुभाई
लीन्ह उठाय गोद बैठाई ❋ देखि दशा दारुण दुख पाई
रोदन करत मोह उर व्यापा ❋ वरणै को जस हृदय कलापा
समुझिसमुझिसानुजकीकरणी ❋ अबलाइव मारत शिरधरणी

दो॰ क्षणक्षणव्याकुलदेखिगति, वरणत शीलसँकोच।
महिलोटत करुणा करत, कहत विधाता पोच॥

सिया सुवन रोदन सुनि भारी ❋ वनवासी सब भये दुखारी
प्रकट्यो देव सघन वन आई ❋ कहि इतिहास कुशहिं समुझाई

१ जलजन्तु २ इन्द्र ३ रणाङ्गन ४ दैत्य ५ संग्राम ६ दांत ७ लव ८ पुत्र॥

धरो धीर दुख अनुज बिसारी ❀ जियै बन्धु आशीष हमारी
सुनत देखि वन गिरा सुहाई ❀ उठि बैठे तब लव गिरिजाई
मिले परस्पर दोऊ भैया ❀ हरषित चल्यो जहां रहि मैया
हाथसों हाथ जोरि दोउ भाई ❀ गये भवन आनँद अधिकाई
देखत मातु त्वरित उठिधाई ❀ लीन्ह सुवन दोउ कंठ लगाई
मिलि दोउ कुँवर गोद में लीन्हीं ❀ याचक बोलि निछावरि कीन्हीं
शुचि भोजन पकवान मिठाई ❀ हर्ष सहित दोउ तनय जिमाई

दो० ह्वै प्रसन्न मनहरषि अति, देखि सुरस ज्यवनार।
लागे भोजनकरन तब, प्रमुदित दोउ सुकुमार॥
कहिसियतवबलिजाउँमैं, हे सुत शोभागेह।
भयो उपद्रव बाग सुनि, मो मन अतिसन्देह॥

मम सन्देह निवारहु ताता ❀ कहो भयो ज्यहिविधि उतपाता
मातुवचन सुनि लव अतिपावन ❀ प्रथमहिं ते सब लगे सुनावन
ज्यहिविधि आय सुभट कटकाई ❀ घेरयो विपिन चहूंदिशि आई
एक तुरँग तेहि संग पराई ❀ आय चरयो मुनिवर अमराई
हेमपत्र हय शीश विलोकी ❀ बांधि ताहि रिस गई न रोकी
बांध्यों तुरँग मातु बरियाई ❀ तासु खोज सेना बहुआई
तासों कीन्ह युद्ध अतिभारी ❀ करि संग्राम सुभट सब मारी
त्यहि पाछे सेनांपति आयो ❀ म्वहिं लघु देखि बहुत समुझायो
कीन्ह्यो कठिन परण महिपाला ❀ मूर्छितकियो मोहिं त्यहिकाला

दो० असकहिपुनिचुपसाधिलव, चरणकमलशिरनाय।
शयन कीन्ह पर्य्यङ्कपर, बोले कुश मुनिराय॥

त्यहि अवसर मैं वन ते आयों ❀ तव गति देखि बहुत दुखपायों
तुमसों पूंछि सक्यों नहिं माता ❀ मुनिबालकन कही सब बाता
त्वरित लीन्ह धनु बाण उठाई ❀ गयों बाग जहँ भट समुदाई

१ वाणी २ आपसमें ३ जल्द ४ हर्षित ५ उत्पात ६ माथा ७ सेनाका स्वामी ८ शय्या॥

नहिं तहँ सुभट न दीख नरेशू * नहिं लव सानुज भयो अँदेशू
गयों दूरि कछु विपिन मँझाई * देख्यों चली जात कटकाई
फेस्यों कहि कटुवचन सरोखा * सुनत वचन आये अतिचोखा
रथ शोभित स्वइ राजकुमारा * करि संग्राम अनुज जिन मारा
देखि मोहिं लवके अनुहारी * रह्यो चकित बहुबार निहारी
पुनि लव को रथ ऊपर देखी * भयो नरेशहि शोच विशेखी

दो० करिप्रतीतितबहृदय निज, जानि मोहिं लवभ्रात ।
रथ हांक्यो आयो निकट, कह्यो वचन अस मात ॥

रे बालक त्वहिं त्रास न आई * जो अब म्वहिं कटु बैन सुनाई
वयकिशोर सुन्दर तनु गोरा * कहसि वचन जनु माहुर घोरा
लघु विचारि मैं बहुत सँभारा * सह्यों कुँवर कटु बैन तुम्हारा
जस तुव बन्धु प्राण हठि दीन्हा * तस तोहूं खल चाहत कीन्हा
ह्वैहौ क्षणमहँ काल हवाले * अबलगि पस्यो न काहू पाले
जाहु कुशल तजि मोहतरंगा * हठवश होहु न दीपपतंगा
आयसु दीन्ह न मैं कटकाई * लागि दया बालक सुघराई
सो तुम बहुत प्रचास्यो मोहीं * मोर पराक्रम विदित न तोहीं
सँवरहु जो कोइ होय सहाई * कहौं स्वभाव न करौं बड़ाई

दो० सुनि नरेशके वचन मृदु, मातु हँस्यों त्यहिकाल।
हँसतविलोक्योमोहिंजब, बोल्यो वचन कराल ॥

यह बालक वश काल निदाना * मारौ घेरि न पावै जाना
सुनि आयसु महिपाल सकोही * मारन लगे सुभट सब मोही
मैं अकेल सेना नृप भारी * विकलभयों त्यहि क्षण महतारी
बाणन मारि छेदि तनु दीन्हा * चहुँदिशिआयघेरिम्वहिंलीन्हा
मैं देख्यों तब नयन उघारी * लीन्ह्यो घेरि सुभट बलधारी
धरि धीरज मुनि सुमिरि प्रतापू * छांड्यों बाण खैंचि तब चापू

१ क्रोधसमेत २ समान ३ विश्वास ४ तीखे ५ पांखी ६ विख्यात ७ देइ ८ बांधा ॥

मार्यो नृपहिं सहित कटकाई ❀ बहुरि बाजि बांध्यों तरुजाई
बाजि बांधि मैं लव पहँ आयों ❀ देखि दशा दारुण दुख पायों
सोवत महि शरसेज निहारी ❀ शिरधुनि रोदन कीन्ह पुकारी
दो० त्यहि अवसर वनदेवता, मम विलाप सुनि कान।
आये धीरज दीन्ह मुवहिं, कथा अनेक बखान॥
धरहु धीर सुनि बात हमारी ❀ जाहु वेगि[2] जहँ मातु तुम्हारी
जियै बन्धु लघु मैं वर दीन्हा ❀ असकहिगवनभवननिजकीन्हा
सुनत गिरा[3] वनदेवत माता ❀ तजि मूर्छा जाग्यो लवभ्राता
मिलत प्रेम नहिं हृदय समाता ❀ देखि अनुज भये शीतल गाता
देखा जाय बहुरि रणखेतू ❀ पर्खो न लखि कोउ वीर सचेतू
मुनिवर सुतन सों यह समुझाई ❀ रह्यो सजग हय भागि न जाई
बाग मुनीश तुरँग महिपाला ❀ जुगवत रह्यो सजग सब काला
सकल अनुग्रह मातु तुम्हारी ❀ आय कुशल पदकंज निहारी
सुनि सुतबचन अशीशत माता ❀ गई निशा बड़ि सोवहु ताता
दो० लागे सोवन मुदित मन, आयसु जननी पाय।
जागे होत प्रभात पुनि, बन्दि चरण शिरनाय॥
करि अस्नान गङ्ग दोउ भाई ❀ आय मुदित मातुहिं शिरनाई
भोजन करहिं सङ्ग पयधारी ❀ लै आज्ञा वन ओर सिधारी
बधैं पुनीत बराह कुरंगू ❀ आवहिं भवन भ्रात द्वौ संगू
यह इतिहास अनूठ खगेशू ❀ पारवती सन कह्यो महेशू
सोइ जाबालि पराग नहाई ❀ भरद्वाज मुनिवर प्रति गाई
अतिविचित्र महिमा भगवाना ❀ आगम निगम पुराण बखाना
जब रिपुदमन सहित सब वीरा ❀ परे मूर्छि रणमहँ रणधीरा
भागे सुभट कछुक जिमि सारे ❀ ते कौशलपुर जाय पुकारे
दो० गये सुभट ते अवधपुर, अतिव्याकुल तनुछीन।

१ घोड़ा २ जल्द ३ वाणी ४ सावधान ५ चरणकमल ६ सबेरे ७ हरिण ८ अयोध्या॥

जाय पुकारे मुनि प्रभू, वचन सही ह्वै दीन ॥
उहां राम उर शोच अपारा ❀ नहिं आये प्रिय प्राण अधारा
मखेशाला जहँ ऋषयसमाजू ❀ ऋषिन मध्य रघुवीर विराजू
चारिउ षट दश आठ पुराना ❀ मुनि वक्ता श्रोता भगवाना
चहुँ दिशि विप्र वेदध्वनि करहीं ❀ मागध सुयश वंश उचरहीं
वन्दीगण याचक गुणगायक ❀ अस्तुति करत ठाढ़ रघुनायक
चतुरानन पञ्चानन देवा ❀ चले यान चढ़ि प्रभुकी सेवा
इन्द्र समाज देव मुनिवृन्दा ❀ आये जुरि जहँ रघुकुलचन्दा
मुदित अशीश जोरिकर देहीं ❀ वदन विलोकि परमसुख लेहीं
निज निज थल बैठे सब जाई ❀ शक्तिसमेत महाछवि छाई
दो० भरत लषण दशरथसचिव, अनुजनसुवन समेत ।
जोरि पाणि ठाढ़े सकल, सम्मुख कृपानिकेत ॥
प्रभु रुख निरखि काज अनुसरहीं ❀ सम्मुख ते भूल्यो नहिं टरहीं
तौनी समय सुभट तहँ जाई ❀ रिपुसूदनकी खबरि सुनाई
सुनत कृपानिधि अचरज माना ❀ विधिगति प्रबल हृदय अनुमाना
सुभट बुलाय अवधपति बूझे ❀ कहु केहि देश शत्रुहन जूझे
नाय शीश पद वचन बहोरी ❀ लाग्यो कहन दोऊ करजोरी
देश देश सब तुरँग फिराई ❀ कोउ न भयो सम्मुख रघुराई
आगे ह्वै पूजा हय करहीं ❀ रिपुसूदन के सम्मुख धरहीं
करहिं अभय त्यहि अङ्ग लगाई ❀ साधु स्वभाव भरत लघु भाई
कोउ न सुभट सम्मुख रण कीना ❀ मिले आय सब परम अधीना
छं० सब मिले परम अधीन जहँजहँ वाजि रिपुसूदन गयो।
हियहारि काँपे सेन लखि करजोरि शिर नावत भयो ॥
यहिभाँति अस्तुति करहिं पूजहिं अश्वभट रिपुदवनको ।
राखैं सुवस्तु मँगाय आगे चलैं पद गहि भवनको ॥

१ यज्ञशाला २ भाट ३ मंगता ४ महादेव ५ दयाधाम ६ श्रीराम ७ छोटा ८ कूकर ॥

सो० यहि प्रकार सब देश, फिरि आये रिपुदमन भट।
चले अवध अवधेश, सङ्ग अनी चतुरङ्गिनी ॥
दो० फिर्यो तुरँग जब अवधकहँ, आयो गङ्गा तीरे।
सुभट क्षौहिणी चारि दल, त्यहि पाछे रघुबीर ॥
महासघनवन तहँ रघुराई ❀ दिवसहु जहँ निसु राति सुहाई
गयो तुरँग त्यहि वन रघुराई ❀ पहुँचो जहँ मुनिवर अमराई
मुनिवर बाग चरै जब लागा ❀ बांध्यो हय रखवारन बागा
सजग भये हय पाय अनेरा ❀ घेरे ठाढ़ चहूंदिशि हेरा
सुभट विकल नहिं देख्यो वाजू ❀ कहैं सहँमि बड़ भयो अकाजू
खोजत फिरैं अन्त नहिं पावैं ❀ हेरि हेरि चहुँदिशि फिरि आवैं
धँसे महावन तब अकुलाई ❀ लख्यो अश्व मुनिवर फुलवाई
जाय तहां हय छोरन लागे ❀ रखवारे भट देखत भागे
तेहिमहँ एक कुँवर तन गोरा ❀ रोंक्यो भट कहि वचन कठोरा
दो० वयकिशोर नखशिखसुघर, सुषमा शीलनिधान।
हटके भट सबकाल त्यहि, करतल फेरत बान ॥
शोभा सुख शतकोटि दिनेशा ❀ काकपक्ष धारे मुनिवेशा
सौ सौ कोटि कामरति वारी ❀ अङ्ग अङ्ग जैये बलिहारी
मुनिवर वेष कुमार नरेशा ❀ प्रभु अनुहारि विशेष सुरेशा
सुनि भट वचन रमापति देवा ❀ कहा सयन कोउ लखै न भेवा
पुनि कर जोरि कहन सो लागा ❀ ठिठुकि रहे भट गये न बागा
माखे वचन सुनत सब वीरा ❀ सजग भये गहि गहि धनुतीरा
कोउ कह मारहु लेहु छुड़ाई ❀ कोउ कह जियत धरहु यहि भाई
अस अभिलाष सुभट उरमाहीं ❀ चरित राम खग बूझि न जाहीं
रिसवश एक बाण तिन मारा ❀ परे मूर्छि रण सुभट अपारा
दो० द्वितिय बाण छांड़्यो जबै, भागे भट रणधीर।

१ किनारा २ दिन ३ बगीचा ४ डरकर ५ शोभा ६ जुल्फ़ें ७ योधा ८ चाह ॥

जाय पुकारे ते सभय, जहँ रिपुसूदन वीर ॥
पहुँचो रथ सम्मुख जब आई ❀ देखि कुमार परम सुख पाई
लखि शोभा रथ काम लजौनू ❀ शिथिल गात मनभे रिपुदौनू
हृदय सराहत कुँवर लुनाई ❀ बोले रिपुसूदन मुसुकाई
की तुम वेश मुनीश ऋषेशा ❀ की क्षत्रीकुल तनय नरेशा
वनमाला छापा शुचि टीका[1] ❀ देखि स्वरूप लाग अतिनीका
प्रेमफांस लीन्हे वन फिरहू ❀ मोहत जिव भय शंक न करहू
सो छल बल हमसों अब कीना ❀ कीन्ह वाजि अपने आधीना
छांड़हु तुरँग छोड़ि लरिकाई ❀ अबहीं ते नहिं सोह लड़ाई
दो० सुनि रिपुसूदन के वचन, तिन हँसि उत्तर[3] दीन्ह ।
मृदुल मनोहर बयनकहि, अश्वहि चाहहु लीन्ह ॥
करहु कोटि हय हेतु उपाई ❀ नहिं पावहु बिनु किये लड़ाई
छलताजि सकल कुटिलता[4] काजू ❀ सम्मुख समर करहु जो राजू
जाको अश्व देइ करतारा ❀ लेइ सो आजु महीपकुमारा
होत परस्पर वाद विवादू ❀ बढ़्यो अधिक दुहुँदिशि संवादू
तब रिपुहन विचारि रघुराई ❀ बिनु संग्राम अश्व नहिं पाई
बोलि सुभट सब आज्ञा दीन्ही ❀ आपन धनुष बाण कर[5] लीन्ही
लाग्यो होन समर रघुनाथा ❀ चले बाण दौ दिशि यकसाथा
देखि पराक्रम तासु अपारा ❀ मन रिपुसूदन कीन्ह विचारा
श्रवणप्रयंन्त[6] शरासँन[7] ताना ❀ मार्‍यो कठिन तासु उर बाना
दो० लागत शर मूर्छित भयो, उठ्यो सँभारि बहोरि ।
सेन सहित रिपुसूदनहिं, बाणन[8] डार्‍यो फोरि ॥
मारि सुभट सब धरणि सुवाँई ❀ परे सकल शरसेज बिछाई
जहँ लग भट रिपुसूदन साथा ❀ पलमहँ सब मारे रघुनाथा
कीन्ह विकल रिपुहन अतिकोपे ❀ शरन मारि लीन्ह्यो रथ तोपे

१ ढीले २ तिलक ३ जवाब ४ टेढ़ाई ५ हाथ ६ कानतक ७ धनुष ८ बाण ॥

तब रिपुसूदन अतिशय करषे ❀ धनुष चढ़ाय बाण बहु वरषे
मूर्छित कीन्ह कठिन शर मारी ❀ वाजिसहित तब अवध सिधारी
योजन एक निकसि रथ आवा ❀ पाछे कुँवर और यक धावा
ललकार्यो तिन हाथ उठाई ❀ फिरहु सुभट कहँ जाहु पराई
सरुष वचन सुनि भट सकुचाने ❀ फिरे त्वरित रिपुदमन रिसाने
कटक सहित आये अतिचोखा ❀ जहां वीर वह ठाढ़ सरोखा

दो० तानि शरासन कानलगि, त्वरित सिधारे बान।
भयो न शङ्का तासु उर, वीर धीर बलवान॥

भयो परस्पर वचन सक्रोधा ❀ दुहुँ दिशि तमकि उठे द्वौ योधा
इत उत चले उरग सम बाना ❀ समर होन लाग्यो भगवाना
रिपुसूदन सुरपति सम बांके ❀ कुसुम समान लगैं शर ताके
बहु छलबल करि हार्यो वीरा ❀ तब तिन हत्यो मांझ उर तीरा
लागत शर मूर्छित महि गिरेऊ ❀ कहुँ निषङ्ग कहुँ शारँग परेऊ
गिने सुभट बाचे बिनु मारे ❀ आये भागि ते अवध बिचारे
जस आयसु प्रभु राउर होई ❀ करहिं वेगि रघुनायक सोई
सही वचन सुनि सुभट सयाने ❀ रघुकुलतिलक राम पछिताने
सब समाज मखके सुनि बानी ❀ बड़ अचरज हिरदय अनुमानी

दो० कृपासिन्धु वश शोच तब, भरतहिं तुरत बुलाय।
तात जाव जहँ भयो रण, देखहु अनुजहिं जाय॥

तुरँग समेत जीति रिपु आनो ❀ इतना कहा तात तुम मानो
को अस वीर कीन्ह रणभारी ❀ मार्यो रिपुसूदनहिं प्रचारी
सुनत शोच उर भयो अपारा ❀ कस वे जिन रिपुसूदन मारा
जो अधीन है देहिं तुरंगा ❀ कियो न तात समर तिन संगा
जो बलकरि पौरुष दिखरावहिं ❀ सम्मुख तात तुम्हारे आवहिं
करि संग्राम जीति रणमाहीं ❀ हयँ समेत आनेहु म्वहिं पाहीं

१ दौड़ा २ क्रोध समेत ३ इन्द्र ४ फूल ५ तरकस ६ संग्राम ७ घोड़ा॥

सुनि मृदुगिरा भरत शिरनावा ❀ तुरत समर कर साज[1] मँगावा
गजरथ साजि सारथी लावा ❀ ध्वज पताक बहु तुवन सुहावा
सो० नाय रामपद शीश, भरत गमन कीन्हेउ तुरत।
कह भुशुण्डि खगईश, संग क्षौहिणी चारि दल ॥
भे सवार गजवदन[2] मनाई ❀ को कहि सकै भरत प्रभुताई
संग भूरिभट वरणि न जाई ❀ देखत बनै सुनहु गिरिजाई
पवन सरिस रथ वेगि चलाई ❀ भयो जहां रण पहुँचे जाई
देखा भट घायल रण खेतू ❀ परे सकल रिपुदमन समेतू
अनुज विलोकि बहुत दुखमाना ❀ धरि धीरज बोले बलवाना
खोज करहु[3] वैरी वनमाहीं ❀ सुनत मोहिं कहुँ भाजि न जाहीं
भरत वचन सुनि सुभटसमूहा ❀ खोजन चले सिमिटि करि हूहा
त्यहि अवसर[4] मुनिबालकवृन्दा ❀ गे देखन मुनिबाग अनन्दा
तहँ अवलोकि प्रबल कटकाई[5] ❀ चले भागि टेरत दोउभाई
दो० जाय पुकारे सुवन सब, रहे जहां दोउ भ्रात।
लीन्हे अतिभट भूप कोउ, घेरिलीन्ह वन पात ॥
सुनि लव कुश सेना सब आई ❀ तुरत उठे दोउ भट हर्षाई
कसि पट पीत[6] तुवन कटिलाई ❀ लीन्ह शरासन हाथ उठाई
सियपद वन्दि सुमिरि मुनिराई ❀ सिंह[7] ठवनि गमने दोउ भाई
जिमि केहरि नग नाग समाजू ❀ लवहिं देखि जिमि झपटै बाजू
तस दोउ वीर सुनत कटकाई ❀ गये बाग मन विलँब न लाई
देखा तुरँग बाग मुनिराऊ ❀ ठाढ़भये तहँ नहिं भय काऊ
हेरत विपिन सुभट तहँ आई ❀ दीख तुरँग दोउ वीर सुहाई
शोभा देखि सुभट अनुरागे ❀ भरि भरि नयन निहारन[8] लागे
करहिं परस्पर सकल बड़ाई ❀ धनिविधि ज्यहिं असरूप बनाई
दो० असशोभा नहिं दीख कहुँ, जहँलगिविधिव्यवहार।

१ सामान २ गणेश ३ ढूंढ़ो ४ समय ५ फ़ौज ६ पीताम्बर ७ सिंह ८ देखने ॥

सुन्दरता तिहुँलोक सब, इन्हैं दीन्हि करतार ॥
रूप सराहि सराहि भवानी ❀ बोले सुभट समय अनुमानी
तुम बालक मुनि तप अधिकारी ❀ यह अनुचित धनु बाण सँवारी
सरवैरि तुम राजन कर करहू ❀ वश अज्ञान तो कर शर धरहू
बाढ़्यो गर्व बांधि धनु भाथा ❀ फिरौ निशङ्क कुँवर दोउ साथा
कहत बहुरि अस नीति बखानी ❀ कीजे वैर आपु सम जानी
कहँ वे अवध ईश सुखरासी ❀ कहँ तुम बालक मुनि वनवासी
भल न कीन्ह हय को अपनाई ❀ जीत्यो समर भरत लघु भाई
त्यहि समान नहिं भरतहि जानो ❀ वीरधुरीण सत्य करि मानो
बिनु श्रम तोहिं मारि क्षणमाहीं ❀ छोरि तुरंग अवध लै जाहीं
दो० एकवीर पुनि भक्तदृढ़, शोभा शीलनदीशं ।
बहुरिअनुज रघुवंशमणि, जिनमाखोदशशीश ॥
मानहु जो शिष कुँवर हमारी ❀ सब विधि है तुम्हरी हितकारी
तुरँग समेत चलो हरषाई ❀ मिलो सो कहैं अनुज रघुराई
शारद कोटि कोटि अहिराई ❀ महिमा भरत कहत सकुचाई
अतिकोमल चित भरत नरेशू ❀ करैं क्षमा लखि कुँवर ऋषेशू
रिपुसूदन को वैर बिसारी ❀ फिरैं अवध लै वाजि सुखारी
कीन्हें समर पार नहिं पावो ❀ घर बैठे भावै सो गावो
भरत समान वीर जग माहीं ❀ नहिं देखा कहुँ सुनियत नाहीं
सम्मुख जासु काल शिरनाई ❀ ताहि समर जीतब तुम भाई
त्यागहु हठ इरषा अभिमाना ❀ भरत धर्मधुर भट बलवाना
दो० तासों जीतब समर तुम, सजि भूषण संग्राम ।
अबलग सूझ न दूधमुख, बोलत वाणी वाँम ॥
और वचन तुम सुनहु हमारे ❀ सजग होहु सुनु ऋषयकुमारे
हमहिं भरत आयसु अस दीन्हा ❀ खोजि चोर हय चाहिय लीन्हा

१ अयोग्य २ बराबरी ३ निडर ४ शीलसागर ५ शेष ६ घमण्ड ७ टेढ़ी ८ सावधान ॥

जहां मिलैं धरि बांधौ आजू ❋ यतन समेत सँवारहु काजू
कीन्ह चहैं निज ईश रजाई ❋ खाई जासु तासु यश गाई
वयकिशोर मृदु मंजुल गाता ❋ देखि तुम्हें नहिं किय उतपाता
कीन्ह न कान जो हम शिष दीन्हा ❋ अब पैहौ भल आपन कीन्हा
अस कहि सुभट सरुष ह्वै आये ❋ लै कृपाण तब सम्मुख धाये
लवकुश देखि सुभट रिपु भारी ❋ गदा शूल तोमर कर धारी
पाछे राखि लवहिं कुश वीरा ❋ चाँप चढ़ाय सँयुत करि तीरा

छं॰ गहि तीरसंयुत चाप खींचि विलोकि रिपुसेना महा।
छांड़्यो कठिन नाराँच हँसि मानो प्रबल मारुत बहा॥
लव निमेष प्रमाण महँ सब वीर रण घायल भये।
कह दास चेरे बहुरि लव कुश बाग मुनिनायक गये॥

दो॰ बचे सुभट दुइ चारि जे, ते भागे गौं पाय।
गये पुकारत भरत जहँ, व्याकुलवचनसुनाय॥

नाथ सुभट जे आयसु पाई ❋ खोजन लागे हय वन जाई
मिला न चोर न घोड़ मुनीशा ❋ फिरे सुभट व्याकुल जगदीशा
मध्य विपिन यक मुनि अमराई ❋ बांधा तुरँग दीख तहँ जाई
बालक दुइ तहँ कृपानिधाना ❋ खड़े सजग शरसाजि कमाना
जानि चोर हय भट कह बानी ❋ रे रे शठ तुव आँयु तुलानी
तिन न कीन्ह कछु हृदय अँदेशा ❋ निपट निरंकुश तनय ऋषेशा
सबप्रकार हार्‌यो समुझाई ❋ तदपि न त्याग कीन्ह लरिकाई
भये क्रोधवश सुभट गोसाईं ❋ सम्मुख युद्ध कीन्ह वहि ठाईं
क्षण महँ सब योधा सँहारे ❋ तेजपुंज दोउ ऋषयकुमारे

छं॰ दोउ तेजपुंजकुमार ऋषि सुखधाम शोभा को कहै।
मृदुगात सुन्दर वयकिशोर अनंग लखि सकुचै महै॥

१ सिद्धकरो २ तलवार ३ धनुष ४ बाण ५ उमर ६ पुत्र ७ मारे ८ कामदेव॥

शिर जटा मूंज जनेव कुण्डल कान अद्भुत सोहई ।
अस कौन जीव सचेत जगमें जो न देखत मोहई ॥
धनुबाण सुन्दरमानकुलकरि सुवन अतिशोभितभले ।
अब नाथ देखि विचित्रशोभा सकुच निज लोकहिचले ॥

दो० सकल सुभट रण खेत महँ, परे मूर्छि तजि प्रान ।
खड़े सुभट दोउ समर महँ, हृदयन कछु अभिमान ॥

भरत सुन्यो सेना सब जूझी ❋ करि विषाद योधन सों बूझी
चढ़ि रथ तुरत अबार न लाई ❋ चले तहां जहँ मुनि अमराई
सुमिरत प्रभु पद बारम्बारा ❋ करत विविधविधि पन्थविचारा
पहुँचे जहां भयो संग्रामा ❋ भरत धर्मधुर बुधिबल धामा
विपिन गँभीर महाअँधियारी ❋ भूमिशयन सब सेन निहारी
बड़े बड़े सुखिया सेनापति ❋ सुर दुर्लभ पावन जिनकी गति
सकैं न रण सरबरि करि सोऊ ❋ अतिबलवान ऋषयसुत दोऊ
जानि न जाय चरित करतारा ❋ गूढ़ असूझ अबूझ अपारा
बोलत रण पग परत न आगे ❋ धीरजहू कर धीरज भागे

सो० धीरज धरेहु मुनीश, सहित कटक आगे गयो ।
देख्यो सुवन मुनीश, घेरे अश्वहिं ठाढ़ सब ॥

त्यागि बाग रथ वाजि मँगावा ❋ सुमिरि राम शिव उमा मनावा
चढ़्यो अश्व धरि धीरज गाढ़े ❋ गये जहां मुनिशिशु सब ठाढ़े
आवत देखि तुरग असवारा ❋ भागे सकल ऋषीशकुमारा
लव कुश पांव न पाछे डारा ❋ खड़े बन्धु दोउ करैं विचारा
मारे भट जु प्रथम रणमाहीं ❋ तासु सहाय और कोउ आहीं
जो नृप यह कर जोर सुरीती ❋ मांगे अश्व देहिं सुनु नीती
जो कछु बल प्रभाव दिखरावैं ❋ तो सजाय अपनी यह पावैं

१ योद्धा २ अहंकार ३ देर ४ परमेश्वर ५ पार्वती ६ भाई ७ प्रताप ८ दण्ड ॥

अस कहि वीर दोउ बलधामा ❋ खड़े बाग छवि कोटिनै कामा
तब लगि जाय भरत नियराने ❋ पाणिसरोज बाण धनुताने
दो० ताजन मारे अश्वके, परेंचि उठा जिमि आग।
खाईं नांघत बागको, नहीं बार कछु लाग॥
मध्य बाग लखि अश्व सवारा ❋ बढ़ि आगे तब कुश ललकारा
अब से जो पग आगे धरहू ❋ यमपुर गमन सहित हय करहू
जब सरोष बोले कुशवीरा ❋ रोंक्यो बाग भरत रणधीरा
सावधान ह्वै भरत भवानी ❋ बोले अतिकठोर कटुबानी
रे हयचोर कुपथ मनराता ❋ जसमुखअहै कहसि किनबाता
छोटे वदन कहसि कटुबानी ❋क्यहिबलविपिनफिरसिअभिमानी
गुण अवगुण तुव करौं न काना ❋ जस वैरी तस बालक जाना
वचन कहत नहिं शंका तोहीं ❋ कहै कठोर वचन बहु मोहीं
सो सुनि मोहिं क्रोध नहिं सपने ❋ जाहु कुमार कुशल घर अपने
दो० अबलों क्रोध न कीन्ह मैं, सुनहु वीर बलवान।
केहरिकेर स्वभाव नहिं, बध शृंगाल खर श्वान॥
अस कहि भरत मौन ह्वै रहे ❋ कुश मुसुकाय बहुरि कछु कहे
सोसुनिभरत अधिकरिसमानी ❋ बधों न तोहिं सुवन मुनि जानी
ममता मोह तुरंग तजि भागो ❋ अतिसुकुमार वीररस त्यागो
शिशु विचारि मैं बहुत सँभारा ❋ निपट कालवश भयसि कुमारा
तोहिं निपाति मख तुरंग समेता ❋ जाउँ अवध जहँ कृपानिकेता
यद्यपि अस विचार मन मोरे ❋ करों न सांच विलोकत तोरे
लव कुश हँसे सुनत रिपुबानी ❋ मिला नरेश हमैं यह ज्ञानी
जो उपदेश कि गुरु न बतावा ❋ सो हम आजु भूपसन पावा
वैर बिसारि लीन्ह हय चाहा ❋ सो गति इहां अगम नरनाहा
दो० आनहु बोलि सहाय किमि, विधि हरि हर अमरेश।

१ करोड़न २ जरि ३ संयमनीपुरी ४ हर ५ सियार ६ मारकर ७ राजा ८ इन्द्र॥

जबलगि तन पर शीश है, मिलै न अश्व नरेश ॥
असकहि सजग भये दोउ भइया ❀ सुमिरि मुनीपद पंकज मइया
चाप चढ़ाय हाथ में कीन्हा ❀ भाथा बांधि विषम शर लीन्हा
पाछे तुरँग राखि भे ठाढ़े ❀ महाबली हथियारन गाढ़े
युद्ध विरुद्ध देखि दोउ वीरा ❀ सहमे भरत भूप रणधीरा
लगे विचार करन अवनीशा[1] ❀ ये न सुवन ऋषिराज मुनीशा
अवशि राजवंशी हैं दोऊ ❀ अस शोभा नहिं जग में कोऊ
मुनिवर वेष बसैं वनमाहीं ❀ छविनिधान लखि कामलजाहीं
रिपुसूदन मद भंजनहारा ❀ नहिं कोउ वीर सकल संसारा
तेजपुंज[3] अतिशय दिखराई ❀ मनहुँ संग सेना समुदाई
सो० बिनु कीन्हे संग्राम, हाथ न लागै तुरँग मख ।
अस विचारि बलधाम, कोपि लीन्ह धनु बाण कर ॥
भुजा उठाय पुकारे योधा ❀ आये जहँ तहँ सेन सक्रोधा
कुश विलोकि रिपु सेनसमूहा ❀ आये चहुँदिशि यूथन जूहा
लवहिं सौंपि मुरचा भटभारी ❀ सम्मुख राजन आपु सिधारी
कुश अरु भरत दोऊ बलधामा ❀ लड़ैं प्रचारि भूमि संग्रामा
दुहुँदिशि चलैं बाण अतितीछे ❀ भूलिउ कोउ पग धरै न पीछे
शरन भये तन झांझर दोऊ ❀ तदपि न हटैं वीर रण कोऊ
धनुष बाण डाखो यकसाथा ❀ भिरे दोऊ कृपाण लै हाथा
सुनहु खगेश काकपति कहहीं ❀ दोउ अघाय बल शर तर रहहीं
जूझे सुभट रहे जे संगा ❀ परे भूमिरण शोणित अंगा
छं० परे भूमि शोणित अंग भट बहु रुधिरके नारे बहे।
डरपे सुरासुर देखि रण गये भागि नहिं कोउ थिर रहे ॥
बहु गृध्र श्वान शृगाल केहरि मुदित भोजन पायकै ।
वैताल भूत पिशाच योगिनि पियें रुधिर अघायकै ॥

१ योद्धा २ महीपति ३ तेजसमूह ४ सामने ५ संग्राम ६ रुधिर ७ गीध ८ हर्षित ॥

कटकटहिं एकहिं एक घोर कठोर भय दिखरावहीं।
नाचैं बजावैं ताल गति रण राग सुन्दर गावहीं॥
संग्राममहि दोउ वीर कोपे तमकि धनु शायक गहा।
भये विकल जीव सचेत सब नहिं धीर त्यहिऔसर रहा॥
सो॰ समर भरत कुशवीर, देखा सुना न अस कहूं।
भरद्वाज मुनिधीर, सुनहुकह्योजाबालिअस॥

उहां सुभट सब लव संहारे ❋ बहे अनेक रुधिर नद नारे
तब लव अनुज ओर त्यहिकाला ❋ दै ललकार लड़े महिपाला
बड़ी भीर कुश ऊपर जाना ❋ शर सन्धानि चल्यो बलवाना
दूरिहिते बोले लववीरा ❋ आये पुनि जहँ कुश रणधीरा
दीख अनुजकहँ पाछे ठाढ़ा ❋ लागे लड़ै अधिक बलबाढ़ा
बाण प्रहार भूप रथ तोपी ❋ समरअजिर दोउअतिशयकोपी
उमा भरत सम वीर न कोऊ ❋ सकैं न आजु जीति रण सोऊ
जबहिं कोपि कुश छांड़यो बाना ❋ चुभ्यो भरत तन व्याल समाना
लागत बाण भई उरपीरा ❋ परे मूर्छि स्यन्दन वरवीरा

दो॰ देखि दशा भागे सुभट, बचे जे जीवत खेत।
जाय पुकारे ते सभी, जहँ प्रभु लषण समेत॥

शोणित अंग त्रास उरभारी ❋ जाय अवधपुर कीन्ह पुकारी
मूर्छित भरत सचिव सुनि काना ❋ भयो विकल नहिं जाय बखाना
पुनि धरिधीर त्वरित चलिआयो ❋ भरत दशा रघुवरहिं सुनायो
सकल समाज सहित रघुराई ❋ सचिव वचन सुनि रहे अरगाई
विकल भईं सुनि सुनि सबमाता ❋ कहा विरंचि कीन्ह उतपाता
पुरवासी सब अति अकुलाने ❋ सुनेहु जो जहां तहां बिलखाने
पुरजन शोच शोचवश जानी ❋ गुरु वशिष्ठ बोले मृदुबानी
तुम सर्वज्ञ ईश रघुराया ❋ तुमहिं न सपन्यो व्यापी माया

१ दिखलाते हैं २ पकड़ा ३ उससमय ४ मार ५ सर्प ६ मन्त्री ७ ब्रह्मा ८ सर्वज्ञाता॥

धरहु धीर अस कह्यो मुनेशा ❋ कीजै काज यज्ञ अवधेशा
सो॰सुनहु मुनीश सुजान, धरो धीर करुणाअयन।
विधिगतिलखिबलवान,समुझिबुलायेअनुजलघु॥
लक्ष्मणकहँ प्रभु त्वरित बुलाई ❋ हृदय लगाय निकट बैठाई
बोले सरल मनोहर बानी ❋ दीनदयालु सुनहु मुनिज्ञानी
साजि सेन यहि औसर जाई ❋ देखो कहँ जूझे दोउ भाई
भरत शत्रुसूदन रिपु पाई ❋ हत रणखेत अश्वमख लाई
जो निज जान्यो कुँवर ऋषीशा ❋ कियो न रण तिनसंग फणीशा
जो क्षत्रियकर वेष छिपाये ❋ फिरैं विपिन मुनिवेष बनाये
करब समर नहिं करब अवारी ❋ आन्यहु वेगि तुरँग बलिहारी
सुनि लक्ष्मण आयसु अवधीशा ❋ चले नाय पदपंकज शीशा
लीन्ह सेन चतुरंग भवानी ❋ जे सपनेहुँ रण हारि न मानी
दो॰ पहिरीं विविध सनाह सब, शूल शक्ति लै हाथ।
सम्मुख श्रीरघुनाथ के, सादर नावहिं माथ॥
तब लक्ष्मण बोले करजोरी ❋ वाणी मधुर सुधारस बोरी
जो करि कपट भूपसुत कोऊ ❋ करहिं ठगी वन में बसि दोऊ
तौ बध करब न वेष विचारों ❋ तुरँग समेत निकेतँ सिधारों
जो मुनीश सुत आहैं दोऊ ❋ तौ जस आयसु साहब होऊ
तस मैं करों जाय वनमाहीं ❋ अनुचित कहि न सकों प्रभुपाहीं
सुनि रघुनाथ विनय लघुभ्राता ❋ बोले बिहँसि मधुर मृदुबाता
सुनहु तात तुम परम विवेकी ❋ कस न कहो परमारथ टेकी
सोई करब मिलै जेहि बाजू ❋ आनभांति सब होय अकाजू
गहि पदकंज मंजु रघुराई ❋ लक्ष्मण चल्यो सभा शिरनाई
दो॰ सुमिरिशिवाशिवचढ़योरथ,सम्मुख सेन चलाय।
बारंबार सँभारि उर, पदपंकज रघुराय॥

१ दयाधाम २ सीधी ३ शेष ४ चरणकमल ५ बख्तर ६ छल ७ स्थान ८ पार्वती॥

चली कटक लक्ष्मण खगनाहू * सेना प्रबल त्रासे नहिं काहू
वीरन भार कमठ भुवि कांपू * मेरु चूर भे हय गय टापू
करहिं कोलाहल भट मग जाता * आगे यान रामलघुभ्राता
निकट विपिन रिपु आये जबहीं * बोले वचन लषण अस तबहीं
है सब मौन फिरहु वन जाई * लेहु खोज हय रिपु दोउ भाई
देख्यो जहां न बोल्यो भाई * शब्द आय मोहिं कह्यो सुनाई
तब मैं विपिन घेरि चहुँओरा * सहजे बांधि लेउँ हयचोरा
अस कहि कीन्ह बिदा सब वीरा * वीरधुरीण लषण रणधीरा
सुभट जबहिं वन पैठनलागे * कसमसात पग परै न आगे

छं० पग परै न आगे सुभटके लखि सघन वन भारीमहा।
यक एक वीरधुरीण समरथ धीर नहिं कोऊ रहा ॥
निज नाथ काज विचारि जियपर तेज वन बैठी सही।
तेहि समय सेना विकलता नाहिं जात कछु मोसों कही ॥

सो० जानि राम को काज, तापर आंयसु लक्ष्मण।
खोजन लागे वाज, जहँ तहँ वन में पैठि सब ॥

दो० सकलविपिन यक ओरते, चले सुभट सुधि लेत।
कहूं न पायो अन्त हय, दोऊ कुँवर समेत ॥

हेरत विपिन फिरत कटकाई * कहूं खोज मख वाजि न पाई
ठाढ़ परस्पर सब पछिताहीं * राम राम कहि कहँ अब जाहीं
जो बिनु खोज तुरँग अब जाई * कौन वदन लक्ष्मणहिं दिखाई
नहिं सुधिभोजन अरुजलपाना * फिरहिंविपिनसब यथाअयाना
तेहिमा एक सुभट बिलगाई * गयो जहां वनटेढ़ सुहाई
तहां देखि सुन्दर मुनिबागा * तरु रसाल नवपल्लव लागा
सुरपति बाग न पटतर आवा * तुरँग समेत चोर हय पावा
चल्यो तुरत लक्ष्मण के पासा * जानि विपिन हय चोर निवासा

१ घबड़ाहट २ चिल्लाहट ३ आज्ञा ४ आपस में ५ अज्ञान ६ नयेपत्ते ७ इन्द्र ॥

मिले सकल भट सुभट निहारी ❁ पूंछन लागे खबरि सुखारी

दो॰ मुदितभये सुधिपाय हय, सहित चोर वनमांझ।
सीध चले लक्ष्मण जहां, गयो दिवस भै सांझ॥

लक्ष्मण आय चरण शिरनाई ❁ सुधि मखवाजि कह्यो हरषाई
महाटेढ़ वन नाथ सुहाई ❁ भानु प्रताप न सपनेहु जाई
देखा तहँ यक मुनि फुलवारी ❁ वाजि सहित दोउ चोरनिहारी
पन्थ न गजरथ हयरथ शेखा ❁ पात पात सब वन हम देखा
सत्य वचन सुनि सुभट अनन्ता ❁ सजग कह्यो भट बोलि तुरन्ता
निजस्यन्दन[३] साहनी पुकारी ❁ चढ़े तुरँग लक्ष्मण बलधारी
चतुरंगिणी अनी समुदाई ❁ कछु आगे कछु पाछे जाई
करि आगे सो सुभट भवानी ❁ जिनवनशोधिअश्वसुधिआनी
कसमसात भट मारग जाहीं ❁ भ्रमवश चौंक देखि परछाहीं

छं॰ चौंकैं सुभट वनपात खरकत पांव नाहिं आगेपरैं।
जे पाय अधजीवन विपिन छिनचलैं छिन फनफनकरैं॥
अकुलाय भट पछिताय तहँवां देव इष्ट मनावहीं।
घेरे लषण सेनासहित पुर चलैं तहँ फिरि आवहीं॥

सो॰ भयवश भे सब वीर, देखि विपिन हाखो हिये।
लक्ष्मण से रणधीर, काको आनि गिनाइये॥

दो॰ शारदूल के नादसुनि, जहँ तहँ सुभट डेराहिं।
मारगमें कसमसभई, विना जीव सब जाहिं॥

खरखराहिं शूकर सुनि चालू ❁ पिहँकैं गज ठहुकैं कपि भालू
केहरिनाद चहूँ दिशि होई ❁ महा सघन वन जाय न जोई
कांपे उर लक्ष्मण रणधीरा ❁ अभित शत्रु जस होय अधीरा
सम्मित तजी वीरता भारी ❁ जनु ठग जीह लीन्ह ज्यों मारी

१ हर्षित २ नाशरहित लक्ष्मण ३ अपना रथ ४ फ़ौज ५ रीछ ६ सिंहनाद ७ थकाहुआ॥

रहा न तेज न दृढ़ परकाशा ❀ तजी सबन जीवनकी¹ आशा
घेरि लीन्ह चारोंदिशि बागा ❀ वाद विनोद होन पुनि लागा
लवको राखि अश्व रखवारी ❀ कुश सम्मुख ह्वै नृप ललकारी
को तुम कहो कहां ते आवो ❀ बाहर रहो न बाग मँझावो

दो॰ असकहि चाँप²चढ़ाय कुश, बोले वचन सकोपि ।
कसीचारि बढ़ि तुरँगते, भे ठाढ़े पदरोपि ॥

ललकारे वाजी असवारा ❀ को तुम यहां कहां पगुधारा
वैरि जानि ताते कटकाई ❀ अतिनिशंक³ आवें फुलवाई
देखि भीर सेना सँगभारी ❀ मैं जाना कहुँ अन्त सिधारी
सो अरुझे तुम हमसन आई ❀ कहां कुशल नृप कहो सुनाई
फरक रहो जनि पैठो बागा ❀ हमहिं तुमहिं अब लागीलागा
अससुनि लषण रोंकि हयराखा ❀ योधन सों अपने अस भाखा
रहो ठाढ़ जहँ तहँ सब वीरा ❀ रिपुबललखि जनि होहुअधीरा
जो आपुहि हय देहिं मँगाई ❀ तौ न उचित सँग करिय लड़ाई
जो कछु बल पौरुष लखिपाई ❀ तौ बांधो हय लेहु छुड़ाई

दो॰ राम अनुज वाणी विमल, सुनि हर्षे सब वीर ।
सजे समर हथियार भट, खड़े बागके तीर ॥

कह्यो⁴ लषण⁵ सुनि ऋषयकुमारा ❀ कस बांध्यो तुम अश्व हमारा
तुरँग बांधि करि पौरुष भारी ❀ भरत शत्रुसूदन रणमारी
कौन मोह वाजी पर तोहीं ❀ मूरुख कटुक⁶ वचन कहे मोहीं
मैं पुनि नीति समुझि मनमाहीं ❀ अबलग क्रोध कीन्ह उर नाहीं
अबहूं कुशल तुरँग मोहिं दीजे ❀ मुदितपयान भवन⁷ निज कीजे
देखि वेष मुनिवर दोउवीरा ❀ राख्यों रोंकि सुभट रणधीरा
सो तुम नहिं मुनिबालक दोऊ ❀ शोभा अमित⁸ भूपसुत कोऊ
तुमसन निडर कहां मुनिजाये ❀ अस रणतेज कहां उन पाये

१ जीने की २ धनुष ३ बड़ेनिडर ४ कही ५ लक्ष्मण ६ कडुआ ७ घर ८ बेप्रमाण ॥

कछु अपराध कीन्ह तुम भारी ❁ सो विचारि पितु दीन्ह निकारी
दो॰ धनुष बाण बांधे फिरौ, ऋषिमुनिवेषबनाय।
करहुविपिनबसिदिवसनिशि, मोहविवशअन्याय॥
अप्रिय वचन लषण कछु भाषे ❁ सो सुनि अधिक कुँवर दोउ माषे
भे सरोष दोउ बन्धु विशेखी ❁ बोले वचन भूप दिशि देखी
कहत वचन लघु शोभानाहीं ❁ देखो नृप विचारि मनमाहीं
सो नहिं शोच हमें कछु राजा ❁ जो तुम कहहु तुमहिं सबछाजा
करहु विलँब कस रचहु उपाई ❁ मारि हमैं हय लेहु छुड़ाई
जग अस वीर कहां सुनु राजा ❁ हमकहँ जीति जाय लै वाजा
ब्रह्म विष्णु शँकर से गाढ़े ❁ सो सम्मुख रण होहिं न ठाढ़े
तहां कौन पुरुषारथ आना ❁ जाहु कुशल भूपति बलवाना
जो पै मरण समर जियठानी ❁ होहु सजग नृप सुनि मम बानी
सो॰ असकहि दोउ रणधीर, धनुष चढ़ाय सुधारि शर।
जहां अनुज रघुवीर, पहुँचे सम्मुख जाय तब॥
लक्ष्मण देखि सरुष दोउवीरा ❁ चाप बाण कटिकसे तुणीरा
कालसमान ठाढ़ दोउ आगे ❁ मानों जीव चहत लै भागे
यदपि अनन्त महाभटमानी ❁ तदपि न धीरज रहा भवानी
कछु धीरज धरि आप सँभारी ❁ बोले वचन समय अनुहारी
हमहिं तुमहिं कत सोह लड़ाई ❁ अबहुँ कुशल हय देहु मँगाई
सुनत वचन तमके दोउभाई ❁ रे महीप त्वहिं लाज न आई
जबलग जीव रहै घटमाहीं ❁ तबलग अश्व देब नृप नाहीं
हाथ जोरि पदत्राण निकारी ❁ सम्मुख विनती करहु हमारी
जो कदापि हमरे जिय आवै ❁ तौ कहुँ तुरँग भूप तैं पावै
दो॰ ऐसे अनुचित वचन बहु, कहा जबै दोउवीर।
भयो क्रोध सुनि लषणके, बोले गिरा गँभीर॥

१ अनीति २ ओर ३ घोड़ा ४ महादेव ५ जूता ६ कभी ७ वाणी॥

रे बालकहु अबूझ अयाना ※ लखि स्वरूप मुख वचन सयाना
मैं त्वहिं मुनिवरतनय विचारी ※ अबलग बहुते क्रोध सँभारी
अब न तजोंशठतोहिंयहि काला ※ मारि भूमिरण करों बिहाला
शपेथ मोहिं कोशलपुर भूपा ※ अजित अनामय अगुणअरूपा
देखत तोहिं लेउँ मखघोरा ※ जाउँ अवध शठ सुनु प्रण मोरा
हम क्षत्रिय क्षत्रियसन लरहीं ※ द्विजमुनिवरऋषितापस डरहीं
सो तुम नहिं मुनिबालक दोऊ ※ रूप छिपाय भूपकुल कोऊ
इतना कहत लषण रणधीरा ※ सजेग भये दृग पुलकशरीरा
मुख अनुहार देखि अवेधीशा ※ लागे करन विचार फणीशा

दो॰ कहां तनय अस ढीठ मुनि, रहैं ठाढ़ शरजोर।
छाया रघुवर वदनकी, देखि कहत मनमोर॥

यहि वन बसत कहूं वैदेही ※ सुवन प्रताप बली ये तेही
असकहि प्रभु आयसु अनुमाना ※ सुभट बुलाय कह्यो बलवाना
जियत धरहु दोनों कहँ जाई ※ बांधि कुँवर हय लेहु छुड़ाई
अस सुनि सुभट चले त्यहिओरा ※ करि मृगनाद महाअतिघोरा
लीन्हघेरि चहुँदिशि मुनिबागू ※ अति सभीत पग परै न आगू
कुश विलोकि सेना रिपुआई ※ बिहँसि शरासन तुरत चढ़ाई
शत शत बाण जोरि यकसाथा ※ मार्‌यो सुभटन उर भुज माथा
लवनिप्रमाण सुभट सब छीजे ※ देखिदशा लक्ष्मण तब खीजे
तुरँग त्यागि उतरे रणधीरा ※ लीन्ह सकोप हाथ धनुतीरा

दो॰ अतिसकोपकहिवचनकटु, छांड़े विशिख प्रचण्ड।
कुशबलवन्तसो बाणनृप, काटिकीन्हशतखण्ड॥

लक्ष्मण देखि प्रताप सकाने ※ आपते सारिस वीर दोउ जाने
दूसर बाण कोपि पुनि मारा ※ लवकुश बिहँसिकाटिमहिडारा
होहिं निफल इमि बाण भवानी ※ जिमि पाखण्डी की हितहानी

१ देखकर २ सौगन्द ३ सावधान ४ श्रीराम ५ सीता ६ धनुष ७ सौटुकड़े॥

कुशविलोकिभूपति रिसिआना ❀ आपन धनुष श्रवण लगिताना
नृप ऊपर वरषा शर कीन्ही ❀ समर सिखावन बहुविधि दीन्ही
उत लव सुभट जे भूपति सङ्गा ❀ मारिशरन किये शोणित अङ्गा
कहुँ भुज मुण्ड कहूं अव रुण्डा ❀ धरणि गिरहिं धुनिहोयप्रचण्डा
बहुत गिरैं बहु उठैं सँभारी ❀ चिघरैं वीर नाद करि भारी
वन गिरि खोह नदी नद नारे ❀ शोणित से पूरण भये सारे

छं० सारे नदी नद नार कन्दर खोह शोणितसों भरे।
कहुँ कतहुँ वार न पार सूझै सुभट सब घायल परे॥
अधिकार आमिषें रुधिर लखि वनजीव सब आये तहां।
भरिउदरखाय अघाय जहँतहँ फिरे घर जाकर जहां॥

सो० लवनि एक परमाण, सकल वीर महिमें परे।
चले जहां प्रिय प्राण, कुश रणधीर बड़ो अनुज॥

लव तहँ आय अनुजपद वन्दे ❀ मिलि सप्रेम दोउ बन्धु अनन्दे
शोभित धनुष बाण युग हाथा ❀ घेरयो आय अनुज रघुनाथा
मारयो बाण वज्र है लागे ❀ उचकि उचकि घोड़े रथ भागे
घायल भे घोड़े रथ टूटे ❀ मातलि मरे पताका टूटे
विरथ भये लक्ष्मण खगराई ❀ बूझि न जाय राम प्रभुताई
कहँ लक्ष्मण कहँ वे दोउ वीरा ❀ कहँ अगस्त्य कहँ सिन्धुगँभीरा
प्रभु समरत्थ तिहूं यश गावा ❀ असकहि याज्ञवल्क्य शिरनावा
तब सम्मुख ह्वै कुश ललकारा ❀ उठहु सँभरि महिपालकुमारा
दूसर रथ मांगो युवराजा ❀ साजहु सब भूषण रणसाजा

छं० संग्राम साजि बनाय भूपति सजग ह्वै अब आइये।
जाको विधाता तुरँग दे सो आजु रण कर पाइये॥
यहिभांति बारहिंबार जब ललकार कुश बानी कहे।

१ सीख २ मूंड़ ३ संपूर्ण ४ मांस ५ रथवान ६ समुद्र ७ ब्रह्मा ८ युद्ध॥

सकुचे लषण लखि रिपुबली करि चिन्तवन ठाढ़ेरहे ॥
सो० रहा न धीर खगेश, वीरधुरीण अनन्त अस ।
कौतुक रमा रमेश, कहा काक जानै कवन ॥
असकहि कुश लक्ष्मणअनुमाना ❀ बिनु मारे मारा तेहि जाना
कछुक सुभट मारे लव बाचे ❀ फिरे ते काल शीश जेहि नाचे
कुश सम्मुख आये नियराई ❀ मारि शरन तेहि धरणि सुवाई
गिरिजासन अस कह्यो महेशू ❀ दुइ क्षौहिणी सुभट सँग शेषू
ते लक्ष्मण सारथी समेता ❀ अबलग बाचि रहे रणखेता
तब सारथी अपर रथ आनी ❀ बहुरि चढ़े रथ लषण भवानी
सो अब होन चहत बिनु प्राना ❀ जब कोपें दोउ भट बलवाना
प्रभु कारज लखि जो तनु जाई ❀ सब प्रकार मोहिं नेकु भलाई
अस उर मन्त्र दृढ़ाय भवानी ❀ लषण चले शर शारँग तानी
दो० जबै लषण चढ़ि अपररथ, गये जहां दोउ वीर ।
उत्तर प्रति उत्तर भयो, बोले दोउ रणधीर ॥
मारु परस्पर होय भवानी ❀ दोउ रणधीर वीर अभिमानी
बाण चले दुहुँ दिशि अति तीछे ❀ छेदि अङ्ग निकसे है पीछे
पहर दुइक यहिभांति भवानी ❀ दोउ वीरन रणसङ्गर ठानी
दोउ घायलतनु शोणित अङ्गा ❀ रुधिर प्रवाह बहै सब अङ्गा
कुश जान्यो भूपति रण कोपा ❀ मारि शरन तेहिक्षण रथ तोपा
जोइजोइ शर लक्ष्मण बलवाना ❀ घाव करत कुश अङ्ग समाना
सोइसोइ बाण काटि पट पोंछा ❀ बहुत गहिर बहु लागे ओछा
यदपि घाव कुश झांझर देहा ❀ तदपि न कुश मन कछु सन्देहा
खींचि शरासन शर सन्धांना ❀ बोले गरजि महाबलवाना
दो० सजग होहु महिपाल अब, बहुत प्रचारे मोहिं ।
शपथमोहिं मुनिपदकमल, आजु बधों रण तोहिं॥

१ स्मरण २ लक्ष्मी ३ पार्वती से ४ दूसरा ५ बमण्डो ६ वस्त्र ७ ताना ८ ललकारे ॥

असकहि छांड़े विशिख कराला ❁ लागे तन¹ लक्ष्मण है काला
लागे बाण हृदय अतिकारी ❁ जूझे रण लक्ष्मण बलधारी
मूर्छि विलोकि भूप रणधीरा ❁ निकट गये लव कुश दोउ वीरा
देखा निपट कुसाज महीपा ❁ अन्तःकरण बुझानी दीपा
तब दोउ बन्धु पूजि रण खम्भा ❁ कीन्हगमनगृह जहँ सियअम्बा
देखाजाय ऋषय फुलवारी ❁ पात पात चहुँ ओर निहारी
बांधा देखि तहां मख घोड़ा ❁ भवन चले हिय हर्ष न थोड़ा
आय मातुपद वन्दि सुखारी ❁ पाय अशीश भयो सुखभारी
घायल सुवन विलोकि भवानी ❁ जनकसुता तब रोदन ठानी

छं॰ जबरोदनठानीसियाभवानीविकलभयेवनजीवसुनी
धरि विप्रस्वरूपा महाअनूपा आये सब वनदेवतनी॥
धीरज धरु अम्बा हे जगदम्बा सुखी रहें दोउ पुत्र सही।
बहुविधि² समुझाई कथासुनाई गयेभवन असबात कही॥

सो॰ मुदितदेव निजमान, अमितदेखि सियतनयकुल।
करत वचन परमान, सदा सर्व अतिसुखी तुम॥

इतना कहि वनदेव सिधाये ❁ भे सिय शुद्ध सुवन उरलाये
चूमि चाटि अतिआदर हेतू ❁ पूंछन लागि कथा रणखेतू
जोइ जोइ सिय³ पूंछा इतिहासू ❁ सोइ सोइ कह्यो न हर्ष हरासू
देखि क्षुधित⁴ सिय दोऊ बारे ❁ दीन मलीन न जाहिं निहारे
सूखे⁵ वदन लाटि मुख लागी ❁ कांपत देह भूख की आगी
तुरत उठी लीन्हे करथारी ❁ धरि पकवान लाय महतारी
लागे जेवन दोऊ भैया ❁ मुदित पियार करै सिय मैया
सुखी भये करि भोजन नाना ❁ नींदविवश कछु दृग⁶ अलसाना
सूंते⁷ पलँग त्वरित दोउ भाई ❁ भई सुखी सिय शोच विहाई⁸

१ देह २ बहुत ३ माता ४ थकेहुये ५ भूखे ६ आँखें ७ सोये ८ छोड़कर॥

दो० यांम एक निशि रही जब, तबै उठे दोउ भ्रात।
गावें यश रघुनाथ शुचि, जो मन शब्द सुहात॥
सो० सुनि मुनि शुभइतिहास, गूढ़ महा यह चरितवर।
शम्भु उमा कैलास, कहा काकसन विहँगतव॥
आगे चरित सुनहु गिरिजाई ❀ अति अगूढ़ नहिं गाय सिराई
यज्ञसभा बैठे रघुराई ❀ भीर बड़ी ऋषि मुनि समुदाई
राजनीति अरु वेद पुराना ❀ कहहिं वशिष्ठ करें सब काना
सुन्दर जपकर भाग सँवारैं ❀ पढ़ि पढ़ि मन्त्र अनलमहँ डारैं
तहँ प्रभु कह अस वचन सप्रीती ❀ आये न लषण वहुत दिन बीती
तेहि अवसर नभते भै बानी ❀ जूझे रण लक्ष्मण हम जानी
योधा सङ्ग बचे नहिं कोऊ ❀ मूर्छि परे मारे उन दोऊ
एक न बचे सुभट समुदाई ❀ जो यह खबर अवँध पहुँचाई
अजर अमर रण वे दोउ बारे ❀ सुभट न तिहुँपुर जीतनहारे
सो० वाणी सुनत अकाश, त्राहि त्राहि कहि लोग सब।
शोचे प्रभु सुखराश, उमा दशा सुनि अनुजं लघु॥
गुरु समीप जोरे दोउहाथा ❀ बोले मधुर वचन रघुनाथा
नाथ कहिय जस होय उपाई ❀ करों सोइ परमान रजाई
शोच विकललखि कोशलराया ❀ मुनिनायक विधिवत समुझाया
नहिं विषाद कर औसर आजू ❀ धीरज धरहु भूप शिरताजू
सेन सँवारि गमन वन कीजै ❀ कहँ जूझे भाइन सुधि लीजै
लखि आयसु मुनिवर रघुराई ❀ सचिव सुमन्त समीप बुलाई
मँख आरम्भ पूजि हय छांड़े ❀ कीन्ह सुभट तेहि सँग अतिगाढ़े
सो हय अबलग फिरयो न ताता ❀ खेतरहे सँग तीनिहुँ भ्राता
जाउँ तहां गुरु आयसु दीना ❀ साजहु सेन सचिव परवीना
दो० लवनि एक परमान मोहिं, बीतै कल्पसमान।

१ पहर २ पवित्र ३ आगी में ४ अयोध्या ५ छोटाभाई ६ शोक ७ यज्ञ ८ चतुर॥

करिय विलम्ब न तात कछु, कीजै वचन प्रमान ॥

सुनत सचिव रघुनाथ सुबानी ❀ गहिपद विविधभांति सनमानी
आयसु नाथ शीशपर लीन्हा ❀ उचितविनय चाहों कछु कीन्हा
जो आयसु पावों रघुराई ❀ तौ कछु कहौं चरण शिरनाई
सचिव विनय सुनि रघुकुलकेतू ❀ बोले वचन विवेक समेतू
कहहु तात जो मन अनुमाना ❀ जानों तुमकहँ तातसमाना
सुनि मृदु गूढ़ गिरा भगवाना ❀ सचिव सुमन्त चरण लपटाना
नाथ भयो मम उर दुखभारी ❀ सेवक अछत जु आपु सिधारी
आयसु होय जाउँ रघुनाथा ❀ जूझे अनुज जहां हय साथा
जस आज्ञा देइय मोहिं स्वामी ❀ सोई करब चरण अनुगामी

सो० सचिव वचन सुनि राम, बारबार आदर किह्यो ।
तुम सब पूरणकाम, रहहुअवधअसरामकहि ॥

मैं अब जाउँ उहां सुनु ताता ❀ देखों जाय दशा सब भ्राता
को अस वीर भयो जग भारी ❀ जो रणखेत अनुज सब मारी
देखहुँ कौन द्वीपसों आयो ❀ जो वनमें अस रारि मचायो
जो मुनितनय तौ कीन्ह कुचाली ❀ जोपै भूप तौ प्रण प्रतिपाली
देखि सचिव रुख दीनदयाला ❀ तुरत गयो जहँ हय गयँशाला
साजहु तुरँग मतँग अतिभारी ❀ रथ सुखपाल विमान सँवारी
फिरें दूत कोशलपुर खोरी ❀ भे भट सजग हर्ष नहिं थोरी
साजि समर हथियार भवानी ❀ भे एक ठौर न जायँ बखानी

दो० तब सुमन्त पदकमलप्रभु, गहे जोरि युगपानि ।
भई तयारी सेन प्रभु, असकहिविविधबखानि ॥

नित्यक्रिया करि तब रघुराई ❀ पूजि महेश मुदित शिरनाई
गज रथ चढ़ि रघुनाथ सुनेशा ❀ बोलि सुमन्त कह्यो अवधेशा
राखब रुख मुनिनायक केरी ❀ जो मुनि कहैं सो करब न बेरी

१ सत्कार २ विचार ३ छिपी ४ लड़ाई ५ हाथियों का स्थान ६ दोनों हाथ ७ शिव ॥

करि आगे सब सुभट भवानी ❀ हांक्यो रथ मातलि रुख जानी
चले साथ अंगद हनुवीरा ❀ जामवन्त योधा रणधीरा
चलत राम बहुशकुन सुहाई ❀ को कहि सकै वीर समुदाई
आश्रम बालमीकि नियराई ❀ देखि टेढ़ वन सुभट डेराई
धाय खात जिमि काल कराला ❀ डँहुकैं केहरि विविध विशाला
देखि विपिन नहिं धीरज होई ❀ यह वन कहो जाय किमि कोई

सो० लखिवनमहागँभीर, परै न आगे पाउँ कोउ।
कृपासिन्धु रघुवीर, बोलि सुभट अस वचन कह॥

धीरज धरि बैठो वनमाहीं ❀ वनचर लोग न कोउ समुहाहीं
खोजहु तुरँग डरहु जनि काहू ❀ भयतजि सकल विपिनमहँ जाहू
पावो खोज जहां मखवाजू ❀ आँनहु वेगि न होय अकाजू
सुनि आयसु जहँ तहँ कटकाई ❀ कीन्ह प्रवेश त्वरित वनजाई
खोजन लागे तुरँग सुनेशा ❀ योधामहँ भट सँग अवधेशा
नदी खोह गिरिकन्दर भारी ❀ पात पात वन सकल निहारी
पग पग शोधत सुभट सयाने ❀ जाहिं चले वन सघन समाने
फिरहिं सुभट वन में सब धावा ❀ खोज तुरँग काहू नहिं पावा
सुनि मुनिवर व्याकुल कटकाई ❀ देख्यो फिरत एक अमराई

दो० तहां वाजिमख देखि तिन, खड़े सुवन दुइचार।
बोले सुभट विनीत तब, मुनिबालकनिहार॥

सो० सुनहु तनय मुनिराय, सुन्दर वाजि अनूप अति।
कहि नरेश सों जाय, लीन्हेउ मांगि तुरंग यह॥

सुनि यह वचन तुरँग रखवारे ❀ उठे सकोप नयन अरुणारे
बोले उचित सुनहु यह भीरा ❀ तुम केहि हेतु फिरहु वनवीरा
निज भुजबल हम लीन्ह तुरंगा ❀ मारे अमित अँनी चतुरंगा
सो तुम कहत कि गाय बजाई ❀ कोउ नरेशहिं लीन्ह रिझाई

१ सारथी २ स्थान ३ चिल्लावैं ४ लावो ५ पर्वत ६ घोड़ा ७ फ़ौज ८ राजा॥

अस सन्देह तो लेहु लड़ाई ❀ ईश[1] देय सो लेय बड़ाई
वचन परस्पर सुनि सुनि गाढ़े ❀ रहे दोउ कुँवर उमा कहुँ ठाढ़े
धाये साजि शरासन बाना ❀ परम धीर दोऊ बलवाना
भीर देखि मुनिवर फुलवाई ❀ आये सीध तहां दोउभाई
रखवारेन की संकट[2] देखी ❀ उठे तमकि दोउ कुँवर विशेखी

छं० भा क्रोध दोउ रणधीर मुनिवर चाप शर कर सोहई।
नखशिख अनेक मयंक[3]शोभा कामरति लखि मोहई॥
बोले सकोप विलोकि योधा तुरत सम्मुख जायकै।
अस कौन कीन्ह अनीति मूढ़हु बाग घेरेहु आयकै॥
तजि बाग जाहु पराय जहँ तहँ जो भला अपना चहौ।
नहिं होहु सकल पतंगदीपक जो इहां ठाढ़े रहौ॥
अस कहि बहुरि कुश धनु चढ़ाये विषमशर जोरतभये।
सिमटेसुभटलखिअतुलबल मुनिबाग भजि बाहरगये॥

सो० त्यागि सुभट मुनिबाग, खड़े भये मैदान लखि।
वचन बाण सम लाग, कछुकगये निजनाथपहँ॥

नायशीश प्रभु चरण भवानी ❀ कथा सकल[5] मख अश्व बखानी
नाथ विपिनमहँ बाग मुनीशा ❀ बांधा तुरँग तहां जगदीशा
सुवन घने ऋषि मुनिवर देवा ❀ हाथों हाथ करैं हय सेवा
घेरा बाग जहां मखघोरा ❀ रखवारन तब कीन्हो शोरा
त्यहि अवसर दुइ कुँवर अनोखे ❀ शोर सुनत कतहूं अति चोखे
रूपराशि सुठि अंग सुहाई ❀ विधि[6] अस छवि नहिं सकै बनाई
उपमा नहिं त्रिभुवनमहँ कोऊ ❀ जस सुन्दर मुनिबालक दोऊ
कर शर विषम तूणँ[7] कटि बांधे ❀ मैन चाप शोभित अतिकांधे
देखत छोट महाबलधामा ❀ जीति सकै को करि संग्रामा[8]

१ परमेश्वर २ दुःख ३ चन्द्रमा ४ पांखी ५ संपूर्ण ६ ब्रह्मा ७ तरकस ८ युद्ध॥

दो० वयकिशोर सुषमासदन, कोटिकाम छविलाज ।
सिंह नाद लौं शब्दकर, आपु तहां मखबाज ॥

ताके भय सब सुभट डराई ❀ भे बाहर तजि मुनि फुलवाई
सिमिटि ठाढ़ भे लखि मैदानू ❀ भयो क्रोध जनु प्रबल कृशानू
होन चहत संग्राम अपारा ❀ प्रभु आयसु जस होय तुम्हारा
बोले तब कृपालु रघुराई ❀ मिलै तुरँग सो करहु उपाई
इतना कहि कटि कस्यो निषंगा ❀ लीन्ह्यों हाथ कठिन शारँगा
शीशनाय महिदेव मुनेशा ❀ चढ़े तुरँग तिहुँलोक नरेशा
विपिन प्रवेश कीन्ह सियरवनू ❀ साथ ऋषभ अंगद सुतपवनू
मूर्छित वीर परे रणमाहीं ❀ पगभर पन्थ मिलै कहुँ नाहीं
भरत लषण रिपुदमन समेतू ❀ सुभट सहित रण परे अचेतू

सो० उमा सुनो चितलाय, याज्ञवल्क्य यह शुभचरित।
भरद्वाज प्रति गाय, वायसनाथ खगेश ते ॥

सुनि रघुवर इतिहास अनूपा ❀ सुनहु सुता हेमंचलभूपा
हरन शोक संशय तम भारी ❀ अरु चितचाव बढ़ावनहारी
व्यापक ब्रह्म चराचर स्वामी ❀ सुर नर असुर जासु अनुगामी
अविगत अविनाशी निष्कामा ❀ स्वइ मम इष्ट उमा सियरामा
अस कहि कामधेनु शिरनावा ❀ देखि दशा गिरिजा सुखपावा
लागे बहुरि कहन वृषकेतू ❀ ज्यहि विधि राम गये रणखेतू
दशा अनुज अवलोकि भवानी ❀ लखि रघुवीर अचम्भव मानी
बोली बोल समीरकुमारा ❀ विधिगति तात न जायविचारा
कहँ रिपुदमन सुभट रणधीरा ❀ कहँ वे मुनिकिशोर दोउवीरा

सो० वयकिशोर दोउबार, कहँ रिपुसूदन अजर भट ।
अचरज पवनकुमार, कहै कवन बूझै कवन ॥

दो० उमा करत नर यों चरित, धरे मनुष्य कृपाल ।

१ शोभागृह २ अग्नी ३ दयावान् ४ धनुष ५ हनुमान् ६ अँधेरा ७ शिव ८ बुढ़ापारहित ॥

निरखि दशारिपुदमनभट, भयेविकलत्यहिकाल॥
आगे चले राम रणधीरा ❁ मूर्छित विपिन देखि सब वीरा
कोउ कहरैं कोउ माँगैं वारी ❁ कोउ घुमरैं कोउ उठैं सँभारी
धरु धरु मारु पुकारैं कोऊ ❁ कोउ उसकैं मूँदैं दृग दोऊ
देखा जाय भरत गति आगे ❁ परे मूर्छि रथ पर शर लागे
भरे अनन्त शर चाप निषंगा ❁ बाणनते वेधे सब अंगा
धीरधुरीण भरत जगलीका ❁ साधुसभा सुर मुनिमहँ टीका
ते अस गति कर सुवन मुनीशा ❁ सोवत समर भूमि धरि शीशा
देखी कस वे ऋषय कुमारे ❁ जो अगणित सेना रण मारे
लखि करतूति तासु मन शोचू ❁ कहत तात उर होत सँकोचू
सो॰ कहां भरत रणधीर, कहँ वे युगलकिशोर मुनि।
समुझत तनयसमीर, ज्ञानिहु होत विमोह वश॥
अस कहि राम चले मुनिराया ❁ जाको सपन्यहु मोह न माया
नर अनुहार चरितकर सोई ❁ पोषण भरण विश्वकर जोई
चला तुरंग आयो मुनि तहँवां ❁ मूर्छित लषण परे रण जहँवां
जब रघुकुलमणि अनुजनिहारी ❁ नयन स्रवत जल राम खरारी
सुभट समेत समर महँ सोई ❁ शरन पूरतनु जाय न जोई
जे अनन्त घननादहिं मारी ❁ ते दोउ मुनिबालकन सँहारी
असअनरथविधिकहँनहिंशोभा ❁ चरित विलोकि मोर मन क्षोभा
कहतवचन भरिभरि जलनयना ❁ सुनहु मुनीश राम सुखअयना
सो॰ यथा मीन जलहीन, परे जाल तलफै परी।
लक्ष्मण तथा मलीन, यदपि उमा गाढ़े सुभट॥
दो॰ देखि विपिन संग्राममहि, शीलासिन्धु सुखधाम।
बड़ेबड़े मुखिया सुभट, जूझे करि संग्राम॥

१ जल २ दशा ३ असंख्य ४ दोनोंबालक ५ समान ६ मेघनाद ७ मछली ८ प्रधान॥

ऐसे वचन कहत रघुवीरा ❀ जायँ चले वनघनहिं गँभीरा
चौंकत तुरँगनिरखिगजअरणी ❀ महाविकट पगधरत न धरणी
सुनि सुनि रोदन खेत अपारा ❀ रहै ठिठुकि हय टरै न टारा
पिछरत लौटहि डहर निहारी ❀ यदपि ताड़ना देहिं खरारी
बहत रुधिर घावनते कैसे ❀ घनमें प्रभा भानुकी जैसे
गेरु पनार नील गिरि जैसे ❀ त्यहि में उदय धनुष छवि तैसे
बहे अमित[3] शोणित के नारे ❀ कोल करार न जाहिं निहारे
कोल बराबर लोथन केरी ❀ ऊंच करार मतंगज[4] हेरी
बिनु पग अश्व भये तहँ कैसे ❀ मकर ग्राह जलनद महँ जैसे
छं० बहे चर्म्म[5] कच्छ समान शोणितधार में कवि को गनै।
गजशुण्ड मुण्डौ सूससम उतरात बहु देखत बनै॥
करडारि सांग निषंग शायक विपिन गति उनकी भई।
बहुमुण्ड तोमर विरनकर नाहिं जात चेरेसों कही॥
भट सुभट मनहुँ जहाज सुन्दर कहनको सब खलभखे।
बहु जिन्स भूत पिशाच योगिनि बैठि त्यहि पारै चले॥
विकराल वदन[6] पसारि आमिष खानको गरजहिं तहां।
खर गृध्र श्वान[7] शृगाल गाल बजाय कह जेते जहां॥
नहिं वरणिजात जमात मोपै विविध गहि उर रोंकहूं।
प्रभुचरितसिन्धु अपार खग मैं पार कौनी विधि लहूं॥
सो० सुनु खगेश कह काग, राम चरित संशयहरण।
जाहि नीक नहिं लाग, त्यहिसमान को अधम[8] नर॥
दो० असकहिपुनिदोउनायशिर, प्रभुपद बारम्बार।
फिरि भुशुण्डि लागे कहन, प्रभुइतिहास उदार॥

१ पृथ्वी २ मार ३ अप्रमाण ४ हाथी ५ ढाल ६ मुख ७ कुत्ता ८ नीच॥

जब प्रभु जाय बाग नियराने ❀ भूप कोउ लव आवत जाने
त्वरित उठाय लीन्ह धनुबाना ❀ रोंके राह बोलि बलवाना
भूप भला जो आपन चहहू ❀ तौ आगे अब पांव न धरहू
अस कहि चाप चढ़ाय भवानी ❀ चले त्वरित लव शर सन्धानी
सुनि लव वचन उमा रघुराई ❀ रहे मौन कछु कहत न आई
निरखि स्वरूप थकित भे लोचन ❀ कृपासिन्धु प्रणतारतिमोचन
धनि विरंचि जिन रूप सँवारी ❀ अस शोभा नहिं कतहुँ निहारी
त्यहि अवसर कुश वनते आये ❀ विपिन भीर सुनि आतुर धाये
देखि भीर भूपति कटकाई ❀ धरि उर धीर चले हरषाई

दो० पहुँचे कुश वरबण्ड तहँ, जहां ठाढ़ लववीर।
होत बतकही भूपसन, लिये सजग धनुतीर ॥

जब लव अनुजहिं आवत जाना ❀ भा बल अधिक सुताहिमवाना
दोउ भ्राता मुनिवर फुलवारी ❀ सजग भये धनु बाण सिधारी
शोभा देखि काम रति लाजै ❀ कोटि मयंक वदन छविछाजै
दुसरो कुँवर विलोकि कृपाला ❀ भये मुदित कहि वचन रसाला
जनु विधि सब आपनि चतुराई ❀ इन्हैं सँवारि विश्व दिखराई
शोभासिन्धु मनोहर जोरी ❀ अतिसुकुमार बैस सुठि थोरी
लखि नखशिख शोभा दोउवीरा ❀ मोहे प्रेम विवश रघुवीरा
त्यहि अवसर प्रभुगति खगराई ❀ शारद शेष सकैं नहिं गाई
महिमा कहत थके श्रुतिचारी ❀ तहां कौन मर्याद हमारी

छं० मर्याद कौन हमारि तहँ जहँ भेद वेद न पावई।
भे थकित निगम पुराण कहिकहि अपर गति को गावई॥
ब्रह्माण्डप्रति विधि विष्णु हर जो रचै और सँहारई।
स्वइ राम पूरणकाम खग दोउवीर चकित निहारई ॥

सो० जानि सुवन बलवान, वयकिशोर करणी कठिन।

१ स्वामी २ तानकर ३ ब्रह्मा ४ जल्द ५ चन्द्रमा ६ चारोवेद ७ शिव ८ कर्तव्यता ॥

बिहँसि कह्यो भगवान, काके तुम बालक दोऊ॥
कहो मातु पितु नाम, क्यहि कारण वनमें बसहु।
कौन तुरँग सों काम, बांधि जाहि जूझतफिरो॥
यदपिकीन्हिलड़िकाय, तदपि सिखावन देहुँ मैं।
अबहूं देहु मँगाय, तुरँगपाय हम जाहिंफिरि॥
सुनिलवकुशदोउभाय, वाणी राजन मधुर सम।
बोले तब मुसुकाय, कहा काम पितुमातुसन॥

जाहि विरंचि देय हय आजू ❀ सो करि समर जाय लै राजू
जब अस वचन कहा दोउवीरा ❀ हृदय विचार कीन्ह रघुवीरा
मुनिवर तनय कहां अस होई ❀ जो अस नीति राखु उर सोई
ये कोउ भूपसुवन बलधारी ❀ जिनकर तेज न जाय निहारी
अस सुनि प्रभु बोले खगराई ❀ हम अपनेदिशि कहि समुझाई
जो निज कीन्ह चहहु संग्रामा ❀ तौ रण करहु आय बलधामा
भूप वचन सुनि दोऊवीरा ❀ आये जहँ कृपालु रणधीरा
सुभँट बुलाय कह्यो रघुनाथा ❀ युद्ध करो सम्मुख दोउसाथा
दुइ दुइ वीर कटक ते जाहू ❀ समर करहु जनि उर कदराहू

दो० सुनु खगेश रघुनाथ जब, वचन कह्यो भट बोलि।
तमके दोउ बलवान तब, क्रोध देखि महि डोलि॥

तब लव कुश निज हृदय विचारी ❀ समर करी तजि मुनिफुलवारी
ज्यहि मुनिबाग खीस नहिं होई ❀ कीजे काज उचित अब सोई
मुनिबालकन कह्यो समुझाई ❀ रहहु सजग देखत अमराई
तुम कहँ नहिं कौनौ डर भाई ❀ मैं देखों भूपति कटकाई
अस कहि धनुषबाण करँ लीन्हा ❀ सम्मुख भूप गमन तब कीन्हा
दुहुँदिशि ते भे क्रोध अपारा ❀ लागे लड़े सुभट बरियारा

१ काज २ मीठे ३ राजकुमार ४ ओर ५ योधा ६ हिली ७ हाथ ८ बड़ाभारी॥

बहु छल बल पौरुष भट करहीं ❀ समर अजिर मूर्छित ह्वै परहीं
यहि प्रकार सुनि होय लराई ❀ रथ शोभित देखें रघुराई
जे भट होइँ कटक ते न्यारे ❀ ते न फिरें लै प्राण बिचारे
दो० यहि बिधि जूझे सुभट सब, करि पौरुष खगनाथ।
गिने सुभट बाचे कछु, भरद्वाज प्रभु साथ॥
अस कौतुक लखि रामसुजाना ❀ लागे कहन बोलि हनुमाना
कुँवर दोउ अतिशय बलधारी ❀ क्षण में सकल सुभट रणमारी
मन कछु हर्ष विषाद न आने ❀ खड़े सहज दोउ वीर सयाने
देखत लघु दोउ कालसमाना ❀ जाय न सकहिं निकट बलवाना
मैं सब विधि अनरथ कर खेतू ❀ अस उतपात भयो ज्यहि हेतू
मखहय कारण तीनों भाई ❀ सुभट सहित जूझे वन आई
सेनापति कोशलपुर जेते ❀ प्राण तजे यहि काँनन तेते
जाउँ अवध फिरि तो बड़ि लाजू ❀ आय बना सब मरण समाजू
कहत वचन लोचन जल ढरके ❀ कुसमय देखि ताहि प्रभुहरके
दो० ऐसी विधि बिलखायमन, कीन्ह शोच रघुवीर।
सुनु समीरसुत ऋक्षपति, भरे नयन पुटनीर॥
लव कुश देखि भूप भयमानी ❀ जाय निकट बोले अस बानी
सुनहु नरेश बिलँब कस करहू ❀ की फिरि जाहु कि सम्मुख लरहू
सुनत दूषमुख माहुरबानी ❀ फिरे सुभट सब माखि भवानी
लागे समर करै यकबारा ❀ मारहिं विविध शस्त्र हथियारा
कुश विलोकि सेना रिपु माखे ❀ अनुजहिबोलि वचन अस भाखे
तुम मारहु भूपति कटकाई ❀ मैं देखौं नरेशँ प्रभुताई
अस समुझाय अनुज कुश वीरा ❀ आपु चले जहँ रथ रघुवीरा
आये जब प्रभु यान समीपा ❀ कहि दुर्वचन सुनाय महीपा
राजन समर करहु किन आई ❀ की रण ते अब जाहु पराई

१ फ़ौज २ गरुड़ ३ शोक ४ वन ५ जाम्बवान् ६ क्रोधकर ७ राजा ८ भागि॥

दो० असकहिपरिचोंस्योप्रभुहिं, विशिखबाणधरिचाप।
लखिखींचतशारङ्गकुश, उठे देव सब कांप॥

त्रासमान सुर ऋषय मुनीशा * विधि हरि हर पद नायो शीशा
नाथ कौन कारण यह देखी * कहो बुझाय कृपालु विशेखी
काके प्रभु बालक ये दोऊ * प्रबल प्रचण्ड न जग अस कोऊ
जाके समर सेन रघुनाथा * विकल पुकारत यथा अनाथा
वयकिशोर मृदुगात सुहाई * रूप देखि बहु काम लजाई
ते पुनि कीन्ह समर अतिभारी * दल दश चारि क्षौहिणी मारी
उर सन्देह नाथ लखि होई * वेगि बुझाय कहो प्रभु सोई
तब विरंचि प्रभु कथा रसाला * कहिसमुझाय सुरन तेहिकाला
परमकौतुकी कोशल भूपा * अलखअखण्ड अनाम अरूपा

छं० निष्काम नाम निरूपसो प्रभु प्रकट हैं अवधेशके।
मखराखि विश्वामित्रमुनि प्रणसिद्धकिय मिथिलेशके॥
स्वइ ब्रह्म अजय अरूप अविगत देहधरि लीला करी।
नहिं जान कोउ अजान सब लखि चरित भवसागरतरी॥
सुखधामराम नमामिअसकहि चारमुख अस्तुतिकियो।
वैराटरूप लखाय देवन आप परिपूरण भयो॥

दो० जबहिं जीति लङ्केश रण, आये पुर श्रीराम।
गर्व बढ्यो सब अनुजके, कहिविधिगेनिजधाम॥
त्यहिकारणकौतुककियो, कृपासिन्धु रघुराज।
गर्व निवारयो अनुज सब, सुनु अस भारद्वाज॥

तब प्रभु देखि बली रिपु आछे * कटि में रुचिर काछनी काछे
कर सरोज धनु बाण विराजै * कोटिन भानुज्योति छवि छाजै
निपट निरंकुश युगल कुमारा * बिनु संख्या योधा रण मारा

१ ललकारो २ दयालु ३ देवन ४ जनक ५ संसारसमुद्र ६ ब्रह्मा ७ खेल ८ कमल॥

मोहिं यहँ आय समर के काजा ❁ जो न लड़ों तो होय अकाजा
अस विचारि प्रभु शोचे भाई ❁ निज उर मन्त्र समर ठहराई
भयो क्रोध गिरिराजकुमारी ❁ सजग भये रथ राम खरारी
धनुष चढ़ाय विषम शर जोरे ❁ बोले वचन सुधा रस बोरे
मैं अबलगि त्वहिं बाल विचारी ❁ कीन्ह क्षमा सब चूक तुम्हारी
यदपि अनीति महा तुम कीन्हीं ❁ तदपि न मैं एको चित दीन्हीं

दो० सजग होहु रणखेत में, कहौं वचन परमान।
रिसवश शर जोरतभये, खींचि चाप लगिकान॥

कुश विलोकि कोप्यो युवराजा ❁ लिय धनुवाण समर के काजा
सुमिरि मातुपद बारम्बारा ❁ भयो क्रोध खगराज अपारा
विशिख बहुत छांड़े तेहिकाला ❁ चले तुरत जहँ अवधभुवाला
आवत देखि विषम शर भारी ❁ प्रभु कौतुकी काटि महि डारी
ज्वइ ज्वइ बाण गये कुश प्रेरे ❁ त्वइ त्वइ शरन मारि प्रभु फेरे
देखि प्रताप नरेश अपारा ❁ सुवन सिया निजहृदय विचारा
यह कोउ भूप महाबलवाना ❁ जासु समीप जायँ नहिं बाना
हृदय कोपि वर्षा शर कीन्हें ❁ तुरत विमान तोपि प्रभु लीन्हें
दण्ड एक प्रभु यान भवानी ❁ पर्‌यो न देखि सुरन भयमानी

छं० नहिंपर्‌योदेखिविमानप्रभुयकदण्डअसकौतुकभयो।
ह्वै परम विकल पुकारि देवन धीर नाहिं काहुइ रह्यो॥
अवलोकि चरित अपार प्रभु नर नाग मुनि शोचहिं खड़े।
ब्रह्मादि विष्णु गणेश सुरपति देव सब वाहन चढ़े॥
प्रभु देखि रिपु परताप बल हँसि चाप शायक करलई।
सब बाण बाणन काटि अपने निमिषमहँ रजसम कई॥
अस चरित करि प्रभुशायकन पुनि आय तरकसमें भरे।

१ अमृत २ अन्याय ३ सीतापद ४ श्रीराम ५ अपने मनमें ६ एकघड़ी ७ बाण॥

रथ निरखि शोभित अवधपति सुर सुमनकी वर्षा करे॥
सो० देखि प्रताप महीप, अस्तुति नभते करत सुर।
बोले जाय समीप, परम क्रोधकरि वीर कुश॥
कहि बहु वचन बहुरि शर मारा ❀ सोउ शर राम काटि महि डारा
अमित निषङ्गशरन बिनु कीन्हें ❀ बाणन खण्डि डारि महि दीन्हें
ज्वइ ज्वइ लव शर मार खगेशा ❀ स्वइ स्वइ काटि दीन्ह अवधेशा
यहि प्रकार तहँ होय लड़ाई ❀ देखौं ठाढ़ सुनहु गिरिजाई
तब लव एकबाण अतिभारी ❀ अति सकोप प्रभु ऊपर मारी
बाचे अब कोशल रघुराई ❀ ध्वजा पताका काटि गिराई
परम निडर लखि प्रभु मुसुकाने ❀ चाप चढ़ाय श्रवणलगि ताने
छोड़े बाण अमित तेहिकाला ❀ कहि कहि सुन्दर वचन रसाला
मारन योग सुवन दोउ नाहीं ❀ भय देखाय आवहु मोहिंपाहीं
सो० प्रभुआयसुधरिशीश, चले चाप तजि बाण सब।
कीन्ह कहा निज ईश, लीन्हघेरि चहुँदिशि रिपुँहिं॥
लवहिं घेरि बहुत्रास दिखावें ❀ प्रभुरुख पाय पास नहिं आवें
ऐसी भांति सुनो मुनिराई ❀ घेरेहु लवहिं बाण रघुराई
लीन्ह छाय बाणन रणखेतू ❀ सूझि न परै कतहुँ खगकेतू
भयो विकल त्यहि क्षण लववीरा ❀ बोले रिपु सम्मुख मतिधीरा
होहु सजग भूपति यहिकाला ❀ मारि विषम शर करौं बिहाला
छांड़्यो अतिकराल बहुबाना ❀ चल्यो सो सम्मुख श्रीभगवाना
तेजवन्त शर विषम विलोका ❀ प्रभु निजबाण प्रेरि तेहि रोका
भै बाणन ते विविध लराई ❀ रघुवर शर तेहि मारि गिराई
लखि प्रभुता लव अवधभुवारा ❀ बनै न कछु उर करत विचारा
सो० बनै न करत विचार, समुझि भूप बलवान अति।
क्षणक्षणहोतखभार, वरणि न जाय खगेश गति॥

१ फूल २ आकाश ३ कान तक ४ वैरी ५ बड़ाडर ६ सामने ७ देखा ८ गरुड़॥

दो० उमा सुभट सब मारिकुश, मुदित पूजि रणखेत।
अनुज पास गमने तुरत, परम अनन्द समेत॥
देखि लवहिं कुश सङ्कट भारी ❁ चले सजग धनु बाण सँवारी
जाय देखि गति अनुज दुखारी ❁ घेरे चहुँ दिशि बाण निहारी
तमकि सकोप तूण शर खींचे ❁ फोंक सुधारि चाप गहि हीचे
छांड्यो बाण कोपि कुश वीरा ❁ फिरे उमा प्रभुके सब तीरा
प्रविशे शर निषङ्ग सब आई ❁ देखि प्रताप हँसे रघुराई
पूंछा कुश अनुजहिं मृदुबानी ❁ सकल कथा लव तुरत बखानी
सुनि रिसभे कुश सुनहु भवानी ❁ चले सकोप बाण धनु तानी
मारों भूपहिं अस प्रण ठाना ❁ सम्मुख आय कह्यो बलवाना
सजग होहु महिपाल सकोही ❁ तजों न आजु शपथ मुनि मोही
दो० कहिकहिकोटिकवचनकटु, उमा करै को कान।
छांड़े बाण प्रचण्ड अति, सम्मुख श्रीभगवान॥
प्रभु जाना कोपे दोउ भाई ❁ सुमिरि शिवा शिव चाप चढ़ाई
चले दुहूं दिशि बाण कराला ❁ महातेज बड़वानल ज्वाला
उत दोउ बन्धु इतै रघुराई ❁ समर भूमि खग होइ लराई
कोउ काहू कर मरै न मारा ❁ युद्ध करैं करि क्रोध अपारा
बीते बहुत दिवस यहि भांती ❁ चलैं बाण तीक्षण दिनराती
टूटे चाप अमित मुनि ज्ञानी ❁ भरे तीर तरकस नभबानी
दोउ दिशि ते नभ बाणन छाई ❁ शशि अरु भानु न परै लखाई
अस संग्राम विलोकि खगेशा ❁ डगी धरणि व्याकुल भये शेशा
सुर नर असुर सिद्ध मुनि भारी ❁ भे सब जीव सचेत दुखारी
छं० सब भे सचेत अचेत तब नहिं धीर मन काहू धरा।
दश चार पुर के मध्यमें नभ घोर डर सब मुनि परा॥
रघुनाथ अरु दोउ तनय सिय संग्राम बहुदिनते मची।

१ लव २ दुःख ३ तरकस ४ सामने ५ समुद्र के भीतर की आगी ६ गिरे ७ पृथ्वी ८ पुत्र॥

कह दास चेरे कहैं सब अस होय जो बिधना रची ॥
सो० जानि न जाय खगेश, गूढ़ चरित रघुवंशमणि ।
कहि न सकैं श्रुति शेश, गिरा शारदा मूक भइ ॥
दो० सो मैं कौनीभांति खग, कहि समुझावों तोहिं ।
प्रभुलीला अवगाह नद, पार न सूझै मोहिं ॥
अस कहि काकभुशुण्डि मुनीशा ❀ बारबार प्रभुपद धरि शीशा
लाग्यो कहन खगेश सुनाई ❀ पिता पुत्र जस करहिं लड़ाई
ऋक्षनाथ अङ्गद हनुमाना ❀ प्रभु समीप ठाढ़े बलवाना
देखि महारण करहिं विचारा ❀ परम सभीत न जाहि निहारा
तबहिं चितै बोले सुरत्राता ❀ ठाढ़ रहो धरि धीरज ताता
कुसमय देखि विषाद न कीजै ❀ ईश रजाय शीशपर लीजै
कर्म प्रधान समुझि मनमाहीं ❀ धीर धरहु कछु संशय नाहीं
इतना कहि प्रभु यान चलावा ❀ देखि वीर दोउ विस्मय पावा
रिपु बलवान देखि दोउ भाई ❀ अतिशय कोपि बाण झरिलाई
दो० प्रभु कौतुकी विलोकि तब, क्रोधवंत दोउ वीर ।
कीन्ह चरित अनुहार नर, कृपासिन्धु रघुवीर ॥
सुनहु खगेश बखानहिं योगू ❀ पावहिं मोह सुनत सबलोगू
मनुज देह धरि कीरति काजा ❀ कीन्ह चहहिं प्रभु सो खगराजा
देखि कुँवर दोउ सिय अनुहारी ❀ उमा राम अस हृदय विचारी
इहां वास कहुँ जनककुमारी ❀ तासु तनय दोऊ बलधारी
इनसों युद्ध किये भल नाहीं ❀ है हित हानि अयश जगमाहीं
अस विचारि प्रभु सुनु उरगारी ❀ धनुष बाण करसों महि डारी
बन्धु शोक व्याप्यो उर भारी ❀ परे विकल रथपर दनुजारी
जामवन्त अङ्गद हनुवीरा ❀ देखि चरित प्रभु भये अधीरा
निरखिबन्धुदोउसुनित्यहिकाला ❀ मूर्छित रथ देखे महिपाला

१ ब्रह्मा २ वेद ३ रामपद ४ सुरपाल ५ मुख्य ६ सहश ७ राम ८ पृथ्वीपति ॥

दो॰ धांये[1] हर्ष समेत दोउ, देख्यो आय समीप।
गिर्यो बाण धनु हाथसों, व्याकुल पर्यो महीप॥

जाय निकट बहुभांति जगावा ❋ अङ्ग सचेत नेकु नहिं पावा
ह्वै निर्भय तब दोउ रणधीरा ❋ लीन छीन पैंट भूषण वीरा
कर सुन्दरि शिर मुकुट अनूपा ❋ लीन्ह छुड़ाय तुरँग रथ भूपा
अस कौतुक लखि बालिकुँमारा[3] ❋ सम्मुख आय तुरत ललकारा
लव कुश देखि महाभटभारी ❋ भे रिसवश गिरिराजकुमारी
बाणन वेधि लई कपि देही ❋ बांदर सो जनु ह्वै गयो सेही
मारि कपिहिं रणभूमि सुवाई ❋ गमने भवन मुदित दोउ भाई
बांधि ऋर्क्षपति सुवनसमीरा ❋ चले अश्व चढ़ि दोउ रणधीरा
पहुँचे सदन अनुज दोउ साथा ❋ जाय मातुपद नायो माथा

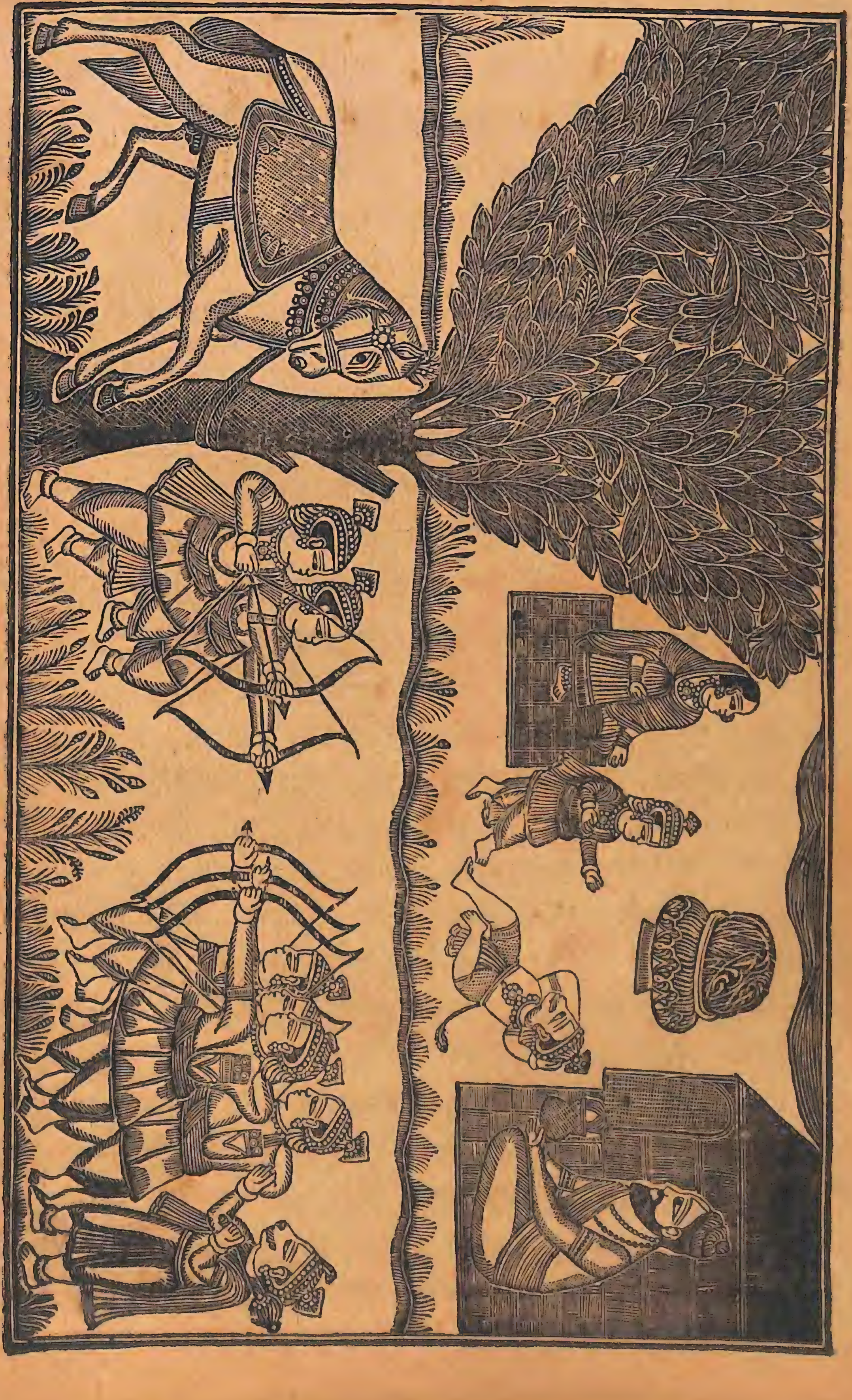
दो॰ विनयकीन्हदोउचरणगहि, माता दीन्ह अशीश।
रहहु चिरंजिवि बन्धुदोउ, जबलगिमहिअँजईश॥

आशिष पाय मुदित दोउ भाई ❋ भूप लूट सब मातु दिखाई
मुकुट अनूप अमोल निहारी ❋ सुन्दरि निरखि शोच भो भारी
यह सुन्दरि कोशलपुरभूपा ❋ मुकुटशीश प्रभु अधिक अनूपा
सो कौनीविधि विधि इन पाई ❋ इतना कहि पुनि बाहर आई
देखि ऋक्षपति पवनकुमारा ❋ लागी रोदन करै अपारा
परी विकल महि सुधिनाहिं तेही ❋ करत विलाप विविध वैदेही
सुवन नहीं ये जनमे काला ❋ अवध नरेश वंश सब घाला
देखि दशा माता दोउ भाई ❋ परे चरण मुख वचन न आई
रोदन करत विदेहकुँमारी ❋ छूटे केश न देह सँभारी

छं॰ नहिं देहकी सुधि रही कछु व्याकुल महाकरुणा करै।
दोउ हाथ छाती मारि पुनि पुनि मूर्छि भूतल में परै॥
तेहिसमयसियगतिदेखिखगपतिजातनाहिंकविसोंकही।

१ दौड़े २ वस्त्र ३ अंगद ४ जाम्बवान् ५ ब्रह्मा ६ सीता ७ पृथ्वी ८ गरुड़॥

रा० लवकुशकाण्डम् चि० नं० १६



बिनु बैनके लोचन बिलोकत मीन बिनु पानी रही ॥
दो॰ छत टूटत करुणा करत, नेकु न देह सँभार ।
लखि निजपतिभूषण वसन, बाढ़त शोच अपार ॥
तेहि क्षण जाय निकट हनुमाना ❀ पदशिरनाय कह्यो बलवाना
मातु धीर धरु कुसमय जानी ❀ मिटै न विधिकर लिखा भवानी
मैं सब चरित सुनावों माता ❀ ज्यहिकारण अस सब उतपाता
दशरथकुल वन्दन रघुराई ❀ यज्ञ अरम्भ कीन्ह हरषाई
त्यहि लगि अश्व सुरेश मँगावा ❀ पूजि तुरँग चहुँ चक्र फिरावा
रहे साथ रिपुसूदन वीरा ❀ फिरे जीति चहुँ दिशि रणधीरा
तबलगि हय यहि कानन आवा ❀ मुनिवर बाग चरत इन पावा
सो हय बांध्यो तनय तुम्हारे ❀ करि रण रिपुसूदन को मारे
तिनके खोज भरत पुनि आये ❀ कटक समेत सोउ मुरझाये
दो॰ आये फिरि सानुज लषण, लै सँग सुभट अपार ।
मूर्छित कीन्ह्यो समर करि, तिनको तनय तुम्हार ॥
प्रभु कहि लषण गये नहिं आये ❀ यज्ञसभा मुनिवरहिं सुनाये
गगनगिरा त्यहिक्षण यह माता ❀ जूझे रण लक्ष्मण सुरत्राता
सुनि नभगिरा कृपालु भवानी ❀ भये शोचवश शारँगपानी
चले तुरत गुरु आयसु पाई ❀ देखा आय दशा निज भाई
कुसमय देखि धस्यो उरधीरा ❀ लागे युद्ध करन रघुवीरा
सो चरित्र सुनु जनककुमारी ❀ भे मूर्छित रथ राम खरारी
तनय तुम्हार निकट तब जाई ❀ पट भूषण सब लीन्ह छुड़ाई
सेवक सहित भानुकुलजाता ❀ लाये बांधि भवन दोउ भ्राता
बिनु जाने अस अनरथ भयऊ ❀ कथा समस्त पवनसुत कहाऊ
सो॰ धीरज धरहु सँभारि, परिहरिरिस दोउसुवनसन ।
मातु सकै को टारि, होनहार सब से कठिन ॥

१ मछली २ बुरासमय ३ घुमाया ४ जंगल ५ वशिष्ठ ६ श्रीराम ७ समीप ८ छोड़कर ॥

कीश वचन सुनि नयन उघारी ❀ चितै चहूं दिशि सुवन निहारी
देखि मातु तेहि क्षण दोउ भाई ❀ महाविकल ह्वै पद शिरनाई
बोले वचन विगत अभिमाना ❀ करन लगे दोउ बहुविधि औना
मातु वृथा जो वचन सुनावैं ❀ पाप दहैं बालक बध पावैं
तुमहूं कबहुँ न कहि समुझावा ❀ बिनु जाने कस दोष लगावा
गिरैं सुपंथ सुबुधि जलजाता ❀ जो हम जानि कीन्ह रण माता
सो बध द्विजै मारेकर दोषा ❀ देहिं हमहिं विधि करि बहुरोषा
विधि हरि हर पदपङ्कज आनी ❀ कीन्ह कुचाल जो जानि भवानी
जो कछु कही सो शिरपर लीन्हा ❀ बड़ अपराध मातु हम कीन्हा

दो० ऐसीविधिकहिवचनदोउ, करहिंविविधविधिआन।
तदपि न होय प्रतोष सिय, लगहिं वचन जनु बान॥

पति देवर गुण शील बखानी ❀ शीशधुनहिं सिय सुनहु भवानी
तेहि औसर कर दुसह विषादू ❀ कहि न जाय अति आरतनादू
बालमीकि मुनिवर विज्ञानी ❀ निजआश्रम चरित्र सब जानी
बलिसों मांगि विदा मुनिराई ❀ सुधा कमण्डलु लीन्ह भराई
शोच विवश मुनिराज सिधाई ❀ कछुक दिवसमहँ आश्रम पाई
देखासियहिं दुखितअतिदीना ❀ जिमिअहिपतिमणिखोयमलीना
पूंछा मुनि सब शिष्य बुलाई ❀ काके चलत सिया दुखपाई
ते सब कारण मुनिहिं सुनाई ❀ आदिहु से सब कहि समुझाई
सुनत महामुनि भये दुखारी ❀ लीन्ह सुवन दोउ सिया हँकारी

दो० अतिमलीनमन बन्धुदोउ, बालमीकि रुखपाय।
कीन्ह दण्डवत आय तब, बैठे पद शिरनाय॥

मुनि दोउ अनुज लाय उरलीन्हे ❀ आशिरवाद विविधविधि दीन्हे
तजहु शोच उर धीरज आनहु ❀ काल कर्मवश ईश्वर जानहु
जाय बहुरि सियको समुझाई ❀ बहु इतिहास पुराण सुनाई

१ हनुमान् २ सौगन्द ३ ब्राह्मण ४ धीरज ५ शोक ६ अपने स्थान ७ फणीश ८ भाई॥

महिते सिय उठाय बैठाई ❋ जल मँगाय विधुवदन धुवाई
कछु धीरज आन्यहु वैदेही ❋ सुमिरि रामपद परम सनेही
तब बोले मुनिराज सुबानी ❋ सुनहु सिया निश्चय उरआनी
तुव पति अजर अमर निष्कामी ❋ पारब्रह्म ईश्वर उँरयामी
तिनहिं को सकै समर रणजीती ❋ कहैं पुराण वेद अस नीती
संशय अस न करिय उरकाऊ ❋ तुम जानहु रघुवीर स्वभाऊ
छं० जानहुप्रभावस्वभावप्रभु केहिहेतु असकरुणाकरौ।
करि छोह सुवँन बुलाय कण्ठ लगाय उर धीरज धरौ॥
यहिभांति बारम्बार मुनि सिय ज्ञान उपदेशत भये।
पुनि बोलिलीन्ह कुमार दोउ शिषसंगलै प्रभुपहँ गये॥
दो० पहुँचे मुनिवर भूमिरण, सिया सुवन दोउसंग।
सोवत रथपर दीख तहँ, रघुकुल कमल पतँग॥
सो० विनय कीन्ह करजोरि, बारबार पदकंज प्रभु।
मुनिवर प्रीति न थोरि, लागे तब अस्तुतिकरन॥
अस्तुति कीन्ह महामुनिज्ञानी ❋ मथि सब वेद पुराणन छानी
मुनि जो अस्तुति कीन्ह भवानी ❋ अगमनिगम नहिं जाय बखानी
सुनत विनय रघुनायक जागे ❋ उठे हरषि मुनिवरपद लागे
मुनिहु लीन्ह प्रभु को उरलाई ❋ लखिनखशिखछबिनयँनजुड़ाई
पूंछि कुशल मुनिवर मृदुबानी ❋ तुम्हरी कृपा कुशल मुनिज्ञानी
भ्राता सहित सुभट यहि देशू ❋ जूझे करि संग्राम मुनेशू
को मुनिराज कुँवर वै दोऊ ❋ जेहि समान जग वीर न कोऊ
इन्द्रंजीत लवणासुर मारे ❋ ताहि समर दोउ कुँवर सँहारे
कहो मुनीश सुवन दोउ काके ❋ पखों मूर्छि लागे शर जाके
सो० कहो नाथ समुझाय, केहि नरेशं के कुँवर दोउ।

१ चन्द्रमुख २ अन्तर्यामी ३ पुत्र ४ सूर्य ५ वेद ६ नेत्र ७ मेघनाद ८ राजा॥

सुनि मुनिवर मुसुकाय, जोरि पाणि लागे कहन ॥
जब आज्ञा लक्ष्मण प्रभुपाई ❀ त्यागि सियहि वन अवध सिधाई
टेढ़ विपिन अवलोकि कुमारी ❀ कीन्ह कलाप विलाप पुकारी
तेहि अवसर मैं शिष्य समेता ❀ फिरतरह्यों वन कृपानिकेता
देख्यों जाय बैठि तरु छाहीं ❀ व्याकुल अधिक देह सुधि नाहीं
धीरज दीन्ह ताहि समुझाई ❀ सकल चरित तिन मोहिं सुनाई
जाना मैं तब जनककिशोरी ❀ लै आयों आश्रमहिं बहोरी
कछु दिन गये कुँवर दोउ जाई ❀ भई मुदित सुधि अवध भुलाई
पूंछि लगन शुभ घड़ी सुहाई ❀ चूड़ाकरण उछाह कराई
यज्ञोपवीत भलीविधि कीन्हा ❀ विविध दान महिदेवन दीन्हा
दो० बैठे पुनि विद्या पढ़न, मम निकेत दोउसाथ।
अल्पदिवसमहँलीन्हपढ़ि, सब विद्या रघुनाथ ॥
बहुरि धनुषविद्या सब सीखी ❀ मैं पुनि दीन्ह प्रेम दृढ़ देखी
भये कुँवर बल बुद्धिनिधाना ❀ फिरहिं विपिन लीन्हे धनुबाना
तेहि अवसर बलि मोहिं बुलायो ❀ यज्ञ करनहित न्योति पठायो
निज वाटिका सौंपि दोउ भाई ❀ गयों पताल सुनहु रघुराई
समय पाय विधि बात बिगारा ❀ होनी होय को रोकनहारा
तजो सो कोह आजु रघुराई ❀ मिलहु कुँवर दोउ कण्ठ लगाई
सुनि मृदुपुञ्ज वचन मुनिधीरा ❀ मिल्यो तनय दोउ हँसि रघुवीरा
अतिआदर समीप बैठारे ❀ बारबार दोउ सुवन निहारे
प्रभुके निकट तनय दोउ सोहे ❀ देखत नभवासी सब मोहे
छं० मोहेनभवासीशिवकैलासीविधिहरिसुरपतिदेवभले
कहि मंगलमूला वर्षहिं फूला शंखनिशान बजायचले ॥
निरखँतसुखपावैं सेवालावैं नभ महि लों ध्वनिछायरही।

१ अयोध्या २ दयाधाम ३ स्थान ४ मुण्डन ५ फुलवाड़ी ६ देवादि ७ देखते ८ आकाश ॥

कहिगमननिकेताशक्तिसमेता अतिआनँदनहिंजायकही॥
दो० यहि विधि देवन रामकहँ, सुवन समेत निहारि।
मांगि बिदा गमने भवन, अश्व विमान प्रचारि॥
तब मुनिसों बोले भगवाना ❀ तुम मुनीश सर्वज्ञ सुजाना
अब सो यतन करिय मुनिराई ❀ जेहि प्रकार कोशलपुरजाई
मूर्छा अनुज सुभट समुदाई ❀ जाते जाय सो करिय उपाई
सुनि प्रभुवचन कह्यो मुनिनाथा ❀ दीजै रथ आपन रघुनाथा
बलि के सभा चरित सब जाना ❀ जानि सुकाज सुधा मैं आना
चढ़ि रथ नभ ऊपर प्रभु जाई ❀ वरषि सुधा भट देउँ जियाई
दीन्ह तुरत रथ राम खरारी ❀ तेहिचढ़ि मुनि नभपन्थ सिधारी
सुधा वारि मुनि वरषन लागे ❀ बुन्द परत योधा सब जागे
जागे रिपुसूदन भा चेतू ❀ भरत लषण सब सेन समेतू
दो० गै मूर्छा जागे सुभट, जिमि मदगत मतवार।
साजिवसन हथियारसब, भये अश्व असवार॥
भरत लषण रिपुसूदन वीरा ❀ भूषण वसन सजे रणधीरा
कसि तरकस धनुबाण उठाई ❀ चढ़ि चढ़ि रथ निजदेव मनाई
लियो ताकि मुनिनायक बागू ❀ चतुरंगिणी सुभट कर आगू
देख्यो जाय बाग मुनिराई ❀ नहिं तहँ तुरँग न रिपुदोउभाई
तौने समय दूत रघुराई ❀ पहुँचे जाय जहां दोउभाई
शीशनाय बोले करजोरी ❀ मधुर वचन गिरिराजकिशोरी
चलिय नाथ रघुनाथ बुलाई ❀ वाणी सुनत परम सुख पाई
वालमीकि मुनि आश्रम तीरा ❀ कछु दिन ते आये रघुवीरा
दूत वचन सुनि तीनों भाई ❀ हांक्यो रथ कछु विलँब न लाई
छं० हांके विमान प्रचारि घोड़े पवन ते आतुर चले।
ज़रबफ़्तकी तम्बू कनातें तनी हैं झलकैं भले॥

१ स्थान २ उपाय ३ अमृत ४ चले ५ पार्वती ६ पास ७ जल्द ८ चमकैं॥

वहु शामियाने बादलामुकैश की झालर सजी ।
खींची तनावी रेशमी दिनरात तहँ नौबत बजी ॥
अगणित मतंगगयन्द पर बहुतास की झूलैं परी ।
बहु बाजि पवनसमान ऊपर ज़ीन रतननसों जरी ॥
अस कहत फिरत नक़ीब खगवीरो तयारी कीजिये ।
महाराजके सब अनुज आवत जाय आगे लीजिये ॥
डेवढ़ी कसामस चोबदारां मणिजड़ित आसा लिये ।
कोउ भूप मिलै न जानपावै बिना कछु रिशवत दिये ॥
बहुवीरभट सुर आज ये जहँ आप प्रभु कोशलधनी ।
मसनन्दतकिया लाग तहँ सुन्दर मुशज्जरकी तनी ॥
वहु चौघड़े औ पानदान गुलाबपाश धरे जहां ।
सुन्दर गढ़नके अतरदान अनेक मुनि देखे तहां ॥
दो० काहू ते नहिं जातकहि, जस कछु बनी समाज ।
देश देश के भूप सब, बैठे तहँ खगराज ॥

वहु आसे बरदार मुनीशा ❋ खड़े तहां जहँ प्रभु जगदीशा
बालमीकि दोउ कुँवर समेता ❋ शोभित तहँ जहँ कृपानिकेता
तेहि औसर प्रभु के सब भाई ❋ कीन्ह प्रवेश उमा तहँ आई
दूतन प्रभु पहँ जाय सुनाई ❋ कह प्रभु आनँहु वेगि बुलाई
जब प्रभु अनुजन आवत देखी ❋ सहित सभा सब उठे विशेखी
प्रथमहिं भरत दण्डवत कीन्हा ❋ करगँहि लाय हृदय प्रभु लीन्हा
पुनि लक्ष्मण प्रभुपद धरिशीशा ❋ भुज पसारि भेंटे अवधीशा
पाछे रिपुसूदन शिरनावा ❋ प्रेम समेत राम उरलावा
पूछत कुशल निकट बैठारी ❋ गई सकल श्रम भये सुखारी

१ असंख्य २ भाई ३ घूस ४ बहुत ५ समय ६ लावो ७ पकड़कर ८ थकावट ॥

दो० प्रभु आज्ञा ते अनुज सब, बैठि दण्डवत कीन्ह ।
बहुरिमिले प्रभु तनयदोउ, हरषित आशिषदीन्ह ॥

तब प्रभु मुनि आगे भे ठाढ़े ❀ पुलकि शरीर नयनजल बाढ़े
मोपर नाथ कीन्ह तुम दाया ❀ जन्म उऋण नहिं मैं मुनिराया
रौरे नाथ अनुग्रह कीजै ❀ अवधचलिय सियसों शिषदीजै
पूरण यज्ञ नहीं बिनुतीया ❀ इतना नाथ हमैं करनीया
अस कहि प्रभु सुखपाल मँगाई ❀ बालमीकि मुनि संग पठाई
लै सुखपाल मुनीश सिधाये ❀ तेहि पाछे रिपुदमन बुलाये
जाहु वेगि मुनिवर पहँ भाई ❀ आनहु जनकसुता समुझाई
आयसु पाय भरत लघुभ्राता ❀ चले सियापहँ हरषित गाता
जाय शत्रुहन पद शिरनाई ❀ आशिष दीन्ह लीन्ह उरलाई

दो० कुशल पूंछि बैठाय ढिग, अति आदर सियमात।
पूंछनलागीं कुशल प्रभु, लषण भरत दोउभ्रात॥

मातु आजु सब कुशल हमारे ❀ चरण सरोज बिलोकि तुम्हारे
तब मुनिवर मृदु वचन सुनाई ❀ सुनो सिया अस कह रघुराई
जेहि विधि अवध चलै चह जाई ❀ सोइ उपदेश देउ मुनिराई
सुनि प्रभु वचन सुता सुख पायों ❀ तव हित वचन हारि मैं आयों
करु प्रतिपाल वचन अव मोरा ❀ होय सुयश तिहुँपुर अतितोरा
रिपुसूदनहुँ लिवावन आये ❀ चरण परे अवलों शिरनाये
जिमिजिमिमुनिवरकहिगिरिजाई ❀ तिमितिमिअवनिसुतासकुचाई
सोचत हृदय विदेहकुमारी ❀ पति गुरु आयसु सकै को टारी
जाउँ अवध तो सबविधि हानी ❀ जो न जाउँ कोपैं मुनिज्ञानी

दो० दुहूंभांति सङ्कट सिया, बनै रहत नहिं जात ।
बन्दि चरण मुनिनाथ के, बोलीं अतिमृदुगात ॥

तुम तौ नाथ नीकि शिष दीन्ही ❀ सबहिं प्रकार मोर हित चीन्ही

१ आशीर्वाद २ आंसू ३ दया ४ कर्तव्य ५ सीख ६ सीता ७ बड़े कोमल ८ भलाई ॥

मैं तजि लाज कहौं मुनि आजू ❋ अब नहिं अवध मोर कछु काजू
बिनु अपराध तजा मोहिं स्वामी ❋ तुमहिं विदित सब अन्तरयामी
तापर मोहिं कहत प्रभु जाना ❋ यह सब मोर अभाग्य न आना
आयेसु नाथ शीशपर लीन्हा ❋ जो कछु कहियसोचाहियकीन्हा
मुनिवर सुनि सीता प्रियबानी ❋ रहे सकुचि तेहि समय भवानी
तजि सँकोच पुनि कह्यो मुनेशू ❋ सुनु पुत्री तु पिता मिथिलेशू
अस ईर्षा सपनेहु नहिं आनी ❋ पतिव्रत धर्म्म पुराण बखानी
यद्यपि पति सब औगुणखानी ❋ तेहिको उचित देवकरि जानी

सो० अस विचारि उरआनि, करहु आजु जो मैं कहहुँ।
लीजै शिष सुखमानि, सबप्रकारतुमकहँसुखद ॥

धर्म्म नीति इतिहास सुनाई ❋ सिया गमन सुखपाल मँगाई
तुरत कहारन लीन्ह उठाई ❋ चले जहां राजितै रघुराई
मुनि रिपुसूदन पाछे जाहीं ❋ परिहरि शोच हरष मनमाहीं
जहँ राजित प्रभु अवधनरेशू ❋ गे रिपुसूदन सहित मुनेशू
भरत अनुज प्रभुपद शिरनाई ❋ मुनिवर आशिष वचन सुनाई
मुनिहिं दण्डवत करि रघुराई ❋ रिपुसूदनहिं लीन्ह उरलाई
सिय आगमन कह्यो मुनिराजू ❋ सुनि हरषे तिहुँपुर शिरताजू
करिअस्तुति पुनि कहि सियरौनू ❋ आयसु होय करौं पुरगौनू
भली नाथ कहि मुनि मतिधीरा ❋ त्वरित पयान कीन्ह रघुवीरा

दो० बहुरि निशान बजाय बहु, चलन साज सब साज।
वाहनचढ़ि भटभीर मुनि, चले जहां रघुराज ॥

गजराजन पर कसी अमारी ❋ वाजिन पर रचि जीन सँवारी
कोतल तुरँग अमित को लेखे ❋ लाजैं हयरथ सूरज देखे
वृषभ ऊंट वाहन सँग जेते ❋ वस्तु अनेक भरे सब तेते
नित्य क्रिया करि पूजि पुरारी ❋ प्रभु निज भूषण वसन सँवारी

१ ज़ाहिर २ आज्ञा ३ जनक ४ शोभित ५ खुशी ६ शिरोमणि ७ ओराम ८ बैल ॥

पुनि पट भूषण विविध मँगाई ❋ अनुजन सुवन बोलि पहिराई
बांधि तुणीर सुनहु मुनिराया ❋ लीन्ह हाथ धनुशर रघुराया
अस्तुतिबालमीकि मुनि कीन्हे ❋ निजरथ मुनिनायक कहँ दीन्हे
तीनों अनुज कुँवर दोउ साथा ❋ चढ़े वाजिपर मुनि रघुनाथा
गणपति गौरि मनाय खरारी ❋ करि आगे सब सेन हँकारी

दो० तेहि औसर करुणायतन, देखि सजँग कटकाय।
चले अवधपुर विहँगपति, शम्भु चरण शिरनाय॥

आगे कीन्ह तुरँग मख आछे ❋ सिय सुखपाल जाय तेहि पाछे
तेहि पाछे मुनिवर रथजाई ❋ चले साथ सेवक रघुराई
तेहि पाछे लवकुश दोउ भाई ❋ छविनिधान कछु वरणि न जाई
हय सवार पर चढ़ बहु साथे ❋ धनुषबाण शोभित दोउ हाथे
तेहि पाछे गज तीनों अनुजा ❋ भरत लषण रिपुसूदन गिरिजा
तुरँग सवार बाग मुरकाये ❋ जाहिं चले करिवरहिं मिलाये
सुभट अमित आगे कछु पाछे ❋ सजि हथियार काछनी काछे
तेहि पाछे गिरिवर रघुवीरा ❋ बैठि खवासी सुवन समीरा
शोभित हाथ छत्रवत भाना ❋ चामर विविध न जाय बखाना

दो० यहि विधि राजाराम मुनि, भ्राता सुवन समेत।
भये पार तमसा उतरि, शोभासींव निकेत॥

बोलि दूत दुइ अवध पठाई ❋ आयसु पाय चले शिरनाई
प्रथमहिं गुरु वशिष्ठ पहँ आई ❋ गहिपद मुनिप्रभु कुशल सुनाई
आवत कुशल अवधपतिनाथा ❋ सीता अनुज सुवन दोउसाथा
सुनि मुनिउर दूतन प्रियबानी ❋ हरषे ऋषिन समेत भवानी
जाय तहां नृप सचिवँ निहारे ❋ बहुरि दूत गये राजदुवारे
शीशनाय मृदु बैन सुनाई ❋ नाथ कुशल आये रघुराई
सुनत सुमन्त उठ्यो हरषाई ❋ मृतक शरीर प्राण जनु आई

१ गहना २ लड़के ३ तरकस ४ होशियार ५ बे प्रमाण ६ पार्वती ७ मन्त्री ८ कोमल॥

गयो त्वरित जहँ प्रभु महतारी ❀ समाचार सब कह्यो सुखारी
सियासहित दोउशिशु सबभ्राता ❀ लै मखबाँजि फिरे सुरत्राता
दो० वचन सुनत उत्साहमय, सुनि हरषीं सब मात।
बोलि विप्र याचक नगर, दान दीन्ह बहुभांत ॥
समाचार पुरवासिन पावा ❀ घर घर मङ्गल बाजु बधावा
सुघर प्रचारिक वेगि बुलाई ❀ बहु रचना गृहद्वार बनाई
राजद्वार की शोभा जैसी ❀ कहँ मति मोरि कहूं अस तैसी
गजमुक्ता की चौक पुराई ❀ कञ्चन कलश अनूप सुहाई
दधि अक्षत रोचन मिष्ठाना ❀ पान फूल पूगीफल नाना
कौशल्यादि राम महतारी ❀ मुदित आरती थार सँवारी
मणिगण हेम निछावरि हेतू ❀ लिये सखी सब प्रेम समेतू
जब प्रभु आय नगर नियराने ❀ आगे जाय सचिव सनमाने
चरण वन्दि सादर सुरत्राता ❀ बैठ्यो अनुज सहित दोउभ्राता
दो०कीन्ह सचिव पुनि दण्डवत, बालमीकिमुनि देखि।
सियपद वन्दि सुखेनअति, धन्यभाग्यनिजलेखि॥
तब प्रभु हरषि अवधपुर आई ❀ आगे बाण निशान सुहाई
हय गयँ के डङ्का मुनिबाजे ❀ सुनि रवँ मधुर मेघघन लाजे
गलिन भीर हय मत्त गयन्दा ❀ मग पावें नहिं पदचरबृन्दा
नर नारी चढ़ि धाय अटारी ❀ निरखें छबि प्रभु होइँ सुखारी
लखि सुखपाल विदेहकुमारी ❀ युवतिन हृदय भयो सुखभारी
देखि तनय सुन्दर सिय दोऊ ❀ जेहि शोभा उपमा नहिं कोऊ
भरत लषण रिपुसूदन देखी ❀ पुरवासी सुख लह्यो विशेखी
उत्सव परम देखि अनुरागे ❀ मणिगण हेम लुटावन लागे
दिव्य सुखद सब पुर नरनारी ❀ भूपति द्वार आय दनुजारी
दो० पुरवासिन कहँ देत सुख, रविकुल कमल पतङ्ग।

१ हाल २ यज्ञका घोड़ा ३ सुपारी ४ हाथी ५ शब्द ६ शत्रुघ्न ७ राजा ८ सूर्यवंश ॥

सेन सहित आये उमा, शोभा कोटि अनङ्ग ॥
सिय सुखपाल सुनहु उरगारी ❋ जाय कहारन द्वार उतारी
सखिन संग मन्दिर सिय आई ❋ पति देवर मातन शिरनाई
सासु सबै सिय को उरलाई ❋ वदन अनूप निरखि सुखपाई
तव सुनि प्रभु सव अनुज समेता ❋ तजि वाहन किय गौन निकेता
कौशल्यादि मातु हर्षाई ❋ करहिं आरती मंगल गाई
वारहिं मणिगण विविध प्रकारा ❋ जो जेहि भाव सो दीन्ह अपारा
तेहि औसर पुर ग्राम उछाहू ❋ वरणि न जाय सुनहु खगनाहू
दोउ सिय सुवन राम महतारी ❋ हृदय लगाय गोद बैठारी
विविध दान महिदेवन दीन्हें ❋ याचक सकल अयाचक कीन्हें
सो० ताहि समय रघुनाथ, चरण सरोरुह मातु सव ।
सादर नायो माथ, मातन आशिष दीन्ह तव ॥
गुरुपद पद्म गहे रघुराई ❋ वारवार मुनिवर उरलाई
जहँलग ऋषय मुनीश समाजू ❋ दण्डप्रणाम कीन्ह रघुराजू
भरत लषण रिपुसूदन जाई ❋ लवकुश सहित चरण शिरनाई
आशिरबाद यथारुचि जेही ❋ दीन्ह हरषि मुनिनायक तेही
पूंछेहु मुनि प्रभु कुशल बहोरी ❋ कह प्रभु नाथ अनुग्रह तोरी
देखि प्रीति बहु शील सनेहू ❋ ऋषिन सहित मुनि भयो विदेहू
अति सुकुमार गात दोउबारे ❋ पितुभ्रातहि केहि विधि रणमारे
बहुरि विचारि राम प्रभुताई ❋ सुतन विलोकि रहे मुनिराई
बारबार प्रभु सुयश बखानी ❋ सकुचि राम बोले मृदुबानी
दो० यज्ञकाज हित नाथ अब, जस मोहिं आयसु होय ।
उठिप्रभातकरुणायतन, करौं शिशधरि सोय ॥
सुनिप्रभुवचन हरषिमुनिनायक ❋ लागे कहन सुनहु रघुनायक
भूप अमितकुल हैते तुम्हारे ❋ तुम सम और न नयन निहारे

१ गरुड़ २ घर ३ ब्राह्मण ४ कमल ५ दया ६ आज्ञा ७ थे ८ देखे ॥

हम प्रोहित रविकुल भगवाना ❀ मिले न कोउ तुमसम यजमाना
यह न बड़ाई तहां तुम्हारी ❀ दीनदयालु भक्त हितकारी
मुनि वशिष्ठ रघुवीर बड़ाई ❀ करत वदन पर सबहिं सुनाई
प्रभुकह सकुचि कृपामुनिकीन्ही ❀ सकल बड़ाई आपुहि दीन्ही
मैं सेवक सबभांति तुम्हारा ❀ परम धर्म यह नाथ हमारा
सुनि रघुवीर गूढ़ व्यवहारा ❀ को समरथ जग करै विचारा
सुनहु राम अस कह मुनि राजा ❀ भोरैहि कीजै मखकर काजा

दो० भले नाथ कहि नायशिर, प्रभु मुनि आयसु पाय।
राजद्वार गमने तुरत, निशा दण्ड युग आय॥

गई निशा युगदण्ड मुनेशा ❀ राजद्वार आये अवधेशा
सचिव आय सादर शिरनाई ❀ प्रेम पुलकि बोले रघुराई
गुरु पितु मातु अनुग्रह ताता ❀ आयों कुशल सहित सब भ्राता
सुनि प्रभु वचन सचिव हरषाई ❀ कहि जै जीव चरण शिरनाई
कहहु वचन अतिनीति सुहाई ❀ तुम समान तुमहीं रघुराई
सेवक विनय नाथ सुनि लीजै ❀ महल जाय भोजन कछु कीजै
सुनि यह वचन भवन प्रभु आये ❀ दासी दास तुरंत जल लाये
भ्राता सुतन बोलि रघुनाथा ❀ उठे करन भोजन यकसाथा
षटरस व्यञ्जन भरि भरि थारी ❀ सादर परसि दीन्ह महतारी

दो० लागे जेवन राम तब, अनुजन सुवन समेत।
जोइ भोजन प्रभु चाहते, सोइ कौशल्या देत॥

करि भोजन गिरिजा रघुराई ❀ कीन्ह्यो शयन महल निज जाई
अनुजन सुवनन बोलि सप्रीती ❀ सोवहु तात निशाँ बहु बीती
आयसु पाय चरण शिरनाई ❀ निज निज भवन गये सब भाई
राम मातु पहँ गे दोउ भाई ❀ सुन्दर पलँग बिछाय सोवाई
सीय सासु अनुशासन पाई ❀ गई जहां राजित रघुराई

१ मुख २ छिपा ३ प्रातःकाल ४ घड़ी ५ जल्द ६ पुत्र ७ रात्रि ८ आज्ञा॥

करि बहु भांति चरण सेवकाई ❀ सोई सिय प्रभु आयसु पाई
सोवत सिय सुख सेज विलोकी ❀ देखि कला विधु निजरथरोकी
आपते अधिक देखि सिय शोभा ❀ बहु मयङ्क हिरदय अतिक्षोभा
शोभा कोटि काम रति थोरी ❀ नहिंउपमा छविजनककिशोरी
दो० रतिसमेत लाज्यो मदन, रजनीपति सकुचाय।
सियमुखशोभासुरसलखि, जहँ तहँ रहे लजाय॥
प्रातसमय रघुनायक जागे ❀ बन्दीजन गुण गावन लागे
भोरहि सिय उठि प्रीतम पासू ❀ गई महल जहँ सोवत सासू
कौशल्या पद चापन लागी ❀ परसत हाथ सासु तब जागी
पद शिरनाय विदेहकुमारी ❀ आशिष दीन्ह राम महतारी
निशा विगत जागे दोउभाई ❀ पितु मातुहिं सादर शिरनाई
निजमातहिं प्रणाम पुनि कीन्हा ❀ देखि सुवन सिय आशिष दीन्हा
तब रघुनाथ मातुपहँ जाई ❀ चरण वन्दि बैठे मुनिराई
माता दीन्ह अशीश सुखारी ❀ सुनि हरषे रघुवंश खरारी
तात चरण वन्द्यो दोउ भ्राता ❀ प्रभु सकुचे विलोकि ढिग माता
दो० तेहि औसर लक्ष्मण भरत, रिपुसूदन मुनिआय।
वन्दि रामपद मातुपद, सियपदशीशनवाय॥
तब अनुजन विलोकि दोउभाई ❀ दण्डप्रणाम कीन्ह शिरनाई
अनुजन सुवन समेत मुनेशा ❀ मज्जन करन चले अवधेशा
नित्यक्रिया करि सरयूतीरा ❀ गुरु समीप आये रघुवीरा
गुरुहिं प्रणाम कीन्ह शिरनाई ❀ दई अशीश हरषि मुनिराई
अवनिसुता कहँ वेगि बुलाई ❀ कीजै काज समय रघुराई
गिरिजा प्रभु गुरु आयसुपाई ❀ रिपुसूदनहिं कह्यो समुझाई
जाहु वेगि माता पँह भाई ❀ सादर जनकसुतहिं लैआई
गे रिपुहन कौशल्या पाहीं ❀ गहि पद कह्यो हरष मनमाहीं

१ चन्द्रमा २ जानकी ३ कामदेव ४ देखकर ५ आदर समेत ६ स्नान ७ पास ८ पकड़कर॥

मातु सियहि मुनिनाथ बुलाई ❁ सुनि रघुनाथ जननि हर्षाई
सो॰ सादर सिय नहवाय, भूषण वसन अनूप सजि ।
युवतिन सङ्ग पठाय, चली सिया पद सासु गहि ॥
मख समाज सिय जब पगुधारी ❁ रूपराशि नहिं जाय निहारी
नख शिख भूषण वसन विराजें ❁ नूपुर शब्द मधुरध्वनि बाजें
ऋषिन देखि सिय कीन्ह प्रणामा ❁ जानिशिरोमणितेहिसुखधामा
जाय सिया गुरुपद शिरनाई ❁ दीन्ह अशीश हरषि मुनिराई
कुशसाथरी मुनिन मँगवाई ❁ कलश समीप मुनीश बिछाई
गांठि जोरि मुनिवर बैठारी ❁ राम सियहिसन शैलदुलारी
प्रथमहिं गुरु अभिषेक मुनेशू ❁ पुनिसबऋषिमुनिकीन्ह खगेशू
वेदन ध्वनि त्यहि समय सुहाई ❁ नभते सुरन सुमन झरिलाई
वरणत छवि सियराम भवानी ❁ शारद शेषहु मति सकुचानी
छं॰ सकुचात मति श्रुति शेष शारद अपरकी गिनतीकई ।
ब्रह्मादि शिव सनकादि अस छवि देखि मति चक्रत भई ॥
अविगत अभेद अपार अगम न पार लखि काहू परै ।
सो नीच निपट अयान चेरे कौन विधि वरणन करै ॥
दो॰ जगत मातु पितु राम सिय, शोभा शीलनिधान ।
सो केहि विधि वर्णन करहुँ, सुनहु सुताहिमवान ॥
श्यामल गौर मनोहर जोरी ❁ भुवन चतुर्दश की छवि थोरी
पूजा सकल मुनीश कराई ❁ तुरँग यज्ञ तेहि समय मँगाई
करि मन्त्रवत अश्व नहवाई ❁ पूजा कीन्ह वेद जस गाई
ऋषिन तहां मुनि आयसु पाई ❁ मख हय हँत्यो अबार न लाई
घृत कपूर पय करे मिलाई ❁ अति पुनीत शाकल्य बनाई
ऋषि मुनिवर कोविद मख जेते ❁ करहिं वेदध्वनि सादर तेते

१ माता २ यज्ञ ३ पार्वती ४ फूल ५ बहुत ६ चौदह ७ मार्यो ८ पण्डित ॥

देवन सहित समाज सुरेशा ❀ ऋषि अट्ठासी सहस खगेशा
विधि हरि[1] हर सुनि अवध उछाहू ❀ यज्ञ सभा आये खगनाहू
जस विधान मख वेदन गाई ❀ तस प्रभु कीन्ह सुनहु खगराई

दो॰ घृत कपूर हय मांस यव, रुचि शाकल्य खगेश।
करत होम रघुकुल[2] तिलक, शोभित सभाऋषेश॥

भयो होम बहु दिवस भवानी ❀ वसुंधा[3] अनल तेज अकुलानी
जहँ लग महि अकाश औकासू ❀ धूम होम सब कीन्ह निवासू
भाँनु[4] तेज शशि शीतलताई ❀ पर्‌यो न लखि काहू गिरिजाई
ज्वाला होम प्रचण्ड बखानी ❀ नभ पाई आहुति हर्षानी
जय जय कार रह्यो मखछाई ❀ नभ ते सुर दुन्दुभी[5] बजाई
पूरण आहुति कीन्ह कृपाला ❀ बोले मुनि तब वचन रसाला
यज्ञ दान यहि औसर कीजै ❀ शुभ आशिष ऋषि मुनि द्विज लीजै
प्रभु आयसु लखि सचिव सुजाना ❀ अमित गयन्द तुरंग सजियाना
भूषण वसन हेम मणिहीरा ❀ प्रभुपहँ राखि सचिव मतिधीरा

दो॰ आयसु पाय वशिष्ठमुनि, सुनहु उमा चितलाय।
दीन्ह दान रघुवंशमणि, याचक विप्र बुलाय॥

काहू हय काहू गजराजा ❀ काहू रथ भूषण खगराजा
जो जेहि भाव दीन्ह स्वइ दाना ❀ रंकहि[6] कीन्ह्यो राव समाना
याचक बहुविधि कीरति गावैं ❀ भूसुर[7] आशिष वचन सुनावैं
अवनिकुमारि दीन्ह जो दाना ❀ सो खगपति नहिं जाय बखाना
सुनहु राम कह मुनि तेहिकाला ❀ कीजै पैकरमा मखशाला
सुनि प्रभु गुरु मृदुगिरा सुहाई ❀ सियसमेत परदक्षिण लाई
बहुरि कीन्ह ऋषि मुनिहिं प्रणामा ❀ सीतासहित राम सुखधामा
पुनि प्रभु गुरु वशिष्ठपहँ जाई ❀ सीतासहित चरण शिरनाई
दे आशिष अस कह मुनिराई ❀ अग्नि[8] विनय कीजै रघुराई

१ विष्णु २ श्रीराम ३ पृथ्वी ४ सूर्य ५ नगाड़ा ६ दरिद्री ७ ब्राह्मण ८ आगी॥

दो॰ भले नाथ कहि अवधपति, सियसमेत खगपाल।
जाय कीन्ह अस्तुति अमित, जहां होमकी ज्वाल॥
प्रभुहिं निहोरत नेह निहारी ❀ ज्वालराह मखवाजि निकारी
दीन्ह तुरँग प्रभु लीन्ह सुखारी ❀ जय ध्वनि छायो तिहुँ उरगारी
तब प्रभु तुरँग सुरेशहिं दीन्हा ❀ पदशिरनाय विनय तिन कीन्हा
करि बहुभांति विनय सुरराजू ❀ गयो लोक तजि सहितसमाजू
बिदा कीन्ह प्रभु ऋषिन बुलाई ❀ करि सम्मान सुनहु खगराई
निज निज भवन गवन सबकीन्हे ❀ तब प्रभु मुनिकहँ आयसु दीन्हे
अब प्रभु भवन गवन निजकीजे ❀ मन्दिर जाय दान बहु दीजे
आगे मुनि सिय रघुवर पाछे ❀ गान करहिं याचक सब आछे
भेरि निशान द्वार बहु बाजे ❀ ऋतु पावसके घनै जनु गाजे
दो॰ सियसमेत रघुवंशमणि, गुरु वशिष्ठ मुनिसाथ।
शुभ नक्षत्र प्रवेश किय, निज मन्दिर रघुनाथ॥
मन्दिर भीर याचकन देखी ❀ प्रभु से तब मुनि कह्यो विशेखी
प्रथमहिं धेनु द्विजनकहँ दीजे ❀ महिदेवन शुभ आशिष लीजे
तेहि पाछे याचकन बुलाई ❀ दीजे दान देव सुखदाई
सुनि प्रभु गुरु मृदुबैन रसाला ❀ कोटि धेनु मांगीं तेहिकाला
कामधेनु हैं सुरस मुनीशा ❀ कीन्ह कुशस्थ कोशलाधीशा
सुरभि दान महिदेवन दीन्हें ❀ पदगहि विनय भांति बहु कीन्हें
दै आशिष महिदेव सिधाये ❀ तब प्रभु याचक नगर बुलाये
याचक बोलि दीन्ह बहु दाना ❀ चले भवन यश करत बखाना
गुरु सतकार कीन्ह रघुराई ❀ विविधप्रकार सुनहु मुनिराई
दो॰ हाथजोरिप्रभुविनयकरि, चरण कमल शिरनाय।
हय गयन्द भूषण वसन, दीन्ह लीन्ह मुनिराय॥
कहमुनि प्रभु आशिष मम लेहू ❀ आयसु होय जाउँ मैं गेहूँ

१ यज्ञ का घोड़ा २ इन्द्र ३ आज्ञा ४ मेघ ५ गौ ६ ब्राह्मण ७ नानाभाँति ८ घर॥

सिय समेत प्रभु गहि मुनिपाऊ ❀ भवन गये मुनिवर खगराऊ
छोरी गांठि सुमित्रा आई ❀ तब सिय सासु चरण शिरनाई
केकयि कौशल्या पद लागी ❀ दीन्ह अशीश प्रेम अनुरागी
तीनिउ मातु चरणजलजाता ❀ गह्यो कृपानिधि जनसुखदाता
रानी सब न्योछावरि वारैं ❀ सिय रघुनन्दन वदन निहारैं
उत्सव विविध कौशला कीन्हे ❀ पट भूषण युवतिन कहँ दीन्हे
देत अशीश गईं निजधामा ❀ हिये राखि मूरति सियरामा
कृपासिन्धु प्रभु दीनदयाला ❀ बोलि सचिव अस कह खगपाला

दो० ब्रह्मभोज विधि वेगि सब, तात करहु तुम जाय।
न्योतो द्विज सुर द्वीपभरि, है आयसु मुनिराय॥

जस कछु ब्रह्मभोज विधि होई ❀ कीजे तात जाय अब सोई
मैं जो राउर आयसु पावों ❀ प्राग आदि तीरथ करि आवों
सुनि प्रभुवचन सचिव महिपाला ❀ वन्दि चरण बोले तेहिकाला
प्रभु सर्वज्ञ चराचर ईशा ❀ जगपालक घालक रजनीशा
मैं सेवक सब विधि रघुराई ❀ प्रभुता निज मोहिं दीन्ह बड़ाई
अवशि नाथ तीरथ सब कीजे ❀ तीरथवासिनकहँ सुख दीजे
मोहिं जो आयसु देहिं गुसाईं ❀ सो मैं करब दास की नाईं
सचिव वचन सुनि प्रभु रणधीरा ❀ नित्यक्रिया करि सरयू तीरा
सियसमेत चढ़ि सुभग विमाना ❀ गुरुपद वन्दि चले भगवाना

दो० प्रथम धर्पाप नहाय प्रभु, काशी कीन्ह प्रवेश।
भोरहिउठि अस्नान किय, सीताराम खगेश॥

शिवहिं पूजि मिलि तीरथवासी ❀ चले प्राग कहँ प्रभु सुखरासी
पवनते वेग चले हय रथके ❀ आये निकट राजतीरथके
उतरि देवसँरि कृपानिधाना ❀ सीतासहित कीन्ह अस्नाना
प्रोहित तीरथराज बुलाई ❀ विविध दान दीन्ह्यो रघुराई

१ स्वामी २ पदकमल ३ दयासागर ४ नाशक ५ मन्त्री ६ एक तीर्थका नाम ७ गंगा ८ प्रयाग॥

पूजि देवतीरथ अतिहेतू ❋ भरद्वाज पहँ गे खगकेतू
करि प्रणाम मुनिवरहिं खगेशा ❋ सीतासहित चले अवधेशा
यमुन उतरि करि मज्जन पाना ❋ चित्रकूट आये भगवाना
मन्दाकिनी पुनीत नहाई ❋ भरतकूप आये रघुराई
भरतकूप सब तीरथखानी ❋ निशा जानि प्रभु रहे भवानी

दो० होतप्रभात नहाय प्रभु, मिलिमुनिऋषिनसमाज।
बालमीकिमुनिआश्रमहिं, चले हरषि रघुराज ॥

मुनिवर निकट जाय रघुराई ❋ दण्ड प्रणाम कीन्ह शिरनाई
मुनिहुँ बहुत प्रभुअस्तुतिकीन्ही ❋ कन्दमूल फल भोजन दीन्ही
रैनि बिहाय भानुकुलकेतू ❋ चले यौन चढ़ि सियासमेतू
नीमषार मिश्रिष प्रभु आये ❋ मिलि सबऋषिन परमसुखपाये
जनकसुता समेत रघुराई ❋ करि अस्नान तहां गिरिजाई
दीन्ह दान महिदेव बुलाई ❋ तीरथ पूजि चले रघुराई
सई उतरि गोमती नहावा ❋ तमसा पार राम रथ आवा
कोशलपुर आये रघुनाथा ❋ गुरुपद वन्दि जोरि दोउ हाथा
जाय भवन मातन शिरनावा ❋ प्रेम पुलकि जननिन उरलावा

सो० पूंछि कुशल पुनि मात, कह प्रभुचरणप्रतापतुव।
तेहि औसर सब भ्रात, आय रामपदपद्म गह ॥

अनुजन सुवन बोलि रघुराई ❋ भोजन कीन्ह जाय खगराई
अर्द्धनिशा लखि दीनदयाला ❋ कीन्ह्यो शयन जाय तेहिकाला
प्रात उठे गुरुपद शिरनाई ❋ वन्दि विप्र मुनि आयसु पाई
करि अस्नान पूजि त्रिपुरारी ❋ कृपासिन्धु सेवक हितकारी
अति आदर भूसुरन बुलाई ❋ चरणधोय भोजन करवाई
उठे जेयँ भूसुर खगपाला ❋ पान दक्षिणा दीन्ह कृपाला
बहुरि प्रणाम कीन्ह रघुवीरा ❋ चले अशीशत द्विज मतिधीरा

१ श्रीराम २ समूह ३ सवारी ४ घर ५ आधीरात ६ महादेव ७ गरुड़ ॥

प्रभु आयसु मुनिनायक पाई ❀ बैठे राजसभा तब जाई
वर्ष सहस[1] दश कीन्ह्यो राजू ❀ सुखी भये सब अवधसमाजू
छं० भयेसुखीअवधसमाजसबसपनेहु कलेश न पावहीं।
नर नारि हर्षसमेत विधि सों जोरि हाथ मनावहीं॥
वर देहु अस विधनौं[2] हमैं जो कहैं यह वाणी पढ़ैं।
कह दासचेरे राम सिय नित राज्य कोशलपुर करैं॥
सो० ऐसे वचन खगेश, कहैं परस्पर[3] नारि नर।
शारद शेश गणेश, ग्रामदेव शिरनाय सब॥
मख इतिहास रुचिर मैं गाई ❀ रामचरित सब तुम्हैं सुनाई
आगे सुनहु अपर[4] इतिहासा ❀ कहौं यथामति बुधि परकासा
हरण मोहतम भानु समानू ❀ दहन विपिन अघ प्रबल कृशानू
मृतक शरीर सजीवन मूरी ❀ जनमनपाप करहिं सब दूरी
सो मोसों केहि विधि कहिजाई ❀ पोति नेकु हीरा गति पाई
पाछे यज्ञ भयो उतसाहा ❀ सो उछाह सुनिये खगनाहा
प्रभु अनुजन रनिवास विहँगवर ❀ कीन्ह प्रकट दुइदुइ सुत सुन्दर
राममातु मुनिवरहिं बुलाई ❀ पूंछी जन्म लगन हर्षाई
मुनिवर वचन विचार बखानी ❀ शुभ नक्षत्र भे बालक रानी
दो० भये लगन सुन्दर तनय, कहौं वचन सुनु रानि।
ह्वैहैं सुत युग विदित सब, सुख शोभा गुणखानि॥
अस कहि मुनि रघुपति पहँ आई ❀ कृपासिन्धु मुनिपद शिरनाई
परसि चरण सादर बैठारी ❀ बोले वचन भक्त[6] भयहारी
नाथ कृपा तव सिन्धु अपारा ❀ मम स्वारथ जनु पूरणँतारा[7]
उमँगत प्रेमवारि अधिकाई ❀ अतिमृदु चित राउर मुनिराई
धर्करिनि[8] जाय नार तब छीना ❀ भूषण वसन निछावरि लीना

१ हज़ार २ ब्रह्मा ३ आपस में ४ दूसरा ५ आगी ६ सेवक ७ पूर्णचन्द्रमा ८ दाई॥

युवती सुनत तुरत उठि धांई[१] ❀ गावत मंगल मन्दिर आई
ढाढ़िनि बहुविधि सोहिल गावैं ❀ नाचि गाय रनिवास रिझावैं
भेरि निशान ढोल सहनाई ❀ बाजैं द्वार वरणि नहिं जाई
नाचहिं रम्भादिक उरगारी ❀ गान करहिं सुरपाल सँभारी

दो० हय गय धरणी धाम धन, राजद्वार रघुनाथ।
देत याचकन[२] बोलि प्रभु, विविधभांति खगनाथ॥

राघवकुल जस रीति भवानी ❀ कीन्हीं तस कौशल्या रानी
नामकरण जब औसर आई ❀ राममातु मुनिवरहिं बुलाई
सुनत महामुनि मन्दिर आये ❀ कौशल्यहिं शिशुनाम सुनाये
जब मुनिवर शिशुनाम सुनावा ❀ जो कछु नेग उचित सो पावा
दै आशिष मुनिराज सिधाये ❀ याचक विविध दान तब पाये
कछू दिवस बीते मुनिराई ❀ लागे फिरन सुवन अँगनाई[३]
बालविनोद निरखि सब रानी ❀ होहिं मुदित नहिं जाय बखानी
भूप अँजिर खेलहिं सब भाई ❀ मातन गोद बसहिं पुनि जाई
माता हरषि गोद तब लेहीं ❀ क्षुधित विलोकि क्षीर[४] मुख देहीं

दो० कीन्ह मुदित चूड़ाकरण, दीन्ह भूसुरन दान।
यज्ञोपवीत कियो फिरि, कृपासिन्धु भगवान॥

विद्याकहँ गुरु पास पठाई ❀ लागे पढ़न कुँवर सब जाई
अल्पकाल[५] विद्या सब लीन्ही ❀ गुरु सतकार भांति बहु कीन्ही
लै शर धनु करकमलन माहीं ❀ लवकुश सँग वन खेलन जाहीं
मारैं मृग खग विविध वराहू ❀ फिरहिं अशङ्क[६] न भय उरकाहू
यज्ञ स्वयम्बर सुन जेहि देशा ❀ जायँ तहां सब अनुज खगेशा
करि छल बल बहु विधि संग्रामा ❀ कुँवरि विवाहि फिरैं लै धामा[७]
छवो अनुज यहि विधि मुनिराई ❀ किये ब्याह भुजबल बरिआई
कुँवर कुँवरि मृदुवदन निहारी ❀ कौशल्यादि मुदित[८] महतारी

१ दौड़ीं २ मंगताजन ३ आंगन ४ दूध ५ थोड़े समय ६ निडर ७ मन्दिर ८ हर्षित॥

उत्सव अमित¹ भवन अति थोरा ❋ उमँगि चल्यो पुरते चहुँ ओरा
सो० देखि तनय मतिधीर, नीतिधर्म अतिसाधु चित।
चेरे प्रभु रघुवीर, पाय समय मुनिसन कह्यो॥
प्रभु अभिलाष² एक मनमाहीं ❋ तुमतजि नाथ कहौं क्यहिपाहीं
भये अनुज आठो नृप योगू ❋ देहु राज्य सुख पावहिं लोगू
बहुत दिवस बीते मोहिं स्वामी ❋ तुमहिं विदित सब अन्तरयामी
सुनि रघुनाथ मनोहर बानी ❋ प्रेम पुलकि बोले मुनि ज्ञानी
कस न कहहु अस नीति कृपाला ❋ दीजै सुतन राज्य महिपाला
आठ भाग वसुधा³ सब कीन्हीं ❋ आठो सुतन बांटि प्रभु दीन्हीं
हय गय रथ सुखपाल भवानी ❋ सो सब दीन्ह न जाय बखानी
पुनि सब तनय समीप बुलाई ❋ निजकुल धर्म उमा समुझाई
दो० गुरु समीप सब सुतनकहँ, दीन्ह राम उप⁴देश।
करहु राज्य धर्मनीति सों, प्रजहि न होय कलेश॥
अस कहि प्रभु गिरिराजकुमारी ❋ कीन्ह चरित कछु अवधविहारी
सो प्रसङ्ग नहिं सकहुँ बखानी ❋ प्रभुमहिमा मति दृष्ट भवानी
अतिशय गूढ़ चरित रघुराई ❋ आ⁵गम निगम पुराणन गाई
राम चरित अवगाह अपारा ❋ को समरथ जग चाहै पारा
वेदौ जासु अन्त नहिं पावैं ❋ सो केहि भांति उमा कोउ गावैं
गुण गावत शारद श्रुति शेषा ❋ सकुचि रहे करि शोच विशेषा
राम चरित पावन खगकेतू ❋ भवसागर तरिहैं हितसेतू
राम चरित सुन्दर सुखदाई ❋ कलिमल दहे⁶न सुनहु मुनिराई
छं० प्रभुसकलकलिमलहरणसंशँ⁷यशोकमोहनशावनी
कहि दास चेरे भजन बिनु पावे न गति अनपावनी॥
अस जानि जिय कोऊ चतुर जग मोह माया त्यागि⁸हीं।

१ बेप्रमाण २ चाहना ३ पृथ्वी ४ सीख ५ शास्त्र ६ जलानेवाला ७ संदेह ८ छोड़ते हैं॥

भवसिन्धु तरि क्षण माहिं ते रघुवीर पद अनुरागहीं ॥
सो० राम विनय इतिहास, कहैं सुनैं जे प्रेम सों।
ते काटहिं भवफांस, रहैं सुखी तिहुँ काल महँ ॥
माघ सुमास अनूप, शुक्लपक्ष तिथि द्वैज शुभ।
कही स्वमतिअनुरूप, लवकुशकथाविचित्रअति॥

इति श्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेलवकुशकाण्डे
विमलवैराग्यसम्पादनोनामअष्टमस्सोपानः ॥ ८ ॥

॥ इति ॥

श्लोक ॥

यः पृथ्वीभरवारणाय दिवि जैः सम्प्रार्थितश्चिन्मयः
सञ्जातःपृथिवीतले रविकुले मायामनुष्योऽव्ययः॥
निश्चक्रं हतराक्षसः पुनरगाँद्ब्रह्मत्वमाद्यं स्थिरां
कीर्त्तिम्पापहरां विधाय जगतां तं जानकीशं भजे १
यत्पूर्वं प्रभुणा कृतं सुकविना श्रीशम्भुना दुर्गमं
श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशं प्राप्तोतु रामायणम्॥
मत्वा तद्रघुनाथनामनिरतं स्वान्तस्तमश्शान्तये
भाषाबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसम् २
पुण्यं पापहरं सदा सुखकरं विज्ञानभक्तिप्रदं
मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम्॥
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्याऽवगाँहन्ति ये
ते संसारपतङ्गघोरकिरणैर्दह्यन्ति नो मानवाः ३

१ भूभार २ दूर करने के लिये ३ देवोंने ४ प्राप्तहुये ५ पदकमल ६ गहते हैं॥

अथ आरती श्रीरामायणजीकी ॥

आरति श्रीरामायण जीकी ❀ कीरतिकलितललितसियपीकी॥
टेक॥गावतब्रह्मादिकमुनिनारद❀ बालमीकि विज्ञान विशारद ॥
शुक सनकादि शेष अरु शारद ❀ वर्णि पवनसुत कीरति नीकी१
सन्तत गावत शम्भु भवानी ❀ औ घटसम्भव मुनिवर ज्ञानी ॥
व्यास आदि कविपुङ्ग बखानी ❀ काकभुशुण्डि गरुड़के हियकी२
चारिउ वेद पुराण अष्टदस ❀ छइउ शास्त्र सब ग्रन्थनको रस॥
तन मन धन सन्तन को सर्वस ❀ सार अंश सम्मत सबहीकी ३
कलिमल हरणि विषयरसफीकी ❀ सुभग शृंगार मुक्ति युवतीकी ॥
हरणि रोग भव भूरि अमीकी ❀ तातमात सब विधि तुलसीकी४

सप्तदेवस्तुति ॥

गणेशस्तुति आरती ॥

जय लम्बोदर ईशा। संकट दूरकरो तुम मेरो जिमि रवितमखीशा (टेक) विघन निवारन काज सँवारन तुम सबके सुखदाता। जन रंजन दुख भंजन हो शिव गौरी ताता (१) एकदन्त करि वदन सुहावे मूसे असवारी। ऋद्धि सिद्धि दोउ सहित विराजे छवि अतुलित भारी (२) इन्द्रादिक सब देवन पूजै गणनाचैं भीरा। तूर्य ढोल मिरदंग बजावैं जय जय बलवीरा (३) तुमसम दीन-दयालु न कोई वेगि कृपा करियो। रामगङ्ग इक शरण तुम्हारी संकट सब हरियो (४) जय लम्बोदर ईशा ॥

सूर्य्यस्तुति आरती ॥

जय रजनीतमहारी । जड़ चेतनके प्राण अधारा तीनलोक हितकारी (टेक) नीलवर्ण वरवाजि विशाला रथके राज रहे । ज्योतिस्वरूप अनूप दिवाकर शोभा अमित लहे (१) कानन कुण्डल जगमग छाजै ज्योतिकला चहुँओरा । सुन्दरवदन सदन मुद मंगल मनसिज मनचोरा (२) गणेश महेश करैं गुणगाना चन्दन धूपसजैं । अगुरु कपूर सुहावत बाती भेरी बीन बजैं (३) जगउजियारक मोहनिशि घालक प्रकट प्रभाव खरो । रामगङ्गपै कृपाकर स्वामी हियतम नाश करो (४) जय रजनीतमहारी ॥

दुर्गास्तुति आरती ॥

जय जननी सुखदेनी । मङ्गलकरणि अमङ्गलहरणि तपताप निसेनी (टेक) शुक्लवर्ण अरुण तन वस्त्र भूषण भूरि सजै । नयन विशाल लाल सम वारिज मृगमन देखिलजै (१) बेंदीभाल जाल मणिमाला नाक बुलाकलसे । नूपुर धुनि सुनि मुनि मन मोहे धीरज ध्याननसे (२) सिंहचढ़ी कर गदा विराजै असुर सँहार करे । रक्तबीज सम नीच घनेरे क्षणमें सकल दरे (३) सुरेश महेश अन्त नहिं पावैं महिमा अलख बनी । जगकरणी इक क्षण में हरणी माया अमित घनी (४) जानु युगल कर जोर करतहूँ विनती तुमपाहीं । रामगङ्ग की सुधि जनि भूलो निजहिय वर माहीं (५) जय जननी सुखदेनी ॥

शिवस्तुति आरती ॥

जय गिरिजाहितकारी । जटाजूट गल रुण्डन माला गङ्गा शिरधारी (टेक) श्वेतवर्ण तनु भस्म लसत है मृगअम्बरधारी ।

भूषण भूरि भुजग छवि छाई सहित उमा प्यारी (१) नयन विशाल भाल शशि बालक आनन पांचबने। भानु कोटि सम वदन सुहावन भृकुटी धनुष तने (२) करधर डमरू विषम त्रिशूला वाहन बरद तरे। भूत प्रेत सहिसेन अपारा भयंकर वेष धरे (३) ब्रह्मादिक सुर असुरन नागा अस्तुति वेदकरे। ढोलक डमरू डफ धुनि झांझर जय भव ईश हरे (४) हे जगदीश्वर ईश्वर स्वामी प्रभु तुम अन्तरयामी। रामगङ्ग स्वप्ने जनि भूलेउ अतिमूरुख कामी (५) जय गिरिजाहितकारी॥

महावीरस्तुति आरती॥

जय अञ्जनीसुत वीरा। बलप्रताप जग रेख तुम्हारी प्रथमै रणधीरा (टेक) रक्तवर्ण तरुण तनु तेजा गिरिसम देहलसे। गमन दमन मद चलन खगेशा बलनिधि असुर खसे (१) रविको फल भल जान्यो ताहि कियो भक्षा। देवन त्राहि करी तब छांड़्यो वेगिकरी रक्षा (२) लक्ष्मण मूर्च्छिपरे रणमाहीं रघुवर शोकभरे। लाय सजीवन जीवन कीन्हों देवन सुमन झरे (३) रावण दुष्ट हरी वैदेही चिन्ता राम भई। लङ्का जार सँभार सुधि सीता रघुवर आन दई (४) बल अतुल तुव विपुल बड़ाई निजमुख राम कही। रामगङ्ग तप तापन घेख्यो तुम्हरी शरण लही (५) जय अञ्जनीसुत वीरा॥

आरती श्रीस्वामी श्रीरामचन्द्रजीकी॥

जय रघुवर धनुधारी। खरासि खलन दलनदलदूषन सन्तन हितकारी (टेक) श्याम शरीर चीरधरपीता भूषण छवि भारी। बाहु विशाल धनुष कर सोहै सहित सिया प्यारी (१) क्रीट मुकुट

कर्णकल कुण्डल हार हरण मन विलसे। चरण चिह्न उर महिसुर राजे मस्तक तिलक लसे (२) सुन्दर वदन सदन मुद मंगल चितवन चितचोरा। लोचन ललित दलित मद खंजन चाल मराल किशोरा (३) गौतमनारि उधारि हति निशिचर ऋषिकी यज्ञकीन्हों। चापफोड़ तोड़बल राजन जनकसुता वरलीन्हों (४) शबरी तारि मारि रणरावण धरणी भार हरा। रामगङ्ग कलिमल को ग्रस्यो तुम्हरी शरण परा (५) जय रघुवर धनुधारी ॥

आरती श्रीकृष्णदेवजीकी ॥

जय गोवर्द्धनधारी। सुरपति गर्व सर्वकरमोचन राखी ब्रजसारी (टेक) मोर मुकुट शिर गच कचकारे कुण्डल मनहारी। मोतिनहार चारु वनमाला नूपुर धुनि न्यारी (१) पीत वसन वर वरण तमाला मुरली अधर धरी। गौरवरण तरुण सँगराधे जोरी अमित खरी (२) कंसदुष्ट बहु दुष्ट पठाये महिमा नहिं जानी। ताको मारि पछारि सब असुरन सुखी कियो रजधानी (३) कौरव अनीतिकरी बरजोरी द्रौपदि चीर खसे। भक्ताधीन वसन बहु कीनो उतारत हाथघसे (४) वेश्या विप्रसम नीच घनेरे क्षण में तारदियो। रामगङ्ग शिरमौर पतित को काहे राखि लियो (५) जय गोवर्द्धनधारी ॥

इति ॥

श्रीरामचन्द्रचतुर्दशवर्षवनवासतिथिपत्र ॥

विश्वामित्र के साथ श्रीरामचन्द्रजी और लक्ष्मणजी श्रीअयोध्याजी से जाकर ऋषि का यज्ञ सम्पूर्ण करके सहित विश्वामित्र और लक्ष्मणजी के मिथिलापुर में गये वहां राजा जनककी यज्ञशाला में धनुर्भङ्ग किया और श्रीजानकीजीने जय-माल श्रीरामचन्द्रजी के गले में डाली तब राजा जनककी आज्ञानुसार दो दूत श्रीअयोध्याजी में दशरथ महाराज के पास जाकर सर्ववृत्तान्त धनुष तोड़ने और जानकीजी के जयमाल पाने का कह सुनाया ॥

उस दिनतक १५ पंचदश दिन श्रीरघुनाथजी को सहित लक्ष्मण और विश्वामित्र के श्रीअयोध्या से गये व्यतीत हुये थे और श्रीरामचन्द्रजी और जानकीजी का विवाह हिमऋतु अगहनमास शुक्लपक्ष पंचमी तिथि वृश्चिक के सूर्य्य और मीनलग्न में हुआ विवाह के समय १५ वर्ष के श्रीरघुनाथजी और ६ वर्षकी जानकीजी थीं और विवाह के पीछे श्रीअयोध्याजी में श्रीरामचन्द्रजी ने १२ वर्ष निवास करके सहित जानकी और लक्ष्मणजी के वनको पयान किया ॥

निम्नलिखित तिथिपत्र श्रीमद्रामचरित्रका है इसमें वह चरित्र कि जो भगवान् ने चतुर्दश वर्ष वनवास में किये हैं सब दिनोंकी संख्या से लिखे हैं ॥

(१) श्रीराम लक्ष्मण और जानकीजी ने श्रीअयोध्याजी से गमन करके तीनदिन जलमात्र पान किया तब श्रीरामजी की आयु २७ वर्ष और जानकीजी की १८ वर्ष की थी ॥

(२) चतुर्थ दिवस राम लक्ष्मण और जानकीजीने शृङ्गवेरपुर में पहुँचकर फल फूल खाये॥

(३) पांचवें दिन राम लक्ष्मण जानकी श्रीगङ्गाजी पार उतरकर भरद्वाज तथा बाल्मीकि जीको मिलकर चित्रकूट पहुँचे और जयन्त का नेत्र भङ्गकिया और वहां कुछ दिन निवास किया ॥

(४) राम लक्ष्मण जानकी चित्रकूट से चलकर विराधवध शरभङ्ग सुतीक्ष्ण से मिल अगस्त्य आज्ञानुसार पञ्चवटी में पहुँचकर १२ वर्ष निवास किया और १३ वर्ष के प्रारम्भ में शूर्पणखा की नाक हीनकर खर दूषण को मारा ॥

(५) माघशुक्ल ८ के दिन श्रीजानकी को मध्याह्नसमय रावण हरलेगया ॥

(६) पांचवें मास श्रीराम लक्ष्मणजी ने मारीच वधकर श्रीजानकीजी के विरह में जटायु को उद्धारकर कबन्धमार शबरी को सद्गति दे आषाढ़ महीने में सुग्रीव को मिले ॥

(७) ४ मासतक श्रीराम लक्ष्मणजी ने बालि को मारकर सुग्रीव को राज्यदे प्रवर्षण पर्वत पर निवास किया ॥

(८) मार्गशिरकृष्ण ११ को हनुमान् वानरों सहित सीताजी को खोजते २ विवर प्रवेश करके सिन्धु तटपर पहुँचे वहां संपाति से सीता की सुधि पाय सिन्धु फांद पार पहुँचे ॥

(९) मार्गशिरकृष्ण १३ को श्रीहनुमान् ने श्रीजानकी को मिल मुद्रिका दे अशोकवन उजारा ॥

(१०) मार्गशिरकृष्ण १४ को हनुमान्जी अक्षयकुमारादि राक्षस मार लङ्कादाह करके सीताजी से चूड़ामणि ले सिन्धु को उतर अपनी सेना में आये ॥

(११) मार्गशिरशुक्ल ६ को हनुमान्जी सेनासहित समुद्रतट से पयानकर पांच दिन मार्ग में व्यतीत कर किष्किन्धा में पहुँचे ॥

(१२) मार्गशिरशुक्ल ७ को हनुमान्जी ने श्रीरामचन्द्रजी को प्रणामकर चूड़ामणि दे सीता सुधि कह सुनाई श्रीजानकीजी के हरजाने के १० मास पीछे फिर श्रीरामचन्द्रजी ने सुधिपाई ॥

(१३) मार्गशिरशुक्ल ८ को श्रीरामचन्द्रजी ने सेनासहित मध्याह्न समय उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में लङ्का की ओर पयान किया ॥

(१४) मार्गशिर १५ पूर्णमासी को श्रीरामादि सातदिन मार्ग में रहकर समुद्र तटपर पहुँचे॥

(१५) पौषकृष्ण १ से ३ तक श्रीरामादि सेनाने समुद्रतीर पर निवास किया ॥

(१६) पौषकृष्ण ४ को श्रीविभीषणजी श्रीरामजी की शरण आये ॥

(१७) पौषकृष्ण ५ से ८ तक श्रीरामचन्द्रजी समुद्रके आगे विनय करते रहे ॥

(१८) पौषकृष्ण ९ को विप्ररूपधर सिन्धु श्रीरघुनाथजी की शरण में आया ॥

(१९) पौषकृष्ण १० को सेतु बांधने को प्रारम्भ किया और १० दश योजन लम्बा तिस दिन बांधा ॥

(२०) पौषकृष्ण ११ के दिन बीस योजन सेतु बांधा ॥

(२१) पौषकृष्ण १२ के दिन तीस योजन सेतु बांधा ॥

(२२) पौषकृष्ण १३ के दिन चालीस योजन सेतु बांधा सब १०० योजन लम्बा और १० योजन चौड़ा सेतु तय्यार किया ॥

(२३) पौषकृष्ण १४ से पौषशुक्ल २ तक श्रीरघुनाथजी सब सेनासमेत सिन्धुपार उतरे इस सेना में अठारह पद्म यूथप थे ॥

(२४) पौषशुक्ल ३ से १० तक श्रीरघुनाथजी ने लङ्काको घेरलिया ॥

(२५) पौषशुक्ल ११ को शुक और सारण मन्त्री रावण के श्रीरघुनाथजी की सेना देखने आये ॥

(२६) पौषशुक्ल १२ को श्रीरघुनाथजी ने अपनीसेना की चार अनी किया और इस दिन श्रीरघुनाथजी ने एक बाण से रावण के मुकुट और छत्र मन्दोदरी के कर्णभूषण पृथ्वी पर गिरादिये ॥

(२७) पौषशुक्ल १३ से १५ पूर्णमासी तक रावण की सेना सन्नद्ध हुई ॥

(२८) माघकृष्ण १ को अंगदजी लङ्कामें जाय रावण को बहुत समुझाय फिर रघुनाथजी के पास आये ॥

(२९) माघकृष्ण २ से ९ तक श्रीराम रावण दोनों की सेना का महायुद्ध हुआ और मेघनाद ने नागफांस डाली ॥

(३०) माघकृष्ण १० को गरुड़ नागफांस काट निज लोक को गये ॥

(३१) माघकृष्ण ११ से १२ तक बहुत युद्ध होकर धूम्रलोचनदैत्य मारागया ॥

(३२) माघकृष्ण १३ से अमावस्या तक नीलादि दैत्य मारे गये ॥

(३३) माघशुक्ल १ से ४ तक रावण वानरों से लड़कर लंका को चलागया ॥

(३४) माघशुक्ल ५ से ८ तक रावण ने अपने भ्राता कुम्भकर्ण को जगाया ॥

(३५) माघशुक्ल ९ से १४ तक कुम्भकर्ण श्रीरघुनाथजी से लड़तारहा और अन्त को मारागया ॥

(३६) माघशुक्ल १५ को रावण कुम्भकर्ण के मारेजाने से शोकान्वित हो नहीं लड़ा ॥

(३७) फाल्गुनकृष्ण १ से ५ तक श्रीरामचन्द्रजी ने नारान्तकादि दैत्योंका बध किया ॥

(३८) फाल्गुनकृष्ण ५ से ८ तक बहुत दैत्य रावणके श्रीरघुनाथजी के हाथसे मारेगये ॥

(३९) फाल्गुनकृष्ण ८ से १३ तक श्रीरघुनाथजी के हाथसे कुम्भ निकुम्भ दैत्य मारेगये ॥

(४०) फाल्गुनकृष्ण १४ से फाल्गुनशुक्ल २ तक जुमक दैत्य दैत्योंकी सेनासहित श्रीरामचन्द्रजी के हाथसे कालवश हुआ ॥

(४१) फाल्गुनशुक्ल ३ से १३ तक श्रीलक्ष्मणजीने मेघनादको बध किया ॥

(४२) फाल्गुनशुक्ल १४ को रावण ने पुत्रके शोक से युद्ध नहीं किया ॥

(४३) फाल्गुनशुक्ल १५ पूर्णमासी को रावण समरभूमि में लड़ने को आया ॥

(४४) चैत्रकृष्ण १ से ८ तक रावण ने श्रीरघुनाथजी से बहुत युद्ध किया और रावण के सब सेनापति मृत्यु को प्राप्त हुये ॥

(४५) चैत्रकृष्ण ९ को श्रीलक्ष्मणजी रावण के हाथ से शक्ति लगने से मूर्च्छित होगये और इसीदिन श्रीहनुमान्‌जी के सजीवन लाने से श्रीलक्ष्मणजी सचेत हुये ॥

(४६) चैत्रकृष्ण १० को रावण और श्रीरघुनाथजी का बहुत युद्ध हुआ ॥

(४७) चैत्रकृष्ण ११ को श्रीरघुनाथजी के वास्ते इन्द्र रथ लाये ॥

(४८) चैत्रकृष्ण १२ को श्रीरामजी रथारूढ होकर समरभूमि में आये ॥

(४९) चैत्रकृष्ण १२ से १४ तक श्रीरघुनाथजीने रावण की बहुत सेना और दैत्यों के समेत वध किया १८ रोज रावण लड़कर कालवश हुआ ॥

(५०) चैत्रशुक्ल १५ को रावणका शरीरदाह कियागया ॥

(५१) वैशाखकृष्ण १ को श्रीरामादि ने शत्रुवध होने से बहुत उत्साह किया और इन्द्रसे अमृत मँगवाकर मृतक हुये बानरों को जीवित किया ॥

(५२) वैशाखकृष्ण २ को श्रीलक्ष्मणजीने श्रीरघुनाथजीकी आज्ञानुसार विभीषणको राजतिलक लङ्का में जाकर बड़े उत्साह से दिया ॥

(५३) वैशाखकृष्ण ३ को श्रीसीताजीने श्रीरामचन्द्रजी की आज्ञानुसार अग्नि में प्रवेश किया श्रीसीताजी १४ मास १० दिन लङ्का में रहीं ॥

(५४) वैशाखकृष्ण ४ को श्रीरघुनाथजीने श्रीजानकीजी और श्रीलक्ष्मणजी और श्रीहनुमदादि सहित विमानारूढ़ हो श्रीअयोध्याजी की ओर गमन किया ॥

(५५) वैशाखकृष्ण ५ को श्रीरामचन्द्रजी सहित समाज के प्रयागराज में आये ॥

(५६) वैशाखकृष्ण ६ को श्रीरामजी सहित समाज नन्दिग्राममें श्रीभरतजी के पास आये बड़े आनन्द से भेंटे और १४ वर्ष वनवास के व्यतीत हुये ॥

(५७) वैशाखकृष्ण ७ को श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीरघुनाथजी समेत श्रीजानकीजी सिंहासन पर बैठे तब आयु श्रीरामचन्द्रजी की ४१ वर्षकी और श्रीजानकीजी की ३२ वर्षकी थी ॥

(५८) भाद्रशुक्ल ९ को श्रीजानकीजी के गर्भ हुआ ॥

(५९) चैत्रशुक्ल १२ को श्रीलक्ष्मणजी श्रीरघुनाथजी की आज्ञानुसार श्रीसीताजी को वनमें छोड़ आये तब सप्तमास का गर्भ था ॥

(६०) आषाढ़कृष्ण ९ को लवकुश जन्मे ९९९ वर्ष श्रीजानकीजी वनवास में रहीं और ११००० वर्ष श्रीमहाराजाधिराज श्रीरामचन्द्रजी ने राज्य किया ॥